श्री

जैनप्रबोध पुस्तक

भाग पहेलो

एमां

समस्त श्रावक भाइउने अवश्य खपमां आववा योग्य एवां स्तवनादिकोने यथायोग्य शुद्ध करी

श्रावक भीमसिंह माणकें

श्रीमुंबापुरी मध्यें

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यां छे

संवत् १९४५ ना सन १८८९

माघशुक्ल ५ मी मंगळवार

प्रस्तावना.

आ जैनप्रबोध नामक पुस्तकनो प्रथमभाग छा
पी जाहेरमां मूकतां समस्त म्हारा साधर्मि भाइयो
ने हुं सविनय प्रार्थना करुं छुं, के केटलाएक न्हाना
म्होटां स्तवनो, सद्यायो, प्रभातियां, चोढालीयां,छंदो,
लावणीयो, होरीयो अने अनेक प्रकारना तप कर
वानो विधि, आदें देइने बीजा पण घणा प्रकारना छूटा
बोल, जेवा के प्रत्येक वांचनार साहेबने अवश्य ख
पमां आवे तेवा तेवा घणी सूक्ष्मताथी शोधीने आ
पुस्तकमां बधा मली सुमारें साडा सातशें ग्रंथो दाख
ल करेला छे. एटले प्रथम अढी रूपैयानी किंमतनो
जैनप्रबोध जे में छापेलो हतो, तेमां जे जे स्तवना
दिको हतां ते सर्व पूरे पूरां आ पुस्तकमां दाखल
करीने वली बीजां पण तेना पोणा भाग जेटलां
नविन स्तवनादि वधारे दाखल करेलां छे. तेमज
आगला पुस्तकमां नारकी आदिकनां चित्रोनां काली
शाइथी छापेलां मात्र चार पृष्ठोज आदिमां नाख्यां
हतां, तेने स्थानकें हालमां जूदा जूदा पांचे रंगमां
चित्रेलां शोल पृष्ठो आ ग्रंथनी आदिमां हकीगत स
हित नाख्यां छे. परंतु ते चित्र हालमां मात्र पांचशो
पुस्तकोमांज नाखीने पुठां बंधावेलां छे,माटें जे साहेबो
लगभग एक वर्षनी अंदर ए पुस्तक खरीद करशे, ते
[illegible]ने ते रंगीन चित्र सायेंनुं पुस्तक मली शकशे.

तेमज आ ग्रंथ, सर्व श्रावक मंमलने उपयोगी होवाथी एमां कांइ पण फायदो थवानी आशा राखतां पुस्तक गपतां जे खरच लाग्यो छे, तेटलीज रकम उपजाववा माटें हालमां मात्र एनी किंमत रु० ३) अंके त्रणज राखेली छे. ए वातनो निश्चय करवा माटें प्रथम जे रत्नसार नामें पुस्तकनो बीजो भाग बार रुपैयानी किंमतवालो गपायो हतो, तेमां जेटला श्लोकसंख्यानो समावेश करेलो छे, तेटलाज श्लोकसंख्यानो आमां पण समावेश कस्या छतां तेना चतुर्थांश जेटली किम्मत राखी छे. ते उपरथीज सज्जनोना मनमां मह्यारुं लखवुं खरेखरुं समजाइ जशे.

माटे हुं आशा राखुं छुं के जे साहेबो आ पुस्तक मां आवेली सर्व बाबतो वांची जशे, तेमने आ ग्रंथ अवश्य प्रिय लागशे, तेथी ते उपकारी सज्जनो बीजा पण पोताना निकटवर्त्ती बंधुउने आ पुस्तक खरीद करवानी नलामण करी पोतानी सुजनता प्रदर्शित करशे.

आ पुस्तक गपतां आगल माफक अजितनाथनुं एक स्तवन तथा श्रीपार्श्वनाथनुं एक स्तवन बे वखत गपाइ गयेलुं छे, तेमज प्रुफ तपासतां नजरदोषथी तथा स्थूल बुद्धिना प्रसंगथी मह्याराथी जे कांइ आ ग्रंथमां अशुद्धता रहेली होय, ते गुणज्ञोयें मह्यारा उपर क्षमा राखी सुधारीने वांचवुं. हुं आ ग्रंथमां थयेली अशुद्धता संबंधी समस्त वांचक वर्गनी सार्थे मिच्छामि दुक्कडं करुं छुं. ते स्वीकारशो. किं बहु विलेखनेन.

॥ अथास्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका प्रारंभः ॥



॥ प्रथम चैत्यवंदनादिक (१७) नी अनुक्रमणिका ॥

॥ आरति तथा मंगलीक दीपक (८) ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रजीनां स्तवनो (११) ॥

॥ टूटक प्रनातीयां (३२) नी अनुक्रमणिका ॥

श्रीशत्रुंजयना स्तवनादिक (२४)नी अनुक्रमणिका॥

॥ श्री समेत शिखरादि तीर्थोनां स्तवनो (८) ॥

॥ लूटक न्हानां स्तवनो (१७) नी अनुक्रमणिका ॥

॥ महोटां स्तवनो तथा रास अने चोढालीयां वगेरे (१७) नी अनुक्रमणिका.

॥ छंद (९) नी अनुक्रमणिका ॥

॥ सवाई (४९) नी अनुक्रमणिका ॥

॥ श्रीआदिजिननां स्तवनो (२१) नी अनुक्रमणिका

॥ केशरीयाजीनां स्तवनो (६) ॥

॥ श्रीअजितनाथनां स्तवनो (११) ॥

॥ श्री संन्नवजिननां स्तवनो (१०) ॥

॥ श्री सुविधि जिननां स्तवनो (१०) ॥

॥ श्री शीतलनाथनां स्तवनो (१०) ॥

॥ श्री श्रेयांसजिननां स्तवनो (७) ॥

॥ श्रीवासुपूज्य जिननां स्तवनो (६)॥

॥ श्रीकुंथुजिननां स्तवनो ॥ ७ ॥

॥ श्री अरनाथजिननां स्तवनो ॥ ६ ॥

श्री मल्लिजिननां स्तवनो ॥ १० ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रतजिननां स्तवनो ॥ ६ ॥

॥ श्रीनमिजिननां स्तवनो ॥ ६ ॥

श्रीसीमंधरप्रमुखवीशविहरमानजिननां स्तवनो॥२५॥

॥ लावणीयो १८ नी अनुक्रमणिका ॥

॥ होरी वसंत वगेरे ॥ ११ ॥ नी अनुक्रमणिका.

अथ प्रास्ताविक कवित, दोहा, चोपाइ वगेरे.

अथ बूटक बोलोनी अनुक्रमणिका.

ए पुस्तकमां सर्वमली (७९७) बाबतो छे.

॥ इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥

जिनमंदिर

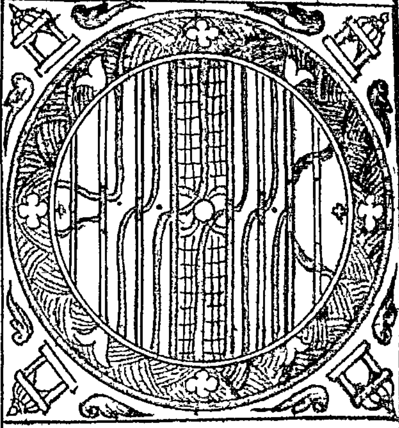


॥ अढी द्वीप वर्णनम् ॥

तीर्छा लोकमां असंख्याता द्वीप समुद्र छे, तेना मध्यभागे पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण अढी द्वीपने विषे मनुष्यनी वस्ति छे ते अढी द्वीपमां पण प्रथम जंबुद्वीप मध्यमां गोळ थाळीने आकारे लाख योजनुं छे तेमां सात वास क्षेत्र छे. तिहां पहेलुं दक्षिण दिशा तरफ जेमां आपणे वसीये छैये ते भरत क्षेत्र छे, तेनी वचमां वैताढ्य पर्वत छे, ते पर्वतनी दक्षिण बाजु त्रण खंड तथा उत्तर बाजु त्रण खंड मळी छ खंड गंगा अने सिंधू नदीथी थयेला छे, ते छए खंडमां बत्रीश हजार देश छे ए भरत क्षेत्रनी सीमा चुल्ल हिमवंत पर्वत सूधी छे हिमवंत पर्वत पछी हिमवंत नामे युगलिया नुं क्षेत्र छे ते पछी महा हिमवंत पर्वत छे, ते पछी वळी हरिवर्ष नामे युगलीयानुं क्षेत्र छे. ते पछी निषध पर्वत छे पछी पूर्व पश्चिम एवा बे विभागे वहेंचाएलु थकुं महा विदेह क्षेत्र छे. तेनी वचमां मेरु पर्वत छे, अने मेरुनी उत्तर दक्षिणे देवकुरु तथा उत्तरकुरु ए बे युगलीयाना क्षेत्र छे, तथा चार महोटा गजदंता पर्वत छे, पछी नीलवंत पर्वत छे, पछी रम्यक नामे युगलीयानुं क्षेत्र छे, पछी रुपी पर्वत छे, ते पछी हिरण्यवत नामे युगलीयानुं क्षेत्र छे, ते पछी शिखरी पर्वत छे पछी छेहलुं उत्तर तरफ ऐरवत क्षेत्र छे अने जंबुद्वीपने फरतो बे लाख योजन पहोळो लवण समुद्र छे तेने फरतो चार लाख योजन पहोळो धातकी खंड चूडीने आकारे छे तेने फरतो आठ लाख योजन पोहोळो कालोदधि समुद्र छे तेने फरतो सोळ लाख योजन पहोळो पुष्कर द्वीप छे तेने अर्धे भागे आठ लाख योजन सुधीमां मनुष्य छे, तेटलो भाग मानुषोत्तर पर्वते करी वींटेलो छे, पूर्वे जंबुद्वीपमां जे पर्वत तथा वास क्षेत्र कह्यां, तेथी बमणा धातकी खंडमां छे, अने पुष्करार्ध द्वीपमां पण बमणा छे इति ॥

अढीद्वीप

जबुद्वीप



॥ मेरु पर्वत संक्षेप वर्णनम् ॥

मेरु पर्वत कनकमय वाटलो छे, तेनी ऊंचाई लाख योजननी छे तेमां एक हजार योजननो कंद पृथ्वीमांहे छे, अने ऊपर नवाणु हजार योजन छे, तथा ते शिखरने विषे एक हजार योजन पहोलो छे, अने नीचे धरतीमां तलीये दश हजार नेवुं योजननी ऊपर वली एक योजनना अगीयार भाग करीये तेवा दश भाग जेटलो पहोलो छे, ते लाख योजनना ऊंचा मेरुनी ऊपर वली चालीश योजननी ऊंची चूलिका छे, ते चूलिकानी ऊपर एक शाश्वत जिनमंदिर छे

ते मेरुना शिखरने विषे चूलिकाना तलीयामां पंडुक वन छे, तेमां चार दिशाये चार जिन भुवन छे. तिहांथी नीचे वली छत्रीश हजार योजन आवीये तेवारे मेखलाने विषे सौमनस्य वन छे, तेमां पण चार शाश्वत चैत्य छे ते सौमनस्य वनथी साडा बासठ हजार योजन हेठल आवीये तेवारे त्रीजुं नंदन वन छे, तेमां पण चार दिशाये चार जिन भुवन छे पछी ते नंदन वनथी पांचशे योजन हेठे आवीये तिहां समभूतल पृथ्वी छे, तिहां भद्रशाल वन छे, तेने विषे पण चार जिन प्रासाद छे, एम सर्व मली सत्तर जिन प्रासाद छे

मेरुनो पहेलो कांड हजार योजननो धरतीमां छे, ते माटी पाषाण, वज्ररत्न तथा कांकरानो छे, तेथी ऊपर बीजो सौमनस्य वन सुधी ६३००० योजननो कांड ते स्फटिक रत्न, अंक रत्न, रूपा तथा सोनानो छे तेथी ऊपर छत्रीश हजार योजननो त्रीजो कांड ते रक्तवर्ण कनकनो छे इति ॥

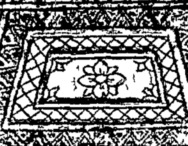



मेरु मेरु पर्वत














॥ अथ नरक दोहा प्रारंभ ॥

तिहां प्रथम, कयी नरक पृथ्वी सुधी कया प्रकारनी वेदना छे ते संबंधी दोहा

पापकर्मथी प्राणिया, उपन्या नरक मझार ॥ परमाधामी परस्पर, वेदन क्षेत्र विचार ॥१॥ त्रिहु नरके त्रण वेदना, बीजा त्रिकमा दोय ॥ सातमिये क्षेत्र कोरुथी, क्षण एक सुख नहि होय ॥२॥ लाही जगर कोरडा, चाबक तणा प्रहार ॥ जकड पकड कर बांधिने, दे मुद्गरनी मार ॥३॥ साकडे घाली सामटा, मारे विविध प्रकार ॥ घोर अंधारे घालिया, पडिया करे पुकार ॥४॥

॥ अथ पहेला आंकनां चित्र संबंधी दोहा ॥

तीक्ष्ण रौद्र परिणामथी, घणा जीव संहार ॥ वेर बांधिने ऊपना, नरक गतीने द्वार ॥४॥ परमाधामी घेरियो, साकडे घाल्यो सोय ॥ शस्त्र ऊघाडा तोलिने मारण लागा जोय ॥५॥ जीव हिंसा पापे करी, उपन्यो नरक मझार ॥ परमाधामी ते हने, हणवा करे होकार ॥६॥ जता जड जे जेकता, चपल स्वभावी जीव ॥ माथे मुद्गर पाडता, बहुली पाडे रीव ॥७॥ अनुचित कारज जे करे, तेहना एह हवाल ॥

॥ बीजा आंकना चित्रना दोहा ॥

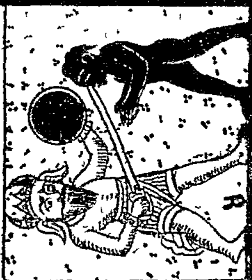
रागतणा रसिया हूता, सुणि सुणि करता तान ॥ धर्मकथा नवि सांभली, तेहना कापे कान ॥८॥

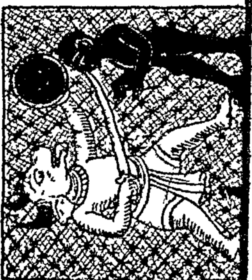
॥ त्रीजा आंकना चित्रना दोहा ॥

पर रमणीना रूपनो, विषय वधाएयो जोई ॥ देव गुरु निरख्या नहीं, काढे आंख्यो दोई ॥९॥

॥ चोथा आंकना चित्रना दोहा ॥

कच्ची कलिया तोडता, न गण्या रातने दीह ॥ जई नरकमां ऊपना, कटे नाक अबीह ॥१॥ दीघा दिक चन जीवने, आहेडी पाडघा कूद ॥ नाक विचारी नाथिया, तेहना करत निकंद ॥२॥ सुरभी गंध सूंघ्या घणा, गुच्छ फूल फूलक ॥ अत्तर फूलेल पडावीया, छेदे तेहना नाक ॥३॥







॥ पांचमा अंकना चित्रना दोहा ॥

जूठ वचन बोल्या घणा, कूड कपटनी खाण ॥ परमाधामी तेहनी, छेदन कीध जडताण ॥१॥ बोल रैसा सुख बोलता, किणरी न करे काण ॥ साचो हित न बोलता, छेदे जीभ जडताण ॥२॥

॥ छठा अंकना चित्रना दोहा ॥

घर घर लार जुता घणा, न कियो धर्म लगार ॥ अवसर तो चेत्यो नहीं, गले धूसर सहे मार ॥१॥ गाडी रथमा जोतिने, जालट छोडाव्या वाट ॥ अग्नि तपावी धूसरो, दई छेडावे घाट ॥२॥ वज्र कठोर सरीस तमा, छेडावे देई मार ॥ जाहिल छोडाव्या वाटमां, तेहना एह प्रकार ॥३॥ लाकडी लेई मारता, घणा घणेरा ढोर ॥ परमाधामी तेहने, बांधे जोडा जोड ॥४॥ पापी पाप पूरा कर्या, आव्यो अमारी पास ॥ बांधे धोसरो मेलीने, मारे सांकल रास ॥५॥ बांधे सांकल मेलता, बीपर मारे मार ॥ पापी रथ खेंच्या घणा, लोगवडु जनो चार ॥६॥

॥ सातमा अंकना चित्रना दोहा ॥

रस्ते लूट्या रहने, करी कोप अन्याय ॥ माकड मार्या तेहने, पील्या घाणी मांय ॥१॥ तोड्या कुंपला फूल लेई, गाल्या मूला कंद ॥ जीवे नाखीने, पील्यां करे आक्रंद ॥२॥ गरीब जीवने मारता, करता बहुत अन्याय ॥ जूं लिख पण मारी घणी, पील्या घाणी मांय ॥३॥

॥ आठमां अंकना चित्रना दोहा ॥

वनस्पति छेदन कर्यु, काप्या तरु वनराय ॥ घणा मूल कांदा डिया, कापे तेहनी काय ॥१॥ झटपट झूंट चामडी, त्रटत्रट तोडे मांस ॥ तरवारा धारे तनमां, लणे कसीया डास ॥२॥ लाजे बोबा मेलता, ज्यामे पडता जीव ॥ अण दीठा ने बोरता, करे नरकमें रीव ॥३॥

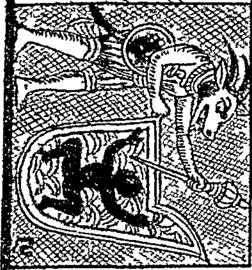
॥ नवमा अंकना चित्रना दोहा ॥

कसुवाई भवने विषे, कर्या पाप ने घोर ॥ परमाधामी तेहने, दे कुंभीमां बोल ॥१॥ कसाई ने लव जे कर्या, हिंसा कर्म अघोर ॥ कुंभीमां जई उपना, करता बूंबा बोल ॥२॥ सड्या धान्य भर्या घणा, तडके नाख्या जीव ॥ कुंभी मांहे उपनो, पडयो करे छे रीव ॥३॥ साहसिक थईने मारता, ससलाने वलि रोज ॥ कुंभीमा जई उपना, न मले अजर ने ओज ॥४॥ पापी पोक मेलावीया, रोक्या जीव विशेष ॥ कुंभीमा जई अवतर्या, ऊंडी पाडे चीस ॥५॥ कुंभी मांहे कापतणी, असता नरक होय ॥ यज्ञ होम कीधा घणा, तेहना फल ते जोय ॥६॥ लाय लूम लागी घणी, करता जोरा न्याय ॥ कुंभी मांहे नाखिया, छेजर [illegible]

॥ दशमा अंकना चित्रना दोहा ॥

फूल नवा सलोडता, दसरा वेगण गोर ॥ कांटा वींधे अंगमा, कर्मनी याले जोर ॥१॥ फूल नवारा ढांकता, फूला सेज बिछाय ॥ सुख भोग नियां तेहने, कांटे चापे काय ॥२॥ सूर्यमां सहम तपाविने, तीखी अणीया तोर ॥ चापे तेहना अंगमा, करतो सोर बकोर ॥३॥








॥ इग्यारमा चित्रना दोहा॥

कोमल कलिया फूलनी, तोडी गुंथ्या हार॥ सामली वृक्षे बांधीने, दे चाबक नी मार॥१॥ लीडे घणा कचोडला, तोड्या तरुवर फूल॥ बांध्या वृक्ष सामली, देवे न्यारा सूल॥२॥ जलमें जड जे जीवडा, तोड्या तरुवर पान॥ बांधे मस्तक आंधीने, ताये करे हेरान॥३॥ कूट सामली मोटका बांधे तरुवर डाल॥ तीजा जेहनो पानडा, जैसी जाज धार॥४॥

॥ बारमा चित्रना दोहा॥

मा बापे सुत मोहथी, पोढा दीधो पोष॥ नारी वशथी नी वल्या, [illegible] हम शोष॥१॥ छाती ऊपर बात दे, लाने देई मार॥ मात पिता गुण भोर ते सहता कष्ट अपार॥२॥ सुयरतणु मोहडु कीयु, दीया छातीरे पाय॥ लाते करीने लेहता, नीसरे किसे उपाय॥३॥

॥ तेरमा आंकना चित्रना दोहा॥

डोल भरोसा देईने, कपट कर्या घणी वार॥ पर्वत पडता दुःख सहे, ऊपर तरवारोरी मार॥१॥ वचन चूकाने नर हुवे, माया कपटी जेह॥ पटक पछाडी पर्वतें, भडजड करे देह॥२॥ भूठा साख भरावता, करता चुगली चाड॥ अेनावर यमदूत ते, करत पछाड पछाड॥३॥

॥ चौदमा चित्रना दोहा॥

सामली लइने छाहडे, पापी जेहो जाय॥ पान रूप शस्त्र पडे, जड जड होय काय॥१॥ सासु वहु सतापति, करती तोड कपट॥ परमाधामी तेहने, देवे दुःख उद्भट॥२॥ करना चावत रागरा, घरघर लाग पाड॥ कहेता बोल कलेसणी, ते लहे दुःख अपार॥३॥ नरक माहेथी नासता, कूट सामली जाय॥ ऊपरथी पडे पानडा, लागे मारया घाय॥४॥

॥ पन्नरमा चित्रना दोहा॥

सासु वहु सतापति, दुःख देती दिनरात॥ जठे नरकमां ऊपनी, ज्यांही छातीपर लात॥१॥ शोक्य तणा सुत ऊपरे, घमडी घेज धरता॥ पडु भंगारे आहणा, ऊपर भार भरत॥२॥ लडती पीयर सासरे, देती सजन सराप॥ कूडा कलंक चढावती, अवगुण गाली आप॥३॥ घात करे विश्वासदे, छल करती छक माह॥ निर्लज्ज नारी तेहने, दे वेदन अथाह॥४॥ अनुचित मारग जे करे, तेहना ए हवाल॥ मानजो धर्मज आदरे, पामे सुख रसाल॥५॥ लडती पीयर सासरे, करती कलेश कुरूप॥ चालेचाल असावती, [illegible]

॥ सोलमा चित्रना दोहा॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] पामे इष्ट आणंद ॥१॥










॥ अगीआरमा चित्रनो दोहो ॥

कोमल कलिया फूलनी, तोडी गुंथ्या हार ॥ सामली वृक्ष आधिने, दे चाबक
नी मार ॥१॥ हीडे वणाक रोवता, तोड्या तरुवर फूल ॥ आण्या वृक्ष
सामली, देवे न्यारा सूल ॥२॥ जल जल अग्नि बले रीया, तोड्या तरुवर
पान ॥ बांधे नरकड जाधीने, तावे करे हेरान ॥३॥ कूट सामली
मोटकू आणे तरुवर डाल ॥ तीजा जेहनो पालग, जैसी आडधार
॥४॥

॥ बारमा चित्रनो दोहो ॥

ना जाणे सुत मोहथी, पोढो ऊंधो पोष ॥ नारी वशथी नी वण्यो, कु
अचार्य दम शोष ॥१॥ छाती ऊपर लात दे, मांने दई लार ॥ मात
पिता गुण चोर ते सहता कष्ट अपार ॥ कुयरनुं मोहत कीयु, दीधा
छातीये पाय ॥ लाते करीने लेहता, नीसरे कुं से ऊपाय ॥२॥

॥ तेरमा आंकना चित्रनो दोहो ॥

कोल भरोंसा दईने, कपट करया घणी वार ॥ पर्वत पडता कुंज कहे,
ऊपर तरवारारी मार ॥१॥ वचन चूकाने नर हुवे, माया कपटी जेह ॥
पटक पछाडी पवते, कडकड करे देह ॥२॥ जूठा सागद खावता, कर
ता सुगली वाद ॥ जेरावर यमदूत ते, करत पछाड पछाड ॥३॥

॥ चौदमा चित्रनो दोहो ॥

सामली लईने छाहडे, पापी जेठो जाय ॥ पान कुंप शस्त्र मडे, खड
खड होय काय ॥१॥ सासु वहु संतापति, करती लोक कपट ॥ परमाधामी
तेहने देवे दुःख दपट ॥२॥ फरना चावत राग रा, घरघर भूंगा भाड ॥
कहेता लोक कुलेसणी, ते लहे दुःख अपार ॥३॥ नरक माहेथी ना-
शता, कूट सामली जाय ॥ ऊपरथी पडे पानडा, लागे मारया घाय ॥४॥

॥ पन्नरमा चित्रनो दोहो ॥

सासु वहु संतापति, दुःख देती दिनरात ॥ जेठ नरकमां ऊपनी, त्यां
छातीपर लात ॥१॥ शोक्य तणा सुत ऊपरे, धमकी धंज धरती ॥ पढु
मगारे आहणी, ऊपर लात भरत ॥२॥ लडती पीयर सासरे, देती
सजल सराप ॥ कूडा कलक चढावती, अवगुण गाती आप ॥३॥
घात करे विश्वास दे, छल करती छक माह ॥ निर्लज्ज नारी तेहने, दे
दे दुःख अथाह ॥४॥ अनुचित काम जे करे, तेहना एह हवाल ॥ सा
मली धर्मने आदरे, पामे सुख रसाल ॥५॥ लडती पीयर सासरे,
करती कलेश कुरूप ॥ वातेवात चलावती, दिसे क्रूर कूप ॥६॥

॥ सोलमा चित्रनो दोहो ॥

कुहाडे करी कापीया, लीला महोटा झाड ॥ परमाधामी तेहनो, मस्त
क छेदे फाड ॥१॥ फोरा कीरता वावडा, भूमि विदारण जेह ॥ पृ-
थ्वी काय आरंभनां, पामे कष्ट अछेह ॥२॥



डोगज कलिया कु
नी मार ॥४॥ १

॥ सत्तरमा चित्रना दोहा ॥

सासनजी, देखो नेरता, चपल स्वभावी रुच ॥ माथे करती पाडता, पल ॥ पाधुरीव ॥१॥ चित्र माहे भाता घडा, भम ओपता भडा ॥ नीटरू जा तेहने, मारे करसी मार ॥२॥
॥७॥

॥ अढारमा चित्रना दोहा ॥

मा बापे भूलवतो, करतो अनरथ मूल ॥ कामण करी गर्भ गलावतो अरघ देधु त्रिशूल ॥१॥ गुरुद्रोही चेलो हुवे, वेर विराधक जेह ॥ मार पिता गुपत मंत्रियो, पामे दुष्ट अछेह ॥२॥ मानवनो भव पामिने, छणि छतीजलचर जीव ॥ दया न आणी दिल मा, करतो पाप सदीव ॥३॥ लछण कर्म कीया घणा पाप कर्या अति जेह ॥ परमाधामी तेहने शूले परोवे देय ॥४॥ अग्नि आरंभ किया घणा, कीया हिंसा धर्म ॥ ते त्रिशूले उछालीया, देखो आया कर्म ॥५॥ कुसंगत कीवी घणी, जे ह सेवी परनार ॥ ऊंधे शूले परोवीया, दे वलि ऊपर मार ॥६॥

॥ ओगणीशमा चित्रना दोहा ॥

पाप प्रभावथी ऊपनो, कुंभी पाक नी माय ॥ ऊपर कूटे डागडा, शाहे कीडा खाय ॥१॥ वली ऊपर कूटे डागडा, त्रट त्रट त्रूटे काय ॥ कुंभी माहे पड्यो थको, सहनो दुःख अपाय ॥२॥

॥ वीशमा चित्रना दोहा ॥

चोरी करीने पारकी, लेता धननो राशि ॥ अथडावे आधा करी, देई दुःखी त्रास ॥१॥ धर्मी धर्मने धूतिया, करी कमाई कूर ॥ परमाधामी तेहने देता दुष्ट कडूर ॥२॥ पापी पैशो मेलता, घणा कीया आक्रंद ॥ नर्क नरकमे ऊपनो, परवश पाडे अंध ॥३॥

॥ एकवीशमा चित्रना दोहा ॥

वेर विछोहा पाडीया, जूठा कलाई आल ॥ चक्र भमाडी अरघीये पटक पछाडे काल ॥१॥ गला मरडी घरेणा लीया, आल हत्या करी एम ॥ पटके अरधी परोवीने, केरवे कुंभार जेम ॥२॥ कीया निलछन ढोरने, डाल्या नाखी आध ॥ गगडावी गिरि ऊपरे, जडे तेहनी साथ ॥३॥ हाथीतणा अंधने पिषे, फाड्या धरती पेट ॥ परमाधामी तेहने मारे जर छीनेट ॥४॥

॥ बावीशमा चित्रना दोहा ॥

कामी पीता होश हु, ढोल्या अणगलनीर ॥ तातू त्रांबु पावता, ऊठे बहुली पीर ॥१॥ हिंसा धर्मने आदर्यो, लागो कुकर्म केड ॥ परमाधामी तेहने, कुंभमे शीशु रेड ॥२॥ हणिया हुक्का पीवता, अग्नि जलादिक जीव ॥ तातु लोह नपावीने, भुज चाव्या करे रीव ॥३॥ करी अंगार अग्नि तणा, चलमलरी चड डोल ॥ गांजन तमाकु जे पीये, पामे नरकनी पोल ॥४॥








॥ त्रेवीशमा चित्रना दोहा ॥

सम सोगट नर्द आकुंचा, सेव्या व्यसन अपार॥ जाल्ह चोगगोलो करी, आपसुजसे भार ॥१॥ ऊपर मुद्गर मारता, भूंड महोदी पाड॥ करता जिम खरो नहीं, जेम करे चक लाकडा॥२॥ चोथु व्रतन आदरी, कीयो शीलनो भंड ॥ परमाधामी तेहने, मारे मुद्गर दंड॥३॥ एवा व्यसनने सेवता, पामे एह हवाल॥

॥ चोवीशमा चित्रना दोहा ॥

हणा खोह करि दडिया राज कुंकुम भद छात॥ नर्द नरकमा ऊपन्यो, माथे धरी करोत॥१॥ अग्नी तपावी धरतिये, ऊर्ध्व जेसाडी धार॥ जेनशा ताणे ताकिने, मापी करत पोकार॥२॥

॥ पच्चीशमा चित्रना दोहा ॥

अनाचार अति सेवतो, करतो घणा अन्याय॥ वज्र तणा कंटक करी, वीधण लागा पाय॥१॥ गलके शसी घरडे, दोडावे दई मार॥ किडतो टेढे पडे, पगनी पीड अपार॥ धरतीखुंधी अग्नि ज्युं, तीखी करवत धार॥ तिण ऊपर चढावता, करतो बहु पोकार॥३॥ साधुने संतापता, वचन कह्या अति घोर॥ परमाधामी तेहने शसी दई डेरा॥४॥

॥ छवीशमा चित्रना दोहा ॥

कलाल थईने काढीया, दारु अर्क रह॥ पापा कुलथी पामीये, नरक निवासमां आह॥१॥ रुधिर रुप मदिरा करी, प्यालो अग्नि तपाय॥ जुनश कीने पावता, वेदन सेही न जाय॥२॥ मद्य पीधु मानवभवे, कह्या न हेत छपाह॥ तरचो पाये लाल करी, तोहिन छूटे गमल॥३॥

॥ सत्तावीशमा चित्रना दोहा ॥

निज नारीने परिहरि, पर रमणीसे प्यार॥ सूला केर साथरे, घसे पाय भलार॥१॥ ज्युं ज्युं मूल जल जले, त्युं त्युं करे पुकार॥ परमाधामी जोर्तामा, ताहारा दृश्य संभार॥२॥ पेखी पराई गोरडी, ने अनुराग धरत॥ लूके कुडे श्वान जिम, लाजे पेट भरत॥३॥ हिंसा करीने कूलता, जणे भ्रशु मांस॥ नेहन हिसक गुरु मळ्या, पोहोंच्या नरके गोख॥ हेयुरु लोभी लंपटी, तहना मान्या वेण॥ अर्ध नरकमा ऊपना, वांशानो नहीं चेण॥ कोश पावड कीया घणा, ढोल्या अणगळ नीर॥ परमाधामी तेहने पग पकडीने चीर॥

॥ अठावीशमा चित्रना दोहा ॥

मून लईने लानिया, ना लाया गुरु पास॥ नर्द नरकमा ऊपन्या, जड जडे कन्या ताल॥१॥ विष दई माणस मारिया, करि करि क्रोध प्रचंड॥ परमाधामी तेहनु, शरीर करे शत खंड॥२॥















।आ ।सना । ॥

पर्वुनन सनाविया, निंदा किधी अपार ॥ ताते थले जाधिने, मुं
रडी नार ॥१॥ धालो देजी थरहरे, कृपण लागे देह ॥ हाहा नुकजा
गोरजे, कदी न करशु तेह ॥२॥

॥त्रीसमा चित्रना दोहा॥

धार स्नान क्रियानहीं, अंतरगत मन लाय ॥ अणगल पाणी
ढोलिया, पछी नरकमा जाय ॥१॥ जलक्रेलीने जे मता, ध्यान कीधी
जाय ॥ जलावे अग्नि जालना, पकड पापीना पाय ॥२॥ साधु तणी
निंदा करी, पूठे दीधी गाल ॥ उंधे मस्तक तेहने, आण अग्नी जे ज
ाल ॥ लाल लाल ने काल ॥ भांजी मूके तेहने,
॥३॥ मधु पुडा पाड्या घणा, डूंगर दव घाल्या घणा, जाल्या वनचर केइ
रूंधे दीधी जाल ॥४॥ परमाधामी तेहनी, जाले अग्नि देह ॥५॥

॥एकत्रीसमा चित्रना दोहा॥

जलचर जीव विराधिया, हिंसा न गणी जाय ॥ परमाधामी पटकता,
नदि वैतरणी मांय ॥१॥ न्हावण धोवण बहु किया, ढोल्या अणगल
नीर ॥ उजडी मारी डोलिया, नदी सरोवर तीर ॥२॥ नदि वैतरणी नीर
नुं, देखो दुष्ट स्वरूप ॥ रसी रुधिर ने पाचनो, कलकलतो रह रूप ॥३॥
जहु दुर्गंधि दूजिने, आवे अठे धाय ॥ नाखे पाछो साहिने परमाधामी
पाय ॥४॥ मोची लवण ने कन्या, मान्या परता जीव ॥ वैतरणीमां
नाखिया, घणी करावे रीव ॥५॥ वस्तु मुखथी, एम कहे, नहि वाक ए
मारो लगार ॥ ऊंधे मस्तके जाधिने, ऊपर दे वलि मार ॥६॥

॥ अत्रीशमा चित्रना दोहा॥

वेश्या विषय विकारथी, अति सेवी अनाचार ॥ नई नरकमां ऊपनी
सेहती कष्ट अपार ॥१॥ धूर्तपणे धन लेईने, वली न जूवे वाट ॥ हावे
भाव नित केलवी, मेलवि नेह निराट ॥२॥ वेश्या हुई माया करी,
सुख विलसे संसार ॥ नई नरकमा ऊपनी, घणो सहे यम मार ॥३॥

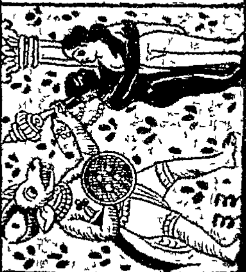
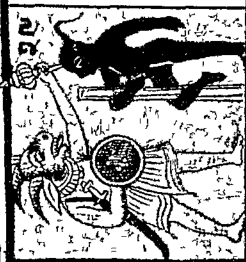
॥ तेत्रिशमा चित्रना दोहा ॥

इष्ट पिंड करनो हियो, संग कियो परनार ॥ अग्नि तपावी पूतली, जो
वे छाती जार ॥१॥ जडु जडु महाराज जे, मत घो मोटो मास ॥ छो
डो हासो करनो, जिम लउ थोडो श्वास ॥२॥ परनारी जे छूटो नहीं
तो लागे मोटो दाग ॥ परनारीने परिहरो, ऊपर वजारी आग ॥३॥
दाम दडे लोक लडे, नरके होय दुःख ॥ जिणने चढी जारमो, तिने
परनारी शुं प्रीत ॥४॥ परनारीना नेहथी, पाणी ऊतरी जाय ॥ थोड
सुजन ॥ नार अनंतो मांय ॥५॥ परनारीघर जाय ॥६॥
न सूवे आय ॥ जुगने चढी जारमो,

॥ चोत्रिशमा चित्रना दोहा॥

कूडकपट करी जोलवी, पर थापण मन राखी ॥ दीठी विश्वासने
॥ ॥ दलावण
नरकमा
मे ऊपन्या, देखो छेणारा तत




॥ પાંત્રીશમા ચિત્રના દુહા ॥

દાન દેતાં જે વારતા, કરતા રાગને દ્વેષ ॥ પરમાધામી તેહને
મુખમાં મારે મેખ ॥૧॥

॥ છત્રીશમા ચિત્રના દુહા ॥

વસ્તુ વેચણ આપિયા, ગાડા પોઠી ઊંટ ॥ સાહુ દહીને તો
લતા, અટકે માડી લૂટ ॥૧॥ એધાણ પરાં જે મારતા, દેતા
ઘડી ઉડાય ॥ કૂડા ખત્ત બણાવતા, પોહતા નરક મઝાર ॥૨॥
ધણી ધણીશું વિણજતા, જેણ દેણારા ચોર ॥ ક્રિયા પસારા
પાપના, ક્યૂ કરિ છૂટે ઢોર ॥૩॥ તાડી તીર કટારિયા, આ
મા સામી આય ॥ પાપ ક્રિયા જવ પાછલે, કોણ છુડાવે આ
ય ॥૪॥ પૂરવ વયર સમધથી, કરે પરસ્પર ઘાત ॥ શસ્ત્ર
ઝટોઝટ મારતા, રૂપે જેસા ક્રિરાત ॥૫॥ પાપી પારાની પરે,
મળી મળીને જાય ॥ કરડા વચન કહી ઘણા, ઊપર મેલે ઘાય ॥૬॥

॥ સાડત્રીશમા ચિત્રના દુહા ॥

ઘેરૈયા હોળી તણા, હસતા પાણી ઢોળ ॥ પરમાધામી જોળિયા,
ઘણી ઉકાવો રોળ ॥૧॥ તરૂઆ તેલ ઉકાળિને, આણી કોપ
અપાર ॥ પિચકારી ભરિ છાંટિને, ઊપર છાંટે ખાર ॥૨॥ ઓ
છે પાણી માછલી, તરફડ કરતી તેહ ॥ ભરકો લચીને ફડકતા,
દાઝે ત્યાંરી દેહ ॥૩॥ પરમાધામી આગથી, તેલ તપ્ત કરેહ ॥
ભરી પિચકારી તેહને, છાટે વેદન અછેહ ॥૪॥ આવો રે વડ ઘેરિયા
પાપકરમ હુશિયાર ॥ છાંટ્યો તાતા તેલશું, ઉપર લગાવ્યો ખાર
॥૫॥ માય સુણે ભગિની સુણે, સુણે વળિ જોરુ ભરતાર ॥ ગાવે ઉ-
ઘાડી ગાળિયા, લાજે નહિં લગાર ॥૬॥ હોળી કલહનુ મૂળ છે,
લાજ હીણ નર થાય ॥ બાળકનો ઓરે રહે, પણ અકલ ગુઢાની જાય ॥૭॥

३५

३६

३७

॥પાંત્રીશમા ચિત્રના દુહા॥

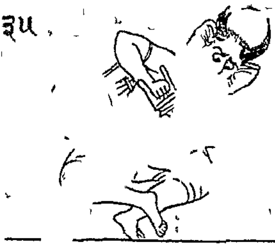
દાન દેતાં ને વારતા, કરતા રાગને દ્વેષ॥ પરમાધામી તેહને મુખમાં મારે મેખ॥૧॥

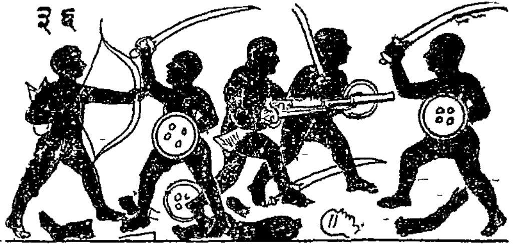
॥છત્રીશમા ચિત્રના દુહા॥

વસ્તુ વેચણ આપિયાં, ગાડ પોઠી ઊંટ॥ સાહ કહીને તોલતાં, ચઉટે માડી લૂંટ॥૧॥ એંધાણ પરાં ને મારતા, દેતા ઘડી ઉડાય॥ કૂડા ખત્ત અણાવતા, પોહતા નરક મઝાર॥૨॥ ધણી ધણીશું વિણસતા, લેણ દેણારા ચોર॥ ક્રિયા પસારા પાપના, ક્યૂ કરિ છૂટે ઠોર॥૩॥ તાકી તીર કટારિયા, આમા સામી આય॥ પાપ કિયા જવ પાછલે, કોણ છુડાવે આય॥૪॥ પૂરવ વયર સબંધથી, કરે પરસ્પર ઘાત॥ શસ્ત્ર ઝટોઝટ મારતા, રૂપેં ભેંસા કિરાલ॥૫॥ પાપી પારાની પરે, મળી મળીને જાય॥ કરડા વચન કહી ઘણા, ઊપર મેલે ઘાય॥૬॥

॥સાડત્રીશમા ચિત્રના દુહા॥

ઘેરૈયા હોળીતણા, હસતા પાણી ઢોળ॥ પરમાધામી બોલિયા, ઘણી ઉડાવો રોળ॥૧॥ તરૂઆ તેલ ઉકાળીને, આણી કોપ અપાર॥ પિચકારી ભરિ છાંટીને, ઊપર છાંટે ખાર॥૨॥ ઓછે પાણી માછલી, તરફડ કરતી તેહ॥ ભરડો લચીને ફુકતા, દાઝે ત્યાંરી દેહ॥૩॥ પરમાધામી આગથી, તેલ તપ્ત કરેહ॥ ભરી પિચકારી તેહને, છાંટે વેદન અછેહ॥૪॥ આવો રે વડ ઘેરિયા પાપ કરમ હુશિયાર॥ છાંટ્યો તાતા તેલશું, ઉપર લગાવ્યો ખાર॥૫॥ માય સુણે ભગિની સુણે, સુણે વલિ લોક અપાર॥ ગાવે ઉઘાડી ગાળિયા, લાજે નહિં લગાર॥૬॥ હોળી કલહનુ મૂળ છે, લાજ હીણ નર થાય॥ બાળકનો ઓરે રહે, પણ બડકણુદાની જાય॥૭॥


३५


३६







॥ अडत्रीशमा चित्रना दोहा ॥

हंसगइ सरीखा छोकरा, करता मनना जेह ॥ गणिका सुवारे मारता,
ज्यारे लाग्यो पाछो नेह ॥१॥ लिया सिंघारा आकडा, डाभ्या नरनाल डा॥
क्षणक सुचितने कारणे, करुण लगाया लंक ॥२॥ सिंह सिंहुर कीधा घणा,
जाख्या वयर अथाग ॥ पाप करम थी पामिया, नरक निगोदडी लगाग ॥३॥
परमाधामी वाघना, रूप करी विकराल ॥ डसता डाच्या काढीने, सहु दस
जल विशाल ॥४॥ सिंह नर्णी भव सांभळ, नाच्या वनचर जीव ॥ छि
क भवमें किलिया, ते करता अति रीव ॥५॥

॥ ओगणचालीसमा चित्रना दोहा ॥

जुतो रमतो शीकारी, कीनी अहोत जुवारी ॥ कर करम जुवारी घात, पडि-
यो नरक मझार ॥१॥ छेणगे मास नृहवोर, सूला करने जयावोर ॥ तरवो
करकर लाल, पकड पापीने पादोर ॥२॥

॥ चालीसमा चित्रना दोहा ॥

धोबीने भव धोईया, चार वस्तर वेश ॥ जलचर जीव विणासिया, ज
णगल नीर अशेष ॥१॥ नरकवास भेला थया, नरकावासी माहे ॥ जन
कड पकड यमदूत ते, करत पछाड पछाड ॥२॥ धोबी कपडा धोवतोरे, शिला
ऊपर पछाडरे ॥ त्यु परमाधामी पग पायक, पापीने पछाडे ॥३॥ अणुत
मन भावेरे, मा गणिजनने लावरे ॥ वारवार कहुं तुम आगेरे, मेलु ताहु
विनती मानोरे ॥४॥ तब बोले यम राय रे, पाप कीना सवाय रे ॥ तु नरक
तणा दुःख जीवे, तोहु कुमु विलजावरे ॥५॥ दिलमां दया न आणीरे,
पाप करी मोज माणीरे ॥ तु नरकमां पडयोरे, परभवनी चिंता न आणीरे
॥६॥ परने त्रासमें पाडता, करी करि चाडी क्रूर ॥ गेभी शिला ऊपरे, मा
निक्यो चकचूर ॥७॥ पथ्थर ऊपर पछाडियो, छूटे लोही धार ॥ कर्मा
चूटे तेहने धोबीनो अवतार ॥८॥ चक्षु परस्त्री देखता, कूडा माडा रूप
॥ शिलातले चांपिया लार दई भरपूर ॥९॥

॥ अेकतालीसमा चित्रना दोहा ॥

मद मांस लक्षण विपाक दोहा ॥ बहु जीव मरावारे मधु मांस ले आवारे ॥
ते कर्म उदयमे आया रे अबु रोवे पापी जुवडारे ॥१॥ तव बोले करलीडीरे
अम्ह्यो मोह छोडीरे ॥ नर भवमें नधुरे, श्री जिनधर्म आदर्युरे ॥२॥
कीयो उपकार न वी सांभर्यु रे ॥ तजने तरकी बोल्यारे, सुपको रहेमा-
हल्यारे नरनाभव पायोरे, तुं तायुही गमायोरे ॥३॥ घोयो चोख्या
देहु दह विसर गयोरे ॥३॥ अेस गणरा अडी तारे, कीया विण
नहीं सरतारे ॥ ते तो हरि न त्यागीरे, आवाने लय लागीरे ॥४॥
घणारी जाल उतारोरे, ऊपर आग स्यारोरे ॥ हवे भाडी मोवर
मुख लारे, चीधी तेने त्रिशुलारे ॥५॥ मार मार करता रहीये रोषे
रलार ॥ त्यारे वडवड लागी पापी धू जयारे ॥ किया पाप करमने भू-
ज्यार ॥ छीपाना भवने विषे, कीधा रंगणपास ॥ परमाधामी ते
हने घणो पमाडे त्रास ॥









॥ बेतालिसमा चित्रना दोहा ॥

हणे कुवने घणे भकारेरे, अने परमाधामी मार ॥ वैक्रियरूपे जनावरने, दोल्यु सुहृद मावतने ॥१॥ दिक होय उकालारे, भुख तृष्णा अकलारे॥ तोडे पापीने आपरे, राखी चाच अनायरे ॥२॥

॥ त्रेतालिसमा चित्रना दोहा ॥

चोरीभन्ध्या पोसमा, तनर मोर चकोर ॥ अर्थ नरकमां ऊपन्यो, जमतो कष्ट कठोर ॥१॥ कोकी करता कलाकल, अटपट तोडी भाव ॥ परमाधामी पापीने, धनकी लाग थाय ॥२॥ नीचनणे नव नाखिया, नहीं सरोवर नास ॥ इया न जाणी हिंसमां, रोहनो नरक विचाल ॥३॥ ती जीन्या चालुकनी, करड करिकरि कोपाव लग्या गृधने पजिया, उलट नचिया टोप ॥४॥ इणा टोप करि कोधसे देयहेज भहार॥ लीम लपकर नरकमां, नाजे नरकमझार ॥५॥ कग करे कराणीरे, ओल जान विकराळीरे ॥ उडउड जाही चाचेरे, नाजे देह विदारेरे ॥६॥ अंगोपांगे चिन्न्या रे, चायतणा देईकराररे ॥ वेलन जहुली धायरे, थरथर भयकायरे ॥७॥

॥ चुमालिसमा चित्रना दोहा ॥

सूयर होय कुआलारे, कालाने विकरालारे ॥ फाडे पापीने आयरे, करि करि तुकडी लालारे ॥१॥ नाली देजु थेजघजे, न माहे नाजे भाट ॥ परमाधामी तेहना, काटे घेनु हाथ ॥२॥ सूवर मावरे जोकडा, हरिणादिक नाकजव ॥ मसन्या मान्या अहोनिश करतो पाप सदीव ॥३॥ परमाधामी तेहने, करी सूवरना रूप ॥ हणता हर्ष धरीय एो, कगी अहु क्रोधकुरूप ॥४॥

॥ पिस्तालीसमा चित्रना दोहा ॥

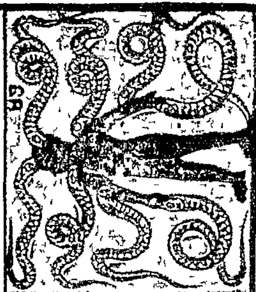
घणा दोडाव्या घोडला, मान्या जरठा जाण ॥ करे शिकार सामटी, न गणी धर्मनी आण ॥१॥ पीले वरणे सोनेरीरे, कालि लीक इन केरीरे ॥ कथ वाघना रूपरे, शार्दूल केसरी विरूपरे ॥२॥ पाप कर्मथी मारिया, मरी नरकमां जाय ॥ परमाधामी वाघनो रूप करीने जाय ॥३॥ ऊछनता चोकालोरे, गाजकरे असराळारे ॥ जणजणो गोर्थे, याहाराने, पापीने पकडो पछाडरे ॥४॥ जजला घरसागरे ॥ मनवाला लागारे ॥ त्यु परमाधामी दुःखदायक, घणी आण वलगारे ॥५॥ दिन हसरा कूप्यारे, जणे जीवणने कुरुयारे ॥ अज कोई आय छडावारे पड्या करुआ करे पीडावारे ॥६॥ अजनहि तोहि छोडरे, करे लाडने ओडरे ॥ परवश पडियो आयरे, मार होडाहोडरा ॥७॥ मातमच्छर मान्या घणा, कनी न मानी वात ॥ ऊपने ते नरकमां, घणी पामे छे त्रास ॥८॥

॥ छेतालिशमा चित्रना दोहा ॥

सिंह शिकार कियाघणा, आच्या वेर अथाग ॥ पापकरीने ऊपन्या, नरक माहे दुःख लाग ॥१॥ परमाधामी वाघना, रूपकरी विकराल ॥ अंगोपांगे वेदना, सहजव पहुलहना ॥२॥

॥ सुडतालिसमा चित्रना दोहा ॥

मार देवे यमरायारे, तपे तने सवायारे ॥ करी वैक्रिय सरूप, चिना सरप लगा यारे ॥१॥ लव करे कायकायारे, तोडणा नागा मायारे ॥ सुने सुख नहीं कांईरे, दुःखी चेछे घणा आहिरा ॥२॥ सुकर होशे सुखरे, परभवने दोखु जरे ॥ ते तो धर्मनकी धोरे, श्री जगन्नाथनोरे ॥३॥ अज सुकत रोवेरे, कीधा कर्म न जोवेरे ॥ अजु धन पशु सु भाजेरु, पामी कुथडारे ॥४॥ करतो महादो महारोरे, कुटम्ब ने परिवारोरे॥ अजना किणरो सानहीरे, नहीं कोई तारहरे ॥५॥ मुसलमान तणो भवे, मान्या वीछी साप ॥ पापकर्मथी पानियो, नरक कष्ट महाताप ॥६॥ डसा टापकरि क्रोधमां, देवे दंजमझार ॥ लीम लपकर नरकमां, नाजे नरकमझार ॥७॥ सात व्यसनने सेवता, करता मद्दोन्न पाप ॥ नर्थ नरकमां ऊपन्या, तेहने वीट्या साप ॥८॥ मातपिताने पीडतो, करतो कगडा पाप ॥ अर्थ नरकमां ऊपन्यो, वीटी मलयगाताप ॥९॥




॥ बेतालिसमा चित्रना दोहा ॥

रुपे कुवने घणे मरीरे, अने परगावानार ॥ वैक्रिय मृग्ध जनावारे, होल्यु सूडल
पकडेरे ॥१॥ एम दिक होय उकरारे, तुज नृष्णा अकालरे ॥ तोडे पापीने आपेरे,
रखी चाल्य अनायरे ॥२॥

॥ त्रेतालिसमा चित्रना दोहा ॥

पोशीमाड्या पासमा, तेनर मोर चकोर ॥ जेथे नरकमां ऊपन्यो, अमत्तो कह
कठोर ॥१॥ क्रों क्रों करता कगडा, त्रटत्रट तोडी जाय ॥ परमाधामी पापीने,
धरडी लाल पाय ॥२॥ नीचनपणे लद नाखिया, नदी सरोवर जल ॥ हपान जाणी
दिहक्रमा, पोहतो नरक विचाल ॥३॥ ती जांध्याथा तुडनी, करइ डरिकरि कापा॥व-
लग्या गृधने पखिया, उत्कट नखिया टोप ॥४॥ रुपा टोपकरि क्रोधसे देवदेव महत॥
लीम लपकर नरकमां, नाखे नरकमझार ॥५॥ कागकरे रूपालीरे, बोले जाल
विकरालीरे ॥ उडउड जाही चांचेरे, नाखे देह विदारेरे ॥६॥ अशापागे विलख्या
रे, चांच तणा देइ गणमारे ॥ वेदनबहुली थायरे, थर थर कापकायरे ॥७॥

॥ चुमालिसमा चित्रना दोहा ॥

सूवर होय रूप आलीरे, मीलाने विकरालीरे ॥ काडे पापीने आयेरे, करी करि तुकडी
खातारे ॥१॥ तानी वेदु येज घजे, तमाहे नाखे जाट ॥ परमाधामी तेहना, काढे ऐनु
हाथ ॥२॥ सूवर सावर भोकडा, हरिणादिकना कुंवा ॥ मसल्या मान्या अहोनिश
करतो पाप सदीव ॥३॥ परमाधामी तेहने, करी सूवरनु रूप
णोकरी बहु क्रोधकुरूप ॥४॥

॥ पिस्तालीसमा चित्रना दोहा ॥

घणा सेजाव्या घोडला, मान्या वसचयन न सुहाय ॥ पर परिवादना
कारण ॥१॥ पडे नरकमां जाय ॥१॥ परमाधामी तेहने, केहना
लकेसरी
कुच अपार ॥ अहि वीछी चलगाडिने, दिये वलि ऊपर मार ॥२॥
अण दीठी अण सांभली, करे पराई वात ॥ आप पिड पापे-
भरे, ते चंडाल कहात ॥३॥ अतुली भूल निद्रा तणुं, लाग्यु
व्यसन अछेह ॥ रोहिणी पुत्रीपरे, पामे अनरथ तेह ॥४॥
गांडा गूंगा छे हतो, मान्या गरिबा रंक ॥ जई नरकमां ऊपन्या,
तोडी भांये डंख ॥५॥ चाडी आघी चोतरे, करत घणेरा पाप
जई नरकमां ऊपन्या, काटे वीछू साप ॥६॥

॥ छाचनमा चित्रना दोहा ॥

मन मेलो मीठो मुखे, कूड कपटनो कोश ॥ पाप करम पोते करी
परना काढे दोष ॥१॥ दुर्जन सज्जन थई मले, बोले मधुरी
वाण ॥ दुर्जन कुटिलाई पणु, नवी तजे करे हाण ॥२॥ पाप अढा
रे सेवता, पहोतो नरक मझार ॥ परमाधामी तेहना, करे कट्यारी
मार ॥३॥ लीडथी घाली भाथमां, आरणी कोव कठोर ॥ कुटिल
कटारी मारता, काई न आवे जोर ॥४॥



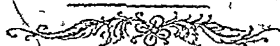
॥ त्रेपनमा चित्रना दुहा ॥

छत्रीश प्रकारें रसवती, निपजवे रुडीयार ॥ शाक पाक बहु सालणा, नित आरोगे सार ॥१॥ कुमनणा रमिया थका, न करे धर्म लगार ॥ लक्ष्य अलक्ष्य न ओळखे, माने धन्य अवतार ॥२॥ पोतानो पिंड पोषियो, न दियुं सुपात्रे दान ॥ स्वजनादिकनि राचियो, माच्यो मन धरि मान ॥३॥ हसतां आधा छे शथी, कंदमूळ पशु मास ॥ भोजन कीधां रात्रिना, न गण्यो दोष दीसांस ॥४॥ छेदी कुमली काकडी, आंधां लक्ष्य अलक्ष्य ॥ परमाधामी तेहने, देवे बहुलां दुःख ॥५॥ पाप सेवी नरके गयो, अशरण थयो अनाथ ॥ परमाधामी तेहने, दुर्गंध कवळ दे हाथ ॥६॥

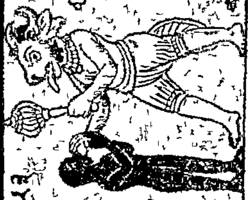
॥ चोपनमा चित्रना दुहा ॥

मेणा माछी मेघडा, कोळि वाघरी जेह ॥ श्वान शिकार दोडाविने, जीव हणाव्या तेह ॥१॥ लाकी मान्या तितर, विविध वनचर जीव ॥ हत्या करिने ऊपन्यो, नरके करतो रीव ॥२॥ परमाधामी श्वानना, रूप करी विकराळ ॥ डसता ढा ख्याडिने, तडफडता नत काळ ॥३॥ पूरव पाप प्रसादथी, करता सोर अघोर ॥ परवश पडिया आपडा, भमता दुष्ट कठोर ॥४॥ पाप करीने कूलता, लगार न आणी लाज ॥ परमाधामी तेहने, करतां तीरन मार ॥५॥ वारे वाडे अनेरता, घणाने करता पीड ॥ परमाधामी तेहने, लाठी मारे तीर ॥६॥ लाठी देता तरवार, तडफड मरता जीव ॥ उपज्या ते पाप दलमां, शोगे क्रूरे सदीव ॥७॥

इति नरक वेदनां वर्णन दुहा समाप्त






तुपाल तेजपाल मंत्रीश्वरे जे जे धर्म कार्य कर्या छे ते
संक्षेप वर्णन विक्रम संवत १२७८ना वर्षमा एक पंडिते
छे ते नीचे प्रमाणे लखीये छैये

१३०० तेरशे श्री जिन प्रासाद शिखरबंध कराव्या
३२०२ त्रण हजार बशेने बे प्रासाद जुर्णोध्धार कराव्या
२३०० बे हजार ने त्रणशे महेश्वरना प्रासाद कराव्या
१०५००० एक लाख ने पांच हजार नवीन जिन बिंब भराव्या
१००००० एक लाख महेश्वरना लिंग स्थाप्या
८४ चोराशी पाषाण बंध्ध सरोवर कराव्या
९८४ नवशे ने चोराशी पौषध शाला करावी
८८२ आठशे ने ब्याशी वेदशाला करावी
७०१ तपस्वीयोने रहेवा सारु सातशे ने एक मठ कराव्या
४०० चारशे पाणीना परब कराव्या
३६००००० छत्रीश लाख द्रव्य खरचीने ज्ञान पुस्तकोना भंडार कराव्या
३००००० त्रण लाख द्रव्य खरचीने खंभायतमा ज्ञानभंडार कराव्या
१८९६००००० अढार क्रोडने छन्नु लाख द्रव्य शत्रुंजय तीर्थने विषे खरच्या
१८८३००००० अढार क्रोडने त्र्याशी लाख द्रव्यनो श्री गिरनार तीर्थे व्यय कीधो
१२५३००००० बार क्रोडने त्रेपन लाख द्रव्य श्री आबु तीर्थे खरच्यु संवत १२८६ना वर्षे आबुये पायो नाख्यो ते संवत् १२९२ना वर्षे आबुये ध्वज चढावी
५०० पांचशे सिंघासन हाथी दांतना कराव्यां
५०५ पांचशे ने पांच समोसरण कराव्या
७०० सातशे नीशाल भणवा माटे करावी
७०० सातशे धर्मशाला करावी
७०० सातशे शत्रुकार मंडाव्या, एटले सदाव्रत कराव्या.
५०० पांचशे ब्राम्हण चार वेदना भण नित्यप्रत्ये वेद भणता हता. वर्ष प्रत्ये त्रणवार संघपूजा सामी वात्सल्य करता हता.
१००० एक हजार कापडी दिन प्रत्ये दानशालाये आहार लेता हता
१२॥ साडीबार यात्रा श्री शत्रुंजयनी कीधी





चौद राजलोक — मनुष्याकारे छे



२१ एकवीश आचार्योने पद थापना करी
१००० एक हजार सिंहासन महात्मा निमित्ते कराव्या
३५०० त्रण हजारने पांचशे तपोधन गच्छ सन्यासीनी था
पना करी
१००० एक हजार संघ पूजा करावी
१८०० अढारसे साधुओ एकला महात्मा आहारचोदोरना
८४ चोराशी मसीत तुरक लोकोनी करावी
३००००० त्रण लाख द्रव्य खरची श्री शत्रुंजये तोरण बंधाव्यु
४०० चारशो परकन्या परणाव्या
३००००० त्रण लाख द्रव्य खरची हने तोरण बंधाव्यु
३००००० त्रण लाख द्रव्य खरचीने द्वारिकाये तोरण बंधाव्यु
४६४ चारशो चोसठ वाव्य करावी
९०० नवशे कुवा कराव्या
३९३९२१८०० सर्व मली त्रण अब्ज तहोत्तर क्रोड अहोतेर लाख अ
ढार हजार आठशो शोल लोठीये पीएा एटलु द्रव्य
पुण्य माटे खरच्यु संवत १२८८ना वस्तुपाले स्वर्गा
रोहण कर्यु.
हवे तीर्थयात्राये गया तेवारे साथे ने परिवार लीधो
ते कहे छे
२४ चोवीश रथ हाथी दांतना संघमा हता
४५०० चारहजारने पांचशे सहेज वाला संघमा हता
४५०० चारहजारने पांचशे गाडला संघमा हता
११०० अगीआरशे वहेल
५५५ पांचशे ने पांच पालखी साथे हती
२००० बे हजार पोठीया हता
७०० सातशे सुखासन
२२०० बे हजार बशो श्वेताम्बर साधु साथे हता
११०० अगीयारशो दिगम्बर वेषधारी साधु हता
४०८ चारशो ने आठ ऊंट साथे हता
४५० चारशो ने पच्चाश जैन गायन करनारा लोक सं
घमा हता
१००० एक हजार कदोई भीठाई करनारा साथे हता,
३३०० त्रण हजार ने त्रणशो चारण साथे हता
३३०० त्रण हजारने त्रणशो भाट साथे हता
१३५० कुलार माटीना वासण बनावनारा साथे लीधा
४००० चार हजार घोडा साथे हता


छ लेस्याऊपर जानुवृक्ष नु दृष्टांत.

७००००० सात लाख माणस साथे हता
५०० पांचशे सुतार साथे हता
३५० त्रणशेने पच्चाश दीवटिया साथे हता
१००० एक हजार लुहार साथे हता
एटला सघना परिवार सहित यात्राये करया
हवे बीजा पण महोटा महोटा संसारी काम कर्या
ते लखीये छैये
३६ छत्रीश गढ कराव्या
६३ त्रेशठ वखत लडाई करवा माटे संग्रामे चडीने जय मेळव्युं
२४ चोवीश जिनभवनी जोलावी
१८ अढार वर्ष व्यापार कर्यो
१००० एक हजार वर्षासन आप्या
४ चार राजा सेवा करता हता
१८०० अढारशे वहाण कराव्या हता
वस्तुपाल तेजपालनी विस्तारवाला आ पुस्तकमा मागलिक रूपे आ रचना नाखी छे ने अन्य यवनादिकोना स्थानकोमा द्रव्य व्यय कर्यु छे ते पण जैनने दीपाववा माटेज छे ते एमनो चरित्र वाचवाथी समजशे. वस्तुपाल संवत १२९८ मा स्वर्गारोहण थया अने तेजपाल संवत १३०८ मा स्वर्गारोहण थया छे, इति श्रेय

॥ अथ लेश्यास्वभाव दोहा ॥

षट्लेश्या कहि जुजने, कृष्ण नील कपोत ॥ तेजो पद्म छट्ठी शुक्ल, परिणामे सब होत ॥१॥ कठियारा षट एकठा, काष्ठ लावे कान ॥ जूजजूगी मन आप्रतर, देख्यो सफल समान ॥२॥ कृष्णाथड कटण कहे, डाला काटण नील ॥ कहे कापोति लघु डालि सब, फल त्यो तेजस लील ॥३॥ पद्म कहे पक्व फल लियो, शुक्ल कहे सना जा धरती पडिया पक्व फल, त्यो भावो कहे जजा ॥४॥ जिनकी जैसी लेसिया, तैसा बांधे कर्म ॥ सद्गुरु की गम जो मिले, जय जगतको भर्म ॥५॥ इति षट्लेश्या स्वरूप दोहा ॥ समाप्त ॥



॥ अथ ॥

॥ श्री नवकार मांगलिकरूप ॥

॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ नमो लोए सव्व साहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्व पावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च स व्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति पंच प रमेष्ठि मंगलम् ॥ एमां पद नव छे, संपदा आठ छे ॥

॥ अथ खमासमण अथवा प्रणिपात ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए ॥ निसीहिआए ॥ मत्थएण वंदामि ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ॥ इच्छं, जय जय महाप्रभु ॥ देवाधिदेव, सर्वज्ञ श्रीवी तराग देव ॥ मुह दिठ्ठं परमेसर, सुंदर सोम सहाव, भूरि भवंतर संचिउं, नठो सो सवि पाव ॥ १ ॥ जे में पाप कियां बाला पणे, अहवा अन्नाणे ॥ असुभ वंतर ॥ सो सो खंम, जयो परमेसर ॥ तुह मुह दिठ्ठं सिरि पास जिणेसर ॥ २ ॥ पास पसी पसाउ क रि, वीनतडी अवधार ॥ संसारडो विहामणो, सामी आवागमण निवार ॥ ३ ॥ हत्थडा ते सुलखणा, जे जिनवर पूजंत ॥ एके पुसें बाहिरा, परघर काम करं

त ॥ ४ ॥ कवणें वाडी वावीयां,कवणें गूंथ्यां फूल ॥ कवणें जिनवर चढावियां, जाव सरीसां मूल ॥ ५ ॥ वाडी वेलो मोह्योरीउ, सोवन कूंपली एण ॥ पास जिणेसर पूजियें, पंचे अंगुलीएण ॥ ६ ॥ दो धोला दो सामला, दो रत्तोंप्पलवन्न ॥ मरगयवन्ना डुन्नि जिण, सोलस कंचनवन्न ॥ ७ ॥ नियनियमान क राविया, नरहेसनयणानंद ॥ ते में नावें वंदिया, ए चउवीस जिणंद ॥ ८ ॥ वत्थु ॥ कम्म नूमिहिं, कम्म नूमिहिं, पढम संघयणि, उक्कोसो सत्तरिसउ जिणवरा ण विहरंत लप्नइ, नव कोडी केवली, कोडि सहस्स नव साहु गमइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणे ॥ बिहुं कोडीहिं वरनाण, समणह कोडी सहस्स डुअ, थु णसुं निच्च विहाणि ॥ जयउ सामी जयउ सामी. रिसह सिरि सत्तुंजि, उविंत पहु नेमिजिण ॥ जयउ वीर सच्चउरिमंमण ॥ नरुअच्छहिं मुणि सुव्वय, मुहरि पास डुहडुरिय खंमण, अवर विदेहिं तिब्बयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि, तीआणागयसंपइं, वंदुं जिण सव्वेवि ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लस्का बप्पन्न अठ्ठ को डीउ ॥ पंचसयं चउतिसा, तियलोए चेइए वदे ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन ॥

॥ ते तरिया रे नाई ते तरिया ॥ ए देशी ॥

॥ आदिजिनं वंदे गुणसदनं, सदनंतामलवोधं रे ॥ वोधंतागुण विस्तृतकीर्त्तिं, कीर्तितपथमविरो धं रे ॥ आदि जि० ॥ १ ॥ रोधरहित वि

गं, योगं दधतमनंगं रे ॥ नंगं नय व्रजपेशलवाचं, वाचं यमसुख संगं रे ॥ आदि० ॥ २ ॥ संगत पद शुचिवचनतरंगं, रंगं जगति ददानं रे ॥ दान सुरद्रुम मंजुल हृदयं, हृदयंगम गुणनानं रे ॥ आदि० ॥ ३ ॥ नानंदित सुरवर पुन्नागं, नागर मानसहंसं रे ॥ हंसगति पंचमगति वासं, वासव विहिताशंसं रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ शंसंतं नयवचनम नवमं, नवमंगल दातारं रे ॥ तार स्वरमघघनपव मानं, मानसुनट जेतारं रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इत्थं स्तुतः प्रथमतीर्थपतिः प्रमोदा, च्छ्रीमद्यशोविजयवाच कपुंगवेन ॥ श्रीपुंडरीकगिरिराज विराजमानो, मा नोन्मुखानि वितनोतु सतां सुखानि ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण

॥ अथ शीतलजिन स्तवन ॥

॥ वारि प्रभु दशमा शीतल नाथ, सुणो एक वीन ति रे लोल ॥ के वारि प्रभु माहारे तुमशुं प्रीत, के अवरशुं आखडी रे लोल ॥ १ ॥ के वारि प्रभु नद्दिल पुर अवतार, के दढरथ राजियो रे लोल ॥ के वारि प्रभु नंदा मात मलार, के कुलमां गाजीयो रे लोल ॥ २ ॥ के वारि प्रभु श्रीवत्स लंछन पाय, के प्रभुजी ने दीपतुं रे लोल ॥ के वारि प्रभु चंद कहे कर जोड, के अविहड रंगशुं रे लोल ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ विमल जिनस्तवन ॥ कुंअरखडानी देशी ॥

॥ विमल विमल गुण राजता, बाह्य अभ्यंतर नेद ॥ जिणंद जुहारीएं ॥ सूची पुला दृष्टांतथी,

मन वच काय निवेद ॥ जि० ॥ १ ॥ स्पष्ट बंध नि धत्त ते, नीकाचित अतिशेष ॥ जि० ॥ आत्मप्रदेशमांहे मल्या, मल ते कर्म प्रदेश ॥ जि० ॥ २ ॥ असंख प्रदेशी चिन्मयी, चेतन गुण संभार ॥ जि० ॥ प्रदेशें प्रदेशें रमी रही, वर्गणा कर्म अपार ॥ जि० ॥ ३ ॥ पंच रसायन भावना, भावित आतम तत्त्व जि० ॥ उपलता छंडी कनकता, पामे उत्तम सत्त्व ॥ जि० ॥ ४ ॥ प्रथम भावना श्रुततणी, वीजी तप तिय सत्त्व ॥ जि० ॥ तुरीय एकता भावना, पंचम भाव सुसत्त्व ॥ जि० ॥ ५ ॥ एम करी सर्व प्रदेशने, विमल कस्था जिनराय ॥ जि० ॥ नाम यथार्थ विचारीने, नमे स्वरूप नित्य पाय ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासें जाजो ॥ मुज वीनतडी, प्रेम धरीनें इणि परें तुमें संभलावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण्य भुवननो नायक छे, जस चोशठ इंदर पायक छे, नाण दरिसण जेहनें खायक छे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे, पुंमरीगिणि नगरीनो राया छे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदामांहि विराजे छे, जस चोत्रीश अतिशय छाजे छे, गुण पांत्रीश वाणीयें गाजे छे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ भविजनने ते पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण शोहे छे, रूप देखी भविजन मोहे छे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम

सेवा करवा रसीयो छुं, पण जरतमां दूरें वसीयो छुं, महा मोह राय कर फसीयो छुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरीयो छे, तुम आणा खडग्र कर ग्रहियो छे, पण कांइक मुजथी मरियो छे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे पद्मवि जय थाउं शूरो, तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनम् ॥

॥ उवसग्ग हरं पासं, पासं वदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आ वासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंत, कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स ग्गह रोगमारी, डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो, तुज्ज पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर तिरिएसुवि जीवा, पावंति न डुक्क दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लध्धे, चिंतामणि कप्पपायवभ्नहिए ॥ पावंति अविग्घेणं, जीवा अय रामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ महा जस, नत्तिभर निब्भरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं, नवे नवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥ जिं किंचि नाम तिथं, सग्गे पायालि तिरिय लोगंमि ॥ जाइं जिण बिंबाइ, ताइं सवाइं वदामि ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वदण वत्तिआए ॥ पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्ति

आए ॥ सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ २ ॥ सद्धाए मेहाए धिईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ अन्नत्थ ऊससीएणं० ॥ इति ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोग नाहाणं, लोगहिआणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभय दयाणं, चक्खु दयाणं, मग्ग दयाणं, सरण दयाणं, बोहि दयाणं ॥ ५ ॥ धम्म दयाणं, धम्म देसियाणं, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्म वर चाउरंत चक्क वट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाणदंसण धराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरकय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धि गइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ तीर्थस्तुति ॥

॥ जे अइया तित्थयरा, जे भविस्संति अणागए काले ॥ जे आवि वट्टमाणा, ते सव्वे भावउ नमिमो ॥ १ ॥ सुरकय मणुयकयं वा, भुवणतिगे सासयं च जं.

तिबं ॥ तं सयलमिह् ठिर्डवि ह्रु, मण वयण तणुहिं पणमामि ॥ २ ॥ जह्र.य जिणाणं जम्मो, दिरका नाणं च निसिहिया जह्र ॥ जायं च समोसरणा, ताउ नूमिउ वंदामि ॥ ३ ॥ एवमसासय सासय, पडिमा थुणिया जिणंद चंदाणं ॥ सिरिमं महिंद जुवणिंद, चंदमुणि विंद थुअ महिआ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ काव्यानि ॥

॥ अष्टापदें श्री आदि जिनवर, वीर पावा पुरि वरू ॥ वासु पूज्य चंपा नयरसिद्धा, नेम रेवागिरिवरू ॥ १ ॥ समेत शिखरें वीश जिनवर, मोक्ष पहोता मुनिवरू ॥ चोवीश जिनवर नित्य वडुं, सयल संघ सुहंकरु ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अशोकवृक्षः सुर पुष्पवृष्टि, र्दिव्यध्वनिश्चामर मासनं च ॥ नामंमलं डुंडुनिरातपत्रं, सत्प्राति हार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥१॥ सकलकरमवारी मोक्ष मार्गाधिकारी, त्रिजुवनउपकारी केवलज्ञानधारी ॥ नवियण नित सेवो देव ए नक्ति नावें, ए जिन नजंतां सर्व संपत्ति आवे ॥ २ ॥ इति काव्यानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ स्तुतिकाव्यानि ॥

॥ सकल कुशल वल्ली पुष्करावर्त्तमेघो, डुरित तिमिर नानु. कल्पवृक्षोपमानः ॥ नवजलनिधि पोतः सर्व संपत्तिहेतु', स नवतु नवतां नो श्रेयसे पार्श्वनाथ ॥ १ ॥ दशावतारो जुवनैकमल्लो, गोपां ,गनासेवितपादपद्म ॥ श्रीपार्श्वनाथ' पुरुषोत्तमो॰

आए ॥ सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ २ ॥ सद्धाए मेहाए धिईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वड्ढमाणीए गमि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ अन्नत्थ ऊससीएणं० ॥ इति ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंमरीआणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोग नाहाणं, लोगहिआणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभय दयाणं, चक्खु दयाणं, मग्ग दयाणं, सरण दयाणं, बोहि दयाणं ॥ ५ ॥ धम्म दयाणं, धम्म देसियाणं, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्म वर चाउरंत चक्क वट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाणदंसण धराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरकय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धि गइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ तीर्थस्तुति ॥

॥ जे अइया तित्थयरा, जे भविस्संति अणागए काले ॥ जे आवि वट्टमाणा, ते सव्वे भावउ नमिमो ॥ १ ॥ सुरकय मणुयकयं वा, भुवणतिगे सासयं च जं

तिछं ॥ तं सयलमिद्द ठिउवि हु, मण वयण तणुहिं पणमामि ॥ २ ॥ जह य जिणाणं जम्मो, दिरका नाणं च निसिहिया जह ॥ जायं च समोसरणा, ताउ नूमिउ वदामि ॥ ३ ॥ एवमसासय सासय, पडिमा थुणिया जिणंद चंदाणं ॥ सिरिमं महिंद नुवणिंद, चंदमुणि विंद थुअ महिआ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ काव्यानि ॥

॥ अष्टापदें श्री आदि जिनवर, वीर पावा पुरि वरू ॥ वासु पूज्य चंपा नयरसिद्धा, नेम रेवागिरिवरू ॥ १ ॥ समेत शिखरे वीश जिनवर, मोक्ष पहोता मुनिवरू ॥ चोवीश जिनवर नित्य वडुं, सयल संघ सुहंकरु ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अशोकवृक्षः सुर पुष्पवृष्टि, र्दिव्यध्वनिश्चामर मासनं च ॥ नामंमलं डुंडुनिरातपत्रं, सत्प्राति हार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥१॥ सकलकरमवारी मोक्ष मार्गाधिकारी, त्रिनुवनउपकारी केवलज्ञानधारी ॥ नविंयण नित सेवो देव ए नक्ति नावें, ए जिन नजंतां सर्व संपत्ति आवे ॥ २ ॥ इति काव्यानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ स्तुतिकाव्यानि ॥

॥ सकल कुशल वल्ली पुष्करावर्त्तमेघो, डुरित तिमिर नानुः कल्पवृक्षोपमानः ॥ नवजलनिधि पोतः सर्व संपत्तिहेतुः, स नवतु नवतां नो श्रेयसे पार्श्वनाथः ॥ १ ॥ दशावतारो नुवनैकमल्लो, गोपां गनासेवितपादपद्म ॥ श्रीपार्श्वनाथः पुरुषोत्तमोऽयं

ददातु वः सर्वसमीहितानि ॥ २ ॥ श्रीपार्श्व नाथो नवपापताप, प्रशांतधाराधरचारुरूपं ॥ विघ्नौ घहंता प्रणतोरगेंद्रः, समस्तकल्याणकरो जिनेंद्रः ॥ ३ ॥ वीरः सर्व सुरासुरेंद्रमहितो वीरं बुधाः सं श्रिताः, वीरेणाभिहतश्च कर्मनिचयो वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वीरे च धृति कीर्ति कांति निचयः श्रीवीर भद्रं दिश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअरिहंत स्तुतिः ॥

॥ एस करेमि पणामं, जिणवर वसहस्स वद्धमा णस्स ॥ सेसाणंच जिणाणं, सगणहराणं च सव्वेसिं ॥१॥ जग भव्व जीयाणं, वियंसिय वर नाण दंसण धराणं ॥ नाणुज्जोयगराणं, लोगंमि नमो जिणवराणं ॥२॥ तिब्बयरे भगवंते,अणुत्तरे परक्कमे अमिय नाणी॥ तिन्ने सुगइ गइगए, सिद्धिपह देसियं वंदे ॥३॥ वंदामि महा भागं, महामुणिं महायसं महावीरं ॥ अमर नर राय महियं, तिब्बयरे मिमस्स तिब्बस्स ॥ ४ ॥ वयणा मएण भुवणं, निव्वावंता गुणेसु ठावंता ॥ जिय लोए मुद्धरंता, अरिहंता हुंतु मेसरणं ॥ ५ ॥ उज्झिय जर म रणाणं, सम्मत्तदोसत्त सत्तसरणाणं ॥ तिहुयण जिण सुहियाणं, अरिहंताणं नमोत्ताणं ॥६॥ एवा श्रीअरि हंतने महारो नमस्कार होजो. श्रीअरिहंत कहेवाछे तो के जेणे राग द्वेष रूपीया वैरी जीत्या अने अढार दोषर हित थया ते अढार दोषनां नाम गाथायें करी कहे छे.

॥ अन्नाण कोह मय माण, लोह माया रइय अरइय ॥ निंदा सोग अलिय वयण, चोरिया मच्छर नयाय ॥ १ ॥ पाणीवह पेम कीला, पसंग हा साय जस्स ए दोसा ॥ अठारस विपणठा, नमामि देवाहिदेवं तं ॥ २ ॥ एहवा देवाधिदेव, सुरासुर विहितसेव, सर्वज्ञ नगवंत, जगन्नाथ जगज्जीवना तारक, कुगति मार्ग निवारक, निरीह निरहंकार, निःसंग निर्मम शांत दांत करुणा समुड, विश्वोपकार सागर, अनंत गुणना आगर, चोशठ इंडना पूजनी क, वज्रऋषननाराचसंघयण, समचतुरस्र संस्थान, एक हजारने आठ वर प्रधान पुरुष लक्षणना धरण हार, समुडनी परें गंन्नीर, मेरुपर्वतनी परें धीर, शंखनी पेरें निरंजन, वायुनी परें अप्रति बद्ध विहार, आकाशनी परें निरालंब, जीवनी परे अप्रतिहतगति, कूर्मनी परें गुप्तेंडिय, खड्गी जीवना शृंगनी परे एक, नारंम पंखीनी परें अप्रमत्त, सिंहनी परें ड्धर्ष,वृष ननी परें अढार सहस्स सीलांगरथना धुरंधर धोरी, चडमानी परें सौम्यकांति, सूर्यनी परें सतेज, पंखीनी पेरेंविप्रमुक्त, कुक्षी संबल, वसुंधरानी परें सर्व सहे, अ नंतज्ञान,अनंतदर्शन,चोत्रीश अतिशयें करी संयुक्त पां त्रीश नापा गुण परिकलित, अष्ट महा प्रातिहार्यें विरा जमान, पादपीठिकासहित सिंहासनासन, छत्रत्रय चामर शोनायमान, पूंठ पाठल नामंमल दीपे, तेजें करी श्रीसूर्यने जीपे, श्रीअरिहंत उपर अशोक वृक्ष

गाया करतो संघातें चाले, धर्मध्वजा आगले ठती ल
ह लहे, आकाश गतधर्मचक्र झल हले, देवडुंडुनि स्वा
मीके आगें वाजे, श्री अरिहंतनी वाणी मेघनी परें
गाजे, जोजन हारिणी वाणी अमृत समाणी, सर्व ना
पानुगामिनी, सर्व लोकना संशयहरे, त्रिभुवनज
ननां मनने उल्लाह करे, मुक्ति नगरी प्रतें सार्थवाह,
एहवा देवाधिदेव अरिहंत गुणवंत, नगवंत. वीतराग,
वीतस्पृही परमात्मा परमेश्वर परम निरंजन, तेहो
नी गुण स्तुति नणुं ॥ इति अरिहंत स्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ श्रीअंतरिक पार्श्वनाथ स्तुति छंद ॥

॥ प्रज्ञु पासजी ताहरुं नाम मीठुं, त्रिहूं लोकमां
एटलुं सार दीठुं ॥ सदा समरतां सेवतां पाप नीठुं,
मन माहरे ताहरुं ध्यान बेठूं ॥ १ ॥ मन तुम्ह पा
सें वसे रात दीसें, मुखपंकज निरखवा हंस हीं
से ॥ धन्य ते घडी जे घडी नयण दीसे, नली नक्ति
नावें करी वीनवीसे ॥ २ ॥ अहो एह संसार छे
डुःख दोरी, इंद्रजालमां चित्त लागी ठगोरी ॥ प्रज्ञु
मानियें विनती एक मोरी, मुज तार तुं तार बलिहा
रि तोरी ॥ ३ ॥ सही सुपन जंजालमां सब मोह्यो,
घडीयालमां काल रमतो न जोयो ॥ मुधा एम सं
सारमां जन्म खोयो, अहो घृत तणे कारणें जल वि
लोयो ॥ ४ ॥ एतो नमरलो केसुआं ज्रांति धायो,
जई शुक तणी चंचुमांहे नरायो ॥ शुकें जंबु जाणी
गले डुःख पायो, प्रज्ञु लालचें जीवडो एम वाह्यो ॥ ५ ॥

नम्यो नम्मे नूलो रम्यो कम्मे नारी, दयाधम्मेनी श र्म्मे में नवि विचारी ॥ तोरी नम्मेवाणी परम सुरक कारी, त्रिहुं लोकना नाथ में नवि संनारी ॥ ६ ॥ वि षय वेलडी सेलडी करिय जाणी, नजी मोह तृष्णा तजी तुज्ऊ वाणी ॥ एहवो नलो नूंफो निज दास जा णी, प्रनु राखीयें वांहिनी गंहि प्राणी ॥ ७ ॥ माहा रा विविध अपराधनी कोडि सहीयें, प्रनु शरण आ व्या तणी लाज वहीयें ॥ वली घणी घणी वीनतिए म कहीयें, मुऊ मानसरें परम हंस रहीयें ॥ ८ ॥ कल श ॥ ए कृपा मूरति पास स्वामी, मुगतिगामी ध्याईयें ॥ अति नक्ति नावें विपत्ति जावे, परम संपद पाईयें ॥ प्रनु महिम सागर गुण विरागर,पास अंतरिक जे स्तवे॥ तस सकल मंगल जय जयारव,आनंद वर्द्धन वीनवे ॥

॥ अथ नगवंतनी पूजा करवा समयें नवे अं ॥
॥ गें तिलक करतां जे पाठ नच्चारवो, ते कहे बे ॥

॥ दोहा ॥ जल नरि संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥ रुषन चरण अंगुठडो, दायक नवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बलें काउसग्ग रह्या, विचर्या दे श विदेश ॥ खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरे श ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दा न ॥ करकांमे प्रनु पूजना, पूजो नवि बहु मान ॥ ३ ॥ मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत ॥ नुजा बले नवजल तर्या, पूजो खंद मर्हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रयि गुण ऊजली. सकल सुगुण विशराम ॥ नानि

कमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपशम वसें, बाल्या रागने रोप ॥ हिम दहे वन खंमनें, हृदय तिलक संतोप ॥ ६ ॥ शोल पोहोर देइ देशना, कंठ विवर वर्तूल ॥ मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तिणे गलें तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थंकर पद पुण्यथी, तिहुयण जन सेवंत ॥ त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, नाल तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतें भगवंत ॥ वसिया तिण कारण भवि, शिर शिखा पूजंत ॥ ए ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहुविध भावथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति

॥ अथ दोहा ॥

॥ जीवडा जिनवर पूजियें, पूजानां फल जोय ॥ राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभें वांध्युं जल रहे, जल विना कुंभ न होय॥ ज्ञानें वांध्युं मन रहे,गुरु विना ज्ञान न होय ॥२॥ गुरु दीवो गुरु देवता, गुरु विना घोर अंधार ॥ जे गुरु वाणी वेगला, ते रडवडिया संसार ॥ ३ ॥ भावें भावना भावियें, भावें दीजें दान ॥ भावें जिनवर पूजियें, भावें केवल ज्ञान ॥ ४ ॥ प्रभु नामकी उपधी, खरे मनशुं खाय ॥ रोग पीडा व्यापे नही,महा दोप मिट जाय ॥ ५ ॥ प्रभुजी पूजन हुं चल्यो, केसर चंदन घनसार ॥ नव अंगें पूजा करी, भव सायर पार उतार ॥६॥ पांच कोडीनें फूलडे, पाम्या देश अढार ॥ कुमारपाल

राजा थयो, वर्त्यो जय जय कार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ मांगलिक काव्यानि ॥

॥ मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभु ॥ मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैनो धर्मोऽस्तु मंगलं ॥ १ ॥ एक जंबु जग जाणियें, बीजा नेम कुमार ॥ त्रीजा वयर वखाणियें, चोथा गौतम धार ॥ २ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणो भंमार ॥ जे गुरु गौतम समरियें, मन वंछित फल दातार ॥ ३ ॥ अक्षीण महानिशि लब्धिः, केवलश्री करांबुजे ॥ नामलक्ष्मीर्मुखे वाणी, तमहं गौतमं स्तुवे ॥ ४ ॥ इति काव्यानि ॥

॥ अथ लोगस्स काउस्सग्ग करवानो ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमलमणंत च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं

पयासयरा ॥ सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥ लोगस्स समाप्तः ॥

॥ अथ प्रभाति स्तवन ॥

॥ अब तुं चेतन चेत ले, क्षण लाखिणो जाहि ॥ या जुगमें तेरो को नही, तुं किनको नांहि ॥ अब० ॥ ॥ १ ॥ जननी कामिनीने पिता, बेटा बेटीने भाई ॥ ज्युं पंखी टोलुं मिले, पीछे भमी ते जाई ॥ अब० ॥ २ ॥ अंजलि जल सम आउखुं, भरत कहुं जग दीसें ॥ संध्यारंग सम यौवनवय, अनित्य ए विसवा वीसें ॥ अब० ॥ ३ ॥ जिनदास कहे भन कारणें, छोडो मोहको संग ॥ अनुभवकुं चित्त आदरी, कर ल्यो सयगुरु संग ॥ अब० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रभाती स्तवन ॥

॥ जब जिनराज कृपा करे, तब शिव सुख पावे ॥ अक्षय अनुपम संपदा, नव निधि घर आवे ॥जब०॥ ॥ १ ॥ ऐसी वस्तु न जगतमें, दिल शाता आवे ॥ सुरतरु रवि शशि प्रमुख जे, जिन तेजें छिपावे ॥ ज०॥ ॥ २ ॥ जनम जरा मरणा तणां, दुःख दूर गमावे ॥ मन वनमां जिन ध्याननो, जलधर वरसावे ॥ज० ॥ ॥ ३ ॥ चिंतामणि रयणें करी, कोण काग उडावे ॥ तिम मूरख जिन छोडीने, अवरां कूं ध्यावे ॥ ज० ॥ ॥ ४ ॥ ईली भमरी संगथी, भमरी पद पावे ॥ ज्ञान विमल प्रभु ध्यानथी, जिन उपमा आवे ॥ ज०॥ ५ ॥

॥ अथ प्रभाती स्तवन ॥

॥ विषय वासना त्यागो चेतन, साचे मारग लागो रे ॥ ए आंकणी ॥ तप जप संयम दानादिक सहु, गिनति एक न आवे रे ॥ इंद्रिय सुखमां जों लौ ए मन, वक्र तुरंग जिम धावे रे ॥ विष० ॥ १ ॥ एक एकके कारण चेतन, बहुत बहुत दुःख पावे रे ॥ तेतो प्रगट पणे जगदीसें, इणि विध भाव लखावे रे ॥ विष० ॥ २ ॥ मन्मथ वश मातंग जगतमें, परवशता दुःख पावे रे ॥ रसना लुब्ध होय झख मूरख, जाल पड्यो पछतावे रे ॥ विष० ॥ ३ ॥ घ्राण सुवास काज सुन भमरा, संपुटमांहे बंधावे रे ॥ ते सरोज संपुट संयुत फुन, करटीके मुख जावे रे ॥ विष० ॥ ४ ॥ रूप मनोहर देख पतंगा, पडत दीपमां जाई रे ॥ देखो याको दुख कारनमें, नयन भये हे सहाई रे ॥ विष० ॥ ५ ॥ श्रोतेंद्रिय आसक्त मिरगलां, छिनमें शीश कटावें रे ॥ एक एक आसक्त जीव इम, नानाविध दुःख पावे रे ॥ विष० ॥ ६ ॥ पंच प्रबल वर्त्ते नित्त जाकुं, ताकुं कहा जु कहीयें रे ॥ चिदानंद ए वचन सुणीने, निज स्वभावमें रहीयें रे ॥ विष० ॥ ७ ॥ इति प्रभाती ॥

॥ अथ प्रभाती स्तवन ॥

॥ पूरवपुण्य उदय करी चेतन, नीका नरभव पाया रे ॥ ए आंकणी ॥ दीनानाथ दयाल दयानिधि, दुर्लभ अधिक बताया रें ॥ दश दृष्टांतें दोहिला जाकुं,

उत्तराध्ययनें गाया रे ॥ पु० ॥ १ ॥ अवसर पाय विषय रस राचत, ते तो मूढ कहाया रे ॥ काग उडावन काज विप्र जिम, डार मणि पछताया रे ॥ पु० ॥ २ ॥ नदी घोल पाषाण न्याय कर, अर्द्धवाट तुं आया रे ॥ अर्द्ध सुगम आगल रही तिनकुं, जिन कछु मोह घटाया रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ चेतन चारग तिमें निश्चें, मोक्ष द्वार ए काया रे ॥ करत कामना सुरपति याकुं, जिनकुं अनर्गल माया रे ॥ पु० ॥४॥ रोहणगिरि जिम रतन खाण तिम, गुण सहु यामें समाया रे ॥ महिमा मुखथी वर्णत जाकी, सुरपति मन शंकाया रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ कल्पवृक्ष सम संजम केरी, अति शीतल जिहां छाया रे ॥ चरण कर ण गुण धार महामुनि, मधुकर मन लोभाया रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ या तन विन तिहुं काल कहो किम, साचा सुख निपजाया रे ॥ अवसर पाय न चूक चिदानंद, सदगुरु यों दरसाया रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ आंबिलनी उलीनां नव स्तवन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम स्तवनम् ॥

॥ केशर वरणो हो, के काढ कसुंबो माहारा लाल॥ ॥ ए देशी ॥ गोयम नाणी हो, के कहे सुणो प्राणी माहारा लाल ॥ जिनवर वाणी हो, के हियडे आणी ॥ मा० ॥ आसोमासें हो, के गुरुने पासें ॥ म० ॥ नव पद ध्यासें हो, के अंग उल्लासें ॥ मा० ॥ १ ॥ आंबिल कीजें हो, के जिन पूजीजें ॥ मा० ॥ जाप

जपीजें हो, के देव वांदीजें ॥ मा० ॥ नावना नावो हो, के सिद्धचक्र ध्यावो ॥ मा० ॥ जिनगुण गावो हो, के शिव सुख पावो ॥ मा० ॥ २ ॥ श्रीश्रीपालें हो, के मयणा वालें ॥ मा० ॥ ध्यानरसालें हो, के रोग ज टाले ॥ मा० ॥ सिद्धचक्र ध्यायो हो, के रोग गमायो ॥ मा० ॥ मंत्र आराह्यो हो, के नवपद पायो ॥ मा० ॥ ३ ॥ नामनी नोली हो, के पेहेरि पटोली ॥ मा० ॥ सह्यिर टोली हो, के कुंकुम घोली ॥ मा० ॥ थाल कचोली हो, के जिनवर खोली ॥ मा० ॥ पूजी प्रणमी हो, के कीजें उली ॥ मा० ॥ ४ ॥ चैत्रें आसो हो, के मनने उल्लासें ॥ मा० ॥ नवपद ध्याशे हो, के शिवसुख पासें ॥ मा० ॥ उत्तम साग र हो, के पंमितराया ॥ मा० ॥ सेवक कांतें हो, के बहु सुख पाया ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति समाप्त ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवनम् ॥

॥ आबे लालनी देशी ॥ नवपद महिमा सार, सांनलजो नर नार ॥ आबे लाल ॥ हेज धरी आराधीयें ॥ तो पामो नवपार, पुत्र कलत्र परिवार ॥आ०॥ नवपद मंत्र आराधी यें ॥१॥ आंकणी ॥ आसोमास विचार, नव आंबिल निरधार,॥आ०॥ विधिशुं जिनवर पूजीयें ॥ अरिहंत सिद्ध पद सार, गणणुं जी तेर हजार ॥ आ० ॥ नवपदनुं ईम कीजीयें ॥ २ ॥ मयण सुंदरी श्रीपाल, आराध्यो ततकाल ॥ आ० ॥ फल दायक तेहने थयो ॥ कंचन वरणी काय, देही

तेहनी थाय ॥ आ० ॥ श्रीसिद्धचक्र महिमा कह्यो ॥ ३ ॥ सांजलि सहु नर नार, आराध्यो नवकार ॥ आ० ॥ हेज धरी हियडे घणुं ॥ चैत्र मासें वली एह, नवपदशुं धरो नेह ॥ आ० ॥ पूज्यो द्ये शिवसुख घणुं ॥ ४ ॥ इणिपरें गौतम स्वाम, नव निधि जेह ने नाम ॥ आ० ॥ नवपद महिमा वखाणीयो ॥ उत्तम सागर शिष्य, प्रणमे ते निश दीस ॥ आ० ॥ नव पद महिमा जाणीयो ॥ ५ ॥ इतिद्वितीयस्तवनं ॥

॥ अथ तृतीय स्तवनं ॥

॥ सीतातो रूपें रूडी ॥ ए देशी ॥ श्री वीर जिणंद वखाण्यो, तिहां गौतम गणधर जाण्यो हो ॥ नवपद ध्याईयें ॥ श्री श्रीपाल नरेशें, मयणायें गु रु उपदेशें हो ॥ नव० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र आरा ध्यो, तो सयल पदारथ साध्यो हो ॥ न० ॥ आसो मा सें कीजें, शुदि सातमे जिन पूजीजें हो ॥ नव० ॥ २ ॥ अष्ट कमल दल थापी, महिमा जस त्रिभुवन व्या पी हो ॥ न० ॥ मध्यदलें जिन ध्याने, ध्यावो जवि धवले वानें हो ॥ न० ॥ ३ ॥ पूरव दिशें सिद्ध ग जे, राते तनु तेज विराजे हो ॥ न० ॥ आचारिज पद त्रीजे, जिम सोवन वान करीजें हो ॥ न० ॥ ४ ॥ पश्चिम दिश उवझाया, नीले तनु वान सोहाया हो ॥ न० ॥ साधु सकल घनवानें, उत्तरदिशि ध्यावो ध्यानें हो ॥ न० ॥ ५ ॥ नाण अग्नि कोणें ध्यावो, जिम अत्यंत सुख तुमें पावो हो ॥ न० ॥ दंसण

आराहो प्राणी, नैरूत विदिशें मन आणी हो ॥न०॥ ॥ ६ ॥ वायव्यकोणें कहीजें, चारित्र ध्यायी सुख लीजें हो ॥ न० ॥ ईशाने तप ध्यावो, उज्ज्वल समकित सुख पावो हो ॥ न० ॥ ७ ॥ आसो चैत्रज मासें, जपतां ऋद्धि आवे पासें हो ॥ न० ॥ विधिशुं देव वंदीजें, श्रीजिनवर पूजा रचीजें हो ॥ न० ॥ ८ ॥ नव पद जाप जपीजें, आंबिल तप नव दिन कीजें हो ॥ न० ॥ श्रीसिद्धचक्र सेवीजें, पंचामृत न्ह्वण करीजें हो ॥ न० ॥ ९ ॥ चउद पूरवनो सार, ए मंत्र वडो नवकार हो ॥ न० ॥ बुध उत्तम सागर राया, शिष्य कांतिसागर सुखपाया हो ॥ न० ॥ १० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ चतुर्थ स्तवनं ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ सेवो रे नवि नावें नवकार, जंपे श्रीगौतम गणधार ॥ नवि सांजलो ॥ हांरे संपद थाय ॥ न० ॥ हांरे संकट जाय ॥ न० ॥ आशोने चैत्रें हरप अपार, आणी गणणुं किजें तेर हजार ॥ न० ॥ १ ॥ चार वरसने वली षट् मास, ध्यान धरो नावें धरी विश्वास ॥ न० ॥ ध्यायो रे मयणसुंदरी श्रीपाल, तेहनो रोग गयो तत काल ॥ न० ॥ २ ॥ अष्टकमल दल पूजा रसाल, करी न्ह्वण छांटयुं ततकाल ॥ न० ॥ सातशें महीपति तेहनें रे ध्यान, देही पामी कंचन वान ॥न०॥ ॥ ३ ॥ महिमा कहेतां एनो नावे पार, समरो तिणे कारण नवकार ॥ न० ॥ इह नव परनव ये सुख

वास, वहु पामे लक्ष्मी लील विलास ॥ न० ॥ ४ ॥ जाणी रे प्राणी लाभ अनंत, सेवो सुखदायक ए मंत ॥ न० ॥ उत्तमसागर पंडित शिष्य, सेवे कांतिसागर निशदीस ॥ न० ॥ ५ ॥ इति चतुर्थस्तवनं ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम स्तवनं ॥

॥ भवियां श्रीसिद्धचक्र आराधो, तुमें मुक्ति मारगनें साधो, इह नरभव फुलेन लाधो हो लाल ॥ १ ॥ नवपद जाप जपीजें ॥ त्रण टंक देव वांदीजें, त्रिहुं कालें जिन पूजीजें, आंबिल तप नव दिन कीजें हो लाल ॥ न० ॥ २ ॥ शुदि आसो चैत्रज मासें, तप सातमथी अभ्यासें, पद सेव्यां पातक नासे हो लाल ॥ न० ॥ ३ ॥ मयणाने नृप श्रीपालें, आराध्यो मंत्र वजमालें, एह फुःख दोहगनें टाले हो लाल ॥ न० ॥ ४ ॥ एहनी जे सेवा सारे, तस मयगल गाजें वारें, इति नीति अनीति निवारे हो लाल ॥ न० ॥ ५ ॥ मिथ्यात्व विकार अनिष्ट, क्षय जाये दोषी फुष्ट, इणे सेव्या समकित पुष्ट हो लाल ॥ न० ॥ ६ ॥ जसवंत जिनेंइसु साखें, भवि सिद्धचक्रना गुण भांखे, ते ज्ञान विनोद रस चाखे हो लाल ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठस्तवनं ॥

॥ जग जीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसिद्ध चक्र आराधीयें, शिव सुख फल सहकार लाल रे ॥ ज्ञानादिक त्रण रत्ननुं, तेज चढा

वण हार लाल रे ॥ पाठांतरें ॥ श्री सि० ॥१॥ गौतमें पूछंता कह्यो, वीर जिणंद विचार लाल रे ॥ नवपद मंत्र आराधतां, फल लहे भविक अपार लाल रे ॥ श्रीसि० ॥ २ ॥ धर्मरथनां चार चक्र छे, उपशमनें सुविवेक लाल रे ॥ संवर त्रीजुं जाणीयें, चोथुं सिद्धचक्र छेक लाल रे ॥ श्रीसि० ॥ ३ ॥ चक्री चक्र रयण बलें, साधे सयल छ खंम लाल रे ॥ तिम सिद्धचक्र प्रभावथी, तेज प्रताप अखंम लाल रे ॥ श्रीसि० ॥ ४ ॥ मयणाने श्रीपाल जी, जपतां बहु फल लीध लाल रे ॥ गुण जसवंत जिनेंद्रनों, ज्ञानविनोद प्रसिद्ध लाल रे ॥ श्रीसिद्ध० ॥ ५ ॥

॥ अथ सप्तम स्तवनं ॥

॥ चिंतामणि स्वामी सच्चा साहेब मेरा ॥ ए देशी ॥

॥आराहो प्राणी साची नवपद सेवा ॥ ए आंकणी ॥ नव निधि आपे नवपद सेवे, इम भांखे श्रीजिनदे वा ॥ आ० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र धरो नित्यदिलमें, जैसें गज मन रेवा ॥ आ० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक एक पद जपतां, हारे लहीयें सुख सदैवा ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुदित जपतां किम करी न करे, सुरसुख द्रुम फल लेवा ॥ आ० ॥४॥ जिनेंद्र कहे इम, ज्ञान वि नोदे, हर्षित द्यो नित मेवा ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ अथ अष्टम स्तवनं ॥

॥ राग सारग ॥ गौतम पूछत श्रीजिन भांखत, च

चन सुधारस पानकी ॥ वलिहारी नवपद ध्यानकी ॥ १ ॥ नवपद सेवें नवमे स्वर्ग, पावत ऋद्धि विमानकी ॥ व० ॥ २ ॥ याकी महिमा बहुत हमकुं, जेसें जसोदा कानकी ॥ व० ॥ ३ ॥ पावे रूप सरूप मदनसो, देही कंचन वानकी ॥ व० ॥ ४ ॥ याको ध्यान हृदय जव आवत, उपजत लहेरी ज्ञानकी ॥ व० ॥ ५ ॥ समकित ज्योति होवे दिल नीं तर, जेसें लोकनमें नानकी ॥ व०॥६॥ जिनेंद्र ज्ञान विनोद प्रसंगें, नक्ति करो नगवानकी ॥ व० ॥ ७ ॥

॥ अथ नवम स्तवनं ॥

॥ पूज्य पधारो मरुदेशें ॥ ए देशी ॥

॥ नवपद महिमा सांनलो, वीर नांखे हो सुणो पर्पदा बार के ॥ ए सरीखो जग को नहीं, आराध्यो हो शिवपद दातार के ॥ न० ॥ १ ॥ नव उली आंबिल तणी, नवी करीयें हो मनने उल्लास के ॥ नूमी शयन ब्रह्म व्रत धरो, नित सुणीयें हो श्रीपालनो रास के ॥ न० ॥ २ ॥ नव विधि पूर्वक तप करी, उजमणुं हो कीजें विस्तार के ॥ साहामी सामिणी पोपियें, जेम लहीयें हो नवनो निस्तार के ॥ ॥ न० ॥ ३ ॥ नरसुख सुरसुख पामीयें, वली पामे हो नव नव जिनधर्म के ॥ अनुक्रमें शिवपद पण लहे, जिहां मोहोटां हो अक्षय सुख शर्म के ॥ न० ॥४॥ सांनली नवियण दिल धरो, सुखदायी हो नव पद अधिका के ॥ वचन विनोद जिनेंद्रनो, मुज होजो हो न

व नंव आधार के ॥ नव० ॥ ५ ॥ इति ॥ ए ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ श्रीगौतम पृछा करे, विनय करी शीश नमाय प्रभुजी ॥ अविचल स्थानक में सुएयुं, कृपा करी मोय बताय प्रभुजी ॥ शिवपुर नगर सोहामणुं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आठ कर्म अलगां करी, साख्यां आतम काम हो ॥ प्र० ॥ बूटा संसारनां डुःखथकी, तेणे रहे वानुं किहां गाम हो ॥ प्र० ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे ऊर्ध्व लोकमां, सिद्ध शिलातणुं गाम हो गौतम ॥ स्वर्ग ढवीशनी उपरें, तेहनां बारे नाम हो ॥ गौ० ॥ शि०॥ ३ ॥ लाख पिस्तालीश जोजना, लांबी पोहोली जाण हो ॥ गौ० ॥ आठ जोजन जाडी विचें, छेडे मंख पंख ज्युं जाण हो ॥ गौ०॥ शि०॥ ४ ॥ उज्ज्वल हार मोती तणो, गोडुग्धशंख वखाण हो ॥ गौ० ॥ ते थकी ऊजली अति घणी, उलट ढत्र संगण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ५ ॥ अर्जुन स्वर्णसम दीपती, गगरी मगरी जाण हो ॥ गौ० ॥ फटक रत्न थकी निर्मली, सुंआली अत्यंत वखाण हो ॥गौ०॥ शि०॥ ॥ ६ ॥ सिद्धशिला उलंघी गया, अधर रह्या सिद्ध राज हो ॥ गौ० ॥ अलोकशुं जाई अड्या, साख्यां आतम काज हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ७ ॥ जन्म नहीं मरण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो ॥ गौ० ॥ वैरी नहीं मित्रज नहीं, नही संजोग विजोग हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ८ ॥ भूख नहीं तरपा नहीं, नहीं हर्ष नहीं

सोग हो ॥ गौ० ॥ कर्म नहीं काया नहीं, नही विषया रस योग हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ए ॥ शब्द रूप रस गंध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो ॥ गौ० ॥ बोले नहीं चाले नहीं, मौनपणुं नही खेद हो ॥ गौ० ॥ ॥ शि० ॥ १० ॥ गाम नगर तिहां कोइ नहीं, नही वसती न उजाड हो ॥ गौ० ॥ काल सुगाल वर्त्ते नहीं, रात दिवस तिथि वार हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ॥ ११ ॥ राजा नही परजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो ॥ गौ० ॥ मुक्तिमां गुरु चेला नहीं, नहीं लघु वडाई तास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १२ ॥ अनंता सुखमां झीली रह्या, अरूपी ज्योति प्रकाश हो ॥ गौ० ॥ सहु कोईनें सुख सारीखां, सघलानें अविचल वास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १३ ॥ अनंत सिद्ध मुगतें गया, वली अनंता जाय हो ॥ गौ० ॥ अवर जग्या रूंधे नही, ज्योतिमां ज्योति समाय हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १४ ॥ केवल ज्ञान सहित छे, केवल दर्शन खास हो ॥ गौ० ॥ खायक समकित दीपतुं, कदीय न होवे उदास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १५ ॥ सिद्ध स्वरूप जे ओलखे, आणी मन वैराग हो ॥ गौ० ॥ शिवसुंदरी वेगें वरे, नय कहे सुख अथाग हो ॥ गौ० ॥ शिव० ॥ १६ ॥ इति श्री सिद्धस्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ पंचतीर्थनी आरति लिख्यते ॥

॥ पेहेली आरती प्रथम जिणंदा, शेत्रुंजा मंडण रुषभ जिणंदा ॥ श्रीसिद्धाचल तीर्थं आव्या, पूर्व

नवाणुं नविक मन नाव्या ॥ आरती कीजें श्रीजि नवरकी ॥ १ ॥ डुसरी आरती शांति जिणंदकी, शांति करे प्रनु शिव मारगकी ॥ पारेवो जिणे शर णे राख्यो, केवल पामीनें धर्म प्रकाश्यो ॥ आ० ॥ २ ॥ तीसरी आरती श्रीनेमनाथ, राजुल नारी तारी निज हाथ ॥ सहस पुरुषशुं संयम लीधो, करी नि ज आतम कारज सीधो ॥ आ० ॥ ३ ॥ चोथी आरति चिहुं गति वारी, पारसनाथ नविक हितका री ॥ गोडी पास शंखेश्वरो पास, नविजनना पूरे मन आश ॥ आ० ॥ ४ ॥ पांचमी आरती श्रीमहावीर, मेरु परें जेम रह्या धीर ॥ साडा वार वरस तप तपीया, कर्म खपावीनें शिव पुर वसिया ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ इणि परें प्रनुजीनी आरती करशो, शुन परिणामे शिवपुर वरशो ॥ इणि परें जिनजी नी आरती गावे, शुन परिणामें शिवपुर जावे ॥ आ० ॥ ६ ॥ कर जोडी सेवक इम वोले, नही कोइ माहारा जिनजीने तोले ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चार मंगल ॥

॥ आज घरे नाथ पधास्या, कीजें मंगल चार ॥ आ० ॥ पहिले मंगल प्रनुजीने पूजुं, घसी केसर घ नसार ॥ आ० ॥ १ ॥ वीजे मंगल अगर उखेवुं, कंठे ठवुं फूल हार ॥ आ० ॥ त्रीजे मंगल आर ती उतारुं, घंट वजावुं रणकार ॥ आ० ॥ २ ॥ चोथे मंगल प्रनुगुण गाउं ॥ नाटक थइ थइ कार

॥ आ० ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति चारमंगल ॥

॥ अथ मंगलिक दीपक ॥

॥ दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो ॥ आरती उतारी ने बहु चिरंजीवो ॥ दी० ॥ सोहामणुं घर पर्व दिवाली, अंबर खेले अबला वाली ॥ दी० ॥ देपाल जणे इणें देव अजुआली, जावें जगतें विघ्न निवारी ॥ दी० ॥ देपाल जणे इणें कली कालें, आरती उतारी राजा कुंअरपालें ॥ दी० ॥ ते घर मंगलिक जे घर मंगलिक, चतुर्विध संघ घर मंगलिक दीवो ॥ दी० ॥ इति मंगलिक दीपक संपूर्ण ॥

॥ अथ मोटी आरती ॥

॥ पेहेली रे आरती प्रथम जिणंदा, शत्रुंजा मंमण ऋषभ जिणंदा ॥ जय जय आरती आदिजिणंद की॥ए आंकणी॥दूसरी आरती मरुदेवी नंदा,जुगला रे धरम निवार करंदा ॥ ज० ॥ १ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्न सिंहासन मारा प्रभुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चोथी आरती नित नवी पूजा, देव ऋषभ देव अवर न दूजा ॥ ज० ॥ २ ॥ पांचमी आरती प्रभुजीनें जावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ आरती कीजें प्रभुशांति जिणंदकी, मृगलंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ जय जय आरती शांति तुमारी, विश्वसेन अचिरादेवीको नंदा, शांति जिणंद मुख पूनम चंदा ॥ ज० ॥ ४ ॥ आरती की

जें प्रभु नेम जिणंदकी, शंखलंछनकी में जावं वलि हारी ॥ आ० ॥ समुद्रविजय शिवादेवीको नंदा, नेमजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरती कीजें प्रभु पास जिणंदकी, फणिंद लंछनकी में जावं वलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वसेन वामा देवीको नंदा, पासजिणंद मुख पूनम चंदा ॥ आ० ॥ ६ ॥ आरती कीजें महावीर जिणंदकी, सिंह लंछनकी में जावं वलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथराय त्रिशला देवीको नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ७ ॥ आरती कीजें प्रभु चोवीश जिणंदकी, चोवीशे जिणंदकी में जावं वलिहारी ॥ चोवीशे जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ८ ॥ कर जोडी सेवक इम बोले, नही कोइ माहारा प्रभुजीनें तोले ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति आरती संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीचक्केसरी मातानी आरती ॥

॥ जय जय आरती देवी तुमारी, नित प्रणमुं हुं तुम चरणारी ॥ ज० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्केसरी जग सौख्याली ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ विधि पक्षगछनी शासन देवी, सकल श्रीसं घने सुख करेवी ॥ ज० ॥ ३ ॥ नीलवट टीलडी रत्न विराजे, कानें कुंमल दोय रवि शशि छाजे ॥ ज० ॥ ॥ ४ ॥ बांहे बाजुबंध बेरखा सोहे, नीलवरण सु चके मन मोहे ॥ ज० ॥ ५ ॥ सोवन मय नित चू नडी खलके, पाये घुघरडा घम घम घमके ॥ ज० ॥ ६ ॥ वाहन गरुड चड्यां बहु प्रेमें, तुज गुण

पार न पावं केमे ॥ ज० ॥ ७ ॥ चूनडी जडामां देह अति दीपे, नवसरा हारें जग सहु जींपे ॥ ज० ॥ ॥ ८ ॥ नित नित मानी आरती उतारे, रोग शोग जय दूर निवारे ॥ ज० ॥ ए ॥ तस घर पुत्र पौत्रा दिक गाजे, मनवंछित सुख संपद राजे ॥ ज० ॥ १० ॥ देवचंद मुनि आरती गावे, जयो जयो मंगल नित्य वधावे ॥ ज० ॥ ११ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ लोजनी सवाय ॥

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ लोज न करीएं प्राणीया रे, लोज बुरो संसार ॥ लोज समो जगमां नही रे, डुर्गतिनो दातार ॥ जविक जन, लोज बूरो रे संसार ॥ १ ॥ करजो तुमें निरधार ॥ ज० ॥ जिम पामो जवपार ॥ ज० ॥ लोज बूरो रे संसार ॥ ए आंकणी ॥ अति लोजें लखमी पति रे, सागरनामें शेठ ॥ पूर पयोनिधिमां पड्यो रे, जई बेठो तस हेठ ॥ ज० ॥ लो० ॥ २ ॥ सोवन मृगना लोजथी रे, दशरथ सुत श्रीराम ॥ सीता नारि गमावीने रे, जमीयो ठामो ठाम ॥ ज० ॥ ॥ लो० ॥ ३ ॥ दशमा गुणठाणा लगें रे, लोज तणुं छे जोर ॥ शिवपुर जातां जीवनें रे, एहज मोहोटो चोर ॥ ज० ॥ लो० ॥ ४ ॥ क्रोध मान माया लोजथी रे, डुर्गति पामे जीव ॥ परवश पडीयो बापडो रे, अहोनिश पाडे रीव ॥ ज० ॥ लो० ॥ ५ ॥ परिग्रहना परिहारथी रे, लहीयें शिवसुख

सार ॥ देव दाणव नरपति थई रे, जाशें मुक्ति मकार ॥ न० ॥ लो० ॥ ६ ॥ नावसागर पंमित नणे रे, वीरसागरबुध शिष्य ॥ लोन तणे त्यागें करी रे, पहोंचे सयल जगीश ॥ न० ॥ लो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलनी नववाड प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥ श्रीगुरुनें चरणे नमी, समरी शारद माय ॥ नवविध शीलनी वाडनो, उत्तम कहुं उपाय ॥ १ ॥ ढाल पहेली ॥ वधावानी ॥ पहेलोने पासो होजी ॥ ए देशी ॥ पहेलीने वाडें होजी वीर जिनवरें कह्यो, सेवो सेवो हो वस्ति विचारीनें जी ॥ स्त्री पशु पमंग होजी वासो वसे जिहां, तिहां न रहेवुं हो शीलव्रत धारीनें जी ॥ २ ॥ जिम तरुमालें होजी वसतो वानरो, मनमां विये रखे नूंई पडुं जी ॥ मंजारी देखी होजी पिंजरमांहेथी, पोपट चिंते हो रखे मोटें चडूं जी ॥ ३ ॥ जिम सिंहलंकी होजी सुंदरी शिर धरी, जलनुं बेडुं हो जुगतिशुं जालवे जी ॥ तिम मुनि मनमें होजी राखे जालवी, नारीने निरखी होजी चित्त नवि चालवे जी ॥ ४ ॥ जिहां होवे वासो होजी सेहेजें मंजारनो, जोखम लागें हो मुपकनी जातने जी ॥ तेम ब्रह्मचारी होजी नारी नी संगतें, हारे हो हारे रे शीयल सूधातनें जी ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ एम वाड विघटे विपय प्रगटे, शंका कं खा नीपजे ॥ तीव्र कामें धातु विगडे, रोग बहुविध उ पजे ॥ मन्नमांहे विपय व्यापे, विपयशुं मन रहे मली ॥

उदय रत्न कहे तिणे कारण,नव वाड राखो निर्मली ॥६

॥ ढाल बीजी ॥

॥ विदर्भदेश कुंभन पुर नयरी ॥ ए देशी ॥

॥ सुरपति सेवित त्रिभुवन धणी, अज्ञान तिमिर हर दिनमणि ॥ शील रत्ननां जतन तंते, वाड भांखी बीजी भगवंतें ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ भगवंत भांखे संघ साखें, शीयल सुरतरु राखवा ॥ मुक्ति माहाफल हेतु अद्भुत, चारित्रनो रस चाखवा ॥ २ ॥ मीठे वचने माननीशुं, कथा न करे कामनी ॥ वाड विधिशुं जेह पाले, बलिहारी तस नामनी ॥ ३ ॥ वात व्रतने घात कारी, पवन जिम तरुपातनें ॥ वात करतां विपय जागे, तेमाटें तजो ए वातनें ॥ ४ ॥ लीबु देखी दूरथी जिम, खटाशें भाढा गले ॥ गगनें गर्जरव सुणीनें, हडकवा जिम उच्छले ॥ ५ ॥ तिम ब्रह्मचारीना चित्त विणसे, वयण सुंदरीनां सुणी ॥ कथा तजो तिणे कारण, एम प्रकाशे त्रिभुवन धणी ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ त्रट जमुनानुं रे अति रलीयामणुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ त्रीजीनें वाडें रे त्रिभुवन राजीयो रे ॥ एणी परें दीयें उपदेश ॥ आसन बंभोरे साधुजी नारीनो रे, मुहूर्त्तलगें सुविशेप ॥ हुं बलिहारी रे जावं तेहनी रे ॥ १ ॥ धन्य धन्य तेहनी हो मात्त ॥ शील सुरंगी रे रंगाणी रगशुं रे, जेहनी साते हो धात ॥ हुं० ॥

॥ २ ॥ शयनासनें रे पाटीनें पाटले रे, जिहां जिहां वेसे होनार ॥ वेघडी लगे रे तिहां वेसे नहीं रे, शील व्रत राखणहार ॥ छुं० ॥ ३ ॥ कोहेला केरीरे गंधसंजो गथी रे, जेम जाये कणकनो वाक ॥ तिम अबलानुं रे आसण सेवतां रे, विणसे शियल सुपाक ॥छुं०॥४॥

॥ ढाल चोथी ॥ छुं वारी रंगढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ चोथीनी वाडे चेतजो हो राज, इम नांखे श्रीजिन नूप रे ॥ संवेगी सूधा साधु जी ॥ नयण कमल विकासीनें हो राज, रखे निरखो रमणीनुं रूप रे ॥ सं० ॥ १ ॥ रूप जोतां रढ लागशे हो राज, हेला उल्लसशे अनंग रे ॥ सं० ॥ मनमांहे जागशे मोहनी हो राज, त्यारें होशे व्रतनो नंग रे ॥ सं० ॥ २ ॥ दिनकर साहामुं देखेतां हो राज, नयण घटे जिम तेज रे ॥ सं० ॥ तिम तरुणी तन पेखतां हो राज, हीणुं थाये शीयलशुं हेज रे ॥ सं० ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थांपरवारी मारा साहिबा कंवल मतचालो ॥ ए देशी ॥ पंचमी वाडी परमेसरें, वखाणी हो वारू ॥ सांनलजो श्रोतातुमें, धर्मीव्रत धारू ॥ १ ॥ कूडांतर वरकामिनी, रमे जिहां रागें ॥ स्वरकंकणादिकनो सुणी, तिहां मन्मथ जागे ॥ २ ॥ तिहां वसवुं ब्रह्म चारीनें, नकह्युं वीतरागें ॥ वाड नांगे शील रत्ननी, जिहां लांठन लागे ॥ ३ ॥ अग्निपासें जिम उंगले, नाजनमांहे नरिया ॥ लाखने मीण जाए गली, न

रहे रस भरिया ॥ ४ ॥ तिम हाव भाव नारी तणा, वली हांसुंने रुदना ॥ सांभलतां शीयल वीघरे, मन वधे हो मदना ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ सहीयां मारा नयण समारो ॥ ए देशी ॥

॥ छठीने वाडे छयल छवीलो, गुण रलें गाढो भर्यो जी ॥ सिद्धारथ कुल नंद नगीनो, वीरजिणंद इम भख्यो जी ॥ १ ॥ अव्रतीपणे जे होय आगें, काम क्रीडा वहुविध करी जी ॥ व्रत लेइनें विलसित पेहेलां, रखे संभारो दिल धरी जी ॥ २ ॥ अग्नि भखां जिम उपर पूलो, मेले जिम ज्वाला वमे जी ॥ वरस दिवसें जिम विपधरनुं. शंकाये विप संक्रमे जी ॥ ३ ॥ विपय सुख जे विलसित पेहलां, तिम शियल व्रती संभारतो जी ॥ व्याकुल थइनें शीयल विराधे, पछें थाय वलि डरतो जी ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ गढ बुंदीरा वाला ॥ ए देशी ॥

॥ सातमी वाडें वीर पयंपे, सुणो संजमना रागी हो ॥ शीलरयना हो धोरी ॥ सूधा साधु वैरागी, मुज आणाकारी, विपय रसना हो त्यागी ॥ सू० ॥ ॥ १ ॥ सरस आहार तजजो सेहेजें, विगय थोडी वावरजो हो ॥ शी० ॥ सू० ॥ २ ॥ मादक आहारें मन्मथ जागे, ते जाणी परिहरजो हो ॥ शी० ॥ ॥ सू० ॥ ३ ॥ सन्निपातें जिम घृत जोगें, अधिक करे भलाला हो ॥ शी० ॥ सू० ॥ ४ ॥ पांचे इंद्रिय

तिम रस पोखे, चारित्रमां करे चाला हो॥शी०॥सू०॥५

॥ ढाल आठमी ॥

॥ गोठण खोलो कमाड ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिशला सुत हो त्रिगडे बेशी एम, आठमी वाड वखाणी शीलनी जी ॥ अतिमात्रा हो आहार तजो अणगार, लालच राखो संयम शीलनी जी ॥ १ ॥ अतिआहारें हो आवे उंघ अपार, स्वपनमां हे हो थाये शील विराधना जी ॥ वली थाये हो तेणे मदवंत देह, संजमनी हो नवि थाये आराधना जी ॥२॥ जिम शेरना हो मापमांहि दोढ शेर, ठरीने ऊपर दीजें ढांकणुं जी ॥ भांजे तोलडी हो खीचडी खेरु थाय, तेम अतिमात्राएं व्रत विगडे घणुं जी॥३॥

॥ ढाल नवमी ॥ गरवानी देशी ॥

॥ नवमी वाडें निवारजो रे, साधुजी शणगार ॥ शरीर शोभाएं शोभे नही, अवनीतलें अणगार ॥ १ ॥ एम उपदेशे वीरजी, मुनिवर धरजो रे मन्न ॥ शीखामण ए माहरी, करजो शील जतन्न ॥ २ ॥ स्नान विलेपन वासना, उत्तम वस्त्र अपार ॥ तेल तंबोल आदें तजी, उभट वेश म धार ॥ ३ ॥ धोई नें धरणी धरयो, जिम रत्न हार्यो कुंभार ॥ तिम शीलरत्नने हारशो, जो करशो सिणगार ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ नटीयाणी नी देशी ॥

॥ एकली नारी साथें, मारगें नवि जावुं हो, वली वात विशेष न कीजियें ॥ एक सेजें नर दोय,

॥ मे० ॥ एपण असंख्याता कह्या, श्री जगदीश स दैव ॥ मे० ॥ कं० ॥ १४ ॥ जलमां जीव कह्या घणा, संख्य असंख्य अनंत ॥ मे० ॥ नील फूल तिहां ऊपजे, अग्नि प्रजाले जंत ॥ मे० ॥ कं० ॥ ॥ १५ ॥ तमाकू पीतां थकां, ए छक्काय हणाय ॥ मे० ॥ ज्योति घटे नयणा तणी, श्वासें पिंम न राय ॥ मे० ॥ कं० ॥ १६ ॥ घडी दोय जे व्रत करो, सेवो श्रीनगवान ॥ मे० ॥ दया धर्म जाणी करी, सेवो चतुर सुजाण ॥ मे० ॥ कं० ॥ १७ ॥ चतुर विचारी समजीयें, धरीएं धर्मनुं ध्यान ॥ मे० ॥ आ नंद मुनि एम उच्चरे, तें लहे कोडि कल्याण ॥ मे० ॥ कं० ॥ १८ ॥ इति श्री तमाकूनी सफाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवनं ॥

॥ प्रह समे नाव धरी घणो, प्रणमुं मन रे आणं दा ॥ धन वेला धन ते घडी, निरखुं प्रभु मुख चंदा ॥ प्र० ॥ १ ॥ रूपन्न अजित संन्नव नला, अनिनं दन वंडुं ॥ सुमति पद्मप्रन्न जिनवरा, श्रीसुपार्श्व जिनेंड ॥ प्र० ॥ २ ॥ चंद्प्रन्न सुविधि नमुं, शीतल श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल प्रन्नु, अनंत धर्म जिनेश ॥ प्र० ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर जिनवरा, ए त्रण चक्री कहीजें ॥ मल्ली मुनि सुव्रत प्रन्नु, नमि नेम नमीजें ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पार्श्व वीर नित्य वंदिएं, एहवा जिन चोवीश ॥ ज्ञानविमल सूरि प्रणमतां, नित्य होए जगीश ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषभजिन स्तवनं ॥

॥ आज तो वधाई राजा, नाभीके दरबार रे ॥ मरु देवायें बेटो जायो, ऋषभ कुमार रे ॥ आ० ॥ १ ॥ अयोध्यामें उच्छव होवे, मुख बोले जयकार रे ॥ घननन घननन घंटा वाजे, देव करे थेईकार रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मली मंगल गावे, लावे मोतीमाल रे ॥ चंदन चरची पाए लागे, प्रभु जीवो चिरकाल रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ नाभीराजा दानज देवे, वरसे अखंम धार रे ॥ गाम नगर पुर पाटण देवे, देवे मणि भंमार रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ हाथी देवे साथी देवे, देवे रथ तूखार रे ॥ हीर चीर पीतांबर देवे, देवे सवि शणगार रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तिन लोकमें दिनकर प्रगट्यो, घर घर मंगल माल रे ॥ केवल कमलारूप निरंजन, आदीश्वर दयाल रे ॥आ०॥६॥

॥ अथ श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ चिंतामणि चिंता सवि चूरे, पूरे मनकी आशा रे ॥ भाव भक्तिशुं जे नर ध्यावे, पावे शिव सुख वासा रे ॥ चिंता० ॥ पूरे० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उर देव सब दूर कीए हे, प्रभु गुनका में प्यासा रे ॥ दिलभर दरिसण द्यो प्रभु प्यारे, दोहग दूर पलासा रे ॥ चिंता० ॥ २ ॥ प्रभुजीशुं मेरो चित्त चाहे, चकवा दिनकर जैसा रे ॥ चरणकमलकी गंध सुगंधें, मुझ मन भ्रमरा वैसा रे ॥ चिं० ॥ ३ ॥ जिन मुख वाणी गंग तरंगें, पाप पंकका नासा रे ॥ देखतहिं

मन विकसित होवें, एहि अजव तमासा रे ॥ चिं० ॥ ॥ ४ ॥ पास जिनेसर पल न विसारुं, जब लग तनमें साता रे ॥ ग्यानमहोदय चरण संरोजें, करुणोदधि हे दासा रे ॥ चिं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ रुषन्नजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे सफल दिवस आज माहरो, दीठो प्रनु नो देदार ॥ लय लागी जिनजीथकी, प्रगट्यो प्रेम अपार ॥ घडी एक विसरो नहिं साहिबा, साहिबा घणो रे सनेह ॥ अंतरजामी ठो माहरा, मरुदे वीना नंद ॥ घ० ॥ १ ॥ जीरे लघु थइनें मनडुं रही, प्रनु सेवानें काज ॥ ते दिन क्यारें आवशे, शिव सुखना दातार ॥ घ० ॥ २ ॥ जीरे प्राणेसर प्रनुजी तुमें, आतमना आधार ॥ माहारे मन प्रनु तुमें एक ठो, जाणजो जगदाधार ॥ घ० ॥ ३ ॥ जीरे एक घडी प्रनु तुम विना, जाए वरस समान ॥ प्रेम विरह तुऊ केम खमुं, जाणो वचन प्रमाण ॥ घ० ॥ ४ ॥ जीरे अंतरगतनी वातडी, कहो केने कहेवाय ॥ वालेसर विशवासीनें, कहेतां डुःख जाय ॥ घ० ॥ ५ ॥ जीरे देव अनेक जगमांहे ठे, तेहनी रीत अनेक ॥ तुऊ विना अवरनें नही नमुं, एवी मुऊ मन टेक ॥ घ० ॥ ६ ॥ जीरे पंमित विवेकवि जय तणो, नमे शुन मन नाय ॥ हर्षविजय श्रीरु षनना, जुगतें गुण गाय ॥ घ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तवनं ॥

॥ श्रीरे सिद्धाचल नेटवा, मुऊ मन अधिक उमा हो ॥ रुपन्न जिणंद जुहारीनें, लीजें नव तणो लाहो ॥ श्री० ॥ १ ॥ मणिमय मूरति रुपननी, निपाई अनिराम ॥ नुवन करान्युं कनकमय, राख्युं नरतें नाम ॥ श्री० ॥ २ ॥ इण गिरि रुपन्न समोसस्या, पूर्व नवाणुं वार ॥ राम पांमव मुगतें गया, पाम्या नवनो पार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ नेम विना त्रेवीश जिना, आव्या सिद्ध खेत्र जाणी ॥ शत्रुंजा समुं तीरथ नही, बोल्या सीमंधर वाणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूरव पुण्य पसायथी, विमलाचल पायो ॥ कांतिविजय हरषें करी, विमला चल गायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ नोलीडा हंसा रे विपय न राचीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धारथना रे नंदन वीनवुं, वीनतडी अवधार ॥ नवमंमपमां रे नाटक नाचियो,हवे मुऊ दान देव राव॥ हवे मुज पारउतार॥सिद्धा०॥१॥ त्रण रतन मुऊ आपो तातजी, जेम नावे रे संताप ॥ दान देयंतां रे प्रनुजी कसुर किसी, आपो पदवी रे आप ॥सिद्धा०॥ ॥ २ ॥चरण अंगुठडे मेरु कंपावियो, सुरनुं मोडयुं रे मान॥अष्टकर्मनो रे ऊगडो जीतियो,दीधुं वरसीरे दान ॥ सिद्धा० ॥ ३ ॥ शासन नायक सवि सुख दायक, त्रिशला कूखें रतन्न ॥ सिद्धारथनो रे वंश दीपावियो, प्रनुजी तमें धन्य धन्य ॥ साहेब तुमें धन्य धन्य

॥ सिद्धा० ॥४॥ वाचकशेखर कीर्तिविजय गुरु,पामी तास पसाय ॥ धर्म तणे रसें जिन चोवीशना, विनय विजय गुण गाय ॥ सिद्धा० ॥ ५ ॥ इतिवीरजिन॥

॥ अथ प्रजाती ॥ रागवेलावल ॥

॥जब लगें समकित रत्नकुं, पाया नही प्राणी ॥ तव लगें निज गुण नवि वधे, तरु विण जिम पाणी ॥ ज० ॥ १ ॥ तप संयम किरिया करो, चित्त राखो ठाम ॥ दर्शन विण निष्फल होय, जिम व्योमें चित्राम ॥ ज० ॥ २ ॥ समकित विरहित जीवनें, शिव सुख होये केम ॥ विण हेतु कार्य न नीपजे, मृदविण घट जेम ॥ ज० ॥ ३ ॥ परंपर कारण मोक्षको, ए बे समकित मूल ॥ श्रेणिक प्रमुख तणी परें, होय सिद्धि अनुकूल ॥ ज० ॥ ४ ॥ चार अनंतानुबंधीआ, त्रिक दर्शन मोह ॥ ज्ञान कहे जे क्षय करे, वंदूं ते जितकोह ॥ ज० ॥ ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥ राग वेलावल ॥

॥ तेदिन क्यारें आवशे, श्रीसिद्धाचल जाशुं ॥ रुषन्न जिणंदने पूजवा, सूरज कुंममां न्हाशुं ॥ ते० ॥ १ ॥ समवसरणमां बेसीनें, जिनवरनी वाणी ॥ सांजलशुं साचे मनें, परमारथ जाणी ॥ ते० ॥ २ ॥ समकित व्रत सूधां धरी, सद गुरुने वंदी ॥ पाप सव आलोइनें, निज आतम निंदी ॥ ते० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां दोय टंकनां, करशुं मन कोडें ॥ विषय कषाय वीसारीनें, तप करशुं होडें ॥ ते० ॥ ४ ॥ वाह्ला

लाने वैरी विचें, नवि करशुं वेहेरो ॥ परना अवगुण देखीने, नवि करशुं चेहेरो ॥ ते० ॥ ५ ॥ धरम स्थानक धन वावरी, छकायनें हेतें ॥ पंच महाव्रत लेइनें, पालशुं मन प्रीतें ॥ ते० ॥ ६ ॥ कायानी माया मेलीने, परीसहने सहेशुं ॥ सुख दुःख सघला विसारीनें, समभावें रहेशुं ॥ ते० ॥ ७ ॥ अरिहंत देवनें उलखी, गुण तेहना गाशुं ॥ उदय रतन इम उचरे, त्यारें निरमल थाशुं ॥ ते० ॥ ८ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रभातें मंगल ॥राग भैरव ॥

॥ जाग भविया धर्म वाहाणुं, साद सद्गुरुनो सुणी ॥ काज कर जीव पुण्य केरां, मोह निद्रा परहरी ॥ जा० ॥१ ॥ पूरवदिशें जिनतणी वाणी, ज्ञान दिनकर उगीयो ॥ हर्ष हईडा कमल विकस्यां, पाप तिमिर वही गयो ॥ जा० ॥ २ ॥ धर्म मारग हुउ परगट, हृदय नयण निहालीएं ॥ ध्यान जल नवकार दातण, करी वदन पखालीएं ॥ जा० ॥ ३ ॥ सूरजकुंभ जई स्नान कीजें, निरमल धोती पेहेरीएं ॥ श्रीआदिनाथ युगादि वंदी, अष्ट कर्म निवारीएं ॥ ॥ जा० ॥ ४ ॥ शीयल समकित धोति पेहेरी, कुसुम करणी कर धरी ॥ प्रह उठी प्रासाद जइएं, श्रीजिन पूजा इम करी ॥ जा० ॥ ५ ॥ सत्य वचन तंबोलना रंग, शील सिणगार पेहेरीएं ॥ माय बाप देव गुरु तेहनां, चरणकमल जुहाररिएं ॥ जा० ॥ ६ ॥ गंभारे जइ पूजा रचीएं, रंग मंडप रलियामणो ॥

१३ ॥ एक शो आठ सिद्धा ऋषभने जो, वारें सु
विधिनें असंयत्ति जो ॥ शीतल नाथ वारें थयुं जो,
कुल हरिवंशनी उतपत्ति जो ॥ च० ॥ १४ ॥ एम
विचार करे इंदलो जो, प्रभु नीच कुलें अवतार जो
। तेहनुं कारण शुं अछे जो, इम चिंतवे हृदय
मझार जो ॥ च० ॥ १५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आशोमासें शरद पू ॥
॥ नमनी रात जो ॥ ए देशी ॥

॥ नव मोहोटा कहीएं प्रभुना सत्तावीश जो, मरिची
त्रिदंडी तेमांहे त्रीजे भवें रे जो ॥ तिहां भरत चक्रीस
र वांदे आवी जोय जो, कुलनो मद करी नीच गोत्र
बांध्युं तेहवे रें जो ॥ १ ॥ एतो माहण कुलमां
आव्या जिनवर देव जो, अति अणजुगतुं एह थयुं
थाशे नही रे जो ॥ जे जिनवर चक्री नीच कुलमांहे
जो, छे माहारो आचार धरुं उत्तम कुलें सही रे जो
॥ २ ॥ एम चिंतवी तेड्यो हरिणगमेषी देव जो, कहे
माहण कुंमें जइने ए कारज करो रे जो ॥ छे देवानं
दानी कूखें चरम जिणंद जो, हर्ष धरीने प्रभुनें तिहां
थी संहरो रे जो ॥ ३ ॥ नयर क्षत्रीकुंम राय सिद्धा
रथ गेह जो, त्रिशलाराणी तेहनी छे रूपें भली रे जो
॥ तस कुखें जइ संक्रमावो प्रभुनें आज जो, त्रिश
लानो जे गर्भ अछे ते माहणकुलें रे जो ॥ ४ ॥
जेम इंद्रे कह्युं तेम कीधुं ततक्षण तेण जो, ब्याशी
रातने अंतरे प्रभुनें संहर्या रे जो ॥ माहणी सुपनां

जाणे त्रिशला हरीनें लीध जो, त्रिशला देखी चौद सुपन मनमां धर्यां रे जो ॥ ५ ॥ गज वृषन्न अने सिंह लक्ष्मी फूलनी माल जो, चंदो सूरज ध्वज कुंन पद्मसरोवरु रे जो ॥ सागरने देवविमानज रत्ननी राशि जो, चौदमे सुपनें देखी अग्नि मनोहरु रे जो ॥६॥ शुन्न सुहणा देखी हरखी त्रिशला नार जो, परन्नातें उठीने पीयु आगल कहे रे जो ॥ ते सांजली दिलमां राय सिद्धारथ नेह जो, सुपन पाठक तेडीने पूछे फल लहे रे जो ॥ ७ ॥ तुम होशे राज अरथनें सुत सुख नोग जो, सुणी त्रिशला देवी सुखें गर्न पोषण करे रे जो ॥ तव माता हेतें प्रन्नुजी रह्या संलीन जो, ते जाणीने त्रिशला दुख दिलमां धरे रे जो ॥ ८ ॥ में कीधां पाप अघोर नवो नव जेह जो, दैव अटारो ढोषी देखी नवि शके रे जो ॥ मुऊ गर्न हर्यो जे किम पामुं हवे तेह जो, रांक तणे घर रत्न चिंतामणि किम टके रे जो ॥ ए ॥ प्रन्नुजीएं जाणी ततखिण दुःखनी वात जो, मोह विटंबन जालिम जगमां जे लहुं रे जो ॥ जुर्ज दीठा विण पण एवडो जागे मोह जो, नजरें बांध्या प्रेमनुं कारण शुं कहुं रे जो ॥ १० ॥ प्रन्नुगर्नथकी हवे अन्निग्रह लीधो एह जो, मात पिता जीवतां संयम लेवुं नही रे जो ॥ एम करुणा आणी तुरत हलाव्युं अंग जो, माताने मन उपनो हर्ष घणो सही रे जो ॥ ११ ॥ अहो नाग्य अमारुं जाग्युं सहियर आज जो, गर्न अमा

॥ ढाल चोथी ॥

॥तारेमाथेपंचरंगीपाग,सोनारो ढोगलोमारुजी॥एदेशी

॥ प्रभु आपी वरसी दान जलुं रवि ऊगते ॥ जिनव
रजी ॥ एक कोडीने आठ लाख सोनइया दिन प्रते ॥
जि०॥मागशिरवदि दशमी उत्तरा योगें मन धरी ॥जि०
जाईनी अनुमति मागी नें दीक्षा वरी ॥जि०॥१॥ तेह
दिवसथकी चउनाणी प्रभुजी थया ॥ जि० ॥साधिक
एक वरसते चीवर धारी प्रभु रह्या ॥ जि० ॥ पछें दी
धुं वंभणने वे वार खंमो खंमें करी ॥ जि० ॥ प्रभु वि
हार करे एकाकी अभिग्रह चित्त धरी ॥ जि० ॥ २ ॥ सा
डा बार वर्षमां घोर परीसह जे सह्या ॥ जि० ॥ शूलपा
णीने संगम देव गोशालाना कह्या ॥ जि० ॥ चंमको
शीने गोवालें खीर रांधी पग ऊपरें ॥ जि० ॥ काने खी
ला खोस्या ते दुष्ट सहु प्रभु उद्धरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ लेइ
अडदना वाकला चंदन बाला तारियां ॥ जि० ॥ प्रभु
पर उपगारी सुख दुख सम धारिया ॥ जि० ॥ छमासी
बेनें नव चोमासी कहीएं रे ॥ जि० ॥ अढीमास त्रि
मास दोढमास ए बे बे लहीएं रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ षट
कीधा बे बे मास प्रभु सोहामणा ॥जि०॥ बार मासनें
पख बहोतर ते रलीयामणा ॥ जि० ॥ छठ वसें उग
णत्रीश बार अट्ठम वखाणीयें ॥ जि० ॥ भद्रादिक प्र
तिमा दिन बे चौदश जाणीयें ॥जि०॥५॥ साडा बार
वरषे तप कीधां विण पाणीयें ॥ जि० ॥ पारणा त्रण
सें उगण पंचास ते जाणीयें ॥जि०॥ तव कर्म खपावी

ध्यान शुकल मन ध्यावता ॥ जि० ॥ वैशाख शुदि दशमी उत्तरा जोगें सोहावता ॥ जि० ॥ ६ ॥ शालि वृक्ष तलें प्रभु पाम्या केवल नाण रे ॥ जि० ॥ लोकालोक तणां परकाशी थया प्रभु जाण रे ॥जि०॥ इंद्रभूति प्रमुख प्रतिबोधी गणधर कीध रे ॥ जि० ॥ संघ थापना करीनें धर्मनी देशना दीध रे ॥ जि०॥ ७ ॥ चौद सहस भला अणगार प्रभुनें शोभता ॥ जि० ॥ वली साधवी सहस छत्रीश कही निर्लोभता ॥ जि० ॥ उंगणशाठ सहस एकलाख ते श्रावक संपदा ॥जि०॥ तिन लाखनें सहस अढार ते श्राविका संमुदा ॥ जि० ॥ ८ ॥ चौद पूर्वधारी त्रणशे संख्या जाणीयें ॥ जि० ॥ तेरशें उहिनाणी सातशें केवली वखाणीयें ॥ जि० ॥ लब्धि धारी सातशें विपुलमति वली पांचशे ॥ जि० ॥ वली चारशें वादी ते प्रभुजी पासें वसे ॥ जि० ॥ ९ ॥ शिष्य सातशेने वली चौदशें साधवी सिद्ध थया ॥ जि० ॥ ए प्रभुजीनो परिवार कहेतां मन गहगह्यां ॥ जि० ॥ प्रभुजीयें त्रीश वरस घरवासें भोगव्यां ॥ जि०॥ छदमस्थ पणामां बार वरस ते भोगव्यां ॥ जि० ॥ १० ॥ त्रीश वरस केवल वेंहेंतालीश वरस संजम पणुं ॥ जि० ॥ संपूरण बहोंतेर वरस आयु श्रीवीर तणुं ॥ जि० ॥ दीवाली दिवसें स्वाती नक्षत्र सोहंकरु ॥ जि० ॥ मध्यरातें मुक्ति पहोता प्रभुजी मनोहरु ॥ जि०॥ ११ ॥ ए पांच कल्याणक चोवीशमा जिनवर तणां ॥ जि० ॥ ते भणतां गुणतां हर्

ख होये मनमां घणा ॥ जि० ॥ जिनशासन नायक त्रिशला सुत चित्त रंजणो ॥ जि० ॥ नवियणनें शिव सुख कारी नवनय नंजणो ॥ जि० ॥ १ २ ॥ कलश ॥ जय वीरजिनवर संघ सुखकर, थुण्यो अति उत्सुक ध री ॥ संवत सत्तर एक्याशीयें, सूरत चोमासुं करी ॥ श्री सहजसुंदर तणो सेवक, नक्तिशुं एणी परें कहे ॥ प्र नुजीशुं पूरण प्रेम पाम्यो, नित्यलान्न वंबित लहे ॥ १ ३ ॥

॥ अथ आदिनाथस्तवनं ॥

॥ प्रथम जिणेसर प्रणमीयें, जास सुगंधीरे काय ॥ कल्पवृक्ष परें तास इंडाणी नयण जे, नृंग परें लपटा य ॥ १ ॥ रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जे आस्वा द ॥ तेहथी प्रतिहत तेह मानुं कोई नवि करे, जगमां तुमशुं वाद ॥ २ ॥ वगर धोई तुऊ निर्मली, काया कं चन वान ॥ नही प्रस्वेद लगार तारे तुं तेहने जे धरे ताहरुं ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुऊ मन थकी, तेहमां चित्त न कोइ ॥ रुधिर आमीषथी रोग गयो तुऊ जन्म थी, दूध सहोदर होई ॥ ४ ॥ श्वासोश्वास कमल स मो, तुज लोकोत्तर वात ॥ देखे न आहार निहार चर्म चक्षुधणी, एहवा तुऊ अवदात ॥ ५ ॥ चार अतिशय मूलथी, उंगणीश देवना कीध ॥ कर्म खप्याथी इग्यार चोत्रीश, एम अतिशय समवायंगें प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग ॥ प अविजय कहे एम समय प्रनु पालजो, जिम थावं '१५४ अनंग ॥ ७ ॥ इति आदिनाथ स्तवनं संपूर्णं ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ परमातम परमेसरू, जगदीसर जिनराज ॥ जगबंधव जगभाण बलिहारी तुम तणी, भवजलधिमां रे झिहाज ॥ १ ॥ तारक वारक मोहनो, धारक निज गुण ऋद्धि ॥ अतिशय वंत भदंत रूपाली शिव वधू, परणी लही निज सिद्धि ॥ २ ॥ ज्ञान दर्शन अनंत छे, वली तुझ चरण अनंत ॥ इम दानादि अनंत क्षायिक भावें थया, गुण ते अनंतानंत ॥ ३ ॥ बत्रीश वर्ण समाय छे, एकज श्लोक मझार ॥ एक वर्ण प्रभु तुझ न माये जगतमां, केम करी थुणीएं उदार ॥ ४ ॥ तुझ गुण कोण गणी शके, जो पण केवल होय ॥ आविर्भावें तुझ सयल गुण माहरे, प्रछन्न भावथी जोय ॥ ५ ॥ श्रीपंचाशरा पासजी, अरज करुं एक तुझ ॥ आविर्भावथी थाय दयाल कृपानिधि, करुणा कीजें जी मुझ ॥ ६ ॥ श्रीजिन उत्तम ताहरी, आशा अधिक माहाराज ॥ पद्मविजय कहे एम लहुं, शिव नगरीनुं, अक्षय अविचल राज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ जिनपति अविनाशी काशी धणी रे, मननी आशा पूरणहार हो ॥ जिनपति चिंतामणि रे ॥ जिनपति अश्वसेन कुल चंदलो रे, वालो वामा मात मलार हो ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ तीन भुवन शिर सेहरो रे, सेवे चोशठ सुरपति पाय हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ नाटक नव नव छंदथी रे, सुरवधू मधुर स्वरे गुण

गाय हो ॥ जि०॥ २ ॥ जि० ॥ तुज रूपें रतिपति थसे रे, अंगथी लाजी रह्यो अनंग हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ तुज उपमा कोई जग नहिं रे, तुं छे गुणराशिनो संग हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि० ॥ नागपति धरणींद्रने रे, करु णा करीने दीधो नवकार हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ शोल सहस अणगारना रे, साहुणी अडत्रीश सहस वि स्तार हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ जि० ॥ जादवनी नाठी जरा रे, तो हवे अमनें करो सुपसाय हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ धरणीधर पद्मावती रे, सेवे पार्श्वयक्ष वलि पाय हो ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ पास आश मुज पूरवा रे, साचो शंखेश्वर महाराज हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ श्रीगु रुपद्मविजय तणो रे, मागे रूपविजय शिवराज हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिनस्तवनं ॥

॥ शांतिजीनुं मुखडुं जोवा नणी जी, मुझ मनडुं रे लोभाय ॥ चितडुं जाणे रे कडी मलुं जी, पण प्रभु किम रे मलाय ॥ शां० ॥ १ ॥ दैव न दीधी मु जने पांखडी जी, आवुं हुं किम रे हजूर ॥ पण प्रभु जाणजो वदना जी, आतमराम सनूर ॥ शां० ॥ २ ॥ गजपुरी नगरीनो राजीयो जी, अचिरा देवी नंदन एह ॥ जिम रे पारेवडुं राखीयुं जी, तिम प्रभु राखजो नेह ॥ शां० ॥ ३ ॥ मस्तकें मुकुट सोहामणो जी, कानें कुंमल श्रीकार ॥ बांहे बाजूबंध बेरखा जी, कंठ डे नवसरो हार ॥ शां० ॥ ४ ॥ आज नलें रे दिन

ऊगीयो जी, दूधडे वूठडा मेह ॥ वाचक सहज सुंदर तणो जी, नित्यलाभ प्रभु गुणगेह ॥ शां०॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ सुगुण सोभागी रे के साहेब माहेरा, श्रीचिंता मणि पाश ॥ पूरव पुण्यें रे के दरिसण देखीयें,पूगी मा रा मनडानी आश ॥ हुं बलिहारी रे के जाउं तारा नामनी ॥ १ ॥ काशी देशें रे के नगरी वाराणसी, अ श्वसेन राया कुलचंद ॥ माता वामा रे के प्रभुजीने ज नमीया, दीठडे परमानंद ॥हुं०॥२॥ मूरत सूरत रे के निरखीने हरखीएं, सांभल मोरा स्वाम ॥ दान दधा रणरे के जगमां सुरतरु, तुं मुझ आतम राम ॥हुं०॥ ॥ ३ ॥ लाल सुरंगी रे के अंगी शोभती, सोहे सोहे प्रभुजीने अंग ॥ शिखर बनाव्युं रे के सुंदर कोरणी, दिसे दिसे नव नवा रंग ॥ हुं० ॥ ४ ॥ शिरपर सो हे रे के मुकुट जडावनो, काने कुंमल श्रीकार ॥ केडें कणदोरो रे के बांहे बेरखा, कंठडे नवसरो हार ॥ हुं० ॥ ५ ॥ विधिपक्ष देहरे रे के मूल नायक प्रभु, मुज मंमण जिनराज ॥ भाविक श्रावक रे के भावे भावना, साहेब गरीब निवाज ॥ हुं० ॥ ६ ॥ कोइ कुमतिआ रे के प्रभुने मानें नहिं, ते रडवडशे संसार ॥ नव दंमकमांहे रे के गति छे तेहनें, नहिं लीये भवनो पार ॥ हुं० ॥ ७ ॥ सूत्र सिद्धांतें रेके जिनप्रतिमा कही, जिन सरखी निरधार ॥ पूजो प्र णमो रे के भवियण भावशुं, जिम पामो शिव सुख

सार ॥ हुं० ॥ ८ ॥ संवत सत्तर रे के वरस चोराणुं ए, रूडो रूडो नाद्रव मास ॥ स्तवना कीधी रे के पर व पंजूसणे, नित्यलान्न प्रन्नुजीनो दास ॥ हुं० ॥ए॥

॥ अथ शांतिजिनस्तवनं ॥

॥ शांति प्रन्नु वीनति एक मोरी रे,तारी आंखडी कामणगारी ॥ शांति० ॥ विश्वसेन राजा तुज ताय रे, राणी अचिरा देवी माय रे ॥ तुंतो गजपुर नगरी नो राय ॥ शां० ॥ १ ॥ प्रन्नु सोवन कांति विराजे रे, मुकुटे हीरा मणि ढाजे रे ॥ तारी वाणी गंगापूर गाजे ॥ शां० ॥ २ ॥ प्रन्नु चालीश धनुपनी काया रे, नवि जनना दिलमां नाया रे ॥ कांई राज राजे सर राया ॥ शां० ॥ ३ ॥ प्रन्नु माहारा ढो अंतर जामी रे, करुं वीनति हुं शिर नामी रे ॥ चउद रा जना ढो तुमें स्वामी ॥ शां० ॥ ४ ॥ प्रन्नु पर्षदा वारे मांहे रे, दीए देशना अधिक उह्माहें रे ॥ प्रन्नु अंगी एं नेटया उमाहे ॥ शां० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविका वहु पुण्यवंतां रे, शुन्न करणी करे महंता रे ॥ शांति नाथना दरिसण करता ॥ शां० ॥ ६ ॥ संवत अढा र अट्ठाणुउ सार रे, मास कल्प कस्यो तिणि वार रे॥ सूरि मुक्तिपदना धार ॥ शां० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि नेटया रे, धन्य नाग्य हमारां ॥ विमलाचल गिरि नेटया रे, धन्य नाग्य हमारां ॥ ए गिरिवरनो महिमा मोहोटो, कहेतां नावे पार ॥ राय

ए रूख समोसस्या स्वामी, पूर्व नवाणुं वार रे ॥ ध० ॥
॥ १ ॥ मूल नायक श्रीआदि जिनेसर, चउमुख प्र
तिमा चार ॥ अष्ट इव्यशुं पूजो नावें, समकित मूल
आधार रे ॥ ध० ॥ २ ॥ नाव नगतिशुं प्रनुगुण गावे,
आपणा जनम सधास्या ॥ यात्रा करी नवि जन
शुन्न नावें, निरय तिर्यंच गति वास्या रे ॥ ध० ॥३॥
दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवण सुणी गुण तारा ॥
पतित उद्धारण बिरुद तुमारुं, ए तीरथ जग सारा
रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अढार व्यासीएं मास आषा
ढे, वदि आठम नोमवारा ॥ प्रनुजीके चरणे प्रता
पके संघमें, खेम रतन प्रनु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

॥ अथ शीतलजिनस्तवनं ॥

॥ शीतल जिननी सेवा कीजें, लीजें संपदा सारी
रे ॥ इव्य नाव जिन पूजा करतां, नासे दूरगति
नारी रे ॥ १ ॥ संसारी प्राणी देव पूजो, देव पूजो
हित आणी रे ॥ ज्ञान अनंतुं रूप अनंतुं, शक्ति अ
नंती कहीएं रे ॥ लोकालोक तणा परकाशी, तेहनी
आणज वहीएं रे ॥ संसा० ॥ २ ॥ नक्ति प्रनुनी ह
इडे धरतां, नव नव पातक हरीएं रे ॥ एहवो निश्चें
माहारा मनमां, प्रनु तारे तो तरीएं रे ॥ संसा०
॥ ३ ॥ कर जोडी मद मत्सर मूकी, प्रनुजीने शिर
नामूं रे ॥ अनुनव पदनी लालच अमने, ते जिनव
रथी पामूं रे ॥ संसा० ॥ ४ ॥ सेवक ऊपर करुणा
करजो, वीनतडी चित्त धारी रे ॥ कहे नित्यलान प्र

त्नुने प्रणमी, देजो सेव तुमारी रे ॥ संसा० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ लाखीयो सोहावे जिनजी, फूलांनो गले हार॥ आणीने सोहावे जिनजी, अंगीआं जडाव ॥ मोरा पासजी हो लाल, संकट छोडाव स्वामी विघ्न निवार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पदमणी चाली पूजवाने, करी शोल सिणगार ॥ पाए घमके घूघराने, नेउरनो झणकार ॥ मोरा० ॥ २ ॥ मेघमाली देवताने. कीधो घमघोर ॥ गाजे गगन वीजलीने, पाणी वरषे जोर ॥ मो० ॥ ३ ॥ ध्यानथकी नवी चूका. प्रनु पास जिणंद ॥ देही कष्ट निवारवाने, आव्या छे धर णिंद ॥ मो० ॥ ४ ॥ गोडी पारस पूजो जिम, होए रंग रेल ॥ देखी मूर्त्ति पासजीनी, जाणीएं मोहन वेल ॥ मो० ॥ ५ ॥ छमक छमक चालतीने, घूघर डी घमकार ॥ तातायेई ताल वाजे, देवतानी चाल ॥ मो० ॥ ६ ॥ केशर चंदन घशी घणाने, कस्तूरी घनसार ॥ जे नर नावे पूजशेने, उतारें नवपार ॥ मो० ॥ ७ ॥ तुंही मारो साहेबो ने, तुंहीं जीवन प्राण ॥ तुमने माने देवताने, मोहोटा राणो राण ॥ मो० ॥ ८ ॥ पंमितमांहे शिरोमणिने, कनक वि मल गुरु हीर ॥ चरण कमल सेवे सदाने, केसर क वियण धीर ॥ मो० ॥ ए ॥ इति पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ दोहा ॥ वे कर जोडी वीनवुं.सुणो जिनवर श्रीशां

ति ॥ पाप खमावुं आपणां, जे कीधां एकांत ॥१॥ ढाल ॥ एकांत कहुं सुणो स्वामी, हुंतो चरण तुमारा पामी ॥ मुज मांहे कपट छे बहुलां, तेतो सुणतां मन थाये म्हुलां ॥२॥ परछिद्र प्रगट में कीधां,॥ पाठांतरे ॥ प्रछन्न प्रगट में कीधां, कूडां आल में परने दीधां॥ तेथी छोडावो मुज तात, शांतिनाथ सुणो मोरी वात ॥ ३ ॥दोहा॥ नव अनंत नमी आवियो, चरण तुमारे देव ॥ जिम राख्युं पारेवडुं, तिम राखो मुज हेव ॥ ४ ॥
॥ ढाल ॥ हवे एकेंद्रियादिक जीव, डहव्या करता अति रीव ॥ तस लाख चोराशी नेद, राग द्वेष पमाड्या खेद ॥ ५ ॥ मृषा बोलतां नावी लाज, तो किम सरशे आतम काज ॥ चोरी इण नव परनव कीधी, पररमणीशुं दृष्टिज दीधी ॥ ६ ॥ दोहा ॥ मधुबिंडसम विषय सुख, डुख तो मेरु समान ॥ मानवि मन चिंते नही, करतो क्रोड अज्ञान ॥ ७ ॥
॥ ढाल ॥ अज्ञान पणे कृद्धि मेली, व्रतवाडि नली परें नेली ॥ हवे सार करो प्रञ्जु मोरी, रात दिवस सेवा करुं तोरी ॥ ८ ॥ बहु गुनही बुं श्रीशांति, मुज टालो नवनी त्रांति ॥ हुंतो मागुं बुं अविचल राज, इम पनणे श्रीजिनराज ॥ ए ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ म्हारुं मन मोह्युं रे श्रीसिद्धाचलें रे, देखीने हरषित थाय ॥ विधिशुं कीजें रे यात्रा एहनी रे, नव नवनां डुख जाय ॥ मा० ॥ १ ॥ पांचमे आरे रे पा

वन कारणे रे, ए समुं तीर्थ न कोय ॥ मोह्लोटो म
हिमा रे महियल एहनो रे, आ जरतें इहां जोय ॥
॥ मा० ॥ २ ॥ इणे गिरि आव्या रे जिनवर गणधरा
रे, सीधा साधु अनंत ॥ कठिन करम पण इण
गिरि फरसतां रे, होये कर्मनी शांत ॥ मा० ॥ ३ ॥
जैन धरमनो जाचो जाणीयें रे,मानव तीर्थ ए थंन॥
सुर नर किन्नर नृप विद्याधरा रे, करता नाटारंज ॥
॥ मा० ॥ ४ ॥ धन धन दाहाडो रे धन धन ए घडी
रे, धरीयें हृदय मझार ॥ ज्ञानविमल प्रजु एहना
गुण घणा रे, कहेतां नावे पार ॥ मा० ॥५॥ इति ॥

॥ अथ संजवजिन स्तवनं ॥

॥ हुं तो जावंरे जिन दरबार, प्रजु मुख जोवाने॥
प्रजु आपे रे समकित सार, शिव सुख होवाने ॥१॥
साथें लीधां रे निरमल नीर, प्रजुने पखालवा रे ॥
शुद्ध कीधां रे प्रजुनां शरीर, जव डुःख टालवा रे ॥
॥ २ ॥ घसी घसी रे केशर कपूर, नवे अंगें पूजियें ॥
हसी हसी रे आणंद पूर, शिव सुख लीजियें ॥३॥
एहवे आवी रे अमरनी नार, प्रजुजीने वीनवे ॥
साथें लावी रे फूलडानो हार, प्रजुने कंठें ठवे ॥ ४ ॥
आगल नाचे रे थइ थइ कार, सहु टोले मली ॥ दिल
साचेरे करी शणगार,प्रणमे लली लली ॥ ५ ॥ हाथ
जोडी रे प्रजुजीनी पास, जक्ति घणी करे ॥ मान मोडी
रे गावे जास, प्रजु मनमां धरे ॥ ६ ॥ आलो आलो
रे मुगतिनो वास, प्रजु करुणा करी ॥ टालो टालो रे ज

वनो पास, विनति चित्त धरी ॥ ७ ॥ सेनाराणीना नं दन देव, गुणरत्नाकरू ॥ एवो जाणी रे कीधी में सेव, जयो जयो जिनवरू ॥ ८ ॥ सोहे सोहे रे सूरत म फार, विधिपक्ष देहरे ॥ मोहे मोहे रे बहु नर नार, देखी नयणां ठरे ॥ ९ ॥ नामें नामें रे संजव नाथ, जिन रलियामणां ॥ पामे पामे रे सुख नित्य लान्न, लेहुं नित्य जामणां ॥ १० ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ अष्टापदगिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापद अरिहंत जी, माहारा वालाजी रे ॥ आदेशर अवधार, नमीयें नेहशुं ॥ मारा० ॥ दश हजार मुणिंदशुं ॥ मारा० ॥ वस्या शिव वधू सार ॥ नमी० ॥ १ ॥ जरतजूप जावें कस्या ॥ मारा० ॥ चिहुं मुख चैत्य उदार ॥ नमी० ॥ जिनवर चोवीशे जिहां ॥ मारा० ॥ थाप्या अति मनोहार ॥ नमी० ॥ ॥ २ ॥ वर्ण प्रमाणें विराजता ॥ मारा० ॥ लञ्छन ने अलंकार ॥ नमी० ॥ सम नासाएण शोजता ॥ ॥ मारा० ॥ चिहुं दिशि चार प्रकार ॥ नमी० ॥ ३ ॥ मंदोदरी रावण तिहां ॥ मारा० ॥ नाटक करतां विचाल ॥ नमी० ॥ त्रूटी तांत तिहां कणे ॥ मारा० ॥ निज कर वीणा ततकाल ॥ नमी० ॥ ४ ॥ करी व जावी तिणे समे ॥ मारा० ॥ पण नवि तोडयुं ते तान ॥ नमी० ॥ तीर्थंकर पद बांधीयुं ॥ मारा० ॥ अद्भुत ध्यान सुगान ॥ नमी० ॥ ५ ॥ निज लब्धें गौ तम गुरु ॥ मारा० ॥ करवा आव्या ते यात्र ॥नमी०॥

जगचिंतामणि तिणे कस्यो ॥ मारा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥ नमी० ॥ ६ ॥ ए गिरि महिमा मोटको ॥ मारा० ॥ तिण नव पामीजें सिद्धि ॥ नमी० ॥ निज लब्धें जिनवर नमी ॥ मारा० ॥ पामे शाश्वत ऋद्धि ॥ नमी० ॥ ७ ॥ पद्मविजय कहे एहनां ॥ मारा० ॥ केतां करूं रे वखाण ॥ नमी० ॥ वीरें स्वयंमुख वरणव्यो ॥ मारा० ॥ नमता क्रोड कल्याण ॥ नमी० ॥ ८ ॥ इति अष्टापद स्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टक छंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशिदीस ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतमनामे गिरुअरि चढे, मनवंछितहेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग, गौतम नामें सर्व संजोग ॥२॥ जे वैरी विरूआ वंकडा, जस नामें नावे ढूकडा ॥ भूत प्रेत नवि मंडे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल काय, गौतमनामें वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतमनामें जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनवछित कापड तंबोल ॥ घरघुं घरणी निर्मल चित्त, गौतम नामें पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोहोटां मंदिर मेरु समान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू पोहोंचे वंछित कोड ॥ म

ह्यिल माने मोहोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगति मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे वहु ॥ कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तूठे संपति कोड ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ वछित पूरे विविध परें, श्री जिन शासन सार ॥ निश्चें श्री नवकार नित, जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अडसठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वयं मुख वदे, पंच परमेष्ठि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समर्यां संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुटमणि, सद्गुरु जापित सार ॥ सो नविया मन शुद्धशुं, नित जपीएं नवकार ॥४॥ छंद हाटकी ॥ नवकारथकी श्रीपाल नरेश्वर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिव नाम कुमरनें, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंतां नरक निवारे, पामे नवनो पार ॥ सो नवियां नत्तें चोखें चित्तें, नित्य जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ वांधि वड शाखा शिंके वेसि, हेठल कुंम्न हुताश ॥ तस्करनें मंत्र समर्प्यो श्रावकें, ऊमयो ते आकाश ॥ विधिरीत जप्यो विषधर विष टाले, ढाले अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ वीजोरां कारण राय महावल, व्यंतर डुष्ट

विरोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाळी, पाम्यो यक्ष प्र
तिबोध ॥ नव लाख जपंतां थाए जिनवर, इस्यो छे
अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लिपति शिख्यो मुनिवर
पासें, महा मंत्र मन शुद्ध ॥ परभव ते राजसिंह पृ
थिवीपति, पाम्यो परिगल ऋद्ध ॥ ए मंत्रथकी अम
रापुर पोहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥
संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाल ॥ दीठो
श्रीपास कुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाल ॥ संभ
लाव्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रभुवन अवतार
॥ सो० ॥ ए ॥ मनशुद्धें जपतां मयणासुंदरी, पामी
प्रिय संयोग ॥ इण ध्यानें कष्ट टल्युं उंबरनुं, रक्त
पित्तनो रोग ॥ निश्चेंशुं जपतां नवनिधि थायें, धर्म
तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्ण भुजं
गम घाल्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रभावें
हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतीयें
पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥
गयणांगण जाति राखी ग्रहिने, पाडी बाण प्रहार ॥
पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थइ कुंता नार ॥
ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर, भव दुःख भंजण
हार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबलने संबल कादव काढ्यां,
शकट पांचशें मान ॥ दीधे नवकारें गया देव
लोकें, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी संपति
वसुधातलें, विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥
आगें चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नव

कार तणी कोइ आदि न जाणें, इम नांखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचे, समर्यां संपति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृतकर्म कठोर ॥ पुंमरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधरने एक मोर ॥ सद् गुरुने सन्मुख विधि समरंतां, सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिका रोपण तस्कर कीधो, लोहखरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठें नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी ऋद्ध ॥ शेठनें घर आवी विघ्न निवार्यां, सुरें करी मनोहार ॥सो०॥१६॥ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच सद्याय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकित्त ॥ पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पालो पंचाचार ॥ सो०॥ ॥ १७ ॥ कलश छप्पय ॥ नित जपीयें नवकार, सारसंपति सुखदायक ॥ शुद्ध मंत्र ए शाश्वतो, इम जंपे श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य नणीजें ॥ श्री उवझाय सुसाधु, पंच परमेष्ठि थुणीजें ॥ नवकार सार संसार छे, कुशल लाभ वाचक कहे ॥ एक चित्तें आराधतां, विविध ऋद्धि वंछित लहे ॥ १८ ॥ इति नवकार छंद ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजियें ए ॥ प्रनातें उठी मंगलिक कामें, शोल सतीनां नाम लीजीयें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी नरतनी बेहेनडी ए ॥ घट घट

विरोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाळी, पाम्यो यक्ष प्र तिबोध ॥ नव लाख जपंतां थाए जिनवर, इस्यो वे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लिपति शिख्यो मुनिवर पासें, महा मंत्र मन शुद्ध ॥ परनव ते राजसिंह पृ थिवीपति, पाम्यो परिगल ऋद्ध ॥ ए मंत्रथकी अम रापुर पोहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाल ॥ दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग. अधबलतो ते टाल ॥ संन लाव्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रजुवन अवतार ॥ सो० ॥ ए ॥ मनशुद्धें जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रिय संयोग ॥ इण ध्यानें कष्ट टल्युं उंबरनुं, रक्त पित्तनो रोग ॥ निश्चेंशुं जपतां नवनिधि थाये, धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्ण जुजं गम घाल्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रनावें हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतीयें पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति राखी ग्रहिने, पाडी बाण प्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर, नव दुःख नंजण हार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबलने संबल कादव काढ्यां, शकट पांचशें मान ॥ दीधे नवकारें गया देव लोकें, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधातलें, विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नव

कार तणी कोइ आदि न जाणें, इम भांखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचे, समर्यां संपति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृतकर्म कठोर ॥ पुंडरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधरने एक मोर ॥ सद्गुरुने सन्मुख विधि सम रंतां, सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिका रोपण तस्कर कीधो, लोहखरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठें नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी ऋद्ध ॥ शेठनें घर आवी विघ्न निवार्यां, सुरें करी मनोहार ॥सो०॥१६॥ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच सझाय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकित्त ॥ पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पालो पंचाचार ॥ सो०॥ ॥ १७ ॥ कलश छप्पय ॥ नित जपीयें नवकार. सारसंपति सुखदायक ॥ शुद्ध मंत्र ए शाश्वतो, इम जंपे श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य भणीजें ॥ श्री उवझाय सुसाधु, पंच परमेष्ठि थुणीजें ॥ नवकार सार संसार छे, कुशल लाभ वाचक कहे ॥ एक चित्तें आराधतां, विविध ऋद्धि वंछित लहे ॥ १८ ॥ इति नवकार छंद ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वदी, सफल मनोरथ कीजियें ए ॥ प्रभातें उठी मंगलिक कामें, शोल सतीनां नाम लीजीयें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरतनी बेहेनडी ए ॥ घट घट

व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहि जे वडी ए ॥२॥ बाहुबल नगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामें रूपन सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिभुवनमांहि, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणाथी, शील वती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदना बाकुला वीर प्रति लाभ्या, केवल लही व्रत नाविका ए ॥ ४ ॥ उग्र सेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती नेम वल्लभा ए ॥ जोबन वेशें कामनें जीत्यो, संयम लेइ देव डुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांमव नारी, डुपदतनया वखाणीएं ए ॥ एक शो आठे चीर पूराणां, शियल महिमा तस जाणीएं ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंद्रिका ए ॥ शियल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी परनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशं बिक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुरभुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शियलें न काची, राची नही विषयारसें ए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जग सहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीय लथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवा थकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शियल अखंमित, शीवा शिवपदगामिनी ए ॥ जेहने नामें

निर्मल यश्यें, वलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरें पांडुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥ पांम्व माता दशे दशारनी,वेहिन पतिव्रता पदमिनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामें शीलव्रतधारिणी, त्रिविधें तेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जाए, दरिसण डुरित निकंदीयें ए ॥ १४ ॥ निपिधा नगरी नलह नरिंदनी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पडतां शीलज राख्युं, त्रिज्ञुवन कीर्ती जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजिता जगजन पूजिता, पुप्पचूला ने प्रन्ना वती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता, शोलमी सती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें न्नांखी शास्त्रें साखी, उद यरतन न्नांखे मुदा ए ॥ वाहाणुं वातां जे नर न्नणशे, ते लेहेशे सुख संपदा ए ॥१७॥ इति शोलसतीनो छंद ॥

॥ अथ चार मंगल ॥

॥ सिद्धार्थ न्नूपति शोहे क्त्रियकुंमें, तस घेर त्रिशला कामिनी ए ॥ गजवर गामिनी पोढीय न्नामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जामिनी मध्ये शोन्नतां रे, सुपन देखे वाल ॥ मयगल वृप न्नने केसरी, कमला कुसुमनी माल ॥ २ ॥ इंडु दिन कर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सर जल निधि उत्तम, अमरविमान अनूप ॥ ३ ॥ रत्ननो अंवार उज्ज्वल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत ॥ ४ ॥ चउद सुपन सूचित विश्व प्रजित, सकल सुख दातार ॥

गल पेहेलुं बोलीएं, श्री-वीर जगदाधार ॥ ५ ॥ म
गध देशमां नयरी राजगृही, श्रेणिक नामें नरेसरू
ए ॥ धणवर गोवर गाम वसे तिहां, वसुनूति विप्र
मनोहरु ए ॥ ६ ॥ त्रुटक ॥ मनोहरु तस मानिनी रे,
पृथिवी नामें नार ॥ इंद्रनूति आदेय छे, त्रण पुत्र
तेहने सार ॥ ७ ॥ यज्ञकर्म तेणें आदखुं, बहु विप्र
ने समुदाय ॥ तिणे समे तिहां समोसस्या, चोवीशमा
जिनराय ॥ ८ ॥ उपदेश तेहनो सांनली, लीधो सं
जम नार ॥ अगीयार गणधर थापीया, श्री वीरें
तेणी वार ॥ ए ॥ इंद्रनूति गुरुनक्तें थयो, महा
लब्धिनो नंमार ॥ मंगल बीजुं बोलीयें, श्री गौतम
प्रथम गणधार ॥ १० ॥ नंद नरिंदनो पाम्हली पुरव
रें, सकमाल नामें मंत्रीसरू ए ॥ लाछलदे तस नारी
अनुपम, शीलवती बहुसुखकरू ए ॥ ११ ॥ त्रुटक ॥
सुखकरू संतान नव होय, पुत्र पुत्री सात ॥ शील
वंतमां शिरोमणि, थूलिनद्र जग विख्यात ॥ १२ ॥
कर्मवशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षज वार ॥ नोग
नली पेरें नोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ १३ ॥
शुद्ध संयम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥
कोश्या आवासें रह्या निश्चल, मग्या नहीं लवलेश
॥ १४ ॥ शुद्ध शियल पाले विषय टाले, जगमां जे
नर नार ॥ मंगल त्रीजुं बोलीएं, श्री थूलिनद्र अण
गार ॥ १५ ॥ हेम मणि रूप मय घडित अनुपम, ज
डित कोशीसां तेजें जगे ए ॥ सुरपति निर्मित त्रण

गढ शोभित, मध्यें सिंहासनें ऊगमगे ए॥ १६ ॥ त्रुटक ॥ ऊगमगे जिन सिंहासनें ए, वाजित्र कोडा कोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे बिहुं कर जोड ॥ १७ ॥ प्रातिहारज आठशुं रे, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक, शोभे श्री भगवंत ॥ १८ ॥ सुर नर किन्नर मानवी, बेठी ते पर्षदा बार ॥ उपदेश दे अरिहंत जी, धर्मना चार प्रकार ॥ १९ ॥ दान शील तप भावना रे, टाले सघलां कर्म ॥ मंगल चोथुं बोलीयें, जगमांहे श्री जिनधर्म ॥ २० ॥ ए चार मंगल गावशे जे, प्रभातें धरी प्रेम ॥ ते कोडि मंगल पामशे, उदयरत्न भांखे एम ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवनं लिख्यते ॥

॥ शत्रुंजे रुषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे ॥ सीधा साधु अनंत ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ त्रण कल्याणिक तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरो रे॥ भरतें भराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चोमुख अतिभलो,त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वसहि वस्तुपाल ॥ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलीयामणो रे ॥ सीधा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सीधा श्री वासुपूज्य ॥ ती०॥ ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावा पुरी, रुद्धें भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीये, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत [illegible] अनेक ॥ ती० ॥ ४

रुं फल अंजन गिरि जूहारें, दश लाख गणेरुं फल अष्टापद गिरनारें ॥ न० ॥ अ० ॥ ३ ॥ कोडि गणेरुं फल श्री सिद्धाचल भेटे, जेम रे अनादिनां डुरित उमेटें ॥ न० ॥ डु० ॥ भाव अनंतें अनंत फल पावे, ज्ञान विमल सूरि इम गुण गावे ॥ न० ॥ इ० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥

॥ श्री राणकपुर रलीयामणुं रे लाल ॥ श्री आदीसर देव ॥ मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रें लाल, नीरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ श्री० ॥ १ ॥ चउविस मंमप चिहुं दिशें रे लाल, चउमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरुं रे लाल, समोवड नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी दीपती रे लाल, मांमयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें जुहाखां भोयरां रे लाल, सूतां उठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरुं रे लाल, मोहोटो देश मेवाड ॥ म० ॥ लरक नवाणुं लगावीयां रे लाल, धन धरणें पोरवाड ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खरतर वसही खांतशुं रे लाल, निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजां वली रे लाल, जोतां पालक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर तणी रें लाल, दूरें गयुं डुःख दंद ॥ म० ॥ ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोलने बोंतरे रे लाल, माग

शिर मास मझार ॥ म० ॥ राणकपुरें यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निजगुरु पाय ॥ आछे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्ध चक्र आधार, नवि उतरे नव पार ॥ आ० ॥ ते नणी नवपद ध्यायशुं जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगेह, जस गुण अनंत अछेह ॥ आ० ॥ समस्यां संकट उपशमे जी ॥ लहियें वंछित नोग, पामी सवि संजोग ॥आ०॥ सुरनर आवी बहु नमे जी ॥२॥ कष्ट निवारे एह, रोगरहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणा सुंदरी श्रीपालने जी ॥ ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा दूरें जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगलमालने जी ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय ॥ ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करी जी ॥ नव आंबिल तप सार, पडिक्कमणुं दोय वार ॥ आ० ॥ देववंदन त्रण टंकनां जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रण वार, गणणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मलपणे जी ॥ आराधे सिद्धचक्र, सान्निध्य करे तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगें नणे जी ॥ ॥ ५ ॥ ए सेवो निशि दीस, कहीयें वीशवा वीश ॥ ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणि रत्न, एहनां कीजें जत्न ॥ ॥ मंत्र नही एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्री

होजो मुफ परतक ॥ आ० ॥ हुं किंकर हुं ताहरो जी ॥ पाम्यो तुंहिज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥ विनति करुं हुं एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमनें शुं कहियें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मीविजय गुरु राय, शिष्य केसर गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर नमे तुज लली लली जी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संजवनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ साहिब सांजलो रे, संजव अरज हमारी ॥ जवोजव हुं जम्यो रे, न लही सेवा तुमारी ॥ नरय निगोदमां रे, तिहां हुं बहु जव जमीयो ॥ तुम विना फुःख सह्यां रे, अहोनिशि क्रोधें धमधमियो ॥ सा०॥ ॥ १ ॥ इंडियवश पड्यो रे, पाल्यां व्रत नवि सुसें ॥ त्रस पण नवि गण्या रे, हणीया थावर हुंशें ॥ व्रत चित्त नवि धर्यां रे, बीजुं साचुं न बोल्युं ॥ पापनी गोठडी रे, तिहां में हइडलुं खोल्युं ॥ सा० ॥ २ ॥ चोरी में करी रे, चउविह अदत्त न टाल्युं ॥ श्री जिन आणशुं रे, में नवि संयम पाल्युं ॥ मधुकर तणी परें रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचें रे, नीरस पिंम उवेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नर जव दोहिलो रे, पामी मोह वश पडियो ॥ परस्त्री देखिने रे, मुफ मन तिहां जइ अडियो ॥ काम न को सर्यां रे, पापें पिंम में जरीउ ॥ सुध बुद्ध नवि रही रे, तेणें नवि आतम तरीउ ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचें रे,

में बहु दीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मली तो नवि रही राखी ॥ जे जन अनिलखे रे, ते तो तेहथी नासे ॥ तृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥सा० ॥ ५ ॥ धन्य धन्य ते नरा रे, एहनो मोह विछोडी ॥ विषय निवारीने रे, जेहनें धर्ममां जोडी ॥ अनक्ष्य ते में नख्यां रे, रात्रिनोजन कीधां ॥ व्रत ब नवि पालियां रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत नव हुं नम्यो रे, नमतां सा हिब मलियो ॥ तुम विना कोण दीये रे, बोध रयण मुऊ बलियो ॥ संनव आपजो रे, चरण कमल तुम्ह सेवा ॥ नय एम वीनवे रे, सुणजो देवाधि देवा ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ वाल्हाजीनी वाटडी अमें जोतां रे ॥ ए देशी ॥

॥ जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर अवतारी रे, गौतम पमुहा गणधारी ॥ १ ॥ सनेही वीरजी जयकारी रे ॥ ए आंकणी ॥ अंतरंग रिपुने त्रासे रे, तप कोपाटोपें वासे रे, लहु केवल नाण उल्लासें ॥ २ ॥ स० ॥ कटिलंकें वाद वदाय रे, पण जिनसाथें न घटाय रे, तेणें हरिलंबन प्रनु पाय ॥ ३ ॥ स० ॥ सवि सुरवहू थेइथेइ कारा रे, जलपंकजनी परे न्यारा रे, तजी तृष्णा नोग विकारा ॥ ४ ॥ स० ॥ प्रनुदेशना अमृत धारा रे, जिनधर्मे विषे रथकारा रे, जेणें तास्या मेघकुमारा ॥ ५ ॥ स० ॥ गौतमने

केवल आली रे; वधा स्वातियें शिव वरमाली रे, करे उत्तम लोक दीवाली ॥ ६ ॥ स० ॥ अंतरंग अलछ निवारी रे, शुन्न सज्जनने उपगारी रे, कहे वीर विबु हितकारी ॥ ७ ॥ स० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्ध नगवाननुं स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोन्ना रे शी कहुं ॥ ए आंकणी ॥ सिद्ध जगत शिर शोन्नता, रमता आतमराम ॥ लक्ष्मी लीलानी लेहेरमां, सुखिया बे शिव ठाम ॥ सि० ॥ ॥ १ ॥ महानंद अमृतपद नमो, सिद्धि कैवल्य नाम ॥ अपुनर्नव ब्रह्मपद वली, अक्षय सुख विशराम ॥ ॥ सि० ॥ २ ॥ संश्रेय निःश्रेय अक्षरा, दुःख सम स्तनीहाण ॥ निवृत्ति अपवर्गता, मोक्ष मुक्ति निर वाण ॥ सि० ॥ ३ ॥ अचल महोदय पद लहुं, जोतां जगतना ठाठ ॥ निज निजरूपें रे जूजूआं, वीत्यां कर्म ते आठ ॥ सि० ॥ ४ ॥ अगुरुलघु अवगाहना, नामें विकसे वदन्न ॥ श्री शुन्नवीरने वंदतां, रहियें सुखमां मगन्न ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंन्न ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सद्गुरु सामिनि सरसति, प्रेमें प्रणमूं पाय ॥ १ ॥ त्रिन्नुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंन्नीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड वीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि प रणाम ॥ न्नविक जीवना हित नणी, पूबे गौतम

स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किण परें अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, जांखे श्री जगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइयें, व्रत धरीयें गुरु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसिराविये, पापस्थान अढार ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुनकरणी अनुमोदियें, जाव जलो मन आण ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुनगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जिम पामो जवपार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए छिंमि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एह तणा इह जव परजवना, आलोइयें अतिचार रे ॥१॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी ॥ वीर वदे एम वाणी रे ॥ प्राणी॥ज्ञा०॥ ए आंकणी ॥ गुरु उलवीयें नहिं गुरु विनयें,काले धरी बहुमान॥ सूत्र अर्थ तडुजय करी सूधां, जणीयें वही उपधान रे ॥२॥प्राणी ज्ञा०॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी,ठवणी नोकरवाली॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ ३ ॥प्राणी॥ज्ञा०॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव परजव वलिय जवोजव, मिछाडुक्कड तेह रे ॥ ४ ॥ प्राणी समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचनें शंका नवि की

ड कीडी कुंथुआ ए ॥ ए ॥ गदहीयां घीमेल, कान खजूरडा ॥ गींगोडा धनेडीयां ए ॥ एम ते इंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुझ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर मांस, मसा पतंगीया ॥ कंसारी कोलिया वडा ए ॥ ढीकण विंछु तीड, नमरा नमरीयो ॥ कोंता बग खड मांकडी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुझ० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव, पाडी पाशमां ॥ पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुझ० ॥ १३॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे नवें जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोन नय हासथी जी, वोल्यां वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछाडुक्कड आज ॥ तुम साखें महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारूं काज रे ॥ जिनजी॥ ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तीर्यचनां जी, मेथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विमंव्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, नव नव मेली आथ ॥ जे जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणीनोजन जे कर्यां जी, कीधां नक्ष्य अनक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कर्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ वी

सारियां जी,वली नांग्यां पच्चक्खाण ॥ कपटहेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥जि०॥५॥मि०॥ त्रण ढाल आठे डुहे जी, आलोया अतिचार ॥ शिवगति आराधन तणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥जि०॥६॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथ वा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संभारीयें ॥ सा० ॥ हियडे धरिय विचार तो ॥ शिवगति आ राधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोराशी लाख तो ॥ मन शुद्धे करो खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रो ष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा०॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥ सा० ॥ कीजें जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सामी संघ खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्ज न कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन री ति तो ॥ ५ ॥ खमियें अने खमावियें ॥ सा० ॥ एह ज धर्मनो सार तो ॥ शिगवति आराधन तणो ॥सा०॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चो री ॥ सा० ॥ धन मूर्छा मेहुन्न तो ॥ क्रोध मान मा या तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पेशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीये ॥ सा० ॥ कूडां न दीजें आ ल तो ॥ रति अरति मिथ्या तजो ॥ सा० ॥ माया

मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावि यें ॥ सा० ॥ पापस्थान अढार तो ॥ शिवगति आ राधन तणी ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे निसुणो इहां आवीयाए ॥ ए देशी ॥

॥ जनम जरा मरणें करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्यां कर्म सहु अनुभवे ए, कोइ न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध भ गवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गु णवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए, चा र शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ भव परभव जे कस्यां ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्मसाखें ते निंदीयें ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मि थ्यामति वर्त्तावियां ए,जे भांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशें ए, वली थाप्यां उत्सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्यां घडाव्यां जे घणां ए, घंटी हल हथीया र तो ॥ भव भव मेली मूकीयां ए, करता जीव सं हार तो ॥ ६ ॥ पाप करीनें पोपिया ए, जनम जनम परिवार तो ॥ जनमांतर पोहोता पछी ए, कोइ न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ भव परभव जे कस्यां ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध त्रिविध वोसि रावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुकृत निंदा एम करी ए, पाप कस्यां परिहार तो ॥ शिवग

ति आराधन तणो ए, ए छठो अधिकार तो ॥ ९ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन धन ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ जुगतें जिन वर पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरे कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवझायनें, दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए सातमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ भाव भलो मन आणीयें, चित्त आणी ठाम ॥ समता भावें भावीयें, ए आतम राम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचस्यां, भोगवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम ॥ छार उपर ते लीपणुं, झांखर चित्राम ॥ध०॥८॥भाव भली परे भावीयें, ए धर्मनो सार ॥शि वगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥ ध०॥९॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करियें संलेषण सार ॥ अ णसण आदरीयें,पच्चक्खी चार आहार ॥ ललुता सवि मूकी, छांमी ममता अंग ॥ ए आतम खेले, समता

कारण, कियो गुणअभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरभव आरा
धन सिद्धि साधन, सुकृत लीलविलास ए ॥ निर्जरा
हेतें तवन रचियुं,नामें पुण्य प्रकाश ए ॥५॥ इति श्री
आराधना रूप पुण्य प्रकाशस्तवनं संपूर्ण ॥ श्लोक १२७

॥ अथ अष्टापद तीर्थ स्तवन ॥

॥ तीरथ अष्टापद नित नमीयें, जिहां जिनवर चो
वीश जी ॥ मणिमय विंव भराव्यां भरतें, ते वंदूं
नित दीस जी ॥ ती० ॥ १ ॥ निजनिज देह प्रमाणें
मूरति, दीठडे मनडुं मोहे जी ॥ चत्तारि अठ दश
दोय इणि परें, जिनचोवीशे सोहे जी ॥ ती० ॥ २ ॥
वत्रीश कोशनो पर्वत उंचो, आठ तिहां पावडीयो
जी ॥ एकेकी चउकोश प्रमाणें, नवि जाये कोइ च
डीयो जी ॥ ती०॥ ३ ॥ गौतमस्वामी चडीया लब्धें,
वांद्या जिन चोवीश जी ॥ जगचिंतामणि स्तवन त्यां
कीधुं, पूगी मननी जगीश जी ॥ ती० ॥ ४ ॥ तद्भ
वमोक्षगामी जे मानव, ए तीरथने वांदे जी ॥ जंघा
विद्याचारण वांदे, तेतो लब्धिप्रसादें जी ॥ ती०॥ ५॥
शाठ सहस सुत सगर चक्रीना, ए तीरथ सेवंता
जी ॥ बारमा देवलोकें ते पोहोता, लेहेशें सुख
अनंतां जी ॥ ती० ॥ ६ ॥ कंचनमय प्रासाद इहां
छे, वंदन करवा योग्य जी ॥ ए अधिकार छे आव
श्यकसूत्रें, जो ज्यो दइ उपयोग जी ॥ ती० ॥ ७ ॥
जिहां आदीसर मुक्तें पोहोता, अविचल तीरथ एह

जी ॥ जसवंतसागर शिष्य पयंपे, जिनेंद्र वधते नेह जी ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति अष्टापद स्तवनं ॥

॥ अथ समवसरणनुं स्तवन ॥

॥ एक वार गोकुल आवजो गोविंदजी ॥ ए देशी ॥

॥ एक वार वच्छ देश आवजो, जिणंद जी,एक वार वच्छदेश आवजो ॥ दरिसण नयन ठेराव जो ॥ जिणंद जी, एकवार वच्छ देश आवजो ॥ जयंतीने पाय नमाव जो ॥जि०॥एक०॥ वली समोसरण देखावजो ॥ जि०॥ एक० ॥ ए आंकणी ॥ समोवसरण शोभा जे दीठी, कृण कृण सांभरी आवशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ भूतल सुगंधी जल वरसावे, फूलना पगर भरावशे ॥ जि०॥ ॥ एक० ॥ १ ॥ कनक रतननो पीठ करीने, त्रिगडा नी शोभा रचावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ रूपानो गढने कनक कोशीशां, वच्चें रतन जडावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ २ ॥ रतनगढें मणिनां कोशीशां, झगमग ज्योति दीपावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चारे डुवारें एंशी हजा रा, शिव सोपान चढावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ३ ॥ देव चार कर आयुध धारी, द्वारें खडा करे चाकरी ॥ जि०॥ एक० ॥ दूर पासथी एक समे वदे, भरं भीने लघु ठोकरी ॥ जि० ॥ एक०॥ ४ ॥ सहस्स योजन ध्वज चार ते ऊंचा, तोरण चउ अठ वावडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ मंगल आठने धूप घटाली, फूलमाल कर पूतली ॥ जि० ॥ एक० ॥ ५ ॥ आठ सुरी बीजे गढ द्वारें, रत्न गढें चउ देवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ जाति

वैर ढंमी पशु पंखी, तुज पद कमलने सेवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ ६ ॥ पंचवरणमयी जल थल केरां, फूल अमर वरसावता ॥ जि० ॥ एक० ॥ परखदा सात ते ऊपर वेसे, मुनि नर नारी देवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ ७ ॥ आवश्यक टीकायें पण उत्तर, थाये न कुसुम किलामणी ॥ जि० ॥ एक० ॥ साधवी वैमानिकनी देवी, उनी सुणे दोय चूरणी ॥ जि० ॥ एक० ॥ ८ ॥ बत्रीश धनुष अशोक ते उंचो, चामर छत्र धरावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चउमुख रयण सिंहासन वैसी, अमृत वयण सुणावजो ॥ जि०॥ एक०॥ ए ॥ धर्मचक्र जामंमल तेजें, मिथ्या तिमिर हरावजो॥जि० ॥ एक० ॥ गणधर वाणी जव अमें सुणीयें, तब देवछंदें सुहावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ १० ॥ देवतासुरि कवि साचुं बोले, जिहां जाशो तिहां आवशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ रंजादिक अपछरनी टोली, वंदी नमी गुण गावशें ॥ जि० ॥ एक० ॥ ११ ॥ अंतरयामी दूरें विचरो, मुजचित्त लीनुं ज्ञानशुं ॥ जि० ॥ एक० ॥ हृदयथकी जो दूरें जाउ, तो अमें कौतुक मानशुं ॥ जि० ॥ एक० ॥ १२ ॥ सुलसादिक नव जिनपद दीधुं, अमशुं अंतर एवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥ वीतराग जो नाम धरावो, सहुने सरिखा तेवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥ १३ ॥ ज्ञाननजरथी वात विचारो, रागदशा अम रूअडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ सेवक रागें साहेब रीजो, धन धन त्रिशला मावडी ॥ जि० ॥ एक०

॥ १४ ॥ तुज विण सुरपति सघला तूसे, पण अमें आमण दूमणां ॥ जि० ॥ एक० ॥ श्रीशुजवीर हजूरें रहेतां, उछव रंग वधामणां ॥ जि० ॥ एक० ॥ ॥ १५ ॥ इति श्री समवसरण स्तवनं ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवनं ॥ रुपैय्यो ते आलुं रोकडो, माहारा वाहालाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥मनडुं ते माहारुं मोकले,महारा वाहालाजी रे ॥ ससिहर साथें संदेश, जइने कहेजो महारा वालाजी रे ॥ ए आंकणी ॥ जरतना जक्तने तारवा ॥ मा० ॥ एकवार आवोने आ देश ॥ जइ०॥ १ ॥ प्रजुजी वसो पुष्कलावती ॥ मा० ॥ महाविदेह खेत्र मफार ॥ जइ० ॥ पुरी राजे पुमरिगिणी ॥ मा० ॥ जिहां प्रजुनो अवतार ॥ जइ० ॥ २ ॥ श्रीसीमंधर साहिबा ॥ मा० ॥ विचरंता वीतराग ॥ जइ० ॥ पडिबोहो बहु प्राणीने ॥ मा० ॥ तेहनो पामे कुण ताग ॥ जइ० ॥ ३ ॥ मन जाणे कमी मलुं ॥ मा० ॥ पण पोतें नही पांख ॥ जइ०॥ जगवंत तुम जोवा जणी ॥ मा० ॥ अलजो धरे ठे बेहु आंख ॥ जइ० ॥ ४ ॥ डुंगर महोटा डूंगरा ॥ मा० ॥ नदी नालानो नही पार ॥ जइ० ॥ घांटीनी आंटी घणी ॥ मा० ॥ अटवी पंथ अपार ॥ जइ० ॥ ५ ॥ कोडी सोनैये काशीदी ॥ मा० ॥ करनारो नहीं कोय ॥ जइ० ॥ कागलीयो केम मोकलुं ॥ मा० ॥ होंश तो नित्य नवली होय ॥ जइ० ॥ ६ ॥ लखुं जे जे लेखमां ॥ मा० ॥ लाख

निताप ॥ जइ० ॥ तमें लेजामां ते लह्यो ॥ मा० ॥ समय पूरे बे साख ॥ जइ० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूपना ॥ मा० ॥ जगमां तुमें गो जाण ॥ जइ० ॥ जाण आगें शुं जणावियें ॥ मा० ॥ आखर अमें अजाण ॥ जइ० ॥ ८ ॥ वाचक उदयनी वीनति ॥ मा० ॥ सलिहर कह्या संदेश ॥ जइ० ॥ मानी लेजो माह्यरी ॥ मा० ॥ वसतां दूर विदेश ॥ज०॥ए॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ मधुकरनी देशीमां ॥

॥ श्रीयुगमंधरने केजो, के दधिसुत वीनतडी सुण जो रे॥श्रीयुग०॥ए आंकणी॥ काया पामी अति कूडी, पांख नही रे आवुं उडी,लब्धि नही कोये रूडी रे ॥ श्रीयुग० ॥ १ ॥ तुम सेवामांहि सुर कोडी, ते इहां आवे एक दोडी, आश फले पातक मोडी रे ॥ श्री युग० ॥ २ ॥ डुखम समयमां इणें जरतें, अतिशय नाणी नवि वरते, कहीयें कह्यो कोण सांजलते रे ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ श्रवणें सुखीया तुम नामें, नयणां दरिसण नवि पामे, ए तो जगडाने गामें रे ॥ श्रीयु ग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकडलीनी परें डुख सहेवुं, प्रजु विना कोण आगल कहेवुं रे ॥ श्रीयुग० ॥ ५ ॥ महोटा मेल करी आपे, वेहुने तोल करी थापे, सज्जन जस जगमां व्यापे रे ॥ श्रीयु ग० ॥ ६ ॥ वेहुनो एक मतो थावे, केवल नाण जुग ल पावे, तो सवि वात बनी आवे रे ॥ श्रीयुग०॥७॥

गजलंछन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात सुतारायें जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो, पंमित जिनविजयें गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिजिनस्तवनं ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ जइने रहेजो माहारा वालाजीरे, श्रीगिरनारने गोंख ॥ जइने०॥ए आंकणी॥अमें पण तिहां आवशुं ॥माहा०॥जिहारें पामीशुं जोख ॥ जइ०॥१॥ जान ले इ जूने गढें ॥ माहा०॥ आवी तोरण आप ॥ जइ०॥ पशुआं पेखी पाछा वल्या ॥ माहा० ॥ जातां न दीधो जवाप ॥ज०॥२॥ सुंदर आपण सारिखा ॥ माहा० ॥ जोतां नहीं मले जोड ॥ जइ० ॥ बोल्यां अणबोल्यां करो ॥ माहा० ॥ ए वातें तमने खोड ॥ जइ० ॥३॥ हुं रागी तुं वेरागीउ ॥ माहा० ॥ जगमां जाणे सहु कोय ॥ जइ० ॥ रागी तो लागी रहे ॥माहा०॥ वेरागी रागी न होय ॥ जइ० ॥ ४ ॥ वर बीजो हुं नवि वरुं ॥ माहा० ॥ सघला मेहेली सवाद ॥ जइ० ॥ मोहनी याने जइ मली ॥ माहा० ॥ महोटा सार्थे श्यो वाद ॥ जइ० ॥५॥ गढ तो एक गिरनार छे ॥ माहा० ॥नर तो छे एक श्री नेम ॥ जइ० ॥ रमणी एक राजीमती ॥ माहा० ॥ पूरो पाड्यो जेणें प्रेम ॥ जइ० ॥ ६ ॥ वाचक उदयनी वंदना ॥ माहा० ॥ मानी लेजो माहाराज ॥ जइ० ॥ नेम राजुल मुक्तें मल्यां ॥ माहा० ॥ सार्यां आतमकाज ॥ जइ० ॥ ७ ॥ इति स्तवनं

॥ अथ पंचमीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जिम पामो निर्मल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञानने पछी किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधिने मनःपर्यव, केवल ज्ञान उदार रे ॥पंचमी० ॥२॥मति अठावीश श्रुत चउदह वीश, अवधि छे असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेदें मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, ऐसो तेज आकाश रे॥ केवल ज्ञान उद्योत भयो जब, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समय सुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो भेद रे ॥ पंचमी०॥ ५॥

॥ अथ श्रीवीरप्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारग देसक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥ भाव दया सागरप्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया ॥ संघ सकल आधारो रे, हवे इण भरतमां ॥ कोण करशे उपगारो रे ॥ वी०॥ ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कोण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ माता विहूणो वाल ज्युं रे, अरहो परहो अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे,आकुल व्याकुल थाय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख

ऊपजे रे, ते विण केम रहेवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक नव समुद्रनो रे, नवअडवि सथवाह ॥ ते परमेश्वर विण मले रे, केम वाधे उत्साहो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीरथकां पण श्रुत तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां श्रुत आधार छे रे, अहो जिनमुद्रा सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण कालें नवि जीवनें रे, आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो नवि जना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारज मुनि रे, सहुने इणी परें सिद्ध ॥ नव नव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीध रे ॥ ए ॥

॥ अथ श्री गौतमस्वामीनो रास प्रारंनः ॥

॥ वीर जिणेसर चरणकमल,कमला कयवासो ॥ प णमवि पनणि सुसामिसाल, गोयम गुरु रासो ॥ मणु तणु वयण एकंत करवि,निसुणो नो नवियां॥ जिम नि वसे तुम्ह देह गेह. गुण गण गहगहिया ॥१॥ जंबूदीव सिरिनरह खित्त, खोणीतल मंमण ॥ मगधदेस सेणिय नरेस, रिउदल बल खंमण ॥ धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुणगणसज्जा ॥ विप्प वसे वसुनूइ त ब, जसु पुहवी नज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इंद नूइ, नूवलय प्पसिद्धो ॥ चउदह विद्या विविह रूव, नारीरस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहिं रंनावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिणवि, पंकजल पाडिय ॥ तेजें ताराचंद सूर, आका

समाडिय ॥ रूवें मयण अनंग करवि, मेल्हि
निर धाडिय ॥ धीरम मेरु गंजीर सिंधु, चंगम
चाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण
किंचिय ॥ एकाकी किल जीत इब, गुण मेल्हा
विय ॥ अहवा निच्चें पुव्व जम्म, जिणवर इण अं
अ ॥ रंजा पउमा गवरी गंगा, रतिहा विधि वंचिय
५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आ
न-रहिउ ॥ पंचसया गुणपात्र बात्र, हींडे परवरि
॥ करय निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इ
- बल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥
वस्तु॥ जंबूदीवह जंबूदीवहजरह वासंमि, खोणीतल
मणो ॥ मगध देस सेणिय नरेसर, धण वरगुव्वर गा
हां ॥ विप्प वसे वसुजूइ सुंदर, तसु जजा पुहवी
यल, गुण गण रूव निहाण ॥ ताण पुत्त विद्यानि
नउ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ जापा ॥ चरम
जिणेसर केवलनाणी, चउविह संघपइट्ठा जाणी ॥
पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देवनिकायें जुत्तो
। ८ ॥ देवें समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मि
थ्यामति बीजें ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहासण वइठो, तत
खिण मोह दिगंतें पइठो ॥ ए ॥ क्रोध मान माया
मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा ॥ देवडुंडहि
आकासें वाजी, धर्म नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥
कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोसठ इंद्रज मागे
सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपें ते जिणवर

जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रस नर नरी वरसं ता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमा ण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें ऊलऊलकंता, गयण विमाणें रण रणकं ता ॥ पेखवि इंदनूइ मन चिंते, सुर आवे अम ज गन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंमक जिम ते वहता, समवसरण पुहता गह गहता ॥ तो अनिमानें गोय म ऊंपे, इणि अवसरें कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाणिउं वोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले॥ मू आगल कोइ जाण नणीजें, मेरु अवर किम उप मा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु ढंद ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न ॥ पावा पुरिसुर महिय, पत्तना ह संसार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवस रण बहु सुरक कारण ॥ जिणवर जग उद्योय करे, तेजें करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउ, हुउ सुजय जयकार ॥ १६ ॥ नापा ॥ तो चढिउ घण माण गजें, इंदनूइ नूयदेव तो ॥ हुंकारो करी संच रिउ, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन नूमि स मोसरण, पेखवी प्रथमारंन तो ॥ दह दिसि देखे वि बुधवधू, आवंती सुररंन तो ॥ १७ ॥ मणिमय तो रण दंम धजा, कोसीसें नव घाट तो ॥ वेर विवर्जि त जंतुगण, प्रातिहारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद इंडाणी राय तो ॥ चित्त चमक्किय चि तवे ए, सेवतां प्रजुपाय तो॥१८॥ सहसकिरण सम

वीर जिण, पेखवी रूप विशाल तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्रजाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजग गुरु, इंदभुइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसाय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १ए ॥ मान मेल्हि मद ठेलि करे, भगतें नामें सीस तो ॥ पंचसयासुं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनि भुइ आवेइ तो ॥ नाम लेइ आभास करे, तं पुण प्रतिबोधेइ तो ॥ २० ॥ इणि अनुक्रमें गण हररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशे भु वन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ बिहु उपवासें पा रणुं ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु छंद॥ इंदभूइ इंदभूइ चढिय बहुमान ॥ हुंकारो करि संच रिउ, समवसरण पुहतो तुरंतो ॥ इह संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ बोधबीज सज्झाय मने, गोयम भवह विरत्त ॥ दिरक लेइ सिरका सहिय, ग णहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ भाषा ॥ आज हुउ सुविहा ण, आज पचेलिमां पुण्य भरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय भरो ॥ सिरिगोयम गणधार, पंचसया मुनि परवरिय ॥ भूमिय करय विहार, भ वियां जन पडिबोह करे ॥ समवसरण मझार, जें जे संसा उपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजें दिरक, तिहां तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोयम दीजें

दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरुन्नत्ति, सामी गोयम उप
नीय ॥ अण चल केवल नाण, रागज राखे रंग नरें
॥ १४ ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउवीस जि
ण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरमसरीरी सोइ मुनि ॥
इअ देसण निसुणेइ, गोयम गणहर संचलिउ ॥
तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥
॥ १५ ॥ तवसोसिय निय अंग, अम्ह सक्ति नवि
ऊपजे ए ॥ किम चढशे दृढकाय, गज जिम दीसे गा
जतो ए ॥ गिरुउ ए अभिमान, तापस जो मन चिं
तवे ए ॥ तो मुनि चढिउ वेग, आलंबवि दिनकर
किरण ॥ १६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस
धज वड सहिय ॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर नर
हेसर महिअ ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुंदिसि
संठिय जिणहबिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम
गणहर तिहां वसिय ॥ १७ ॥ वयर सामीनो जीव,
तिर्यक जृंनक देव तिहां ॥ प्रतिबोधे पुंमरिक, कंमरिक अ
ध्ययन जणी ॥ वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रति
बोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूथाधिपति
॥१७॥ खीर खंम घृत आणि, अमिअ वूठ अंगूठ ठवे ॥
गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ पंचसया सुन्न
नाव, उज्जल नरिउ खीरमीसे ॥ साचा गुरुसंजोग,
कवल ते केवल रूप हुआ ॥ १ए ॥ पंचसया जिण
नाह, समवसरण प्राकार त्रय ॥ पेखवि केवल नाण,
उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजंत

घण मेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु छंद ॥ इण अनुक्रमें इण अनुक्रमें नाण संपन्न ॥ पन्नरह सय परवरिय हरिय डुरिय जिणनाह वंदे ॥ जाणवि जगगुरु वयण तिह नाण अप्पाण निंदे ॥ चरम जिणेसर इम जणे, गो मय म करिस खेउ ॥ छेह जई आपण सही, होसुं तुल्ला बेउ ॥ ३१ ॥ नाषा ॥ सामिउ ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउ ए जरवासम्मि, वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघे सहिअ ॥ आविउ ए नयणाणंद, नयर पावापुरिसुर महिय ॥ ३२ ॥ पेखिउ ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए त्रिशला देवि, नंदन पहोतो परम पए ॥ वलतो ए देव आ कास, पेखवि जाण्यो जिणसमे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद जेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आप कन्हे हुं टालिउ ए ॥ जाणंतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालिउ ए ॥ अति जलुं ए कीधलुं सामि, जाणिउं केवल मागशे ए ॥ चिंतविउं ए बालक जेम, अहवा केडे लागशे ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, जगतें जोलो जोलव्यो ए ॥ आपणो ए अविहल नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीत राग, नेह न जेणें लालिउ ए ॥ इण समे ए गोयम ..., राग वैरागें वालिउ ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए

जो कजट, रहेतो रागें साह्तिं ए ॥ केवलु ए नाण उप्पन्न, गोयम सेहेजें उमाह्तिं ए ॥ तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, नवियण नव जिम निस्तरु ए ॥ ॥ ३६ ॥ वस्तु छंद ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पंचास, गिहिवासें संवसिय ॥ तीस वरिस संजम विनूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण बार वरिस तिहुअण नमंसिय ॥ रायगिरि नयरीहिं ठविअ वाण वइ वरिसाउं ॥ सामी गोयम गुण निलो होसे शिवपुर ठाउं ॥ ३७ ॥ नाषा ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल महके, जिम चंदन सुगंध निधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणया चल तेजें ऊलके ॥ तिम गोयम सोनागनिधि ॥३८॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरवर सिरि कणयवतसा, जिम महुयर राजीववनी ॥ जिम रय णायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुण केलि वनी ॥ ३ए ॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरि वर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिन शासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी नाखा, जिम वनके तकी महमहे ए ॥ जिम नूमिपति नुयबल चमके. जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयमलब्धे गह

गहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ आज, सुर तरु सारे वंछिय काज, कामकुंन सवि वश हुउ ए॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणव स्कर पहेलो पनणीजें, मायाबीज श्रवण निसुणीजें, श्रीमती शोना संनवो ए ॥ देवह धुरि अरिहंत नमीजें, विनयपहु उवज्ञाय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पुर पुर वसतां कांइ करीजें, देश देशांतर कांइ नमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीझे, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, किउं कवित उपगार करो ॥ आदिहिं मंगल एह पनणीजें, परव महोछव पहिलो लीजें, ऋद्धि वृद्धि कल्लाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणें उयरें धरिया, धन पिता जिण कुल अवतरिया, धन सद्गुरु जिण दिरिकया ए ॥ विनयवंत विद्यानंमार, जस गुण कोइ न लन्ने पार, वड जिम साखा विस्तरो ए ॥ ४६ ॥ गौतमस्वामीनो रास नणीजें, चउविह संघ रलिया यंत कीजें, सयल संघ आणंद करो ॥ कुंकुम चंदन बडो देवरावो, माणक मोतीना चोक पुरावो, रयण सिंहासण वेसणुं ए ॥ ४७ ॥ तिहां वेसी गुरु देसना देसे, नविक जीवनां काज सरीसे ॥ उदयवंत मुनि इम नणे ए ॥ गौतमस्वामी तणो ए रास, नणतां

सुणतां लील विलास ॥ सासय सुख निधि संपजे ए ॥ ४८ ॥ एह रास जे भणे भणावे, वर मयगल लच्छी घर आवे ॥ मनवंछित आशा फले ए ॥ ४९ ॥ इति श्री गौतमस्वामीनो रास संपूर्ण ॥ ५० ॥

अथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्याकृत श्री वीश विहरमानजिन स्तवन प्रारंभः ॥

तत्र प्रथम

श्री सीमंधरजिन स्तवनं

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुक्खलवइ विजयें जयो रे, नयरी पुंमरीगिणि सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांस कुमार ॥ जिणंदराय धरजो धर्म सनेह ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोहोटा नाहना आंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दर्शन सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ ॥ जि० ॥ २ ॥ ठाम कुठाम नवि लेखवे रे, जग वर संत जलधार ॥ कर दोइ कुसुमें वासीयें रे, छाया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय रंक सरिखा गणे रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहु तणो रे, ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुम्हें छो महाराज ॥ मुफशुं अंतर किम करो रे, बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मु जरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि०

॥ ६ ॥ वृषभलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुकि
णी कंत ॥ वाचक जस इम वीनवे रे,भवभंजन भ
वंत ॥ जिणंदराय धरजो धर्म सनेह ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ श्री युगमंधर साहि
वा रे, तुमशुं अविहड रंग ॥ मनना मान्या ॥ चो
मजीठ तणी परें रे, ते तो अचल अभंग ॥ गुणन
गेहा ॥ १ ॥ भविजन मन त्रांबूं करे रे, वेधक कंच
न वान ॥ म० ॥ फरि त्रांबूं ते नवि होये रे, ते
तुम नेह प्रमाण ॥ गु० ॥ २ ॥ एक उदक लव जि
म भल्यो रे, अखय जलधिमां होय ॥ म० ॥ तिम
तुमशुं गुण नेहलो रे, तुम सम जग नहिं कोय ॥गु०
॥ ३ ॥ तुमशुं मुज मन नेहलो रे, चंदन गंध समान
॥ म० ॥ मेल हुउ ए मूलगो रे, सहज स्वभाव नि
दान ॥ गु० ॥ ४ ॥ विप्र विजय विजयापुरी रे,
मात सुतारा नंद ॥ म० ॥ गजलंछन प्रिय मंगला रे,
राणी मन आणंद ॥ गु० ॥ ५ ॥ सुदृढ राय कुल
दिनमणि रे,जयो जयो तुं जिनराज ॥ म० ॥ श्रीनय
विजय विबुध तणो रे,शिष्यनें दियो शिवराज ॥गु०॥६॥

॥ अथ श्री बाहुजिन स्तवनं ॥

॥ नणदलनी देशी ॥ साहिब बाहुजिनेसर वीन
वुं, वीनतडी अवधार हो ॥ साहिब भवभयथी हुं
उभग्यो, हवे भव पार उतार हो ॥सा०॥ १ ॥ सा०॥
तुम सरिखा मुज शिर छते, कर्म करे केम जोर

हो ॥ सा० ॥ भुजंग तणो नय तिहां नहीं, जिहां वन विचरे मोर हो ॥ सा० ॥ २ ॥ सा० ॥ जिहां रवि तेजें झल हले, तिहां किम रहे अंधकार हो ॥ ॥ सा० ॥ केशरी जिहां क्रीडा करे, तिहां नहिं गज नो प्रचार हो ॥ सा० ॥ ३ ॥ सा० ॥ तिम जो तुमें मुझ मन रमो, तो नासे डुरित संसार हो ॥ सा० ॥ वप्रविजय सुसिमा पुरी, राय सुग्रीव मल्हार हो ॥ ॥सा०॥ ४ ॥ सा० ॥ हरिण लंछन इम में स्तव्यो, मो हना राणीनो कंत हो ॥ सा० ॥ विजया रे नंदन मुझ दीयो,जस कहे सुख अनंत हो ॥ सा० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ अथ श्री सुबाहुजिन स्तवनं ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ ए देशी ॥ स्वामी सुबा हु सुहंकरु, भूनंदानंदन प्यारो रे ॥ निसढ नरेसर कुलतिलो, किंपुरुषानो भरतारो रे ॥ स्वा० ॥ १ ॥ कपि लंछन नलिनावती, विप्रविजय अयोध्यानाहो रे ॥ रंगें मिलिएं तेहशुं, एह मणुअ जनमनो लाहो रे ॥ स्वा०॥ २ ॥ ते दिन सवि एलें गया. जिहां प्रभु शुं गोठ न बांधी रे ॥ भक्ति दूतिकाएं मन हर्युं, पण वात कही छे आधी रे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ अनुभव मित्त जो मोकलो, तो ते सघली वात जणावे रे ॥ पण तेह विण-मुझ नवि सरे, कहो तो पुत्र विचार ते आवे रे ॥स्वा० ॥ ४ ॥ तेणे जइ वात सवे कही, प्रभु मल्या ते ध्यानने टाणे रे ॥ श्री नयविजय विबु ध तणो, इम सेवक सुजस वखाणे रे॥स्वा०॥५॥इति॥

॥ अथ श्री सुजातजिन स्तवनं ॥

॥ रामचंदके वाग, चांपो मह्योरी रह्यो री ॥ ए देशी ॥

॥ साचो स्वामी सुजात, पूरव अरध जयो री॥ धातकी खंम मजार, पुरकलवइ विजयो री ॥ १ ॥ नयरी पुंमरीगिणिनाथ, देवसेन वंश तिलो री ॥ देव सेनानो पुत्र, लंछन नानु नलो री ॥२॥ जयसेनानो कंत, तेह्शुं प्रेम धस्यो री ॥ अवर न आवे दाय, तेणें वश चित्त कस्यो री ॥ ३ ॥ तुमें मत जाणो दूर, जइ परदेश रह्यो री ॥ छो मुज चित्त हजूर, गुण संके त ग्रह्यो री ॥ ४ ॥ जगे नानु आकाश, सरवर कम ल ह्स्यो री ॥ देखी चंद चकोर, पीवा अमिय धस्यो री ॥ ५ ॥ दूर थकी पण प्रेम, प्रनुशुं चित्त मिल्यो री ॥ श्री नयविजय सुशिष्य, कहे गुण हेज हि ल्यो री ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री स्वयंप्रन्न जिन स्तवनं ॥

॥ पारथीयानी देशी ॥ स्वामी स्वयंप्रन्न सुंदरु रे, मित्रनृपति कुल हंस रे ॥ गुण रसिया ॥ मात सुमंगला जनमीया रे, शशि लंछन सुप्रशंस रे ॥ मन वसिया ॥ १ ॥ वप्र विजय विजया पुरी रे, धातकी पूरव अर्द्ध रे ॥गु० ॥ प्रियसेना प्रियपुण्यथी रे, तुज सेवा में लद्ध रे ॥ म० ॥२ ॥ चाखवी समकित सूखडी रे, हेलवीयो हुं वाल रे ॥ गु० ॥ केवल रतन दिया वि ना रे, न तजुं चरण त्रिकाल रे ॥ म०॥ ३ ॥ एकने ललचावी रह्यो रे, एकने आपो राज रे ॥गु०॥

म करवो किम घटे रे, पंति भेद जिनराज रे॥ ॥ म० ॥ ४ ॥ केड न बांडुं ताहरी रे, आप्या विण शिव सुख रे ॥ गु० ॥ भोजन विण भांजे नहीं रे, भामणडे जिम भूख रे ॥ म० ॥ ५ ॥ आसंगाय त जे हुशे रे, ते केहेशे सो वार रे ॥ गु० ॥ भोली भगतें रीझशे रे, साहिब पण निरधार रे ॥ म० ॥ ॥ ६ ॥ सवि जाणे थोडुं कहे रे, प्रभु तुं चतुर सुजा ण रे ॥ गु० ॥ वाचक जस कहे दीजियें रे, वंछित सुख निर्वाण रे ॥ म० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री ऋषभानन जिन स्तवनं ॥

॥ बन्यो रे कुंअरजीनो सेहरो ॥ ए देशी ॥

॥श्रीऋषभानन गुणनीलो,सोहे मृगपति लंछन पा य हो ॥ जिणंद ॥ मोहे मन तुं जग तणां, भलि वीर सेना तुऊ माय हो ॥ जिणंद ॥ १ ॥ श्री० ॥ वच्छ वि जय सुसीमा पुरी,खंम धातकी पूरव भाग हो ॥जि०॥ राणी जयावती नाहलो, कीरति नृपसुत वडभाग हो ॥जि०॥२॥श्री०॥ हुं पूछुं कहो तुमें किणि परें,दीयो भगतने मुगति संकेत हो ॥ जि० ॥ रुसो नहिं निं दा कारणें, तुसो नहिं पूजिया हेत हो ॥ जि० ॥ ३ ॥श्री०॥समकित विण फल को नवि लहे, ए ग्रंथें छे अव दात हो ॥ जि० ॥ भोय शाबासी तुमने चढे, तुमें कहेवाउ जगतात हो ॥ जि०॥४॥श्री०॥ हवे जाणुं मन वंछित दिये, चिंतामणिने सुरकुंभ हो ॥ जि० ॥ अग्नि मिटावे जे सेवे थइ थिर थंभ हो ॥जि०॥

५॥श्री०॥ जिम ए वस्तु गुण स्वन्नावथी,तिम तुमथी मुक्ति उपाय हो ॥ जि० ॥ दायक नायक ऊपमा, नक्ति इम साची कहाय हो ॥जि०॥६॥श्री०॥ तप जप किरिया जे फल दिये, ते तुम गुण ध्यान निमित्त हो ॥ जि० ॥ श्री नयविजय विबुध तणो, सेवकने परम तुं मित्त हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतवीर्य जिन स्तवनं ॥

॥ नारायणानी देशी ॥ जिम मधुकर मन मालती रे, जिम कुमुदिनी चित्त चंद रे ॥ जिणंदराय ॥ जिम गजमन रेवा नदी रे, कमला मन गोविंद रे ॥जि० ॥ १ ॥ त्युं मेरे मन तुं वस्यो रे ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥ चातक चित्त जिम मेहलो रे, जिम पंथी मन गेह रे ॥ जि० ॥ हंसा मन मानसरोवरु रे, तिम मुऊ तुऊशुं नेह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ जिम नंदन वन इंइने रे, सीताने वालो राम रे ॥ जि० ॥ जिम धर्मी मन संवरु रे, व्यापारी मन दाम रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनंतवीर्य गुण सागरु रे, धातकी खंम मऊार रे ॥ जि० ॥ पूर्व अर्ध नलिनावती रे, विजय अयोध्या धार रे ॥ ॥जि० ॥ ४ ॥ मेघराय मंगलावती रे, सुत विजयावती कंत रे ॥ जि० ॥ गज लंठन योगीसरु रे, जिम समरुं महामंत रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ चाहे चतुर चूडामणि रें, कविता अमृतनी केल रे ॥ जि० ॥ वाचक जस कहे सुख दीयो रे, मुऊ तुऊ गुण रंग रेल रे ॥जि०॥६

॥ अथ श्री सुरप्रभ जिन स्तवनं ॥

॥ रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥ सुर प्रभ जिनवर धातकी, पश्चिम अरधें जयकार ॥ मेरे लाल ॥ पुख्क लवइ विजय सुहामणो, पुरी पुंमरीगिणी सिणगार ॥ मेरे० ॥ १ ॥ चतुर शिरोमणि साहिबो ॥ ए आंक णी ॥ नंदसेनानो नाहलो, हय लंछन विजय मल्हा र ॥ मे० ॥ विजयवती कुखें रूपनो, त्रिभुवननो आ धार ॥ मे०॥ च० ॥ २ ॥ अलवे जस साहामुं जुए, क रुणान्नर नयन विलास ॥ मे० ॥ ते पामे प्रभुता जग तणी, एहवो छे प्रभु सुख वास ॥ मे० ॥ च० ॥ ३ ॥ मुख मटके जग जन वश करे, लोयण लटके हरे चित्त ॥ मे० ॥ चारित्र चटके पातक हरे, अटके नहि करतो हित ॥ मे० ॥ च० ॥ ४ ॥ उवयारी शिर सेह रो, गुणनो नवि आवे पार ॥मे०॥ श्री नयविजय सुशि ष्यने, होजो नित मंगल माल ॥ मे० ॥ च० ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री विशाल जिन स्तवनं ॥

॥ लूहारीनी देशी ॥ धातकी खंमें हो के पश्चिम अ रध भलो, विजया नयरी हो के वप्र ते विजयतिलो ॥ तिहां जिन विचरे हो के स्वामी विशाल सदा, नित नित वंदूं हो के विमला कंत मुदा ॥ १ ॥ नाग नरेसर हो के वश उद्योत करु, भद्रानो जायो हो के प्रत्यक्ष देव तरु ॥ भानु लंछन हो के मलवा मन तरसे, तस गुण सुणियें हो के श्रवण अमिय वरसे ॥ २ ॥ आंखडी दीधी हो के जो मुज होय मनने, पांखडी दीधी हो के

अथवा जो तनने ॥ मनह मनोरथ हो के तो सवि तु रत फले,तुझ मुख देखी हो के हरखने हेज मिले ॥३॥ आडा डुंगर हो के दरिया नदीय घणी, शकति न तेहवी हो के आवुं तुझ जणी ॥ तुझ पाय सेवा हो के सुरवर कोडि करे, जो एक आवे हो के तो मुझ दुःख हरे ॥ ४ ॥ अति घणुं राति हो के अगनि मजीठ स हे, घणघुं हणियें हो के देश वियोग लहे ॥ पण गिरु आछुं हो के राग ते दुरित हरे, वाचक जस कहे हो के धरीयें चित्त खरे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वज्रंधर जिन स्तवनं ॥

॥ देशी विदलीनी ॥ शंख लंछन वज्रंधर स्वामी, माता सरसती सुत शिवगामी हो, जावें नवि वंदो ॥ नरनाथ पदमरथ जायो, विजयावती चित्त सुहायो हो ॥ जा० ॥ १ ॥ खंम धातकी पछिम जागें, प्रज्ञु धरम धुरंधर जागे हो ॥ जा० ॥ वछ विजयमां नय री सुसीमा, तिहां थापे धर्मनी सीमा हो ॥ जा० ॥ ॥ २ ॥ प्रज्ञु मन अमें वसवुं जेह, स्वपने पण दुर्लज तेह हो ॥ जा० ॥ पण अम मन जो प्रज्ञु वसशे, तो धर्मनी वेलि उल्लसशे हो ॥जा०॥ ३ ॥ स्वपने प्रमुखें निरखंतां, अमें पामुं सुख हरखंता हो ॥ जा० ॥ जेह स्वप्न रहित कह्या देवा, तेहथी अमें अधिक कहेवा हो ॥ जा० ॥ ४ ॥ मणि माणिक कनकनी कोडी, राणिम ऋधि रमणी जोडी हो ॥जा०॥ प्रज्ञु दर्शनना सुख आगें, कहो अधिकेरुं कोण मागे हो ॥जा०॥५॥

॥ प्रभु दूरथकी पण नेत्या, तेणे प्रेमें दुःख सवि मेत्यां हो ॥ ना० ॥ गुरु श्रीनयविजय सुशिष्य, प्रभुध्यानें रमे निस दीश हो ॥ ना०॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रानन जिन स्तवनं ॥

॥ माहारी सहीरे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ नलिनावती विजयें जयकारी, चंद्रानन उपकारी रे ॥ सुणो वीनती मोरी ॥ पश्चिम अरधें धातकी खंमें, नयरी अयोध्या मंझे रे ॥ सु०॥ १ ॥ राणी लीलावती चित्त सुहायो, पदमावतीनो जायो रे ॥सु०॥ नृप वाल्मिककुलें तुं दीवो, वृषन्न लंबन चिरंजीवो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ केवलज्ञान अनंत खजानो, नहिं तुझ जगमांहे छानो रे ॥ सु० ॥ तेहनो लव देतांशुं नासे, मनमांहि कांइ विमासे रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ रयण एक दिये रयणें नरियो, जो गाजंतो दरीयो रे ॥ सु० ॥ तो तेहने कांइ हाणी न आवे, लोक ते संपत्ति पावे रे ॥ सु०॥ ४ ॥ अलि माचे परिमल लव पामी, पंकजवने नहिं खामी रे ॥ सु० ॥ अंब लुंब कोडी नवि छीजे, एके पिक सुख दीजें रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ चंद्र किरण विस्तारे छोलुं, नवि होय अमियमां ओछुं रे॥ सु० ॥ आशान्नर करे बहुत निहोरा, ते होये सुखित चकोरा रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ तेम जो गुणलव दियो तुमें हेजें, तो अमें दीपूं तेजें रे ॥ सु० ॥ वाचक जस कहे वछित देशो, धर्मनेह निर्वहेशो रे ॥सु०॥७॥

नय सोर ॥ स्वा० ॥ अंतरंग मिलवेंजी उल्लाय, शोक विरह जिम दूर पलाय ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ तुं माता तुं बांधव मुज, तुंही पिता तुज्युं मुज गुज ॥ स्वा० ॥ श्रीनयविजय विबुधनो शिष्य, वाचक जस कहे पूरो जगीश ॥ स्वा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीनमि प्रभुजिन स्तवनं ॥

॥ थारे माथे पंचरंगी पाग, सोनारो छो गलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ पुस्करवर पूरव अरध दिवाजे राजे रे ॥ साहिबजी ॥ नलिनावती विजयें नयरी आयोध्या छाजे रे ॥ सा० ॥ प्रभु वीर नरेसर वंश दिणेसर ध्याइएं रे ॥ सा०॥ सेना सुत साचो गुणशुं जाचो गाइएं रे ॥ सा० ॥ १ ॥ मोहनी मन वल्लभ दर्शन दुर्लभ जास रे ॥ सा० ॥ रवि चरण उपासी किरण विलासी खास रे ॥ सा० ॥ भविजनमन रंजन भव भंजन भगवंत रे ॥ सा० ॥ नेमिप्रभु वंदूं पाप निकंदूं तंत रे ॥ सा० ॥ २ ॥ घर सुरतरु फलियो सुरमणि मलियो हाथ रे ॥ सा० ॥ करि करुणा पूरी अघ चूरी जग नाथ रे ॥ सा० ॥ अमिएं घन वूठा वली तूठा सवि देव रे ॥ सा० ॥ शिवगामी पामी जो में तुज पय सेव रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ गंगाजलें नाह्यो हुं उमाह्यो आज रे ॥ सा० ॥ गुरु संगति सारी मुज अवधारी लाज रे ॥ सा० ॥ मुह माग्या जाग्या पूर्व पुण्य अंकूर रे ॥ सा० मन नो

कीनो तुऊ गुण प्रेम पमूर रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं दोलत दाता तुंहिज त्राता महाराज रे ॥ सा० ॥ न व सायर तारो सारो वंछित काज रे ॥ सा० ॥ ऊख चूरण पूरण कीजें सयल जगीश रे ॥सा०॥ अरदास प्रकाशे श्रीनयविजय सुशिष्य रे ॥ सा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री वीरसेनजिन स्तवनं ॥

॥ ऋषजनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥ पछिम अ रध पुरकर वरें, विजय पुरकल वड दीपें रे ॥ नयरी पुंमरीगिणी विहरता, प्रज्जु तेजें रवि जीपे रे ॥ श्री वीरसेन सुहंकरु ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जानुसेन नृ मिपालनो, अंगज गजगति वंदो रे ॥ राजसेना मन वालहो, वृषज लंबन जिन चंदो रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ म शि विण जे लिखुं तुऊ गुणें, अक्षर प्रमना चित्तें रे ॥ धोइएं तिम तिम ऊघडे, जगति जलें तेह नित्त रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति मने सुख धरे, ऋषज कूटें ल खि नामो रे ॥ अधिकारें तुऊ गुण तेहथी, प्रगट हु आ गम गमो रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ निज गुण गुंथित तें केरी, कीर्त्ति मोतिनी माला रे ॥ ते मुऊ कंठे आरोप तां, दीसे जाक ऊमाला रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रगट हुए जिम जगतमां, शोज्ञा सेवक केरी रे ॥ वाचक जस कहे तिम करो, साहिब प्रीति घणेरी रे ॥श्री०॥ ६ ॥इति

॥ अथ श्री महाजइजिन स्तवनं ॥

॥ लाछलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ देवरायनो नंद, माता उमा मनचंद ॥ आज हो राणी रे सूरी

कंताकंत सुहामणो जी ॥ १ ॥ पुरकर पछिम अर्द्ध, विजय ते वप्र सुबद्ध ॥ आज हो नगरी रे विजयायें विहरे गुणनिलो जी ॥ २ ॥ माहानंद जिनराय, गय लंछन जस पाय ॥ आज हो सोहे रे मोहे मन लट काले लोयणें जी ॥ ३ ॥ तेहशुं मुझ अति प्रेम, पर सुर नमवा नेम ॥ आज हो रंजे रे दुख भंजे प्रभु मुझ ते गुणें जी ॥ ४ ॥ धर्मजोबन नवरंग, समकित पाम्यो चंग ॥ आज हो लाखिणी जाडी हवे मुक्तिने मेलशे जी ॥ ५ ॥ चरण धर्म अवदात, ते कन्यानो तात ॥ आज हो माहारा रे प्रभुजीने ते छे वश सदा जी ॥६॥ श्रीनयविजय सुशिष्य,जस कहे सुणो जगदीश ॥ आज हो ताहरो रे हुं सेवक देव करो दयाजी॥७॥

॥ अथ श्री देवजसाजिन स्तवनं ॥

॥ कुमरी रोवे आक्रंद करे ॥ ए देशी ॥ देवयशा जिन राजीयो ॥ मनमोहन मेरे ॥ पुरकर दीप मझार ॥म०॥ पछिम अरध सोहामणो ॥म० ॥ वछ विजय संभार ॥ म० ॥ १ ॥ नयरी सुसीमा विचरता ॥ म० ॥ सर्वभूति कुलचंद ॥ म० ॥ शशि लंछन पदमा वती ॥ म० ॥ वछभ गंगानंद ॥ म० ॥ २ ॥ कटि लीलायें केशरी ॥ म० ॥ ते हार्यो गयो रान ॥ म०॥ हार्यो हिमकर तुझ मुखें ॥ म० ॥ हजिय वले नहिं वान ॥ म० ॥ ३ ॥ तुझ लोचनथी लाजिया ॥ म० ॥ कमल गयां जल मांहि ॥ म० ॥ अहिपति पातालें गयो ॥ म० ॥ जींत्यो ललित तुझ बांहि ॥ म० ॥४॥

जीत्यो दिनकर तेजशुं ॥ म० ॥ फिरतो रहे ते आकाश ॥ म० ॥ निंद न आवे तेहने ॥ म० ॥ जेह मन खेद अन्यास ॥ म० ॥ ५ ॥ इम जीत्यो तुमें जगतनो ॥ म० ॥ हरि लियो चित्त रतन्न ॥ म० ॥ वंधु कहावो जगतना ॥ म० ॥ ते किम होय उपमन्न ॥ ॥ म० ॥ ६ ॥ गति तुम्हें जाणो तुम तणी ॥ म० ॥ हुं सेवुं तुम्ह पाय ॥ म० ॥ शरण करे बलिया तणुं ॥ म० ॥ जस कहे तस सुख थाय ॥ म० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अजित वीर्यजिन स्तवनं ॥

॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ राग धन्याश्री॥दीवपुस्कर वर पश्चिम अरधें,विजय नलिनावइ सोहे ॥ नयरि अयोध्या मंडन स्वस्तिक, लंछन जिन जगमोहे रे ॥ नविया अजितवीरिय जिन वंदो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ राजपाल कुल मुकुट नगीनो, मात कनीनिका जायो ॥ रत्नमाला राणीनो वल्लन, प्रत्यक्ष सुरमणि पायो रे ॥न०॥२॥ डुरिजनस्तुति करिजें हुउ दूषण, हुए तस शोपण ईहा ॥ एहवा साहिबना गुण गाइ, पवित्र करुं हुं जीहा रे ॥ न० ॥ ३ ॥ प्रनु गुण गण गंगाजल नाही, कीयो करम मल दूर ॥ स्नातक पद जिन नगति लहियें, चिदानंद नर पूर रें ॥ न० ॥ ४ ॥ जे संसर्ग अनेदारोपें, समापति मुनि माने ॥ ते जिनवर गुण थुणतां लहियें, ज्ञान ध्यान लयताने रे ॥ न० ॥ ५ ॥ स्पर्श ज्ञान इणि परें अनुनवतां, देखीजें निज रूप ॥ सकल जोग जीवन ते

निस्तरीयें नवकूप रे ॥ न० ॥ ६ ॥ शरण त्राण आ लंबन जिनजी, कोई नहीं तस तोले ॥ श्री नयविज य विबुध पय सेवक, वाचक जस इम बोले रे ॥ न०॥७॥

॥ अथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्याय ॥
॥ कृत चोवीशजिन स्तुति प्रारंभः॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम श्री रूषभदेव जिन स्तवनं ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणो ॥ ए देशी ॥ जगजीव न जगवालहो, मरुदेवीनो नंद लाल रे ॥ मुख दीठे सुख उपजे, दर्शन अतिहि आनंद लाल रे ॥ जग० ॥ १ ॥ आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशि सम भाल लाल रे ॥ वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिहि रसाल लाल रे ॥ जग० ॥ २ ॥ लक्षण अंगें विराजता, अडहिय सहस उदार लाल रे ॥ रेखा कर चरणादिकें, अभ्यंतर नहिं पार लाल रे ॥ जग० ॥ ३ ॥ इंद चंद रवि गिरि तणा, गुण लइ घडियुं अंग ला ल रे ॥ भाग्य किहांथकी आवियुं, अचरिज एह उत्तं ग लाल रे ॥ जग० ॥ ४ ॥ गुण सघला अंगें कस्या, दूर कस्या सवि दोष लाल रे ॥ वाचक यशविजयें थुण्यो, देज सुखनो पोष लाल रे ॥ जग० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अजितजिन स्तवनं ॥

॥ निं[illegible]डी वेरण होइ रइ ॥ ए देशी ॥ अजित जि णंदशुं प्रीत[illegible]डी, मुज न गमे हो बीजानो संग के ॥ म

जती फूलें मोहीयो, किम वेसे हो वावल तरु भ्रंग के ॥ अजित० ॥ १ ॥ गंगा जलमां जे रम्या, किम छिल्लर हो रति पामे मराल के ॥ सरोवर जलधर जल विना, नवि चाहे हो जग चातक वाल के ॥ अ० ॥ २ ॥ कोकिल कल कूजित करे, पामी मंजरि हो पंजरी सहकार के ॥ उंगां तरुवर नवि गमे, गिरुआशुं हो होये गुणनो प्यार के ॥ अ० ॥ ३ ॥ कमलिनी दिनकर कर ग्रहे, वली कुमुदिनी हो धरे चंदशुं प्रीत के ॥ गोरी गिरीश गिरिधर विना, नवि चाहे हो कमला निज चित्त के ॥ अ० ॥४॥ तिम प्रभुशुं मुज मन रम्युं, बीजा शुं हो नवि आवे दाय के ॥ श्रीनयविजय विबुध तणो, वाचक जस हो नित नित गुण गाय के ॥अ०॥५॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥ संभव जिन वर वीनती, अवधारो गुण ग्याता रे ॥ स्वामी नहीं मुज खिजमतें, कदीय होशो फल दाता रे ॥ संभव० ॥ १ ॥ कर जोडी उभो रहूं, रात दिवस तुम ध्यानो रे ॥ जो मनमां आणो नहीं, तो शुं कहियें छानो रे ॥ सं० ॥ २ ॥ खोट खजाने को नहीं, दीजें वंछित दानो रे ॥ करुणा नजर प्रभुजी तणी, वाधे सेवक वानो रे ॥ सं० ॥ ३ ॥ काल लबध नहि मति गणो, भाव लबध तुम हाथे रे ॥ लडथडतुं पण गय वछुं, गाजे गयवर साथे रे ॥ सं० ॥ ४ ॥

शो तो तुमही नलुं, बीजा तो नवि जाचूं रे ॥ वाचक यश कहे सांइशुं, फलशे ए मुक साचूं रे ॥ सं० ॥५॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ सुणजो हो प्रज्ञु० ॥ ए देशी ॥ दीठी हो प्रज्ञु दीठी जग गुरु तुज ॥ मूरति हो प्रज्ञु, मूरति मोहन वेलडी जी ॥ मीठी हो प्रज्ञु, मीठी ताहरी वाणी ॥ लागे हो प्रज्ञु, लागे जेसी सेलडी जी ॥ १ ॥ जाणुं हो प्रज्ञु, जाणुं जन्म कयत्थ ॥ जोउं हो प्रज्ञु, जोउं तुम साथें मिल्योजी ॥ सुरमणि हो प्रज्ञु, सुरमणि पाम्यो हत्थ ॥ आंगणे हो प्रज्ञु, आंगणे मुक सुरतरु फल्यो जी ॥२॥ जाग्यां हो प्रज्ञु, जाग्यां पुण्य अंकूर ॥ माग्या हो प्रज्ञु, मुह माग्या पासा ढल्याजी ॥ वूठा हो प्रज्ञु, वूठा अमि रस मेह ॥ नाठा हो प्रज्ञु, नाठा अशुज्न शुज्न दिन वल्याजी ॥ ३ ॥ नूख्यां हो प्रज्ञु, नूख्यां मल्यां घृत पूर ॥ तरश्यां हो प्रज्ञु, तरश्यां दिव्य उदक मिल्यां जी ॥ थाक्यां हो प्रज्ञु, थाक्यां मिल्या सुख पाल ॥ चाहतां हो प्रज्ञु, चाहतां सजन हेजें हल्या जी ॥ ४ ॥ दीवो हो प्रज्ञु, दीवो निशाविन गेह ॥ साथी हो प्रज्ञु, साथी थलें जलनौका मलि जी ॥ कलि जुगें हो प्रज्ञु, कलि जुगें उल्लहो मुक ॥ दरिसन हो प्रज्ञु, दरिसन लहुं आशा फली जी ॥ ५ ॥ वाचक हो प्रज्ञु, वाचक यश तुम दास ॥ वीनवे हो प्रज्ञु, वीनवे अभिनंदन सुणो जी ॥ कहियें हो प्रज्ञु, कहियें म देशो [illegible] ॥ देजो हो प्रज्ञु, देजो सुख दरिसण तणो जी ॥ [illegible] ॥

॥ अथ श्रीसुमति जिन स्तवनं ॥

॥ झांझरीया मुनिवरनी देशी ॥ सुमति नाथ गुणशुं मिलीजी, वाधे मुझ मन प्रीति ॥ तेल बिंदु जिम विस्तरे जी, जलमांहे भलि रीति ॥ सोभागी जिनशुं लागो अविहलरंग ॥ १ ॥ सज्जनशुं जे प्रीतडीजी, छानी ते न रखाय ॥ परिमल कस्तूरी तणो जी, महि माहें महकाय ॥ सोभागी० ॥ २ ॥ आंगलियें नवि मेरु ढकायें, छावडियें रवि तेज ॥ अंजलिमां जिम गंग न माहे, मुझ मन तिम प्रभु हेज ॥ सो० ॥ ३ ॥ हुवे छिपे नहिं अधर अरुण, जिम खातां पानसुरंग ॥ पीवत भर भर प्रभु गुणप्याला, तिम मुझ प्रेम अभंग ॥ सो० ॥ ४ ॥ ढांकी इक्षु पलालशुं जी, न रहे लहि विस्तार ॥ वाचक यश कहे प्रभु तणोजी, तिम मुझ प्रेम प्रकार ॥ सो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ जिन स्तवनं ॥

॥ सहज सलूणा हो साधुजी ॥ ए देशी ॥ पद्मप्रभ प्रभु जिन जइ अलगा रह्या.जिहांथी नावे लेखोजी
...नने मशि तिहां नवि संपजे,न चले वाट विशेषो
...गुण सनेहा रे कदिय न वीसरे ॥ ए आंक
...हां जइ कोइ आवे नही, जेह
... मिलवुं रे दोहिलुं तेहशुं, ने
...गुण०॥२॥ वीतरागशुं रे
...ग प्रकारो जी ॥ घोडो
...ताणे असवारो जी ॥

सु० ॥३॥ साची नक्ति रे नावन रस कह्यो, रस ह
तिहां दोय रीजेजी ॥ होडा होडें रे विहुं रसरीज
मनना मनोरथ सीझे जी ॥सु०॥४॥ पण गुणवं
रे गोठें गाजियें, मोहोटा ते विश्रामजी ॥ वाचक य
कहे एहज आशरे, सुख लहुं गामो गामजी ॥सु०॥

॥ अथ श्रीसुपास जिन स्तवनं ॥

॥ लाछलदे मात मलार ॥ ए देशी ॥ श्री सु
स जिन राज, तुं त्रिनुवन शिर ताज ॥ आज हो
जेरे ठकुराइ, प्रनु तुज पद तणीजी ॥१॥ दिव्य
नि सुर फूल, चामर छत्र अमूल ॥ आज हो राजे
नामंमल, गाजे डुंडुनि जी ॥ २ ॥ अतिशय सहज
चार, कर्म खप्याथी अग्यार ॥ आज हो कीधा रे
गणीशे, सुर गण नासुरें जी ॥ ३ ॥ वाणी गुण
त्रीश, प्रातिहारज जगदीश ॥ आज हो राजे रे
वाजे, छाजे आठशुं जी ॥ ४ ॥ सिंहासन अशोक,
ठामांहे लोक ॥ आज हो स्वामी रे शिवगामीरे, व
चक यश थुण्योजी ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रन जिन स्तवनं ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ चंद्रप्रन जिन साहेब
रे, तुमें छो चतुर सुजाण ॥ मनना मान्या ॥ सेव
जाणो दासनी रे, देशो पद निरवाण ॥ मनना मान्या
आवो आवोरे चतुर सुख नोगी, कीजें वात एकांत
अनोगी, गुण गोठे प्रगटें प्रेम ॥ मनना मान्या ॥१
ए आंकणी ॥ ठंडुं अधिकुं पण कहे रे, आसंगायत

जेह ॥ म० ॥ आपे फल जे अण कहे रे, गिरुउ सा
हेब तेह ॥ म० ॥ २ ॥ दीन कह्या विण दानथी रे,
दातानी वाधे माम ॥ म० ॥ जल दीये चातक खी
जवी रे,मेघ हुआ तिणें श्याम ॥म०॥३॥ पीउ पीउ
करी तुमने जपुं रे, हुं चातक तुमें मेह ॥ म० ॥ एक
लहेरमां दुःख हरो रे, वाधे बमणो नेह ॥ म०॥॥४॥
मोडुं वहेलुं आपवुं रे,तो शी ढील कराय ॥म०॥ वाच
क यश कहे जग धणी रे, तुम तूठे सुख थाय ॥म०॥५॥

॥ अथ श्री सुविधि जिन स्तवनं ॥

॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ए देशी॥
लघु पण हुं तुम मन नवि मावुं रे, जगगुरु तुमने
दिलमां लावुं रे ॥ कुणनें ए दीजें शाबासी रे, कहो
श्री सुविधि जिणंद विमासी रे ॥ १ ॥ ल० ॥ मुऊ
मन अणुमांहें जक्ति ठे जाजी रे, तेह दरीनो तुं ठे
माजी रे ॥ योगी पण जे वात न जाणे रे, तेह अ
चरिज कुणथी हुउ टाणे रे ॥ २ ॥ ल० ॥ अथवा
थिरमांहि अथिरन मावे रे,मोहोटो गज दर्पणमां आवे
रे ॥ जेहने ते जे बुद्धि प्रकाशी रे, तेहने दीजें ए शा
बासी रे ॥ ३ ॥ ल० ॥ ऊर्ध्व मूल तरुअर अर्ध शाखा
रे, ठंद पुराणे एहवी ठे जाखा रे ॥ अचरिज वाले अ
चरिज कीधुं रे, जक्ते सेवक कारज सीधुं रे ॥ ४ ॥
ल० ॥ लाड करी जे बालक बोले रे, मातपिता मन
अमियने तोले रे ॥ श्री नयविजय विबुधनो शिशो
रे, यश कहे इम जाणो जगदीशो रे ॥ ५ ॥ ल० ॥

॥ अथ श्री शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अलि अलिकें कदि आवेगो ॥ ए देशी ॥ श्री शीतल जिन नेटियें, करी चोखूं नक्तें चित्त हो ॥ ते ह्यी कहो ठानुं किस्युं, जेहने सोंप्या तन मन वित्त हो ॥ श्री० ॥ १ ॥ दायक नामें ढे घणा, पण तुं सायर ते कूप हो ॥ ते वहु खजुवा तग तगे, तुं दिनकर तेजसरूप हो ॥श्री०॥२॥ मोहोटो जाणी आदखो, दालिद्र नांजो जगतात हो ॥ तुं करुणावंत शिरोमणि, हुं करुणा पात्र विख्यात हो ॥ श्री० ॥ ॥ ३ ॥ अंतरजामी सवि लहो, अम मननी जे ढे वात हो ॥ मा आगल मोसालना, स्या वरणववा अवदात हो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जाणो तो ताणो किस्युं, सेवा फल दीजें देव हो ॥ वाचक यश कहे ढीलनी, ए न गमे मुऊ मन टेव हो श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवनं ॥

॥ कर्म न ढूटे रे प्राणिया ॥ ए देशी ॥ तुमें वहु [illegible]ी रे साहेबा, मारे तो मन एक ॥ तुम विण बीजो [illegible]वि गमे, ए मुऊ मोहोटी रे टेक हो ॥ श्री श्रेयांस [illegible] करो ॥ १ ॥ मन राखो रे तुमें सवि तणां, पण [illegible]हां एक मलि जाउ ॥ ललचावो लख लोकने, शाथी [illegible]जोल न थाउ ॥ श्री०॥ २ ॥ राग नरें जन मन रहो, आवो अं काल वैराग ॥ चित्त तुमारो रे समुद्रनो, अनोगी, गुरे ताग ॥ श्री०॥३॥ एवा शुं चित्त मेलव्युं, ए आंकणी ॥ न कांइ ॥ सेवक निपट अबूक ढे, निर्वे

नेह ॥ म० ॥ आपे फल जे अण कहे रे, गिरुउ सा हेव तेह ॥ म० ॥ २ ॥ दीन कह्या विण दानथी रे, दातानी वाधे माम ॥ म० ॥ जल दीये चातक खी जवी रे,मेघ हुआ तिणें श्याम ॥म०॥३॥ पीउ पीउ करी तुमने जपुं रे, हुं चातक तुमें मेह ॥ म० ॥ एक लहेरमां दुःख हरो रे, वाधे बमणो नेह ॥ म०॥॥४॥ मोडुं वहेलुं आपवुं रे,तो शी ढील कराय ॥म०॥ वाच क यश कहे जग धणी रे, तुम तूठे सुख थाय ॥म०॥५॥

॥ अथ श्री सुविधि जिन स्तवनं ॥

॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ए देशी॥ लघु पण हुं तुम मन नवि मावुं रे, जगगुरु तुमने दिलमां लावुं रे ॥ कुणनें ए दीजें शावासी रे, कहो श्री सुविधि जिणंद विमासी रे ॥ १ ॥ ल० ॥ मुझ मन अणुमांहें नक्ति ठे जाझी रे, तेह दरीनो तुं ठे माली रे ॥ योगी पण जे वात न जाणे रे, तेह अ चरिज कुणथी हुउ टाणे रे ॥ २ ॥ ल० ॥ अथवा थिरमांहि अथिरन मावे रे,मोहोटो गज दर्पणमां आवे रे ॥ जेहने तें जे बुद्धि प्रकाशी रे, तेहने दीजें ए शा बासी रे ॥ ३ ॥ ल० ॥ ऊर्ध्व मूल तरुअर अध शाखा रे, छंद पुराणे एहवी ठे नाखा रे ॥ अचरिज वाले अ चरिज कीधुं रे, नक्त सेवक कारज सीधुं रे ॥ ४ ॥ ल० ॥ लाड करी जे बालक बोले रे, मात पिता आनंदे अमियने तोले रे ॥ श्री नयविजय वि बुध पद सेवी रे, यश कहे इम जाणो जगदीशो रे

समय वदलाये, इम किम प्रीति निवाहो थाये ॥४॥ ऋ० ॥ ते माटे तूं साहिब माहारो, हुं छुं सेवक नव नव ताहारो ॥ एह संबंधमां म होजो खामी, वाचक मान कहे शिर नामी ॥ ५ ॥ ऋषन० ॥ इति॥ १ ॥

॥ अथ श्रीअजित जिन स्तवनं ॥

॥ आघा आम पधारो पूज्य० ॥ ए देशी ॥ अजित जिणेसर चरणनी सेवा, हेवायें हुं हलियो ॥ कहिएं अणचाख्यो पण अनुनव, रसनो टाणो मलियो ॥ १ ॥ प्रनुजा महिर करीने आज, काज हमारां सारो ॥ मुकाव्यो पण हुं नवि मूकुं, चूकुं ए नवि टाणो ॥ नक्ति नाव ऊठ्यो जे अंतर, ते किम रहे शरमा णो ॥ २ ॥ प्र० ॥ लोचन शांति सुधारस सुनंगा, मुख मटकालुं प्रसन्न ॥ योगमुद्रानो लटको चटको, अतिशयनो अति धन्न ॥ ३ ॥ प्र० ॥ पिंम पदस्थ रूपस्थें लीनो, चरण कमल तुफ ग्रहीयां ॥ नमर परें रसस्वाद चखावो, विरसो कां करो महीयां ॥ ४ ॥ प्र० ॥ वाल कालमां वार अनंती, सामग्रीयें नवि जाग्यो ॥ यौवनकालें ते रस चाखण, तुं समरथ प्रनु माग्यो ॥५॥प्र०॥ तूं अनुनव रस देवा समरथ, हूं पण अरथी तेहनो ॥ चित्त वित्तने पात्र संबधें, अजर रह्यो हवे केहनो ॥ ६ ॥ प्र० ॥ प्रनुनी महेरें ते रस चाख्यो, अंतरंग सुख पाम्यो ॥ मानविजय वाचक इम जंपे, हूउ मुफ मन काम्यो ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसंभव जिन स्तवनं ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ साहिब
ांभलो वीनति,तूं बो चतुर सुजाण ॥ सनेही ॥ की
 सुजाणने वीनती, प्रायें चढे ते प्रमाण ॥ स०
 १ ॥ संभव जिन अवधारीयें, महेर करी मेहेरवा
 ॥ स० ॥ भवभय भावठ भंजणो, भक्त वत्सल भ
ावान ॥ स० ॥ २ ॥ सं० ॥ तुं जाणे विणु वीनवे,
तोहे में न रहाय ॥ स० ॥ अरथी होए उतावलो,
हण वरसां सो थाय ॥ स० ॥ ३॥ सं० ॥ तूंतो मो
टपमां रहे, विनव्यो पण विलंबाय ॥ स० ॥ एक
धीरो एक आकुलो, इम किम कारज थाय ॥ स०
॥ ४ ॥ सं० ॥ मन मान्यानी वातडी, सघले दीसे
नेट ॥ स०॥ एक अंतर पेशी रहे, एक न पामे भेट ॥
स० ॥ ५ ॥ सं० ॥ योग्य अयोग्य जे जोइवा, ते अपू
रणनुं काम ॥ स० ॥ खाइना जलने पण करे, गंगा
जलनिज नाम ॥स० ॥ ६ ॥ सं०॥ काल गयो बहु वा
यदे, तेतो हवे न खमाय ॥ स० ॥ योगवाई ए फिरि
फिरि, पामवि दुर्लभ थाय ॥ स० ॥ ७ ॥ सं० ॥ भेद
भाव मूकी परो, मुझशुं रमो एक मेक ॥ स०॥ मान
विजय वाचक तणी,ए वीनति छे छेक ॥स०॥८॥सं०॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिनस्तवनं ॥

॥ढाल॥ मोतीडानी देशी ॥ प्रभु मुझ दरिसन म
लियो अलवे, मन थयुं हवे हलवे हलवे ॥ साहिब
अभिनंदन देवा, मोहना अभिनंदन० ॥ पुण्योदय

एह मोहोटो माह्हारो, अणचिंत्यो थयो दरिसण ता
हारो ॥ १ ॥सा०॥ देखत देव हरी मन लीधुं, काम
णगारे कामण कीधुं ॥ सा०॥ मनडूं जाये नही
को पासें, रात दिवस रहे ताहरी आसें ॥ २ ॥
सा०॥ पहिलुं तो जाण्युं हतुं सोहिलूं,पण मोहोटाशुं
मिलवुं दोहिलूं ॥ सा० ॥ सोहिलूं जाणि मनडुं वल
गूं, थाये नही हवे कीधुं अलगूं ॥ ३ ॥ सा० ॥
रूप देखाडी तुं होय अरूपी, किम ग्रहिवाये अकलस
रूपी ॥ सा० ॥ ताहरी धात न जाणी जाये, कहो
मनडानी शी गति थाये ॥ ४ ॥ सा०॥ पहिलुं जाणी
पछे करे किरिया, ते परमारथ सुखना दरीया ॥ सा०॥
वस्तु अजाणे मन दोडावे, तेतो मूरख बहु पिठलावे
॥५॥ सा० ॥ ते माटे तूं रूपी अरूपी, शुद्ध बुद्धने
सिद्ध सरूपी ॥सा०॥ एह स्वरूप ग्रहीयुं जब तहारुं,
तव भ्रम रहित थयुं मन महारुं ॥६॥सा०॥ तुज गुण
ग्यान ध्यानमां रहीयें, इम हिलवुं पण सुलन्नज क
हीयें ॥ सा० ॥ मानविजय वाचक प्रज्ञु ध्यानें, अनु
न्नव रसमां हल्यो एकताने ॥ ७ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमति जिन स्तवनं ॥

॥ थारा मोहोला उपर मे० ॥ ए देशी ॥ रूप अ
नुप निहालि, सुमति जिन ताहरुं ॥ हो लाल ॥ सु०॥
छंमी चपल स्वन्नाव, ठखुं मन माहरुं ॥ हो लाल ॥ठ०॥
रूपी सरूप न होत जो, जग तुज दीसतूं ॥हो लाल ॥
जो० ॥ तो कुण उपर मन्न, कहो अम हींसतुं ॥ हो

लाल ॥ क० ॥ १ ॥ हीस्या विण किम शुद्ध, स्वनावनें रुवता॥ हो लाल ॥स्व० ॥ इन्हा विण तुऊ नाव, प्र गट किम प्रीछता ॥ हो लाल ॥प्र०॥ प्रीछ्या विणु कि म ध्यान, दिशामांहि लावता ॥ हो लाल॥दि०॥ लाव्या विण रस स्वाद, कहो किम पावता ॥हो लाल ॥क०॥ ॥ २ ॥ नक्ति विना नवि मुक्ति, हुइ कोइ नक्तने ॥ हो लाल ॥ हु० ॥ रूपी विना तो तेह, हुवे किम व्यक्तने ॥ हो लाल ॥ हु० ॥ न्हवण विलेपन माल, प्रदीपनें धूपणां ॥ हो लाल ॥प्र०॥ नव नव नूपण नाल, तिलक सिर खूंपणा ॥ हो लाल ॥ ति० ॥३ ॥ अम सत्य पुख्यने योगें, तुमें रूपी थया ॥ हो लाल ॥ तु० ॥ अमिय समाणी वाणी, धर्मनी कही गया ॥ हो लाल ॥ ध० ॥ तेह आलंबने जीव, घणाये बूऊीया॥ हो लाल॥ घ० ॥ नावि नावने ज्ञानें,अमो पण रीजीया ॥हो लाल ॥अ०॥४॥ ते माटे तुऊ पिम,घणा गुण कारणो ॥ हो लाल ॥ घ० ॥ सेव्यो ध्यायो हुवे, महानय वारणो ॥ हो लाल ॥ म० ॥ शांतिविजय बुध शिष्य, कहे नविका जना ॥ हो लाल॥क०॥ प्रजुनुं पिमस्थ ध्यान, करो थइ एकमना ॥ हो लाल ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रनजिन स्तवनं ॥

॥ वारि हुं गोडी पासनी ॥ ए देशी ॥ श्रीपद्मप्रनना नामने, हुं जावं वलिहार ॥ नविजन ॥ नाम जपंतां दीहा गमुं, नवनय नंजन हार ॥ न० ॥१॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ नाम सुणत मन उल्लसे, लो

चन विकसित होय ॥ ज० ॥ रोमांचित हुवे देहडी, जाणे मिलियो सोय ॥ ज० ॥ २ ॥ श्री० ॥ पंचम कालें पामवुं, डुर्लन प्रनु दीदार ॥ ज०॥ तोहे तेहना नामनो, छे मोहोटो आधार ॥ ज० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ नाम ग्रहे आवी मिले, मन जिंतर जगवान ॥ ज०॥ मंत्रवलें जिम देवता, वहेलो कीधे आह्वान ॥ ज० ॥ ॥ ४ ॥ श्री० ॥ ध्यान पदस्थ प्रजावथी, चाख्यो अनुजव स्वाद ॥ ज० ॥ मानविजय वाचक कहे, मूको बीजो वाद ॥ ज० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री सुपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥रंगीले आतमा॥ ए देशी॥ निरखी निरखि तुज बिंबने, हरखित होय मुज मन्न ॥ सुपास सोहामणा ॥ निर्विकारता नयनमां, मुखडूं सदा सुप्रसन्न ॥ १ ॥ सु०॥ जाव अवस्था सांजरे, प्रातिहारजनी शोज ॥ सु०॥ कोडि गमे देवा सेवा, करता मूकी लोज ॥ २ ॥ सु० ॥ लोकालोकना सवि जावा, प्रतिजासे परतक्क ॥ सु०॥ तोहे न राचे नवि रुसे, नवि अविरतिनो पक्क ॥ ३ ॥ सु० ॥ हास्य न रति अरति नहीं, नही जय शोक डुगंढ ॥ सु० ॥ नही कंदर्प कदर्थना, नही अंतरायनो संच ॥ ४ ॥ सु० ॥ मोह मिथ्यात निड़ा गइ, नाग दोष अढार ॥ सु०॥ चोत्रीश अतिशय राजता, मूलातिशय चार ॥ ५ ॥ सु० ॥ पांत्रीश वाणी गुणें करी, देता जवि उपदेश ॥ सु० ॥ इम तुज बिंबें ता हरो, जेदनो नहिं लवलेश ॥ ६ ॥ सु०॥ रूपथी प्रजु

गुण सांभरे, ध्यान रूपस्थ विचार ॥ सु० ॥ मानवि जय वाचक वदें, जिन प्रतिमा जयकार ॥ ७ ॥ सु० ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रभ जिन स्तवनं ॥

॥ अलगी रेहेंने ॥ ए देशी ॥ तूंही साहिबारे मन मान्या ॥ तूं तो अकल स्वरूपी जगतमां, मनमां केणे न पायो ॥ शब्दें बोलावी उलखायो, शब्दातीत वहरायो ॥ १ ॥ तूं० ॥ रूप निहाली परिचय कीनो, रूपमांहि नहिं आयो ॥ प्रातिहारज अतिशय अहि नाणें, शास्त्रमां बुधें न लखायो ॥२॥ तूं० ॥ शब्द न रूप न गंध न रस नहीं, फरस न वरण न वेद ॥ नहिं संज्ञा छेदन भेदन नहिं, हास्य नहिं नहीं खेद ॥ ३ ॥ तूं० ॥ सुख नही दुःख नहीं वली वांछा नहीं, नहीं रोग योग ने भोग ॥ नही गति नहीं स्थिति नहीं रति अरति, नही तुज हरपनें शोग ॥ ४ ॥ तूं० ॥ पुण्य न पाप न बंधन देह न, जनम मरण नहीं व्रीडा ॥ राग न द्वेप न कलह न भय नहीं, नही संताप न क्रीडा ॥ ५ ॥ तूं० ॥ अलख अगोचर अज अविनाशी, अविकारी निरुपाधि ॥ पूरण ब्रह्मचिदानंद साहिब, ध्याउं सहज समाधि ॥६॥ तूं०॥ जे जे पूजा ते ते अंगें, तूं तो अंगथी दूरें ॥ ते माटे पूजा उपचारिक, न घटे ध्याननें पूरें ॥ ७ ॥ तूं० ॥ चिदानंद घन केरी पूजा, निर्विकल्प उपयोग ॥ आतम परमातमने अभेदें, नही कोइ जडनो जोग ॥ ८ ॥ तूं० ॥ रूपातीत ध्यानमां रहेतां, चंद्रप्रभ जिनराय ॥

जय वाचक इम बोले, प्रभु सरिखाइ थाय ॥७॥तुं०॥

॥ अथ श्रीसुविधि जिन स्तवनं ॥

॥ राग सिंधुडो ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥ तुः सेवा सारी रे, शिव सुखनी त्यारी रे ॥ मुझ लागे यारी रे, पण न्यारी छे ताहरी प्रकृति सुविधिजिना ॥ १ ॥ हेजें नवि बोले रे, स्तवीयो नवि फोले रे । हीयडुं नवि खोले रे, तुझ तोले त्रिणजगमां निःसंगी को नहीं रे ॥ २ ॥ न जूवे जोतानें रे, न रीझे ओतानें रे ॥ रहे मेलें पोताने रे, ओताने जोताने तोहे वालहो रे ॥ ३ ॥ नवि तूसे न रूसे रे, न वखाणे न दूसे रे ॥ नवि आपे न मूसे रे, नवि जूंसे न मंझे रे कोइने कदा रे ॥ ४॥ न जणाए धात रे, ते हशुं शी वात रे ॥ एह जाणुं कहेवात रे, रहिवात न तोहे तुझ विणु मानने रे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ मन रंग धरी० ए देशी ॥ तुझ मुख सनमुख निरखतां,मुझ लोचन अमीय ठरंतां हो ॥ शीतल जिनवरजी ॥ तेहनी शीतलता व्यापे, किम रहेवायें कहो तपेंहो ॥ १ ॥ शी०॥ तुझ नाम सुण्युं जव कानें, हियडुं आवे तव शानें हो ॥ शी० ॥ मूरछायो माणस वाटें, जिम सज हुये अमृत छांटे हो ॥ २ ॥ शी० ॥ शुन्नगंधने तरतम योगें,आकुलता हुइ नोगें हो ॥शी०॥ तुझ अद्भुत देह सुवासें,तेह मिटिगइ रहत उदासें हो ॥ ३ ॥ शी० ॥ तुझ गुण संस्तवने रसना, छंडे अन्य

लवनी तृषना हो ॥शी०॥ पूजायें तुज तनु फरसे, फरस त शीतल थइ उल्लसे हो ॥४॥शी० ॥ मननी चंचलता जागी, सवि ठंमी थयो तुज रागी हो ॥ शी० ॥ कवि मान कहे तुज संगें, शीतलता थइ अंगो अंगें हो॥५॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवनं ॥

॥ देशी वांहाणनी ॥ राग मल्हार ॥ श्रीश्रेयांस जिणंद. घनाघन गहगह्यो रे ॥ घना० ॥ वृक्ष अशोक नी ग्रयें, सुजर ग्राइ रह्यो रे ॥ स० ॥ जामंमलनी जलक, जबूकें वीजली रे ॥ ज० ॥ उन्नत गढ तिग इंद्र, धनुष शोजा मली रे ॥ ध० ॥ १ ॥ देवडुंडुहिनो नाद, गुहिर गाजे घणुं रे ॥ गु० ॥ जाविक जननां नाटिक, मोर क्रीडा जणुं रे ॥ मो० ॥ चामर केरी हार, चलंती बगतति रे ॥ च०॥ देशना सरस सुधारस, वरसे जिनपति रे ॥व०॥ २ ॥ समकिती चातक वृंद, तृपति पामे तिहां रे ॥ तृ० ॥ सकल कपाय दवानल, शांत हुवे जिहां रे ॥ शां० ॥ जन चित्तवृत्ति सुनूमि, त्रेहाली थइ रही रे ॥ त्रे० ॥ तिणे रोमांच अंकूर, वती काया लही रे ॥ व० ॥ ३ ॥ श्रमण रूपी बल सज्ज, हुवे तव करसमी रे ॥ हु० ॥ गुणवंत जन मनक्षेत्र, समारे संजमी रे ॥ स० ॥ करता बीजा धान, सुधान नीपावता रे ॥ सुं० ॥ जेणें जगना लोक, रहे सवि जीवता रे ॥ र० ॥ ४ ॥ गणधर गिरितट संग, थइ सूत्र गुंथना रे ॥ थ० ॥ तेह नदी परवाहें, हुइ बहु पावना रे ॥ हु०॥ एहज मोहोटो आधार, .

काजें जह्यो रे ॥ वि० ॥ मानविजय उवझाय, कहे में सद्दह्यो रे ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ सीता तो रूपें रूडी ॥ ए देशी ॥ वासुपूज्य तूं साहिब साचो, जेह्वो हुवे हीरो जाचो ॥ सुंदर सोभागी ॥ जस होये विरोधी वाचो, तेह्नी करे सेवा काचो हो ॥ सुं० ॥ १ ॥ अछति वात उपावे, वलि नाव छताने छिपावे हो ॥ सुं० ॥ कांइनुं कांइ बोले, परनें निंदा करी झोले हो ॥ सुं० ॥ २ ॥ इम चउ विह मिथ्या भांखी, तेह देवनी कुण भरे साखी हो ॥ सुं०॥ प्राणीना मर्मना घाती, हइडामां मोटी काती हो ॥ सुं०॥ ३ ॥ गुण विण रह्या ऊंचे ठाणे, किम देव वडाय प्रमाणें हो ॥ सुं० ॥ प्रासाद शिखर रह्यो काग, किम पामे गरुड जस लाग हो ॥ सुं० ॥ ॥ ४ ॥ तुं तो वीतराग नीरीह, तुझ वचन यथारथ लीह हो ॥ सुं०॥ कहे मानविजय उवझाय, तुं साचो देव वडाय हो ॥ सुं० ॥ ५ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ श्री विमल जिन स्तवनं ॥

॥ राग मल्हारनी देशी ॥ जिहो विमल जिनेसर सुंदरु, लाला विमल वदन तुझ दिठ ॥ जिहो विमल हुउ मुझ आतमा, लाला तेणें तुं अंतर पइठ ॥ १ ॥ जिनेसर तुं मुझ प्राण आधार ॥ जिहो सकल जंतु हितकार, जिनेसर तूं मुझ प्राण आधार ॥ ए आंकणी ॥ जिहो विमल रहे विमलें थलें, लाला समलें समल

रमेय ॥ जिहो मानसरें रमे हंसलो,लाला वायस खाइ जलेय ॥ जि०॥ २ ॥ जिहो तिम मिथ्यात्वी चित्तमां, लाला तुझ किम होये आजास ॥ जिहो तिहां कुदेव रंगें रमे, लाला समकित मन तुझ वास ॥ जि० ॥ ३ ॥ जिहो हीरो कुंदनशुं जडे, लाला दूधने साकर योग ॥ जिहो पलटे योगें वस्तुनो, लाला न होये गुण आजोग ॥ जि० ॥ ४ ॥ जिहो विमल पुरुप रहेवा तणुं, लाला थानक विमल करेय ॥ जिहो गृहपतिने तिहां शी तृपा, लाला नाटक उचित ग्रहेय ॥ जि०॥ ॥ ५ ॥ जिहो तिम तें मुझ मन निर्मलुं, लाला कीधुं करते रे वास ॥ जिहो पुष्टि शुद्धि नाटक ग्रही, लाला हूं सुखीयो थयो खास ॥६॥ जिहो विमले विमल मिली रह्या,लाला नेद नाव रह्यो नांहिं ॥ जिहो मानविजय उवझायने, लाला अनुनव सुख थयो त्यांहिं ॥ जि० ॥॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ श्री अनंत जिन स्तवनं ॥

॥ राग मारु ॥ देशी करे लडानी ॥

॥ ज्ञान अनंतूं ताहरे रे, दरिसन ताहरे अनंत ॥ सुख अनंतमय साहिवा रे, विरज पण उल्लस्युं अनंत ॥ १ ॥ अनंत जिन आपजो रे ॥ मुझ एह अनंता चार ॥ अ० ॥ मुझने नही अवरशुं प्यार ॥ अ० ॥ तुजने आपंतां शी वार॥ अ० ॥ एह छे तुझ यशनो गार ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ आप खजीनो न खोलवो रे, नही मलवानी चित ॥ माहरे पोतें छे सवे

रे, पण विचे आवरणनी चिंत ॥ अ० ॥ २ ॥ तप जप किरिया मोघरें रे, भांजी पण भांगी न जाय ॥ एक तुक आण लगे थकी रे, हेलामां परही थाय ॥ अ०॥३॥ मातजणी मरुदेवीनें रे, जिन रूपनें क्षणमां दीध ॥ आप पियारुं विचारतां रे, इम किम वीतरागता सिद्ध ॥ अ० ॥ ४ ॥ तेमाटे तस अरथीया रे, तुक प्रार्थता जे कोइ लोक ॥ तेहने आपो आपणी रे, तिहां न घटे कराववी टोक ॥ अ०॥ ५ ॥ तेहनें तेहनुं आपवुं रे, तिहां श्यो उपजे छे खेद ॥ प्रार्थना करते ताहरे रे, प्रभुताइनो पण नही छेद ॥अ०॥६॥ पाम्या पामे पामशे रे,ज्ञानादिक जेह अनंत ॥ ते तुक आणाथी सवे रे, कहे मानविजय उवसंत ॥अ०॥७॥

॥ अथ श्री धर्म जिन स्तवनं ॥

॥ मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥ श्री धर्म जिणंद दयाल जी ॥ धरम तणो दाता ॥ सविजंतु तणो रखवाल जी ॥ धर्म तणो त्राता ॥ जस अमीय समाणी वाणी जी ॥ध०॥ जेह निसुणे भवि प्राणी जी ॥ध० ॥ १ ॥ तेहना चित्तनो मल जाय जी ॥ ध० ॥ जिम कतकफलें जल थाय जी ॥ ध० ॥ निर्मलता तेहज धर्म जी ॥ ध० ॥ कलुषाइ मिथ्यानो मर्म जी ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ निज धर्म तो सहज सभाव जी ॥ध० ॥ तो हि तुक निमित्त प्रभाव जी ॥ ध० ॥ वनराजी फूल न शक्ति जी ॥ ध० ॥ पण ऋतुराजें होइ व्यक्ति जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ कमलाकरें कमल विकास जी ॥ ध०॥

तोरुनता लखमी वास जी ॥ ध० ॥ ते दिनकर करणी जोय जी ॥ ध० ॥ इम धर्मदायक तुं होय जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ ते माटे धर्मना रागी जी ॥ ध० ॥ तुऊ पद सेवे वडनागी जी ॥ ध० ॥ कहे मान विजय नवऊाय जी ॥ ध० ॥ निज अनुनव ज्ञान पसाय जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ श्री शांति जिन स्तवनं ॥

॥ घरे आवो जी आंबो मोरियो ॥ ए देशी ॥ श्री शांतिजिनेसर साहिबा, तुऊ नाठे किम बूटाशे ॥ में लीधी केडज ताहरी, तेह प्रसन्न थये मूकाशे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तुं वीतरागपणुं दाखवी, नोला जनने नूलावे ॥ जाणी में कीधी प्रतिगन्या, तेह्थी कहो को ए नोलावें ॥श्री०॥ २ ॥ कोइ कोइ ने केडें मत पडो, केडें पड्यां आणे वाज ॥ नीरागी पण प्रनु खेंचीयो, नक्ते करी में सातराज ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मनमांहि आणी वासियो, हवे किम निसरवा देवाय ॥ जो नेदरहित मुऊशुं मिले, तो पलकमांहि बूटाय ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कवजे आव्या किम बूटशो, कीधा विण क हेण कृपाल ॥ तोशुं हठवाद लेइ रह्या, कहे मान क रो खुशीयाल ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ श्री कुंथु जिन स्तवनं ॥

॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥ कुंथु जिनेसर जाणजो रे, मुऊ मननो अनिप्राय रे ॥ जिनेसर ॥ तुं आतम अलवेसरु हो लाल, रखे तुऊ विरहो थाय

रे ॥ जि० ॥ १ ॥ तुझ विरहो किम वेठीयें हो लाल. तुझ विरहो दुःखदाय रे ॥ जि० ॥ तुझ विरहो न ख माय रे ॥ जि० ॥ खिण वरसां शो थाय रे ॥जि०॥ विरहो मोहोटी बलाय रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ए आंकणी ॥ ताहरी पासें आववुं रे, पहिलां नावे तुं दाय रे ॥ जि० ॥ आव्या पछी तो जायवुं हो लाल, तुझ गुण वसे न सुहाय रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ २ ॥ न मव्यानो धोखो नहीं रे, जस गुणनूं नहीं नाण रे ॥ जि० ॥ मलिया गुण कलिया पछें हो लाल, विछरत जाये प्राण रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ३ ॥ जातिअंधने दुःख नही रे, न लहे नयननो स्वाद रे ॥ जि० ॥ नयण सवाद लही करी हो लाल, हाख्यां ने विखवाद रे॥ जि० ॥ कुं० ॥ ४ ॥ वीजे पण किहां नवि गमे रे, जिणे तुझ विरह वंचाय रे ॥ जि० ॥ मालति कुसुमें माल्हीयो हो लाल, मधुप करीरें न जाय रे ॥ जि०॥ कुं० ॥ ५ ॥ वनदव दाधां रूंखडां रे, पाल्हवे वली वरसात रे ॥ जि० ॥ तुझ विरहानलना वल्या हो लाल, काल अनंत गमात रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ६ ॥ ताढक रहे तुझ संगमें रे, आकुलता मिटि जाय रे ॥ जि० ॥ तुझ संगें सुखीयो सदा हो लाल, मान विजय उवझाय रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ७ ॥ इति॥१७॥

॥ अथ श्री अरजिन स्तवनं ॥

॥ उधव माधवने कहेजो ॥ ए देशी ॥ श्री अरनाथ उपासना, शुभवासना मूल ॥ हरिहर देव आशास

ना कुण आवे शूल ॥ श्री०॥१॥ दासना चित्तनी कुवा सना,उदयासना कीध ॥ देवान्नासनी नासना,वीसारी दीध ॥श्री० ॥ २ ॥ वली मिथ्या वासनतणावासनारा जेह ॥ तेह कुगुरुनी शासना,हृश्ये न धरेह ॥श्री०॥३॥ सांसारिक आशंसना, तुऊशुं न कराय ॥ चिंतामणि देणहारने, किम काच मगाय ॥ श्री० ॥४ ॥ तिम क ल्पित गछवासना, वासना प्रतिबंध ॥ मान कहे एक जिन तणो, साचो संबंध ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥१८॥

॥ अथ श्री मल्लि जिन स्तवनं ॥

॥ सासू पूछे हे वहू ॥ ए देशी ॥ महिमा मल्लि जिणंदनो, एकें जीन्नें कह्यो किम जाय ॥ योग धरे निन्न योगशुं, चाला पण योगना देखाय ॥ म० ॥१॥ वयणे समऊावे सन्ना, मन समजावे अनुत्तर देव ॥ औदारिक काया प्रत्यें, देव समीपें करावे सेव ॥ म० ॥ २ ॥ नापा पण सवि श्रोताने, निज निज नापायें समऊाय ॥ हरखे निज निज रीऊमां, प्रन्नु तो निर विकार कहाय ॥ म० ॥ ३ ॥ योग अवस्था जिनत णी, ज्ञाता हुये तिणे समऊाय ॥ चतुरनी वात चतु र लहे, मूढ विचारा देखी मुंऊाय ॥ म० ॥ ४ ॥ मू रख जन पामे नहिं, प्रन्नु गुणनो अनुन्नव रस स्वाद ॥ मानविजय उवऊायने, ते रसस्वादें गयो वि खवाद ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥ १९॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनं ॥

॥ इम्दर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥ मुनि सुव्र

त कीजें मया रे, मनमांहि धरी महेर ॥ महेर विहू
णा मानवी रे, कठिण जणायें कहेर ॥ १ ॥ जिणेसर
तुं जगन्नायक देव ॥ तुऊ जगहित करवा टेव ॥ जि०॥
बीजा जूवे करता सेव ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ए आंकणी ॥
अरहट खेत्रनी नूमिका रे, सींचे कृतारथ होय ॥ धा
राधर सघली धरा रे, उद्धरवा सऊजोय ॥ २ ॥
जि० ॥ ते माटे अश्व उपरें रे, आणी मनमां महेर ॥
आपें आव्या आफणी रे, बोधवा नरुयच सहेर ॥
॥ ३ ॥ जि० ॥ अण प्रारथता उद्धर्या रे, आपें करी
य उपाय ॥ प्रारथता रहे विलवता रे, ए कुण कहीयें
न्याय ॥ ४ ॥ जि० ॥ संबंध पण तुऊ मुऊ विचें रे,
स्वामी सेवक नाव ॥ मान कहे हवे सहेरनो रे, न
रह्यो अजर प्रस्ताव ॥ ५ ॥ जि० ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ श्री नमि जिन स्तवनं ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ श्री न
मिनाथ जिणंदनें रे, चरण कमल लय लाय ॥ मूकी
आपणी चपलता रे, तुब्ब कुसुमें मत जाय रे ॥ १ ॥
सुण मनमधुकर माहरी वात॥ म कर फोकट विलुपात
रे ॥सु०॥ ए आंकणी ॥ विषम कालवरषाकृतु रे, क्र
में क्रमें हुउ व्यतीत ॥ ठेहलो पुग्गल परियट्टो रे, आ
व्यो शरद प्रतीत रे ॥ २ ॥ सु० ॥ ग्यानावरण बादल
फटे रे, ग्यान सूरज परकाश ॥ ध्यान सरोवर विक
शीयां रे, केवल लक्ष्मी वास रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ नासें
ललचावे कोइ रे, कोइक नव नव राग ॥ एहवी वास

ना नही बीजे रे, शुद्ध अनुभव सुपराग रे ॥ ४ ॥ भमत भमत कहावियें रे, मधुकरनो रसस्वाद ॥ मा नविजय मनने कहे रे, रस चाखो आल्हाद रे ॥ ५॥

॥ अथ श्री नेमिजिन स्तवनं ॥

॥ अब प्रभुशुं इतनी कहूं॥ ए देशी ॥ नेमिजिणं द निरंजणो, जइ मोहथलें जलकेली रे ॥ मोहना उद भटगोपी, एकलमल्लें नाख्या ठेली रे ॥ १ ॥ सामि सलूणा साहिबा ॥ अतुलीबल तुं वडवीर रे ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ कोइक ताकी मूकती, अति तीखां कटा क्षनां बाण रे ॥ वेधक वयण बंधूक गोली, जे लागे जाये प्राण रे ॥ २ ॥ सा० ॥ अंगुली कटारी घोंचती, उछालति वेणी कृपाण रे ॥ सिंधो भालां उगामती, सिंगी जलभरे कोकवाण रे ॥ ३ ॥ सा० ॥ फूलदडा गोला नाखे, जे सत्त्व गढें करे चोट रे ॥ कुचयु ग करि कुंभस्थलें, प्रहरती हृदयकपाट रे ॥ ४ ॥ सा० ॥ शील सन्नाह उन्नत सत्त्वें, अरि शस्त्रना गोला न लागा रे ॥ सोर करी मिथ्या सवे, मोह सुभट दहो दीसे भागा रे ॥ ५ ॥ सा० ॥ तव नव भव योद्धो मं क्यो, सजी विवाह मंमप कोट रे ॥ प्रभु पण तस स न मुख गयो, नीसाणे देतो चोट रे ॥ ६ ॥ सा० ॥ चा करी मोहनी छोडवी, राजुलने शिवपुर दीध रे ॥ आपे रैवत गिरि चढी, भीतर संयम गढ लीध रे ॥ ७ ॥ सा० ॥ श्रमणधरम योद्धा लडे, संवेग खड्ग छति ८ ल रे ॥ भाल केश उखाडतो, शुभ भावना ७

नाल रे ॥ ८ ॥ सा० ॥ ध्यान धाराशर वर्षतो, हणी मोह थयो जगनाथ रे ॥ मानविजय वाचक वदे, में ग्रह्यो ताहरो साथ रे ॥ ए ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ देहु देहु नणद हठीली ॥ ए देशी ॥ श्री पासजी प्रगट प्रभावी, तुझ मूरति मुझ मन भावी रे ॥ मनमोहना जिनराया ॥ सुर नर किन्नर गुण गाया रे ॥ म० ॥ जे दिनथी मूरति दीठी, ते दिनथी आपद नीठी रे ॥ १ ॥ म० ॥ मुख मटकालुं सुप्रसन्न, देखत रीझे भविमन्न रे ॥ म० ॥ समतारस केरां कचोलां, नयणां दीठे रंगरोलां रे ॥ २ ॥ म० ॥ हाथें न धरे हथीयार, नही जपमालानो प्रचार रे ॥ म० ॥ उत्संगें न धरे वामा, जेहथी उपजे सवि कामा रे ॥ ॥ ३ ॥ म० ॥ न करे गीत नृत्यना चाला, एतो प्रत्यक्ष नटना ख्याला रे ॥ म० ॥ न वजावे आपें वाजां, न धरे वस्त्र जीरण साजां रे ॥ ४ ॥ म० ॥ इम मूरति तुझ निरुपाधि, वीतरागपणे करी साधी रे ॥ म० ॥ कहे मानविजय उवझाया, में अवलंब्या तुझ पाया रे ॥ ५ ॥ म० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर जिन स्तवनं ॥

॥ हेमराज जग जस जीत्यो ॥ ए देशी ॥ शासन नायक साहिब साचो, अतुली बल अरिहंत ॥ कर्म अखिल सबल निवारी, मारीय मोह महंत ॥ ॥ १ ॥ महावीर जगमां जीत्यो जी ॥ हांजी जीत्यो

जीत्यो आप सहाय, हांजी जीत्यो जीत्यो ग्यान प साय, हांजी जीत्यो जीत्यो ध्यान दशाय, हांजी जीत्यो जीत्यो जग सुखदाय ॥ म०॥ अनंतानुबंधी वड योध्दा, हणीया पहिली चोट ॥ मंत्री मिथ्यात पछें तिगरूपी, तव करी आगल दोट ॥ २ ॥ म०॥ नांजि हेड आयुष तिग केरी, इग विगलिंदिय जाति ॥ एह मेवासि नांज्यो चिरकाली, नरकयुगल संघाति ॥ ३ ॥ म० ॥ थावर तिरि डुगफांसि कटावी, साहारण हणी धाडी ॥ थीणध्दीतिग मदिरा वयरी, आतप उद्योत उखाडी ॥ ४ ॥ म० ॥ अपच्चरकाणा अने पच्चरकाणा, हणीया योध्दा आठ ॥ वेद नपुंसक स्त्री सेनानी, प्रति विवित गया नाठ ॥ ५ ॥म० ॥ हास्य रति अरति शोक डुगंठा, नय एह मोह खवास ॥ हणीया पुरुष वेद फोज दारा, पछें संजलनो नाश ॥६॥ म०॥ निद्रा दोय मोह पटराणी,घरमांयी संहारी॥ अंतराय दरिसणने ग्याना, वरणीय लडतां मारी ॥ ७ ॥ म० ॥ जय जय हुउ मोहज मुउ, हूउ तूं जगनाथ ॥ लोकालोक प्रकाश थयो तव, मोक्ष चलावे साथ ॥ ८ ॥ म० ॥ जीत्यो तिम जगतने जीतावे, मूकायो मूकावे ॥ तरण तारण सम रथ ठे तूंही, मानविजय नित्य ध्यावे ॥ ए ॥ म० ॥

॥ इति महावीर जिन स्तवनम् समाप्तम् ॥ तत्समा प्तोयं उपाध्याय श्री मानविजयजी कृत चोवीशी संपूर्णा ॥

अथ श्री रामविजयजीकृत चोवीश जिन।
॥ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम श्री ऋषभ जिन स्तवन ॥

॥ योग माया गरबे रमे जो ॥ ए देशी ॥ उलगडी
।।दिनाथनी जो, कांइ कीजियें मनने कोड जो ॥
ोड करे कोण नाथनी जो, जेहना पाय नमे सुर
ोड जो ॥ उल० ॥ १ ॥ वाहालो मरुदेवीनो लाडलो
ो, राणी सुनंदाना हइडानो हार जो ॥ त्रण भुव
नो नाहलो जो, म्हारा प्राण तणो आधार
जो ॥ उल० ॥ २ ॥ वाहाले वीश पूरव लख भोगव्युं
जो, रूडुं कुमरपणुं रगरेल जो ॥ मनडुं मोह्युं
रे जिन रूपडुं जो, जाणे जगमां मोहन वेल जो ॥
उल० ॥ ३ ॥ प्रभुनी पांचशें धनुषनी देहडी जो,
लख पूरव त्रेशठराज जो ॥ लाख पूरव समता वरी
जो, थया शिव सुंदरीवरराज जो ॥ उल० ॥ ४ ॥
एना नामथी नव निधि संपजे जो, वली अलिय
विघन सवि जाय जो ॥ श्री सुमतिविजय कविराजनो
जो, एम रामविजय गुण गाय जो ॥ उल०॥ ५॥ इति

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ सोना ते केरुं म्हारुं बेडलुं रेलो, रूपला इंढोणी

हाथ, मद्दारा वाह्लाजी रे ॥ ह्वे नही जाउं मही वेचवा रेलो ॥ ए देशी ॥

॥ अजित जिनेसर साहिबा रेलो, वीनतडी अव धार ॥ मद्दारा वाह्लाजी रे ॥ ह्वे नही छोडुं तारी चाकरी रेलो ॥ तुं मनरंजन मद्दारो रेलो, दील डानो जाणणद्दार ॥ मद्दा० ॥ ह्० ॥ १ ॥ लाख चो राशीढुं जन्म्यो रेलो, काल अनंतो अनंत ॥ म० ॥ ते लग लीधी में ताहेरी रेलो, जांगी छे नव तणी त्रांत ॥ म०॥ह्०॥२॥ करि सुनजर ह्वे साहिबा रेलो, दास धरो दीलमांहि ॥ म० ॥ लाख गुण हीन पण ता हरो रेलो, सेवक ढुं मद्दाराज ॥म०॥ ह्० ॥३॥ अव गुण गणतां माह्रा रेलो, नही आवे प्रनु पार ॥ म० ॥ पण जिन प्रवह्णनी परें रेलो, तुमें छो तारण हार ॥म०॥ह्०॥४॥ नयरी अजोध्यानो धणी रेलो, विजया उयरे सरहंस ॥ म० ॥ जितशत्रु रा यनो नंदनो रेलो, धन इक्ष्वाकुनो वंश ॥म०॥ह्०॥ ॥ ५ ॥ धनु सय साढा चारनी रेलो, देह्डी रंग स नूर ॥ म० ॥ बोहोंतेर पूरव लाखनुं रेलो, आयु अ धिक सुख पूर ॥म०॥ ह्० ॥६॥ पंचम आरे तुं मल्यो रेलो, प्रगट्या छे पुण्य निधान ॥ म०॥ सुमति सुगुरु पद सेवतां रेलो, राम अधिक तनुवान ॥म०॥ह्०॥७॥

॥ अथ श्री संनव जिन स्तवनं ॥

॥ तुने गोकुल बोलावे कह्ान, गोविंद गोरी रे ॥ आलोने मद्दीनां दाण, न करो चोरी रे ॥ ए देशी

॥ मने संजव जिनशुं प्रीत, अविहड लागी रे ॥ कांइ देखत प्रजु मुखचंद, जावठ जागी रे ॥ १ ॥ जिन सेनानंदन देव, दीलडे वसीया रे ॥ प्रजु चरण नमे कर जोड, अनुजव रसीया रे ॥ २ ॥ तोरी धनुसय चार प्रमाण, ऊंची काया रे ॥ मनमोहन कंचन वान, लागी तोरी माया रे ॥ ३ ॥ प्रजु राय जितारी नंद, नयणें दीठो रे ॥ सावठी पुर शणगार, लागे मुने मीठो रे ॥ ४ ॥ प्रजु ब्रह्मचारी जगवान, नाम सुणा वे रे ॥ पण मुक्तिवधू वशी मंत्र, पाठ जणावे रे ॥५॥ मुऊ रढ लागी मनमांहे, तुऊ गुण केरी रे ॥ नहीं तुऊ मूरतिने तोल, सुरत जलेरी रे ॥ ६ ॥ जिन महेर करी जगवान, वान वधारो रे ॥ श्री सुमति विजय गुरु शिष्य, दिलमां धारो रे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अजिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ घम घम घमके घूघरा रे, घूघरे हीरनी दो रके घमके० ॥ ए देशी ॥ श्री अजिनंदन जिन स्वा मीने रे, सेवे सुर कुमरीनी कोड के ॥ प्रजुनी चाकरी रे ॥ मुख मटके मोही रही रे, जजी आगल बे कर जोड के ॥ प्रजु० ॥ १ ॥ स्वर जीणे आलापती रे, गाती जिन गुण गीत रसाल के ॥ प्रजु० ॥ ताल मृदं ग वजावती रे, देती अमरी जमरी बाल के ॥ प्रजु० ॥ २ ॥ घम घम घमके घूघरी रे, खलके कटिमेखल सार के ॥ प्रजु० ॥ नाटिक नव नव नाचती रे, बो ले प्रजु गुण गीत उच्चार के ॥ प्र० ॥ ३ ॥ सुत सिद्धा

रथ मातनो रे, संवर नृपति कुल शणगार के ॥ प्र० ॥ धनु शत साडा त्रणनी रे, प्रभुजीनी दीपे देह अपार के ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पूरव लाख पचासनुं रे, पाली आय लह्युं शुभ गण के ॥ प्र० ॥ नयरी अयोध्यानो राजीयो रे,दरिसण नाण रयण गुण खाण के ॥ प्र० ॥ ५ ॥ सेवो समरथ साहिबो रे, साचो शिवरमणीनो साथ के ॥ प्र०॥ मुझ हीयडा मांहि वस्यो रे, वाहालो तीन भुवननो नाथ के ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इणी परें जिन गुण गावतां रे, लहिएं अनुभव सुख रसाल के ॥ प्र० ॥ रामविजय प्रभु सेवतां रे, करतां नित नित मंगलमाल के ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ गरवो कोणेने कोराव्यो के, नंदजीना लाल रे॥ ए देशी ॥ पंचम सुमति जिनेसर सामी के ॥ सुण जिन राय रे ॥ तुमथी नवनिधि रुद्धि में पामी के॥ शिव सुख दाय रे ॥ तुं तो पावन परम नगीनो के ॥सु० ॥ अहनिश समता रसमां भीनो के ॥ सुरगुण गाय रें ॥ १ ॥ मंगला मावडीयें प्रभु जाया के ॥ सु०॥ छप्पन दिशि कुंमरी हुलराया के॥ हरख न माय रे ॥ ताहरुं मुख लखमीनो वीरो के ॥ सु० ॥ तुं तो मेघनृपति कुल हीरो के ॥ हरि नत पाय रें ॥ २ ॥ त्रणसें धनुपनी उंची काया के ॥ सु० ॥ चालीश पूरव लाखनु आयु के ॥ नागर राय रे ॥ ताहारी सेव करे सुरसामी के ॥ सु० ॥ तुंतो शिव सुंदरी

सुखकामी के ॥ निर्मल काय रे ॥ ३ ॥ तुंतो नक्त वत्सल नय टाले के ॥ सु० ॥ तुं तो त्रण जुवन अ जूआले के ॥ जिम दिनराय रे ॥ तुं तो मुनिजन मा नस दीवो के ॥ सु० ॥ अविचल ध्रुवमंमल चिरंजी वो के ॥ जिम गिरिराय रे ॥ ४ ॥ प्रजुजीनी वाणी अमीरस मीठी के ॥ सु० ॥ जिनजीनी मोहन मूर्त्ति दीठी के ॥ अति सुख थाय रे ॥ श्री गुरु सुमतिवि जयं कविराया के ॥ सु० ॥ सेवक रामविजय गुण गाया के ॥ जयो जिन राय रे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रनजिन स्तवनं ॥

फूंबखाडानी देशी ॥ श्री पद्मप्रन जिन सेवियें रे, शिवसुंदरी नरतार ॥ कमल दल आंखडीयां ॥ मो हनशुं मन मोही रह्युं रे,रूप तणो नहिं पार ॥ नमुह धनु वांकडियां ॥ १ ॥ अरुण कमलसम देहडी रे, जगजीवन जिनराय॥वयण रस शेलडियां ॥ त्रीश पूरव लख आऊखुं रे,सारे वंछित काज ॥ मोहन सुरवेलडि यां ॥ २ ॥ सहियरो सवि टोलें थइ रे, शोले सजी शण गार ॥ मिलि सखि शेरडियां ॥ गुण गाती घुमरी दी ये रे, करी चूडी खलकार ॥ कमलमुख गोरडियां ॥३॥ मात सुसीमा उरें धस्यो रे, मुक दिलडामांहे देव ॥ वस्यो दिनरातडियां ॥ कोसंबी नयरी तणो रे, नाथ नमो नित्यमेव ॥ सुणो सखि वातडीयां ॥ ४॥ धनुष अढीशय शोनिती रे,चंच पणे जगदीश ॥ नमो साहे

लडियां ॥ रामविजय प्रभु सेवतां रे, लहियें सयल जगीश ॥ वधे सुख वेलडियां ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ नायता रे तुमें चाल्या गढ आगरे रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ सेवजो रे सामी सुपास जिणेसरु रे ॥ लाल, पूजीयें धरी मन रंग रे लाल ॥ मोरे मन मान्यो साहेबो रे लाल, प्रेमथी रे प्रीति वनी जिन राजशुं रे ॥ लाल ॥ जेहवो चोलनो रंग रे लाल ॥ १ ॥ मोरे मन मान्यो साहिबो रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ धरजो रे धन पृथिवी राणी सती रे ॥ लाल ॥ जायो जेणें रतन्न रे लाल ॥ मोरे० ॥ दीपती रे दिसिकुमरी आवी तिहां रे ॥ लाल, करती कोडी जतन रे लाल ॥मो०॥ ॥ २ ॥ जोरथी रे जिनमुख निरखी नाचती रे ॥ लाल, हर्षती दीये आशीष रे लाल ॥ मो० ॥ चाहती रे चिरंजीवो तुं वालुडा रे ॥ लाल, त्रण भुवनना ईश रे लाल ॥ मो० ॥ ३ ॥ फावती रे फरती फूदडली दीये रे ॥ लाल, मदभर माती जेह रे लाल ॥मो०॥ नाथने रे नेह नयण भरी जोवती रे ॥ लाल, गुण गाती ससनेह रे लाल ॥ ४ ॥ आदरें रे एम हुलरावी बालने रे लाल, पोहोती ते निज गेह रे लाल ॥ मो० ॥ प्रेमशुं रे प्रभु वाधे मन मोहता रे ॥ लाल, दोयसे धनुपनी देह रे लाल ॥ मो० ॥ ५ ॥ रागथी रे राजकुमरी रलीयामणी रे ॥ लाल, १०

प्रनु सुविलास रे लाल ॥ मो० ॥ मानजो रे मोह तणे वशेँ माहरो रे लाल. नाथ रहे गृहवास रे ॥ लाल ॥ मो० ॥ ६ ॥ नावथी रे नोग तजी दीक्षा वरी रे ॥ लाल, वीश पूरव लख आय रे लाल ॥मो०॥ जागतो रे ज्योति सरूपी जगदीसरू रे ॥ लाल, रामविजय गुण गाय रे लाल ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रन जिनजीनुं स्तवन ॥

॥ रायजी अमें तो हिंडुआणी के, राय गराशीया रे लो ॥ ए देशी ॥ जिनजी चंद्रप्रन अवधारो के, नाथ, नीहालजो रे लो ॥ के वमणी विरुद गरीव नीवाजनी, वाचा पालजो रे लो ॥ १ ॥ हरखें हुं तुम शरणें आयो के, मुऊने राखजो रे लो ॥ चोरटा चार चुगल जे नूंमा, ते दूरें नाखजो रे लो ॥ ॥ २ ॥ प्रनुजी पंचतणी परशंसा के, रूडी थापजो रे लो ॥ मोहन महेर करीने दरिसन, मुऊने आपजो रे लो ॥ ३ ॥ तारक तुम पालव में काल्यो के, हवे मुने तारजो रे लो ॥ कुतरी कुमति थइ ठे केडें के, तेहने वारजो रे लो ॥ ४ ॥ सुंदरी सुमति सोहागण सारी के, प्यारी ठे घणुं रे लो ॥ तातजी तेविण जीवें चउद, नुवन कखुं आंगणुं रे लो ॥ ५ ॥ लख गुण लखमणा राणीना जाया के, मुऊ मन आवजो रे लो ॥ अनुपम अनुनव अमृत मीठी के, सुखडी लावजो रे लो ॥ ६ ॥ दीपती दोढशो धनुष प्रमाण के, प्रनुजीनी देहडी रे लो ॥ देवनी दश पूरव

लखमान के, आयुष्य वेलडी रेलो ॥ ७ ॥ निर्गुण निरागी पण हुं रागी के, मनमांहे रह्यो रे लो ॥ शुभगुरु सुमतिविजय सुपसाय के, रामें सुख लह्यो रे लोल ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुविधि जिन स्तवनं ॥

॥ सोवन लोटा जलें भस्या कुडाली दोरी ॥ शां शां दातण लेश रे, ल्योने राम ल्योने दोरी ॥ ए देशी ॥

॥ सुविधि जिणेसर जागतो, जग मोहन सामी ॥ राय सुग्रीवनो नंद रे, वदो लाल अंतरजामी ॥ १ ॥ भरीय कचोली कुमकुमें, मांहे मृगमद घोली ॥ पूजो प्रभु नव अंग रे, रंगें लाल सहीयर टोली ॥ २ ॥ केशरनी आंगी रची, मांहे हीरा दीपे ॥ जोर वन्यो जिनराज रे, तेजें लाल सूरज भीपे ॥ ३ ॥ मुकुट धस्यो शिर शोभतो, मणि रयण विराजे ॥ झलके कुंमल जोडी रे, हैयडे हार निर्मल गाजे ॥ ४ ॥ करी पूजा मन भावशुं, प्रभु हैयडे धरती ॥ धरती ठवती पाय रे, जोवे लाल जिनमुख फरती ॥ ५ ॥ काकंदी नयरी धणी, शत धनुषनी काया ॥ लाख पूरव दोय आय रे, नवमो लाल ए जिनराया ॥ ६ ॥ श्री सुमति विजय गुरुनामथी, नित्य मंगल माला ॥ रामविजय जयकार रे, जपतां लाल जिनगुण माला ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ पाटणनी पटोली रे, राजिंद लावजो रे लो ॥ ए देशी ॥ श्री भद्दि[illegible] वासी रे, साहेब माहेरा रे ॥

श्रवणे ने सुणिया रे, गुण बहु ताहेरा रे ॥ सुण मोरा मीठडा सिरि जगवंत, केवल कमलाना हो कंत, सेवकने निज चरणे रे राजिंद राखजो रे ॥ १ ॥ साते ने वली राज रे, राजिंद अलगो वसे रे ॥ तिहां किण ने आवणने रे, मनडुं उल्लसे रे ॥ सुण मोरा साहेब लाल गुलाल, सेवक नेह नयणें निहाल, नयणो नी लीला रे तारी तारशे रे ॥ २ ॥ श्री शीतल जिन मुझ मन, मंदिर आवजो रे ॥ शिवरमणीना रसीया रे, दिलमां लावजो रे ॥ प्रभुजी मोरा ताहरुं अकल सरूप, तुझथी अगम नहिं मनरूप जीवडलो लल चाणो रे, प्रभुजीनी सूरतें रे ॥३॥ नेवुं धनुष परिमाणें रे, नंदा मातनो रे ॥ श्रीवच्छलंछन रें, दृढरथ तातनो रे ॥ प्रभु मोरा अवधारो गुण गेह, जिनजी तुजशुं मुज मन नेह, नेहडलानी वातो रे, राजिंद दोहली रे ॥ ४ ॥ वीनतडी सांभलीने रे, साहामुं भालजो रे ॥ भव भवनां पातकडां रे, अलगां टालजो रे ॥ प्रभु मोरा तुमें छो गरीब नीवाज, श्री गुरु सुमति विजय कविराज, बालक सेवकने रे, लेखे आणजो रे ॥ ५ ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवनं ॥

॥ विजल वोलावा डुंगर, कांइ भभी सेरी विच्च ॥
विजल वालमा ॥ ए देशी ॥

॥ तारक विरुद सुणी करी, हुं आवी भभो दरबार ॥ श्रेयांस साहेबा ॥ प्रभु ताणो ताण नकी

जिएं ॥ मुज उतारो नवपार ॥१॥ श्रेयांस साहेबा ॥ कालादिक दूषण दाखतां, दातारपणुं केम थाय ॥ श्रे० ॥ जो विण अवलंबन तारीएं, तो जग सघलुं जश गाय ॥ श्रे० ॥२॥ श्रेयांस० ॥ बालकने समजाववा, कहेशो नोलामणी वात ॥ श्रेयांस०॥ पण हठ लीधो मुकीश नही, विणतारे त्रिजुवन तात ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ श्रे० ॥ जो मन तारणनुं अबे, तो ढील तणुं शुं काम ॥ श्रे० ॥ चातक निरमुख दूषणे, थइ मेघ घटा जग श्याम ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ श्रे० ॥ तुज दरिसनथी ताहेरो, हुं कहेवाणो जगमांहे ॥ श्रे० ॥ ॥ हवे मुफ कोण लोपी शके, बलीयानी फाली बांह ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ श्रे० ॥ विष्णुकुमर वालेसरू, प्रजु सिंहपुरीनो राय ॥ श्रे० ॥ लाख चोराशी वरसनुं, प्रजु पाल्युं पूरण आय ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ श्रे० ॥ धनुष एंशी तनु शोजतुं, खडगी लंछन जगदीश ॥ श्रे० ॥ हरख धरीने वीनवे, श्री सुमतिविजय गुरु शिष्य ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ इति ॥ श्रेयांस स्तवनं

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ नंदना गोवालीया ॥ ए देशी ॥ श्री वासुपूज्य नरिंदना, नंदन जन नयणानंद ॥ श्री जिन वालहा॥ प्रजु किम आवुं तुम उलगें, मारे कूडो कुटुंबनो फंद ॥ १ ॥ श्री जिन सांजलो ॥ कुमति रमणी मोहनंदनी, मुज केड न मूके तेह ॥ श्री जि० ॥ मित्र मिल्यो ते लोजीउ, लागो तेहशुं बहुनेह ॥२ ॥ श्री जिन०॥

त्रेवीश मिल्या धूतारडा,तेहना वली नव नवा रंग ॥ श्री जिन० ॥ अह निश तेणे हुं जोलव्यो, न धर्यो प्रजु साथें रंग ॥ ३ ॥ श्री जिन० ॥ प्रजु दरशनें तरसे घणुं, जिन मुज मनडुं दिन रात ॥ श्री जिन० ॥ पण दश त्रण आमा रहे, जे नीच घणुं कमजात ॥४ ॥ श्री जिन० ॥ कूडो कलियुग आजनो, बहु गाम्हरीयो पर वाद ॥ श्री० ॥ ताहरुं रूप न उलखे, नही शुद्ध धर मनी चाह ॥ ५ ॥ श्री० ॥ प्रजु दरशन विण जीव डा, करता दीसे व्यवहार ॥ श्री० ॥ तेणे जरमे जूला घणा, प्रजु दोहिलो लोकाचार ॥ ६ ॥ श्री जिन० ॥ वरस बहोंतेर लख आउखुं, तोरी सीतेर धनुष्य तनु सार ॥ श्री० ॥ श्री रामविजय करजोडीने, कहे उ तारो जवपार ॥ ७ ॥ श्री जिन० ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमलनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ फूल वारीयां वारीयां शुं करो, फूल जोजन करता ॥
॥ जाउ रे ॥ वारीयां फूलजी ॥ ए देशी ॥

॥ जिन विमलवदन रलीयामणुं, जाणे कनक कमलनो राय रे ॥ विमल जिणंदजी ॥ जिन अधर अमीरस जूमिनो, प्रतिबिंबित बिंब सुहाय रे ॥ १ ॥ विमल जिणंदजी ॥ जिन अनुपम रूपनी रेखमां, नवि आवे सुरना इंद रे ॥ विमल० ॥ जिन मुख टी को नीको बन्यो, मानुं उग्यो उज्ज्वल चंद रे ॥ २ ॥ विमल० ॥ जिन दाडिम कली जेम उपती, अति दीपे दंतनी उत्र रे ॥ विमल० ॥ ए अरुण अधर उवीथी

मव्या, मानुं मुक्ताफल समतोल रे ॥ ३ ॥ विमल० ॥ जिन अकल अरूपी रूप छे, पण सकल सरूपी जाण रे ॥ विमल० ॥ जिन अगणित गुणना दोरथी, मन मांकडुं बांध्युं ताण रे ॥ ४ ॥ विमल० ॥ जिन शिव सुखदायक सांजली, हुं हरख्यो हैडा मांहे रे ॥ विमल० ॥ जिन इकतारी तुज शुं करी, जिम चंदचकोरी चाहे रे ॥ ५ ॥ विमल० ॥ प्रजु एवडी विमासण शुं करो, नही खोट खजाने तुऊ रे ॥ विमल० ॥ जो नापो तो सहामुं जूर्ज, तो वछित फलशे मुऊ रे ॥ ६ ॥ विमल० ॥ सुत कृतवर्मा श्यामा तणो, शाठ लाख धनुप तनु आय रे ॥ विमल० ॥ श्री सुमतिविजय कविरायनो, एम रामविजय गुण गाय रे ॥ विमल० ॥ ७ ॥ इति विमल० ॥

॥ अथ श्री अनंत जिन स्तवनं ॥

॥ सावर मतीयें आव्या छे जरपूर जो ॥ ए देशी ॥

॥ सुजसा नंदन जगदानंदन नाथ जो, नेहें रे नव रंगे नित नित जेटीये रेलो ॥ जेव्याथी शु थाये मोरी सहीयो जो, जव जवनां पातिकडां अलगां मेटीयें रेलो ॥ १ ॥ सुंदर साडी पेहेरी चरणा चीर जो, आवोने चढुवटडे जिनगुण गाइयें रेलो ॥ जिन गुण गाये शुं थाय मोरी बहेनी जो, परजव रे सुरपदवी सुंदर पामीयें रेलो ॥ २ ॥ सहीयर टोली जोली पग्गिल जावें जो, गावे रे गुणवती हैयडे गह गही रेलो ॥ जय जग नायक शिव सुखदायक देव

, लायक रे तुज सरिखो जगमां को नही रेलो ॥
३ ॥ परम निरंजन निर्जित नय नगवंत जो, पा
ा रे परमातम श्रवणें सांनल्यो रेलो ॥ पामी हवे
तुफ शासन परतीत जो, ध्यानें रे एकतानें प्रनु
ावी मल्यो रेलो ॥ ४ ॥ ऊंचपणे पंचाश धनुषनुं
ान जो, पाल्युं रे वली आयुष लाखज त्रीशनुं रे
ो ॥ श्रीगुरु सुमति विजय कविराय पसायें जो,अहो
ाश रे दिल ध्यान वसे जगदीशनुं रेलो ॥५॥ इति ॥

॥ अथ श्री धर्म जिन स्तवनं ॥

॥ वाह रे गरवडो ॥ ए देशी ॥ धर्म जिनेसर सेवीयें
, नानु नरेशर नंद ॥ वाह रे जिन वडो ॥ जिन
यानें उःख वीसर्युं रे, हुं पामी परमानंद ॥ वा० ॥
। १ ॥ रत्नजडित सिंहासनें रे, वेसे श्री नगवान ॥
वा० ॥ मुह आगल नाचे सुरी रे, इंड करे गुण
गान ॥ वा० ॥ २ ॥ प्रनु वरसे तिहां देशना रे, जिम
आषाढो मेह ॥ वा० ॥ ताप टले तननो परो रे,वाधे
वमणो नेह ॥ वा० ॥ ३ ॥ अणवायां गयणे घुरे
रे, वाजित्र कोडा कोड ॥ वा० ॥ ताथेइ नाचे
किन्नरी रे, हींमे मोडामोड ॥ वा० ॥ ४ ॥ आयु
वरष दश लाखनुं रे, धनु पण चालिश मान ॥
वा० ॥ रामविजय जिन नामथी रे, लहीयें नवे
निधान ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांति जिन स्तवनं ॥

॥ सुंदर शांति जिणंदनी, ठबि ठाजे ठे ॥ प्रनु गंगा

जल गंजीर, कीर्त्ति गाजे ठे ॥ गजपुर नयर सोहामणुं, घणुं दीपे ठे ॥ विश्वसेन नरिंदनो नंद, कंदर्प जीपे ठे ॥ १ ॥ अचिरा मातायें उर धयो, मन रंजे ठे ॥ मृगलंठन कंचन वान, जावठ जंजे ठे ॥ २ ॥ प्रजु लाख वरस चोथे जागें, व्रत लीधुं ठे ॥ प्रजु पाम्या केवल ज्ञान, कारज सीधुं ठे ॥ ३ ॥ धनुप चालीशनुं ईशनुं, तनु सोहे ठे ॥ प्रजु देशना ध्वुनि वरसंत, जवि पडिबोहे ठे ॥ ४ ॥ जक्तवत्सल प्रजुता जणी, जन तारे ठे ॥ बूडंतां जवजल मांहि, पार उतारे ठे ॥५॥ श्री सुमति विजय गुरुनामथी, दुःख नासे ठे ॥ कहे रामविजय जिन ध्यान, नवनिधि पासें ठे ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ स्तवनं ॥

॥ देशी रसीयाना गीतनी ठे ॥ रसीया कुंथु जिनेसर केसर, जीनी देहडी रे लो ॥ मारा नाथजी रे लो ॥ रसीया मन वंठित वर पूरण, सुरतरु वेलडी रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया अंजन रहित निरंजन, नाम हइए धरो रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया जुगतें करी मन जगतें, प्रजु पूजा करो रे लो ॥ १ ॥ महारा० ॥ रसीया श्री नंदन आनंदन, चंदनथी सिरे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया ताप निवारण तारण, तरण तरीपरे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया मनमोहन जग सोहन, कोह नहि किस्यो रे लो ॥ महारा० ॥ रसिया कूडा कलियुग मांहे, अवर न को इस्यो रे लो ॥ महारा० ॥ २ ॥ रसीया गुण संजारी जाउं, बलिहारी नायनें रे लो ॥ महारा० ॥

रसीया कोण प्रसादें ढांमे, शिवपुर साथनें रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया काच तणे कोण कारण, नाखे सुर मणि रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया कोण चाखे विष फल ने, मेवा अवगणी रे लो ॥ ३ ॥ महारा० ॥ रसीया सूर नृपति सुत गावो, चावो चिहुं दिशे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया वरस सहस पंचाणुं, जिन पुहवी वसे रे लो ॥ महारा०॥ रसीया त्रीश धनुष पण उपर, उंचपणे प्रभु रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया त्रण भुवन नो नाथ के, थइ वेगो विभु रे लो ॥ ४ ॥ महारा० ॥ रसीया अजलंछन गत लंछन, कंचनवान छे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया ऋद्धि पूरे दुःख चूरे, जेहने ध्या न छे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया बुध श्री सुमति विज य-कवि, सेवक वीनवे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया राम कहे जिनशासन, नवि मूकुं हवे रे लो ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अरनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ सींचजो रे वाडीमांनी वेल, सींचजो कटारो केवडो । ॥ रे ॥ ए देशी ॥

॥ गायजो रे धरी उल्लास, अर जिनवर जगदीश रू रे ॥ मानजो रे एह महंत, महीयल मांहे वांछेर रू रे ॥ १ ॥ ध्याइजो रे दृढ करी चित्त, मन वंछित फल पूरशे रे ॥ वारजो रे अवरनी सेव, एहिज शंक चूरशे रे ॥ २ ॥ सींचजो रे सुमतीनी वेल, जिन गुण ध्यान नीरें घणुं रे ॥ संपजे रे समकित फूल, वल फल रलियामणुं रे ॥३॥ पुण्यथी रे देवी नंद, न

एों निरख्यो नेहथी रे ॥ उपनो रे अति आनंद, दुःख अलगां थयां जेहथी रे ॥ ४ ॥ शोजती रे त्रीश धनुपनी काय, राय सुदर्शन वंशनो रे ॥ आउखुं रे जिनजीनुं सार, सहस चोराशी वरसनुं रे ॥ ५ ॥ जिनराजने रे करुं परणाम, काज सरे सवि आपणुं रे ॥ जावथी रे जक्ति प्रमाण, दरिसन फल पामे घणुं रे ॥ ६ ॥ सेवजो रे अरपद अरविंद, जो शिव सुखनी कामना रे ॥ राखजो रे प्रज्ञु हृदय मोजार, राम वधे जग नामना रे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मल्लीनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ एक अंधारी रे रातडी ॥ ए देशी ॥ मिथिला नयरी रे अवतख्या, याने कुंज नरेशर नंद ॥ लंछन शोहे रे कलश तणुं, ने नील वरण सुखकंद ॥ १ ॥ मल्ली जिनेसर मन वस्यो ॥ ने उंगणीशमो अरिहंत, कपट धर्मना रे कारणथी, प्रज्ञु कुमरी रूप धरत ॥ म० ॥ २ ॥ सहस पंचावन रे वरस सुणो, ने आउतणुं परिमाण ॥ मात प्रजावती रे उर धख्यो, पण वीश धनुपतनु मान ॥ म० ॥ ३ ॥ सहस पंचावन रे साधवीयो, ने मुनि चालीस हजार ॥ समेतशिखरें रे मुगतें गया, ने त्रण जुवन आधार ॥ म० ॥ ४ ॥ अड जय टाली रे आपथकी, ने जेणे वांधी अविहड प्रीत ॥ रामविजयना रे साहेबनी, हे अविचल एहज रीत ॥ म० ॥ ५ ॥ इति मल्लिजिन० ॥

रसीया कोण प्रसादें ठांमे, शिवपुर साथनें रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया काच तणे कोण कारण, नाखे सुर मणि रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया कोण चाखे विष फल ने, मेवा अवगणी रे लो ॥ ३ ॥ महारा० ॥ रसीया सूर नृपति सुत गावो, चावो चिहुं दिशे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया वरस सहस पंचाणुं, जिन पुहवी वसे रे लो ॥ महारा०॥ रसीया त्रीश धनुष पण उपर, उंचपणे प्रभु रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया त्रण भुवन नो नाथ के, थइ बेठो विभु रे लो ॥ ४ ॥ महारा० ॥ रसीया अजलंछन गत लंछन, कंचनवान छे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया ऋद्धि पूरे दुःख चूरे, जेहने ध्यान छे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया बुध श्री सुमति विजय कवि, सेवक वीनवे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया राम कहे जिनशासन, नवि मूकुं हवे रे लो ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अरनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ सींचजो रे वाडीमांनी वेल, सीचजो कटारो केवडो ॥
॥ रे ॥ ए देशी ॥

॥ गायजो रे धरी उल्लास, अर जिनवर जगदीस रू रे ॥ मानजो रे एह महंत, महीयल मांहे वालेस रू रे ॥ १ ॥ ध्याइजो रे दृढ करी चित्त, मन वंछित फल पूरशे रे ॥ वारजो रे अवरनी सेव, एहिज शंका चूरशे रे ॥ २ ॥ सीचजो रे सुमतीनी वेल, जिन गुण ध्यान नीरें घणुं रे ॥ संपजे रे समकित फूल, केवल फल रलियामणुं रे ॥३॥ पुण्यथी रे देवी नंद, नय

॥ अथ श्री नमी जिन स्तवनं ॥
॥ दोशीडाने हाटें जाजो लाल, लाल कसुंबो ॥
॥ नींजे छे ॥ ए देशी ॥

॥ कांइ विजय नरेशर नंदन लाल, विप्रा सुत मन मोहे छे ॥ निलुत्पललंछन पाए लाल, सोवन वान तनु शोहे छे ॥ १ ॥ मिथिला नयरीनो वासी लाल, शिवपुरनो मेवासी छे ॥ मुनि वीशसहस जश पासें लाल, तेज कला सुविलासी छे ॥ २ ॥ प्रजु पंदर धनुष परिमाणे लाल, जगमां कीरति व्यापी छे॥ प्रजु जीवदयाने आणे लाल, सुमति लता जिणें थापी छे ॥ ३ ॥ नमीनाथ नमो गुण खाणी लाल, अक्षय वली अविनाशी छे ॥ तेणें वात सकल ए जाणी लाल, जेहने आशा दासी छे ॥४॥ श्री सुमति विजय गुरु नामें लाल, कीर्ति कमला वाधी छे ॥ कहे रामविजय जिन ध्यानें लाल, अविचल लीला लाधी छे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री नेमीनाथ जिन स्तवनं ॥
॥ अमें तुमारा छोरुडां गुण जाणोछो के ना ॥
॥ ए देशी ॥

॥ राजुल कहे पिया नेमजी, गुण जानो छो के ना ॥ केम छोडी चाल्या निरधार, हे गुण मानो छो के ना ॥ पुरुष अनंते जोगवी ॥ गुण० ॥ पीयु शुं मोही रह्या तेणे नार, हे गुण० ॥ १ ॥ कोडी गमे जेहने चाहे ॥ गुण० ॥ ज्यो ते नारीथी रंग ॥ हे गुण० ॥ पण जग जखाणो कह्यो ॥ गुण० ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनं ॥

॥ हरनी हमची रे ॥ ए देशी ॥ आवो रे अ
रे सखी देहरे जइएं, प्रभु दरिसन करी निरमल
एं ॥ गावो गावो रे हरख अपार, जिन गुण गर
॥ तुमें पेहेरो शोल शणगार ॥ जिन गुण गरवो
मारे लाखेणो ए वार ॥ जिन० ॥ दोहेलो मान
वतार ॥ जिन० ॥ १ ॥ पदमा देवी नंदन नीको
प्रभु राय सुमित्र कुल टीको छे ॥ नमो नमो रे
ज नाथ ॥ जिन० ॥ फोगट शी करवी वात ॥ जिन
कूडो लागे नेहनी लात ॥ जिन० ॥ २ ॥ कछप लं
प्रभु पाया छे, जिन वीश धनुपनी काया छे ॥ त्रं
सहस वरसनुं आय ॥ जिन० ॥ मारे हइडे हरख
माय ॥ जिन० ॥ एहनी सेवाथी सुख थाय ॥ जिन
मारा दुःखडां दूरें जाय ॥ जिन० ॥ ३ ॥ प्रभु श्या
वर्ण विराजे छे, मुखडुं देखी विधु लाजे छे ॥ ए
मोही मोही हरिनी नार ॥ जिन० ॥ जे करे लुंछण
सार ॥ जिन० ॥ प्रभु नयण तणे मटकार ॥ जिन०
तेथी लागो प्रेम अपार ॥ जिन० ॥ ४ ॥ प्रभु हद
कमलनो वासी छे, शिवरमणी जेहनी दासी छे
हुंतो तेह तणोछुं दास ॥ जिन० ॥ मारी पूरे म
डानी आश ॥ जिन० ॥ प्रभु अविचल लीलविलास
जिन० ॥ रामविजय कहे उल्लास ॥ जिन० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री नमी जिन स्तवनं ॥

॥ दोशीडाने हाटें जाजो लाल, लाल कसुंबो ॥

॥ लींजे हे ॥ ए देशी ॥

॥ कांइ विजय नरेशर नंदन लाल, विप्रा सुत मन मोहे हे ॥ निलुत्पललंछन पाए लाल, सोवन वान तनु शोहे हे ॥ १ ॥ मिथिला नयरीनो वासी लाल, शिवपुरनो मेवासी हे ॥ मुनि वीशसहस जश पासें लाल, तेज कला सुविलासी हे ॥ २ ॥ प्रनु पंदर धनुष परिमाणे लाल, जगमां कीरति व्यापी हे॥ प्रनु जीवदयाने आणे लाल, सुमति लता जिणें थापी हें ॥ ३ ॥ नमीनाथ नमो गुण खाणी लाल, अक्षय वली अविनाशी हे ॥ तेणें वात सकल ए जाणी ला ल, जेहने आशा दासी हे ॥४॥ श्री सुमति विजय गुरु नामें लाल, कीर्त्ति कमला वाधी हे ॥ कहे रामविजय जिन ध्यानें लाल, अविचल लीला लाधी हें ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री नेमीनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ अमें तुमारा होरुडां गुण जाणोहो के ना ॥

॥ ए देशी ॥

॥ राजुल कहे पिया नेमजी, गुण जानो हो के ना ॥ केम होडी चाल्या निरधार, हे गुण मानो हो के ना ॥ पुरुष अनंते नोगवी ॥ गुण० ॥ पीयु शुं मोही रह्या तेणे नार, हे गुण० ॥ १ ॥ कोडी गमे जेहने चाहे ॥ गुण० ॥ स्यो ते नारीथी रग ॥ हे गु ण० ॥ पण जग उखाणो कह्यो ॥ गुण० ॥ होवे

सरिसा सरिसो संग ॥ हे गुण० ॥ २ ॥ हुंगुण वंती गोरडी ॥ गुण० ॥ ते निर्गुण निहेजी नार ॥ हे गुण० ॥ हुं सेवक छुं रावलो रे ॥ गुण०॥ ते सामुं न जुवे लगार ॥ हे गुण० ॥ ३ ॥ जगमां ते गुण आगलो ॥ गुण० ॥ जेणे वश कीधो नरतार ॥ हे गुण० ॥ मन वैरागें वालीयुं ॥ गुण० ॥ ले रा जुल संजम नार ॥ हे गुण० ॥ ४ ॥ बहेनीने मलवा भणी ॥ गुण० ॥ पीयु पेहेली तेह जाय ॥ हे गु ण० ॥ संग लइ ते नारने ॥ गुण० ॥ रही अनुभव शुं लयलाय ॥ हे गुण० ॥ ५ ॥ समुद्र विजय कुल चंदलो ॥ गुण० ॥ शिवादेवी मात मलार ॥ हे गु ण० ॥ वरस सहस एक आउखुं ॥ गुण० ॥ सोरी पुरनो सिणगार ॥ हे गुण०॥६॥देह धनुष दश दीपती॥ गुण० ॥ प्रभु ब्रह्मचारी भगवंत ॥ हे गुण० ॥ राजु लवर मुने वालहो ॥ गुण० ॥कहे रामविजय जयवंत ॥ हे गुण० ॥ ७ ॥ इति नेमिजिनस्तवनं ॥

॥ अथ श्री पारसनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ ऊटणीना गीतनी- देशी ॥ सेवो भविजन जिन त्रेवीशमा, लंछन नाग विख्यात ॥ जलधर सुंदर प्रभुजीनी देहडी, वामा राणीनो जात ॥ सेवो भवि जन जिन त्रेवीशमा ॥ १ ॥ चिहुं दिशें घोरघटा घनशुं मल्यो, कमठें रच्यो जलधार ॥ मुशल धारें जल वरसे घणुं, जल थल न लहुंजी पार ॥ सेवो० ॥ २ ॥ वड हेठल वाहालो काउस्सग्ग रह्यो, मेरुतणी परें

धीर ॥ (ध्यान शुकल वीजुं पद ध्यावतो) ध्यान तणी धारा वाधे तिहां, चढियां उंचांजी नीर ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ अचल न चलियो प्रभुजी माहरो, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ समवसरण सुरकोडी मिल्या तिहां, वाज्यां जीत निशाण ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ नव कर कंच पणे प्रभु शोभता, अश्वसेन रायनो नंद ॥ प्रगट परता पूरण पासजी, दीठे होवे आनंद ॥ सेवो ०॥५॥ एक शत वरसनुं आउखुं भोगवी,पाम्या अविचल रूद्ध ॥श्रीसुमतिविजय गुरु नामथी, राम लहे वर सिद्ध ॥ सेवो० ॥ ६ ॥ इति पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ अथ श्री महावीर जिन स्तवनं ॥

॥ गरवी पूछे रे महारा गरवडा रे ॥ ए देशी ॥

॥ चरण नमी जिनराजनां रे, मागुं एक पसाय ॥ महारा लाखेणा स्वामी रे तुने वीनवुं रे ॥ महेर करो मारा नाथजी रे, दास धरो दिलमांहे ॥ महारा० ॥ १ ॥ पतित घणा तें उद्धर्या रे, बिरुद गरीब निवाज ॥ महारा० ॥ एक मुजने वीसारतां रे, शे नावे प्रभु लाज ॥ महारा० ॥ २ ॥ उत्तम जन घनसारीखा रे, नवि जोवे गाम कुगाम ॥ महारा० ॥ प्रभु सुनजरें करुणाथकी रे, लहीयें अविचल धाम ॥ महारा० ॥ ३ ॥ सुत सिद्धारथ रायनो रे, त्रिशलानंदन वीर ॥ महारा० ॥ वरस बोहोंतेर आउखुं रे, कंचनवान शरीर ॥ महारा० ॥ ॥ ४ ॥ मुख देखी प्रभु ताहरुं रे, पाम्यो परमा

नंद ॥ महारा० ॥ हृदय कमलनो हंसलोरे, मुनिजन कैरव चंद ॥ महारा० ॥ ५ ॥ तुं समरथ शिर नाहलो रे, तो वाधे जशपूर ॥ महारा० ॥ जीत निशानना नादथी रे. नाठा डुशमन दूर ॥ महारा० ॥ ६ ॥ श्री सुमति सुगुरु पद सेवना रे, कल्प तरुनी छांहे ॥ महारा० ॥ रामप्रभु जिन वीरजी रे, छे अवलंबन बांहे ॥ महारा० ॥ ७ ॥ इति ॥ कलश ॥ एम भुवन भापण डुरित नाशन, विमल शासन जिनवरू ॥ भव भीति चूरण आशपूरण, सुमति कारण शंकरू ॥ में थुण्यो भगतें विविध जुगतें, नगर महीराणे रही ॥ श्रीसुमति विजय गुरु चरण सानिधि, रामविजय जयश्री लही ॥ १ ॥ इति पंमित श्री रामविजय कृत चोवीशी संपूर्ण ॥

॥ अथ पंमित श्री मोहनविजयजीकृत चोवीसजिनस्तवनं प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम ॥ श्रीऋषभजिन स्तवनं ॥

त्रीजे भव वरथानक तप करी ॥ ए देशी ॥ बालपणे आपण ससनेही, रमता नव नव वेशें ॥ आज तुमें पाम्या प्रभुताइ, अमें संसार निवेशें ॥ हो प्रभुजीओलंभमे मत खीजो ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ जो तुम ध्यातां शिव सुख लहीयें, तो तुमने केइ ध्यावे ॥ पण भव स्थिति परिपाक

थया विण, कोइ न मुगति जावे हो ॥ २ ॥ प्र० ॥ सिद्ध निवास लहे नवि सिद्धि, तेमां शो पाड तुमा रो॥ तो उपगार तुमारो वहिएं, अनव्य सिद्धने तारो हो ॥ ३ ॥ प्र० ॥ नाण रयण पामी एकंतें, थइ वेग मेवासी ॥ ते मांहेलो एक अंश जो आपो,ते वातें शा वासी हो ॥ ४ ॥ प्र० ॥ अक्षय पद देतां नवि जननें, संकीर्णता नवि थाय ॥ शिव पद देवा जो समरथ गे, तो जस लेतां शुं जाय हो ॥ ५ ॥ प्र० ॥ सेवा गुण रंज्यो नविजनने, जो तुमें करो वडनागी ॥ तो तुमें स्वामी केम कहावो, निरमम ने नीरागी हो ॥ ६ ॥ प्र० ॥ नाजिनंदन जनवंदन प्यारो, जग गुरु जग ज यकारी ॥ रूपविबुधनो मोहन पनणे, वृपन लंबन व लिहारी हो ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री रूषन जिन स्तवनं ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥ प्रथम तीर्थंकर सेवना,साहिबा उदित हृदय ससनें ह॥जिणंद मोरा हे ॥ प्रीत पुरातन सांजरे, साहिबा रोमांचित शुचिदेह ॥ जि० ॥१॥ आदिजिणंद जुहारीयें ॥ साहि वा रूषनजी०॥ ए आंकणी॥ अगम अलोकिक पंथडो, साहिबा कागल पण न लखाय ॥ जि० ॥ अंतरगत नी वातडी, साहिबा जण जणनें न कहाय ॥ जि० ॥ आदि० ॥ २ ॥ कोडि टकानी हो चाकरी, साहिबा पति विण न लहाय ॥ जि० ॥ मनडुंजी मलव महे, साहिबा किम करी मेलो थाय ॥ जि०

॥ ३ ॥ दूरथकां पण साजनां, साहिबा, सांभरे नव रंग रीत ॥जि०॥ पूरवपुण्यें पामियें, साहिबा परम पुरुषशुं प्रीत ॥ जि० ॥ आ० ॥ ४ ॥ मत मत नय नय कल्पना, साहिबा इतरेतर परिमाण ॥ जि० ॥ रूप अगोचर नवि लहे, साहिबा विवदे मांहि अयाण ॥ जि० ॥ आ० ॥ ५ ॥ सम दम शुद्ध स्वभावमां, साहिबा प्रभु तुम रूप अखंड ॥ जि० ॥ जगत वंदित संलीनता, साहिबा एहथी प्रगट प्रचंड ॥ जि० ॥ आ० ॥ ६ ॥ करुणा रस संजोगथी, साहिबा दीठो नवल दिदार ॥ जि० ॥ रूप विबुध कविराजनो, साहिबा मोहन जय जय कार ॥ जि० ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ कांबल रोपाणी लागणो ॥ ए देशी ॥

॥ ओलग अजित जिणंदनी, माहारे मन मानी ॥ मालती मधुकरनी परें, बनी प्रीत अछानी ॥ १ ॥ वारी हुं जित शत्रु सुत तणा, मुखडाने मटके ॥ ए आंकणी ॥ अवर कोइ जाचूं नही, विण सामी सुरंगा ॥ चातक जिम जलधर विना, नवि सेवे गंगा ॥ २ ॥ वा० ॥ ए गुण प्रभु केम वीसरे, सुणी अन्य प्रशंसा ॥ छीलर जल किणविध रति धरे, मान सरना हंसा ॥ ३ ॥ वा० ॥ शिव एक चंदकला थकी, लही ईश्वरताइ ॥ अनंत कलाधर में धर्यो, मुज अधिक पुण्याई ॥ ४ ॥ वा० ॥ तुं धन तुं मन तन तुंही, ससनेहा स्वामी ॥ मोहन कहे कवि

रूपनो, जिन अंतरजामी ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मोतिडानी देशी ॥

॥ अजित अजित जिन अंतर जामि, अरज करुं छुं प्रभु शिर नामि ॥ साहिबा सलनेही सुगुणनी, वा तडी कहुं केही ॥ आपण बालपणाना स्वदेशी,तो हवे किम थाओ छो विदेशी ॥ सा० ॥१॥ पुण्य अधिक तुमें हुआ जिणंदा, आदि अनादि अमें तो बंदा ॥ सा० ॥ जो प्रभु पाम्या छो प्रभुताइ, दास निवाजियें तो छे व डाइ॥सा०॥२॥ताहरे आज मणा छे शानी,तुंहिज ली लावंत तुं ज्ञानी ॥ सा० ॥ तुझविण अन्यने कां नथी ध्याता, तो जो तुं छे लोक विख्याता ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकने आदर एकने अनादर, इम किम घटे तुझने करु णाकर ॥ सा०॥ दक्षिण वाम नयन बिहुं सरखी, कुण ऊंछी कुण अधिकी परखी ॥सा० ॥४॥ सामता मुझथी न राखो स्वामी, शी सेवकमां देखो छो खामी ॥सा०॥ जे न लहे सनमान स्वामिनो, तो तेहने कहे सहुको कमिनो ॥ सा० ॥ ५ ॥ रूपातीत जो मुझथी थाशो, ध्याशुं रूप करी किहां जाशो ॥ सा० ॥ जडपरमाणु अरूपी कहीयें, महत संजोगेंशुं, रुपी न थइयें ॥ सा० ॥ ६ ॥ धन जो ऊलगे किमपि न देवे, जो दिन मणि कनकाचल सेवे ॥ सा० ॥ एहवुं जाणीहुं तुझने सेवुं, ताहरे हाथ छे फलनुं देवुं ॥ सा० ॥ ७ ॥ तुझ पय पंकज मुझ मन वलगुं, जाये किहां छंमीने आ

॥ ३ ॥ दूरथकां पण साजनां, साहिवा सांभरे नव रंग रीत ॥जि०॥ पूरवपुण्यें पामियें, साहिवा परम पुरुषशुं प्रीत ॥ जि० ॥ आ० ॥ ४ ॥ मत मत नय नय कल्पना, साहिवा इतरेतर परिमाण ॥ जि० ॥ रूप अगोचर नवि लहे, साहिवा विवदे मांहि अयाण ॥ जि० ॥ आ० ॥ ५ ॥ सम दम शुद्ध स्वभावमां, साहिवा प्रभु तुम रूप अखंम ॥ जि० ॥ जगत वंदित संलीनता, साहिवा एहथी प्रगट प्रचंम ॥ जि० ॥ आ० ॥ ६ ॥ करुणा रस संजोगथी, साहिबा दीठो नवल दिदार ॥ जि० ॥ रूप विबुध कविराजनो, साहिवा मोहन जय जय कार ॥ जि० ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ कांवल रोपाणी लागणो ॥ ए देशी ॥

॥ उलग अजित जिणंदनी, माहारे मन मानी ॥ मालती मधुकरनी परें, बनी प्रीत अछानी ॥ १ ॥ वारी हुं जित शत्रु सुत तणा, मुखडाने मटके ॥ ए आंकणी ॥ अवर कोइ जाचूं नही, विण सामी सुरंगा ॥ चातक जिम जलधर विना, नवि सेवे गंगा ॥ २ ॥ वा० ॥ ए गुण प्रभु केम वीसरे, सुणी अन्य प्रशंसा ॥ छीलर जल किणविध रति धरे, मान सरना हंसा ॥ ३ ॥ वा० ॥ शिव एक चंदकला थकी, लही ईश्वरताइ ॥ अनंत कलाधर में मुज अधिक पुण्याई ॥ ४ ॥ वा० ॥ तुं धन तन तुंही, ससनेहा स्वामी ॥ मोहन कां

रूपनो, जिन अंतरजामी ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मोतिडानी देशी ॥

॥ अजित अजित जिन अंतर जामि, अरज करुं हुं प्रभु शिर नामि ॥ साहिवा ससनेही सुगुणनी, वातडी कहुं केही ॥ आपण बालपणाना स्वदेशी, तो हवे किम थाउ ठो विदेशी ॥ सा० ॥१॥ पुण्य अधिक तुमें हुआ जिणंदा, आदि अनादि अमें तो बंदा ॥ सा० ॥ जो प्रभु पाम्या ठो प्रभुताइ, दास निवाजियें तो ठे वडाइ॥सा०॥२॥ताहरे आज मणा ठे शानी, तुं हिज लीलावंत तुं ज्ञानी ॥ सा० ॥ तुऊविण अन्यने कां नथी ध्याता, तो जो तुं ठे लोक विख्याता ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकने आदर एकने अनादर, इम किम घटे तुऊने करुणाकर ॥ सा०॥ दक्षिण वाम नयन बिहुं सरखी, कुण उंठी कुण अधिकी परखी ॥सा० ॥४॥ सामता मुऊथी न राखो स्वामी, शी सेवकमां देखो ठो खामी ॥सा०॥ जे न लहे सनमान स्वामिनो, तो तेहने कहे सहुको कमिनो ॥ सा० ॥ ५ ॥ रूपातीत जो मुऊथी थाशो, ध्याशुं रूप करी किहां जाशो ॥ सा० ॥ जडपरमाणु अरूपी कहीये, महत संजोगेंशु, रूपी न थइयें ॥ सा० ॥ ६ ॥ धन जो उंलगे किमपि न देवे, जो दिन मणि कनकाचल सेवे ॥ सा० ॥ एहवुं जाणीहुं तुऊने सेवुं, ताहरे हाथ ठे फलतुं देवुं ॥ सा० ॥ ७ ॥ तुऊ पय पंकज मुऊ मन लागुं, जाये किहां ठंमीने अ

लगुं ॥सा०॥ मधुकर मयगलमद पी राचे, पण शुं
मुखें लालच नवि माचे ॥ सा० ॥८॥ तारक बिरुद व
हावो छो मोहोटा, तो मुजथी किम थाओ छो खोटा।
सा० ॥ रूपविबुधनो मोहन नांखे, अनुभव रस आ
णंदशुं चाखे ॥ सा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ आधा आम पधारो पूज्य० ॥ ए देशी ॥

॥ समकितदाता समकित आपो, मन मागे थइ
धीठुं ॥ छति वस्तु देतां शुं शोचो, मीठुं जे सहुएं
दीठुं ॥ १ ॥ प्यारा प्राण थकी छो राज, संभव जिन
वर मुजने ॥ ए आंकणी ॥ इम जाणो जे आपें लहीएं,
ते लाधुं शुं लेवुं ॥ पण परमारथ प्रीछी आपे, तेहज
कहीयें देवुं ॥ प्या० ॥ २ ॥ अर्थी हुं तुं अर्थ सम
र्पक, इम मत करजो हांसुं ॥ प्रगट न हतुं तुमने
पण पहिलां, ए हांसानुं पासुं ॥ प्या० ॥ ३ ॥ परम
पुरुष तुमें प्रथम भजीने, पाम्या ए प्रभुताई, तिण
रूपें तुमने इम भजीयें, तिणें तुम हाथ वडाइ ॥
प्या० ॥ ४ ॥ तुमे स्वामी हुं सेवा कामी, मुजरे स्वामी
निवाजे, नहि तो हव मांमी मागतां, किणविध सेवक
लाजे ॥ प्या० ॥ ५ ॥ ज्योतें ज्योति मिले मत प्रीछो,
कुण लहेशे कुण भजशे ॥ साची भक्ति ते हंसतणी
परें, खीर नीरमय करशे ॥ प्या० ॥ ६ ॥ ओलग कीधी
जे लेखें आवी, चरण भेट प्रभु दीधी ॥ रूपविबुधिनो
मोहन पेभणे, रसना पावन कीधी ॥ प्या० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवनं ॥
॥ आहे लालनी देशी ॥

॥ अकल-कला अविरुद्ध, ध्यान धरे प्रतिबुद्ध ॥ आहे लाल, अभिनंदन जिन चंदना जी ॥ रोमांचित थइ देह, प्रगट्यो पूरण नेह ॥ आ० ॥ चंद ज्युं वन अरवंदना जी ॥ १ ॥ एको खिण मन रंग, परम पुरुषनो संग ॥ आ० ॥ प्राप्ति होवे तो पामीयें जी॥ सुगुण सलूणी गोठ, जिम साकर भरी पोठ ॥ आ० ॥ विण दामे विवसाइयें जी ॥ २ ॥ स्वामी गुण मणि तुझ, निवसे मनडे मुझ ॥ आ० ॥ पण कहियें ख टके नही जी ॥ जिम रज नयणे विलग्ग, नीर झरे निर वग्ग ॥ आ० ॥ पण प्रतिबिंब रहे सासही जी ॥ ३ ॥ में जाच्या केइ लक्ख, तारक भोले प्रत्यक्ख ॥आ०॥ पण को साच नाव्यो वगें जी ॥ मुझ बहु मैत्री देख, प्रभु मत मूको उवेख ॥ आ० ॥ आतुर जन बहु उलगे जी ॥ ४ ॥ जग जोतां जगनाथ, जिम तिम आव्या हाथ ॥ आ० ॥ पण रखे हवे कुमया करो जी ॥ बीजा स्वारथी देव, तुं परमारथ हेव ॥ आ० ॥ पा म्यो हवे हुं पटंतरो जी ॥ ५ ॥ तें तार्या केइ कोड, तो मुझथी शी होड ॥ आ० ॥ में एवडुं शुं अलेहणुं जी ॥ मुझ अरदास अनंत, भविनी छे भगवंत ॥ आ० ॥ जाणने शुं कहेवु घणुं जी ॥ ६ ॥ सेवाफल द्यो आज, भुलवो कां माहाराज ॥ आ० ॥ भूख न भांगे भामणे जी ॥ रूपविबुध सुपसाय, मोहन ए

जिनराय ॥ आ० ॥ नांखे मन उमहे घणे जी ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री सुमति जिन स्तवनं ॥

॥ वारी हुं उदयापुर तणे ॥ ए देशी ॥

॥ म्हारा प्रभुजीशुं बाधी प्रीतडी, ए तो जीवन ज गदाधार ॥ सनेही ॥ साचो ते साहिब सांभरे, खीण मांहे कोटिक वार ॥ सनेही ॥ १ ॥ वारी हुं सुमति जिणंदनी ॥ ए आंकणी ॥ प्रभु थोडाबोला ने गुण घणा, एतो काज अनंत करनार ॥ स० ॥ उलग जेहनी जेवडी, फल तेहवां तस देनार ॥ स० ॥ २ ॥ वा० ॥ प्रभु अति धीरो लाजें भर्यो, जिम सिं च्यो सुकृत घनसार ॥ स० ॥ एकज करुणालेहेरमां, सुनिवाजे करे निहाल ॥ स० ॥ ३ ॥ वा० ॥ प्रभुभव स्थिति पाकें भक्तने, प्रभु कहे थ्यो सुपसाय ॥ स० ॥ ऋतु विण कहो किम तरुवरें, फल पाकीने सुं दर थाय ॥ स० ॥ ४ ॥ वा० ॥ अति भूख्यो पण शुं करे, कांइ बेहु हाथे न जमाय ॥ स० ॥ दास त णी उतावले, प्रभु किणविध रीझयो जाय ॥ स० ॥ ॥ ५ ॥ वा० ॥ प्रभु लखित होय तो लाभीयें, मन मान्यो माहाराज ॥ स० ॥ फल तो सेवाथी संपजे, विण खणण न भांजे खाज ॥ स० ॥ ६ ॥ वा० ॥ प्रभु वीसार्या नवि वीसरो, साहामुं अधिक होवे छे नेह ॥ स० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो, मुझ वालो छे जिनवर एह ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमति जिन स्तवनं ॥
॥ घोडी तो आइ थारा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥
॥ पदमप्रभ तुम सेवना ॥ साहेबजी ॥ तेहज सम
कित बीज हो ॥ ससनेहा ॥ अरज सुणो एक मा
हरी ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ ए तो मेलो दोहिलो,
सा० ॥ जिम तेरशने त्रीज हो ॥ सा० ॥ १ ॥ अ० ॥
प्रभुविण अवर देवाथकी ॥ सा० ॥ किम मन पूगे
कोड हो ॥ स० ॥ उसलणे कणे किम हूवे, सा० ॥
मुक्ताफलनी होड हो ॥ स० ॥ २ ॥ अ० ॥ दूर
थकी पण सांभरो, सा० ॥ समयमें सो सो वार हो ॥
स० ॥ दर्शणीयानो उमाहलो, सा० ॥ पूरे तुं किर
तार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ अ० ॥ बंधाणुं मन भक्तिथी,
सा० ॥ ते अलगुं नवि थाय हो ॥ स० ॥ विमल
कमल मकरंद है, सा० ॥ तजी मधुकर किम जाय
हो ॥ स० ॥ ४ ॥ अ० ॥ प्रभु सुपसायथी पामीयें,
सा० ॥ ज्ञानसदन गुणगेह हो ॥ स० ॥ मोहन
कहे कवि रूपनो, सा० ॥ निर्वहेशो साचो नेह हो ॥
स० ॥ ५ ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ जिन स्तवनं ॥
॥ ढोला मारु घडी एक करहो झुकाव हो ॥ ए देशी ॥
॥ परमरस भीनो माहारो, निपुण नगीनो माहरो
साहेबो, प्रभु मोरा पदम प्रभ प्राणाधार हो ॥ ए
आंकणी ॥ ज्योति रमा आलिंगीने ॥ प्र० ॥ अठक
वस्यो दिन रात हो, उलग पण नवि सांभले ॥ प्र०॥

तो शी दरिसण वात हो ॥ १ ॥ प० ॥ नी० ॥ प्र० ॥ निरञ्जय पद पाम्या पछी ॥ प्र० ॥ जाणुं न होवे तेह हो ॥ तो नेह लागे आगले ॥ प्र० ॥ अलगा ते निसनेह हो ॥ २ ॥ प० ॥ नि० ॥प्र०॥ पद लेहतां तो लहुं विभु ॥ प्र० ॥ पण निज इव्य कहाय हो ॥ अमें सुइव्य सुगुण घणुं ॥ प्र० ॥ सहि तो तिणे सर माय हो ॥ ३ ॥ प० ॥नि०॥ प्र०॥तिहां रह्यां करुणा नयणथी ॥ प्र० ॥ जोतां शुं उंबुं थाय हो ॥ जिहां तिहां जीत लावण्यता ॥ प्र० ॥ दोहली दीपक न्याय हो ॥ ४ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ जो प्रभुता अमें पामता ॥ प्र० ॥ केहवुं निपट न पडे एम हो, जो देशो तो जाणुं अमें ॥ प्र० ॥ दरिसण दरिइता केम हो ॥ ५ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ हाथे तो नावि शको ॥प्र०॥ न करो कोइनो विश्वास हो ॥ पण भो लवीयें जो भक्तिथी ॥प्र०॥ कहेजो तो शाबास हो ॥ ॥ ६ ॥ प० ॥ नि० ॥प्र०॥ कमल लंछन कीधी मया ॥ प्र० ॥ गुनह करी बगसीस हो ॥ रूपविबुधना मो हन तणी ॥ प्र० ॥ पूरजो सकल जगीस हो ॥ ७ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुपास जिन स्तवनं ॥

॥ झीणा मारुजीनी करहलडी ॥ ए देशी ॥

॥ वाल्हामेह बपीयडा, अहिकुलनें मृगकुलने ति म वलि नादें वाह्या हो राज ॥ मधुकरने नवमल्लिका, तिम मुझने घणी वाल्ही सातमा जिननी सेवा हो

राज ॥ १ ॥ अन्य उछिक सुर छे घणा, पण मुज मनडुं तेहथी नावे एकण रागें हो राज ॥ राच्यो हुं रूपातीतथी, कारण मन मान्यानुं शुं कोइनुं इहां लागे हो राज ॥ २ ॥ मूलनी जक्तें रीजशे, नहि तो अव रनी रीतें क्यारे पण नवि खीजे हो राज ॥ उंल गडी मोंघी थशे, कंबल होवे जारी जिम जिम ज लथी जीजें हो राज ॥ ३ ॥ मनथी निवाजस नहि करे, जो कर ग्रहिने लीजें आवशे ते लेखें हो राज ॥ मोहोटाने कहेवुं किस्युं, पगदोडी अनुचरनी अंतर जामी देखे हो राज ॥ ४ ॥ एहथी शुं अधिकुं अछे, आवी मनडे वसीयो साहामो सुगुण सनेही हो रा ज ॥ जे वश आव्या आपणे, तेहने माग्युं देतां अ जर रहे कहो केही हो राज ॥५॥ अति परचे विरचे नही, नित नित नवलो नवलो प्रजुजी मुजथी जासे हो राज ॥ ए प्रजुता ए निपुणता, परम पुरुष जे जेहवा तेहवा किहांथी कोइ पासें हो राज ॥६॥ जीनो परम महारसें, माहारो नाथ नगीनो तेहनें कहो कुण निंदे हो राज ॥ समकित दृढता कारणें, रूपविबुधनो मोहनस्वामी सुपासने वदे हो राज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंड्प्रज जिन स्तवनं ॥

॥ नंदसलूणा नंदना रेलो ॥ ए देशी ॥

॥ श्री शंकरचंड् प्रजु रे लो, तुं ध्याता जगनो विजु रेलो ॥ तुं परब्रह्म तुं श्रीपति रे लो, तुं अविनाशी अ विगति रे लो ॥ १ ॥ समकित तत्त्व जगावीयो रे लो.

तिणे हुं उलगें आवियो रे लो ॥ तुमें पण मुजने म या करी रे लो, दीधी चरणनी चाकरी रे लो ॥ २ ॥ हुं सेवुं हरषें करी रे लो, ध्याउं तुमने दील धरी रे लो ॥ साहिब साहामुं नीहालजो रे लो, जव समुद्रथी तारजो रे लो ॥३॥ अगणित गुण गणवा तणी रे लो, मुज मन होंश धरे घणी रे लो ॥ जिम जलने पाम्या पंखी रे लो, दाखे बालक करथी लखी रे लो ॥ ४ ॥ जो जिन तुं छे पांशरो रे लो, करम तणो शो आशरो रे लो ॥ जो तुमें राखशो गोदमां रे लो, तो किम जाशुं निगोदमां रे लो ॥ ५ ॥ जव ताहरी करुणा थइ रे लो, कुमति कुगति दूरें गइ रे लो ॥ अध्यातम रवि उगीयो रेलो, पाप तिमिर किहां पूगीयो रे लो ॥ ॥६॥ तुज मूरति माया जिसी रे लो, उर्वशी थइ उयरें वसी रे लो ॥ शुं जिनवाहल बांहडी रे लो, रखे प्रजु टालो एक घडी रे लो ॥ ७ ॥ ताहरी जक्ति जली वनी रे लो, जिम औषधि संजीविनी रे लो ॥ तन मन आणंद उपनो रे लो, कहे मोहन कवि रूपनो रे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुविधि जिनस्तवनं ॥

॥ मोतीडानी देशी ॥

॥अरज सुणो एक सुविधि जिणेसर, परम कृपानिधि तुमें परमेसर ॥ साहिबा सुग्यानी जोवो तो, वात छे मान्यानी ॥ ए आंकणी ॥ कहेवाउ पंचम चरणना धारी, किम आदरी अश्वनी असवारी ॥ सा० ॥ १ ॥

ठो त्यागी शिव-वास वसो-ठो, दृढरथसुत रथें-केम वेसो ठो ॥ सा० ॥ आंगी प्रमुख परिग्रहमां जो पडशो, हरिहरादिकने किण विध नडशो ॥ २ ॥ सा० ॥ धुरथी सकल संसार निवास्यो, किम फरि देवद्र्व्यादिक धास्यो ॥ सा० ॥ तजी संयमनें थाशो गृहवासी, कुण आशातना तजशे चोराशी ॥सा०॥३॥ समकित मिथ्यामतिमें निरंतर, इम किम नांजशे प्र जुजी अंतर ॥ सा० ॥ लोक तो देखशे तेहवुं कहेशे, इम जिनता तुम किण विध रहेशे ॥ सा० ॥ ४ ॥ पण हवे शास्त्रगतें मति पोहोंची, तेहथी जोयुं में उंकुं आलोची ॥ सा० ॥ इम कीधे तुम प्रज्ञुताइ न घटे, साहामो इम अनुजव गुण प्रगटे ॥ सा० ॥ ५ ॥ हयगय यद्यपि तुं आरोपाए, तोपण सिद्धपणुं न लो पाए ॥ सा० ॥ जिम मुकुटादिक जूपण कहेवाए, प ण कंचननी कंचनता न जाए ॥ सा० ॥ ६ ॥ जक्त नी करणीयें दोप न तुमने, अघटित केहवुं अजुक्त ते अमने ॥ सा० ॥ लोपाए नहि तुं कोईथी स्वामी, मो हनविजय कहे शिर नामी ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शितलजिन स्तवनं ॥

॥ घोडी तो आइ थारा देशमां मारूजी ॥ ए देशी॥

॥ शीतल जिनवर सेवना साहेबजी, शीतल जिम शशिबिंब हो ॥ससनेही॥ मूरत माहरे मन वसी ॥ सा०॥ शा पुरुषांशुं गोवडी ॥सा०॥ मोहोटो ते आला लूंब हो ॥स०॥१॥ क्षण एक मुजने न वीसरे ॥ सा० ॥

तुज गुण परम अनंत हो ॥स०॥ देव अवरने शुं करुं ॥सा०॥ भेट थइ जगवंत हो ॥स०॥२॥ तुमें बो मुकुट त्रिहुं लोकना ॥ सा० ॥ हुं तुम पगनी खेह हो॥स०॥ तुमें बो सघन ऋतु मेहूला ॥सा०॥ हुं पश्चिमदिशि त्रे ह हो ॥ स० ॥ ३ ॥ नीरागी प्रजु रीऊवुं ॥ सा० ॥ ते गुण नहि मुजमांहि हो ॥ स० ॥ गुरु गुरुता सा हासुं जूउ ॥ सा० ॥ गुरुता ते मूके नांहि हो ॥सु०॥ ४ ॥ मोहोटासेंती बरोबरी ॥ सा० ॥ सेवकें किणविध थाय हो ॥ स० ॥ आसंगो किम कीजियें ॥ सा० ॥ जिहां रह्या आशुंनाय हो ॥ स० ॥ ५ ॥ जगगुरु क रुणा कीजियें ॥ सा० ॥ न लहो आचार विचार हो ॥ स० ॥ मुजनें जो राज निवाजशो ॥ सा० ॥ तो कुण वारणहार हो ॥ स० ॥६॥ उलग अनुनव जाव थी ॥ सा० ॥ जाणो जाण सुजाण हो ॥ स० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो ॥ सा० ॥ जिनजी जीवन प्राण हो ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिनस्तवनं ॥

॥ कंकण मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥श्रेयांस जिन सुणो साहिबा रे,जिनजी दास तणी अरदास ॥ दिलडे वसी रह्यो ॥ दूर रह्यां जाणुं नहि रे, प्रजु तुं माहरे पास ॥ दि० ॥ १ ॥ हांरे मृगने ज्युं म धुर आलाप ॥ दि० ॥ मोरनें पिछकलाप ॥ दि०॥ दूर रह्या जाणुं नही रे, प्रजु तुं माहरे पास ॥ दि० ॥ जल थलमहियल जोवतां रे ॥ जि०॥ चिंतामणि चढयो

हाय ॥ दि० ॥ उंछप शी हवे माहरे रे ॥जि०॥ निर
ख्यो नयणें नाथ ॥ दि० ॥ २ ॥ चरणे तेहने विलं
बीयें रे ॥ जि० ॥ जेहथी सीजे काम ॥ दि० ॥ फो
कट शुं फेरो तिहां रे ॥ जि० ॥ पूछे नहि पण नाम
॥ दि० ॥ ३ ॥ कूडो कलियुग छोडिने रे ॥ जि० ॥ आ
प रह्या एकंत ॥ दि० ॥ आपोपुं राखे घणा रे ॥
जि० ॥ पर राखे ते संत ॥ दि० ॥ ४ ॥ देव घणा
में देखिया रे ॥ जि० ॥ आमंबर पटराय ॥ दि० ॥
निगय नहि पण लोडथी रे ॥ जि० ॥ आघा पसा
रे पाय ॥ दि०॥५॥ सेवकने जो निवाजीयें रे ॥ जि०
॥ तो तिहां शानें जाय ॥ दि० ॥ निपट नीरागी हो
वतां रे ॥ जि० ॥ स्वामिपणुं किम थाय ॥ दि० ॥
६ ॥ मेंतो तुजने आदस्यो रें ॥ जि०॥ नावें तुं जाण
म जाण ॥ दि० ॥ रूपविजय कविरायनो रे ॥ जि०॥
मोहनवचन प्रमाण ॥ दि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ चूनडी तो नीजे हो साहिबाजी प्रेमनी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजीशुं लागी हो पूरण प्रीतडी, जीवन प्रा
ण आधार ॥ गिरुआ जिनजी हो राज, साहिब सुण
जो हो माहरी वीनति ॥ दरिसण देजो हो दिन नरी,
श्यामजी अहो जगगुरु शिरदार ॥ १ ॥ सा० ॥ चा
हीने दीजे हो चरणोनी चाकरी, द्यो अनुनव अम
साज ॥ गि० ॥ इम नवि कीजें हो साहिबाजी सां
नलो, कांइ सेवकने शिवराज ॥ २ ॥ गि० ॥ चूपणुं

छाना हो साहिबा न बेसीयें, कांइ शोभा न लहेशो कोय ॥ गि० ॥ दास उद्धारो हो साहिबाजी आपणो, ज्युं होवे सुजस सवाय ॥ गि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ अरुण जो उगे हो साहिबाजी अंबरें, नासे तिमर अंधार ॥ गि० ॥ अवरदेव हो साहिबाजी किंकरा, मिलियो तुं देव मुनें सार ॥ गि० ॥ ४ ॥सा०॥ अवर न चाहुं हो साहिबाजी तुम छते, जिम चातक जलधार ॥ गि० ॥ खटपद भीनो हो साहिबाजी प्रेमशुं, तिम तुं हृदय मझार ॥ गि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ सात राजने हो साहिबाजी अंतें जइ वस्या, शुं कहियें तुम प्रीत ॥ गि० ॥ निपट नीरागी हो जिनवर तुं सही, ए तुम खोटी रीति ॥ गि० ॥ ६ ॥ सा० ॥ दिलनी जे वातां हो किणने दाखवुं, श्री वासुपूज्य जिनराय ॥ गि० ॥ खीण एक आवि हो पंभेंजी सांभलो, कांइ मोहन आवेजी दाय ॥ गि० ॥ ७ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमल जिन स्तवनं ॥

॥ ते तरीया भाइ ते तरीया ॥ ए देशी ॥

॥ विमलजिणंद सुग्यान विनोदी, मुख छबिशशी अविहेलें जी ॥ सुरवर निरखी रूप अनुपम, हजीय निमेष न मेले जी ॥वि०॥१॥ विष्णु वराह थइ धर वसुधा, एहवुं कोइक केहे छे जी ॥ तो वराह लंछन मिशें प्रभुने,चरणे शरण रहे छे जी ॥२॥वि०॥ लीला अकल ललित पुरुषोत्तम, सिद्ध वधू रसभीनो जी ॥ वेधक स्वामीथी मलवुं सोहिलूं, जे कोइ टाले कीनो जी ॥

॥ ३ ॥ वि० ॥ प्रसन्न थइ जगनाथ पधास्या, मन मं दिर मुऊ सुथस्यो जी ॥ हुं नटनवल विविध गति,जाणुं, खिण एक तो ल्यो मुजरो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥ चोरा शी लख वेश हुं आणुं, कर्म प्रतीत प्रमाणे जी ॥ जो अनुनव दान गमे तो, ना रुचे तो कहो मआणे जी ॥ ५ ॥ वि० ॥ जे प्रनुनक्तिविमुख नर जगमें, ते च्रम नूल्यो नटके जी ॥ संगत तेह न विगत लहीयें, पूजादिकथी जे चटके जी ॥ ६ ॥ वि० ॥ कीजें प्रसाद उचित ठकुराइ, स्वामी अखय खजानो जी ॥ रूपवि बुधनो मोहन पनणे, सेवक विनति मानोजी ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथजिनस्तवनं ॥

✓॥ वीर सुणो मोरी वीनति ॥ ए देशी ॥

॥अनंत जिणंदशुं वीनति,में तो कीधी हो त्रिकरण थी आज के ॥ मिलता निज साहेबनणी, कुण आणे हो मूरख मन लाज के ॥१॥ अ० ॥ मुखपंकजमनम धुकरु. रह्यो लुब्धि हो गुणग्याने लीण के ॥ हरि हर आवल फूल ज्यों, ते देख्यां हो किम चित्त होवे प्रीण के ॥ २ ॥ अ० ॥ नव फरीयो दरीयो तस्यो, पण कोइ हो अणुसरीयो न द्वीप के ॥ हवे मन प्रवहण माहरुं, तुम पद नेटें हो में राख्युं ठीप के ॥ ३ ॥ अ० ॥ अं तरजामी मिले थके, फले माहरुं हो सहि करीने नाग के ॥ हवे वाही जावा तणी, नथी प्रनुजी हो कोइ इहां लाग के ॥ ४ ॥ अ०॥ पालव ग्रही रढ लेयशुं, नही मे लो हो ज्यारे तुमे मीट के ॥ आतम अवरे जो थई, किम

उवटे हो करारी ढीट के ॥ ५ ॥ आ० ॥ नायक न जरें निवाजीयें, हवे लाजीयें हो करता रस लूंट के ॥ अध्यातम पद आपतां, कांइ नही पडे हो खजाने खूट के ॥ ६ ॥ अ० ॥ जिम तुमें तस्या तिम तारजो, शुं वेसे हो तुमने कांइ दाम के ॥ नही तारो जो मुजने, तो किम तुम हो तारक कहेशो नाम के ॥ ७ ॥ अ०॥ हुं तो जिन रूपस्थथी, रहुं होइ श्हां हो अहोनिश अनुकूल के ॥ चरण तजी जश्यें किहां, छे माहारी हो वातडलीनुं मूल के ॥ ८ ॥ अ० ॥ अष्टापद पदमा करें, अन्य तीरथ हो जाशे जिम हेड के ॥ मोहन कहे कवि रूपनो, विण उपशम हो नवि मूकुं केड के ॥ ॥ ए ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥

॥ अनंत जिणंद अवधारीयें, सेवकनी अरदास ॥ जिनजी ॥ अनंत अनंत गुण तुम तणा, सांजरे सा सो सास ॥ जि० ॥ १ ॥ सुरमणिसम तुम सेवना, पामी में पुण्य पमूर ॥ जि०॥ किम प्रमाद तणे वशें, मूकुं अधखिण दूर ॥ जि० ॥ २ ॥ जगति जुगति म नमें वस्यो, मनरंजन महाराज ॥ जि० ॥ सेवकनी तुमने अछे, वांह ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ३ ॥ मुह मीग धीग हीये, तेहवो नहि हूं दास ॥ जि०॥ साचो सेवक संजवी, कीजें ज्ञान प्रकाश ॥ जि० ॥ ४ ॥

जाणने शुं कहेवुं घणुं, एक वचनमें लाख ॥ जि० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो, नक्ति मधुर जिम द्राख ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति अनंतनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अनंतजिन स्तवन प्रारंनः ॥

॥ वालम वेहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतडी अनंत जिनराजनी, दर्शन नावथी नावे रे ॥ पयडी बंधादि स्वनावथी, अनुनव परम रस आवे रे ॥ प्री० ॥ १ ॥ स्मृतिव्यतिरिक्त आस्वादमां, प्रगट चिद्रूप अतिरुद्ध रे ॥ सांख्य बोधादि संबोधथी, निन्न प्रनुरूप अतिशुद्ध रे ॥ प्री० ॥ २ ॥ विमुख सोपाधि अन्यासथी, संमुख अनुपाधि अनुयोग रे ॥ लीनता साध्य ठे सहजथी, नावव परिपाक अनिनोग रे ॥ प्री० ॥ ३ ॥ सिद्धसंस्कार संसारमें, अनिमत ए किस्यो ख्याल रे ॥ निन्न अनिन्न विहुं किम घटे, केहेनो सेंथो केहेनी टाल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ नव्य ताखा प्रनुने घणुं, हुं नवि सद्दहुं वाच रे ॥ तारे जो मुऊ तृपातीतने, तारक बिरुद तो साच रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ दान अथ हरण हिंसा दया, जोगके नोग अनिराम रे ॥ इम किम तुमने संनवे, कीजियें जेम ते काम रे ॥ प्री० ॥ ६ ॥ अनंत पयथी उपपत्तिनो, असंख्य ठे आत्मप्रदेश रे ॥ तेह रे स्वामीने संनव्यो, जाणवुं एह विशेष रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ चतुरप्रतें तुज पद क्रिया, हुती होये बंध निबंध रे ॥ प्रकृति ध्रुवबंध लहे वक्रता, होय वली अनुगमखंध रे ॥ प्री० ॥ ८ ॥ सप्तनय

चारुनिरीक्षणें, उलख्यो परम जिनराज रे ॥ मोहन कहे कविरूपनो, सफल हुवां आज सवि काज रे ॥ प्री० ॥ ए ॥ इति अनंत जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री धर्म जिन स्तवनं ॥

॥ हांरे मारे जोवनीयांनो लटको दहाडा चार जो ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे मारे धर्मजिणंदशुं लागी पूरण प्रीत जो,जी वडलो ललचाणो जिनजीनी उलगें रेलो ॥ हांरे मुने थाशे कोइक समय प्रभुजी प्रसन्न जो, वातडली तव माहारी सवि थाशे वगें रे लो ॥ १ ॥ हांरे कोइ दुरिजननो भंभेर्यो माहारो नाथ जो, उलवशे नही क्यारें कीधी चाकरी रे लो॥हांरे माहारा स्वामी सरिखो कुण छे दुनीयांमांहि जो, जइयें रे जिम तेहने घर आशा करी रे लो ॥२॥ हांरे जस सेवासेंती स्वारथ न होवे सिद्ध जो, गली रे शी करवी तेहथी गोठडी रें लो ॥ हांरे कोइ जूठुं खाये ते मीठाइने माट जो, कोइ रे परमारथविण नही प्रीतडी रेलो ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु अंतरजामी जीवन प्राण आधार जो, वाह्यो रे न वि जाणे कलियुग वायरो रे लो ॥ हांरे माहारा लायक नायक जगत वत्सल जगवान जो, वारु रे गुणकेरो साहिब सायरो रे लो ॥ ४ ॥ हांरे प्रभु लागी मुजने ताहरी माया जोर जो, अलगारे रह्याथी होय उ सिंगलो रे लो ॥ हांरे कुण जाणे अंतरगतनी विण महाराज जो, हेजें रे हसी बोलो छांमी आमलो

रे लो ॥५॥ हांरे तहारे मुखनें मटके अटक्यु माहारुं मन्न जो, आंखडली अणीयाली कामणगारीयुं रे लो ॥ हांरे मारे नयणां लंपट जोवे खिण खिण तुझ जो, रातां रे प्रभुरूपें न रहे वारियुं रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा तो पण जाणजो करीनें हजूर जो, ताहारी रे बलिहारी हुं जाउं वारणे रे लो ॥ हांरे कवि रूप विबुधनो मोहन करे अरदास जो, गिरुआथी मन आणी उलट अति घणे रे लो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ इण सरवरीयारी पा० ॥ ए देशी ॥

शोलमा श्री जिनराज, उलग सुणो अम तणी ॥ ललना ॥ जगतथी एवडी केम, करो गो जोलामणी ॥ल०॥ चरणे विलग्यो जेह, आवीने थइ खरो ॥ ल० ॥ निपट तेहथी कोण, राखे रस अंतरो ॥ ल० ॥ १ ॥ में तुझ कारण स्वामी, उवेख्या सुर घणा ॥ ल० ॥ माहरी दिशाथी में तो, न राखी कांइ मणा ॥ ल० ॥ तो तुमें मुझथी केम, अपूठा थइ रहो ॥ ल०॥ चूक होवे जो कोय,सुखें मुखथी कहो ॥ल०॥२॥ तुझथी अवर न कोय, अधिक जगतीतलें ॥ ल० ॥ जेहथी चित्तनी वृत्ति, एकांगी जइ मले ॥ ल० ॥ दीजें दरिसन वार, घणी न लगावीएं ॥ ल० ॥ वातडली अति मीठीयें, किम विरमावीएं ॥ ल० ॥ ३ ॥ तुं जो जल तो हुं कमल, कमल तो हुं वासना ॥ ल० ॥ वासना तो हुं जमर, न मूकुं आसना ॥ ल० ॥ तुं गो

डे पण हुं केम, गोडीश तुझ जणी ॥ ल० ॥ लोको त्तर कोइ प्रीति, आवी तुझथी वनी ॥ ल०॥४॥ धुर थी ज्ञाने समकित, देइने जोलव्यो ॥ ल०॥ हवे किम जाउं खोटे, दिलासे उलव्यो ॥ ल० ॥ जाणी खा सो दास, विमासो गो किस्युं ॥ ल० ॥ अमें पण खिजमतमांहि, के खोटा किम थस्युं ॥ ल० ॥ ५ ॥ वीजी खोटी वातें, अमें राचुं नही ॥ ल० ॥ में तुम आगल माहरा, मनवाली कही ॥ ल०॥ राखो पूरण प्रीति, विमासो शुं तमें ॥ ल०॥ अवसर लही एकांत, विनवीएं छे अमें ॥ ल० ॥ ६ ॥ अंतरजामी स्वामी, अचिरानंदना ॥ ल० ॥ शांतिकरण श्रीशांतिजी, मा नजो वंदना ॥ ल० ॥ तुझ स्तवनाथी तन मन, आ णंद उपन्यो ॥ ल०॥ कहे मोहनमनरंग, सुपंमितरूप नो ॥ ल० ॥ ७ ॥ इति शांतिजिनस्तवनं ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ नंदसलूणा नंदनारे लो ॥ ए देशी ॥

॥ शांतिजिणंद सोहामणा रे जोजो, शोलमा श्री जिनराय ॥ मोरा साहिवा रे ॥ ठकुराइ त्रिहुलोकनी रे जोजो, सेवे सुरनर पाय ॥ १ ॥ मो० ॥ शां० ॥ मुख शारदको चंदलो रे जोजो, हसत ललित निश दीस ॥ मो० ॥ आंखडी अमीय कचोलडी रे जोजो, पूरवो सकल जगीश ॥ मो० ॥ २ ॥ शां० ॥ आंगी अनुपम हेमनी रे जोजो, झगमग विविध जडाव ॥ मो०॥ देखी मूरति सुंदरु रे जोजो, लजे अनिमिपता

नाव ॥ मो० ॥ ३ ॥ शां० ॥ छत्रत्रयशिर शोनतां रे जोजो, महिमानो अवतंस ॥ मो०॥ अजूआल्युं तीरथ आपणुं रे जोजो, विश्वसेननृपनो वंश ॥ मो० ॥ ॥ ४ ॥ शां० ॥ अकलकला जिनजी तणी रे जोजो, मनोहररूप अमीत ॥ मो० ॥ शांतलपुरवर शोनतुं रे जोजो, नगविन्तवत्सल नगवंत ॥ मो०॥५॥ शां० ॥ केवलनाण दीवाकरु रे जोजो, समकित गुणनंमार ॥ मो० ॥ पारेवुं ते उगारीयुं रे जोजो, एम अनेक उपगार ॥ मो० ॥ ६ ॥ शां० ॥ हूं बलिहारी ताहरी रे जोजो, जिन तुमें देवाधिदेव ॥ मो० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो रे जोजो, नवोनव देजो सेव ॥ मो० ॥ ॥ ७ ॥ शां० ॥ इति शांति जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ राग सारंग ॥ शांतिजिणंद महाराज ॥ जगत गुरु शांतिजिणंद महाराज ॥ अचिरानंदन नवि मन रंजन, गुणनिधि गरीब निवाज ॥ ज० ॥ १ ॥ गर्ने थकी जिणे ईति निवारी, हर्षित सुरनर कोडी ॥ जनम थये चोशठ इंद्रादिक, पद प्रणमे कर जोडी ॥ ज० ॥ २ ॥ मृगलंछन नविकनुपगंजन, कंचन वान शरीर ॥ पंचमनाणी पंचम चक्री, सोलशमो जिन धीर ॥ ज० ॥ ३ ॥ रत्नजडित नूपण अति सुंदर, आंगी अंग उदार ॥ अति उछरग नगतिनौतन गति, उपशमरस दातार ॥ ज० ॥ ४ ॥ करुणा निधि नगवान कृपाकर, अनुनव उदित आवास ॥ रूपविबु

धनो मोहन पभणे, दीजें ज्ञान विलास ॥ ज० ॥ ५॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ चंदनरी कटकी भली ॥ ए देशी ॥

॥ कुंथुजिणंद करुणा करो, जाणी पोतानो दास ॥ साहिबा मोरा ॥ शुं जाणी अलगा रह्या, जाणुं कोइ आवशे पास ॥ सा०॥ १ ॥ अजब रंगीला प्यारा, अकल अलक्ष न्यारा, परम ससनेही माहारी विनती ॥ ए आंकणी ॥ अंतरजामी वाहाला, जोवो मीट मिलाय ॥ सा०॥ खिण मदसो खिणमां हसो, इम प्रीत निवाहो किम थाय ॥ सा० ॥ २ ॥ प० ॥ रूपी हुवो तो पालव ग्रहूं, अरूपीनें शुं कहेवाय ॥ सा० ॥ कान मांड्या विना वारता, कहोने जी केम बकाय ॥ सा०॥ ॥ ३ ॥ प० ॥ देव घणा डुनीयामां अछें, पण दिल मेलो नवि थाय ॥ सा० ॥ जिण गामें जावुं नही, ते वाट कहो शुं पूछाय ॥ सा० ॥ ४ ॥ प० ॥ मुज मन अंतर मुहूर्त्तनो, में ग्रह्यो चपलता दाव ॥सा०॥ प्रीतिसमे तो जुड कहो, ए शो स्वामी स्वभाव ॥ सा० ॥ ५ ॥ प० ॥ अंतरसोमलीधां पछें, नवि मलीयें प्रभु मूल ॥ सा० ॥ कुमया किम करवी घटे, जे थयो निज अनुकूल ॥ सा० ॥ ६ ॥ प० ॥ जागी हवे अनुभवदिशा, लागी प्रभुशुं प्रीति ॥ सा० ॥ रूपविजय कविरायनो, कहे मोहन रस रीति ॥ सा० ॥ ॥ ७ ॥ प० ॥ इति श्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ जादवपति तोरण आव्या ॥ ए देशी ॥

॥ मुफ अरज सुणो मुफ प्यारा, साची जगतिथी किम रह्यो न्यारा रे ॥ सनेही मोरा ॥ कुंथुजिणंद करो करुणा ॥ १ ॥ हुं तो तुम दरिसणनो अर्थी, घटे किम करी शके करथी रे ॥ स० ॥ थइ गिरुआ एम जे विमासो, तेतो मुफने होये छे तमासो रे ॥ स० ॥ ॥ २ ॥ ललचाविनें जे कीजें, किम दासने चित्त पतीजें रे ॥ स० ॥ पद मोहोटे कहावो मोहोटा, जिणतिण वातें न हुउ खोटा रें ॥ स० ॥ ३ ॥ मुफ नाव महेलमें आवो, उपशमरस प्यालो चखावो रे ॥ स० ॥ सेवकनुं तो मन रीफे, जो सेवक कारज सीफे रे ॥ स० ॥ ४ ॥ मनमेलु थई मन मेलो, ग्रहे आवी मग अवहेलो रें ॥ स० ॥ तुमें जाणो छो ए करुं लीला, पण अर्थी सर्दहे करी शिला रे ॥ स० ॥ ५ ॥ प्रजुचरण सरोरुह लेहवुं, फल प्रापति लेहएं लेवुं रे ॥ स० ॥ कवि रूपविबुध जयकारी, कहे मोहन जिन-वलिहारी ॥ स० ॥ ६ ॥ इति कुंथुजिन० ॥

॥ अथ श्री अरनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ नटीयाणीनी देशी ॥

॥ अरनाथ अविनाशी हो, सुविलासी खासी चाकरी ॥ कांइ चाहूं अमें निशदीस ॥ अंतरायने रागे हो अनुरागें किणपरें कीजीयें ॥ कांइ शुनजावें सुजगीश ॥ १ ॥ अ० ॥ सिद्ध स्वरूपी स्वामी हो, गुण

धामी अलख अगोचरु ॥ कांइ दीग विण दीदार ॥
केम पतीजें कीजें हो किम लीजें फल सेवा तणुं ॥
कांइ दीसे न प्राण आधार ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्ञानवि
नाकूं पेखे हो संखेपें सूत्रें सांजल्यो ॥ कांइ अथवा
प्रतिमारूप ॥ सांगें जो संपेखुं हो प्रजु देखुं दिलजर
लोयणें, कांइ तो मन मळूचे चूप ॥ ३ ॥ अ० ॥
जगनायक जिनराया हो मन जाया मुऊ आवी म
ल्या, कांइ महेर करी महाराज, सेवक तो ससनेही
हो निसनेही प्रजु किम कीजियें ॥ कांइ इसडोइ वहीयें
रे लाज ॥ ४ ॥ अ० ॥ जक्तिगुणें जरमावी हो सम
जावी प्रजुजीनें जोलवी, कांइ राखुं हृदयमऊार ॥
तो कहेजो शाबासी हो प्रजु जासी जाणी सेवना,
कांइ ए अमचो एक तार ॥ ५ ॥ अ० ॥ पाणी नी
रने मेले हो किण खेले एकंत होइ रहूं, कांइ नहिरे
मीलणनो जोग ॥ जो प्रजु देखुं नयणें हो कहि व
यण समजावुं सहि, कांइ ते न मिले संजोग ॥ ६ ॥
अ० ॥ मनमेलु किम रीऊ हो शुं कीजें अंतर एव
डो, कांइ निपट निहेजा नाथ ॥ सात राजने अंतें हो
किण पाखे ते आवीनें मिलुं, कांइ विकट तुमारो जी
साथ ॥ ७ ॥ अ० ॥ उलग ए अनुजवनी हो मुऊ
मननी वातां सांजली, कांइ कीजें आज निवाज ॥
रूपविबुधनो मोहन हो मनमोहन सांजल वीनति,
कांइ दीजें शिवपुरराज ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथस्तवनं ॥

॥ थारा मोहोला ऊपर मेह० ॥ ए देशी ॥

॥ सुणी सुगुरु उपदेश, ध्यायो दिलमें धरी ॥ हो लाल ॥ ध्या०॥ कीधी जगति अनंत, चवि चवि चातुरी ॥ हो लाल ॥ च० ॥ सेव्यो विशवावीश, उलट धरी उलग्यो ॥ हो लाल ॥ उ० ॥ दीठो नवि दीदार, कान कीणही लग्यो ॥ हो लाल ॥ का०॥ १ ॥ परमेसरशुं प्रीत, कहो किम कीजीयें ॥ हो लाल ॥ क० ॥ निमिष न मेले मीट, दोष किण दीजीयें ॥ हो लाल ॥ दो०॥ कोण करी तकसीर, सेवामां साहिबा ॥ हो लाल ॥ से०॥ कीजें न ठोकरवाद, जगत जरमायवा ॥ हो लाल ॥ ज० ॥ २ ॥ जाण्युं तमारुं जाण, पुरुष ना पारिखुं ॥ हो लाल ॥पु०॥ सुगुण नीगुणनो न्याय, करो शुं सारिखुं ॥ हो लाल ॥ क० ॥ दीधो दीलासो दीन, दयाल कहावशो ॥ हो लाल ॥ द० ॥ करुणारस जंमार, बिरुद किम पावशो ॥ हो० ॥ बि० ॥ ३ ॥ शुं निवस्या तुमें सिद्ध, सेवकने अवगुणी ॥ हो० ॥ से० ॥ राखो अविहड प्रीति, जावा यो जोलामणी ॥ हो०॥ जा०॥ जो कोइ राखे राग, नीराग न राखीएं ॥ हो०॥ नी० ॥ गुण अवगुणनी वात, कही प्रजु जांखीएं ॥ हो० ॥ क० ॥ ४ ॥ अमचा दोष हजार, तिके मत जालजो ॥ हो० ॥ ति० ॥ तुमें ठो चतुर सुजाण, प्रीति गुण पालजो ॥ हो० ॥ प्री० ॥ मल्लिनाथ महाराज, म राखो आंतरो ॥ हो०॥

ते कांइ राखो गो रोप ॥ मह्यारे तो हशे तुमचुं हो, नणदीरा वीरा अलेहणुं, तो केह्ने दाखुं दोप ॥रा०॥ ॥ ६ ॥ तांत त्रूट्यानी परें हो, नणदीरा वीरा जोडीयें, कतुआरीनी जेम ॥ गेलाजें नहि पाये हो, नणदीरा वीरा वलगतां, कांइ नेह न चाले एम ॥ रा० ॥ ७ ॥ इम कहेती व्रत लेती हो, नणदीरा वीरा जइ चढी, कांइ शिवमहोले कीयो वास ॥ धन धन ते जग मांहे. हो, नणदीरा वीरा प्रीतडी, कांइ मोहन कहे शाबास ॥ रा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवनं ॥

॥ कानुडो वीण वजावे रे, कालिंदीने कांठे ॥ ए देशी ॥

॥ वामानंदन हो प्राणथकी गो प्यारा, नांही कीजें हो नयणथकी पण न्यारा ॥ए आंकणी॥ पुरिसा दाणी शामल वरणो, शुद्धसमकितनें जासे ॥ शुद्धपुंज जिणें कीधो तेह्ने, उज्ज्वलवरण प्रकासे ॥ १ ॥ वा०॥ तुमचरणे विषधर पण निरविष, दंसणे थाए वीडो ॥ तो अम शुद्ध स्वनाव न हूवे, ए अमें ग्रह्यो निवीडो ॥ २ ॥ वा० ॥ कमठ राय मद किण गणतीमां, मोह तणा मद जोतां ॥ तांहरी शक्ति अनंती आगल, केई तरि गया गोता ॥ ३ ॥ वा०॥ तें जिम तार्या तिम कुण तारे, कुण तारक कहूं एहवो ॥ सायरमान ते सायर सरिखुं, तिम तुं पण तुं जेह्वो ॥ ४ ॥ वा०॥ किमपि न वेसे करुणा करते, पण मुफ प्राप्ति अनंती॥ जेम पडे कण कुंजर मुखथी, कीडी बहु धनवती

॥ ५ ॥ वा० ॥ एक आवे एक मोजां पावे, एक करे ऊलगडी ॥ निजगुण अनुनव देवा आगल, पडखे नही तुं बे घडी ॥ ६ ॥ वा० ॥ जेहवी तुमथी माह री माया, तेहवी तुमें पण धरजो ॥ मोहन कहे क विरूपविबुधनो, परतक्ष करुणा करजो ॥ ७ ॥वा०॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामिस्तवनं ॥

॥ पठेवडानी देशी ॥

॥ डुर्लन नव लही दोहिलो रे,कहो तरीयें केण उ पाय रे॥प्रनुजी ने वीनवुं रे ॥ ए आंकणी॥ समकित साचुं साचवुं रे, ते करणी किम थाय रे ॥ प्र० ॥१॥ अशुनमोह जो मेटीयें रे, कांइ शुनप्रनुकने जाय रे ॥प्र०॥ नीरागें प्रनु ध्याइयें रे, कांइ तो पण रागें क हाय रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ नाम ध्याता जो ध्याइयें रे, कांइ प्रेम विना नवि तान रे ॥ प्र०॥ मोहविकार जि हां तिहां रे, कांइ किम तरीयें गुणधाम रे ॥ प्र० ॥३॥ मोहबंध जगबंधियो रे,कांइ बंध जिहां नही शोष रे ॥प्र०॥ कर्मबंध न कीजीयें रे, कर्मबंधन गये जो श रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तेहमां शो पाड चढावीयें रे, कां इ तुमें श्रीमहाराज रे ॥ प्र० ॥ विण करणी जो ता रशो रे, कांइ तो साचा श्रीजिनराज रे ॥ प्र० ॥५॥ प्रेममगननी नावना रे, कांइ नाव तिहां नववार रे॥ प्र० ॥ नाव तिहां नगवत बे रे, कांइ उलसे आतम सार रे ॥प्र०॥६॥ पूरणघट नीतर नर्यो रे, कांइ अ नुनव अनुहार रे ॥ प्र० ॥ आतमध्यानें उलखी रे,

कांइ तरशुं नवनो पार रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ वर्द्धमान मुऊ वीनति रे, कांइ मानेजो निशदीस रे ॥ प्र० ॥ मोहन कहे मनमंदिरें रे, कांइ वसियो तुं विशवावीश रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति श्री मोहनविजजीकृत चोवीशी आदिकना स्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ प्रीतलडी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं, कांइ प्रनु पाखे क्षण एके मन न सुहाय जो ॥ ध्याननी ताली रे लागी नेहशुं, जलद घटा जिम शिवसुतवाहन दाय जो ॥ प्री० ॥ १ ॥ नेह घेलुं मन माहारुं रे प्रनु अलजे रहे, तन धन मन ए कारणथी प्रनु मुऊ जो ॥ मारे तो आधार रे साहिब रावलो, अंतर्गतनुं प्रनु आगल कहुं गुऊ जो ॥ प्री० ॥२॥ साहेब ते साचो रे जगमां जाणीएं, सेवकनां जे सहेजें सधारे काज जो ॥ एहवे रे आचरणे किम करीने रहुं, बिरुद तुमारो तारण तरण जिहाज जो ॥ प्री० ॥ ३ ॥ तारकता तुऊ मांहे रे श्रवणें सांनली, ते नणी हुं आव्यो बुं दीन दयाल जो ॥ तुऊ करुणानी लेहरे रे मुऊ कारज सरे, शुं घणुं कहीएं जाण आगल कृपाल जो ॥ प्री० ॥४॥ करुणादिक कीधी रे सेवक उपरें, नव नय नावठ नांगी नक्ति प्रसन्न जो॥मन वंछित फलियां रे जिन आलंबने,कर जोडीने मोहन कहे मनरंग जो ॥ प्री०॥५॥

॥ अथ गोमी पार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ राणीजीना देशमां रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्राणथकी प्यारो मुने रे ॥ साहेबा ॥ पुरुषादा णी पास ॥ प्रभुनें उलगुं रे ॥ अंतरजामी आगलें रे ॥ साहेबा ॥ उभो करुं अरदास ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ मनमंदिर अंदर वस्यो रे ॥ साहेबा ॥ मुजरो ल्यो महाराज ॥ प्रभु० ॥ रहेशो जो टालो करी रे ॥ साहेबा ॥ तो केम सरशे काज ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ उभां उलगडी करुं रे ॥ साहेबा ॥ द्यो दरिसणनुं दान ॥ प्रभु० ॥ नीपट कां करीनें रह्या रे ॥ साहेबा ॥ आंखो आडा कान ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ इम नागं केम तूटशे रे ॥ साहेबा ॥ दासथी दीनदयाल ॥ प्रभु० ॥ में पालव पकड्यो खरो रे ॥ साहेबा ॥ करुणावंत कृपाल ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ हुंतो रागी ताहेरो रे ॥ साहेबा ॥ नीरागी छे लोक ॥ प्रभु० ॥ हवे तुम अम मेलावडो रे ॥ साहेबा ॥ नाव नदी संयोग ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ अकलकला कांइ ताहरी रे ॥ साहेबा ॥ मुजथी तो न कलाय ॥ प्रभु० ॥ पूछुं हुं शीखवतां कला रे ॥ साहेबा ॥ मुजथी तो न शीखाय ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ तुं पण एक न वीसरे रे ॥ साहेबा ॥ थलप ति प्राण आधार ॥ प्रभु० ॥ मोहन कहे कवि रूप नो रे ॥ साहेबा ॥ आशरो इणे संसार ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ इति गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

साहेबा ए श्या सूरिजन ढंग ॥ मीरा० ॥ ४ ॥ या० ॥ निसुण्या कहीयें प्रसंगमें हो ॥ साहेबा तुम सरिखा निसनेह॥मीरा०॥या०॥एम पच्चुखाने कारणें हो ॥ साहेबा कोण गयो परिहरि गेह॥मीरा०॥५॥या०॥वीसरी गया तुमने खरा हो ॥ साहेबा पूरव विविध विनोद ॥ मीरा० ॥ या० ॥ आवो प्रीतम पातला हो ॥ साहेबा कहुं हुं बिठावी गोद ॥ मीरा० ॥ ६ ॥ या०॥ नेम पहेलां राजीमती हो ॥ साहेबा पोहोती मुगति डुवार ॥ मीरा० ॥ या० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो हो ॥ साहेबा शिवादेवी मात मलार ॥ मी० ॥ ७ ॥

॥ अथ ख्याल ॥

॥समज जा गुमानी हो दिलजानी॥हांरे तुं तो संन्व जिनने नज ले, हांरे तुं तो क्रोध कषायनें तज ले ॥सम०॥१॥हांरे तुंतो फरि पदवी नवि पावे,हांरे तुझ मूरख कुन समजावे ॥ सम० ॥ २ ॥ हांरे मोहननो माणक बोले, नही कोइ जैनधरमने तोलें ॥ स०॥३॥

। अथ ख्याल ॥

॥ पासजिनंदा माता वामाजीके नंदा रे,तुम पर वारी जाउं खोल खोल रे ॥ हांरे दरवाजे टेडे खोल खोल रे, हम दरसन आये तोल तोल रे ॥ दर० ॥ ॥ १ ॥ पूजा करुंगी मेंतो धूप धरुंगी रे, फूल चडाउंगी बहु मोल मोल रे ॥ दर० ॥ २ ॥ तें मेरा ठाकर में तेरा चाकर, एकवार मोसुं बोल बोल रे ॥ दर०॥३॥ सुरतमंमण सुंदर मूरत, मुखडुं तें झाकम

कोल कोल रे ॥ दर० ॥ ४ ॥ रूप विबुधनो मोहन पत्नणे, रंग लागो चित्त चोल चोल रे ॥ दर० ॥ ५ ॥

॥ अथ शंखेश्वरस्तवनं ॥

॥ आंखडीयें में आज शेत्रुंजो दीठो रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रनु जगजीवन जगबंधु रे, सांई सयाणो रे ॥ ताहारी मुझायें मन मान्युं रे, जूव न जाणो रे ॥ ए आंकणी ॥ तुं परमातम तुं पुरुषोत्तम, वाला मारा तुं परब्रह्म सरूपी रे ॥ सिद्धसाधक सिद्धांत सनातन, तुं त्रय नावें प्ररूपी रे ॥ सांई सयाणो रे ॥ ॥ १ ॥ ताहरी प्रनुता त्रिहुं जगमांहे ॥ वा० ॥ पण मुऊ प्रनुता महोटी रे ॥ तुऊ सरिखो महारे महा राजा, ताहरे नही कांइ खोटी रे ॥ सांई० ॥ २ ॥ तुं निरद्रव्य परमपद वासी ॥ वा० ॥ हुंतो इव्यनुं नोगी रे ॥ तुं निरगुण हूंतो गुणधारी ॥ हुं करमी तुं अनोगी रे ॥ सांई० ॥ ३ ॥ तुंतो अरूपी हूंतो रूपी ॥ वा० ॥ हुं रागी तुं निरागी रे ॥ तुं निरविष हूंतो विषधारी, हूं संग्रही तुं त्यागी रे ॥ सांई० ॥ ४ ॥ ताहरे राज नही कोइ एके ॥ वा० ॥ चउदराज ठे माहरे रे ॥ माहरी लीला जोतां प्रनुजी, अधिकुं शुं ठे ताहरे रे ॥ सांई० ॥५॥ पण तुं महोटो हूंतो ठोटो ॥ वा० ॥ फोकट फूले शुं थाय रे ॥ खमजो ए अपराध अमारो, नक्तिवशें कहेवाय रे ॥ सांई० ॥ ॥ ६ ॥ श्री शंखेश्वर वामानंदन ॥ वा० ॥ उना

सादेवा ए श्या सूरिजन ढंग ॥ मीग० ॥ ४ ॥ या० ॥ निसुण्या कहीयें प्रसंगमें हो ॥ सादेवा तुम सरिखा निस्नेह॥मीग०॥या०॥एम पशुआने कारणें हो ॥ सा ॥ राग प्रन्नात [illegible] गेह॥मीग०॥५॥या०॥वीसरी गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रह ऊगत पूरव विविध विनो तां सदा, चढती कला होय वंशवेले ॥ भतला हो ॥ वसुनूति नंदन विश्वजन वंदन, डरित निकंदन नाम जेहनुं ॥ अनेदबुद्धें करी नविजन जे नजे, पूर्ण पोहोंचे सही नाग्य तेहनुं ॥ मा० ॥ २ ॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण कामधेनु ॥ एहज गौतमतणुं ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी अधि क नहीं माहात्म्य केहेनुं ॥ मा० ॥ ३ ॥ ज्ञान बल तेज ने सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पामे ॥ अखंम प्रचंम प्रताप होय अवनिमां, सुर नर जेह नें शीश नामे ॥ मा० ॥ ४ ॥ प्रणव आदें धरी माया बीजें करी, स्वमुखें गौतमनाम ध्याये ॥ कोडि मनका मना सफल वेगें फले, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ५ ॥ डुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधि ने व्याधि नासे ॥ नूतनां प्रेतनां जोर नांजे व ली, गौतमनाम जपतां उल्लासें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदें आप लब्धें जइ,पन्नरशें त्रण ने दिरक दीधी॥ अठ्म पारणे तापस कारणें, खीरलब्धें करी अखु ट कीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥ वरस पचास लगें गृहवासें वस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ बार वरसां

जोल जोल रे ॥ दर० ॥ ४ ॥ रूप विबुधनो मोहन
पनणे, रंग लागो चित चोल चोल रे ॥ दर० ॥ ५ ॥

॥ अथ शंखेश्वरस्तवनं ॥

दोलत सवाई ॥

॥ आंखडीयें में आ तिम प्रनातिस्तवनं ॥

॥ प्रनु सिद्धाचलस्तवनं ॥ गरवानी देशीमां ॥

॥ श्रीसिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जगजीवन अं
तर जामी रे, एतो प्रणमुं हुं शिरनामी ॥ जात्रीडा
जात्रा नवाणुं करियें रे, करियें तो नवजल तरियें ॥
जात्री० ॥ १ ॥ श्रीरुपन जिनेश्वरराया रे, जिहां पू
र्व नवाणुं आया रे, प्रनु समवसऱ्या सुखदाया ॥
जात्री० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दिन्न वखाणुं रे, पांच
कोडी पुंमरीक जाणुं रे, जे पाम्या पद निरवाणुं ॥
जात्री० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख सातें रे,
बे कोडी साधु संघातें रे, एतो पहोता पद लोकांतें
॥ जात्री० ॥४॥ काति पूनिमें कर्मने तोडी रे, जिहां
सीधा मुनि दश कोडी रे, तेतो वंदो बे कर जोडी ॥
जात्री० ॥ ५ ॥ एम नरतेसरने पाटें रे, असंख्याता
मुनि वाटें रे, पाम्या मुगतिरमणी ए वाटें॥जात्री०॥
॥६॥दोय सहस मुनि परिवार रे,थावच्चा सुत सुखकार
रे, सयपंच सेलंग अणगार ॥ जात्री० ॥ ७ ॥ वली
देवकीसुत सुजगीश रे, सीधा बहु यादववंश रे,
ते प्रणमो रे मन हंस ॥ जात्री० ॥ ८ ॥ पांच पांम
व इणें गिरि आव्या रे, सिद्धा नव नारद रुषि राया

रे, वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥जात्री०॥९॥ ए तीरथ महिमावंत रे, जिहां सीधा साधु अनंत रे, इम जांखे श्रीजगवंत ॥ जात्री० ॥ १० ॥ उज्ज्वलगिरि समो नहीं कोय रे,तीरथ सघला में जोय रे, जे फरस्यां पाप न होय ॥ जात्री० ॥ ११ ॥ (१) एकल आहारी (२) सचित्त परिहारी रे, (३) पदचारी ने (४) जूमि संथारी रे, (५) शुद्ध समकित ने (६) ब्रह्म चारी ॥ जात्री० ॥ १२ ॥ एम छहरी जे नर पाले रे, वहुदान सुपात्रें आले रे, ते जनम मरण जय टाले ॥ जात्री० ॥१३॥ धन्य धन्य ते नरने नारी रे, जेटे विमलाचल एक तारी रे, जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥ जात्री० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद्रसूरि सुपसायें रे, जिनहर्ष होय उबायें रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ जात्री० ॥ १५ ॥ इति विमलाचल० ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीनुं पालणुं प्रारंजः ॥

॥ माता त्रिशलायें पुत्र रतन जाइर्ड, चोशठ इंद्रनां आसन कंपे सार ॥ अवधिज्ञानें जोइ धायो श्री जिन वीरने, आवे क्षत्रियकुंम नयर मफार ॥ माता० ॥ १ ॥ वीर प्रतिबिंब मूकी माता कने, अवसर्पिणी निज्ञा दीए सार ॥ एम मेरुशिखरें जिनने लावे जक्तिशुं, हरि पंच रूप करी मनोहार ॥ माता० ॥ २ ॥ एम असंख्य कोटा कोटी मली देवता, प्रजुने उछव मंमाणे लइ जाय ॥ पांमुक वन शिलायें जिनने लावे जक्तिशुं, हरि उबंगें थापे इंद्र घणुं उछाय ॥ माता०

॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कलशें करी, वीरनो सनात्र महोत्सव करे सार ॥ अनुक्रमें वीर कुमरने लावे जननी मंदिरें, दासी प्रियंवदा जई तेणीं वार ॥ माता० ॥ ४ ॥ राजा सिद्धारथने दीधी वधामणी, दासीने दान अने बहु मान दिए मनोहार ॥ क्षत्रिय कुंमगांहे उछव मंमावियो, प्रजा लोकने हरष अपार ॥माता०॥५॥ घर घर श्रीफल तोरण त्राटज बांधियां, गोरी गावे मंगल गीत रसाल ॥ राजा सिद्धारथें जनम महोत्सव कस्यो, माता त्रिशला थई उजमाल ॥ माता० ॥ ६ ॥ माता त्रिशला फूलावे पुत्र पारणे ॥ ए आंकणी ॥ फूले लाडकडा प्रनुजी आनंद नेर ॥ हरखी निरखिने इंद्राणीयो जाए वारणें, आज आनंद श्रीवीरकुमरने घेर ॥ माता० ॥ ७ ॥ वीरना मुखडा उपर वारुं कोटी चंद्रमा, पंकज लोचन सुंदर विशाल कपोल ॥ शुकचंचू सरिखी दीसे निर्मल नासिका, कोमल अधर अरुण रंगरोल ॥ माता० ॥ ८ ॥ औषधि सोवनमढी रे शोने हालरे, नाजुक आनरण सघलां कंचन मोतीहार ॥ कर अंगुठो धावे वीरकुमर हर्षे करी, कांइ बोलावतां करे किलकार ॥ माता० ॥ ए ॥ वीरने लिलाडें कीधो हे कुंकुम चांदलो, शोने जडित मर्कत मणिमां दीसे लाल ॥ त्रिशलायें जुगतें आंजी अणियाली बेहु आंखडी, सुंदर कस्तूरीनुं टबकुं कीधुं गाल ॥ माता० ॥ १० ॥ कंचन शोले जातनां रत्नें जडियुं पालणुं, कुलावती वेला थाए

रे, वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥जात्री०॥ए॥ ए तीरथ महिमावंत रे, जिहां सीधा साधु अनंत रे, इम भांखे श्रीभगवंत ॥ जात्री० ॥ १० ॥ उज्ज्वलगिरि समो नही कोय रे,तीरथ सघला में जोय रे, जे फरस्यां पाप न होय ॥ जात्री० ॥ ११ ॥ (१) एकल आहारी (२) सचित्त परिहारी रे, (३) पदचारी ने (४) भूमि संथारी रे, (५) शुद्ध समकित ने (६) ब्रह्म चारी ॥ जात्री० ॥ १२ ॥ एम बहरी जे नर पाले रे, बहुदान सुपात्रें आले रे, ते जनम मरण भय टाले ॥ जात्री० ॥१३॥ धन्य धन्य ते नरने नारी रे, भेटे विमलाचल एक तारी रे, जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥ जात्री० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद्रसूरि सुपसायें रे, जिनहर्ष होय उच्छायें रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ जात्री० ॥ १५ ॥ इति विमलाचल० ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीनुं पालणुं प्रारंभः ॥

॥ माता त्रिशलायें पुत्र रतन जाइउं, चोशठ इंद्र नां आसन कंपे सार ॥ अवधिज्ञानें जोइ धायो श्री जिन वीरने, आवे क्षत्रियकुंभ नयर मझार ॥ माता० ॥ १ ॥ वीर प्रतिबिंब मूकी माता कने, अवसर्पिणी निद्रा दीए सार ॥ एम मेरुशिखरें जिनने लावे भक्तिशुं, हरि पंच रूप करी मनोहार ॥ माता० ॥ २ ॥ एम असंख्य कोटा कोटी मली देवता, प्रभुने उत्सव मंडाणे लइ जाय ॥ पांडुक वन शिलायें जिनने लावे भक्तिशुं, हरि उछंगें थापे इंद्र घणुं उच्छाय ॥ माता०

॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कलशें करी, वीरनो सनात्र महोत्सव करे सार ॥ अनुक्रमें वीर कुमरने लावे जननी मंदिरें, दासी प्रियंवदा जई तेणी वार ॥ माता० ॥ ४ ॥ राजा सिद्धारथने दीधी वधामणी, दासीने दान अने बहु मान दिए मनोहार ॥ क्षत्रिय कुंडमांहे उच्छव मंडावियो, प्रजा लोकने हरप अपार ॥माता०॥५॥ घर घर श्रीफल तोरण त्राटज बांधियां, गोरी गावे मंगल गीत रसाल ॥ राजा सिद्धारथें जनम महोत्सव कर्यो, माता त्रिशला थई उजमाल ॥ माता० ॥ ६ ॥ माता त्रिशला फूलावे पुत्र पारणे ॥ ए आंकणी ॥ फूले लाडकडा प्रभुजी आनंद भेर ॥ हरखी निरखिने इंद्राणीयो जाए वारणें, आज आनंद श्रीवीरकुमरने घेर ॥ माता० ॥ ७ ॥ वीरना मुखडा उपर वारुं कोटी चंद्रमा, पंकज लोचन सुंदर विशाल कपोल ॥ शुकचंचू स[illegible] दीसे निर्मल नासिका, कोमल अधर अरुण [illegible]ल ॥ माता० ॥ ८ ॥ औषधि सोवनमढी रे शोभे हालरे, नाजुक आभरण सघलां कंचन मोतीहार ॥ कर अंगुठो धावे वीरकुमर हर्षे करी, कांई बोलावतां करे किलकार ॥ माता० ॥ ए ॥ वीरने लिलाडें कीधो ठे कुंकुम चांदलो, शोभे जडित मर्कत मणिमां दीसे लाल ॥ त्रिशलायें जुगतें आंजी अणियाली बेहु आंखडी, सुंदर कस्तूरीनुं टबकुं कीधुं गाल ॥ माता० ॥ १० ॥ कंचन शोले जातनां रत्नें जडियुं पालणुं, फुलावती वेला थाए

हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन भोजाइयोना देयर छो सुकुमाल ॥ हसशे भो जाइयो कही दीयर माहारा लाडका, हसशे रमशे ने वली चूंटी खणशे गाल, हसशें रमशे ने वली ठुं सा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा रा जाना भाएोज छो, नंदन नवला पांचशें मामीना भाऐज छो, नंदन मामलीयाना भाणेजा सुकुमाल ॥ हसशे हाथे उछाली कहीने नाहाना भाणेजा, आंख्यो आंजी ने वली टबकुं करशे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां, रत ने जडीयां फालर मोती कशवी कोर ॥ नीलां पीलां ने वली रातां सरवे जातिनां, पहेरावशे मामी माहारा नं दकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सूखड ली सहु लावशे, नंदन गजुवे भरशे लाडु मोतीचूर, ॥ नंदन मुखडां जोइने लेशे मामी भामणां, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर ॥ हा० ॥ ए ॥ नंद न नवला चेडा मामानी साते सती, मारी भत्रीजी ने वेन तमारी नंद ॥ ते पण गुंजे भरवा लाखणसाईं लावशे, तुमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें लावशे लाख टकानो घूघरो, वली शूडा मेनां पोपट ने गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीतरने वली मोर जी, मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्प न कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीया, नंदन तमने

भ्रमने केलीघरनी मांहे ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन ए
कने मंमलें, बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहे
॥ हा० ॥ १२ ॥ तमने मेरुगिरि पर सुरपतियें नवरा
विया, निरखी निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥
मुखडा उपर वारुं कोटि कोटि चंद्रमा, वली तन पर
वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा०॥ १३ ॥ नंदन नव
ला भणवा नीशाले पण मूकशुं, गजपर अंबाडी बे
सी मोहोटे साज ॥ पसली भरशुं श्रीफल फोफल
नागरवेलशुं, सुखडली लेशुं नीशालीयाने काज ॥
हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थाशो ने परणा
वशुं, वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ स
रखा सरखी वेवाणुंने पधरावशुं, वरवहु पोंखी लेशुं
जोईने देदार ॥ हा० ॥ १५ ॥ पीअर सासर
माहारां बेहु पख नंदन उजला, महारी कूखें आव्या
तात पनोता नंद ॥ महारे आंगण वूठा अमृत दूधें
मेहुला, महारे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कंद
॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गायुं माता त्रिशला सुतनुं
पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज ॥
बीलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरु, जय जय
मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा०॥१७॥ इति ॥

॥ अथ रात्रिभोजननी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ पुण्यसंजोगें नरभव लाधो, साधो आतम का
ज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, एम भांखे
जिनराज रे ॥ प्राणी रात्रीभोजन वारो ॥ आगम

वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे॥ प्राणी ॥ रात्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अनंदय बावी शमां रयणीजोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणें कार ण रातें मत जमजो, जो हुवे हइडे शान रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ दान स्नान आयुध ने जोजन, एटलां रातें न कीजें ॥ ए करवां सूरजनी साखें, नीतिवचन स मजीजें रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंखी पण रा तें, टाले जोजन टाणो ॥ तुमें तो मानवी नाम धरा वो, केम संतोष न आणो रे ॥प्रा०॥४॥ माखी जू की डी कोलीआवडो, जोजनमां जो आवे ॥ कोढ जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपावे रे ॥प्रा०॥५॥ उन्नु जव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपाव्युं ॥ एक त लाव फोडंतां तेटलुं, दूषण सुगुरु बताव्युं रे ॥ प्रा० ॥६॥ ॥ एकलोत्तर जव सर फोड्या सम, एक दव दे तां पाप ॥ अवलोत्तर जव दव दीधा जिम, एक कुव णिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ एक शो चुम्मालीश जव लगें कीधा, कुवणिजना जे दोष ॥ कूडुं एक कलंक दियंतां, तेहवो पापनो पोष रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एकशो एकावन जव लगें दीधां, कूडां कलंक अपार ॥ तेवुं रे एक शीयल खंमयामां, दोष कह्यो निरधार रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ एक शो नवाणुं जव लगें खंमया, शीयल विषय संबंध ॥ तेहवो एक रात्रि जमवामां, कर्म निकाचित बंध रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ रात्रिजोजन मां दोष घणा छे, कहेतां नावे पार ॥ केवली कहेतां

पार न पावे, पूरव कोडी मझार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ एवुं जाणीने उत्तम प्राणी, नित चौविहार करीजें ॥ मासें मासें पासखमणनो, लाभ एणें विधें लीजें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाळे नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीनें होवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ निंदावारकसज्झाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बो ल्यां महापाप रे ॥ वैर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतो न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां हो य रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पडी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगु णें सहु भर्या रे, केहनां नलियां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो क रजो आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ॥ ४ ॥ गुण ग्रहेजो सहु को तणा रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुं दर सुखकार रे ॥ निंदा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी सज्झाय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहामणी ॥ प्रीत न कीजें रे, परनारी तणी ॥ उथलो ॥ परनारी

सार्थे प्रीत पियुडा, कह्लो किए परें कीजीयें ॥ ऊंघ वेची आपणी, उजागरो केम लीजीयें ॥ काबडी लूटो कहे लंपट, लोकमांहे लाजीयें ॥ कुल विषय खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥ ॥ चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पेहेलां बीहीजीयें ॥ रखे कोइ जाणे रे, मनशुं ध्रूजीयें ॥ उथलो ॥ ध्रूजीयें मनशुं झूरीयें पण, जोग मलवो छे नही ॥ रात दिन विलपंतां जाये, अवटाई मरवुं सही ॥ निज नारीथी संतोष न वल्यो, परनारीथी कहो शुं हशे ॥ जो नरे जाणे तृप्ति न वली, तो एठ चाटे शुं हशे ॥ २ ॥ ॥ चाल ॥ मृगतृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टले ॥ वेलु पील्यां रे, तेल न नीसरे ॥ उथलो ॥ न नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेश माखणनो वली ॥ बूडतां वाचक नरीया केणें, ते तखा वात न सांभली ॥ तेम नार रमतां परतणी, संतोष न वल्यो एक घडी ॥ चित चटपटी उच्चाट थाये, नयणें नावे निद्रडी ॥ ३ ॥ ॥ चाल ॥ जेवो खोटो रे, रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको रें, परस्त्रीसंगनो ॥ उथलो ॥ परनारी सार्थे प्रेम पियुडा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रूडो, पछी नही रहे निर्धरो ॥ जे घणा सार्थे नेह मांझे, छांझ तेहशुं वातडी ॥ एम जाणी म म कर नाहला, परनारी सार्थे प्रीतडी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे पति वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परशुं प्रेमें रे, राचे सापिणी ॥ उथलो ॥ सापिणी सरखी वेण निरखी, रखे

शियलथकी चले ॥ आंखने मटके अंग लटके, देव दानवने छले ॥ मनमांहे काली अति रसाली, वाणि मीठी शेलडी ॥ सांजली जोला रखे जूलो, जाणजो विषवेलडी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे, पररामा तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मलवा तणो ॥ ऊ थलो ॥ शोक शाने करो फोगट, देखवुं पण दोहिलुं ॥ क्षण मेडियें क्षण शेरीयें, जमतां न लागे सोहिलुं ॥ उह्वासने निःश्वास आवे, अंग जांजे मन जमे ॥ वली कामिनी देखी देह दाझे, अन्न दीठुं नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कलामी रे, मनशुं कल मले ॥ उन्मत्त थइनें रे, अलल पलल लवे ॥ ऊथलो ॥ लवे अलल पलल जाणो, मोहघेलो मन रडे ॥ महाम दन वेदन कठिन जाणी, मरण वारु त्रेवडे ॥ ए दश अवस्था काम केरी, कंत कायाने दहे ॥ एम चित्त जाणी तजे राणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ परनारीना रे, पराजव सांजलो ॥ कंता कीजें रे, जाव ते निर्मलो ॥ ऊथलो ॥ निर्मलें जावें नाह समजो, परवधूरस परिहरो ॥ चांपीयो कीचक जीमसेनें, शि ला हेवल सांजरो ॥ रण पड्यां रावण दशे मस्तक, रडवड्यां ग्रंथें कह्यां ॥ तेम मूंजपति डुःखपुंज पा म्यो, अपजश जगमांहे लह्या ॥ ८ ॥ चाल ॥ शिय ल सलूणा रे, माणस सोहीयें ॥ विण आजरणें रे, जग मन मोहीयें ॥ ऊथलो ॥ मोहीये सुर नर करे सेवा, विष अमिय थइ संचरे ॥ केसरी सिंह शियाल

थाये, अनल अति शीतल करे ॥ साप थाए फूल
माला, लछी घर पाणी भरे ॥ परनारी परिहरी शि
यल मन धरी, मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ए ॥ चाल ॥
ते माटे हुं रे, वालम वीनवुं ॥ पाय लागीने रे, म
धुर वयणें स्तवुं ॥ उथलो ॥ वयण महारुं मानीयें,
परनारीथी रहो वेगला ॥ अपवाद माथे चढे मोहो
टा, नरकें थइयें दोहिला ॥ धन्य धन्य ते नर नारी
जे जग, शियल पाले कुलतिलो, ते पामशे यश जगत
मांही, कुमुदचंद सम ऊजलो ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शियलविषे नारीनें शीखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शीखामण खरी ॥ सम
जी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ उथलो ॥ सुंदरी सहेजें
हृदय हेजें, पर सेजें नवि वेसीयें ॥ चित्तथकी चूकी
लाज मूकी, पर मंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु घेर हींडी
नार निर्लज, शास्त्रें पण तजवी कही ॥ जेम प्रेत दृष्टें
पड्युं जोजन, जमवुं ते जुगतुं नही ॥ १ ॥ चाल ॥
परशुं प्रेमें रे, हसीय न बोलीयें ॥ दांत देखाडी रे,
गुह्य न खोलीयें ॥ उथलो ॥ गुह्य घरनुं परनी आगें,
कहोने केम प्रकाशीयें ॥ वली वात जे विपरीत ना
से, तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा अने अगो
चर, एकलां नवि जाइयें ॥ सहसातकारें काम कर
तां, सहेजें शियल गमावीयें ॥ २ ॥ चाल ॥ नट
विट नरशुं रे, नयण न जोडीयें ॥ मारग जातां रे,
आघुं उढीयें ॥ उथलो ॥ आघुं ते उढी वात करतां,

घणुंज रूडा शोभीयें ॥ सासू अने माता जख्या विण, पलक पास न थोभीयें ॥ सुख डुख सरज्युं पामीयें पण, कुलाचार न मूकीयें ॥ परवश वसतां प्राण तज तां, शियलथी नवि चूकीयें ॥ ३ ॥ चाल ॥ व्यसनी साथें रे, वात न कीजीयें ॥ हाथो हाथे रे, तालि न लीजीयें ॥ उथलो ॥ ताली न लीजें नजर न दीजें, चंचल चाल न चालीयें ॥ एक विषय बुद्धें वस्तु केह नी, हाथे पण नवि फालीयें ॥ कोटि कंदर्प रूप सुंदर, पुरुष पेखी न मोहियें ॥ तृणखलां तोले गणी तेहने, फरिय सासुं न जोइयें ॥ ४ ॥ चाल ॥ पुरुष पियारो रे, वलि न वखाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणी यें ॥ उथलो ॥ जाणीयें पियु विण पुरुष सघला, स होदर समोवडे ॥ पतिव्रतानो धर्म जोतां, नावे कोइ तडोवडें ॥ कुरूप कुष्टी कूबडो ने, डुष्ट डुर्बल निर्गु णो ॥ भरतार पामी भामिनी ते, इंद्रथी अधिको गु णो ॥ ५ ॥ चाल ॥ अमर कुमारें रे, तजी सुरसुंद री ॥ पवनंजयें रे, अंजना परिहरी ॥ उथलो ॥ परि हरि सीता रामें वनमां, नले दमयंती वली ॥ महा सती माथे कष्ट पड्यां पण, शियलथी ते नवि चली ॥ कसोटीनी परें कसीय जोतां, कंतशुं विहडे नही ॥ तन मन वचनें शियल राखे, सती ते जाणो सही ॥ ६ ॥ ॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडीयें ॥ व्याकुल थइने रे, मन न वगाडीयें ॥ उथलो ॥ मन न वगाडीयें पर पुरुषनुं, जोग जोतां नवि मले ॥ कलंक माथे चडे

कूडां, सगां सहु दूरें टले ॥ अणसरज्यो उच्चाट था ये, प्राण तिहां लागी रहे ॥ इह लोक पामे आप दा, परलोक पीडा बहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने रूपें रे, शूर्पनखा मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने ईज त खोइ ॥ उथलो ॥ ईजत खोइ देख अनया, शेठ सु दर्शन नवि चल्यो ॥ नरतार आगल पडी नोंगी, अ पवाद सघले उछल्यो ॥ कामनी बुद्धें कामिनीएं, वं कचूल वाह्यो घणुं ॥ पण शियलथी चूकी नहीं, द ष्टांत एम केतां नणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शियल प्रनावें रे, जुवो शोले सती ॥ त्रिभुवनमांहे रे, जे थई ब्रती ॥ उथलो ॥ ब्रती थइने शियल राख्युं, कल्पना की धी नही ॥ नाम तेहनां जगत जाणे, विश्वमां झगी रही ॥ विविध रत्ने जडित नूपण, रूपसुंदरी किन्नरी ॥ एक शियल विण शोने नही, ते सत्य गणजो सुं दरी ॥ ए ॥ चाल ॥ शियल प्रनावें रे, सहु सेवा क रे ॥ नवे वाडें रे, जेह निर्मल धरे ॥ उथलो ॥ धरे निर्मल शियल उज्ज्वल, तास कीर्ति झलहले ॥ मन कामना सवि सिद्धि पामे, अष्ट नय दूरें टले ॥ धन्य धन्य ते जाणो धरा, जे शियल चोखुं आदरे, आनं दना ते उंघ पामे, उदय महाजस विस्तरे ॥ १० ॥

॥ अथ क्रोधनी सज्झाय ॥

॥ कडुवां फल छे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥ री शतणो रस जाणीयें, हालाहल तोलें ॥ ग० ॥ १ ॥ क्रोधें क्रोड पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध स

हित तप जे करे, ते तो लेखें न थाय ॥ क० ॥ २ ॥ साधु घणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्य ने क्रोधथकी थयो, चंमकोशियो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग उठे जे घरथकी, पहेलुं ते घर बाले ॥ जलनो जोग जो नवि मले, तो पासेंनुं प्रजाले ॥ क० ॥४॥ क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो प्राणी ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले साई ॥ काया करजो निर्मली, उपशम रस नाई ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ अथ माननी सज्झाय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीयें, मानें विनय न आवे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥मुक्ति विना सुख शाश्वतां, केम लहियें युक्ति रे ॥ रे० ॥२॥ विनय वडो संसारमां, गुणमां अधिकारी रे॥ गर्वें गुण जाये गली, चित्त जूउ विचारी रे ॥ रे ० ॥ ३ ॥ मान कर्युं जो रावणें, तें तो रामें मार्यो रे ॥ डुर्योधन गरवें करी, अंतें सवि हार्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥ शूकां लाकडां सारिखो, डुखदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत्न कहे मानने, देजो देशोटो रे ॥ रे० ॥५

॥ अथ मायानी सज्झाय ॥

॥ समकितनुं वीज जाणीयें जी, सत्य वचन साक्षात ॥ साचामां समकित वसे जी, कूडामां मिथ्यात रे ॥ प्राणी ॥ मकरो माया लगार ॥ १ ॥

आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनें जी, कूड कपटनो
रे कोट ॥ जीनें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे तावे
चोट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पडे जी,
पण न धरे विश्वास ॥ मेल न ढांके मन तणो जी, ए
मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं मांके प्रीतडी
जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मन नवि मूके आमलो जी,
ए मायानुं मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया
करी जी, मित्रशुं राख्यो रे नेद ॥ मल्ली जिने
श्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्रीवेद रे ॥ प्रा० ॥
॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांजलो जी, मेलो मायानी
बुद्ध ॥ मुक्तिपुरी जावा तणो जी, ए मारग ने शुद्ध
रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति मायानी सज्झाय ॥

॥ अथ लोजनी सज्झाय ॥

॥ तुमें लक्षण जो जो लोजनां रे, लोनें जन
पामे क्षोजना रे ॥ लोनें माह्या मन मोल्या करे रे,
लोनें डुर्घट पंथें संचरे रे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोज
तेहनां लेउं नामणां रे, वली पाय नमीने करुं खा
मणां रे ॥ लोनें मर्यादा न रहे केहनी रे, तुमें संगत
मेलो तेहनी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोनें घर मेहली
रणमां मरे रे, लोनें ऊंच ते नीचुं आचरे रे ॥ लोनें
पाप नणी पगलां नरे रे, लोनें अकारज करतां न
उसरे रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोनें मनडुं न रहे निर्मलुं
रे, लोनें सगपण नासे वेगलुं रे ॥ लोनें न रहे प्री
ति ने पावतुं रे, लोनें धन मेले बहु एकतुं रे ॥ तु० ॥

॥ ४ ॥ लोनें पुत्र प्रत्यें पिता हणे रे, लोनें हत्या पातक नवि गणे रे ॥ ते तो दाम तणे लोनें करी रे, उपर मणिधर थाये ते मरी रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोननो थोन दिसे नही रे, एवुं सूत्र सिद्धांतें कह्युं सही रे ॥ लोनें चक्री सनूम नामें हुउ रे, ते तो समुद्रमांहे डूबी मुवो रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ एम जाणीने लोनने छंमजो रे, एक धर्मशुं ममता मंमजो रे ॥ कवि उदयरत्न नांखे मुदा रे, वंदूं लोन तजे तेहनें सदा रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति लोननी सद्याय ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सद्याय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तुं उठे परन्नात, चार घडी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जिम पामे नव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु धर्म, कवण अमारुं छे कुलकर्म ॥ कवण अमारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणी तणुं, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तें करे पच्चरकाण, सूधी पाले जिननी आण ॥ नणजे गुणजे स्तवन सद्याय, जिणहुंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चीतारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवंतां सीम ॥ देहरे जाई जुहारे देव, द्रव्यन्नावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पूजा करतां लान्न अपार, प्रन्नु जी महोटा मुक्ति दातार ॥ जे उत्थापे जिनवर देव, तेहने नव मंमकनी टेव ॥ ६ ॥ पोशालें गुरु वंदजे

जाय, सुणजे वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूपण सू जंतो आहार,साधुने देजे सुविचार ॥७॥ साहामिवत्स ल करजे घणुं,सगपण मोहोटूं सहामीतणुं ॥ दुःखीया हीणा दीनने देख, करजे तास दया सुविशेप ॥ ८ ॥ घर अनुसारें देजे दान, मोहोटाशुं म करे अभिमा न ॥ गुरुने मुख लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके घटी ॥ ए ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंगा अधिका नो परिहार ॥ म जरजे केनी कूडी साख, कूडा ज नशुं कथन म जांख ॥ १० ॥ अनंतकाय कह्या बत्री श, अनक्ष्य बावीशे विश्वावीश ॥ ते जक्षण नवि कीजें किमे, काचां कूणां फल मत जिमे ॥ ११ ॥ रा त्रीजोजनना बहु दोप, जाणीने करजे संतोप ॥ सा जी साबू लोह ने गली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ १२ ॥ वली म करावें रंगण पास, दूपण घणां कह्यां ठे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल पीतां दोप अपार ॥ १३ ॥ जीवाणीनां करजें यत्न, पातक ठंमी करजे पुण्य ॥ गणां इंधण चूलो जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १४ ॥ घृतनी परे वा वरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर ॥ बारे व्रत सूधां पालजे, अतीचार सघला टालजे ॥ १५ ॥ क ह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ मा थें म लेजे अनरथ दंरू, मिथ्या मेल म जरजे पिंम ॥ १६ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारी ने जांखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंज, पालो

शीयल तजो मन दंन ॥ १७ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहिं, उघाडां मत मेलो सही ॥ उत्तम गामें खर चो वित्त, पर उपगार करो शुभचित्त ॥ १८ ॥ दिव स चरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणो परि हार ॥ दिवस तणां आलोए पाप, जिम भांजे सघ ला संताप ॥ १९ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जि नवर चरण शरण भवभवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ २० ॥ करे म नोरथ मन एहवा, तीरथ शेत्रुंजे जायवा ॥ समेत शिखर आबू गिरनार, भेटीश हुं धन धन अवतार ॥ २१ ॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाये भ वनो छेह ॥ आठे कर्म पडे पातलां, पाप तणा छूटे आमला ॥ २२ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनु क्रमें पामे शिवपुर ठाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससने ह, करणी दुःखहरणी छे एह ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ श्रीनेम राजुलनी सचाय ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उमे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ पियुजी पियुजी रे नाम, जपुं दिन रातियां ॥ पियुजी चाल्या परदेश, तपे मोरी छातीयां ॥ पग प ग जोती वाट, वालेसर कब मिले ॥ नीर विछोयां मीन, के ने ज्युं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज, साहिब विण नवि गमे ॥ जिहां रे वालेसर नेम, तिहां मारुं मन भमे ॥ जो होवे सज्जन दूर, तोही पासें वसे ॥ किहां पंकज किहां चंद, देखी मन उल्लसे

॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत, म करजो को सही ॥ पतंग जलावे देह, दीपक मनमें नही ॥ वाहाला माणस नो विजोग, म होजो केहने ॥ साले रे साल समा न, हइयामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड, जो वन वय अति दहे ॥ जेनो पियु परदेश, ते माणस दुःख सहे ॥ झुरि झुरि पंजर कीध, काया कमलज जिसी ॥ हजिय न आव्यो नेम, मलि न नयणें ह सी ॥ ४ ॥ जेहने जेहशुं राग, टाल्यो ते नवि टले ॥ चकवा रयणी विजोग, ते तो दिवसें मले ॥ आंवा केरो स्वाद, लिंबू ते नवि करे ॥ जे नाह्या गंगा नी र, ते छिल्लर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फू ल, धतूरे किम रमे ॥ जेहने घृतशुं प्रेम ते, तेलें किम जिमे ॥ जेहने चतुरशुं नेह ते, अवर ने शुं करे ॥ नवजोवन तजी नेम, वैरागी थइ फरे ॥ ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान, पहोती सहसाव ने ॥ जइ वांद्या प्रभु नेम, संजम लेइ एक मनें ॥ पा म्यां केवल ज्ञान के, पहोती मननी रली ॥ रूपविजय प्रभु नेम, चेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ निंदडीनी सिशाय प्रारंभः ॥

॥ निंदडी वेरण हुइ रही, किम कीजें हो सा पु रुप निदान के ॥ चोर फरे चिहुं पासथी, किम सूता हो कांइ दिन ने रात के ॥ नि० ॥ १ ॥ वीर कहे सु णो गोयमा, मत करजो हो एक समय प्रमाद के । जरा आवे यौवन . . . हो कांइ कवए

सवाद के ॥ नि० ॥ २ ॥ चउद पूरवधर मुनिवरा, निद्रा करता हो गया नरक निगोद के ॥ अनंतो अनंत काल तिहां रहे, इम वगडे हो कांइ धरमनो मोह के ॥ नि० ॥ ३ ॥ जोरावर घणा जालमी, यमराजा हो कांइ सबल करूर के ॥ निजसेन्या लइ चिहुं दिशें, किम जागता हो नर कहीये शूर के ॥ नि० ॥ ॥ ४ ॥ जागतडां गंजे नही, छेतराये हो नर सूतो नेट के ॥ सूतारिणी पाम्या जण्या, किम कीजें हो शा पुरुषनी चेट के ॥ नि० ॥ ५ ॥ श्रीवीरें इम भाखीयुं, पंखी भारंम हो न करे परमाद के ॥ तेह तणीपरे विचरजो, परिहरजो हो गोयम परमाद के ॥ नि० ॥ ६ ॥ वीर वचन इम सांभली, परिहरियो हो गोयमें परमाद के ॥ लीला सुख लाधां घणां, थिर रहियो हो जगमां जसवाद के ॥ नि० ॥ ७ ॥ निंद निंदडी मत आणजो, सुइ रहेजो हो सहुको सावधान के ॥ ध्यान धरम हिये धारजो, इम भाखे हो मुनि कनकनिदान के ॥ नि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ तुमें पीतांबर पहेर्यां जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रने वदोजी, मनोहर मनगमता ॥ जे अविचल सुखनो कंदोजी ॥ मनो० ॥ मास आशोयें मधुरे सोहावे जी ॥ मनो० ॥ भवि आदरो तमें भले भावे जी ॥ मनो० ॥ १ ॥ नव आंबिल तप कीजें जी ॥ म० ॥ तो अविचल सुखडां लीजें जी ॥

॥ म० ॥ शुद्धि सातमथी तमें मांडो जी ॥ मनो० ॥ घरनां आरंभ सवि छांडो जी ॥ म० ॥ २ ॥ पहेले पदें अरिहंत सेवो जी ॥ म० ॥ आपे मुक्तिनो मेवो जी ॥ म० ॥ बीजे पदें सिद्ध सोहावे जी ॥ मनो० ॥ मनशुद्धें पूजो भले भावें जी ॥ म० ॥ ३ ॥ आचार्य त्रीजे पदें नमो जी ॥ म० ॥ तमें क्रोध कपायने दमो जी ॥ म० ॥ उवझाय ते चोथा वंदो जी ॥ मनो० ॥ साधु पांचमे देखी आणंदो जी ॥ म० ॥ ४ ॥ छठे दरिसन पद जाणो जी ॥ म० ॥ श्रीज्ञानने सातमे वखाणो जी ॥ म० ॥ चारित्र पद आठमे सोहे जी ॥ म० ॥ वली नवमे तप मन मोहे जी ॥ मनो० ॥ ॥ ५ ॥ रस गारव आंबिल कीजें जी ॥ म० ॥ तो मुक्ति तणां फल लीजें जी ॥ म० ॥ संवत्सर युगपट मासें जी ॥ म० ॥ तप कीजे मनने उल्लासें जी ॥ ॥ म० ॥ ६ ॥ ए तो मयणा ने श्रीपाल जी ॥ म० ॥ तप कीधुं थइ उजमाल जी ॥ म० ॥ तेनो कोढ श रीरनो टाल्यो जी ॥ म० ॥ जगमां जस वास प्रगटा यो जी ॥ म० ॥ ७ ॥ पंचम काले तुमें जाणो जी ॥ ॥ म० ॥ परगट परतो परमाणो जी ॥ म० ॥ एनुं गणणुं तेर हजार जी ॥ म० ॥ तमें धारो हृदय म झार जी ॥ म० ॥ ८ ॥ नरनारी ए पद ध्यावे जी ॥ ॥ मनो० ॥ तेतो संपद सघली पावे जी ॥ मनो० ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन विनतिरूप छंद ॥

॥ शारद माय नमुं शिर नामि, हुं गाउं त्रिभुव नको स्वामी ॥ शांति शांति जपे सब कोइ, ता घर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजें काम, सोइ काम होवे अभिराम ॥ शांति जपी पर देश सिधावे, ते कुशलें कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्भ थकी प्रभु मारि निवारी, शांतिजी नाम दियो हित कारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, ऋधि अचिं ती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सहाइ, ता नरकूं क्या आरति थाइ ॥ जो कछु वंछे सोई पूरे, दारिद्र दुख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरं जन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रभु वासी ॥ स्वामी स्वरूप कह्युं नवि जाय, कहेतां मोमन अच रिज थाय ॥ ५ ॥ मार दीए सबहीं हथियारा, जी त्यां मोह तणा दल सारां ॥ नारि तजी शिवशुं रंग राचे, राज तज्युं पण साहेब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवत कहिजें देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ ऋद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, भिक्षा आहारी नाम कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककूं सम नायक, पण सेवकहीकूं सुख दायक ॥ तजी परिग्रह भये जगना यक, नाम अतिथि सवि सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजें, नामदेव अरिहंत भणीजें ॥ सयल जीव हितवत कहीजें, सेवक जाणी माहापद दीजें ॥ ए ॥ सायर जैसा होत गंभीरा, दूषण एक

न मांहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण न रहे प्रभु एकण गामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन जी सव देखे, पण सुपनांतर कवहुं न पेखे ॥ रीश विना वावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीशा ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवशुं लय लाई ॥ लोभ विना गुणराशि ग्रहीजें, निक्षु भये त्रिगडो सेवीजें ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणें शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजें, करम सवें को मूल खणीजें ॥ चउविह संघह तीरथ थापे, लछी घणी देखे नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे, न काहूकूं शीश नमावे ॥ अकिंचनको विरुद धरावे, पण सोवनपद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ राग नहीं पण सेवक तारे, द्वेष नही निगुणा संग वारे ॥ तजी आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत्त कहियें, तोरा गुनको पार न लहीयें ॥ तुं प्रभु समरथ साहेव मेरा; हुं मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तूं रे त्रिलोकतणो प्रतिपाल, हूं रे अनाथी तुं रे दयाल ॥ तुं शरणागत राखणधीरा, तुं प्रभु तारक वो वड वीरा ॥ १८ ॥ तुंहि समोवड भागज पायो, तो मेरो कांज चड्यो रे सवायो ॥ कर जोडी प्रभु विनवूं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ ॥ जनम

मरणना दोष निवारो, नव सागरथी पार उतारो ॥ श्री हबिणाउरमंमण सोहे, तिहां श्री शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया, श्री गुणसागरके मन नाया ॥ नरनारी जे चित्तें गावे, ते मनोवंबित निश्चें पावे ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री गोडीपार्श्वनाथजीनुं चोढालीयुं प्रारंभः॥

॥ पासजिणंद प्रसिद्ध सिद्ध, गोडीपुरमंमण ॥ महिमामंदिर मोह मयण, मिथ्यात विहंमण ॥ एकल मल्ल अनेक रूप, अगणित गुण आगर ॥ त्रिजुवन बंधव धवलधिंग, करुणा रस सागर ॥ १ ॥ जिन तुम अजब सरूप सकल, कल अकल अगोचर ॥ न लहे अलहे उतपति अगित, थिति नटके जो चर ॥ वृद्ध वचन जीरण लिखित, अनुसारे जाणी ॥ घुणशुं स्वामीनिरीह पणें, सुणजो नवि प्राणी ॥ २ ॥ विधिपक्ष गछ महेंद्र सूरि, गछेश निर्देशें ॥ शाखाचारज अजयसिंह, सूरि उपदेशें ॥ गोत्र मीठडीया उसवंश, पाटणपुरवासी ॥ शाह मेघो जेणें सात धात, जिण धर्म वासी ॥ ३ ॥ चौद बत्रीशें फागणशुदि, बीजने नृगुवारे ॥ खेता नोडी तात मात, निज सुकृत सारे ॥ तेणें पडतो पास बिंब, लेहवा नरजव फल ॥ चउविह संघ हजूर हरखें. खरची धन परिगल ॥४॥ नक्ति युक्ति अति थकित चित्त, नित्य निर्मल

सारी ॥ पण पसताले तुरक जयें, प्रतिमा जंमारी ॥ मलक महावल हुसन खान, कीधो उतारो ॥ पांशठे तेर्णे गाम जोर, गुजराती वारो ॥ ५ ॥ तरल तुरंग किशोर असुर, करता हय हणता ॥ केइ एराकी उछलंत, खुरीयें जूंइ खणता ॥ बांधण त्यांहि घोडार मांहि, खीली खोसंतां ॥ प्रगट थया तिहां पास बिंब, सुख दायक संता ॥ ६ ॥ खिजमत गार नफर फजर, नजरें गुजरावे ॥ होइ खुशाल निहाल मलक, या कोण कहेलावे ॥ वान पडिल कोइ वणिक सुता, तसु हुरम जणे इम ॥ कीजें इसकूं दंमवत, सदा ताजिम दाजिम ॥ ७ ॥ यह मजबूत बहुत कौत, हे जूत हिंडुका ॥ धरियें इस शिर जाफरान, सिंदलका जूका ॥ इणी परें रहेतां तेणे गामें, वोह्योल्या दिन केइ ॥ सिंतेरे जे वात हुइ, सुणजो मन देइ ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चूनडीनी देशीमां ॥

॥ इणे अवसरें पुर पारकरें, राणो खेंगार राजान रे ॥ तेहने दरबारे दीपतो, संघवी काजल परधान रे ॥ इणे० ॥ १ ॥ तस बन्हेवी निज कुलतिलो, देवा णंद शा वेदयाल रे ॥ मेघो खेताउत पाटणे, व्यापार करे धूताल रे ॥ इणे० ॥ २ ॥ सुपनंतर सुर कहे शाहने, छे म्लेछ महोल जिनबिंब रे ॥ तस दाम सवासो देइने, लेजो म करजो विलंब रे ॥ इणे० ॥ ३ ॥ प्रतिमा लेइ आवे गुरु कन्हे, जोइ कहे श्रीमेरुतुंग रे ॥ तुम देशों ए अति अतिशयी, तीरथ थाशे उत्तंग रे

॥इणे०॥४॥ करियाणुं लइ पोहोंचे घरें,मूरति राखे रू मांहे रे ॥ पंथें कोइ न गणे पोठीआ, वाध्यो घणो मोह उन्नाहें रे ॥ इणे० ॥ ५ ॥ समजावे नासुं ज्ञे वने, जंपे देजो मुऊ रास रे ॥ मांमो ए नामें महारे, प्रतिमा रहेशे अम पास रे ॥ इण० ॥ ६ ॥ मेघो कहे लेखो राखशुं, पण ते सवलो तिण गाम रे ॥ गाडुं नरी चाले थल दिशें, वासो वसे गोडी गाम रे ॥ इणे० ॥ ७ ॥ सुहणे सुर कहे गढुंली जिहां, मांमो प्रासाद मंमाण रे ॥ नाणुं तिहां धन श्रीफल तलें, मीठुं जल पाहाणनी खाण रे ॥ इणे० ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ निंदडी वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥

॥ हांजी उदयपाल ठाकुर तिहां, जोरावर हो खे तशी लूंणोत के ॥ इहां रहो निरजय शाहजी, आद रशुं हो कहे देइ महोत के ॥ धन धन गोडी जग ध णी, पोहवी पाले हो प्राजो जस पीठ के ॥ धन० ॥१॥ ए आंकणी ॥ आवे शिलाट देशांतरी, यक्ष प्रेर्यो हो करे प्रथम तैयार के ॥ नूमि करुं प्रजु वेसवा, रहे चिहुं दिशि हो लशकर हुशीयार के ॥ धन० ॥ २ ॥ पुरवती वंधावी पीठिका, वर दिवसें हो जाणे अहि नाण के ॥ सखर गंजारो शिखरशुं, मध्य मंमप हो सवि मोक्ष मंमाण के ॥ धन० ॥ ३ ॥ पवासणें वेठा पासजी, नरेंड करी हो पूजे जलें नाव के ॥ सजल मधुरजल लहकती, वरदायी हो वंधावी वाव्य के ॥ धन० ॥ ४ ॥ एहवे चउद चोराणुयें. आयुयोगे हो

में निबिडबंध कोय रे ॥ ध्यान शुद्धें समकित निर्मल
ता, स्वर्ग सुगति फल होय रे ॥ जयो० ॥ ७ ॥ द्रव्य
भाव विधि पूजो प्रणमो,नाम जपो नर नार रे॥ स्तव
न भणो मद मत्सर मूकी, उतपति साची मन धार
रे॥ जयो० ॥ ८ ॥ कलश ॥ इम थुण्यो गोडीपास
स्वामी, हुकुम पामी जेहनो ॥ दिशदिशें पसरतो अ
रति हरतो,प्रगट परतो जेहनो॥ श्री अमरसागर सूरि
अंचल, गछपतिराउ पसाउलें ॥ पय नमी लखमीचं
द्रवाचक, शिष्य लावण्य इम भणे ॥ ९ ॥ इति श्री
गोडीपारसनाथजीनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ पारसनाथनो छंद प्रारंभः ॥

॥ आपण घर बेठा लील करो, निज पुत्र कलत्र
शुं प्रेम धरो ॥ तमें देश देशांतर कांइ दोडो, नित्य
पास जपो श्रीजिन रूडो ॥ १ ॥ मनोवंछित संघलां
काज सरे, शिर उपर चामर छत्र धरे ॥ कलमल चाले
आगल घोडो, नित्य पास जपो श्रीजिन रूडो ॥ २ ॥
भूतने प्रेत पिशाच वली,सायणी ने डायणी जाय ट
ली ॥ छल छिद्र न कोइ लागे जूडो ॥ नित्य० ॥ ३ ॥
एकांतर ताव सीयो दाह,उषध विण जाये खणमांह ॥
नवि दुःखे माथुं पग गूडो ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ कंठमा
ला गंडगुंबड सवला, तस उदर रोग टले सघला ॥
पीडा न करे फिन गल फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जा
गतो तीर्थंकर पास वहू, एम जाणे सघलो जगत
सहू ॥ ततक्षण अशुभ कर्म तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥

पास वणारसि पुरि नगरी, तिहां उदयो जिनवर उदय करी ॥ समयसुंदर कहे कर जोडो ॥ नित्य० ॥ ७ ॥

॥ अथ ज्ञानपच्चीशी प्रारंभ. ॥

॥ सुर नर तिरि जग योनिमें, नरक निगोद भमंत ॥ महामोहकी निंदमें, सोवे काल अनंत ॥ १ ॥ जेसें ज्वरके जोरसें, भोजनकी रुचि जाय ॥ तैसें कुकर्मके उदय, धर्मवचन न सुहाय ॥ २ ॥ लगे भूख ज्वरके गये, रुचिशुं लेत आहार ॥ अशुभहीन शुभके लगे, सो जाने धर्म विचार ॥ ३ ॥ जैसे पवन ऊकोलथें, जलमें उठे तरंग ॥ त्युं मनसा चंचल भये, परिग्रहके परसंग ॥ ४ ॥ जिहां पवन नहि संचरे, तिहां नही जलकल्लोल ॥ त्युं सब परिग्रह त्यागथें, मनसा होय अमोल ॥ ५ ॥ ज्युं काहु विपधर मसे, रुचिशुं निंब चवाय ॥ त्युं तुम ममता शुं मढे, मगन विपय सुख थाय ॥ ६ ॥ निंबरस फरसे नही, निर्विपतनु जब होय ॥ मोह घटे ममता मिटे, विपय न वंछे कोय ॥ ७ ॥ ज्यूं सछिद्र नौका चढे, बूडे अंध अदेख ॥ त्युं तुम भवजलमें पडे, विनु विवेक धरी भेख ॥ ८ ॥ जिहां अखंमित गुण लगें, खेवट शुद्ध विचार ॥ आतमरुचि नौका चढे, पावही भवजल पार ॥ ए ॥ ज्युं अंकुश माने नही, महा मतग गजराज ॥ त्युं मन तृष्णामें फिरे, गिने न काज अकाज ॥ १० ॥ ज्युं नर दाय उपाय करि, गही आने गजराज ॥ त्युं मन या वश करनकूं, नि

घणी अबे रे, नोगवो नोग संसार ॥ बती रूद्धि विलसो रे जाया घर आपणे रे, पबें लेजो संयम नार ॥ धारणी० ॥ ४ ॥ मेघकुमारें रे माता प्रत्यें बूऊवी रे, दीक्षा लीधी वीरजीनी पास ॥ प्रीतिविमल रे इणि परें उच्चरे रे, पोहोती मह्वारा मनडानी आश ॥ धारणी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामी स्तवनं ॥

॥ प्रनुजी वीरजिणंदने वंदियें, चोवीशमा जिन राय हो ॥ त्रिशलाना जाया ॥ प्रनुजीने नामें ते नव निधि संपजे, नवडुख सवि मिटि जाय हो ॥ त्रिशलाना जाया ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रनुजी कंचन वान कर सातनुं, जग तातनुं एटलुं मान हो ॥ त्रि०॥ प्रनुजी मृगपति लंबन गाजतो, नांजतो मदगज मान हो ॥ त्रि० ॥ २ ॥ प्रनुजी सिद्धारथ नगवंत बो, सिद्धारथ कुल चंद हो ॥ त्रि० ॥ प्रनुजी नक्तवत्सल नव डुःखहरु, सुरतरु सम सुखकंद हो ॥ त्रि० ॥ ॥ ३ ॥ प्रनुजी गंधार बंदर गुणनिलो, जगतिलो जिहां जगदीस हो ॥ त्रि० ॥ प्रनुजीनुं दर्शण देखिने चित्त वस्युं, सस्युं मुऊ वंबित ईश हो ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ प्रनुजी शिवनगरीनो राजीयो,जगतारण जिन देव हो ॥ त्रि० ॥ प्रनुजी रंगविजयने आपजो, नवोनव तुम पाये सेव हो ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिनस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ नेमनाथ स्तवनं ॥

॥ नेम जिणंद जुहारीयें, उज्ज्वल गढ गिरनारो

जी ॥ बलवंत जिन बावीशमो, भलें भेट्यो भगवंतो जी ॥ नेम० ॥ १ ॥ श्यामलवर्ण सोहामणो, मुख सोहे पूनमचंदो जी ॥ यादववंशी जग जयो, जेहने सेवे सुर नर इंदो जी ॥ नेम० ॥ २ ॥ पशुअ देखी पाछा वल्या, दिल दया बहु आणी जी ॥ काल वि षय झंपी करी, तजी राजिमती राणी जी ॥ नेम०॥ ॥ ३ ॥ समुद्रविजयसुत सुखकरु, माता शिवादेवी मलारो जी ॥ दान संवत्सरी देई करी, पोहोता गढ गिरनारो जी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ चोपन दिन चोखे चितें, प्रजु मौनपणें तप कीधो जी ॥ कर्म खपावी केवल लही, जगमां बहु जश लीधो जी ॥ नेम० ॥ ॥ ५ ॥ समवसरण सुरपति रच्यो, आणी मन आणंदो जी ॥ त्रिगडो तेजें झगमगे, तिहां नाटक नव नव छंदो जी ॥ नेम०॥ ६ ॥ योजन जूमि जगतगुरू, उचरे अ मृत वाणी जी ॥ जवोदधिशोषण जयहरु, जेहना गुण गावे इंद्राणी जी ॥ नेम०॥ ७ ॥ इम महीमंमल विचरता, अनेक जीव उद्धाखा जी ॥ पोहोता बहु प रिवारशुं, मुक्ति मोहोल पधाखा जी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ विघ्नहरण नित वंदियें, राणी राजिमती जरतारो जी ॥ दुःख दारिद्र दूरें हरे, उतारे जवपारो जी ॥ नेम० ॥ ए ॥ संवत सत्तर अग्यारोत्तरें, आशो वीज अजुआली जी ॥ कहे जिनदास यात्रा करी, नेम हसी दीयो ताली जी ॥ नेम०॥१०॥ इति श्रीनेमिनाथ० ॥

॥ अथ केसरियाजीनुं स्तवन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर रूपन्न जिणंदा, नान्निराया मरुदेवीको नंदा॥ सो श्यामला गुणवंता ॥ लाख चोराशी पूरवनुं रे आय, धनुष पांचशे सोवनमय काय ॥ सो०॥१॥ जुगला रे धर्म निवारण स्वामी, नगर धूलेवे वसे घननामी ॥ सो० ॥ तखतें रे बेग केसरीयोजी सोहे, दरिसण देखीने मनडुं मोहे ॥ सो० ॥ २ ॥ मुखडुं रे सोहे पूनमकेरो चंदा, सुर नर मुनिवर सेवे वृंदा ॥ सो० ॥ मुकुट कुंमल शिर छत्र विराजे, ठकुराई केसरीयाने ठाजे ॥ सो० ॥ ३ ॥ देश देशना संघज आवे, वस्तु अमूलक न्नेटणुं लावे ॥ सो० ॥ पूजा न्नणावे ने अंगी रचावे, केसरकेरा कीच मचावे ॥ सो० ॥ ४ ॥ अगरवत्तीना धूप करावे, फूलडां केरा मुकुट न्नरावे ॥ सो० ॥ नाटक नाचे ने न्नावना न्नावें, हरखें केसरीयाना गुण गावे ॥ सो० ॥ ५ ॥ जिहाज तारे वालो बेडीयो कापे, मुह माग्यां वंछित फल आपे ॥ सो० ॥ रोग सोग न्नय दूर निवारे, न्नव सायरथी पार उतारे ॥ सो० ॥ ६ ॥ जे कोई गाशे ने जे सांन्नलशे, तेहना मनना मनोरथ फलशे ॥ सो० ॥ कपूर कहे तमें प्रत्यक्ष देवा, न्नवोन्नव मागुं हूं तुम पय सेवा ॥ सो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ न्नीडन्नंजनपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ शामाटे साहिब सामुं न जूवो,हुं तो रह्यो छुं तुम गुण हेरी ॥ प्रन्नुजी रे ॥ बीजा रे साथें बोल न

वोलुं, मुने न गमे वात अनेरी ॥ प्रभुजी रे ॥ शा० ॥
॥ १ ॥ जोरे पोतानो करीने रे जाणो, तो मुज स
मकित वासो ॥ प्रभुजी रे ॥ भलो भूंमो पण भक्त
हुं ताहारो, एवुं जाणीनें देउ दिलासो ॥ प्रभुजी रे
॥ शा० ॥ २ ॥ छेल छवीलो ने देव छोगालो, अलवे
सर अंतरजामी ॥ प्रभुजी रे ॥ हृदयनो वासी प्रभु
मुजने मलियो, तेहने नित्य नमुं शिर नामी ॥ प्रभु
जीरे ॥ शा० ॥ ३॥ हजूर सेवानी रे होंश हैयामां,
हुंतो राखुं हुं गुणरागी ॥ प्रभुजी रे ॥ भीडभंजन
प्रभु भक्तिने जोरे,जालम वासना जागी ॥ प्रभुजी रे
॥ शा० ॥४॥ आप स्वरूप देखाडो ने आछो,पडदो खो
लीने पाछो ॥ प्रभुजी रे ॥ प्रेमउदय पद पगथीये चढ
तां, तिहां न रह्यो लाभनो लाछो ॥ प्रभुजी रे॥शा०॥५॥

॥ अथ नेमप्रभुनुं चोमासुं ॥

॥ माहरा सम जाउ मां रे वाला, लालच लागी तु
मचुं लाला, लालच लागी नेम लटकाला ॥ लालच
लागी केशरीया वाला ॥ मा० ॥ श्रावण वरसे रे
स्वामी, मेली म जाशो अंतरजामी ॥ मा० ॥ १ ॥
माथे मेहुला रे वरसे, एणी ऋतु प्रीतम किम पर व
रसे ॥ भाद्रवडो रे भडाभड गाजे, नदीयें नीर खडा
खड वाजे ॥ मा० ॥ २ ॥ धरती सोहियें रे नीला व
रणी, साहिबा संजम लेजो परणी ॥ आसोयें आश
घणेरी अमने, जीवन जावुं न घटे तुमने ॥ मा० ॥
॥३ ॥ आभूषण पेरीने परवरजो, सखुणा साहिबा रंग

नर रमजो ॥ कार्तिकें कंतजी कां मूको गे, चतुर थ ईने शुं चूको गे ॥ मा० ॥ ४॥ जेवजीनें शोलशें रे रा णी, तुमथी एक नहि निर्वाणी ॥ रूपचंद गाएछे रे चोमासुं, नेमजीशुं मलवानुं दिल गे साचुं ॥-मा० ॥ ॥ ५ ॥ इति श्री चतुर्मासो संपूर्ण ॥

॥ अथ दान, शील, तप अने नावनुं प्रनातियुं ॥

॥ रे जीव जैन धर्म कीजीयें, धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप नावना, जगमां एटलुं सार ॥ रे जी० ॥ १ ॥ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीसर सु खकार ॥ शेलडी रस वोरावियो, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे जी० ॥ २ ॥ चंपापोल उघाडवा, चारिणीयें काढयां नीर ॥ सतीय सुनद्रा जश थयो, शियलें सु र नर धीर ॥ रे जी० ॥ ३ ॥ तप करि काया शोष वी, सरस नीरस आहार ॥ वीरजिणंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ रे जी० ॥४॥ अनित्य नावना नावतां, धरतां निर्मल ध्यान ॥ नरत आरीसा नुवनमां, पाम्या केवल ज्ञान ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ जैन धर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल गया ॥ समय सुं दर कहे सेवतां, वंगित फल पाया ॥ रे जी० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री महावीरजिन गीत ॥

॥ माहारी वीर प्रनुजीने वंदना रे, एनी वंदना ते पापनिकंदना रे ॥ मा० ॥ हांरे हुंतो कलश नरुं ते गंगानीरना रे, हुं तो नवण करुं महावीरनां रे ॥ ॥ मा० ॥ १ ॥ हुं तो प्याला नरुं केसर घोलना रे,

मांहे मृगमद चेळुं बहु मूलना रे ॥ मा० ॥ २ ॥ हुं तो तिलक करुं नवे अंगनां रे, हुंतो फूल चढावुं पंचरंग नां रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ हुं तो पूजा करीनें थाउं पाव ना रे, हुं तो जावूं ते आगल जावना रे ॥मा०॥४॥ ए वा जाव जला सुंदरा जेहेरना रे, तिहां वीर विराजे ज य जय कारना रे ॥ मा० ॥५॥ तिहां संघ सदा आनंद ना रे, तिहां करे कल्याण नित्य वदना रे ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिनस्तवनं ॥

॥ घरे आवोने नेम वरणागिया रे, घरे आवोने श्याम वरणागिया रे ॥ ए आंकणी ॥ शुं कहीयें ते मोहोटा जूपने रे, हुं तो मोही छुं तमारा रूपने रे ॥ ॥ घ० ॥ १ ॥ वालाना मुखनां ते मीठां वेण छे रे, वालानी आंखडलीमां चेन छे रे ॥ घ० ॥ २ ॥ वा लो चित्ततणो ते चोर छे रे, मारा काजळडानी कोर छे रे ॥ घ० ॥ ३ ॥ वाहाले पशु उपर करुणा करी रे, वाहाले जीवदया मनमां धरी रे ॥ घ० ॥ ४ ॥ वाहा ला तोरणथी पाछा वल्या रे, वाहाला गढगिरनारे जइ चढया रे ॥ घ० ॥ ५ ॥ वाहाला गढ गिरनारना घाटमां रे, मुनें नेमजी मल्या छे वाटमां रे ॥ घ० ॥ ॥ ६ ॥ एहवा रूपचंद रंगें मल्या रे, माहारा मनना मनोरथ सवि फल्या रे ॥ घ० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ घृतकल्लोल पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ हो जिनराया जिनेसर, शिव वधूना तमें जो गी ॥ पास जिनेसर अति अलवेसर, संसार सुखना

त्यागी ॥ हो जिनराया जिनेसर, शिव वधूना नमें नो
गी ॥ एआंकणी॥१॥ वंछित पूरण चिंता चूरण,मन शु
द्ध समरे लोगी ॥ राग द्वेप टाली कर्मने गाली, शिव
पंथें थया योगी ॥ हो० ॥ २ ॥ नविजन नावें यात्रा
आवे,प्रणमे लली पाय लागी ॥ नवि पर मेहेरें करुणा
लेहेरें, नाग्य दशा जस जागी ॥ हो० ॥ ३ ॥ सुथरी
गामें वसे शुन्न गामें, तस चरणांबुज रागी ॥ मेघ
लान्न कहे प्रन्नु घृत कल्लोलजीने, नामें नवनिधि
जागी ॥ हो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रनाति स्तवनं ॥

॥ राग रामकली ॥ अजब ज्योति मेरे जिनकी,
तुम देखो माई ॥ अजब ज्योति० ॥ ए टेक ॥ कोडी
सूरज जब एकठा कीजें, होड न आवे मेरे जिनकी ॥
तुम दे० ॥ १ ॥ ऊगमग ज्योति ऊलामल ऊलके,
काया नील वरणकी ॥ तुम दे० ॥२॥ हीर विजय प्रन्नु
पास शंखेश्वर, आशा पूरो मेरे मनकी ॥ तुम दे०॥३॥

॥ अथ प्रनाति स्तवनं ॥

॥ राग वेलावल ॥ जब तुम नाथ निरंजना, तब
में नक्त तुमारो ॥ कल्पवृक्ष जब तुम नए, युगला
धर्म हमारो ॥ जब तु० ॥ १ ॥ जब तुम सायर साहि
बा, तब हुं सरिता समाना ॥ तुं दाता हुं याचका,
बोले बिरुदिवाना ॥ जब तु० ॥ २ ॥ तुं तीरथ महिमा
वडो, तब हुं यात्रा हो आयो ॥ तुं हीरो मेरे कर
चढ्यो, तो हूं ऊवेरी कहायो ॥ जब तु० ॥ ३ ॥ जब

तुं तखत त्रिभुवन तणो, हुं टंकशाली रूपैया ॥ दीया छाप रूपचंदशिरें, गया शिका लहिया ॥ जव० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रभाति स्तवनं ॥

॥ राग वेलावल ॥ हम लोक निरंजन लालके, उरनके नांही ॥ देश वसुं मेरे नाथके, भक्ति नगरी मांही ॥ हम० ॥ १ ॥ वनज करुं प्रभु नामको, जितनो मुख आवे ॥ सवही नाम सोदा करू, पाछो फेर न आवे ॥ हम० ॥ २ ॥ निशिदिन नाम सोदा करे, साचो सो व्यापारी ॥ हृदय कमल मंजूषमें, राखे गुण धारी ॥ हम० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे राम कूं, वनज दूजो न भावे ॥ नाथ निरंजन नामके, हरखें गुण गावे ॥ हम० ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ वीरजीन चउद सुपननुं स्तवनं ॥

॥ राय रे सीधारथ घर पटराणी, नामे त्रिशला सुलक्षणी ए ॥ राज भुवनमांहे पलंगे पोढंतां, चउद सुपन राणीये लह्या ए ॥ १ ॥ पहेले रे सुपनमें गयवर दीठो, बीजे वृषभ सोहामणो ए ॥ त्रीजे सिंह सुलक्षणो दीठो, चोथे लखमी देवता ए ॥ २ ॥ पांचमे पांच वरणनी माला, छठे चंद्र अमिय झरे ए ॥ सातमे सूरज आठमे ध्वजा, नवमे कलश अमिय भर्यो ए ॥ ३ ॥ पद्मसरोवर दशमे दीठो, क्षीर समुद्र दीठो अग्यारमे ए ॥ देवविमान ते बारमे दीठुं, रणजण घंटा वाजतां ए ॥ ४ ॥ रतननो राशि ते तेरमे दीठो, अग्निशिखा दीठी चउदमे ए ॥ चउद सुपन लइ राणीजी जाग्यां.

राय समोवड पोह्लोतलां ए ॥५॥ सुणो रे स्वामी मेंतो सुहणलां लाधां, पाछली रात रलीयामणी ए ॥ रायरे सिद्धारथ पंमित तेड्या, कहो रे पंमित फल एहनुं ए ॥ ६ ॥ अम कुल मंमण तुम कुलदीवो, धन रे म हावीर स्वामी अवतस्था ए ॥ जे नर गावे ते सुख पावे, आनंद रंग वधामणां ए ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शीतलनाथजीनुं स्तवनं ॥

॥ माह्लारे शीतल जिनशुं लागी पूरण प्रीत जो, सा ह्लिवजीनी सेवा नवडख नांजशे रे जो ॥ ह्लांरे जिन प्रतिमा जिनवर सरखी दिलमां जोय जो, नक्ति कर तां प्रज्जुजी खूब निवाजशे रे जो ॥ १ ॥ जेणे जोतां लाधो रत्नचिंतामणि ह्लाथ जो, तेह्लने रे मूकीने कुण ग्रह्ले काचनें रे जो ॥ जेणे मनशुं कीधां जूगानां प चरकाण जो, ते नर बोले सो वातें पण साचने रे जो ॥ २ ॥ जे पाम्या परिगल प्रीतें अमृत पान जो, खारुं जल ते पीवा कह्लो कुण मन करे रे जो ॥ जे घरमां बेगं पाम्यां लखमी जोर जो, धनने काजें दे श देशांतर कोण फरे रे जो ॥ ३ ॥ जेणें सेव्या पूर ण चित्तें अरिह्लंत देव जो, तेह्लना रे मनमांह्ले केम बीजा गमे रे जो ॥ ए तो दोष रह्लित निकलंकी गुण नंमार जो, मनडुं रे अमारुं प्रज्जु साथें रमे रे जो ॥ ४ ॥ मुने मलिया पूरण नाग्ये शीतल नाथ जो, देखीने हूं ह्लरख्यो तन मन रंजियो रे जो ॥ एतो दो लतदायी प्रज्जुजीनो देदार जो, मे तो जोतां प्रज्जुने क

मैदल गंजीयो रे जो ॥ ५ ॥ श्रीविधिपक्षें देहरे सुंदरा नयर मझार जो, आंगी रे नवरंगी शिखर सोहा मणी रे जो ॥ ए तो तेजें दीपे झग मग ज्योति विशा ल जो, सोहें रे मनमोहे मूर्ति रलियामणी रे जो ॥ ६ ॥ श्रीसत्तरएकाशीएं रूअडो नाद्रव मास जो, स्तवन रच्युं ए प्रेमें पर्व पजूसणे रे जो ॥ श्रीसहज सुंदर शिष्य बोले एणी परें वाणी जो, नावें रे नित्य लान्न कहे हरपे घणे रे जो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनं ॥

॥ वाला सुमति जिणेसर सेवीएं रे, वाला सुम ति तणा बे दातार रे ॥ वाजां रे वाजे धर्मनां रे ॥ वा ला मेघराया सुत सुंदरू रे, वाला मंगला मात म ल्हार रे ॥ वाजां रे वाजे धर्मनां रे ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ वाला मंगलवेल वधारवा रे, वाला उमह्यो बे ए जलधार रे ॥ वा० ॥ वाला रूप अनोपम जि नतणुं रे, वाला मनमोहन सुखकार रे ॥ वा० ॥ २ ॥ वाला सोवन वान शरीरनो रे, वाला इक्ष्वा कुवंश वधार रे ॥ वा० ॥ वाला देई प्रज्जुदान संवत्सरी रे, वाला लीधो बे संजमन्नार रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ वाला आठ करम अरि जीतिने रे, वाला पोहोता बे मुक्तिमझार रे ॥ वा० ॥ वाला पूरव लाख चालीश नुं रे. वाला जीवित जेहनुं सार रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ वाला माणक मुनिमन रंगशुं रे, वाला चाहे बे सुमति देदार रे ॥ वा० ॥ वाला एहवा प्रज्जु गुण गायवा

रे, वाला उपजे हर्ष अपार रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवनं ॥

॥ नारे प्रभु नही मानुं ॥ नही मानुं रे अवरनी आण ॥ नारे प्र० ॥ म्हारे ताहारुं वचन प्रमाण ॥ नारे प्रभु० ॥ ए आंकणी ॥ हरिहरादिक देव अनेरा, ते दीठा जगमांय रे ॥ भामिनी भरम भृकुटीयें भूल्या, ते मुजने न सुहाय ॥ नारे० ॥ १ ॥ केइक रागीने केइक द्वेषी, केइक लोभी देव रे ॥ केइक मदमाया मां भरिया, केम करीएं तसु सेव ॥ नारे० ॥ २ ॥ मुद्रा पण तेमां नवि दीसे प्रभु, तुजमांहेली तिल मात रे ॥ ते देखी दिलडुं नवि रीझे, शी करवी तेहनी वात ॥ नारे० ॥ ३ ॥ तु गति तुं मति तुं मुझ प्रीतम, जीव जीवन आधार रे ॥ रात दिवस स्वपनांतर तुंही, तुं माहारे निरधार ॥ नारे० ॥ ४ ॥ अवगुण सहु उवेखीने प्रभु, सेवक करीने निहाल रे ॥ जग बंधव ए विनती मोरी, माहारां सवि दुःख दूरें टाल ॥ नारे० ॥ ५ ॥ चोवीशमा प्रभु त्रिभुवन स्वामी, सिद्धारथना नंद रे ॥ त्रिशलाजीना न्हानडीया प्रभु, तुम दीठे अति आणंद ॥ नारे० ॥ ६ ॥ सुमति विजय कवि रायनो रे, रामविजय कर जोड रे ॥ उपगारी अरिहंतजी, माहारा भव भवना बंध छोड ॥नारे०॥७॥

॥ अथ ऋषभ देवजीनो बारमासो ॥

॥ प्रथम जिणंद प्रणमुं पाया, जननी मरुदेवी जाया ॥ ऋषभजी धूलेवा नगर राया, जगत गुरु

जिनवरने नजीएं ॥ विषय कषाय कपट तजीएं ॥ ज
गत० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कार्तिकें केसरीयो मलशे,
जनम जनमनां दुःख टलशे, माहारा मन वंछित
फलशे ॥जग०॥२॥ मागशिरे मन मोह्युं माहारुं,के तुरत
दरिसण थयुं ताहारुं, ताहरी सूरत पर वारु वारु ॥ ज
ग० ॥ ३ ॥ पोषे प्रीतडली पालो, त्रण भुवनमांहे
अजुआलो, तुमे छो दीन तणा दयालो ॥ जग०॥४॥
माहा शुदि पंचमी दिन आवे, मोरली सहुको वंधावे,
गुणी जन राग वसंत गावे ॥ जग० ॥५॥ फागुणे फा
ग खेलूं तुमशुं, केसर कस्तूरीयें रमशुं, विलेपन
करी सदा नमशुं ॥ जग० ॥ ६ ॥ चैत्रें चित्त लागुं चर
णे, फूल गुलाल मुगट भरणे, सेवा तारण ने तरणे ॥
जग० ॥ ७ ॥ वैशाखें फूली वनराई, त्रीजनी आखा
त्रीज आई, केशरीआशुं साची सगाई ॥ जग० ॥
८ ॥ जेठे जिन पासें आवुं, के शीतल जल लई न्हवरा
वुं, पंखो करतां पुण्य पावुं ॥ जग० ॥ ए ॥ आषाढें मे
घ घणा गाजे, ढोल मृदंग तिहां वाजे, एणे दरवारे
सदा छाजे ॥ जग० ॥१०॥ श्रावण वरसे अति सारो,
वपैया मोर दादुर प्यारो, गुणीयल गाये भली सारो
॥ जग० ॥ ११ ॥ श्रावणे सरवडियां वरसे, वपैया
मोर दादुर पीसे, गुणिजन राग मल्हार गाशे ॥
जग० ॥१२॥ भाद्रवे भविक करो भगति, परव पजू
सण करो जुगति,पूजा भणावो भलि युगति ॥ जग० ॥
॥१३॥ आशोयें पूरीजें आशा, घर घर दीपक बहु था

शा, हरपें गाये रूपचंदासा ॥ जग० ॥ १४ ॥ बारे मास करुं सेवा, रूपचंदेव मागुं मेवा, देजो दीनत णा देवा ॥ जग० ॥ १५ ॥ इति बारमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीएं शेत्रुंजा गिरि, जात्रा न वाणुं करीएं ॥ सहस कोडि भव पातक तूटे, शेत्रुंजा सामो डग भरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ पूरव नवाणुं वार ॥ शे० ॥ जा० ॥ रूपभ जिणंद समोसरीएं, पुंडगिरि ॥ जा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पुंडरीक पद जपी मन हर खे, अध्यवसाय शुभ धरीयें ॥ शे० ॥ जा० ॥ सात छठ दोय अठम तपस्या, करी चढीए गिरिवरीयें ॥ शे० ॥ जा० ॥ २ ॥ पडिक्कमणां दोय विधिशुं करीएं, पाप पडल परिहरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ भूमि संथारो ना री तणो संग, दूरथकी परिहरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथें पद चरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ कलिकालें ए तीरथ मो होटुं, प्रवहण जेम भर दरीए ॥ शे० ॥ जा० ॥ ४ ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंतां, पद्म कहे भव तरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ मालणनुं गीत प्रारंभः ॥

॥ संघ पूछे फूल वाडीयें, मालण कवण सो मा गीनां फूल ॥ कवण सुगंधा जाणीएं, मालण कवण सो फूलनुं मूल ॥ तुं छे मालण कोण राजनी ॥ १ ॥ चंपक केतकी केवडो, मालण सेवंत्री ने जासूल ॥ मा

लती मलकंतो मोघरो, मालण जाई अशोक अ मूल ॥ तुं बे माल० ॥ २ ॥ कवणें रे चंपो वावीयो, मालण कवणें गुंथ्यां एनां फूल ॥ कवण मला रें लइ मूलव्यां, मालण केणें चढाव्यां अमूल ॥ साची मालण जिनराजनी ॥ ए आंकणी ॥ ३ ॥ मालियें चंपो वावीयो, मालण चतुरें गुंथ्यां एनां फूल ॥ नविक मलारें लइ मूलव्यां, मालण प्रनुने चडाव्यां अमूल ॥ सा० ॥४॥ कहे रे मालण सुणो नविजनो, एणी वाडीएं बे बहु फूल ॥ सरस सुगंधां जाणीएं, तेहमां चंपक कली बे अमूल ॥ सा० ॥ ५ ॥ शेत्रुंजा गिरिवर नेटवा, मालण आव्यो बे कन्नो संघ ॥ देशावडी श्रावक वसे, तेहमां संघमुखी मानसिंघ ॥ सा० ॥ ६ ॥ नरनव दोहिलो पामीने, मालण पूजवा आदि जिणंद ॥ सफल जनम करी सुन्नहो, मालण लेशो परमानंद ॥ सा० ॥ ७ ॥ सत्तरनेद सुविधें करी, मालण साहामिवत्सल सोनाय ॥ सौनाग चंद सुगुरु लही, मालण स्वरूपचंद गुण गाय ॥ सा० ॥८॥

॥ अथमहावीरजिनस्तवनं ॥

॥ वीर कुमरनी वातडी,केने कहियें ॥ हांरे केने कहिये रे केने कहियें ॥ नवि मंदिर वेसी रहियें, हांरे सुकुमार शरीर ॥ वी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बालपणाथी लाफको नृप नाव्यो, हांरे मली चोशठ इंद्रें मल्हाव्यो ॥ इंद्राणी मली हुलराव्यो, हांरे गयो रमवा काज ॥ वी० ॥२॥ बोरु उगां बलां लोकनां केम र

हियें, हांरे एनी मावडीने शुं कहियें ॥ कहियें तो अ देखां थश्यें, हांरे नाशि आव्यां बाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ आमलकी क्रीडा वशें वींटाणो, हांरें मोटो नोरिंग रो पे नराणो ॥ वीरें हाथे जालीने ताण्यो, हांरे काढी नाख्यो दूर ॥ वी० ॥४॥ रूप पिशाचनुं देवता करी चलियो, हांरे मुफ पुत्रने लेइ उबलियो ॥ वीर मु ष्टि प्रहारें वलियो, हांरे सांनलीयें एम ॥ वी० ॥ ५ ॥ त्रिशला माता मोजमां एम कहेती, हांरे सखीयोने उलंना देती ॥ क्षणक्षण प्रज्ञु नामज ले ती, हांरे तेडावे बाल ॥ वी० ॥ ६ ॥ वाट जोवंतां वीरजी घरे आव्या, हांरे माता त्रिशलाएं नवरा व्या ॥ खोले वेसारि हुलराव्या, हांरे आलिंगन दे त ॥ वी० ॥ ७ ॥ यौवन वय प्रज्ञु पामतां परणावे, हांरे पछी संजमशुं ढील लावे ॥ उपसर्गनी फोज ह गावे, हांरे लीधुं केवल नाण ॥ वी० ८ ॥ कर्म सूडन तप नांखियुं जिनराजें, हांरे त्रण लोकनी ठ कुराई गाजे ॥ फूल पूजा कही शिव काजें, हांरे न विने उपगार ॥ वी० ॥ ए ॥ शाता अशाता वेदनी क्ष य कीधुं, हांरे आपें अक्षय पद लीधुं ॥ शुनवीरनुं कारज सीधुं, हांरे नांगे सादि अनंत ॥ वी० १० ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणनुं स्तवन ॥

॥ आंखडीयें अमें आज शत्रुंजो दीगे रे ॥ ए दे शी ॥ सुणजो साजन संत, पजूसण आव्यां रे ॥ तुमें पुण्य करो पुण्यवंत, नविक मन नाव्यां रे ॥ वीर जिणे

सर अतिअलवेशर ॥ वाला मारा॥ परमेश्वर एम बोले रे ॥ पर्वमांहे पजूसण मोहोटां, अवर न आवे तोलें रे ॥पजू०॥तुमें०॥न०॥१॥ चौपगमांहे जेम केशरी मोहोटो ॥वा०॥ खगमां गरुड ते कहियें रे॥नदीमांहे जेम गंगा मोहोटी,नगमां मेरु लहियें रे ॥पजू०॥तु०॥न० ॥२॥ नूपतिमां नरतेसर नांख्यो ॥वा०॥ देवमांहे सुरेंद्र रे॥ तीरथमां शेत्रुंजो दाख्यो,ग्रहगणमां जेम चंद्र रे॥ पजू० ॥तु० ॥न०॥३॥ दसरा दीवालीने होली ॥ वा० ॥ अखात्रीज दीवासो रे॥ वलेव प्रमुख बहुला छे बीजा, पण ए मुक्तिनो वासो रे ॥पजू०॥तु०॥न०॥४॥ ते माटे अमार पलावो ॥ वा० ॥ अठाइ महोछव कीजें रे॥ अठम तप अधिकाइयें करीने, नरनव लाहो लीजें रे ॥पजू०॥तु०॥न० ५॥ ढोल ददामा नेरी नफेरी ॥वा०॥ कल्पसूत्रने जगावो रे॥ फांफरना फमकार करीने, गोरीनी टोली मली आवो रे ॥पजू० ॥ तु०॥ न० ॥६॥ सोनारूपाने फूलडे वधावो ॥ वा० ॥ कल्पसूत्रने पूजो रे ॥ नव वखाण विधियें सांनलतां, पापमेवासी धूजो रे ॥पजू०॥७॥ तु० ॥ न० ॥ ए अठाइनो मेहोत्सव करतां ॥ वा० ॥ बहु जिन जगउद्धस्या रे ॥ विबुध विनीत वर सेवक एहथी,नवनिधि ऋद्धि सिद्धि वस्या रे ॥ पजू० ॥ तु० ॥ न० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ घृतकल्लोल पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ घृतकल्लोल प्रनु पासजिणंद, अश्वसेनरायाकुल उपना दिणंद ॥ मोरा पासजी हो लाल, प्रनुमुख

देखी मारो मन हींसे राज ॥ ए आंकणी ॥ माता वामादेवि जायो पुत्र रतन, जेणें नाग नागणीना कीधां वे जतन ॥ मोरा० ॥ प्रनु० ॥ १ ॥ कमवनो मद गाल्यो वाले कीधां रूडां काज, कलिकालमांहे जेनो परतो वे आज ॥ मो० ॥ मारग नूलाने वालो आपे वे साद, वली आपे संपदाने टाले विषवाद ॥ मो० ॥ प्रनु० ॥ २ ॥ वेडीयो कापेने वालो तारे वे जिहा ज, समस्यां आपे वालो वंवित काज ॥ मो० ॥ देशी विदेशी आवे संघ अनेक, सुथरीमां वास कीधो राखी वाले टेक ॥ मो० ॥ प्रनु० ॥ ३ ॥ मोणसी अंचल जीनुं जात्रानुं मन्न, संघ लइने आव्या सुथरी प्रसन्न ॥ मो० ॥ संवत अढार वेआसीयें जाण, फागुण वदि चोथे गायो गुणखाण ॥ मो० ॥ प्रनु० ॥ ४ ॥ नेट्या श्री घृत कल्लोल जिनराज, पूजा सत्तर नेदी करे शुन्न काज ॥ मो० ॥ मेघ शेखर गुरुना सुपसाय, शिष्य गुलाव शेखर गुण गाय ॥ मो० ॥ प्रनु० ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषन्नजिन स्तवनं ॥

॥ आज उजम वे रे अधिको, जोवा दरिसण आ दीसरको ॥ ते मुने लागे रे मीठुं, प्रनुजीनुं ज्यारें द रिसण दीठुं ॥ आज० ॥ केशर चंदन रे लीजें, घसी करी जिनजीनी पूजा कीजें ॥ आज० ॥ १ ॥ पूजानां फल वे रे रूडां, तेहथी आठ कर्म खपे कूडां ॥ नावें नावना रे नावो, वली प्रनुना गुण रंगें गावो ॥ आज० ॥ २ ॥ आजूनी आंगीनो रे लटको,

माह्रारा प्रभुजीना मुखनो मटको ॥ मटकें मोह्या रे इं दा, वदन कमल जाणे पूनम चंदा ॥ आज० ॥ ३ ॥ मिठडी मूरति रे तारी, ते घणुं मुजने लागे ले प्यारी ॥ नाभिराया नंदन रे नीको, माह्रारा प्रभुजीनो सबलो टीको ॥ आज० ॥ ४ ॥ विवेक विजयनो रे शिष्य, हर्षे हुं प्रणमुं निश दीस ॥ पूर्व पुण्यें रे पामी, भेट्यो हुं मोरा अंतरजामी ॥ आज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ लय लागी रे लय लागी रे, गोडी पासजिणंदसुं लय लागी ॥ आतम रूपीने अकल सरूपी, लोकालोक प्रकाशी रे ॥ गो० ॥१॥ चोशठ इंद्र करे तोरी सेवा, इंद्राणी ललि ललि पाय लागी रे ॥गो०॥२॥ ज्ञानविम लसूरी इणी परें बोले, प्रभुआवागमण निवारी रे ॥३॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ तुं मेरे मनमें तुं मेरे दिलमें, नाम जपूं पल पल में हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥ शांतिजिणेसर साहेब सा चो, शांतिकरण एक पलमें हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥१॥ निर्मल ज्योति वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चद वा दलमें हो ॥ प्रभुजी ॥तुं०॥ मेरो तो मन प्रभु तुमसें लीनो, मीन वसत जिम जलमें हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥ २ ॥ भव भव भमतां में दरिसण पायो, आशा पूरो एक पलमें हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥ जिनरंग कहे प्रभु शांतिजिणेसर, देख्यो ज्युं देव सकलमें हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥ ३ ॥ इति शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं ॥

॥ प्रभुजी रे प्रभुजी नाम जपुं मन माहरे, प
सेवकनी चित्त नही को ताहरे ॥ नीरागी जिनरा
निरागीशुं मले, तुमसेंती एक वार थाये भवड
टले ॥ १ ॥ रूपरहित जिनराज कहो किहां दे
एं, विण देखे दोय नेत्र सफल केम लेखिएं ॥ जेह
रे नेत्र हजार ते नर पण ताहरो, देखे नही देव
किस्यो बल माहरो ॥ २ ॥ पंचम ज्ञान प्रकाश श
होय जेहने, अरिगंजन अरिहंत प्रगट छे तेहने
तेहनो तो लव लेश नही को इण समे, एहवो
न उपाय जे जिन तुमथी मले ॥ ३ ॥ कुगुरु कु
कुधर्म तणे वश हूं पड्यो, जग गुरु ताहरो धर्म म
रे कर नवि चड्यो ॥ आपणपे अहंकार तणे वश
हियो, तेणे करी तुम दरिसण, उदय नवि आवि
॥४॥ तरण तारण जिहाज समो जिनजी मल्यो,भा
मननी भ्रांति सहु संशय टल्यो ॥ क्रिया दुक्कर कार
थाए आजनें, सद्गति लहीएं ताम प्रसादें रा
॥ ५ ॥ अमची विनति एह तमें अवधारजो, क
ते आठे कर्मने दूरें वारजो ॥ वीनति वाचक भ
सागरनी जाणवी, तिम करो त्रिभुवन स्वामी, से
तारी पामवी ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ रूषभजिन स्तवनं ॥

॥ मोसें नेह धरी महाराज आज राजराज द
दीजीए, दर्श दीजीएं रे भव दुख छीजीएं ॥ मो०

ए टेक ॥ रे तुम ज्ञानी जगत तात त्रात तुम सरन री
जीएं, शरन रीजीएं तो नव डुख डीजीएं ॥ मो०
॥ १ ॥ नरप नाजिजीके नंद चाहत इंद चंद विंद,
जयो जयो जिणंद नित्य वंद कीजीएं ॥ मो० ॥ २ ॥
तुम धूलेवा नाथ मोक्ष साथ अचल आदिब्रह्म, ग्र
ही हाथ प्रजु रतनको उद्धार कीजीएं ॥ मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ जाग जाग रयण गई, जोर जयो प्यारे ॥ पंच
कूं प्रपंच कर, वशकर यारे ॥ जाग जाग रयण गइ,
जोर जयो प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तृपानामें मी
न मरे, जोगमें मत्तंगा ॥ श्रवणमें कुरंग मरे, नयन
मे पतगा ॥ जा० ॥ २ ॥ वासनामें जमर मरे, नासा
रस लेतां ॥ एक एक इंडीसंग, मरे जिउ केता ॥
जा० ॥ ३ ॥ पंचके पड्यो तुं फंद, क्युं कर वश
आवे ॥ मार तुं मन इछा जूत, ज्युं निरंजन पावे
॥ जा० ॥ ४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ तुं हि नाथ हमारो रे ॥ जिनपति ॥ तूंहि नाथ हमा
रो ॥ योग क्षेमंकर जविक सकलके, सेवक हैयामांहे
धारो रे ॥ जि० ॥ तूं० ॥ १ ॥ ए टेक ॥ जो गुन पाए
नही सो मिलावत ॥ पाए गुनकूं सुधारो ॥ अनजि
राम कलिमल करो दूरें, अब मोहे पार उतारो रे
॥ जि० ॥ तूं०॥ २ ॥ त्रिजुवन नाथ सार करो मोरी,
करुणा नजर निहालो ॥ पास चिंतामण जानुचंदकी,

एहि विनति अवधारो रे ॥ जि० ॥ तूं हि० ॥ ३ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल वंदोरे नर नारी, हांरे नरनारी हो नर नारी, सिद्धाचल वंदो रे नर नारी ॥ नाभिराया मरु देवा नंदन, रूषभदेव सुखकारी ॥ सि० ॥ १ ॥ पुंडरिक पमुहा मुनिवर सीधा, आत्मतत्त्व विचारी ॥ सि० ॥ २ ॥ शिवसुखकारण भवदुख वारण, त्रिभुवन जग हितकारी ॥ सि० ॥ ३ ॥ समकित शुद्ध करण ए तीरथ, मोह मिथ्यात निवारी ॥ सि० ॥ ४ ॥ ज्ञान उद्योत प्रभु केवल धारी, भक्ति करुं एक तारी ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ केशरीयाजीनुं स्तवन ॥

॥ भमरो उभेरे रंग मोहोलमांरे ॥ ए देशी ॥ आ ज सफल दिन माहरो रे, वांद्यां श्री धूलेवा राय रे ॥ केशरीयोजी भेटियो रे ॥ मेवाड वागड विचें शो भतो रे, बावन जिनालो प्रासाद रे ॥ के० ॥ १ ॥ मे रु सम उत्तंग देहरो रे, कोरणी अतिहि श्रीकार रे ॥ के० ॥ थंभे थंभे शोभे पूतली रे, जाणीयें दे विमान रे ॥ के० ॥ २ ॥ सुवर्णनो दंड कलश अ रे, रूप्प कपाट जोडि दोय रे ॥ के० ॥ रत्नें जडि सुवर्ण अंगिका रे, तेजें झलामल भाण रे ॥ के० ॥३॥ प्रभुजोनी मूरति मोहनी रे, तृप्ति न पामे न ण रे ॥ के० ॥ महिमावंत मोहोटा तुमें रे, जग स नमे जस, पाय रे ॥ के० ॥ ४ ॥ नित पूजे प्रभु भा

शुं रे, वंछित फल लहे ताम रे ॥ के० ॥ आशा धरी ने हुं आवीयो रे, द्यो दरिसण महाराज रे ॥ के० ॥ ५ ॥ देशावरी संघ आवे घणा रे, यात्रा करण नितमेव रे ॥ के० ॥ केशरना कीच मची रह्या रे, नित होए मंगलमाल रे ॥ के० ॥ ६ ॥ गोमुख यक्ष चक्केसरी रे, शासन देवता एह रे ॥ के० ॥ कलियुगमां साचो धणी रे, परता पूरणहार रे ॥ के० ॥ ७ ॥ शेठ नरसिंहनाथाना संघमां रे, वर्त्ते छे जयजयकार रे ॥ के० ॥ संवत उगणीश बारोत्तरे रे, वैशाख वदि बीज सार रे ॥ के० ॥ ८ ॥ तिणे दिन प्रभुजीने वांदिया रे, संघ सर्वे गहघट रे ॥ के० ॥ पूजा साहामि वछल नित प्रतें रे, खरचीने लाहो लीध रे ॥ के० ॥ ए ॥ आठ दिवस करी जातरा रे, संघ सहू हर्षेण रे ॥ के० ॥ सौभाग्येंद्रशिष्य देवचंद्रने रे, यात्रा थई सुखकार रे ॥ के० ॥ १० ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ में नही जाण्यो नाथजी, मोसुं दूर पठाया ॥ पीछेसें वर्द्धमान जी, शिवमेहेल सधाया ॥ में० ॥ ॥ १ ॥ वचन तुमारो मानके, में दीक्षा लीनी ॥ लोक लाज सब त्यागके, घर घर भिक्षा कीनी ॥ में० ॥ २ ॥ दरस तुमारो देखतो, रहेतो रंग रातो ॥ वचन तुमारो शिर धरी, गुण तोरा गातो ॥ मे० ॥ ३ ॥ जिहां जिहां संशय उपजे, तो शुं पूछी लीजें ॥ ज्ञान सुधारसकी कथा, कहो कोणशुं कीजे ॥ मे० ॥

सही सही तूं वीतराग हे, नही रागकी रेखा ॥ शत्रु मित्र ते रे सम नए, सो में नजरें देखा ॥ में० ॥ ॥ ५ ॥ शुक्लध्यान श्रेणें चढया, गुरु गौतम राया ॥ अनित्य नावना नावतां, केवल पद पाया ॥में० ॥ ६ ॥ पूरन ब्रह्म प्रगट नया, नवि जाये छिपाया॥ रूपचंद नक्ते करी, चरणे शिर लाया ॥ में० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीवृद्धचैत्यवंदन प्रारंनः ॥

॥ ढाल पेहेली ॥ केवलनाणी श्रीनिरवाणी, सागर महाजस विमल ते जाणी ॥ सर्वानुनूति श्रीधर गुण खाणी, दत्त दामोदर वंदूं प्राणी ॥ १ ॥ सुतेज स्वामी मुनिसुव्रत जाणी, सुमतिने शिवगति पंचम नाणी ॥ अस्तांग नेमीसर अनिल ते जाणी, यशोधर सेवो मनमांहि आणी ॥ २ ॥ कृतारथ जपतां नवि होय हाणी, धमीसर पाम्या शिवपुर राणी ॥ शुद्धमति शिवकर स्यंदन गाणी, संप्रतिना गुण गाए इंड्राणी ॥ ३ ॥ वाचक मूला कहे उगते नाणी, तवन नणो जिम थाउं नाणी ॥ ए चोवीशी नित नित गाणी, मुक्ति तणां सुख जिम ल्यो ताणी ॥ ४ ॥ ढाल बीजी॥ आदें अजितज रे, संनव अनिनंदन नणुं ॥ श्री सुमतिज रे, पद्मप्रनजीना गुण थुणुं ॥ श्री सुपारस रे, चंड्रप्रन जग जाणीयें ॥ सुविधि शीतल रे, श्रेयांस हरखें वखाणीयें ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ वखाणीयें श्री वासपूज्य, विमल अनंत धर्म शांति ए ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रत, नमि नेम ध्याउं चित्त ए ॥ सूर धीर पार्श्व

वीर, वर्त्तमानें जिनवरा ॥ कर जोडी वाचक नणे मूला, स्वामी सेवक सुखकरा ॥ २ ॥ ढाल त्रीजी ॥ पद्मनान सूरदेव, सुपार्श्व स्वयंप्रन होइ ॥ सर्वानुनूति देवसुत, उदय पेढालज जोइ ॥ १ ॥ पोटिल सत्की र्त्ति, मुनिसुव्रत अमम निःकषाय ॥ निपुलायक निर्म म, चित्रगुप्ति वंदूं पाय ॥ २ ॥ समाधि सुसंवर, यशो धर विजय मल्ली देव ॥ अनंत वीरज नइकृत, तेह्नी कीजें सेव ॥ ३ ॥ अनागत जिनवर, होशे तेह्नां ना म ॥ नणे वाचक मूला, तेह्ने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥ ॥ ढाल चोथी ॥ महाविदेह पंच मझार, प्रत्येकें जि न चार ॥ सीमंधर जुगमंधर, बाहु सुबाहु अ सुखक र ॥ १ ॥ सुजात स्वयंप्रन स्वामी, उसनानन ले हुं ना मी ॥ अनंतवीरज देव, सूरप्रनु करुं अ सेव ॥ २ ॥ विशाल वज्रंधर साहु, चंज्ञानन चंइबाहु ॥ नुजंग ई श्वर गावं, नेमी प्रनु चित्त ए लावं ॥ ३ ॥ वीरसेन महानइ वंदूं, देव जसा दीठे आनंदूं ॥ अजितवीरि य वंदन, शाश्वता रुपनाचंज्ञानन ॥ ४ ॥ वर्द्धमान वारिपेण ईश, ए हुआ जिनचोवीश ॥ एवा ढनु ए जिनवर, वाचक मूला कहे सुखकर ॥ ५ ॥ ढाल पां चमी ॥ हवे पायाले लोक मध्य, जिहां असुर कुमार ॥ लाख चोशठ जिननुवन अछे, तिहां करु जूहार ॥ ॥ १ ॥ नागकुमारमांहि कह्या, तिहां लाख चोराशी ॥ एता जिनहर तिहां नमुं, थाउं समकितवासी ॥ ॥ २ ॥ सोवन कुमार मध्य लाख, बहुंतेर प्रासाद ॥

बहुं लाख वायुमध्य, सुणियें सुरनाद ॥ ३ ॥ दीपकु मार दिशाकुमार, वली उदधिकुमार ॥ विद्युत स्तनितकु मार अने, वली अग्निकुमार ॥४॥ए दए स्थानक जाणि यें, प्रत्येकें जिनहर ॥ बहुंतेर बहुंतेर लाख तिहां, नवि अण जिनसुखकर ॥ ५ ॥ एवंकारें सवि मली, बहु तेर तिहां लाख ॥ सात कोडि जिनहर नमुं, श्री जि नवर नांख ॥ ६ ॥ लाख सात निव्यासी कोडी, अने तेरशें कोडी ॥ जिन पडिमा श्रीजिन तणी, वंदूं बे कर जोडी ॥ ७ ॥ असंख्या व्यंतर जोइशी, असं ख्या जिनहर ॥ असंख्य पडिमा जिन तणी, नमिय नहिं डुर्गति मर ॥ ८ ॥ वाचकमूला कहे देव, देउ सुमति सदा मुफ ॥ जिनवचनें हुं लीन थइ, गाउं जिनजी तुफ ॥ ए ॥ ढाल बही ॥ सोहम ईशान स नतकुमार ए, माहिंद बंभरे लांतक सार ए॥त्रुटक ॥ सार शुक्र अने सहसारह, आनत प्राणत आरण ॥ अच्चुत नवग्रैवेयक त्रिक तिहां, पंच अनुत्तर तार ए ॥ अनुक्रमें प्रासाद कहीयें, लाख सहस शत सं खया ॥ बत्तीस अठावीस बारह, अठ चउ लख अ रकया ॥१॥ चाल ॥ पन्नास चालीश ब सहस जिनहरा, दोदो दोढज दोढज सतवरा ॥ त्रुटक ॥ वरा सत्तवर इग्यारोत्तर, सत्तोत्तर शो जाणीयें ॥ एकशो ऊपर पंच अनुत्तर, अनुक्रमें वखाणीयें ॥ सवे मलि जि नहर जिनहर, लाख चोराशी साख ए ॥ सहस स त्ताणुं आगला, तिहां वीश ने त्रण दाख ए ॥२॥ चा

ल ॥ एक सो कोडी रे, बावन कोडी ए ॥ लाख चोरा
णुं रे, संख्या जोडीएं ॥ त्रुटक ॥ जोडीएं चोशठ स
हस एकशो, चालीशें तिहां आगलो ॥ जिनप्रासाद
एकसो असिअ लेखें, वंदूं प्रतिमा उजली ॥ चैत्यसं
ख्या ऊर्ध्व लोकें, वीर वचनविख्यात ए ॥ वाचक मू
ला कहे नणजो, स्तवन ए परन्नात ए ॥ ३ ॥
॥ ढाल सातमी ॥ वेयढगिरि सिंतिर सय जिनहर,
वृषधरना तिहां त्रीश जी ॥ कुरुडुमनां दश जिनहर
बोल्या, गजदंतें तिहां वीशजी ॥ १ ॥ असिअ ते
जिनहर कुरु्रप परिधें, असिअ वखारे जाणुं जी ॥
मेरुतणा पंचाशो जिनहर, इखुकारे चार वखाणुं जी
॥ २ ॥ मानुपोत्तर पर्वत तिहां चारज, नंदीसरना वी
श जी ॥ कुंमल रुचक तिहां चार चार जिनहर. कुप
नादिक तिहां ईश जी ॥ ३ ॥ पंचसया इग्यारें अ
धिका, जिनहर तिर्छे लोकें जी ॥ पडिमा एकशठ स
हस चारसें, बोली सघले थोकें जी ॥ ४ ॥ अधो
ऊर्ध्वने तिर्छे लोकें, सवे मली कोडी आठे जी ॥ ला
ख उप्पन्न ने सहस सत्ताणुं, पणसय चोत्रीश पाठें
जी ॥ ५ ॥ जिन पडिमा पन्नरसें कोडी, बेंतालीश
वली कोडी जी ॥ लाख पंचावन सहस पणविस, प
णसय चालीश जोडी जी ॥ ६ ॥ एतां तवन नणे
जे नावें, प्रह उगमते सूरे जी ॥ वाचकमूला कहे
गुण गातां, डुर्गति नासे दूरें जी ॥ ७ ॥ ढाल आठ
मी ॥ अष्टावय समेत शिखरगिरि ॥ साजनजिअ ॥

ब्धुं लाख वायुमध्य, सुणियें सुरनाद ॥ ३ ॥ दीपकु मार दिशाकुमार, वली उदधिकुमार ॥ विद्युत स्तनितकु मार अने, वली अग्निकुमार ॥४॥ए बए स्थानक जाणि यें, प्रत्येकें जिनहर ॥ बहुंतेर बहुंतेर लाख तिहां, नवि अण जिनसुखकर ॥ ५ ॥ एवंकारें सवि मली, बहु तेर तिहां लाख ॥ सात कोडि जिनहर नमुं, श्री जि नवर नांख ॥ ६ ॥ लाख सात निव्यासी कोडी, अने तेरशें कोडी ॥ जिन पडिमा श्रीजिन तणी, वंदूं वे कर जोडी ॥ ७ ॥ असंख्या व्यंतर जोइशी, असं ख्या जिनहर ॥ असंख्य पडिमा जिन तणी, नहिं डुर्गति मर ॥ ८ ॥ वाचकमूला कहे देव, देउ सुमति सदा मुऊ ॥ जिनवचनें हुं लीन थइ, गाउं जिनजी तुऊ ॥ ए ॥ ढाल बठी ॥ सोहम ईशान स नतकुमार ए, माहिंद वंजरे लांतक सार ए॥त्रुटक ॥ सार शुक्र अने सहसारह, आनत प्राणत आरण ॥ अच्युत नवग्रैवेयक त्रिक तिहां, पंच अनुत्तर तार ण ॥ अनुक्रमें प्रासाद कहीयें, लाख सहस शत सं खया ॥ बत्तीस अठावीस वारह, अठ चउ लख अ रकया ॥१॥ चाल ॥ पन्नास चालीश ब सहस जिनहरा, दोदो दोढज दोढज सतवरा ॥ त्रुटक ॥ वरा सत्तवर इग्यारोत्तर, सत्तोत्तर शो जाणीयें ॥ एकशो ऊपर पंच अनुत्तर, अनुक्रमें वखाणीयें ॥ सवे मलि जि नहर जिनहर, लाख चोराशी साख ए ॥ सहस स त्ताणुं आगला, तिहां वीश ने त्रण दाख ए ॥२॥ चा

ल ॥ एक सो कोडी रे, बावन कोडी ए ॥ लाख चोरा
णुं रे, संख्या जोडीएं ॥ त्रुटक ॥ जोडीएं चोशठ स
हस एकशो, चालीशें तिहां आगलो ॥ जिनप्रासाद
एकसो असिअ लेखें, वंदूं प्रतिमा उज्जली ॥ चैत्यसं
ख्या ऊर्ध्वे लोकें, वीर वचनविख्यात ए ॥ वाचक मू
ला कहे भणजो, स्तवन ए परभात ए ॥ ३ ॥
॥ ढाल सातमी ॥ वेयढगिरि सिखिर सय जिनहर,
वृषधरना तिहां त्रीश जी ॥ कुरुडुमनां दश जिनहर
बोल्या, गजदंतें तिहां वीशजी ॥ १ ॥ असिअ ते
जिनहर कुरुडुम परिधें, असिअ वखारे जाणुं जी ॥
मेरुतणा पंचाशी जिनहर, इखुकारें चार वखाणुं जी
॥ २ ॥ मानुषोत्तर पर्वत तिहां चारज, नंदीसरना वी
श जी ॥ कुंमल रुचक तिहां चार चार जिनहर. रुप
भादिक तिहां ईश जी ॥ ३ ॥ पंचसया इग्यारे अ
धिका, जिनहर तिर्छे लोकें जी ॥ पडिमा एकशत स
हस चारसें, बोली सघले थोकें जी ॥ ४ ॥ अधो
ऊर्ध्वने तिर्छे लोकें, सवे मली कोडी आठें जी ॥ ला
ख बप्पन्न ने सहस सत्ताणुं, पणसय चोत्रीश पाठे
जी ॥ ५ ॥ जिन पडिमा पन्नरसें कोडी, बेंतालीश
वली कोडी जी ॥ लाख पंचावन सहस पणविस, प
णसय चालीश जोडी जी ॥ ६ ॥ एतां तवन भणे
जे भावें, प्रह ऊगमते सूरें जी ॥ वाचकमूला कहे
गुण गातां, डुर्गति नासे दूरें जी ॥ ७ ॥ ढाल आठ
मी ॥ अष्ठावय समेत शिखरगिरि ॥

रेवत गिरि सित्तुंज ॥ गजपद धम्म चक्क कहुं ॥ सा०॥ वैन्नारगिरि उत्तंग ॥ १ ॥ रावते कुंजरावते ॥ सा० ॥ तिहुंअणगिरि ग्वालेर ॥ काशी अवंती जाणीयें ॥ सा० ॥ नागोर जेसलमेर ॥ २ ॥ सोरिपुर हत्थिणाउ रें ॥ सा० ॥ अवल ईरावण पास ॥ पीरोज पुरें नू अड न्लो ॥ सा० ॥ फलोधि पूरे आश ॥ ३ ॥ वि कानेरने मेडते ॥ सा० ॥ सीरोही आबू शृंग ॥ राण ग पुरने सादडी ॥ सा० ॥ वरकाणे मनरंग ॥ ४ ॥ निन्नमालने कोटडे ॥ सा० ॥ वाह्डमेर मोझार ॥ रायधणपुर रलियामणुं ॥ सा० ॥ शांतिनाथ दयोइ जूहार ॥ ५ ॥ साचोर जालोर राडद्रे ॥ सा० ॥ गो डीपुरवर पास ॥ पाटण अमदावाद वली ॥ सा० ॥ संखेसर दीजें न्नास ॥६॥ अमी झरे नवपल्लवे ॥ सा० ॥ नवखंभ थलाइं गाम ॥ तारंगे बुरहानपुरें ॥ सा० ॥ वंदूं माणक शाम ॥ ७ ॥ खंन्नायतने तारापुरें ॥ सा० ॥ मातर ने गंधार ॥ लोमण चिंतामणि व रुं ॥ सा० ॥ सूरत मन्नोई जूहार ॥ ८ ॥ देवक पा टण देवगिरि ॥ सा०॥ नवे नगर वंदी जोय ॥ दीवा दिक सवि बंदरे ॥ सा०॥ अंतरिक सिरिपुर होय ॥ ॥ ए ॥ वडनगरने डुंगरपुरें ॥ सा० ॥ इम्मर मालव दे श ॥ कल्याणक जिहां जिन तणुं ॥ सा० ॥ मन सूधे प्रणमेश ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे ॥ सा० ॥ जि न मूरति जिहां होय ॥ वाचकमूला कहे मुझ ॥सा०॥ वंदतां शिवसुख होय ॥ ११ ॥ कलश ॥ इत्थुए जिन

वर बन्नुए जिनवर, अधो ऊर्ध्वने लोक तीर्छै जाणुं ए ॥ सासय असासय जैनपडिमा, ते सवे वखाणुं ए ॥ गछविधिपक्ष पूज्य परगट, श्री धर्ममूर्त्ति सूरीड ए ॥ वाचकमूला कहे नणतां, ऋद्धि वृद्धि आणंड ए ॥ १ ॥ इति वृद्धचैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ सम्यक्त्वना सडशठ बोलनी सज्झाय प्रारंन. ॥

॥ दोहा ॥ सुकृतवल्लिकादंबिनी, समरी सरसति मात ॥ समकित सडशठ बोलनी, कहिशुं मधुरी वात ॥ १ ॥ समकित दायक गुरुतणो, पच्चवयार न थाय ॥ नव कोडाकोडें करी, करतां सर्व उपाय ॥ २ ॥ दानादिक किरिया न दिये, समकित विण शिवशर्म ॥ तेमाटे समकित वडूं, जाणो प्रवचन मर्म ॥ ३ ॥ दर्शन मोह विनाशथी, जे निर्मल गुण ठाण ॥ ते निश्चय समकित कह्यो, तेहनां ए अहिठाण ॥ ४ ॥ ढाल ॥ देइ देइ दरिसण आपणुं ॥ ए देशी ॥ चउ सद्दहणा तिलिग छे, दशविध विनय विचारो रे ॥ त्रण शुद्धि पण दूषण, आठ प्रनाविक धारो रे ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ प्रनाविक अड पंच नूषण, पंच लक्षण जाणियें ॥ षट जयण षट आगार नावन, छविहा मन आणिये ॥ षट ठाण समकित तणा सडसठ, नेद एह उदार ए ॥ एहनुं तत्त्व विचार करतां, लहीजें नवपार ए ॥६॥ ढाल ॥ चहु विह सद्दहणा तिहां, जीवादिक परमछो रे ॥ प्रवचनमां जे नांखिया, लीजे तेहनो अछो रे ॥ ७

॥ त्रुटक ॥ तेह्नो अर्थ विचार करियें, प्रथम सद्द
णा खरी ॥ बीजी सद्दहणा तेह्ना जे, जाण मुनि
गुण ऊवहरी ॥ संवेग रंग तरंग झीले, मार्ग शुद्ध कहे
बुधा, तेह्नी सेवा कीजियें जिम, पीजियें समता
सुधा ॥ ७ ॥ ढाल ॥ समकेत जेणे ग्रही वमियुं, नि
न्ह्व न अहाछंदा रे ॥ पासछा ने कुशीलिया, वेप वि
मंवक मंदा रे ॥ ए ॥ त्रुटक ॥ मंदा अनाणी दूर
छंमो, त्रीजी सद्दहणा ग्रही ॥ परदर्शनीनो संग त
जियें, चोथी सद्दहणा कही ॥ हीणातणो जे संग
न तजे, तेह्नो गुण नवि रहे ॥ ज्यूं जलधि जलमां
जल्यूं गंगा, नीर लूणपणूं लहे ॥ १० ॥ ढाल ॥ क
पूर होवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ त्रण लिंग सम
कित तणां रे, पहिलो श्रुत अनिलाप ॥ जेह्थी श्रो
ता रस लहे रे, जेह्वी साकर द्राख रे ॥ प्राणी धरियें
समकित रंग, जिम लहियें सुख अनंग रे ॥प्राणी ध०
॥ ए टेक ॥११॥ तरुण सुखी स्त्री परिवस्यो रे, चतुर
सुणे सुरगीत ॥ तेह्थी रागें अति घणो रे, धर्म सु
णयानी रीत रे ॥ प्राणी० ॥१२॥ जूख्यो अटवी ऊत
स्यो रे, जिम द्विज गेवर चंग ॥ इछे तिम जे धर्मने
रे, तेहिज बीजुं लिंग रे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥ वैयाव
च्च गुरु देवनूं रे, त्रीजुं लिंग उदार ॥ विद्या साधक
तणि परे रे, आलस नविय लगार रे ॥ प्राणी० ।
॥ १४ ॥ ढाल ॥ प्रथम गोवालातणे जवेंजी ॥ ए देशी।
॥ अरिहंत ते जिन विचरता जी, कर्म खपी हुआ

सिद्ध ॥ चेश्य जिण पडिमा कही जी, सूत्र सिद्धां
त प्रसिद्ध ॥ चतुर नर समजो विनय प्रकार, जिम
लहियें समकित सार ॥ चतुर० ॥ १५ ॥ धर्म खिमा
दिक नांखिउं जी, साधु तेहना रे गेह ॥ आचारय
आचारना जी, दायक नायक जेह ॥ चतुर० ॥ १६ ॥
उपाध्याय ते शिष्यने जी, सूत्र नणावणहार ॥ प्र
वचन संघ वखाणियें जी, दरिसण समकित सार ॥
चतुर० ॥ १७ ॥ नक्ति बाह्य प्रतिपत्तिथी जी, हृद
य प्रेम बहुमान ॥ गुण श्रुति अवगुण ढांकवा जी,
आशातननी हाण ॥ चतुर० ॥ १७ ॥ पांच नेद ए
दश तणो जी, विनय करे अनुकूल ॥ सीचे तेह सु
धारसें जी, धर्म वृक्षनूं मूल ॥ चतुर० ॥ १ए ॥ ढाल
॥ धोवीडा तूं धोये मननूं धोतीयूं रे ॥ ए देशी ॥ त्र
ण शुद्धि समकित तणी रे, तिहां पहेली मन शुद्धि
रे ॥ श्री जिननें जिनमत विना रे, जूठ सकल ए
बुद्धि रे ॥ चतुर विचारो चित्तमां रे ॥ ए टेक ॥ २० ॥
जिन नगते जे नवि थयुं रे, ते बीजाथी नवि थाय
रे ॥ एवुं जे मुख नांखियें रे, ते वचन शुद्धि कहेवाय
रे ॥ चतुर० ॥ २१ ॥ छेद्यो नेद्यो वेदना रे, जे सहतो
अनेक प्रकार रे ॥ जिण विण पर सुर नवि नमे रे,
तेहनी काया शुद्ध उदार रे ॥ चतुर० ॥ २२ ॥
॥ ढाल ॥ मुनि जन मारगनी ॥ ए देशी ॥ समकित
दूषण परिहरो, तेमां पहिली छे शंका रे ॥ ते जिनव
चनमां मत करो ॥ जेहने सम नृप रंका रे ॥

॥ ४१ ॥ सुरनर सुख जे दुःख करि लेखवें, वंछे शिवसुख एक ॥ सु० ॥ बीजूं लक्षण ते अंगीकरे, सार संवेगशुंटेक ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४२ ॥ नारक चारक सममव ऊभग्यो, तारक जाणिने धर्म ॥ सु० ॥ चाहे निकलवुं निर्वेद ते, त्रीजुं लक्षण मर्म ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४३ ॥ द्रव्यथकी दुःखियानी जे दया, धर्महीणानी भाव ॥ सु० ॥ चोथुं लक्षण अनुकंपा कही, निज शकतें मन ल्याव ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४४ ॥ जे जिन भांख्युं ते नहि अन्यथा, एहवो जे दृढ रंग ॥ सु० ॥ ते आस्तिकता लक्षण पांचमुं, करे कुमतिनो ए भंग ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४५ ॥ ढाल ॥ जिन जिन प्रति वंदन दिसे ॥ ए देशी ॥ परतीर्थी परनासुर तेणे, चैत्य ग्रह्यां वलि जेह ॥ वंदन प्रमुख तिहां नवि करवुं, ते जयणा षट भेय रे॥ भविका समकित यतना कीजें ॥ ए टेक ॥ ४६ ॥ वंदन ते कर जोडन कहियें, नमन ते शीश नमाडे ॥ दान इष्ट अन्नादिक देवुं, गौरव भगत्ति देखाडे रे ॥ भविका० ॥ ४७ ॥ अनुप्रदान ते तेहने कहियें, वारवार जे दान ॥ दोष कुपात्रें पात्रमतियें, नहि अनुकंपा मान रे ॥ भविका० ॥ ४८ ॥ अणबोलावे जेह भांखवुं, ते कहियें आलाप ॥ वारंवार आलाप जे करवो, ते कहियें संलाप रे ॥ भविका० ॥ ४९ ॥ ए जयणाथी समकित दीपे, वलि दीपे व्यवहार ॥ एमां पण कारणथी जयणा, तेना अनेक प्रकार रे ॥ भविका० ॥ ५० ॥ ढा

ल ॥ ललनानी देशी ॥ शुद्ध धरमथी नवि चले,अति दृढ गुण आधार ॥ ललना ॥ तो पण जे नवि तेह्वा, तेह्ने एह् आगार ॥ ललना ॥ ५१ ॥ बोल्युं तेह्वुं पालियें, दंतिदंत सम बोल ॥ ललना ॥ सज्ननना डुर्जन तणा, कच्छप कोटने तोल ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५२ ॥ राजा नगरादिक धणी, तस शासन अजियो ग ॥ ललना ॥ तेह्थी कार्तिकनी परें, नहि मिथ्या त संयोग ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५३ ॥ मेलो जननो घण कह्यो, बल चोरादिक जाण ॥ ललना ॥ खेत्र पालादिक देवता, तातादिक गुरु गण ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५४ ॥ वृत्ति डुर्लच्च आजीविका, ते जीखण कंतार ॥ ललना ॥ ते हेतें दूपण नही, करतां अ न्य आचार ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५५ ॥ ढाल ॥ रा ग मल्हार ॥ जावीजें रे समकित जेह्थी रूयडूं, ते जावना रे जावो मन करि परवडूं ॥ जो समकित रे ताज़ुं साज़ुं मूल रे, तो व्रततरु रे दीये शिवपद अ नुकूल रे ॥ ५६ ॥ त्रुटक ॥ अनुकूल मूल रसाल समकित, तेह् विण मति अंध रे ॥ जे करे किरिया गर्व जरिया, तेह् जूठो धंध रे ॥ ए प्रथम जावना गु णो रूअडी, सुणो वीजी जावना ॥ बारएं समकि त धर्मपुरनुं, एह्वी ते पावना ॥ ५७ ॥ ढाल ॥ त्री जी जावना रे समकित पीठ जो दृढ सही,तो मोहो टो रे धर्मप्रासाद डगे नही॥ पाइये खोटे रे मोहोटुं मंमाण न शोजीयें, तेह् कारण रे समकितशुं

थोनीयें ॥ ५८ ॥ त्रुटक ॥ थोनियें चित्त नित एम
नावी, चोथी नावना नावियें ॥ समकित निधान स
मस्त गुणनुं, एह्वुं मन लावियें ॥ तेह विण बूटा र
त्न सरिखा, मूल उत्तर गुण सवे ॥ किम रहे ताके
जेह हरवा, चोर जोर नवे नवे ॥ ५९ ॥ ढाल ॥ ना
वो पंचमी रे नावना शम दम सार रे, पृथिवी परें रे स
मकित तसु आधार रे ॥ छठी नावना रे नाजन सम
कित जो मले, श्रुत शीलनो रे तो रस तेहमां नवि ढ
ले ॥६०॥ त्रुटक॥ नवि ढले समकित नावना रस, अमि
य सम संवर तणो ॥ षट नावना ए कही एहमां, करो
आदर अति घणो ॥ इम नावतां परमार्थ जलनिधि,
होय नितु ऊकलोल ए॥घन पवन पुण्य प्रमाण प्रगटे,
चिदानंद कल्लोल ए ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ जे मुनिवेष
शके नवि ढंमी ॥ ए देशी ॥ ठरे जिहां समकित ते था
नक, तेहना षट विध कहियें रे ॥ तिहां पहेलुं था
नक छे चेतन, लक्षण आतम लहियें रे ॥ खीर
नीर परें पुजलमिश्रित, पण एहथी छे अलगो रे ॥
अनुनव हंस चंच जो लागे, तो नवि दीसे वलगो
रे ॥ ६२ ॥ बीजुं थानक नित्य आतमा, जे अनुनूत
संनारे रे॥ वालकने स्तनपान वासना, पूरव नव अ
नुसारें रे ॥ देव मनुज नरकादिक तेहना, छे अनि
त पर्याय रे ॥ द्रव्यथकी अविचलित अखंमित, निज
गुण आतमराय रे ॥ ६३ ॥ त्रीजुं थानक चेतन
कर्त्ता, कर्म तणो छे योगें रे ॥ कुंनकार जिम कुंन त

णो जे, दंभादिक संयोगें रे ॥ निश्चयथी निज गुण नो कर्त्ता, अनुपचरित व्यवहारें रे ॥ द्रव्यकर्मनो नग रादिकनो, ते उपचार प्रकारें रे ॥ ६४ ॥ चोथुं थानक ठे ते नोक्ता, पुण्य पाप फल केरो रे ॥ व्यवहारें नि श्चय नय दृष्टें, भुंजे निज गुण नेरो रे ॥ पंचम थानक ठे परम पद, अचल अनंत सुख वासो रे ॥ आधि व्याधि तन मनथी लहियें, तसु अनावें सुख खासो रे ॥ ६५ ॥ ठहुं थानक मोक्ष तणुं ठे, संयम ज्ञान उपायो रे ॥ जो सहिजें लहियें तो सघले, कारण निःफल था यो रे ॥ कहे ज्ञान नय ज्ञानज साचुं, ते विण कूठी कि रिया रे ॥ न लहे रूपूं रूपूं जाणी, शीप नणी जे फरि या रे ॥ ६६ ॥ कहे किरियानय किरिया विण जे, ज्ञान तेह शुं करशे रे ॥ जल पेसी कर पद न हलावे, तारू ते किम तरशे रे ॥ दूपण नूपण ठे इहां बहुलां, नय ए केकने वादें रे ॥ सिद्धांती ते बेहु नय साधे, ज्ञानवत अप्रमादें रे ॥ ६७ ॥ एणि परें सडशठ बोल विचारी, जे समकित आराहे रे ॥ राग द्वेप टाली मन वाली, ते स म सुख अवगाहे रे ॥ जेहनुं मन समकितमां निश्चल, कोइ नही तस तोले रे ॥ श्री नय विजय विबुध पय सेवक, वाचक जस इम बोले रे ॥ ६८ ॥ इति श्रीस म्यक्त्वना सडशठ बोलनी सद्याय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिन स्तवन प्रारंनः ॥

॥ लागो लागो रे प्रज्ञुशुं नेह, वसीयो हइडामां ॥ म्हारो साहिबो अतिहि सनेह ॥ वसी० ॥ दर्शन

प्रनुजीनुं देखतां रे, जोतां मुखनी ज्योति रे ॥ डुरित पमल दूरें कस्यां रे वारी, प्रगट्यो ज्ञान उद्योत ॥ ॥ वसी० ॥ १ ॥ सूरत मनडामां वसी रे, कागल जिम चित्राम रे ॥ रात दिवस सुतां जागतां रे हुंतो, नित समरुं प्रनुनाम ॥ वसी० ॥ २ ॥ जेह्ना मनमां जे वस्या रे, तेह्ने तेह्शुं नेह रे ॥ मधुकरने मन मालती रे जिम, मोर तणे मन मेह ॥ वसी० ॥ ॥ ३ ॥ देव अवर देखी घणा रे, किहां न माने मन्न रे ॥ प्रनुगुण सांकलें सांकल्यो रे तेतो, आलोचे नही अन्न ॥ वसी० ॥ ४ ॥ साहेब सुविधि जिणंदनी रे हुं, चाहुं नवोनव सेव रे ॥ हंसरतन कहे माह्रे रे कांइ, लागी एहज टेव ॥ वसी०॥५॥इति॥

॥ अथ केशरियाजीनुं स्तवन ॥

॥ केशरीयासें लाग्युं मारुं ध्यान रे, बीजुं मुने कांइ न गमे हे ॥ के० ॥ नाजिनूप मरुदेवीको नंदन, तुम पर जीया खुरवान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ १ ॥ धनुप पांचशें मान मनोहर, काया कंचनवान रे ॥ ॥ बीजुं० ॥ के० ॥ २ ॥ जुगला रे धर्म निवारण साह्बि, राजेश्वर राजान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ ॥ ३ ॥ रूपचंदासकी आशा पूरजो, सेवक अपना जान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमल्लीनाथजिन स्तवनं ॥

॥ चित्त को न गमे रे चित्त को न गमे, मल्लिनाथ विना चित्त को न गमे ॥ माता प्रनावती राणीको जायो,

कुंन्न नृपतिसुत काम दमे ॥ म०॥१॥ कामकुंन्न जिम का मित पूरे, कुंन्नलंबन जिन सहुने गमे ॥ म०॥२॥ मिथि ला नयरीमें जन्म प्रज्जुको,दरिसन देखी डुःख शमे म०॥ ॥३॥ घेवर नोजन सरसा पिरसे, वाकस बूकस कोन जमे ॥ म० ॥ ४ ॥ नीलवरण प्रज्जु कांति अंगें, मरक तमणि ठवी दूर नमे ॥ म० ॥ ५ ॥ न्यायसागर प्रज्जु नक्तनो स्वामी, हरि हर ब्रह्मा कोन नमे ॥ म०॥ ६ ॥

॥ अथ अयवंती पार्श्व स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ पंथीडा पंथ चलेंगो, प्रज्जु नज ले दिन चार ॥ ॥ पंथी०॥ क्या ले आया क्या ले जासी, पाप पुण्य दोनुं लार ॥ पंथी०॥ १ ॥ बालपनो तें तो खेल गमा यो, यौवन माया जाल॥पंथी०॥बूढापो आयो धर्म न पायो, पीछे करत पुकार ॥ पंथी०॥२॥ फूठी माया फू ठी काया,फूठो सब परिवार ॥ पंथी० ॥दया मया कर पास अवंती, अब तेरो आधार ॥ पंथी० ॥३॥ इति ॥

॥ अथ बलिनद्रमुनिनी सप्ताय ॥

॥ शा माटे बंधव मुखथी न बोलो, आंसुडे आ नन धोतां मुरारी रे ॥ पुण्यजोगें दडियो एक पाणी, जञ्यो छे जंगल जोतां मुरारी रे ॥ शा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ त्रिकम रीश चढी छे तुजने, वनमां हे वनमाली मुरारी रे ॥ वडीरे वारनो मनावुं हुं वाला, तुं तो वचन न बोले फरी वाली मुरारी ॥ शा० ॥ २ ॥ नगरी रे दाधी ने शुद्ध न लाधी, . वाणी निसुण वाला मुरारी रे ॥ आ वेलामां

अबोलो, कानजी कां थया काला मुरारी रे ॥ शा० ॥ ३ ॥ शी शी वात कहुं शामलीया, विष्णु जी आ वेला मुरारी रे ॥ शाने काजें मुजने संतापें, हरि हसी बोलोने हेला मुरारी रे ॥ शा० ॥ ४ ॥ प्राण महारां जाशे पाणी विण, अध घडीने अण बोले मुरारी रे ॥ आरति सघली जाये अलगी, बांधव जो तुं बोले मुरारी रे ॥ शा० ॥ ५ ॥ षटमास लगें पाल्यो छबीलो, हैया उपर अति हितें मुरारी रे ॥ सिंधु तटें सुरने संकेतें, हरि दहन करम शुजरीतें मुरारी रे ॥ शा०॥ ॥ ६ ॥ संयम लइ गयो सुरलोकें, कवि उदयरतन इम बोले मुरारी रे ॥ संसारमांहि बलदेव मुनिने, कोइ नव आवे तोलें मुरारी रे ॥ शा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजी शांतिजिणंदने भेटीयें, शांतिरसनो दातार हो ॥ अचिराना जाया ॥ प्रभुजी शांति जलधर उनह्यो, वरसे भवि चित्त धार हो ॥ अचिरा० ॥ ॥ प्रभुजी०॥१॥ प्रभुजी गजपुर नयर दीपावीयुं, प्रगट्यो ज्ञानदिणंद हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी कर्म दल मल चूरवा, समेतगिरि दीपे जिणंद हो ॥ अ० ॥ ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रभुजी कर्म कलंक निराकरी, सिद्ध थया निज भाव हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी प्रगटावी निज रूपने, अनरिज रूपाभाव हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥

॥ ३ ॥ प्रभुजी सादि अनंतें थिर रह्या, एक तिहां अछे अनेक हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी लोकांतें आदि अलोकने, एहवो तिहां विवेक हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ॥ ४ ॥ प्रभुजी तिहां अपूर्व आनंद लहे, वचन अगोचर जेह हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी सिद्ध स्वरूपनी वानगी, शुद्ध श्रद्धाने जाणो तेह हो ॥ अ०॥ प्र०॥ ॥ ५ ॥ प्रभुजी दर्शन लही जिन देवनुं, भावो एहिज भाव हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी एहिज भाव अनुसरी, भवजल तरवा नाव हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ प्रभुजी एहिज ध्यानें नित रही, चाहीयें शिव सुख राज हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी श्रीजय जिनवर ध्यानथी, नायक अनुभव काज हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनं ॥ गिरूवा रे ॥ गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ वंदो महावीर जिनेसर राया, माता त्रिशला राणीना जाया रे ॥ हरिलंछन कंचन वर काया, अमर वधू हुलराया रे ॥ वदो० ॥ १ ॥ बालपणे सुरगिरि भोलाया, अहि वेताल हराया रे ॥ इंद्र कहे व्याकरण निपाया, पंमित विस्मय पाया रे ॥ वदो० ॥ २ ॥ क्षायिक ऋद्धि अनंती पाया, अतिशय अधिक सुहाया रे ॥ चार रूप करि धर्म वताया, चउविह सुर गुण गाया रे ॥ वदो० ॥ ३ ॥ त्रीश वरस गृहवासें रहिया, संयमशुं दिल लाया रे ॥ बार वरस तपि कर्म खपाया, केवलनाण उपाया रे ॥ वंदो०

॥ ४ ॥ तीन भुवनमें आण मनाया, दश दोय छत्र धराया रे ॥ रूप कनक मणि गढ विरचाया, निरग्रंथ नाम धराया रे ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ रयण सिंहासण बेसण ठाया, डुंडुभि नाद बजाया रे ॥ दानव मानव दो सुख पाया, भक्तें शीश नमाया रे ॥ वंदो० ॥ ६ ॥ प्रभु गुण गण गंगाजल नाह्या, पावन तेह नी काया रे ॥ पंमित खिमाविजय सुपसाया, सेवक जिन गुण गाया रे ॥ वंदो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पुरुषने परस्त्रीत्यागआश्रयी शीखामण ॥

॥ सुण चतुर सुजाण, परनारीशुं प्रीति कबू नव कीजियें ॥ए आंकणी॥ हांरे जेणें परनारीशुं प्रीति करी, तेने हैडे रुंधण थाय घणी, तेणें कुल मरजादा कांइ न गणी ॥ सु० ॥ १ ॥ तारी लाज जाशे नात जातमां, तुं तो हलुउ पडीश सहु साथमां, ए धुंआडो न आवे हाथमां ॥ सु० ॥ २ ॥ हांरे सांज पडे रवि आथमे, ताहारो जीव भमरानी परें भमे, तुने घरनो धंधों कांइ न गमे ॥ सु० ॥ ३ ॥ हांरे तुं जइने मलीश दूतीने, ताहारुं धन लेशे सर्वे धूतीने, पछे रहीश हेडुं कूटीने ॥ सु० ॥ ४ ॥ तुंतो वेठो मूछो मरडीने, ताहारुं कालजुं खाशे करडीने, तारुं मांस लेशे उजरडीने ॥ सु० ॥ ५ ॥ हांरे तुने प्रेमना प्याला पाइने, ताहारां वसतर लेशे वाइने, तुने करशे खोखुं खाइने ॥ सु० ॥ ६ ॥ हांरे तुंतो परमंदिरमां पेसीने, तिहां पारकी सेजें बेसीने, तें भोग कर्या घणुं हेंसीने ॥

सु० ॥ ७ ॥ हांरे जेम भुयंगथकी मरता रेहवुं, तेम परनारीने परिहरवुं, हांरे नवसायर फेरो नवि फरवुं ॥ सु० ॥ ८ ॥ वाला परणी नारीथी प्रीत सारी, ए माथुं वढावे परनारी, तुमें निश्चें जाणजो निरधारी ॥ सु० ॥ ए ॥ ए सद्गुरु कहे ते साचुं छे, ताहारी कायानुं सरवे काचुं छे, एक नाम प्रभुनुं साचुं छे ॥ सु० ॥ १० ॥ इति शिखामणसवाय संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तवनं ॥

॥ आज महारे आनंद थयो, प्रेमनां वादल वरश्यां दहाडो सफल थयो ॥ ए आंकणी ॥ सुणो साहेली, वीर जिनेसर जनम्या धन्य दिन आजनो ॥ आज० ॥ १ ॥ तमें सिद्धारथ कुले आया, तमें त्रिशला माताना जाया, छपन्न दिगकुमरीयें हुलराया ॥ आज० ॥ २ ॥ चोशठ इंद्र मली आवे, मेरुशिखर प्रभुने लावे, ए तो सुगंधिजलें करी नवरावे ॥ आज० ॥ ३ ॥ सखी आज महारे घेर दीवाली, महारा प्रभुजी आव्या पोतें चाली, मेंतो उसावी शेव ने सुंहाली ॥ आज० ॥ ४ ॥ सखी टोली मली मंगल गावे, ए तो रत्नत्रयीनां सुख पावे ॥ ए तो बार वर्षे नावना नावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इम कर जोडी सेवक गावे, ए तो अक्षय पदवीने पावे, शुभ वीर प्रभुजीने परभावें ॥ आज० ॥ ६ ॥ इति श्री महावीरस्तवनं ॥

॥ अथ मनशिक्षानुं पद ॥ कल्याणरागमां ॥

॥ रे मन लोभी तारो कोण पतियारो ॥ रे मन० ॥

आठ गांठको सांठो मीठो, गांठ गांठ रस न्यारो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ छिनमें और पलकमें दूजो, घडी घडी दिलसें न्यारो ॥ रे मन० ॥ २ ॥ चंचल मन व रज्यो नहि माने, प्रनु नव पार उतारो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

॥ अथ वर्द्धमानजिन स्तवनं ॥ राग वेलावल ॥

॥ रे मन क्युं जिन नाम विसाखो ॥क्युं०॥ रे मन०॥ विषय विकार महामद धाखो, जनम जुआ ज्युं हाखो ॥ रे मन०॥१॥ जिने तोकुं नरदेही दीनी, गर्न की आंच उवाखो ॥ ता प्रनुजीकूं तें शठ मूरख, एक घडी न संनाखो ॥ रे मन० ॥ २ ॥ नहिं कछु दान शियल तप पूजा, नहिं जिन नाम उच्चाखो ॥ जैनधर्म चिंतामणि सरिखो, काच जाण कर माखो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥ कर ले सुकृत दया उद्धर ले, जो नव चाहत सुधाखो ॥ हरखचंद वर्द्धमान जिनेसर, अवसर मांहे न संनाखो ॥ रे मन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ठुमरीमां ॥

॥ सहसफणा रे मोरा साहिबा, तेरी सामरी सूरतपर वारी जाउं रे ॥ तेरी मधुरी मूरत परवारी जाउं रे ॥ सहस० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तन मन लगन लगी एक तोशुं, मैंतो देव अवर नहिं ध्याउं रे ॥ स० ॥ २ ॥ सफल नइ आज घडीअ दरस सुख पाउं रे ॥ सहस० ॥ ३ ॥ देखत सुंदर, मैंतो रोम रोम ॥४॥ तुम गुणको कछु पार न

ताउं रे ॥ सहस० ॥ ५ ॥ कीर्त्तिसागर कहे जव जव तोरी, मोज मह्रिर नित पाउं रे ॥ सहस० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ समेतशिखरस्तवनं ॥

॥ चालो चालो शिखरगिरि जइयें रे ॥ चा० ॥ वीश जिणंद मुगतें गया ॥ चा० ॥ ए आंकणी ॥ पालगंजमें सफल बोलाइ, मधुवनमें जइ रहियें रे ॥ वीश जिणंद० ॥ १ ॥ आठ मंदिर है श्वेतांवरका, तीन दिगम्बरी लहियें रे ॥ वी० ॥ सीतानालें निर्मल थइनें, केशर प्याला ग्रहीयें रे ॥ वी० ॥ २ ॥ विपम पाहाड की कुंज गलनमें, शीतलता बहु लहियें रे ॥ वी० ॥ पश्चिम आठ पूर्वदिशि वारे, वीश टुंक जिन पद लहियें रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ शामलीया पारसको मंदिर, विच शिखरपर सोहियें रे ॥ वी० ॥ वीश टूंके जिन पूजन करकें, नरजव लाहो लहियें रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ उंगणीशें इगीयारा माहावदि, एकादशी विधु कहीयें रे ॥ वी० ॥ संघ सहित यात्रा जइ सफली, विनय नमत गुण गहियें रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति शिखरजीनी ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजयस्तवनं ॥ घोलनी देशीमां ॥

॥ शत्रुंजे जइयें ने पावन थइयें, यात्रा नवाणुं करियें रे ॥ चालो शेत्रुंजे जइयें ॥ ए आंकणी ॥ डूंगर चडतां ने हरखज धरतां, जइने गंजारामां रहिये रे ॥ चालो० ॥ १ ॥ सूरज कुंममां देह पखाली, नाइने निर्मल थइयें रे ॥ चालो० ॥ जीमज कुंममां कलशज जरियें, सोनानी शिरियें वधावो रे ॥ चालो० ॥ २ ॥ पाना

मंगावोने अंगी रचावो, घणो अबिर चडावो रे ॥चा लो० ॥ फूल मगावोने हार गुंथावो, प्रभुजीने कंठे चढावो रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ सुखड केशर चंदन घसावो, नवे अंगें पूजा करावो रे ॥ चा० ॥ अगरउखेवो ने न्नावना न्नावो, नीचुं नीचुं शीश नमावो रे ॥ चा लो० ॥ ४ ॥ बेवा सिंहासण हुकुम चलावे, उपर छत्र धरावे रे ॥चालो०॥ खिमाविजय मुनि गुरु सुप साया, रूपन्न तणा गुण गाया रे ॥ चा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ चालो सखी सिद्धाचल जइयें, चालो सखी वि मला चल जइयें ॥ के गिरिवर देखी सुख लइयें, के पा लिताणे जइ रहियें ॥चालो०॥ १ ॥ के ए गिरि यात्रायें जे आवे, के नव त्रीजे सिद्धि जावे, के अजरामर पदवी पावे ॥ चालो० ॥ २ ॥ के यात्रा नवाणुं करियें, के नवकार लाख खरा गणियें, के न्नवसागर सहेजें तरियें ॥ चालो० ॥ ३ ॥ के छठ अठम काया कसि यें, के मोहराजा सामे धसियें, के वेगें शिवपुरमां वसियें ॥ चालो० ॥ ४ ॥ के सर्व तीरथनो ए रा जा, के सूरज कुंममां जल ताजां, के रोगीया नर होय ते साजा ॥ चालो० ॥ ५ ॥ के केशर चंदन घशी घोली, के कस्तूरी बरास नेली, के पूजो सर्व मली टोली ॥ चालो० ॥ ६ ॥ के पूजीने न्नावना न्नावो, के केवलज्ञान युगल पावो, के जो पुरमां जावो ॥ चालो० ॥ ७ ॥ के अढार

वरसें, के महावदि पंचमीने दिवसें, के नेव्या श्रीआ दीसर उलटें ॥ चालो० ॥ ८ ॥ के एह उत्तम पदनी सेवा, के देजो मुने देवाधिदेवा, के शिवरूपी लखमीने सुख मेवा ॥ चालो० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ पद राग कल्याण ॥

॥ मोहे कैसे तारोगे दीन दयाल ॥ मोहे० ॥ तारो तो पिया नित तुम तारो, बिन तरवेकूं लीयो संभाल ॥ मोहे० ॥ १ ॥ कंचनकों कहा कंचन करवो, मलिन कंचन परजाल ॥ मोहे० ॥ कामक्रोध मद ल पट रह्यो नित, महा मोहजंजाल ॥ मोहे० ॥ २ ॥ मोय पापीकूं पावन करवो, वहोत कठीन कृपाल ॥ मोहे० ॥ मल्लिनाथ प्रभु मोहनी मूरति, रूपचंद गुण माल, करत निहाल ॥ मोहे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषभ स्तवनं ॥ राग बिलास चरचरीमां ॥

॥ जाग जाग मुकुटमणि, नाभिनृपनंदा ॥जा० ॥ ए आंकणी॥द्वार ठाढे नर अमर सेवा करे,उच्चरे मुख जै जै जै जै नंदा ॥ जा० ॥ १ ॥ कमलदल मुकुल मांहि, मधुप रणझण करता, पिवत प्रीति धर सरस मकरंदा ॥ जा० ॥ २ ॥ तिमिरहर सुख करण प्रग ट्यो, तरण मागध मधुर धुनी, पढत गुणछंदा ॥ जा० ॥ ३ ॥ जायो मात मरुदेवी अलिअत तुम भा वना, खेले उछंग ज्युं होत आनंदा ॥ जा० ॥ ४ ॥ विमलगिरि मंमन ङःखविर्हमन, कवि मह्मिराज के काटि ङःखफंदा ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नव कारज जाणुं, तारामां जेम चंद वखाणुं, जलधर मां जल जाणुं ॥ पंखीमांहि जिम उत्तम हंस, कुल मांहि जिम रूषजनो वंश, नाजि तणो जे अंश ॥ क्षमावंतमांहि जिम अरिहंता, तपशूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रूषज अजित संजव अजिनंदा, सुमतिनाथ मुख पूनमचंदा, पद्म प्रज सुख कंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंदप्रज सुविधि, शीतल श्रेयांस सेवो बहुबुद्धि, वासुपूज्य मति शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनि सुव्रत शुद्ध पंथि ॥ नमी पासने वीर चोवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ जरतराय जिन साथें बोले, स्वामी शत्रुंजय गिरि कोण तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रूषज कहे सुणो जरत राय, छहरी पालता जे नर जाय, पातक जूको थाय ॥ पशु पंखी जे इणगिरि आवे, जव त्रीजे ते सिद्धज थावे, अजरामर पद पावे ॥ जिनमतमें शेत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिलमांहि आण्यो, सुणतां सुख उर आण्यो ॥३॥ संघपति जरत नरेसर आवे, सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरति ठावे ॥ नाजिराया मरु देवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बे हिन विख्याता, मूर्त्ति नवाणुं ज्राता ॥ गोमुख ने चक्के

सरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगच्छ ऊपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरि प्रणमी पाया, रूपचंदास गुण गाया ॥ ४ ॥

॥ अथ सिद्धगिरिराज स्तवनं ॥

॥ गिरिराजकुं सदा मेरी वंदना,जिनको दर्शन दूर्लभ देखी,कीधी कर्म निकंदना रे ॥गिरि०॥१॥ ए आंकणी॥ विषय कषाय ताप उपशमीयो, जिम मले बावन चंदना रे ॥ गिरि० ॥ २ ॥ धन धन ते दिन कबही रे होशे, थाशे तुम मुख दर्शना रे ॥गिरि०॥३॥ तिहां विशाल भाव पण होवे, जिहां तुज पदकज फरसना रे ॥ गिरि० ॥ ४ ॥ वली वली दरिसन वेहेलुं लहीयें, एह विरह नित भावना रे ॥गिरि०॥५॥ चित्त मांहेथी कबहू न विसारूं, तुम गुण गणनी ध्यावना रे ॥ गिरि० ॥ ६ ॥ भव भव एहिज चित्तमां चाहुं, मेरे उर नही विचारणा रे ॥ गिरि०॥७॥ चित्त रमे दिन मावतनी परें, वहोरी न होय उत्तारणा रे ॥ गिरि० ॥ ८ ॥ ज्ञानविमल प्रभु पूरण कृपाथी, सुश्रेणिक बोध सुवासना रे ॥ गिरि० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणरागनुं पद ॥

॥ उरनसुं रग न्यारा न्यारा, तुमशुं रंग करारी हे॥ तुं मनमोहन नाथ हमारा, अब तो प्रीति तुमारी हे ॥ उ० ॥ १ ॥ योगी होय के कान फडाये, मोटी मुद्रा मारी हे ॥ गोरख कहे तृष्णा नहिं मारी, घर घर भमत भिखारी हे ॥ उ० ॥ २ ॥ जंगम आवे

नाद बजावे, आछे तान मिलावे हे ॥ सबका राम स रिखा नही बूग्या, काहेकूं भेख लजावे हे ॥ उ०॥३॥ जती हुआ इंडी नहिं जीती, पंचभूत नहिं लीना हे॥ जीव अजीवकूं बूग्या नांही, भेख लेहीकें हीना हे ॥ उ० ॥ ४ ॥ वेद पढथा ब्राह्मण कहलावे, ब्र ह्मदशा नहिं पाया हे ॥ आत्मतत्त्वको अर्थ न जा न्यो, फोकट जन्म गुमाया हे ॥ उ० ॥ ५ ॥ जंगल जाये भस्म चढाये, जटा वधारी केशा हे ॥ परभव की आशा नहिं मारी, फिरि जैसा का तैसा हे ॥ उ० ॥ ६ ॥ काजी किताव खोल कर बैग, क्या किताव में देख्या हे ॥ बकरीके गले छूरी चलावे, क्या देवें गा लेखा हे ॥ उ० ॥ ७ ॥ जिने कंचनका महेल ब नाया, उनकुं पीतल कैसा हे॥ माला गलेमें हार हीरे का, सब जुग काच सरीसा हे ॥ उ०॥८॥ रूपचंद रग मगन भया हे, नाथनिरंजन प्यारा है ॥ जनम मरनका डर नहिं याकूं, चरण शरण तीहारा है ॥ उ० ॥९॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ विवेकी विमलाचल वसीयें, तप जप करी का या कसीयें, खोटी मायाथी खसीयें ॥ वि० ॥ वसी उनमारगथी खसीयें ॥ वि० ॥ १ ॥ माया मोहनी यें मोह्यो, कोण राखे रणमां रोयो ॥ आ नरभव ए लें खोयो ॥ वि० ॥ २ ॥ बाललीलायें डुलरायो, जोवन युवतीयें गायो, तोहे तृप्ति नवि पायो ॥ वि० ॥ ३ ॥ रमणी गीत विषय राच्यो, मोहनी

मदिरायें माच्यो, नव नव वेश करी नाच्यो ॥ वि० ॥ ४ ॥ आगमवाणी समी आशी, नवजलधि मांहि वासी, रोहित मत्स्य समो थाशी ॥ वि० ॥ ५ ॥ मोहनी जालने संहारे, आप कुटुंब सकल तारे, वरण वीयें ते संसारें ॥ वि० ॥ ६ ॥ संसारें कूडी माया, पंथशिरें पंथी आया ॥ मृग तृष्णा जलने धाया ॥ वि० ॥ ७ ॥ नवदव ताप लही आया, पांमव परिकर मुनिराया, शीतल सिद्धाचल गाया ॥ वि० ॥ ८ ॥ गुरु उपदेश सुणी जावें, संघ देशो देश थी आवे, गिरिवर देखी गुण गावे ॥ वि० ॥ ए ॥ संवत अढार चोराशीयें, माघ उज्ज्वल एकादशीयें, वांद्या प्रजुजी विमल वसीयें ॥ वि० ॥ १० ॥ जात्रा नवाणुं अमें करीयें, नव नव पातिकडां हरियें, तीर्थ विना कहो किम तरीयें ॥ वि० ॥ ११ ॥ हंस मयूरा इणे गामें, चकवा शुक पिक परिणामें, दर्शने देवगति पामे ॥ वि० ॥ १२ ॥ शेत्रुंजी नदियें नाइ, कष्टें सुर सानिधदायी, पणसय चाप गुहा गाइ ॥ ॥ वि० ॥ १३ ॥ रयणमय पडिमा पूजे, तेनां पातिकडां ध्रूजे, ते नर सीझे जवे त्रीजे ॥ वि० ॥ १४ ॥ सासय गिरि रायण पगलां, चउमुख आदें चैत्य जलां, श्रीशुन्न वीर नमे सघलां ॥ वि० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ पद राग पंजाबी ॥

॥ खतरा दूर करनां दूर करनां, एक ध्यान साहेबका धरनां ॥ खतरा० ॥ १ ॥ जब लग आतम निर्मल करनां,

ति दूर हरे ॥ लक्ष्मीसेन जो जात्रा करियें, ताके का
ज सरे ॥ शिखर० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ तुमही जाके अश्व खेलावो, रायके रीत चलावो
रे ॥ तु० ॥ हम जोगीसर जे तप साधे, ते तुम भेद न
जानो रे ॥ तु० ॥१॥ सुण रे कमठ तुं महा तप सा
धे, तपको भेद न जान्यो रे ॥ तन तापे मन तापे
नांहीं, कहा तापे अज्ञानो रे ॥तु०॥२॥ पन्नग काहे
कूं अग्नि जलावे,हित चित्त दया न आवे रे ॥ पासप्र
नु नवकार सुणावे, धरणीधर पद पावे रे ॥तु०॥३॥

॥ अथ स्तवनं ॥ राग कल्याण ॥

॥ ऐसे शेहेर विच कोन दिवान हे रें ॥ ऐसे०॥ ॥
पानीके कोट पवनके कंगरे, दश दरवाजेको मंमान
हे रे ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ इसनगरीमें त्रेवीश तस्कर, नग
रीकूं करत हेरान हे रे ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ प्रजापोकार
सुनी तव जाग्यो, चेतन राय सुजान हे रे ॥ ऐसे०
॥ ३ ॥ नाथ निरंजन नक्ति तेरी, हाथमें ज्ञान कवा
न हे रे ॥ऐसे० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे तेहने वारो, पे
लो डुशमन मान गुमान हे रे ॥ ऐसे० ॥५॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन आमलकीडानुं स्तवन ॥

॥ राग प्रनाती ॥ तथा वेलावल ॥ आदि अंत जानुं
नही, तुम हो अविनाशी ॥ रामत आमली पीपली,
खेल करे विलासी ॥ आदि० ॥ १ ॥ इंद्र सनामें
बेठकें, मुख सुं जस बोले ॥ तीन नुवनमें को नही,

प्रभु धीरज तोले ॥ आदि० ॥ २ ॥ वात न मानत देव एक,सर्प को वेश बनावे ॥ प्रभु पकरकें मार दे, चित्त नांही मरावे ॥ आदि० ॥ ३ ॥ बालक होइ प्रभुशुं रमे, हाथो खंध चढावे ॥ बीभत्स होइकें वढयो, गगनें लेइ जावे ॥ आदि० ॥ ४ ॥ हसत दयालु देख कें, मुख युं जस कहावे ॥ धन्य धन्य महा वीरजी, रूपचंद मन भावे ॥ आदि० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ ऋषभजिन स्तवनं ॥ राग भैरव ॥

॥ उठत प्रभात नाम, जिनजीको गाइयें ॥उठ० ॥ नाभिजीके नंदके, चरण चित्त लाइयें ॥ उ० ॥ १ ॥ आनंदके कंद, जाकुं पूजत सुरिंद वृंद, एसो जिनरा ज छोड, औरकुं न ध्याइयें ॥ उठ० ॥ २ ॥ जनम अयोध्या ठाम, मात मरूदेवा नाम, लंछन वृषभ जाके, चरण सोहाइयें ॥ उठ० ॥ ३ ॥ पांचशें धनु षमान, दीपत कनक वान, चोराशी पूरव लाख, आ यु स्थिति पाइयें ॥ उठ० ॥ ४ ॥ आदिनाथ आदि देव, सुर नरहि सारे सेव, देवनको देव प्रभु, शुभ सु ख दाइयें ॥ उठ० ॥ ५ ॥ प्रभुको पादारविंद, पूजत हरखचंद, मेटो दुःखदंद सुख संपद वढाइयें ॥ ६ ॥

॥ अथ पद ॥ राग विभास ॥

॥ प्रभुजीको दरिसन पायोरी, आज में ॥ प्रभु० ॥ वछित पूरण पास चिंतामणि, देखत दुरित गमायो री ॥ आज में० ॥ १ ॥ मोहनी मूरत महिमा साग र, तीरथ सब जग छायो री ॥ आ० ॥ भानचंद प्रभु

सकल संघकूं, जय जयकार कहायो री ॥ आ० ॥३॥

॥ अथ पार्श्वनाथ गीतं ॥ राग काफी ॥

॥ को न गमे चित्त को न गमे, प्रभु पासजी वि
ना चित्त को न गमे ॥ परम निरंजन देवने मूकी,
दूषण सहितने कोण नमे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ सुंदर ख
टरस भोजन छांमी, कुत्सित अशनने कोण जमे ॥
॥ प्रभु० ॥ २ ॥ जे तुझ आण विहूणा मानव, मो
ह नृपतिने केम दमे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ जे तुझ पद
पंकजनें न सेवे, तेह अनंत संसार भमे ॥ प्रभु० ॥
॥ ४ ॥ जे तुझ पूजे भाव धरी तस, भव भव संचि
त डुरित शमे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ करुणा सागर तुझ
विण दूजो, मुझ अपराधने कोण खमे ॥ प्रभु० ॥
॥ ६ ॥ ध्याने ध्यावे जे कोइ तुझने, अमृत पदमां
ते रंगें रमे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिजिन स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ नां करीयें रे नेडो नां करीयें, निगुणाशुं रे नेडो
नां करियें ॥ अमें रोइ रोइ आंखडीमां नीर
भरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ प्रेम निरवहि वाल्हा
प्रेमी जननो, अविचाखुं नवि भग भरीयें जी ॥
॥ निगुणा० ॥ १ ॥ जादव जान सजीने यडुपति,
तोरण आवीने केम फरियें जी ॥ निगुणा० ॥ २ ॥
संयम नारी वाल्हे कीधी प्यारी, राजुल मूकी भर
दरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ३ ॥ अम अबलानी सा
हामुं निरखो, विरह जलधियी केम तरीयें जी ॥

॥ निगुणा० ॥ ४ ॥ यौवन वय केम करी निर्गमियें, लोकलाजथी घणुं झरियें जी ॥ निगुणा० ॥ ५ ॥ दिलरंजन प्रनु दीलमां धरीयें, निशदिन अवटाई म रीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ६ ॥ चतुर थइ अवसर शुं चूको, अमृतसुख रंगें वरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ७ ॥

॥ अथ धर्मजिननुं स्तवन ॥

॥ इम करीयें रें नेडो इम करीयें रे, सुगुणाशुं नेडो इम करीयें ॥ हांरे चित्त अटक्युं प्रनुनी चाकरी यें, जिम नवसायर सुखथी तरियें रे ॥ जिनजीशुं नेडो इम करीयें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एकने मूकी वेने खंमी, त्रणनो संग ते परिहरियें रे ॥ सु० ॥ चार जणा शिर चोट करीने, पांचनी सेवा अनुसरीयें रे ॥ सु० ॥ २ ॥ ठ सत अठ नव दशने ठंमी, एकादश दिलमां धरीयें रे ॥ सु० ॥ बारनो आदर करीये अहोनिश, तेरथी मनमां घणुं झरियें रे ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ पांच आठ नव दश तेरने, बांधी नाखीये नर दरीयें रे ॥ सु० ॥ सत्यावीशनो संग करीने, पच्च वीशनी प्रीतें ठरीयें रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ बत्रीश तेत्रीश चोराशी उंगणीश, टाली चारथी नवि फरीएं रे ॥ ॥ सु० ॥ सुडतालीशथी दूरें रहीयें, एकावन मनमां नरीयें रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ वीशने सेवी बावीश बांधी, त्रेवीशथी निशदिन लरीयें रे ॥ सु० ॥ धर्म प्रनुशुं स्नेह करंतां, अमृत सुख रंगें वरीयें रे ॥ सु० ॥ ६ ॥

॥ अथ मन ज्ञमरानी वैराग्य सद्याय ॥

॥ जूलो मन ज्ञमरा कांइ जमे, जमे दिवसने रात ॥ मायानो बांध्यो प्राणीयो, जमे परिमल जात ॥ जू० ॥ ॥ १ ॥ कुंज काचो काया कारमी, तेहनां करो रे जतन्न ॥ विणसंतां वार लागे नहीं, निर्मल राखो रे मन्न ॥ जू० ॥ २ ॥ कोनां ठोरू कोनां वाठरू, कोनां माय ने बाप ॥ प्राणी जावुं ठे एकलुं, सार्थे पुण्य ने पाप ॥ जू० ॥ ३ ॥ अशा ते डुंगर जेवडी, मरवुं पगलां रे हेठ ॥ धन संची संची कां मरो, करवी देवनी वेठ ॥ जू० ॥ ४ ॥ धंधो करी धन जोडीयुं, लाखा उपर क्रोड ॥ मरणनी वेला मानवी, लीयो कणदोरो ठोड ॥ जू० ॥ ५ ॥ मूरख कहे धन माहरुं, धोखें धान्य न खाय ॥ वस्त्र विना जइ पोढशे, लखपति लाकडा मांय ॥ जू०॥ ६ ॥ जवसागर डुःख जल जर्यो, तरवो ठे रे तेह ॥ विचमां जय सबलो अठे, कर्म वायनें मेह ॥ जू० ॥ ७ ॥ लखपति ठत्रपति सव गयें, गये लाख वे लाख ॥ गर्व करी गोखें वेसतां, जयें जली बली राख ॥ जू० ॥ ८ ॥ धमण धूखंती रे रहि गई, बुज गइ लाल अंगार ॥ एरणको ठवको मिट्यो, उठ चल्यो रे लुहार ॥ जू० ॥ ए ॥ ऊवट मारग नदी चालतां, जावुं पहेले रे पार ॥ आगल नहि हट वाणीयो, संबल लेजो रे सार ॥ ॥ जू० ॥ १० ॥ परदेशी परदेशमें, कोणशुं करो रे सनेह ॥ आया कागल उठ चल्या, न गणे आंधी ने

मेद् ॥ नू० ॥ ११ ॥ केइ चाल्या रे केइ चालशे, केइ चालण हार ॥ केइ वेग बूढा वापडा, जाए नरक मझार ॥ नू० ॥ १२ ॥ जिण घर नोबत वाजती, हुता छत्रीशे राग ॥ ते मंदिर खाली पड्यां, बेठण लागा छे काग ॥ नू० ॥ १३ ॥ नमरो आव्यो रे कम लमां, लेवा कमलनुं फूल ॥ कमलनी वांछायें मांहे रह्यो, जेम आथमते सूर ॥ नू० ॥ १४ ॥ मह्मद कहे वस्तु वोरियें, जे कोइ आवे रे साथ ॥ आपणो लान्न उगारीयें, लेखुं साहिब हाथ ॥ नू० ॥ १५ ॥

॥ अथ अरिहंत स्तुति प्रारंनः ॥

॥ श्री अरिहंत नमीजें. चतुरनर ! श्री अरिहंत नमीजें ॥ ए आंकणी ॥ बारस गुणशोन्नित जगमोहित, सुर नर नमित कहीजें ॥ अतिशय चार प्रथम वली आठे, प्रातिहार जस लहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ १ ॥ चार सहज एकादश खायिक, उंगणीश दैव्य ग्रहीजें ॥ उत्तर अतिशय चोत्रीश पांत्रीश, वाणी समीप रहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ २ ॥ तीर्थंकर पद न्नोगी सयोगी, गुणठाणे प्रणमीजें ॥ न्नावस्वरूप रमण अनिलाप्यो, तेहनी आण वहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इत्यर्हतां स्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ अतींद्रिय स्वरूपसिद्धस्तुति प्रारंनः ॥

॥ परमेष्ठी आराधी सुगुणिजन ! परमेष्ठी आराधी ॥ शिव अविचल अरु जानत पदवी, अक्षय अव्याबाधी ॥ अपुनर्नव सिद्धि गति सुख पूरण, ठाण

संपत्ति अबाधी ॥ सुगु० ॥ पर० ॥ १ ॥ दर्शन ज्ञान वीरिय सुख संपद, अनंत चतुष्ट निरुपाधि ॥ तस नावादि निखेप नजनथी, थाए स्वरूप समाधि ॥ सुगु०॥ पर०॥२॥ इत्यतींद्रिय स्वरूपस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ आचार्योपाध्यायाऽनगाराणां ॥

॥ युगपत्स्तुति प्रारंनः ॥

॥ आचारिज पदसेवा, चहुत मन! आचारिज पदसेवा ॥ सुरपति सेवित त्रिपदी अन्यासें, शीश धरे वासखेवा ॥ तीर्थंकर देवबंद विराजित, गणधर देशना देवा ॥ च० ॥ आ० ॥ १ ॥ अंग डुवादश चउदश पूरव, मुहूर्त्तमांहे करेवा ॥ उपगारी उवफाय मुनिने, अंग उपांग-धरेवा ॥ च० ॥ आ० ॥ २ ॥ निजगुण अधिक उपासक चारो, सिद्धि अनीह कहेवा ॥ नाव स्वरूपचंद जिम उल्लसे, सिद्धिरमण सुख मेवा ॥ च० ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्मगुण स्तवन प्रारंनः ॥

॥ आतमगुण अनिलाख्यो, अनुनवी! आतमगुण अनिलाख्यो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र तपोगुण, वीरज उपयोग दाख्यो ॥ पुजल गंधादिकथी अलगो, श्री जिनराजें नांख्यो ॥ अनुनवी० ॥ आ० ॥ १ ॥ तेहनुं लक्षण मूलचेतनता, पुजल जड गुण आख्यो ॥ जिनमत शुद्धस्वरूप उल्लासें, स्वगुण रमण रस चाख्यो ॥ अनुनवी० ॥ आ०॥२॥इत्यात्मगुणस्तुतिः ॥

॥ अथ सुपार्श्वजिन स्तवन प्रारंनः ॥
॥ रातडीआ रमीने रे किहां थकी आविया ॥
॥ रे ॥ ए देशी ठे ॥

॥मुज मन नमरो प्रनुगुण फूलडे रे ॥ रमण करे दि नरात रे ॥ सुणजो स्वामि सुपास सोहामणा रे ॥ कर जोडी कहुं वात रे ॥ १ ॥ मनडुं ते चाहे रे, प्रनु मलवा नणी रे, पण दीसे ठे अंतराय रे ॥ जीव प्रमादी रे कर्म तणे वशें रे, ते केम मलवुं थाय रे ॥ म० ॥ २ ॥ लाख चोराशी जीवा योनिमां रे, नव अटवी गति चार रे ॥ काल अनादि अनंत नमतां थकां रे, किमही न आवे पार रे ॥ म० ॥ ३ ॥ मारग बतावो रे साहेब माहेरा रे, जेम आवुं तुम पाय रे ॥ लाज वधारो रे सेवक जाणीने रे, द्यो दरिसण जिनराय रे ॥ म०॥ ४ ॥ मूर्ति ताहारी रूपें रूअडी रे, अनुनवपद दातार रे ॥ नित्यलान प्रनु शुं प्रेमें वीनवे रे, तुमथी लहुं सुखसार रे ॥ म०॥ ५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥
॥ रायजी अमें तो हिंदुवाणी के, राज गराशी ॥
॥ या रे लो के ॥ ए देशी ठे ॥

॥ जिनजी गोडीमंमण पास के, विनति सांनलो रे लो ॥ जिनजी अरज करुं सुविलास के, मूकी आमलो रे लो ॥ जिनजी तुम दर्शनने काज के, जीवडो टलवले रे लो ॥ जिनजी महेर करो माहाराज के, आशा सवि फले रे लो ॥ १ ॥ जिनजी मननमरो

लजचाय के, प्रनुनी उलगें रे लो ॥ जिनजी जेम ते म मेलो थाय के, ते करजो वगें रे लो ॥ जिनजी दूरथ कां पण नेह के, साचो मानजो रे लो ॥ जिनजी तुम थी लहुं गुणगेह के, अमृत पानजो रे लो ॥२॥ जिनजी प्रनुशुं बांध्यो प्रेम के, ते केम वीसरे रे लो ॥ जिनजी बीजे जावा नियम के, प्रनुथी दिल ठरे रे लो ॥ जिनजी जोतां ताहारुं रूप के, अनुनव सांन रे रे लो ॥ जिनजी ताहरी ज्योति अनूप के, चिंता डुःख हरे रे लो ॥ ३ ॥ जिनजी एहुं नोजन खांय,मिठाइनी लालचें रे लो ॥ जिनजी आतमने हित थाय के, प्रनु ना गुण रुचे रे लो ॥ जिनजी कर्म तणां बल जोर के, तेहथी तारियें रे लो ॥ जिनजी समकेतना जे चो र के, तेहने वारियें रे लो ॥ ४ ॥ जिनजी निज सेव क जाणीने, मुक्ति बतावीयें रे लो ॥ जिनजी करुणा रस आणीने, मनमां लावीयें रे लो ॥ जिनजी वाच क सहज सुंदरनो, सेवक एम कहे रे लो ॥ जिनजी पंमित श्रीनित्यलान के, प्रनुथी सुख लहे रे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसजिनस्तवनं ॥

॥ रंगीले आतमा ॥ ए देशी ॥ सहेर बडा संसा रका, दरवाजे जसु चार ॥ रंगिले आतमा ॥ चोराशी लख घर वसे, अति महोटे विस्तार ॥ रं० ॥ १ ॥ घरघरमें नाटक बने, मोह नचावण हार ॥ रं० ॥ वेश बने केई नांतके. देखत देखनहार ॥ रं० ॥ ॥ २ ॥ चउद राजके चोकमें, नाटक विविध प्रकार ॥

रं० ॥ नमरी देइ देइ करती थेई, फिर फिर ए अधिकार ॥ रं० ॥ ३ ॥ नाचत नाद अनादिको, हुं नाच्यो निरधार ॥ रं० ॥ श्रीश्रेयांस कृपा करो, आनंदके आधार ॥ रंगी० ॥ ४ ॥ इति श्रेयांसजिन स्तवनं ॥

॥ अथ उपदेश पद ॥

॥ में हुं मुसाफर आया हो प्यारा, नहिं कोइ मेरा ॥ नहिं० ॥ जनम हुवा तव अपना कहावे, नहिं रहेणेंका फेरा हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ १ ॥ सज्जन कुटुंब सव अपना कहावे, ज्युं तीरथका मेला हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ २ ॥ धन कंचन कछु स्थिर नहिं रेणां, ज्युं वादलका घेरा हो प्यारा ॥नहिं० ॥ ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे प्रेमकी वातां, ज्युं घानीका फेरा हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां पद ॥

॥ जोवनीयांनी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घडि घडिनां घडियालां वागे, तोय न जागे तेथी रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावी फजेती रे ॥ आवी अवधें उजशे जाशे, लख पतिने लेती रे ॥ जो० ॥ २॥ मालें वेठो मोज करे छे, खांतें जूवे खेती रे ॥ जमरो नमरो ताणी लेशे, गोफण गोलासेंती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जम राजाने शरणे जावुं, जोरालो कोइ जेह्थी रे ॥ दुनियां दूजो दीसे नांहिं, आखर तरशो तेह्थी रे ॥ जो०॥ ४ ॥ दांत पड्याने मोसो थयो, काज न सख्युं कहेथी रे ॥ उदय

रत्न कहे आपें समजो, कहियें वातो केती रे ॥ज०॥५॥

॥ अथ शांतिनाथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ शांति जिणंद सुखकारी, सकलजन ! शांति जिणंद सुखकारी ॥ स्वस्तिश्री ऋद्धि वृद्धि जयंकर, मंगलाभ्युदयविहारी ॥ स० ॥ शां० ॥ १ ॥ सुरपूजित गढ तीन मनोहर, प्रातिहारज सहचारी ॥ वृक्ष अशोक परम मुददाता, कुसुमवृष्टि वरधारी ॥ स० ॥ ॥ शां० ॥ २ ॥ दिव्यध्वनि चउविध वाजित्रसुर, यो जनमान उदारी ॥ चिहुं दिशि चमर छत्र त्रिहुं शोभित, सिंहासन पदसारी ॥ स० ॥ शां० ॥ ३ ॥ भामंडल रवि कोटि विजंता, डुंडुभिध्वनि बलिहारी ॥ ऐसी सभामें श्री जिनसेवा, स्वरूपचंद मन प्यारी ॥ स० ॥ शां० ॥ ४ ॥ इति श्री शांतिनाथ स्तवनम् ॥

॥ अथ सीमंधर स्तवन प्रारंभः ॥

॥ चित्तडुं संदेशो मोकले, महारा वाल्हा जीरे ॥ मनडा साथें रे नेह, जइने कहेजो महारा स्वामी जीरे ॥ सीमंधर नित्य हुं जपुं, महारा स्वामी जीरे ॥ जेम बापईयो रे मेह ॥ ज० ॥ म० ॥ १ ॥ दूर देशांतर जइ रह्या ॥ म० ॥ माया लगाडीने हेव ॥ ॥ ज० ॥ म० ॥ पांखडी जो महारे होवे ॥ म० ॥ ऊडी आवुं ततखेव ॥ ज० ॥ म० ॥ २ ॥ प्रीत ते अधिकी होइ गई ॥ म० ॥ हवे केम छांडी रे जाय ॥ ज० ॥ म० ॥ उत्तम जनशुं प्रीतडी ॥ म० ॥ कदीय न छेही रे थाय ॥ ज० ॥ म० ॥ ३ ॥ निःस्नेही

तुम सारिखा ॥म०॥ मेंतो कोई न दीठ ॥ज०॥म०॥ हड्डामां चाहे नहिं ॥ म० ॥ मोढे बोले ते मीठ ॥ ज० ॥ म० ॥ ४ ॥ आशा तो तुम उपरें ॥ म० ॥ मेरु समान में कीध ॥ ज० ॥ म० ॥ जो क्षण एक कृपा करो ॥ म० ॥ तो सहु होवे रें सिद्ध ॥ ज० ॥ ॥ म० ॥ ५ ॥ जे अक्षय सुख शाश्वतां ॥ म० ॥ जे सहु चाहे रे लोक ॥ ज० ॥ म० ॥ नहिं आपो माग्युं थकुं ॥ म० ॥ जाणपणुं सहु फोक ॥ ज० ॥ ॥ म० ॥ ६ ॥ घणुं शुं कहियें जाणने ॥ म० ॥ देजो स्वामीरे सेव ॥ ज० ॥ म० ॥ कवि ते रूप प सायथी ॥ म०॥ ऋद्धि कहे नित्यमेव ॥ ज०॥ म०॥७॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ शांति जिणंद नजो सदा, नवियण बहु नावें ॥ जगत शिरोमणि जेहना, गुण ज्ञानी गावे ॥ शां० ॥ ॥ ॥ १ ॥ दूपण कांई न देखियें, मूरती अतिसारी ॥ मोहनगारी मुझ मनें, प्रभु लागे प्यारी ॥ शां० ॥ ॥ २ ॥ गर्नथकां पण गजपुरें, करुणा जिणे कीधी ॥ जनम समय त्रण जगतमें,दील शाता दीधी ॥ शां० ॥ ॥ ३ ॥ नाम जपे सुख निरखीनें, होए खुशियाली ॥ मंगलमाला मंदिरें, दिन दिन दीवाली ॥ शां०॥ ४ ॥ समकितधारी समझीनें, साचे दिल सेवे ॥ कहे ला वण्य कृपा करी, बहु दोलत घर देवे ॥ शां० ॥ ५ ॥

॥ अथ बालचंद बत्रीशी प्रारंनः ॥

॥ कवित ॥ अजर अमर पद परमेसरकों ध्याइ

यें ॥ सकल पातिक दूर विमल केवल धर, ज
वासो शिवपुर तासुं जय जाइयें ॥ नाद विंद
रंग पाणि पाद उत्तमंग, आदि अंत मध्यनंग ज
नाहिं पाइयें ॥ संघेण संठाण जाण, नहिं कोई
मान, ताहींको करत ध्यान शिवपुर जाइयें ॥
मुनि बालचंद सुनो हो नविक वृंद,अजर अमर
परमेसरकों ध्याइयें ॥ १ ॥ एक अरिहंत देव
करि जानियें ॥ जाकों क्रोध नाहिं मूर मान म
लोन्न दूर, कर्म किये चकचूर जिने मोह नाणीये
जाकों नमे इंद चंद सुरनर मुनि वृंद,अनंत गुणहिं
णंद त्रिभुवन मानियें ॥ जाकों हे अनंत ज्ञान देत
मुगति दान, अहोनिश ताको ध्यान मनमांहि
नियें ॥ नणे मुनि० ॥ एक० ॥ २ ॥ तरन ता
गुरु तारे नव पार ए ॥ पांचे इंडी संवरत
विधि ब्रह्मव्रत, धरत तजत नित क्रोधादिक
र ए ॥ महाव्रत पंच धार पाले हे पंच आ
र, सुमति गुपति सार, माता जयकार ए ॥
गुने गुरु होय खट काय पाले जोय, गौतम
म सोय मुगति दातार ए ॥ नणे० ॥ तरन
॥ ३ ॥ जग एक जीव दया धर्म सुख दाइए
धर्महितें ऋद्धि वृद्धि धर्महितें नवनिद्धि, धर्म
सकल सिद्धि बहु जीव पाइएं ॥ धर्महितें
लोक धर्महितें सब थोक, यह लोक परलोक
मही सखाइएं ॥ ताकूं नमे सुरवर नरवर बहू प

॥

रमेहिंसुं जेण नर एक, लय लाइएं ॥ जणे० ॥ ज
गग०॥ ४ ॥ उठ उठ धर्म कर सोवे मूढ कहा रे ॥
दुस्तर सागर तर कोइ तट पायकर, सोवे तिहां निं
द नर फिरि आवे उहां रे ॥ संसार सागरमांहि जाको
आदि अंत नांहिं, भ्रमत भ्रमत ताहिं पुदगल जिहां
रे ॥ कांठो हे मानव जव नीठ मूढ पायो अब, सोवे
मति खीन लव चेत चेत इहां रे ॥ जणे० ॥ उठ०
॥ ५ ॥ सुरतरु काट कर आक वावे तेह रे ॥ चिंता
मणि पाय कर मूढ ताकुं परहर, काच ग्रहे रंगजर ता
सों करे नेह रे ॥ गजपति वेच कर सो तो मूढ लेत
खर, पावे नहिं फेर फेर मुह परें खेह रे ॥ महामूढ
होत सोय काम जोग रक्त होय, हारे हे रतन जोय
मनुष्यको देह रे ॥ जणे० ॥ सुरतरु० ॥ ६ ॥ उत्तम
को संग कर नीच संग टालकें ॥ देखो हो सागर
संग खारी होत महा गंग, निंब ज्युं चंदन संग चंदन
ज्युं चालकें ॥ जातें खीर होत नीर ताकुं मिले जसु
वीर, सोजी वेठ जात खीर निजगुण गालकें ॥ पात्र
विन तारे वार टाले रक्तको विकार; तुंब जेद जये
चार जिन्न संग चालकें ॥ जणे० ॥ उत्तमको० ॥ ७ ॥
घडी घडी मूढ तेरो आउखल जाइयें ॥ कारमो कुटंब
एह, काहेकुं करत नेह, हारे हे मनुष्यदेह फेर कहां
पाइयें ॥ माय ताय घर वार बेटा बहू परीवार, आवे
नहिं तोरी लार, जासों मन लाइयें । सं
ख हुन धर्म कर एक मन मानव

कों गमाइयें ॥ जणे० ॥ घडी० ॥ ८ ॥ जनमत कह्य भयो करे क्युं न ग्यान रे ॥ उपनो तुं गर्भवास वसियो सवा नवमास, नर्ककी उपम जास दुःख अ हिठाए रे ॥ अंठ कोडी सोइ होम चांपे कोइ रोम रोम, आठ गुणो प्रतिलोम गर्भ दुःख जाण रे ॥ अ व तुं जनम पाय संसारको लागो वाय, फेर रह्यो क्यों भुलाय तुं तो हे अग्यान रे ॥ जणे० ॥ जन मत० ॥ ए ॥ जरा दूर जब लगें तब लगें जग रे॥ जरा जब आय लग लाल पर्के मुख मग, दंत गये सवे भग मग मग पग रे ॥ जरा आइ गइ बुद्धि रही नही कछु शुद्धि, रोग लगे वीध वीध जरा पडो धीग रे ॥ कह्यो कोइ माने नाहिं दुःख धरे मनमांहि, यौ वनको दीस जाहि उवी धर्म लग रे ॥ जणे० ॥ जरा० ॥१०॥यमको विसास नांहिं मूढ तुं संभाल रे ॥ काइ नू लो देख भाल चेते क्यों न प्रानी लाल, गहेगो दुर्ज न काल वालही गोपाल रे ॥ सरग पाताल जाय औषध भेषध खाय, करे बहूही उपाय तोही ग्रहे काल रे ॥ घटत घटत जात पल घडी दिनरात, आ उखो गलत भात करत जंजाल रे ॥ जणे० ॥ यम० ॥ ११ ॥ संसार असार तामें सार एक धर्म रे ॥ सं सार असार एह दीसत प्रभात जेह, सांज समे नां ही तेह कांहिं पड्यो भर्मरे॥ मेरो मेरो कांहिं करे सगो नांहिं कोइ तेरे, जीवही एकीलो फिरे भुंजे नीज कर्म रे ॥ संसारसागर घोर भम्यो जीव ठोर ठोर, कोइ

होत एक गोर कबु नांहिं शर्म रे ॥ नणे० ॥ संसार० ॥१२॥ आपसम राखो प्राणीहिंसा दूर टालकें॥ हिंसा हे अनर्थखान हिंसा तिहां पाप जान, जीव हिंसा गेड प्रान राग द्वेष टालकें ॥ हिंसाहीतें रोग शोग खान पान हीन नोग, बहु दुःख सहे लोग हिंसा हितें नालकें ॥ सुनूम चक्रवरत देखो जमदग्नि पूत, सातमी नरग पत्त हिंसा पंथ चालकें ॥ नणे० ॥ आपसम० ॥ १३ ॥ अन्ने दान खट काय जीवनकूं दीजीयें ॥ अन्नेदान बडो धर्म टाले हे दुःकृत कर्म, और हे मिथ्यात नर्म काहेकुंज कीजियें ॥ शरणें राख्यो पारापति मेघरथ नरपति, सिंचानेकुं कहे ग्रत्ति मेरो मांस लीजियें ॥ अन्नेदान दियो तिन्न चक्रवर्त्ति हुवो जिन्न, शांति नाथ दिन्नदिन्न त्रिभुवन पूजियें ॥ नणे० ॥ अन्ने० ॥ १४ ॥ काहेकों बोलत हे तुं जूठ निराताल रे ॥ जूठ नांखे महादुष्ट पापहीकों करे पुष्ट, लोक सहू करे रुष्ट तुंतो हे लबाड रे ॥ जूठा बोलो कहे लोय माने न वचन कोय, तिरियंच होत सोय आगम संन्नाल रे ॥ देखो राजा वसुन्नोल मीसर वचन बोल, सातमी नरक घोर गयो करी काल रे ॥ नणे० ॥ काहेकों० ॥ १५ ॥ विमल वचन सत्य सहू सुखकार हे ॥ विमल वचन नस सुखदायी सहु जन्न, जिनकी सुनत कन्न अमृतकी धार हे ॥ सिद्ध जे साधक नर ताकी विद्या सिद्ध कर, सुसेवित मुनिवर सत्य जग सार हे ॥ सत्यतें पावक जल मह्रो॰

ःधि होत थल, डुष्ट विष विषधर (अमृत अपार है)
नवहींकी खार है ॥ नणे० ॥ विमल० ॥ १६ ॥ चोरी
फरो कोइ मत्त चोरीतें विनाश रे ॥ चोरीतें ले राजा
ंम्ह मार करे शत खंम्ह, गधे चाडे शिर मुंम्ह फेरवत
ास रे ॥ मार मार कहे जन आरत करत मन्न,
राजा जाणे ततखिन्न देत गलफांस रे ॥ देखो हो अन्न
ा सेन चोरी बंध पायो जेन, कुटुंबसहित तेन कि
यो नरकावास रे ॥ नणे० ॥ चोरी० ॥ १७ ॥
ाइयें अमरपद दत्तव्रत पालतें ॥ देखो ज्यूं अंबड
लीस संख्या वीस पांतरीस, जेठ मास एक दीस पंथ
शिर चालतें ॥ तृषा लागी परिवल पियो नांहिं गंग
जल, व्रत पाल्यो निरमल दूषणके टालतें ॥ सत सय
काल कर हुआ महर्द्धिक सुर,सुख लाने इनपर आ
गम संनालतें ॥ नणे० ॥ पाइयें० ॥ १८ ॥ म म कर
म म कर परनारी संग रे ॥ परनारी देख कर कटाक्ष
नयन नर, आपद पावत नर दीप ज्युं पतंग रे ॥
खिणमात होत सुख देखे नव सत डुःख, करत वि
षम विष मूरतिको नंग रे ॥ फिट फिट करे लोय अज
स कीरति होय, रमणि कारण जोय होत मोहोटा
जंग रे ॥ नणे० ॥ म म कर० ॥१९॥ शील व्रत पालो

आय मिले, मांहे समकित नले तोउ कहा पाइयें ॥ नणे० ॥ शीलव्रत० ॥ २० ॥ अति घणो परिग्रह ङुःखहींको देत रे॥ कोइ नर नरपति चलत परतगति, परिग्रह देख मति साथ नांहि लेत रे॥ देखो क्युं न ब्रह्मदत्त सयंनूम चक्रवर्त्त, सातमी नरक पत्त सूत्र साखी देत रे ॥ खात पीत नाइ बंध पाप चडे तोरे खंध, कांइ मूढ होत अंध हिये कबु चेत रे॥नणे०॥ अति० ॥२१॥ संतोष करत जीव नित्य सुख पाइयें ॥ संतोष करत नर ङुःखको सागर तर, परम आनंद घर ततक्षण पाइयें ॥ देखो हो कपिल मुन संतोष करत जिन, पायो हे केवल धन धन्य गुण गाइयें ॥ जिनवर गणधर गणिवर मुनिवर. परम संतोष कर शिवपुर जाइयें ॥ नणे० ॥ संतोष० ॥ २२ ॥ क्रोध हे अनर्थ मूल क्रोध दूर बोड रे ॥ क्रोधहीतें नरक जाय वाघ सिंघ सर्प्प थाय, क्रोधहीतें नरम लाय नव कोडाकोड रे ॥ क्रोधहीतें प्रीत जाय क्रोधहीतें विष खाय, क्रोध बहू ङुःखदाय जीव आणे खोड रे ॥ क्रोधकी उपनी काल जूउ तुमें ततकाल, करी नाखो आल माल पीडा मन मोड रे ॥ नणे० ॥क्रोध०॥२३॥ क्षमा करो नरपूर म म करो रीश रे ॥ क्षमाहीते वेर जाय ङुपमन लागे पाय, त्रिजुवन जस थाय सही विश्वावीश रे ॥ देखो गजसुकुमाल क्षमा करी क्रोध मार, संसारको पायो पार वदो निश दीस रे ॥ राय परदेशी धन्न क्षमा करि एक मन्न, देवलोक पायो तिन्न

री हे जगीश रे ॥ नणे० ॥ क्षमा० ॥ २४ ॥ काहेकुं
रत हे तुं मूढ अहंकार रे ॥ लक्ष्मी तो नांही थिर
ात जात फिर फिर, यौवनभी जात खीर तुं तो हे
मार रे ॥ जाहिंको करत गर्व सोय विणस जात स
ं, पावे नांहि ऋद्धि सर्व सो तो वार वार रे ॥ राव
हीतें रंक होय रंकहीतें राव जोय, थिर रह्यो नांहिं
कोय अथिर संसार रे ॥ नणे० ॥काहेकुं० ॥ २५ ॥
म म कर मूढ माया कूडही कपट्ट रे ॥ मायातें नरक
घोर मायाहीतें होत ढोर, मायाहीतें पावे जोर दुःख
हींको थट्ट रे ॥ जो करत परद्रोह मंमत कपट मोह,
आपकुं शोपण खोह कांइ होत जट्ट रे ॥ हियांहीसुं
चेत नर मोहमाया परिहर,संसार सागर तर पायो हे
तट्ट रे ॥ नणे० ॥ म म कर० ॥ २६ ॥ सुख होत
लोभ वश करत करत रे ॥ लोभहितें रातदिन्न चिंतें
मेलुं मेलुं धन्न,दुःख होत लोभ मन धरत धरत रे ॥
जोरे धन्न रल रल आयु घटे पल पल, जात ज्युं अं
जल जल झरत झरत रे ॥ सुनूम प्रमुख नृप करत
जे दोर धूप, बोड गये लोभ कूप नरत नरत रे ॥
नणे० ॥ सुख होत० ॥ २७ ॥ काहेकुं करत लोभ
देत क्युं न दान रे ॥ दान शिव सुखदाय दानथें दा
रिद्र जाय, घरे नवनिधि थाय माने राय रान रे ॥
दान देवो चित्त लाय दानें धन वृद्धि थाय, जेसें वा
डी कूप पाय होत वृद्धिमान रे ॥ देखो हो सुमुख
जिन प्रतिलाभ्यो महामुन, कुमर सुबाहू तिन रू

पको निधान रे ॥ नणे० ॥ कहेकुं० ॥ २८ ॥ वडो व्रत व्रतमांहे शीलव्रत जान रे ॥ सागर आगर मांहिं स्वयंजु जदधि मांहि, वडो दान दान मांहि अजय ज्युं दान रे ॥ चंद ग्रहगणमांहि, ब्रह्मलोक कल्प मांहि, वडो ज्ञान ज्ञान मांहि केवल ज्युं ज्ञान रे ॥ अरिहंत मुनि मांहे मनोरम गिरिमांहे, वडो ध्यान ध्यानमांहे सुकल ज्युं ध्यान रे ॥ नणे० ॥ वडो० ॥ २९ ॥ नवकोटि कृतकर्म तपहीतें टालियें ॥ तपतें वांछित फल होत जीव निरमल, तप रूप दावानल कर्म वन बालियें ॥ देखो धनो अणगार डुक्कर तपको कार छोडकें बतीस नार जिनव्रत पालियें ॥ सागर तेत्रीश वर हूउ अणुत्तर सुर, जाके गुणरूप जल आतम पखालियें ॥ नणे० ॥ नवकोटि०॥३०॥ नावहीतें होत सिद्ध नावही प्रधान रे ॥ बहू विधें व्रत लीध तप कीध दान दीध, नाव विना नांहिं सिद्ध होत फल हान रे ॥ सुन नाव नावे जेह नव निधि तरे तेह, पायो ज्युं मुगति गेह नरत राजान रे ॥ मरुदेवी मात धन डुक्करह तप विन, शिव पद पायो जिन ध्याई शुन्न ध्यान रे ॥ नणे० ॥ नावही० ॥ ३१ ॥ धर्म हे मंगल मूल धर्महीकुं सेव रे ॥ धर्म हे कलप वृक्ष देखो जातें परतक्ष, नोगवेहे लोक लक्ष सौख्य नित्यमेव रे ॥ धर्मके उत्तम फल जाति कुल रूप बल, विकट संकट टल जाते ततखेव रे ॥ धर्मही डुष्कृत दहे इंद्रादिक पद लहे, धर्मे शिव सुख

कहे अरिहंत देवरे ॥ नणे० ॥ धर्म० ॥३१॥ महानंद सुख कंद रूपचंद जानियें ॥ श्रीयरूपजीवगणि कुं अर श्रीमल्ल मुनि, रतनसील जस धनी त्रिभुवन मानियें ॥ विमल शासन जास मुनि श्रीय गंगदास, हस्त दीक्षित तास वत्रिशी वखानियें ॥ वाण वसु रस चंद (१६८५) दीवाली मंगल वृंद, अहम्मदावाद इंद रंग मन आनियें ॥ नणे मुनि बालचंद सुनो हो नविक वृंद, महानंद सुखकंद रूपचंद जानियें ॥३३॥ इति श्री बालचंद वत्रशी संपूर्णा ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ विमलाचल वेगें वधावो ॥ ए देशी ॥

॥ चउमासी पारणुं आवे, करि वीनति निज घर जावे ॥ प्रिया पुत्रने वात जणावे, पटकूल जरी पथ रावे रे ॥ महावीर प्रनु घरें आवे, जीरण शेठजी ना वना नावे रे ॥ महा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उन्नी शेरीयें जल बटकावे, जाई केतकी फूल बिगवे ॥ निजघर तोरण वंधावे, मेवा मिठाइ थाल नरावे रे ॥ महा० ॥ २ ॥ [illegible] दानज दीजें, देतां जे

हीशुं रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ दया दान क्षमा शील धर शुं, उपदेश सज्जनने करशुं ॥ सत्यज्ञानदिशा अनुसरशुं, अनुकंपा लक्षण वरशुं रे ॥ महा० ॥ ६ ॥ एम जीरण शेठ वदंता, परिणामनी धारें चढंता ॥ श्रावकनी सीमें ठरंता, देवडुंदुभि नाद सुणंता रे ॥ महा० ॥ ७ ॥ करी आयु पूरण शुभजावें, सुरलोकें अच्युतें जावे ॥ शाता वेदनी सुख पावे, शुभ वीर वचन रस गावे रे ॥ महा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषभजिनस्तवनं ॥

॥ जयो जयो नायक जग गुरु रे, आदीसर जिन राय ॥ तुज मुख देखी साहेबा, मुज आनंद अंग न माय ॥ ऋषभदेव तुं मोरो महाराज, ताहरुं दर्शन दीतुं में आज, प्रभु मुज सीधां वंछित काज ॥ ऋ० ॥ १ ॥ आंखडी कमलनी पांखडी रे, जाणीयें अमीरसकंद ॥ दिन दिन मुखडुं दीपतुं जाणे, नयन चकोरा चंद ॥ ऋ० ॥ २ ॥ सूरति जिनजीनी मोहनी रे, साची मोहन वेल ॥ मनना मनोरथ पूरती जाणे, कल्पतरूनी वेल ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ एकण जीभें ताहेरा रे, गुण कहेतां न कहेवाय ॥ जिम गंगा रज कण तणी कहो, केणी परें संख्या थाय ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ शेत्रुंजा गिरिनो राजियो रे, नाभिराया कुल चंद ॥ केसरविमल एम वीनवे प्रभु, द्यो दर्शन सुखकंद ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ इति ऋषभजिन स्तवनं ॥

॥ पार्श्वजिन स्तवन कच्छी न्नापामां ॥

॥ सुघड पास प्रज्जु रे, दरिसण वेलडोनी दिञ्ज॥ दरिसण तोजो लाख टकनजो, लाख टकनजो लाख ट कनजो रे, कामणगारा तोजा नेण ॥ सु० ॥ सांही असांजो तुं अंश्यें तुं अंश्यें तुं अंश्यें रे, मिठडा ल गेंता तोजा वेण ॥ सु० ॥ द० ॥ १ ॥ अंधाथकी असीं आविया आविया आविया रे, सफल जनम थेयो अञ्ज ॥ सु० ॥ द० ॥ मेहेर कज ज्जजी मुंमथे मुंमथे मुंमथे रे, वांहे ग्रहेजी लञ्ज ॥ सु० ॥ द० ॥ ॥ २ ॥ दिल लगो मुंजो तोमथे तोमथे तोमथे रे, थेर्त से वेंधो कींह् ॥ सु० ॥ द० ॥ सजोही तोके सं न्नारीयां संन्नारीयां संन्नारीयां रे, मींह् वापीयडा जींह् ॥ सु० ॥ द० ॥ ३ ॥ जगमे देव दग जजा दग जजा दग जजा रे, तेंमें तुं वञ्जो पीर ॥ सु० ॥ द० ॥ असी वामाजीजे नंदके नंदके नंदके रे, दरिसणें थे यासुं खलो खीर ॥ सु० ॥ द० ॥ ४ ॥ घोरञ्जी वं ञ्जा तोजे नामथा नामथा नामथा रे, मुगतीजो दा तार ॥ सु० ॥ द० ॥ थरञ्जो ठाकुर न्नेटेयो न्नेटेयो न्नेटेयो रे, नित्य लान्नजो आधार ॥ सु० ॥ द० ॥ ५ ॥

॥ अथ शीतलजिनस्तवनं ॥

॥ शीतल जिनवर सांन्नलो रे, गुणनिधि गरीब निवाज ॥ देखी दरीसण ताहेरुं रे, सफल थयो दि न आज ॥ शी० ॥ १ ॥ सूरत ताहारी सोहामणी रे, लाल अमूलक नंग ॥ जाणीयें कल्पद्रुम सारखो रे,

कीधी प्रीति अनंग ॥ शी० ॥ २ ॥ हेजाले नयणें क
ा रे, मलजो मुजने स्वाम ॥ अंतरजामी बो माह
ा रे, नवडःख नंजण ठाम ॥ शी० ॥ ३ ॥ साचो
ाजन तुं मिल्यो रे, प्रीति कीधी परमाण ॥ हियडे
नींतर तुं वस्यो रे, नावें जाण म जाण ॥ शी० ॥
। ४ ॥ धरणीतलमां जोवतां रे, अवर मिल्या मुज
ाख ॥ पण ते हुं नही आदरुं रे, श्रीपरमेसर साख
। शी० ॥ ५ ॥ सीताने मन रामजी रे, राधाने मन
कान ॥ नमरो मालति फूलडे रे, तिम प्रनुशुं मुज
तान ॥ शी० ॥ ६ ॥ रोहिणीने मन चंदलो रे, जिम
मोरामन मेह ॥ इंड्राणीने मन इंदलो रे, तिम प्र
नुशुं मुज नेह ॥ शी० ॥ ७ ॥ अमने तमोरो बे आ
शरो रे, नहि कोइ बीजाशुं वाद ॥ साचो सेवक जा
णशो रे, तो सवि पूरशो लाड ॥ शी० ॥ ८ ॥ अ
चलगडनें देहरे रे, मुदरा नगर मजार ॥ महिमा
वंत मया करो रे, नवडख नंजणहार ॥ शी० ॥
॥ ए ॥ सानिधकारी बो साहेबा रे, प्रणम्यां पातक
जाय ॥ सहज सुंदर गुरुरायनो रे, नित्य लाज प्रनु
गुण गाय ॥ शी० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ प्रनातीरागमां स्तवन ॥

॥ प्रनातें उठीने माता मुखडुं जोवे ॥ ए देशी ॥

॥ आवी रूडी नगति में, पहेलां न जाणी ॥ पहे
लां न जाणी रे प्रनु, पहेलां न जाणी ॥ संसारनी
मायामां में, वलोव्युं पाणी ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥

कल्पतरुनां फल लावीनें, जे जिनवर पूजे ॥ का
अनादि कर्म ते संचित, सत्ताथी धूजे ॥ आ० ॥ १
स्थावर तिरि निरयालय डुग, इगविगला लीजें ॥ स
धारण नवमे गुणठाणे, धुरत्नागें ढीजे ॥ आ० ॥ २
केवल पामीने शिवगति पामी, शैलेशी टाणे
चरम समय दोयमांहे स्वामी, अंतिम गुणठाणे
॥ आ० ॥ ३ ॥ बाकी नाम करमनी पयडी, सघल
तिहां जावे ॥ अजर अमर निकलंक स्वरूपें, निः
मां थावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जे सिद्ध केरी पडिमा पूजे
ते सिद्धमयी होवे ॥ नाई धोई निरमल चित्तें, आ
सो जोवे ॥ आ० ॥ ५ ॥ कर्मसूदण तप केरी पूजा
फल ते नर पावे ॥ श्रीशुन वीर स्वरूप विलोकी
शिववहु घर आवे ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ पासजिणंद सदाशिव गामी, वालोजी अंत
जामी रे ॥ जगजीवन जिनजी ॥ मुहूरत ताहारी मं
हनगारी, नवियणने हितकारी रे ॥ ज० ॥ १ ॥
वामा रे नंदन सांजलो स्वामी, अरज करुं शिर ना
मी रे ॥ ज० ॥ देव घणा में तो नयणें रे दीठा, तुमे
घणुं लागो ठो मीठा रे ॥ ज० ॥ २ ॥ में तो मनमां
तुंहीज ध्यायो, रत्नचिंतामणि पायो रे ॥ ज० ॥ रा
त दिवस मुऊ मनमांहे वसियो, हुं तुं तुम गुण र
सियो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ महेर करीने साहेबा नजरे
निहालो, तमें ठो परम कृपालो रे ॥ ज० ॥ गोडी रे

गाममां तुंहीज सोहियें, सुर नरनां मन मोहियें रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ वे कर जोडीने प्रज्ञु पाये लागुं, नित नित दरिसण मागुं रे ॥ ज० ॥ देव नही कोय ताहारी तोलें, नितलाज्ञ एणि परें बोले रे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिनस्तवनं ॥

॥ महावीर स्वामी मुगते पोहोता, गौतम केवल ज्ञान रे ॥ धन दीवाली धन अमाँवास्या, वीरतणुं निर्वाण ॥ प्रज्ञुमुख जोवाने, महारे दीवाली थई आज ॥ प्र० ॥ मोहि मोहि रे मीवडा लाल, जिन मुख जोवाने ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चारित्र पाली निरमलुं ने, टाली विषय कषाय रे ॥ एवा मुनिनें वांदीयें तो, उतारे ज्ञवपार ॥ प्र० ॥ म० ॥ २ ॥ बाकुला वहोरया वीरजी ने,तारी चंदनवाला रे ॥ केवल लहीने मुक्तें पोहोता, पाम्या ज्ञवनो पार ॥ प्र० ॥ म० ॥ ३ ॥ एवा देवनें वांदीयें, जे पंचम ज्ञानने धरता रे ॥ समोसरणें दइ देशना, प्रज्ञु तारयां नर ने नार ॥ प्र० ॥ म० ॥ ४ ॥ चोवीशमो जिन जिनेसरु ने,मुक्ति तणो दातार रे ॥ कर जोडी कवियण इम ज्ञणे, मारो ज्ञवनो फेरो टाल ॥ प्र० ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दानशीयलतप अने ज्ञावनुं चोढालियुं प्रारंज्ञ. ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रथम जिणेसर पाय नमी, पामी सुगुरुप्रसाद ॥ दान शियल तप ज्ञावना, बोलिश बहु संवाद ॥ १ ॥ वीर जिणंद समोसरया राजगृही उद्यान ॥

समवसरण देवें रच्युं, वेग श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥ बे
वारे परखदा, सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहे
जु हुं वडो, मुझने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजल
सहुको तुमें, कुण छे मुज समान ॥ अरिहंत
ना अवसरें, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम प
र दातारनुं, लीये सहु कोइ नाम ॥ दीधारी देउल
छे, सीझे वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरने पारणे, कु
करशे मुझ होड ॥ वृष्टि करुं सोवन तणी, साडी
रह कोड ॥ ६ ॥ हुं जग सघलुं वश करुं, मुझ मो
टी छे वात ॥ कुण कुण दानथकी तस्या, ते सुण
अवदात ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ललनानी देशी ॥

॥ धन सारथवाह साधुने, दीधुं घृतनुं दान
ललना ॥ तीर्थंकर पद में दीयुं, तिणे मुझने अजिम
न ॥ ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वडुं, मु
सरिखुं नही कोय ॥ ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख सं
दा, दानें दोलत होय ॥ ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सु
ख नामें गाथापति, पडिलाज्यो अणगार ॥ ललना
कुमर सुबाहु सुख लह्युं, तेतो मुझ उपगार ॥ लल
ना ॥ दा० ॥ ३ ॥ पांचशें मुनिने पारणुं, देतो व
होरी आण ॥ ललना ॥ जरत थयो चक्रवर्त्ति जलो
ते पण मुझ फल जाण ॥ ललना ॥ दा० ॥ ४
मास खमणने पारणे, पडिलाज्यो ऋषिराय ॥ लल
ना ॥ शालिजद्र सुख जोगवे, दान तणे सुपसाय ॥

ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या अडदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ॥ ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणां फल देख ॥ ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिणेसर पारणें, श्री श्रेयांस कुमार ॥ ललना ॥ से लडीरस वोहोरावियो, पाम्यो भवनो पार ॥ललना॥ दा० ॥ ७ ॥ चंदनबाला बाकुला, पडिलाभ्या महा वीर ॥ ललना ॥ पंचदिव्य प्रगट थयां, सुंदररूप शरीर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव भव पारेवडुं, शरणे राख्युं सूर ॥ ललना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्ति प णे, प्रगट्यो पुण्यपडूर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ए ॥ गजभवें शशलो राखियो, करुणा कीधी सार ॥ लल ना ॥ श्रेणिकने घरे अवतस्यो, अंगज मेघ कुमार ॥ ललना ॥ दा० ॥ १० ॥ एम अनेक में उद्धस्या, कहे तां नावे पार ॥ ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुऊ पहेलो अधिकार ॥ ललना ॥ दा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शियल कहे सुण दान तुं, किस्यो करे अहंकार ॥ आभंबर आठे पहोर, याचकशुं व्यवहार ॥ १ ॥ अं तराय वलि ताहरे, भोग करम संसार ॥ जिनवर कर नीचा करे, तुऊने पडयो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान तुं, मुऊ पूठे सहु कोय ॥ चाकर चाले आगले, तो शुं राजा होय ॥ ३ ॥ जिन मंदिर सोना तणुं, नवुं निपावे कोय ॥ सोवन कोडी दान दिये, शियल समुं नहि कोय ॥ ४ ॥ शियलें संकट सवि

टले, शियलें सुजस सोभाग ॥ शियलें सुर सानिध करे शियल वडो वैराग ॥ ५ ॥ शियलें सर्प न आभडे शियलें शीतल आग ॥ शीलें अरि करी केशरी, भय जाये सवि भाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना भयथकी, में गेडाव्या अनेक ॥ नाम कहुं हवे तेहनां, सांभ लजो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ पास जिणंद जुहारीयें ॥ ए देशी ॥

॥ शियल कहे जग हुं वडो, मुज वात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावे लोकने, में दान तणी वात दीठी रे ॥ शि० ॥ १ ॥ कलह कारण जग जाणीयें, वली विरति नही पण कांइ रे ॥ ने नारद में सीजव्यो, मुज जुर्ज ए अधिकाइ रे ॥ शि० ॥ २ ॥ वांहे पहेखा बेरखा, शंखराजायें दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते में नवपल्लव कीधो रे ॥ शि० ॥३॥ रावण घर सीता रही, तो रामचंदें घर आणी रे ॥ सीतानुं कलंक उतारीयुं, में पावक कीधो पाणी रे ॥ शि० ॥ ॥ ४ ॥ चंपा बार उघाडवा, वली चारणीयें काढीयुं नीरो रे ॥ सतीय सुभद्रा जस थयो, में तस कीधी भीरो रे ॥ शि० ॥ ५ ॥ राजा मारण मांमीयो, राणी अभयायें दूषण दाख्यो रे ॥ शूली सिंहासण में कीयो. मे शेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शि० ॥ ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरें, आवतां अरिदल थंभ्यो रे ॥ तिहां पण सानिध में करी, वली धरम कारज आरंभ्यो रे ॥ शि० ॥ ७ ॥ पहेरण चीर प्रगट कीयां, में अ

छोत्तरशो वारो रे ॥ पांमवनारी झैपदी, में राखी मा म उदारो रे ॥ शि० ॥ ७ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, व ली शीलवंती दमयंती रे ॥ चेडानी साते सुता, राजि मती सुंदरी कुंती रे ॥ शि० ॥ ए ॥ इत्यादिक में उ द्धर्यां, नर नारीनां वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्रञु वीर जी, पहेलो मुफ आणंदो रे ॥ शि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तप बोल्युं त्रटकी करी, दानने तुं अवहील ॥ पण मुफ आगल तुं किस्युं, सांजल रे तुं शील ॥ १ ॥ सरसां जोजन तें तज्यां, न गमे मीठा नाद ॥ देह तणी शोजा तजी, तुफमां किस्यो सवाद ॥ २ ॥ नारीथकी मरतो रहे, कायर किश्युं वखाण ॥ कू ड कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुफ आदरे, ढंमी सहु संसार ॥ आप ए क तुं जांजतो, बीजा जांजे चार ॥ ४ ॥ करम निका चित त्रोडवा, जांजुं जव जय जीम ॥ अरिहंत मुफ ने आदरे, वरस ढमासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदी सर ऊपरे, मुफ लब्धें मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारे शाश्वतां, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोहोटा जोय ए लाखना, लघु कंथु आकार ॥ हय गय रथ पायक तणां, रूप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुफ कर फरसे उ पशमे, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अघावीश ऊपजे, उत्तम तप संजोग ॥ ७ ॥ जे में ताख्या ते कहुं, सु

एजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित पामशो, देशो मुऊ शावास ॥ ए ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ नणदलनी देशी ॥

॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कीधी चार हो ॥ सुंदर ॥ ते पण तिण जव उद्धस्यो, मूक्यो मुक्ति म ऊार हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ तप सरिखुं जग को नही, तप करे कर्मनुं सूड हो ॥ सुंदर ॥ तप करवुं अति दोहिलुं, तपमां नही को कूड हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ॥ २ ॥ सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघो र हो ॥ सुंदर ॥ अर्जुनमाली में उद्धस्यो, छेद्यां कर्म कठोर हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ३ ॥ नंदीषेणने में कि यो, स्त्रीवल्लन वसुदेव हो ॥ सुंदर ॥ बहुंतेर सहस अंतेउरी, सुख जोगवे नित्यमेव हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ॥ ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणो, हरिकेशी चंमाल हो ॥ सुंदर ॥ सुर नर कोडी सेवा करे, ते में कीधी चाल हो ॥ सुंदर ॥ तप०॥ ५ ॥ विष्णुकुमर लब्धें कीधुं, लाख जोयणनुं रूप हो ॥ सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे का रणें, ए मुऊ शक्ति अनूप हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांद्या जिन चोवीश हो ॥ सुंदर ॥ तापस पण प्रति बूऊव्या, तेणें मुऊ अ धिक जगीश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ७ ॥ चौद सह स अणगारमां, श्रीधनु अणगार हो ॥ सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुऊ अधिकार हो ॥ सुंद र ॥ तप० ॥ ८ ॥ रूप्पण नरेसर आगले, इक्कर कार

कहेय हो ॥ सुंदर ॥ ढंढण नेमी प्रशंसीयो, मुफ म
हिमा सवि तेह हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ए ॥ नंदीषेण
वोहोरण गयो, गणिकायें कीधी हास हो ॥ सुंदर ॥
वृष्टि करी सोवन तणी, में तसु पूरी आस हो ॥
सुंदर ॥ तप० ॥ १० ॥ एम बलन्नद्र प्रमुख बहु,
ताख्या तपसी जीव हो ॥ सुंदर ॥ समयसुंदर प्रनु वीर
जी, पहेलो मुफ प्रस्ताव हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नाव कहे तप तुं किश्युं, ठेडचुं करे कषाय ॥
पूर्व कोडि जो तप तपे, क्षणमां खेरु थाय ॥ १ ॥
खंधक आचारज प्रतें, तें वाल्यो सवि देश ॥ अशुन्न
नियाणुं तुं करे, क्षमा नही लव लेश ॥ २ ॥ द्वैपा
यन ऋषि दूहव्या, सांब प्रद्युम्ननेसाहि ॥ ते तप क्रोध
करी तिहां, दीधो द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शियल त
प सांनलो, म करो फूव गुमान ॥ लोक सहुको साख
दे, धर्मे नाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक ठो त्रणे,
दे व्याकरण ते साख ॥ काम सरे नहि कोइनुं, नाव
नणे मुं पाख ॥५॥ रस विण कनक न नीपजे, जल वि
ण तरुअर वृद्धि ॥ रसवति रस नहि लवण विण,
तिम मुफ विण नहि सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र जन्त्र मणि औ
षधि, देव धर्म गुरु सेव ॥ नाव विना ते सवि वृथा.
नाव फले नितमेव ॥ ७ ॥ दान शियल तप जे तुमे,
निज निज कह्यां वृतंत ॥ तिहां जो नाव न हुंत तो,
कोइ सिद्धि नवि हुंत ॥ ८ ॥ नाव कहे मे एकले,

ताखां बहु नर नार ॥ सावधान थइ सांनलो, नाम कहुं निर्धार ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ काननमांहे काउस्सग्ग रह्यो रे, प्रश्नचंद ऋषि राय ॥ ते में कीधो केवली रे, ततक्षण करम खपा य ॥ १ ॥ सोनागी सुंदर, नाव वडो संसार ॥ एतो वीजो मुऊ परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे, पोहोंचाडुं नवपार ॥ सो० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ वंश उपर चढी खेलतो रे, एला पुत्र अपार ॥ केवल ज्ञानी में कीयो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ॥ ३ ॥ नूख तृषा खमे अति घणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल महिमा सुर करे रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ॥ ४ ॥ लानथी लोन वाधे घणो रे, आव्यो म न वैराग ॥ कपिल थयो मुनि केवली रे, ते ए मुऊने सोनाग ॥ सो० ॥ ५ ॥ अन्निका सुत गछनो धणी रे, क्षीणजंघा वलि जाण ॥ कीधो अंतगड केवली रे, गंगाजल गुणखाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पन्नरशें ताप स नणी रे, दीधी गौतमें दिख ॥ ततक्षण कीधा केवली रे, जो मुऊ मानी शीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पा लक पापीयें पीलिया रे, खंधक सूरिना शिष्य ॥ ज नम मरणथी छोडव्या रे, आपे मुऊ आशीष ॥ सो० ॥ ८ ॥ चंड रुद्रने चालतां रे, दीधो दंम प्रहार ॥ नव दीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पण तिणि वार ॥ सो० ॥ ए ॥ धन रथकारक साधुने रे, पडिलाभ्यो

उल्लास ॥ मृगलो नावना नावतो रे, पोहोतो स्वर्ग आवास ॥ सो० ॥ १० ॥ निज अपराध खमावती रे, मूक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीने में दीयुं रे, निर्मल केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरें रे, देखी पुत्रनी ऋद्धि ॥ मुऊने मनमांहे ध स्यो रे, ततक्षण पामी सिद्धि ॥ सो० ॥ १२ ॥ वीर वंदण चाल्यो मारगें रे, चांप्यो चपल तुरंग ॥ दर्डुरनामें देवता रे, तेह थयो मुऊ संग ॥ सो० ॥१३॥ प्रनुपाय पूजन नीसरी रे, डुर्गेला नामें नार ॥ कालधर्म वचमां करी रे, पोहोती स्वर्ग मऊार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोना कारमी रे, रूप किस्यो अनिमान ॥ नरत आरीसा नुवनमां रे, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढनूति कलानिलो रे, प्रगट्यो नरत सरूप ॥ नाटक करतां पामीयो रे, केवलज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षा दिन काउस्सग्ग रह्यो रे, गजसुकमार मशाण ॥ सोमल शीश प्रजालियो रे, सिद्धि गयो शुन्न जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, सांनली पृथिवी चंद ॥ पोतें केवल पामीयो रे, सेव करे सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ एम अनेक में उद्धर्या रे, मूक्या शिवपुर वास ॥ समयसुंदर प्रनु वीरजी रे, मुऊने प्रथम प्रकाश ॥ सो० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥ वीर कहे तुमे सांनलो, दान शियल तप नाव ॥ निंदा ठे अति पापिणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पर निंदा करतां थकां, पापें पिंम नराय ॥ वेढ

तासां बहु नर नार ॥ सावधान थइ सांजलो, नाम कहुं निर्धार ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ काननमांहे काउस्सग्ग रह्यो रे, प्रश्नचंद ऋषि राय ॥ ते में कीधो केवली रे, ततक्षण करम खपाय ॥१॥ सोजागी सुंदर, जाव वडो संसार ॥ एतो बीजो मुफ परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे, पोहोंचाडुं जवपार ॥ सो० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ वंश उपर चढी खेलतो रे, एला पुत्र अपार ॥ केवल ज्ञानी में कीयो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ॥ ३ ॥ जूख तृषा खमे अति घणी रे, करतो क्रूर आहार ॥ केवल महिमा सुर करे रे, क्रूरगडू अणगार ॥ सो० ॥ ४ ॥ लाजथी लोज वाधे घणो रे, आण्यो मन वैराग ॥ कपिल थयो मुनि केवली रे, ते ए मुफने सोजाग ॥ सो० ॥ ५ ॥ अन्निका सुत गन्नो धणी रे, क्षीणजंघा बलि जाण ॥ कीधो अंतगड केवली रे, गंगाजल गुणखाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पन्नरशें तापस जणी रे, दीधी गौतमें दिख ॥ ततक्षण कीधा केवली रे, जो मुफ मानी शीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पालक पापीयें पीलिया रे, खंधक सूरिना शिष्य ॥ जनम मरणथी छोडव्या रे, आपे मुफ आशीष ॥ सो० ॥ ८ ॥ चंड रुद्रने चालतां रे, दीधो दंम प्रहार ॥ नव दीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पय तिणि वार ॥ सो० ॥ ए ॥ धन रथकारक साधुने रे, पडिलाभ्यो

॥ ४ ॥ सोलशें ठासफसमे रे, सांगानेर मकार ॥ पद्म प्रनु सुपसाउले रे, एह नण्यो अधिकार रे ॥ धर्म० ॥ ॥५॥ सोहम सामी परंपरा रे, खरतर गन्न कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगडो रे, श्री जिनचंद सूरिंद रे ॥ ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अतिदीपतो रे, विनय वंत जसवंत ॥ आचारिज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शिष्य ॥ समयसुंदर वाचक नणे रे, संघ सदा सुजगीश रे ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ दान शियल तप नावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ नणतां गुणतां नावशुं रे, रूद्धि समृद्धि सुप्रसादो रे ॥ धर्म० ॥ ए ॥ इति दानशियल तप नावनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रनाती रागमां स्तवन ॥

॥ कहा रे अज्ञानी जीवकूं, गुरु ज्ञान बतावे॥कबहुं र विषधर विष तजे, कहा दूध पिलावे ॥ कहा० ॥ १ ॥ ऊखर ईख न नीपजे, कहा बोवन जावे ॥ रा सन गार न गंमही, कहा गंग जिलावे ॥ क० ॥ २ ॥ काली ऊन कुमाणसां, रग दूजो न आवे ॥ श्रीजिन राज कहुं कहा, वाको सहज न जावे ॥ क० ॥ ३ ॥

॥ अथ सुविधिजिनस्तवनं ॥ राग प्रनाती ॥

॥ मुजरा साहेब मुजरा साहेब, साहेब मुजरा मेरा रे ॥ साहेब सुविधि जिनेसर प्यारा, चरण पखालुं प्रनु तेरा रे ॥ मु० ॥१॥ केशर चंदन चरचुं अंगें, फूल चडावुं सेरा रे ॥ घंट बजावुं ने अगर उखेवुं, करुं

वाधे घणी, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरख पापियो, जूंभो कोइ न दीठ ॥ वलि चंमालसमो कह्यो निंदक मूख अदिठ ॥३॥ आप प्रशंसा आपणी, करत इंद्र नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को कहेनी म करो तुमें, निंदा ने अव कार ॥ आप आपणे ठामें रहो, सहुको जलो स सार ॥ ५ ॥ तो पण अधिको जाव छे, एकाकी सम छ ॥ दान शियल तप त्रणे जलां, पण जाव विन अकयछ ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां, अधिको अ णी रेख ॥ रजमांही तज काढतां, अधिको जाव वि प ॥ ७ ॥ जगवंत इव जंजण जणी, चारे सरिख गणंत ॥ चारे करी मुख आपणां, चउविध धर्म जणंत ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वीरजिणेसर एम जणे रे, वेठी परखदा बार ॥ धर्म करो तुमें प्राणीया रे, जिम पामो जव पार रे ॥ धर्म हैये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे, जवियण सांजलो ॥ धर्म मुक्तिसुख कारो रे ॥धर्म०॥ए आंकणी॥ धर्म थकी धन संपजे रे, धर्मथकी सुख होय ॥ धर्मथकी आरति टले रे, धर्म समो नही कोय रे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ दुर्गति पडतां प्राणीया रे, राखे श्री जिनधर्म ॥ कुटुंब सहूको कारिमुं रे, मत जूलो जवि जर्मे रे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखीया हूआ रे, वली होशे छे जेह ॥ ते जिन वरना धर्मथी रे, मत कोइ करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥

॥ ४ ॥ सोलशें ठासठसमे रे, सांगानेर मझार ॥ पद्म प्रभु सुपसाउले रे, एह जण्यो अधिकार रे ॥ धर्मे० ॥ ॥५॥ सोहम सामी परंपरा रे, खरतर गछ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगडो रे, श्री जिनचंद सूरिंद रे ॥ ॥ धर्मे० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अतिदीपतो रे, विनय वंत जसवंत ॥ आचारिज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ धर्मे० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शिष्य ॥ समयसुंदर वाचक जणे रे, संघ सदा सुजगीश रे ॥ धर्मे० ॥ ८ ॥ दान शियल तप जावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ जणतां गुणतां जावशुं रे, ऋद्धि समृद्धि सुप्रसादो रे ॥ धर्मे० ॥ ए ॥ इति दानशियल तप जावनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां स्तवन ॥

॥ कहा रे अज्ञानी जीवकूं, गुरु ज्ञान बतावे॥कबहुं न विषधर विष तजे, कहा दूध पिलावे ॥ कहा० ॥ ॥ १ ॥ ऊखर ईख न नीपजे, कहा बोवन जावे ॥ रासज गार न ठांमही, कहा गंग जिलावे ॥ क० ॥ २ ॥ काली ऊन कुमाणसां, रंग दूजो न आवे ॥ श्रीजिनराज कहुं कहा, वाको सहज न जावे ॥ क० ॥ ३ ॥

॥ अथ सुविधिजिनस्तवनं ॥ राग प्रजाती ॥

॥ मुजरा साहेब मुजरा साहेब, साहेब मुजरा मेरा रे ॥ साहेब सुविधि जिनेसर प्यारा, चरण पखालुं प्रभु तेरा रे ॥ मु० ॥१॥ केशर चंदन चरचुं अंगे, फूल चडावुं सेरा रे ॥ घंट वजावुं ने अगर उखेवुं

प्रदक्षिण फेरा रे ॥ मु० ॥ २ ॥ पंच शब्द वाजां वज
डावुं, नृत्य करुं अधिकेरां रे ॥ रूपचंद गुण गावत
हर्षित, दास निरंजन तेरा रे ॥मु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रभाती रागमां स्तवन ॥

॥ प्रभु तोरी ठकुराइकूं, गढ तीन बिराजे ॥ रतन
रचित मानुं देहकी, दूती मंगल गाजे ॥ प्र० ॥ १ ॥
भलकत डहुं दिशि तेजमें, बिच कंचन कोटा ॥ तेरे
प्रबल प्रतापका, मानुं मंगल महोटा ॥ प्र० ॥ २ ॥
अतिउज्ज्वल रूपें बन्या, तीजा गढ तेरा ॥ तीन भुव
नमें विस्तर्या, जस सुजस घणेरा ॥ प्र० ॥ ३ ॥ वा
मानंद जिनंदकी, कहा कहुं रे वडाई ॥ आनंद व
दत लघु बुद्धिपें, ठवी बरनी न जाई ॥ प्र० ॥ ४ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥ प्रभाती रागमां ॥

॥ तुम विना कौन मेरी,शुद्ध लेनहार हे ॥ तुम०॥
निशिदिन ध्यान धरुं, कीजे क्युं अवार हे ॥ पारसनाथ
साहेबजीको, नाम साचो सार हे ॥ तु० ॥ १ ॥ प्रा
त ताही सेवा करुं, पुष्फनके हार हे ॥ अगर सुवास
वास, खेवत सवार हे ॥ तु० ॥ २ ॥ मरपत हुं सेवा
करुं, भूल चूक माफ हे ॥ मेंतो हुं अजान प्रभु, आ
पही सफार हे ॥ तु० ॥ ३ ॥ मेरे तो प्रभु एक तूंल,
सेवक हजार हे ॥ अश्वसेन नंदनजीशुं, मेरो पूरण
प्यार हे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ आदिजिनस्तवनं ॥

॥ अंग उमाहो मुजने अतिघणो, अलवेला जिनवर

जी ॥ भेटवा ऋषभ जिणंद, मारा वहाला श्रीजिनवर जी ॥ १ ॥ पालीताणुं नगर सोहामणुं ॥ अ०॥ रूडी ललिता सरनी पाल ॥मा०॥ जिहां रे आंबा वडला घणा ॥ अ०॥ फूकी रइ चंपा केरी माल ॥ मा० ॥ २ ॥ धन ते पंखी रे पारेवडां ॥अ०॥शेत्रुंजे वसी रह्या मोर ॥ मा० ॥ अमाहो करीने जे घरें रह्या ॥ अ० ॥ ते माणस नही ढोर ॥ मा०॥३॥ शेत्रुंजा मारग चालतां, ॥ अ०॥ अमे बे झीणी झीणी खेह ॥ मा०॥ मेलां थाशे रे महारां कापडां ॥ अ०॥ निर्मल थाशे मारी देह ॥ ॥ मा० ॥ ४ ॥ ऊंचुं देहेरुं रे आदिनाथनुं ॥ अ० ॥ आगल चोक विशाल ॥ मा० ॥ जिहां मेले मेले घणा मानवी ॥ अ० ॥ गावे प्रभुगुणमाल ॥ मा० ॥ ॥ ५ ॥ केशर घसी भखा वाटका ॥ अ० ॥ पूजवा आदिजिणंद ॥ मा० ॥ फूलडानो हार कंवें सोहियें ॥ अ० ॥ दीवडानी ज्योति अखंड ॥ मा० ॥ ६ ॥ ...ीते माह्रे ॥अ० ॥ दिलमां उपजे आणंद ॥ ...चानो रे मुझने कोड घणो ॥अ०॥ प्रेम

प्रदक्षिण फेरा रे ॥ मु० ॥ २ ॥ पंच शब्द वाजां वज डावुं, नृत्य करुं अधिकेरां रे ॥ रूपचंद गुण गावत हर्षित, दास निरंजन तेरा रे ॥मु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रभाती रागमां स्तवन ॥

॥ प्रभु तोरी ठकुराइकूं, गढ तीन बिराजे ॥ रतन रचित मानुं देवकी, दूती मंगल गाजे ॥ प्र० ॥ १ ॥ झलकत डुहुं दिशि तेजमें, बिच कंचन कोटा ॥ तेरे प्रबल प्रतापका, मानुं मंगल महोटा ॥ प्र० ॥ २ ॥ अतिउज्ज्वल रूपें बन्या, तीजा गढ तेरा ॥ तीन भुवनमें विस्तर्या, जस सुजस घणेरा ॥ प्र० ॥ ३ ॥ वामानंद जिनंदकी, कहा कहुं रे वडाई ॥ आनंद वदत लघु बुद्धिपें, छबी वरनी न जाई ॥ प्र० ॥ ४ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥ प्रभाती रागमां ॥

॥ तुम विना कौन मेरी,शुद्ध लेनहार हे ॥ तुम०॥ निशिदिन ध्यान धरुं, कीजे क्युं अवार हे॥ पारसनाथ साहेबजीको, नाम साचो सार हे ॥ तु० ॥ १ ॥ प्रात ताही सेवा करुं, पुष्फनके हार हे ॥ अगर सुवास वास, खेवत सवार हे ॥ तु० ॥ २ ॥ मरपत हुं सेवा करुं, नूल चूक माफ हे ॥ मेंतो हुं अजान प्रभु, आपही सफार हे ॥ तु० ॥ ३ ॥ मेरे तो प्रभु एक तूंक, सेवक हजार हे ॥ अश्वसेन नंदनजीशुं, मेरो पूरण प्यार हे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ आदिजिनस्तवनं ॥

॥ अंग उमाहो मुझने अतिघणो, अलवेला जिनवर

जी ॥ चेटवा रूपन्न जिणंद, मारा वहाला श्रीजिनवर जी ॥ १ ॥ पालीताणुं नगर सोहामणुं ॥ अ०॥ रूडी ललिता सरनी पाल ॥मा०॥ जिहां रे आंबा वडला घ णा ॥ अ०॥ फूकी रइ चपा केरी माल ॥ मा० ॥ २ ॥ धन तें पंखी रे पारेवडां ॥अ०॥शेत्रुंजे वसी रह्या मोर ॥ मा० ॥ उमाहो करीने जे घरें रह्या ॥ अ० ॥ ते मा एस नही ढोर ॥ मा०॥३॥ शेत्रुंजा मारग चालतां, ॥ अ०॥ उमे ब्रे झीणी झीणी खेह ॥ मा०॥ मेलां था शे रे महारां कापडां ॥ अ०॥ निर्मल थाशे मारी देह ॥ ॥ मा० ॥ ४ ॥ ऊंचुं देहेरुं रे आदिनाथनुं ॥ अ० ॥ आ गल चोक विशाल ॥ मा० ॥ जिहां मेले मेले घणा मानवी ॥ अ० ॥ गावे प्रनुगुणमाल ॥ मा० ॥ ॥ ५ ॥ केशर घसी नखा वाटका ॥ अ० ॥ पूजवा आदिजिणंद ॥ मा० ॥ फूलडानो हार कंठे सोहियें ॥ अ०॥ दीवडानी ज्योति अखंम ॥ मा० ॥ ६ ॥ गिरिवर दीठे माहरे ॥अ०॥ दिलमां उपजे आणंद ॥ मा० ॥ चेटवानो रे मुझने कोम घणो ॥ अ०॥ प्रेम घणो जिनचंद ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सामायिकलान्न सज्झाय ॥

॥ कर पडिक्कमणुं नावशुं, दोय घडी शुन्नध्या न ॥ लाल रे ॥ परन्नव जातां जीवने, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्रीमुख वीर इम उच्चरे, श्रेणिक रायप्रतें जाण ॥ ला० ॥ लाख खांमी सोना तणी, दीये दिन प्रत्यें दान ॥ लाल रे ॥

क० ॥ २ ॥ लाख वरस लगें ते वली, एम दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ एक सामायिकने तोलें, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥ सामायिक चउविसत्थो, नलुं वंदन दोय दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संनारो रे आपणां, ते नवकर्म निवार ॥ लाल रे ॥ कर० ॥ ॥ ४ ॥ कर काउस्सग्ग शुन ध्यानथी, पच्चरकाण सु धुं विचार ॥ लाल रे ॥ दोय सज्झायें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥ कर० ॥ ५ ॥ श्रीसामायिक प्रसादथी, लहीयें अमर विमान ॥ लाल रे ॥ धर्मसिंह मुनि एम नणे, ए ठे मुक्ति निदान ॥ लाल रे ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ कृपा करो ने गोडी पास जिनेसर, तुम साहिब अंतरजामी ॥ कृ० ॥ ऊंचे ऊंचे गिरिपर प्रजुजी विराजे, आस पास ग्यानी ध्यानी ॥ कृ० ॥ १ ॥ नील वरण प्रजु अंगीयां विराजे, सूरतकी जाउं वलि हारी ॥ कृ० ॥ बांहे बाजुबंध बेहिरखा विराजे, कुंम लकी छबि है न्यारी ॥ कृ० ॥ २ ॥ ढूंढत ढूंढत प्रजु जीकु पायो, पूरण पदवी अब आई ॥ कृ० ॥ नाथ नि रंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कृ० ॥ ३ ॥

॥ अथ समेतशिखरगिरिस्तवनम् ॥

॥ तुंही नमो नमो समेतशिखर गिरि, आदीश्वर अष्टापद सिद्धा, वासुपूज्य चंपापुरी ॥ तुं० ॥ नेम गया गिरनारे मुक्तें, वीर पावन पावापुरी ॥ तुं० ॥ १ ॥ वीशे टूंके वीश जिनेसर, सिद्धा अणसण आदरी ॥

॥ तुं० ॥ ज्योतिस्वरूपें हुआ जगदीश्वर, अष्ट कर्म नो क्षय करी ॥ तुं० ॥ २ ॥ पश्चिम दिशि शत्रुंजो तीरथ, पूरव समेत शिखर गिरि ॥ तुं० ॥ मोक्ष नगरना दोये दरवाजा, नविक जीव रह्या संचरी ॥ ॥ तुं० ॥ ३ ॥ जगव्यापक जे अक्षर साहेब, पाप संताप काटन गिरि ॥ तुं०॥ मोहोटुं तीरथ मोहोटो महिमा, गुण गावत सुरासुरी ॥ तुं० ॥ ४ ॥ विषम पाहाड उजाडमें चिहुं दिशि, चोर चरड रह्या संचरी ॥ तुं० ॥ नयंकर मूंगर नूमि मरावण, देखत मूंगर थरहरी ॥ तुं० ॥ ५ ॥ संवत सत्तरशें चुम्माले, चैत्र शुदि चोथें धरी ॥ तुं० ॥ कहे जिनहर्ष वीशे टूकें, नावशुं चैत्यवंदन करी ॥ तुं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अनिनंदन जिनस्तवनं ॥

॥ अनिनंदन नाथ जुहारुं जी॥तीरथना रसिया ॥ प्रनु आवतां पाप निवारुं जी ॥ मुऊ हइडे वसिया ॥ १ ॥ प्रनु आगल पाप प्रकाशुं जी ॥ ती० ॥ प्रनु पुण्यथी पाम्या आ शुं जी ॥ मु० ॥ २ ॥ में तो रसमां बहुरस नेव्यो जी ॥ ती० ॥ आरंन करी परिग्रह मेव्यो जी ॥ मु० ॥ ३ ॥ में तो क्रोधशुं मधुरस पीधा जी ॥ ती० ॥ रागद्वेष करी कूडां आल दीधां जी ॥ मु०॥४॥ में तो कूड कपट घणां कीधां जी ॥ ती० ॥ में तो लोनशुं परधन लीधां जी ॥ मु० ॥ ५ ॥ हुं तो परनारीशुं रंगें रम्यो जी ॥ ती० ॥ व्रत नांगीने रातें जम्यो जी ॥ मु० ॥ ६ ॥ ज्यारे लेशे प्र

मुजी लेखुं जी ॥ ती० ॥ पग मांभयानी जग्या न देखुं जी ॥ मु० ॥ ७ ॥ प्रभु दीठी अणदीठी करजो जी ॥ ती० ॥ मारी वीनतडी चित धरजो जी ॥ मु० ॥ ॥ ८ ॥ एवी रूपचंदासनी वाणी जी ॥ ती० ॥ स्तवन जोडयुं छे अमृत वाणी जी ॥ मु० ॥ ए ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवन ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ जगपति तारक श्रीजिनदेव, दासनो दास छुं ताहरो ॥ जगपति तारक तुं किरतार, मन मोहन प्रभु माहरो ॥ १ ॥ जगपति ताहारे तो भक्त अनेक, माहारे तो एकज तुं धणी ॥ जगपति वीरामां तुं महावीर, सूरत ताहारी सोहामणी ॥ २ ॥ जगपति त्रिशला राणीनो तुं तन, गंधार बंदर गाजीयो ॥ जगपति सिद्धारथ कुल शणगार, राज राजेश्वर राजीयो ॥ ३ ॥ जगपति भगतांनी भांगे छे भीड, भीड पडे रे प्रभु पारिखे ॥ जगपति तुंही प्रभु अगम अपार, समज्यो न जाये मुझ सारिखे ॥ ४ ॥ जगपति उदय नमे कर जोड, सत्तर नेव्याशी समे कियो ॥ जगपति खंभायत जंबूसर संघ, भगवंत भावशुं भेटियो॥५॥

॥ अथ राणकपुरनुं स्तवन ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ जगपति जयो जयो रूपभ जिणंद, धरणासाहे धन खरचीयो ॥ जगपति प्रौढ कराव्यो प्रासाद, उलट भर सुर नर अरचियो ॥ १ ॥ जगपति आभशुं मांभे वाद, सोवन कलशें फल हले ॥ जगपति चोबारो चोशाल, पेखंतां पातक गले ॥ २ ॥ जगपति अति

सुंदर उद्दाम, नलिनी गुल्म विमान श्यो ॥ जगपति उत्तम पुण्य अंबार, निरुपम धनद निधान श्यो ॥३॥ जगपति उलें उलें यंत्र,कीधी अनुपम कोरणी ॥ जग पति करती नाटारंभ, पूतलीयो चित्त चोरणी ॥ ४ ॥ जगपति नाभिनरेसर नंद, राणकपुरनो राजीयो ॥ जगपति सहु रायां शिरदार, जगमांहे जस गाजीयो ॥ ५ ॥ जगपति देव तुं दीनदयाल, भक्तवत्सल भलें भेटीयो ॥ जगपति देखतां तुज देदार, मोह त णो मद मेटीयो ॥ ६ ॥ जगपति उदयरतन उवज्झा य, संवत सत्तर त्राणुं समे ॥ जगपति फागणवदि प डवे दिन्न, सादडी संघ सहित नमे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शियल विषे शीखामणनी सद्याय ॥

॥ प्रभु सार्थे जो प्रीत बंधो तो, नारीसंग निवा रो रे ॥ कपटनी पेटी कामणगारी, निश्चय नरक डुवारो रे ॥ १ ॥ एहनी गति एहिज जाणे, रखे कोइ संदेह आणे रे ॥ ए० ॥ ए आंकणी ॥ अबला एवुं नाम धरावे, सबलाने समजावे रे ॥ हरि हर ब्र ह्म पुरंदर सरिखा, ते पण दास कहावे रे ॥ ए०॥२॥ एक नरने आंखें समजावे, बीजाशुं बोले करारी रें ॥ त्रीजाशुं कर्म करे तक जोई, चोथो धरे चित्त मझा री रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ व्यसन विलुद्धि न जुवे विमासी, घटता घटती वातें रे ॥ सूंफ परदेशीनी परे जोइ, मलजो एह संघातें रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ जांघ चिरीने मांस खवाडयुं, तो पण न थइ तेहनी रे ॥ मोहनी

जुजी लेखुं जी ॥ ती० ॥ पग मांझयानी जग्या न देखुं जी ॥ मु० ॥ ७ ॥ प्रभु दीठी अणदीठी करजो जी ॥ ती० ॥ मारी वीनतडी चित धरजो जी ॥ मु० ॥ ॥ ८ ॥ एवी रूपचंदासनी वाणी जी ॥ ती० ॥ स्तवन जोड्युं छे अमृत वाणी जी ॥ मु० ॥ ए ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवन ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ जगपति तारक श्रीजिनदेव, दासनो दास छुं ताहरो ॥ जगपति तारक तुं किरतार, मन मोहन प्रभु माहरो ॥ १ ॥ जगपति ताहारे तो भक्त अनेक, माहारे तो एकज तुं धणी ॥ जगपति वीरामां तुं महावीर, सूरत ताहारी सोहामणी ॥ २ ॥ जगपति त्रिशला राणीनो तुं तन, गंधार बंदर गाजीयो ॥ जगपति सिद्धारथ कुल शणगार, राज राजेसर राजीयो ॥ ३ ॥ जगपति भगतांनी भांगे छे भीड, भीड पडे रे प्रभु पारिखे ॥ जगपति तुंही प्रभु अगम अपार, समज्यो न जाये मुझ सारिखे ॥ ४ ॥ जगपति उदय नमे कर जोड, सत्तर नेव्याशी समे कियो ॥ जगपति खंभायत जंबूसर संघ, भगवंत भावशुं भेटियो ॥ ५ ॥

॥ अथ राणकपुरनुं स्तवन ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ जगपति जयो जयो रूपभ जिणंद, धरणासाहे धन खरचीयो ॥ जगपति प्रौढ कराव्यो प्रासाद, उलट भर सुर नर अरचियो ॥ १ ॥ जगपति आभशुं मांमे वाद, सोवन कलशें झल हले ॥ जगपति चोवारो चोशाल, पेखंतां पातक गले ॥ २ ॥ जगपति अति

सुंदर उद्दाम, नलिनी गुल्म विमान ज्यो ॥ जगपति उत्तम पुण्य अंवार, निरुपम धनद निधान ज्यो ॥३॥ जगपति उंचें उंचें थंन,कीधी अनुपम कोरणी ॥ जग पति करती नाटारंन, पूतलीयो चित्त चोरणी ॥ ४ ॥ जगपति नाजिनरेसर नंद, राणकपुरनो राजीयो ॥ जगपति सद्दु रायां शिरदार, जगमांहे जस गाजीयो ॥ ५ ॥ जगपति देव तुं दीनदयाल, नक्तवत्सल नलें नेटीयो ॥ जगपति देखतां तुऊ देदार, मोह त णो मद मेटीयो ॥ ६ ॥ जगपति उदयरतन उवज्का य, संवत सत्तर त्राणुं समे ॥ जगपति फागणवदि प डवे दिन्न, सादडी संघ सहित नमे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शियल विषे शीखामणनी सद्याय ॥

॥ प्रज्ञु सार्थे जो प्रीत वंग्रो तो, नारीसंग निवा रो रे ॥ कपटनी पेटी कामणगारी, निश्चय नरक डुवारो रे ॥ १ ॥ एहनी गति एहिज जाणे, रखे कोइ संदेह आणे रे ॥ ए० ॥ ए आंकणी ॥ अवला एवुं नाम धरावे, सवलाने समजावे रे ॥ हरि हर ब्र ह्म पुरंदर सरिखा, ते पण दास कहावे रे ॥ ए०॥२॥ एक नरने आंखें समजावे, बीजाशुं बोले करारी रे ॥ त्रीजाशुं कर्म करे तक जोई, चोथो धरे चित्त मज्का री रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ व्यसन विलुद्धि न जुवे विमासी, घटता वटती वातें रे ॥ मूंऊ परदेशीनी परें जोइ, मलजो एह संघातें रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ जांघ चिरीने मांस खवाडशुं, तो पण न थइ तेहनी रे ॥ मोहनी

मीठी छीलनी जूठी, कामिनी न होये केहनी रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ पगले पगले मन ललचावे, श्वासोश्वा सथी जूदी रे ॥ गरज देखीने घहेली थाये, काज स रे जाये कूदी रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ करणी एहनी कली न जाये, नयण तणी गति न्यारी रे ॥ गावुं एहनुं जेणें गायुं, तेणें निज सक्ति हारी रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ लाख नांते ललचावे लंपट, विरुइ ने विषनी क्यारी रे ॥ एहना पासमां जे नर पडिया, ते हाखा जमवारी रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ कोडि जतन करी कोइ राखे, मान नी महोल मझारी रे ॥ तो पण तेहने सूतां वेचे, घडे न रहे धूतारी रे ॥ ए० ॥ ए ॥ जो लागी तो सर्व स्व लूंटे, रूठी राक्सी तोलें रे ॥ एम जाणीने अल गा रहेजो, उदयरतन इम बोले रे ॥ ए० ॥ १० ॥

॥ अथ संनवजिनस्तवन ॥

॥ मोहन तारा मुखडाने मटके ॥ मोहन० ॥ ए आंकणी ॥ नयण रसालां ने वयण सुखालां, चि तडुं लीधुं चटके ॥ मोह० ॥ प्रनुजी केरी नक्ति क रंतां, कर्मनी कस तटके ॥ मोह० ॥ १ ॥ मुऊ मन लोनी नमर तणी परे, जिनगुण कमलें अटके ॥ मो ह०॥ रत्नचिंतामणि मूकीने राचे, कहो कोण काचतणे कटके ॥ मोह० ॥ २ ॥ ए जिन सुणतां क्रोधादिक सहु, आस पासथी पटके ॥ मोह० ॥ केवलनाणी बहु सुख दानी, कुमतिकूं दूर पटके ॥ मोह० ॥ ३ ॥ ए जिनने जे दिलमां नाणे, तेतो नूल्या नटके ॥ मोह० ॥ नाव

नक्तिशुं उत्नग करत्तां, वंछित सुखडें सटके ॥ मोह० ॥ ४ ॥ मूरत संजव जिनेश्वर केरी, जोता हैयडुं ह टके ॥ मोह० ॥ नित्यलान्न कहे ए जिन साचो, गु ण गाउं हुं लटके ॥ मोह० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दानविषे स्वाध्याय ॥

॥ चोत्रीश अतिशयवंत, समवसरणें हो वेसी ज गगुरु ॥ उपदिशे अरिहंत, दान तणा गुण हो पहेले सुख करु ॥ १ ॥ दान दोलत दातार, दानें नांजे हो नवनो आमलो ॥ दानना पांच प्रकार, उलट आणी हो नवियण सांजलो ॥ २ ॥ पहेलुं अनय सुदान, दया हेतें हो निज तनु दीजीयें ॥ जेम मेघरथ रा जन्न, जीव सहुने हो निर्नय कीजीयें ॥३॥ वीजुं दान सुपात्र, तृण मणि कंचण हो अदत्त जे परिहरे ॥ निर्मल व्रत गुणगात्र, सत्तर नेदें हो संयम जे धरे ॥ ॥ ४ ॥ आहारादिक सुविचार, तेहने दीजें हो हाजर जे होवे ॥ जिम शालिनद्र कुमार, सुपात्र दानें हो महा सुख नोगवे ॥ ५ ॥ अनुकंपादान विशेष, त्रीजुं देतां हो पात्र न जोइये ॥ अन्ननो अर्थी देखी, तेहने आपी हो पुण्यवंत होइयें ॥ ६ ॥ धन पामी ससनेह, कारण पांखे हो नात जे पोषीयें ॥ उचित चोथुं ए स्वजन, कुटुंब सहेजें हो जे संतोषीयें ॥ ७ ॥ पांचमुं कीर्त्तिदान, जाचक जनने हो जे कांइ आपीयें ॥ तेणें वाधे जस वान, जगमां सघले हो नलपण थापीयें ॥ ८ ॥ पामे चिंतवित पात्र, जेहथी प्राण

मीठी छीलनी जूठी, कामिनी न होये केहनी रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ पगले पगले मन ललचावे, श्वासोश्वा सथी जूदी रे ॥ गरज देखीने घहेली थाये, काज स रे जाये कूदी रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ करणी एहनी कली न जाये, नयण तणी गति न्यारी रे ॥ गावुं एहनुं जेणें गायुं, तेणें निज सकति हारी रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ लाख नांते ललचावे लंपट, विरुइ ने विषनी क्यारी रे ॥ एहना पासमां जे नर पडिया, ते हास्या जमवारी रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ कोडि जतन करी कोइ राखे, मान नी महोल मकारी रे ॥ तो पण तेहने सूतां वेचे, घडे न रहे धूतारी रे ॥ ए० ॥ ए॥ जो लागी तो सर्व स्व लूंटे, रूठी राक्सी तोलें रे ॥ एम जाणीने अल गा रहेजो, उदयरतन इम बोले रे ॥ ए० ॥ १० ॥

॥ अथ संजवजिनस्तवन ॥

॥ मोहन तारा मुखडाने मटके ॥ मोहन० ॥ ए आंकणी ॥ नयण रसालां ने वयण सुखालां, चि तडुं लीधुं चटके ॥ मोह० ॥ प्रजुजी केरी नक्ति क रंतां, कर्मनी कस तटके ॥ मोह० ॥ १ ॥ मुऊ मन लोन्नी जमर तणी परें, जिनगुण कमलें अटके ॥ मो ह०॥ रत्नचिंतामणि मूकीने राचे, कहो कोण काचतणे कटके ॥ मोह० ॥२॥ ए जिन शुणतां क्रोधादिक सहु, आस पासथी पटके ॥मोह०॥ केवलनाणी बहु सुख दानी, कुमतिकूं दूर पटके ॥ मोह० ॥ ३ ॥ ए जिनने नाणे, तेतो नूल्या नटके ॥मोह०॥ नाव

नक्तिशुं उल्लग करतां, वंछित सुखडें सटके ॥ मोह० ॥ ४ ॥ मूरत संनव जिनेश्वर केरी, जोता हैयडुं ह टके ॥ मोह० ॥ नित्यलान कहे ए जिन साचो, गु ण गाउं हुं लटके ॥ मोह० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दानविषे स्वाध्याय ॥

॥ चोत्रीश अतिशयवंत, समवसरणें हो बेसी ज गगुरु ॥ उपदिशे अरिहंत, दान तणा गुण हो पहेले सुख करु ॥ १ ॥ दान दोलत दातार, दानें नांजे हो नवनो आमलो ॥ दानना पांच प्रकार, उलट आणी हो नवियण सांनलो ॥ २ ॥ पहेलुं अनय सुदान, दया हेतें हो निज तनु दीजीयें ॥ जेम मेघरथ रा जन्न, जीव सहुने हो निर्नय कीजीयें ॥३॥ बीजुं दान सुपात्र, तृण मणि कंचण हो अदत्त जे परिहरे ॥ निर्मल व्रत गुणगात्र, सत्तर नेदें हो संयम जे धरे ॥ ॥ ४ ॥ आहारादिक सुविचार, तेहने दीजें हो हाजर जे होवे ॥ जिम शालिनद्र कुमार, सुपात्र दानें हो महा सुख नोगवे ॥ ५ ॥ अनुकंपादान विशेष, त्रीजुं देतां हो पात्र न जोइयें ॥ अन्ननो अर्थी देखी, तेहने आपी हो पुण्यवत होइयें ॥ ६ ॥ धन पामी ससनेह, कारण पाखे हो नात जे पोषीयें ॥ उचित चोथुं ए स्वजन, कुटुंब सहेजें हो जे संतोषीयें ॥ ७ ॥ पांचमुं कीर्त्तिदान, जाचक जनने हो जे कांइ आपीयें ॥ तेणें वाधे जस वान, जगमां सघले हो नलपण थापीयें ॥ ८ ॥ पामे चिंतवित पात्र, जेहथी प्राण

ते निर्मल सुख लहे ॥ दान देतां क्षण मात्र, विलंब
म कीजें हो उदयरतन कहे ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ शियल स्वाध्याय ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो ॥ ए देशी ॥

॥ शियल समुं व्रत को नही, श्रीजिनवर नाखे रे ॥
सुख आपे जे शाश्वतां, दुर्गति पडता राखे रे ॥ शी० ॥
॥ १ ॥ व्रत पच्चरकाण विना जुउ, नव नारद जेह रे ॥
एकज शियल तणे वलें, गया मुक्तें तेह रे ॥ शि० ॥ २ ॥
साधु अने श्रावक तणां, व्रत छे सुखदायी रे ॥ शियल
विना व्रत जाणजो, कुशका सम नाइ रे ॥ शि० ॥ ३ ॥
तरुवर मूल विना जिस्यो, गुण विण लाल कमान रे ॥
शियल विना व्रत एहवुं, कहे वीर नगवान रे ॥ शि०
॥ ४ ॥ नव वाडें करी निर्मलुं, पहेलुं शीलज धरजो रे ॥ उद
यरत्न कहे ते पछी, व्रतनो खप करजो रे ॥ शि० ॥ ५ ॥

॥ अथ तपःस्वाध्याय ॥

॥ ईमर आंबा आंवली रे ॥ ए देशी ॥

॥ कीधां कर्म निकंदवा रे, लेवा मुक्ति निदान ॥
हत्या पातक छूटवा रे, नही कोइ तप समान ॥ न
विक जन, तप सरिखुं नही कोय ॥ १ ॥ उत्तम
तपना योगथी रे, सुर नर सेवे पाय ॥ लब्धि अट्ठा
वीश ऊपजे रे, मनवंछित फल थाय ॥ नवि० ॥
॥ तप० ॥ २ ॥ तीर्थंकर पद पामीयें रे, नासे सघ
ला रोग ॥ रूप लीला सुख साहेबी रे, लहीयें तप
संयोग ॥ नवि० ॥ तप० ॥ ३ ॥ अष्ट करमना उंघने

रे, तप टाले ततकाल ॥ अवसर लहीने तेहनो रे, खप करजो उजमाल ॥ नवि०॥ तप०॥ ४ ॥ ते शुं छे संसारमां रे, तपथी न होवे जेह ॥ मनमां जे जे कामियें रे, सफल फले सही तेह ॥ नवि० ॥ तप० ॥ ॥ ५ ॥ बाह्य अभ्यंतर जे कह्या रे, तपना बार प्रकार ॥ होजो तेहनी चालमां रे, जिम धन्नो अणगार ॥ ॥ नवि० ॥ तप० ॥ ६ ॥ उदयरतन कहे तपथकी रे, वाधे सुजस सनूर ॥ स्वर्ग होये घर आंगणुं रे, डुर्गति नासे दूर ॥ नवि० ॥ तप० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नाव स्वाध्याय ॥

॥ धन धन ते दिन माहरो ॥ ए देशी ॥

॥ रे नवि नाव हृदय धरो, जे छे धर्मनो धोरी ॥ एकलमल्ल अखंम जे, कापे कर्मनी दोरी ॥ रे नवि० ॥ १ ॥ दान शियल तप त्रण ए, पातक मल धोवे ॥ नाव जो चोथो नवि मले, तो ते निष्फल होवे ॥ रे नवि० ॥ २ ॥ वेद पुराण सिद्धांतमां, षटदर्शन नांखे ॥ नाव विना नव संतति, पडतां कोण राखे ॥ ॥ रे नवि० ॥ ३ ॥ तारक रूप ए विश्वमां, जंपे जग नाण ॥ नरतादिक शुन नावथी, पाम्या पद निरवाण ॥ रे नवि० ॥ ४ ॥ औषध आय उपाय जे, मंत्र यत्र ने मूली ॥ नावें सिद्ध होवे सदा, नावविण सहु धूली ॥ रे नवि० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे नावथी, कोण कोण नर तरिया ॥ शोधी जो जो सूत्रमां, सज्ञान गुणदरिया ॥ रे नवि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ दान शील तप नाव स्वाध्याय ॥

॥ श्रीमहावीरें नांखीया, सखी दानना चार प्रकार रे ॥ दान शीयल तप नावना, सखि पंचम गतिदातार रे ॥ श्रीमहावीरें० ॥ १ ॥ दानें दोलत पामीयें, सखि दानें कोड कल्याणो रे ॥ दान सुपात्र प्रनावथी, सखि कयवन्नो शालिनद् जाणो रे॥श्रीमहा० ॥ २ ॥ शियलें संकट सवि टले, सखि शीलें वंछित सिद्ध रे ॥ शियलें सुर सेवा करे, सखि शील सती परसिद्ध रे ॥ श्रीमहा० ॥ ३ ॥ तप तपो नवि नाव शुं, तपें निर्मल तन्न रे ॥ वर्षोपवासी रुपनजी, सखि धन्नादिक धन धन्न रे ॥ श्रीमहा० ॥ ४ ॥ नरतादिक शुन नावथी, सखि पाम्या पंचम गाम रे ॥ उदय रतनमुनि तेहने, सखि नित्य करे प्रणाम रे ॥ ॥ श्रीमहा० ॥ ५ ॥ इति नावस्वाध्याय ॥

॥ अथ शंखेश्वर पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ नांजी नांजी नांजी छेडो नांजी ॥ ए देशी ॥ तें मुऊ मोह महामद पायो, तेणें हुं थयो मतवालो ॥ तृष्णा तरुणी आणी मिलावी, वच्चमां करीअ दलालो ॥ अलगी रहेने, रहेने रहेने रहेने ॥ अलगी० ॥ हांरे कांइ कुमति पडी छे केडें ॥ अलगी०॥ तुऊ दूतीने कोणज तेडे ॥ अलगी० ॥ १ ॥ कर्म नटावो तुं तेडी आवी, तेणें पण मांमी बाजी ॥ मिथ्या गीत तणे नणकारें, मुऊने कीधो राजी ॥ अ० ॥ २ ॥ नरक तणा मंदिरमें, पातक पलंग बिछायो ॥ मुऊने

नोलवी तिहां बेसाड्यो, पण सुमतें समजायो ॥ अ० ॥ ३ ॥ जब में मदिरा ग्राक निवारी, समकित सुखडी चाखी ॥ उपशम रस सुधारस पीयो, चित्त चेतनने दाखी ॥ अ० ॥ ४ ॥ श्रीशंखेश्वर चरण सरोरुह, लागी ध्याननी ताली ॥ रूपविबुधनो मोहन पनणे, जिनमत स्तुति लटकाली ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ अथ सुविधिजिन स्तवनं ॥ कच्छी नपामां ॥

॥ अच्चो असी गम्फण वेंधा, वम्फें पेर पोंधा ॥ केशर जो घोर घोरिंधा, वम्फी वम्फी पूजा कंधा ॥ अच्चो० ॥ १ ॥ दीवबंदिरमें दिठो साहेब, सच्चो सुबुद्धि देव ॥ नांइयां अह्ना पाणजो अन्ना, जल्ली कल्ला सेव ॥ अ०॥२॥ को चे अह्ना को चे कंथड, को चे जे सर पीर॥ को चे पठो को चे दावल, को चे वावो धीर॥ अ० ॥ ३ ॥ एडा देव में दिठा जल्ला, विठा गामो गाम ॥ मूंके साहेब तुंहीज गम्यो, आशाजो विसराम ॥ अ० ॥ ४ ॥ सर्ग मृत्यु पातालमें एडो, वेउ नांए कोए नाथ ॥ मिणी माडुयेंजी आस्या पूरे, सच्चो सिद्धजो साथ ॥ अ० ॥ ५ ॥ तोजी अंगी चंगी दिठी, सोवनमें नरपूर ॥ मह्ने मोड झलामल दीपे, नरके उगिउ सूर ॥ अ० ॥ ६ ॥ तोजे देवलमें वीआ जल्ला, जल्ला फूलेंजा ढग्ग ॥ तोजो देवल दिठे नांयो, हेडो हुंधो सग्ग ॥ अ०॥ ७ ॥ मुंजी आस्या पूरजहा ऐ, सच्चा सुविधिवुधिनाथ॥जिनविजय चे साहेब मुंजा, तुंही तुंही जगनाथ ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवनं ॥ राग प्रजाती ॥

॥ आजको लाहो लीजीयें, काल केणें रे दीठी ॥ रह्
ण न पावे पाघडी, जब आवे चीठी ॥ आ० ॥ १ ॥
मनसा वाचा कर्मणा, आलस सब ठंमी ॥ ध्यान धरुं
अरिहंतनुं, स्थानक शिर मंमी ॥ आ० ॥ २ ॥ विनय
मूल जे पालीयें, श्रीजिनवर धर्म ॥ जावें शुद्ध आरा
धतां, बूटे निजकृत कर्म ॥ आ० ॥ ३ ॥ दान शि
यल तप जावना, ए चार प्रकार ॥ दया शुद्ध आरा
धीयें, पामीयें जवपार ॥ आ० ॥ ४ ॥ धर्मनो म
र्म ए जाणजो, राग द्वेष ने वारो ॥ केवल ज्ञान निपा
इने, देवचंद्र पद सारो ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजातीरागमां स्तवन ॥

॥ में परदेशी दूरका, प्रजु दरिसणकूं आया ॥
लाख चोराशी देश फस्या, तेरा दरिसन पाया ॥ में०॥
॥ १ ॥ सूक्ष्म बादर निगोदमां, वनसपति वसाया ॥
अप तेउ वाउ कायमां, काल अनंत गमाया ॥
में० ॥ २ ॥ स्वर्ग नरक तिर्यंचमें, केता जन्म गमा
या ॥ मनुष्य अनारय में जन्म्या, तिहां नही दरिसन
पाया ॥ में० ॥ ३ ॥ तेरो मेरे दरसण अब जयो, पू
रण पुण्य पसाया ॥ रूपचंद कहे जाग्य खुले, निरंज
न गुण गाया ॥ में० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वनाथस्तवन ॥ कव्हीजापामां ॥

॥ अमां आंउं नेहडो कंधी, गोडीचे पेर वेंधी ॥
केसरजो घोर घोरीधी, विकि आंउं पूजा कंधी ॥ इन

वामाजीजो नीगरो एडो, बेयो नाए जुगमें तेडो ॥ अमां० ॥ १ ॥ सरग मरत पातालजा माड़ु, जज्ञा सेवी पाय ॥ कामणगारो पासजी आयल, मुझे दिलमें नाय ॥ अमां० ॥ २ ॥ सर्पि सर्पा जेरे वरंधा, दिनो जे नवकार ॥ पासजीजो नालो गिनी हुआ, इंद्र इंद्राणी सार ॥ अमां० ॥ ३ ॥ वेआ देव दिठा जज्ञा, देव न केडे कम्म ॥ तुं निरागी गति निवारण, अठे कर्मेजो दम्म ॥ अमां० ॥ ४ ॥ जेमां विंझा तेमां ईनकें नजियां, जगमें वमो पीर ॥ जेह्पैजो सांमी मल्यो, खीह्नी हुआ खीर ॥ अमां० ॥ ५ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ चालो चालो सिद्धाचल जईयें रे, रुषभदेव सुखकारीयां ॥ चालो चालो सिद्धा० ॥ ए आंकणी ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन, हांरे एतो जुगला धर्म निवारियां रे ॥ रु० ॥ १ ॥ आदिजिन भेट्यां सवि डुःख मेट्यां, हांरे में तो पाप करम सब टालियां रे ॥ रु० ॥ २ ॥ रायण रूख समोसस्या स्वामी, हांरे एतो देखी भविक मन मोहियां रे ॥ रु० ॥ ३ ॥ केशर घोली भरी रे कचोली, हांरे मेंतो विधिशुं अंगियां रचावियां रे ॥ रु०॥४॥ कर जोडी दलिचंद गुण गावे, हांरे में तो भवोभव शरण तुमारियां रे ॥ रु० ॥ ५ ॥

॥ अथ अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ चित्त लागो अनंतजिन चरननसें, चरननसें जिन चरननसें ॥ चि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अनंत

नाथजिको दरिसन करकें, मग्न नयो हम मनननसें ॥ चि० ॥ २ ॥ प्रज्ञु दरिसनसें पाप कटत है, तिमिर कटे जेसें अरुननसें ॥ चि० ॥ ३ ॥ आस करी दास सरणें आयो, चेलचंद पाये परननसें ॥ चि०॥४॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ रागकाफी ॥

॥ आज रे में मुख देख्यो गोडी पारसको, मेरो सफल नयो दिन आज ॥ नला जी मेरो सफल नयो० ॥ ए आंकणी ॥ अश्वसेन राजाजीको नंदन, माता वामाजीको लाल ॥ आ० ॥ १ ॥ कमठ हगावन नागकूं तारन, संनलाव्यो नवकार ॥ आ० ॥ २ ॥ नवोनव नटकत शरणे हुं आयो, अब तो राखोजी मोरी लाज ॥ आ० ॥ ३ ॥ उर देवकूं बोहोत में ध्याया, किनसें न सख्यो मेरो काज ॥ आ० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरजन,ऊतारो नवपार॥आ०॥५॥

॥ अथ रूषनजिनस्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ घणुं मोघुं नाम छे रे, मारे तो केसरीया वालानुं घणुं मोघुं नाम छे ॥ ए आंकणी ॥ कोई सेवे ब्रह्मा वाला कोई सेवे शंकर, कोईने विष्णु कोईने राम छे रे ॥ मारे तो० ॥ १ ॥ काल कंटक करूर नय टालण, सबल ए शरणानुं गाम छे रे ॥ मा० ॥ २ ॥ मूलचंद कहे प्रज्ञु जे जगतारण, धुलेवा मंफण मोहोटुं धाम छे रे ॥ मा० ॥ ३ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ प्रगट्या ते पूरण अविनाशी, जीरे काम क्रोध

सर्वे गया नासी ॥ सुखदायकना छो स्वामी, जीरे पल पल रूपी प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥ कच्छदेश पश्चिम धाम, जीरे पावन कीधां छे सुथरी गाम ॥ धन धन भाग्य उदय कीधां, जीरे पार्श्व प्रभुजीयें दर्शन दीधां ॥ २ ॥ घृतकल्लोल प्रभु परत्ताधारी, जीरे देरुं चणाव्युं अति भारी ॥ देश परदेशना संघ आवे, जीरे पूजा रचावे प्रभुजीनी भावें ॥ ३ ॥ आंगी रचावे उर धरी माला, जीरे रत्न करे छे रूडा ऊणकारा ॥ मुकुट कुंमल शिर छत्रधारी, जीरे चंद्रकला शुभ दृष्टि तारी ॥ ४ ॥ भावी भावनाने प्रभु पूजो, जीरे नाथ विना देव नही दूजो ॥ प्रभु पूजेथी भवजल तरियें, जीरे नाम लेतां नव निधि वरिये ॥५॥ अढार छयाशी चैतर मास, जीरे पूनमें प्रभुजी पूज्या पास ॥ प्रेमचंद गुरु ज्ञानी भावे, जीरे घृतकल्लोलजीना गुण गावे ॥६॥

॥ अथ चंद्रप्रभजिन स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ चंदा प्रभुजीसे लाल रे, मोरी लागी लगनवा ॥ चदा प्रभुजीसे० ॥ ए आंकणी ॥ लागी लगनवा छोडी न तूटे, जब लगें घटमें सास रे ॥ मोरी० ॥ १ ॥ दान शियल तप भावना भावो, जैन धर्म प्रतिपाल रे ॥ मोरी० ॥ २ ॥ हाथ जोड कर अरज करत हे, वंदत शेठ खुशाल रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषभजिनस्तवनं ॥

॥ केशरिया वाला, जो लज्जा राखशो तो रेहेशे ॥ ॥ ए आंकणी ॥ साहेब कलिजुग केरा कूड कपटमें,

साच नही लवलेशे ॥ केश० ॥१॥ जूग बोला कोण धारशे, गिरुआना गुण गाशे ॥ केश० ॥ २ ॥ साहेब तमे हमारे हमें तमारे, प्रीत सदा निर्वहेशे ॥ के० ॥ ॥ ३ ॥ आसंघातें देह हशे तो, फरि फरिने केशे ॥ के० ॥ ४ ॥ साहेब ठेल ठोगाला देवदयाला, धुलेवा धणीने ध्याशे ॥ के०॥५॥ रूपचंदासनी आशा फलशे, नवनवनां डुःख टलशे ॥ केश० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशक सवाद ॥

॥ हक मरनां हक जानां यारो, मत को करो गुमाना ॥ ह०॥ ए आंकणी ॥ उढण माटी पेरण माटी, माटीका सराना ॥ वसतीमेंसें बार निकाला, जंगल किया ठिकाना ॥ ह० ॥ १ ॥ हाथी चडते घोडे चडते, उर आगें नीसाना ॥ नीली पीली वेरख चलती, उत्तर किया पयाना ॥ ह० ॥ २ ॥ नरपति हो के तखत पर वेठे, नरिया नारि खजाना ॥ सांज सवारे मुजरा लेते, ऊपर हाथ वेकाना ॥ ह० ॥ ३ ॥ पोथी पढ पढ हिंदू नूले, मुसलमान कूराना ॥ रूपचंद कहे अरे नाई संतो, हरदम प्रजु गुण गानां ॥ ह० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ हांरे लाल राम पूरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे लाल चतुरशिरोमणि चौदमा, जिनपति नाम अनंत मेरे लाल ॥ गुण अनंत प्रगट कस्या, कस्यो विनावनो अंत ॥ मेरे लाल ॥ चतुर शिरोमणी चित्त धरो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ हांरे लाल चार

अनंता जेहना, आतम गुण अभिराम ॥ मे० ॥
ज्ञान दर्शन सुख वीर्यता, कर्म रुंध्यां गाम ॥ मे० ॥
॥ च० ॥ २ ॥ ह्यंरे लाल चतुर धरो निज चित्तमां,
ए जिनवरनुं ध्यान ॥ मे० ॥ अर्थी अर्थनिवासनें,
सेवे धरी बहु मान ॥ मे० ॥ च० ॥ ३ ॥ ह्यंरे लाल
ज्ञानावरणी क्षय करी, लह्यु अनंतुं ज्ञान ॥ मे० ॥
दर्शनावरण निवारतां, दर्शन अनंत विधान ॥ मे०॥
॥ च० ॥ ४ ॥ ह्यंरे लाल वेदनीय विगमे थयुं, सुख
अनंत विस्तार ॥ मे० ॥ अंतराय उलंघतां, वीर्य
अनंत उदार ॥ मे० ॥ च० ॥ ५ ॥ ह्यंरे लाल एम
अनंत निज नामनी, स्थिरता थापी देव ॥ मे० ॥
जिम तरस्यां सरोवर भजे, तिम स्वरूप जिन सेव ॥
॥ मे० ॥ च० ॥ ६ ॥ इति अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ सेवो भवि शांतिजिणंद सनेहा, शांतरस गेहा,
समामृत गेहा ॥ सेवो भवि शांति जिणंद सनेहा ॥ ए
आंकणी ॥ राग द्वेष भव पाप संतापित, त्रिविध ताप
हर मेहा ॥ माया लोभ राग करी जानो, द्वेष क्रोध
मद रेहा ॥ से० ॥ १ अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानी,
पच्चरकाण संजल भेहा ॥ निज अन्योन्य सदृशथी
चउसठ, संख्या वासित देहा ॥ से० ॥ २ ॥ नोक
षाय नव हास्य अरति रति, शोक जुगुप्सा भय वे
हा ॥ मन वच काय तपावत तायें, कह्यिें ताप
अछेहा ॥ से० ॥ ३ ॥ जैसे वनदव तरुगण बाले,

त्यों अंतर्गत एहा ॥ खम शम दम उपशम शीत लता, करि जल लहेरी लेहा ॥ से० ॥ ४ ॥ आतमराय राज्य अभिसंच्यो, पूजित त्रिभुवन गेहा ॥ तुम शिर छत्रकी गंह अमासिर, द्यो स्वरूप अनुपेहा ॥ से० ॥ ५ ॥

॥ अथ मल्लिजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे सफल दिवस थयो आजनो ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे महिमा मल्लि जिणंदनी, मानी माहरे मन्न ॥ मोह महीपति जीतियो, वली तस पुत्र मद न्न ॥ १ ॥ नित नमीएं नीरागता, नमतां होए नव छेह ॥ डुःख दोहग दूरें टले, एहमां नहिं संदेह ॥ जाणो निःसंदेह ॥ नि० ॥ २ ॥ जीरे मल्लि जिणं दनी साहेबी, देखीनें रति प्रीति ॥ वचन कहे निज कंतने, पति प्रेमदानी रीति ॥ नि० ॥ ३ ॥ जीरे नाथ कहो ए कुण अछे, कहे ए जिनदेव ॥ जिन ते किम तुम वश नहिं, कहे एम सत्यमेव ॥ नि० ॥ ४ ॥ जीरे नहिं प्रताप इहां माहरो, तो वृथा पौरुष तुज्झ ॥ हरव्यो मोह माहारो पिता, तो शो आशरो मुज्झ ॥ ॥ नि० ॥ ५ ॥ जीरे ते सांजलि रति प्रीति वे, त्रीजो काम सवाण ॥ मलीने मल्लि जिणंदनी, शिर धारी छे आण ॥ नि० ॥ ६ ॥ जीरे तेमाटे तुम वीनवुं, वारो तेह अशेष ॥ द्यो सौजाग्य स्वरूपनें, सुखलब्धि विशेष ॥ नि० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ स्तवनं राग प्रजातीमां ॥

॥ जागे सो जिनजक्त कहावे, सोवे सो संसारी

हे ॥ कर्म कलंककी कीच नइ हे, तायें नयो भ्रम नारी हे ॥ जा०॥१॥ त्रस जीवकी हत्या न करे, स्थावर करुणा कारी हे ॥ कूडी साख कथन नही कूडा, बोले बोल विचारी हे ॥ जा० ॥ २ ॥ थापण मोसो अदत्त न लेवे, चोरी मारी निवारी हे ॥ पंच साखें पाणिग्रहण करीने, अवर स्त्रीया ब्रह्मचारी हे ॥ ॥ जा० ॥ ३ ॥ स्नान प्रमित जल जिनकी सेवा, परिग्रह संख्या धारी हे ॥ रूपचंद समकितके लछन, ताकूं वदना हमारी हे ॥ जा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवने समताविपे शिखामण ॥

॥ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीत तजी चित्त धारीयें, हो वालमजी वचन तणो अति कंमो मरम विचारीयें ॥ हांरे तुमें कुमतिके घर जावो बो, तुमें कुलमां खोट लगावो बो, धिग एह जगतनी खावो बो ॥ हो० ॥ १ ॥ अमृत त्यागी विप पीयो बो,कुमतिनो मारग लीयो बो,ए तो काज अयुक्त कीयो बो ॥ ॥ हो० ॥ २ ॥ ए तो मोहरायकी चेटी बे, शिवसंपत्ति एहथी बेटी बे, एतो साकर गलती पेटी बे ॥ ॥ हो० ॥ ३ ॥ एक शंका मेरे मन आवी बे, किणी विध ए चित्त नावी बे, एतो दाहण जगमां चावी बे ॥ हो० ॥ ४ ॥ सहु ऋद्धि तमारी खाए बे, करी कामण चित्त नरमाए बे, तुम पुण्ययोगें ए पाए बे ॥ हो० ॥ ५ ॥ मत आंव काज बाचल बोवो, अनुपम नव विरथा नवि खोवो, अब खोल नयण

प्रगट जोवो ॥ हो० ॥ ६ ॥ इणविध समता वहु समजाए, गुण अवगुण कइ सहु दरसाए ॥ सुणी चिदानंद निज घर आए ॥ हो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रनातीरागमां स्तवन ॥

॥ देव निरंजन नव नय नंजण, तत्त्व ज्ञानका दरिया रे ॥ मति श्रुत अवधि ने मनःपर्यव, केवल ज्ञानें नरिया रे ॥ देव० ॥ १ ॥ काम क्रोध लोन् म त्सर मारण, अष्ट करमकूं हणीयां रे ॥ चारे नारी दू र निवारी, पंचम सुंदरी वरिया रे ॥ देव० ॥ २ ॥ दरिसन ज्ञान एक रस जाकूं, क्षीरोदधि ज्युं नरिया रे ॥ रूपचंद प्रनु नामकी नावां, जो वेगा सो तरि या रे ॥ देव० ॥ ३ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे आज दिवस नलें उगीयो, जीरे आज थयो सुविहाण ॥ पास जिणेसर नेटीया, थयो आ नंद कुशल कल्याण हो साजन ॥ सुखदायक जाणी सदा, नवि पूजो पास जिणंद ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जीरे त्रिकरण शुद्धियें त्रिहु समे, जीरे निसिही त्र ण संनार ॥ तिहुं दिशि निरखण वर्जीनें, दीजें ख मासमण त्रण वार ॥ हो साजन० ॥ २ ॥ जीरे चैत्य वंदन चोवीशनो, जीरे स्वरपद वर्ण विस्तार ॥ अर्थ चिंतन त्रिहुं कालनां, जिन नाथ निक्षेपा चार हो ॥ साजन० ॥ ३ ॥ जीरे श्रीजिन पद फरसे लहे, कलि मलिनतें पद कल्याण ॥ ते वलि अजर अमर

हुवे, अपुनर्न्नव शुन्न निर्वाण हो ॥ सा० ॥ ४ ॥ जी रे लोह न्नाव मूकी परो, जीरे पारस फरस पसाय ॥ थाय कल्याण कुधातुथी, तिम जिनपद मोक्ष उपाय हो ॥ सा० ॥ ५ ॥ जीरे उत्तम नारी नर घणा, जी रे मन धरी न्नक्ति उदार ॥ आराधी जिनपद न्नलुं, थाये जिन करे जग उपगार हो ॥ सा० ॥ ६ ॥ जी रे एहवुं मन निश्चल करी, जीरे निशिदिन प्रन्नुने ध्या य ॥ पामे सौन्नाग्य स्वरूपनें, निवृत्ति कमलावर था य हो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ शांति जिनेसर साहिबा रे, शांति तणो दातार ॥ सलूणा ॥ अंतरजामी बो माहरा रे, आतमना आधार ॥ स० ॥ शांति० ॥ १ ॥ चित्त चाहे प्रन्नु चाकरी रे, मन चाहे मलवाने काज ॥ स० ॥ नयण चाहे प्रन्नु निरखवा रे, द्यो दरिसण माहाराज ॥स०॥ शांति० ॥ २ ॥ पलक न विसरो मनथकी रे, जेम मोरा मन मेह ॥ स० ॥ एक पखो केम रा खीयें रे, राज कपटनो नेह ॥ स० ॥ शांति० ॥ ३ ॥ नेह नजर निहालतां रे, वाधे बमणो वान ॥ स० ॥ अखूट खजानो प्रन्नु ताहरो रे, दीजियें वंबित दा न ॥ स० ॥ शांति० ॥ ४ ॥ आश करे जे कोइ आ पणी रे, नही मूकीयें नीराश ॥ स० ॥ सेवक जा णी ने आपणो रे, दीजियें तास दिलास ॥ स० ॥ शांति० ॥ ५ ॥ दायकने देतां थकां रे, कृण नवि

लागे वार ॥ स० ॥ काज सरे निज दासनां रे, ए मो
होटो उपगार ॥ स०॥ शांति०॥ ६ ॥ एवुं जाणीने जग
धणी रे, दिलमांहि धरजो प्यार ॥ स० ॥ रूपविजय
कवि रायनो रे, मोहन जयजयकार ॥स०॥शांति०॥७॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ रे वंदन आयो ॥ ए आंकणी ॥ बाजन भेरी
भुंगल सुर डुंडुभि, नाद सुरपति भायो रे ॥ वंदन
आयो० ॥ १ ॥ ऐरावत गज सप्तसुंढ शिर, कम
लहि छायो ॥ कमल कमल जिन भुवन भुवन, नाट
क बनायो रे ॥ वं० ॥ २ ॥ सुधर्म ईशान सनत म
हेंद्र, आदिदश सवायो ॥ वीश भुवनपति बीश दोय,
व्यंतर बनायो रे ॥ वं० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज दोय
ज्योतिषि चोशठ, आय वीर वधायो ॥ वंदत सुरप
ति विधि लेई, भावना भायो रे ॥ वं० ॥ ४ ॥ सम
वसरण श्रीवीरजिणंद, त्रिहुं कोट रचायो ॥ देशना
सरस सुधारस देई, भविक मन लोभायो रे ॥ वं० ॥५॥
इत्त नरपति दसार्णभद्र भड, तेज सवायो ॥ देखत सु
र ऋद्धि मान छोडी, निज संजम पायो रे ॥वं०॥६ ॥
धनधन शासन जैनधर्म, धनवीर जिनरायो ॥ संघ
सकल सुखदाय पाय, जयरामें गायो रे ॥ वं० ॥ ७॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ सद्गुरुने चरणे नमी, गायशुं गोडी राय ॥ माहारा
वाला ॥ एकल मल्ल थलरो धणी, देखतां सुख थाय
॥ माहारा० ॥ १ ॥ वामाजीनो कुंअर लाडलो, जोवा

मुऊ मन थाय ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ देवघणा धरणी
तलें, ते दीग न सुहाय ॥ मा० ॥ वा० ॥ २ ॥ अ
खीयां प्यासी थइ रही, देखण प्रनु मुख लाल ॥
मा० ॥ अंतरजामी माहेरा, महेर नजरशुं निहा
ल ॥ मा० ॥ वा० ॥ ३ ॥ यात्रा करणनी होंश छे,
बहु दिननी मनमांहे ॥ मा० ॥ हुकम करो प्रनुजी
हवे, आवुं धरिय उछाहे ॥ मा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ दूर
देशांतर जइ रह्या, तेनां दरिसण सरज्यां थाय ॥
मा० ॥ आस विलुध्धा मानवी, रात दिवस गुण गा
य ॥ मा० ॥ वा० ॥ ५ ॥ समरथ साहिबजी हवे,
उलंग कीजें तास ॥ मा०॥ प्रापति होय तो पामीयें,
नाग्य फले सुविलास ॥ मा० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तुम वि
ण कहो कोण सांनले, सेवकनी अरदास ॥ मा० ॥
जाणुं छुं सही आपशो, मनवांछित सुख वास ॥ मा०
॥ वा० ॥ ७ ॥ कूडा कलियुगमां प्रनु, परता पूरण
हार ॥ मा० ॥ मारगमां सानिध करो, आप थई अ
सवार ॥ मा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ नक्तिना रग अनेक छे,
साहिब सुगुण सुजाण ॥ मा० ॥ मन मोहन जगजी
वना, प्रनुजी मुऊ महिराण ॥ मा० ॥ वा० ॥ ए ॥ प्रत्य
क्ष गोडी पासजी, अरिदल नंजणहार ॥ मा० ॥
वाचक सहज सुंदर तणो, नितलान जय जय
कार ॥ मा० ॥ वा० ॥ १० ॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ अथ सुविधिजिन स्तवनं ॥

॥ सुरत सुविधि जिणंदनी रे लो, महिमावंत प्र

धान ॥ माह्यरा वाल्हाजी रे ॥ तुमनें अमारी वंदना रे लो ॥ नयण पावन थयां देखतां रे लो, गुण अनंत नगवंत ॥मा०॥ ह्वे न बोडुं तह्यारी चाकरी रे लो ॥ १ ॥ वामा राणीना नंदना रे लो, सांजल दीनना नाथ ॥ मा० ॥ तुम० ॥ प्रेम धरी सेवा करूं रे लो, ह्वे न बो डुं तारो साथ ॥ मा० ॥ ह्वे० ॥ २ ॥ सोना रूपानां फूलनी रे लो, आंगी बनावुं सार ॥ मा० ॥ तु० ॥ नाच करुं प्रनु आगलें रे लो, मादलना थोंकार ॥ ॥मा०॥ह्वे०॥३ ॥ अमने ते शिवसुख आपजो रे लो, शुं कहुं वारोवार ॥ मा० ॥ तु० ॥ आतम अ नुनव ध्यानथी रे लो, लहीयें वंबित सार ॥ मा० ॥ ॥ ह्वे० ॥ ४ ॥ मनना मनोरथ माह्रा रे लो, सफल थया सहु आज ॥ मा० ॥ तु० ॥ नित्यलान प्रनु पद सेवतां रे लो, सीधां सघलां काज ॥ मा० ॥ ह्वे० ॥ ५ ॥

॥ अथ सिद्धस्वरूप परिकर विपक्षत्याग स्तवनं ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीयें, रंग लागो मोरी सज नी ॥ ए आंकणी ॥ केली करंतां गइ नवि जाणी, आ जूनी रजनी जी ॥ अवि० ॥ १ ॥ मान सरोवर हंस तणी परें, मुक्ति तणा गुण चुगताता ॥ ज्ञान वन की कुंज गलिनमें, आतमराम रमताता ॥ अवि० ॥ ॥ २ ॥ सासू कुमति कामणगारी, ससरो लोन धू तारो जी ॥ पिता मोह बे महापापियो, माया मात ठगारी जी ॥ अ० ॥ ३ ॥ क्रोध पाडोसण केड न मेले, कंदर्प देवर मीठो जी ॥ विषय वासना गइ दे

राणी, तिहां अविनाशी दीठा जी ॥ अवि० ॥ ४ ॥ एटलाने अलगाज करीने, कंत तणा कर झाल्या जी ॥ अविनाशी वाहलाशुं रमतां, मोह मछर मद गाल्या जी ॥ अवि० ॥ ५ ॥ बावना चंदनथी अति शीतल, नाथ निरंजन वाणी जी ॥ रूपचंद रस प्रेमें पीतां, तिहांथी प्रीति बंधाणी जी ॥ अवि० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन प्रभाती स्तवनं ॥

॥ उठो उठो रे मोरा आतमराम, जिनमुख जोवा जइयें रे ॥ ए आंकणी ॥ प्रभुजीनुं दरिसण छे अति दो हेलुं, ते किम सोहेलुं जाणो रे ॥ वार वार मानव भव जेहवो, मलवो मुशकिल टाणो रे ॥ उठो० ॥ १ ॥ चार दिवसनो चटको मटको, देखीने मत राचो रे ॥ विणसी जातां वार न लागे, काया गढ छे काचो रे ॥ उठो० ॥ २ ॥ हीरो हाथ अमूलक पायो, मूढ पणे मत गमजो रे ॥ सहज सलूणा पास जिणंद शुं, राजी थइ चित्त रमजो रे ॥ उठो० ॥ ३ ॥ अनंतगुणें करी भरिया जिनवर, पूरव पुण्यें पायो रे ॥ ते देखीनें महारा मनमां, आनंद अधिक सोहायो रे ॥ उठो० ॥ ४ ॥ मनगत मोरा आतम, राम करजो सुकृत कमाई रे ॥ लब्धि उदय जिणचद लइने, वरते सिद्ध सवाई रे ॥ वर्त्ते आनंद वधाई रे ॥ उ० ॥ ५ ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तवनं ॥ राग प्रभाती ॥

॥ चालोने प्रीतमजी प्यारा, शेत्रुंजे जइयें ॥ शेत्रुजे जइयें रे स्वामी, शेत्रुंजे जइयें ॥ चालो० ॥ ए आंक

णी ॥ शुं संसारें रह्या ठो मूंफी, दिन दिन तन ठीजे ॥ आथ आपनी ठाया सरिखी, पोतानी कीजें ॥ चा० ॥ १ ॥ जे करवुं ते पेहेलां कीजें, कालें शी वातो ॥ अणचिंतवी आवी पडशे, सबलानी लातो ॥ चा० ॥ ॥ २ ॥ चतुराईशुं चित्तमां चेती, हाथे ते साथें ॥ मरण तणा नीशाणां महोटां, गाजे ठे माथे ॥ चा० ॥ ॥३॥ मात मरुदेवानंदन निरखी, जव सफलो कीजें ॥ दानविजय साहेबनी सेवा, ए संबल लीजें ॥चा०॥४॥

॥ अथ पद्मप्रजिन स्तवनं ॥

॥ रूषन जिनेसर प्रीतम माहरा रे ॥ ए देशी ॥

॥ कागलीयो किरतार जणी शी परें लिखुं रे, कवि पूठे कर जोड ॥ जिम तिम लखतां हाथ वहे नही रे, लखवानो पण कोम ॥ का० ॥ १ ॥ सैंगो माण स शिवपुर चालतो रे, न मले इण कलि काल ॥ प्रजु लगे सपगो पोहोंची सके नही रे, निपगानो जंजाल ॥ का० ॥ २ ॥ हाथ न फाले कागल केहनो रे, कहो केम वाधे नेह ॥ अलवे ते पाठो उत्तर नवि लखे रे, साहेबीयो निसनेह ॥ का० ॥ ३ ॥ एह निरंजन ते किम रंजीयें रे, जो लिखुं विनती लाख ॥ दूरथकी सेवक हुं थइ रहुं रे, लेइ सहुनी साख ॥ का० ॥ ४ ॥ एक पखी जो जाणो पालशुं रे, पदम प्रजुशुं प्रीत ॥ तो कागल जिनराजमां मूकजो रे, इण घर एहीज रीत ॥ का० ॥ ५ ॥ इति पद्म प्रजजिन स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन छंद ॥

॥ सकल सुखाकर जिनवरराय, नविय्रण वंदो पासजीना पाय ॥ नामें नवनिधि होये वली, पूज्यां पातक जाये टली ॥ १ ॥ नयरी वणारसी अश्वसेन राय, वामादेवी जेहनी माय ॥ सतीय शिरामणि रूपनिधान, जिणे जन्म्या प्रनु पार्श्व प्रधान ॥ २ ॥ अंगे आंगी दीपे अति सार, रत्नजडित शिर मुकुट उदार ॥ काने कुंमल वांहे बेरखा, हार हीये सोहे नवलखा ॥ ३ ॥ इंद्रनील सम तनु दीपंत, तेजें शशिहर रवि जीपंत ॥ वदनकमल जस पूनम चंद, नयन कमल दीठे आनंद ॥ ४ ॥ वाघ सिंह गज नय सवि टले, नूत प्रेत व्यंतर नवि छले ॥ रोग सोग डुःख वारणहार, पासजीने नामें नित्त जय जयकार ॥ ५ ॥ अंचलगछे उदयो नाण, धर्म मूर्त्ति सूरि जगजाण ॥ तास तणा वाचकवर शिष्य, वदूं राजमूर्त्ति गणि मुख्य ॥ ६ ॥ तास शिष्य पंमित जलट धरी, स्तवन रच्युं में खंतें करी ॥ विजयसागर मुनि पनणे मुदा, स्तवन नणे तस घर संपदा ॥ ७ ॥

॥ अथ वैराग्यसवाय ॥

॥ ईआ मेवासमे वे, मरदो मगन नया मेवासी ॥ कायारूप मेवास वन्यो है, माता ज्युं मेवासी ॥ साहेवकी शिर आण न माने, आखर क्या ले जासी ॥ ई० ॥ १ ॥ खाई अति डुर्गंध खजाना, कोटमां बहुंतेर कोग ॥ वणसी जातां वार न लागे, जैसा

जल पपोटा ॥ ई० ॥ २ ॥ नव दरवाजा वहे निरंतर, दुखदायी दुर्गंधा ॥ क्या उसमें तल्लीन नया हे, रे रे आतम अंधा ॥ ई० ॥ ३ ॥ छिनमें छोटा छिनमें मोहोटा, छिनमें छेह दिखासी ॥ जब जमरेकी नजर लगेगी, तब छिनमें उड जासी ॥ ई० ॥ ४ ॥ मुलक मुलक की मली लुगाई, बोहोत करी फरीयादी ॥ पण मुजरो माने नही पापी, अति छाक्यो उन्मादी ॥ ई० ॥ ॥ ५ ॥ सारा मुलक मेल्या संतापी, काम करोडी कोटो ॥ लोच्न तलाटी लोचा वाले, तो किम नावे त्रोटो ॥ ई० ॥६॥ उदयरत्न कहे आतम मेरा, मेवासीपणुं मेलो ॥ नगवंतने नेटो नली नांतें, मुक्तिपुरीमें खेलो ॥ ई० ॥ ७ ॥ इति सवाय ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ रातां जेवां फूलडां ने, सामल जेवो रंग ॥ आज तारी अंगीनो कांई, रूडो वन्यो रंग ॥ प्यारा पास जी हो लाल, दीनदयाल मुने नयणें निहाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जोगीवाडे जागतो ने, मातो धिंगड मल्ल ॥ शामलो सोहामणो ने, जीत्या आठे मल्ल ॥ ॥ प्या० ॥ २ ॥ तुं छे मोरो साहिबो ने, हुं हुं तारो दास ॥ आश पूरो दासनी कांइ, सांनली अरदास ॥ प्या० ॥ ३ ॥ देव सघला दीठ तेमां, एक तुं अवल्ल ॥ लाखेणुं छे लटकुं तहारुं, देखी रीझे दिल्ल ॥ प्या० ॥ ॥ ४ ॥ कोइ नमे पीरनेने, कोई नमे राम ॥ उदयरत्न कहे रे प्रजु, मारे तुमशुं काम ॥ प्या० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ सकल सुखाकर, शांति जिनेसर राय ॥ हरपें गुण गाइश, वांदीश प्रभुजीना पाय ॥ १ ॥ हथिणा उर नयरी, विश्वसेन भूपाल ॥ राणी अचिरा देवी, शियलगुणें सुविशाल ॥ २ ॥ तस कूखें उपना, स्वामी ते शांति जिणंद ॥ जन्ममहोत्सव आव्या, सुर नर चोशठ इंद ॥ ३ ॥ भर जोवन पाम्या, रायनी ऋद्धि अनंत ॥ दइ दान संवछरी, दीक्षा ले भगवंत ॥ ४ ॥ वली केवल पाम्या, लाख वरपनी आय ॥ अणसणधुं पोहोता, समेतशिखर सिद्ध थाय ॥ ॥ ५ ॥ नमो शांति जिनेश्वर, भविक जीव हितकारी ॥ भणें वाचक शंकर, देजो सेव तुमारी ॥६॥ इति॥

॥ अथ श्रीआबूजीनुं स्तवन ॥

॥ आबू पर्वत रुअडो रे लाल, ऊंचो ते गाउडा चार रे ॥ आदीसर देव ॥ पाए चढतां दोहिलो रे लाल, जिहां नथी पुण्यनो पार रे ॥ आ० ॥ आबू० ॥ ॥ १॥ ए आंकणी ॥ पहेलां आदीसर जुहारयें रे लाल, पछें सहु परिवार रे ॥ आ० ॥ वलता नेमीसर जुहारीयें रे लाल ॥ मुक्ति तणो दातार रे ॥ आ० ॥ आबु० ॥ २ ॥ देरा सामां दोय जोडलां रे लाल ॥ विमल महेतो चड्या तुरंग रे ॥आ०॥ वस्तुपाल तेजपालना जोडलां रे लाल, चामर ढले दोय अंग रे ॥ ॥ आ० ॥ आबू० ॥ ३ ॥ देराणी जेठाणीना आरीया रे लाल, खरच्या ते लाख अढार रे ॥ आ०॥ रुपा व

रोवर कोरणी रे लाल,. सोनुं घडे सोनार रे ॥ आ०
॥ आबू० ॥ ४ ॥ एकावन उरसीया जला रे लाल,
सूखड केशर चंग रे ॥ आ० ॥ चंपा सेवंत्रीना जा
डुवां रे लाल, जाणे प्रियशुं प्रीतम रंग रे ॥ आ० ॥
॥ आबू० ॥ ५ ॥ अचल गिरि वधामणा रे लाल, चौमु
ख प्रतिमा चार रे ॥ आ०॥ वलि वलि सेवक वीनवे रे
लाल, आवागमण निवार रे ॥ आ०॥ आबू०॥ ६ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ लागो मेरो पारस प्रजुजीसें ध्यान ॥ लागो० ॥
मुगता गिरि पर आप विराजे, फरकत ऊरीय निशा
न ॥ ला० ॥ १ ॥ बारा व्रत तप बाह्य अभ्यंतर,
समकित जाव धरान ॥ ला० ॥ २ ॥ नेमीचंद कहे
सुनो जाइ श्रावक, आपहीं आप पीछान ॥ ला०॥३॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ शांति मिलनकी आश हो ॥ जीया मानुवे ॥
शांति० ॥ शांति मेरा वारी में शांतिको, ज्युं रे फूलन
बिच वास हो ॥ जीया मा० ॥ १ ॥ निशि दिन प्रजु
जीको ध्यान धरत हुं, जब लग घटमें सास हो ॥
जी० ॥ २ ॥ शांति जिणंदजीके चरनकी सेवा, गावे
गुलाबचंद दास हो ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ रूषजस्तवनं ॥

॥ नैना सफल जई, में निरख्या नाजि कुमार, अ
खीयां सफल जई ॥ में० ॥ जवो जव जटकत सर
न हुं आयो, अब तो राखोने मोरी लाज ॥ नैना० ॥

में०॥१ ॥ रोम रोम आनंद नयो मेरे, अशुन करम गये नाज ॥नैना०॥में०॥२॥ और चाहन कबु रह्यो नही मेरे, पायक गजरथ वाज ॥ नैना० ॥में०॥ ३ ॥ रामचंद्र प्रत्नु एह मागत है, लोक शिखरको राज ॥ ॥ नैना० ॥ में० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ विमलाचल विमला प्राणी, शीतल तरु गया रेराणी, रस वेधक कंचन खाणी, कहे इंद्र सुणो इंद्राणी ॥ सनेही संत ए गिरि सेवो, चौद खेत्रमां ती रथ न एह्वो ॥ सनेही संत ए गिरि सेवो ॥१॥ए आंकणी ॥ ढरी पालीने उल्लसीयें, छठ अछम काया कसीये, मोह मल्लने सामा धसीयें, विमलाचल वेहेला वसियें ॥ सनेही० ॥ २ ॥ अन्य थानक कर्म जे करीयें, ते हेमगिरि हेठा हरीयें, वे पोलें प्रदक्षिणा फरीयें, नवजलधि हेला तरीयें ॥ सनेही० ॥ ३ ॥ शिवमंदिर साधवा काजें, सोपाननी पंक्ति विराजे, चढंता दृढ समकित गाजे,दुर्नव्य अनव्य ते लाजे ॥ सनेही० ॥ ४ ॥ पांमव पमुहा केई संता, आदीसर ध्यान धरंता, परमातम नावें नजंता, सिद्धाचल सीधा अनंता ॥ सनेही० ॥ ५ ॥ पट मासी ध्यान धरावे, शुकराजा राज्य ते पावे, देहांतर शत्रु हरावे, शत्रुंजय नाम धरावे ॥ सनेही० ॥ ६ ॥ प्रणिध्यान धरो ए गिरि साचो, तीर्थंकर नाम निकाचो, मोहरायने लागे तमाचो,शुनवीर विमलगिरि साचो॥सनेही०॥७॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल सिद्ध सुहावे, अनंत अनंत कहावे, नेद पंदरथी शिव जावे, गुण अगुरु लघु निपजावे रे॥ विमलाचल वेगें वधावो ॥ गिरिराज तणा गुण गावो रे, जो होवे शिवपुर जावो रे ॥ विम० ॥ १ ॥ ए आं कणी ॥ जितारी अनिग्रह लीधो, दिन सातमे नोजन कीधो ॥ शुक राजायें राज ते लीधो, शत्रुंजय नाम ते दीधो रे ॥ वि० ॥ २ ॥ देव दानव इण गिरि आवे, जिनराजने शीश नमावे, सूत्रमांहे नाच नचावे, जोगावंचक फल पावे रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ विद्याचार ए मुनि वरिया, मर्कट फल जल संचरिया, आका शें पवनसें चलिया, देखी हेमगिरि हेठा उतरिया रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ प्रनु देखीने आनंद पावे, जिनराजने शीश नमावे, देव साथें नावना नावे, पढी इछित स्थानकें जावे रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ ग्यान दर्शन नेदथी लहियें, नवमो श्रावकगुण वहियें, संसारनी रीतें र हियें, जिन शासन तीरथ कहियें रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ सहु तीरथनो ए राजा, सूर्यकुंममां जल ताजां, ना हातां जिन आनंद नाजा, हुउं कूकडो ते चंदराजा रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ ए तीरथ नेटण काजें, गुजरात नो संघ समाजें, पंथें पंथें विसामो ठाजे, गिरि दे खी वधावे उल्लासें रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ अढार तिहुंते र वरसें, मार्गशिरवदि तेरश दिवसें, नेट्या आदीस र उल्लसें, जाएं नवजल पार उतरशो रे ॥ वि० ॥

॥ ए ॥ गिरि देखी लोचन ठरियां, चक्केसरी वीर केश रीया, जाय केतकी वृक्ष लहेरीयां, शेत्रुंजे नदी जल जरीयां रे ॥ वि० ॥ १० ॥ राय जरत रतन बिंब ठा वे, चक्केसरी यात्रा करावे, ते त्रीजे जवें शिव जावे. शुज्न वीर वचन रस गावे रे॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ कर्म उपर सज्जाय प्रारंजः ॥

॥ देवदाणव तीर्थंकर गणधर, हरिहर नरवर सबला ॥ कर्म संयोगें ते सुख डुख पाम्या, सबल हुआ म हा निबला रे॥ प्राणी कर्म समो नही कोय ॥ कीधां कर्म विना जोगवीयां, बूटक बारो न होय रे ॥ प्राणी कर्म० ॥१॥ ए आंकणी ॥ आदीसरने अंतरा य विटंब्यो, वर्ष दिवस रह्या जूखें ॥ वीरने बार वर्ष डुःख दीधुं, उपना ब्राह्मणी कूखें रे ॥ प्राणी कर्म० ॥ २ ॥ शाठ सहस सुत मूआ एक दिन, सामत सूरा जैसा ॥ सगर हूठ महा पुत्रें डुखीयो, करम त णां फल एसा रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ बत्रीश सह स देसांरो साहेब. चक्री सनतकुमार ॥ शोल रोग शरीरें उपना, करमें कीयो तस खुवार रे ॥ प्राणी० ॥ ॥ ४ ॥ सुजूम नामें आठमो चक्री, कर्में सायर ना ख्यो ॥ पच्चीस सहस यक्षें जजा दीठो, पण किण हीं नवि राख्यो रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री, कर्में कीधो अंधो ॥ एम जाणी प्राणी विण कामें, कर्म कोई मत बंधो रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ वीश जुजा दश मस्तक हूता, लखमणे रावण मा

ख्यो ॥ एकलडे जग सहुने जीत्यो, कर्मथी ते प
ण हाख्यो रे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ लखमण राम म
हा बलवंता, वली सत्यवंती सीता ॥ बार वरस लगें
वनमांहे नमिया, वीतक तस बहु वीतां रे ॥ प्रा
णी० ॥ ८ ॥ छपन्नकोड यादवरो साहेब, कृष्ण म
हाबलि जाणी ॥ अटवीमांहे एकलडो मूउ, वल व
लतो विण पाणी रे ॥ प्राणी० ॥ ए ॥ पांमव पांच म
हा जूजारा, हारी डौपदी नारी ॥ बार वरस लगें व
न डुःख दीठां, नमिया जेम निखारी रे ॥ प्राणी० ॥
॥ १० ॥ सतीय शिरोमणी डौपदी कहियें, ए सम
अवर न कोय ॥ पंच पुरुषनी थई ते नारी, पूरव क
र्मथुं होय रे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ कर्मे हलको कीधो
हरिचंदने, वेची तारा राणी ॥ बार वरस लगें माथे
आण्युं, नीच तणे घर पाणी रे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥
दधिवाहन राजानी वेटी, चावी चंदन वाला ॥ चो
पदनी परें चउटे वेचाणी, करम तणा ए चाला रे ॥
प्राणी० ॥ १३ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, वेटे
बांध्यो मुसके ॥ धर्मी नरपति कर्मे दबाया, करमथी
जोर न किसके रे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥ ईश्वरदेवने
पार्वती राणी, करता पुरुष कहेवाय ॥ अहोनिशि
समसाणमांहे वासो, निक्षा नोजन खाय रे ॥ प्राणी०
॥ १५ ॥ सहसकिरण सूरज परतापी, रात दिवस
रहे नमतो ॥ शोलकला ससिहर जग जाचो, दिन
दिन जाये घटतो रे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥ एम अने

क नर खंमया कर्मे, नल नलेरा जे साज ॥ ऋद्धिहर ख करजोडिने कहे, नमो कर्म महाराज रे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥ इति कर्म सवाद

॥ अथ आत्मप्रवोध सद्याय ॥

॥ जीव क्रोध म करजे, लोन म धरजे, मान म लाईशनाश॥कूडां करम म बांधीश, धर्म म चूकीश, विनय म मूकीश ॥ नाई रे जीवडा ॥ दोहिलो मानव नव लाधो ॥ तुमे कांई करी तत्त्वने साधो रे नोला ॥ दोहि० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ घर पठवाडे देरासर जातां, वीश विमासण थाय ॥ नूख्यो तरश्यो राउल रातें, माथे सहेतो घाय रे ॥ जीवडा दोहि० ॥ २ ॥ धर्म तणी पोसालें चाल्या, सुणवा सद्गुरु वाणी ॥ एक वात करे बीजो उठी जायें, नयणे निंद नराणी रे ॥ जीव० ॥ ३ ॥ नामें वेगो लोनें पेठो, चार पोहोर निशि जाग्यो ॥ वे घडीनुं पडिक्कमणुं करतां, चोखो चित्त न राख्यो रे ॥ जीव० ॥ ४ ॥ आठम चउदश पूनम पाखी, पर्व पर्यूपण सारो ॥ वे घडीनुं पच्चरकाण करंतां, एक बीजाने वारो रे ॥ जीव०॥५॥ कीर्त्ति कारण पगरण मांमी, अरथ गरथ सवि लूंटें, पुण्यने काजें पारकुं पोतानुं, गांवडीयें न वी बूटे रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ घर घरणीने घाट घडाव्यां, पहेरण आठ वाघा ॥ दश आंगुली दश वेढ ज पहेख्या, निर्वाणें जावुं ठे नागां रे ॥ जीवडा० ॥ ॥ ७ ॥ वांको अक्षर माथे मीठुं, नीलवट आधो

चंदो ॥ मुनि लावण्य समय इम बोले, ए त्रण कालें वंदो रे ॥ जीवडा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ रहनेमिनी सझाय प्रारंभः ॥

॥ काउस्सग्गथकी रे रहनेमि, राजुल निहाली ॥ चित्तडुं चलियुं तव बोले नार रे ॥ देवरिया मुनिवर, ध्यानमां रेजो ॥ ध्यान थकी होये भवनो पार रे ॥ ॥ देव० ॥ १ ॥ उत्तम कुलना यादव कुल रे अजुआली, लीधो छे संयम भार रे ॥ देव० ॥ हुं रे व्रती रे तुं छे संयम धारी, जाशो सरवे व्रतहारी रे ॥ देव० ॥ ॥ ध्या० ॥ २ ॥ विषधर विष वमी आप न लेवें, करे पावक परिचार रे ॥ देव० ॥ तुज रे बांधव नेमजीयें मुजने रें वामी, वम्यो न घटे तुमने आहार रें ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ नारी अछे रे जगमां विषनी रे वेली, नारी छे अवगुणनो भंमार रे ॥ देव० ॥ नारी मोहें रे मुनिवर जेह विगूता, ते नवि लहे भव पार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ नारीनुं रूप देंखी मुनिने न रहेवुं, ए छे आगममां अधिकार रे ॥ देव० ॥ नारी निःसंगी तेतो मुनिवर कहीयें, न करे फरी संसार रे ॥ ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ एरे सतीनां मुनिवर वयण सुणीने, पाम्या भव प्रतिबोध रे ॥ देव० ॥ नेमजी भेटीने फरी [illegible] लीधो, कस्यो छे आतम शो

ए रे वसता रे मुनिवर वयण सुणीने, फरी न करे संसार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशालिभद्रनी सझाय प्रारंभ ॥

॥ प्रथम गोवालिया तणे भवें जी रे, दीधुं मुनिवर दान ॥ नयरी राजगृही अवतस्यो जी, रूपें मयण समान ॥ सोभागी रे शालिभद्र भोगी रे होय ॥ १ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ बत्रीश लक्षण गुणें भस्यो जी रे,परण्यो बत्रीश नार ॥ माणसने भवें देवनां जी रे, सुख विलसे संसार ॥ सो० ॥ २ ॥ गोभद्रशेठ तिहां पूरवे जी रे, नित नित नवला रे भोग ॥ करे सुभद्रा ऊवारणां जी रे, सेव करे बहु लोग ॥ सो० ॥ ॥ ३ ॥ एक दिन श्रेणिक राजियो जी रे, जोवा आव्यो रे रूप ॥ अंग देखी सकोमलां जी रे, थयो मन हरखित भूप ॥ सो० ॥ ४ ॥ वड वैरागी चितवे जी रे, मुझ शिर श्रेणिक राय ॥ पूरव पुण्य में नवि कियां जी रे, तप आदरशुं माय ॥ सो० ॥ ५ ॥ इणे अवसरें श्रीजिनवरू जी रे, आव्या नयरी उद्यान ॥ शालिभद्र मन ऊजम्यो जी रे, वांद्या प्रभुजीना पाय ॥ सो० ॥ ६ ॥ वीरतणी वाणी सुणी जी रे, वूठो मेह अकाल ॥ एकेकी दिन परिहरे जी रे, जिम जल छंडे पाल ॥ सो० ॥ ७ ॥ माता देखी टल वले जी रे, माछलडी विण नीर ॥ नारी सघली पायें पडे जी रे, म म छंडो साहस धीर ॥ सो० ॥ ८ ॥ बहुअर स

घली वीनवे जी रे, सांभल सासु विचार ॥ सर ठांमी पालें चड्यो जी रे,हंसलो कमण हार ॥ सो० ॥ ए ॥ इण अवसर तिहां नावतां जी रे, धना शिर आंसु पडंत ॥ कवण डुःख तुफ सांभलुं जी रे, ऊंचुं जोइ कहंत ॥ सो० ॥ १० ॥ चंद्रमुखी मृगलोचनी जी रे, बोलावी भरतार ॥ बंधव वात में सांभली जी रे,ना रीनो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ धनो भणे सुण घे लडी जी रे, शालिभद्र पूरो गमार ॥ जो मन आ एयुं ठंमवा जी रे, विलंब न कीजें लगार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कर जोडी कहे कामिनी जी रे, बंधव समो नही कोय ॥ कहेतां वातज सोहली जी रे, मूकतां दोहली होय ॥ सो० ॥ १३ ॥ जारे जा तें इम कह्यो जी रे, तो में ठंमी रे आठ ॥ पिउडा में हसतां कह्युं जी रे, कुणशुं करशुं वात ॥ सो० ॥ १४ ॥ इणे व चनें धनो नीसस्यो जी रे, जाणे पंचायण सिंह ॥ जइ सालाने साद कस्यो जी रे,घेला कर अबीह ॥ सो० ॥ १५ ॥ काल आहेडी नित भमे जी रे, पूंठे म जो इश वाट ॥ नारीबंधन दोरडी जी रे, धव धव ठंमे निराश ॥ सो० ॥ १६ ॥ जिम धीवर तिम माछलो जी रे,धीवरें नाख्यो रे जाल ॥ पुरुष पडी जिम माछ लो जी रे, तिमहिं अचिंत्यो काल ॥ सो० ॥ १७ ॥ जोवन भर विहुं नीसस्या जी रे, पोहोता वीरजीनी पास ॥ दीक्षा लीधी रूअडी जी रे, पाले मन उह्ला स ॥ सो०॥ १८॥ मास खमणने पारणे जी रे,पूठे श्री

जिनराज ॥ अमने शुद्ध गोचरी जी रे,लाज देशे कुण आज ॥ सो०॥१९॥ माता हाथे पारणुं जी रे,थाशे तु मने रे आज ॥ वीर वचन निश्चय करी जी रे, आव्या नगरीमांज ॥सो०॥२०॥ घरे आव्या नवि उलख्या जी रे, फरिया नगरी मझार ॥ मारग जातां मह्यिारडी जी रे, सामी मलि तेणि वार ॥ सो० ॥ २१ ॥ मुनि देखी मन उल्लस्युं जी रे, विकसित थइ तस देह ॥ मस्तक गोरस सूजतो जी रे, पडिलाभ्यो धरि नेह ॥ सो० ॥ २२ ॥ मुनिवर वोहोरी चालिया जी रे, आव्या श्रीजिनपास ॥ मुनि संशय जइ पूछियो जी रे, माय न दीधुं दान ॥ सो० ॥ २३ ॥ वीर कहे तुमें सांभलो जी रे,गोरस वोहोर्यो रे जेह ॥ मारग मली मह्यिारडी जी रे, पूर्व जन्म माय एह ॥ सो० ॥ २४ ॥ पूरव भव जिनमुखें लही जी रे, एकत्र भावें रे दोय ॥ आहार करी मुनि धारियो जी रे, अणसण शुद्ध होय ॥ सो० ॥ २५ ॥ जिन आदेश लही करी जी रे, चढिया गिरि वैभार ॥ शिला ऊपर जइ करी जी रे, दोय मुनि अणसण धार ॥ ॥ सो० ॥ २६॥ माता भद्रा संचर्यां जी रे, साथें बहु परिवार ॥ अंतेउर पुत्रज तणो जी रे, लीधो सघलो सार ॥ सो० ॥ २७॥ समवसरणें आवी करी जी रे, वांद्या वीर जगतात ॥ सकल साधु वांदी करी जी रे, पुत्र जोवे निजमात ॥ सो० ॥ २८ ॥ जोई सघली परपदा जी रे, नवि दीठा दोय अणगार ॥ कर जोडी

करे वीनति जी रे, नांखे श्रीजिनराज ॥ सो०॥२ए॥ वैन्नार गिरि जाइ चढ्या जी रे,मुनिदरिसण उमंग ॥ सहु परिवारें परवस्या जी रे, पहोता गिरिवरशृंग ॥ ॥ सो० ॥ ३० ॥ दोय मुनि अणसण उच्चरी जी रे, झीले ध्यान मऊार ॥ मुनि देखी विलखा थया जी रे, नयणें नीर अपार ॥ सो० ॥ ३१ ॥ गदगदशब्दें बोलती जी रे, मली बत्रीशे नार ॥ पिउडा बोलो बो लडा जी रे, जिम सुख पामे चित्त ॥ सो० ॥ ३२ ॥ अमे तो अवगुणें नस्या जी रे, तुं सही गुण नंमार ॥ मुनिवर ध्यान चूका नही जी रे, तेहने वचने लगार ॥ सो०॥३३॥ वीरा नयणें निहालियें जी रे,जिम मन थाये प्रमोद ॥ नयण उघाडी जोइयें जी रे, माता पा मे मोद ॥ सो० ॥ ३४ ॥ शालिनइ माता मोहनी जी रे, पोहोता अमर विमान ॥ महाविदेहें सीऊशे जी रे,पामी केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ३५ ॥ धनो धर्मी मुक्तें गयो जी रे, पामी शुकल ध्यान ॥ जे नर नारी गावशे जी रे, समयसुंदरनी वाण ॥ सो० ॥ ३६ ॥

॥ अथ चोत्रीश अतिशयनो छंद ॥

॥ श्रीसुमतिदायक डुरितघायक, ज्ञान अनुनव श्रीवरी ॥ तसु सुगुरु केरा चरण प्रणमुं, युगम कर जोडी करी ॥ बहु नाव नक्तें थुणुं जिनवर, चोत्रीशे अतिशय करी ॥ जे सुगुरु मुखथी सुण्या ते कहुं, आगम शास्त्रें अनुसरी ॥ १ ॥ तिहां प्रथम अतिश य श्रीजिन केरा, रोम नख वाधे नही ॥ नीरोग निर्म

ल गात्र जेहनुं, द्वितिय अतिशय ए सही ॥ गोदूध सरिखां मांस लोही, तृतिय एह वखाणियें ॥ चोथो ते उत्पल गंध सरिखो, श्वासोश्वास सो जाणियें ॥ २ ॥ आहार ने नीहार प्रछन, एह अतिशय पांचमो ॥ आकाशगत धर्मचक्र छठो, गगन छत्र ए सातमो ॥ रह्यां ते अंबर श्वेत चामर, युग्म अष्ट म ए कह्यो ॥ स्फटिक सिंहासन सुनिर्मल, नवमो अतिशय ए लह्यो ॥ ३ ॥ आकाशगत ध्वज सहस मंडित, इंद्रध्वज आगल चले ॥ ए दशम अतिशय कह्यो श्रुतमां, देखी परमत खलभले ॥ इग्यारमे वलि स्वामी ऊना, रहे वली वेसे जिहां ॥ सछाय स ध्वज देव ततक्षण, अशोकतरु विरचे तिहां ॥ ४ ॥ द्वादश अतिशय प्रभामंडल, पूठे रविकर जीपियें ॥ रमणीय सुंदर भूमि भागसो, तेरमो ए दीपियें ॥ अ धोमुख होये सर्व कंटक, चौदमे अतिशयवरू ॥ अ नुकूल थइने प्रणमे ऋतु सव, पंचदशमो सुखकरू ॥ ५ ॥ संवर्त्तपवनें भूमि पूंजे, योजन लगें ए शो लमे ॥ सुगंध वर्षा तिहां वरसे, प्रगट अतिशय सतर मे ॥ जानुप्रमाणे बीट नीचां, पंचवर्ण सोहामणां ॥ जल ने थलना फूल वरसे, अढारमे अतिशय घणां ॥६॥ अमनोज्ञ शब्दादिकही नासे, उगणीशमे अतिश यें वली ॥ विशमे अतिशयें सुभक्ष थाये, एम कहे प्रभु केवली ॥ एकवीशमे प्रभु तणीय देशना, योजन लगें सवि जन सुणे ॥ बावीसमे धर्म अर्द्ध मागध, भा

पायें जिनजी जणे ॥ ७ ॥ त्रेवीशमे जिनवाणि जन ने. हेतु शिवजणी परिणमे ॥ चोवीशमे प्रजु चरण मूले, वैर जंतुनां उपशमे ॥ अन्यालिंगी नमे जिनने, पंचविंशति अतिशयें ॥ अन्य तीर्थी मौन थाये, उवीशमे प्रजु निश्चयें ॥७॥ पणवीश जोयण लगें जिनथी,ईती ने मारी नही ॥ स्वचक्र ने परचक्र न होए, त्रीश अतिशय ए सही ॥ अतिवृष्टि ने अनावृष्टि डुर्निक्ष, त्रण ए नवि ऊपजे ॥ चोत्रिशमे वलि व्याधि पीडा, आदि डुःख न संपजे ॥ ए ॥ चोत्रीश अतिशय एह कहिया, सूत्र समवायांगमां ॥ ते जणतां गुणतां हिये धरतां, रहे आतम रंगमां ॥ निज शुद्ध आतम रूप प्रगटे, जावशुं जो ध्याइयें ॥ दर्शनादिक रत्न लहियें, परम पद सुख पाइयें ॥ १० ॥ अर्हंत जगवंत तणा अतिशय, जणो आणी आसता ॥ बहु पुण्य करियें ध्यान धरियें, सूख लहियें शाश्वतां ॥ श्रीसूरिविद्या उदधि सेवक, शिष्य इणि परें संस्तवे ॥ मुनि ज्ञानसागर कहे प्रजुपद, सेवा मागुं जवो जवें॥११

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंज ॥

॥ हवे राणी पदमावती,जीवराशि खमावे ॥ जाण पणुं जग ते जलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिछामि डुक्कडं, अरिहंतनी सांख ॥ जे में जीव विराधिया, चउराशी लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात लाख पृथिवीतणा, साते अपकाय ॥ सात लाख तेउकायना, साते वली वाय ॥ ते मुज० ॥ ३ ॥ दश

प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधार ॥ बी ति चउरिंदी जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता ति र्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चउदह लाख मनुष्य ना, ए लाख चोराशी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इण नवें परन वें सेवियां, जे पाप अढार ॥ त्रिविध त्रिविध करी परिहरुं, डुर्गतिनां दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा की धी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारि मो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोन में की यां, वली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जी व दूहव्या, दीधां कूडां कलंक ॥ निंदा कीधी पार की, रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ए ॥ चाडी कीधी चोतरे, कीधो थापणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म नो, नलो आण्यो नरोंसो ॥ ते० ॥१०॥ खाटकीने नवें में कीया, जीव नानाविध घात ॥ चडीमार नवें चरकलां, मार्यां दिन रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ का जी मुल्लाने नवें, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक ऊ न्ने कीया, कीधां पाप अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ मा छीने नवें माठलां. जाल्यां जलवास ॥ धीवर जील कोली नवें, मृग पाड्या पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने नवें में कीया, आकरा करदंम ॥ बंदी वान मराविया, कोरडा ठडी दंम ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने नवे, दीधां नारकी डुरक ॥ ठेदन ने दन वेदना, ताडन अति तिरक ॥ ते० ॥ १५ ॥

चारने चवें में किया, नीमाड् पचाव्या ॥ तेली चवें तिल पीलिया, पापें पिंम चराव्या ॥ ते०॥ १६ ॥ हाली चवें हल खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट ॥ सू म निदान घणां कियां, दीधा बलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने चवें रोपिया, नानाविध वृक्ष ॥ मूल पत्र फल फूलनां, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अधोवाईयाने चवें, चखा अधिका चार ॥ पोठी पूठे कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ ठीपाने चवें ठेतस्या, कीधां रंगण पास ॥ अग्नि आरंच कीधा घणा, धातुवाद अन्यास ॥ ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूझता, मास्यां माण सवृंद ॥ मदिरा मांस माखण चख्यां, खाधां मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलेच्यां ॥ आरंच कीधा अतिघणा, पोतें पापज सं च्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीया वली, धर में दव दीधा ॥ सम खाधा वीतरागना, कूडा कोसज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्लीचवें उंदर लीया, गिरो ली हत्यारी ॥ मूढ गमार तणे चवें, में जू लीख मा री ॥ ते० ॥ २४ ॥ चाडचुंजा तणे चवें, एकेंद्रिय जी व ॥ ज्वारि चणा गहूं शेकिया, पाडंता रीव ॥ ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांमण पीसण गारना, आरंच अ नेक ॥ रांधण इंधण अग्निनां, कीधां पाप उदेक ॥ ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पां च प्रमाद ॥ इष्टवियोग पाड्या कीया, रूदन विषवा

द ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत ल हीने नांग्यां ॥ मूल अने उत्तर तणां, मुफ दूषण ला ग्यां ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप वींछी सिंह चीवरा, शक रानें समली ॥ हिंसक जीव तणे नवें, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूवावडी दूषण घणां, वली गर्ज गलाव्या ॥ जीवाणी ढोल्यां घणां, शील व्रत नंजाव्यां ॥ ते० ॥ ३० ॥ नव अनंत नमतां थकां, कीधा देह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, ति णशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ नव अनंत नमतां थकां, कीधा परिग्रह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३२ ॥ नव अनंत नमतां थकां, कीधा कुटुंबसंबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसि रुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इणि परे इह नव परनवें, कीधां पाप अखत्र ॥ त्रिविध त्रिविध करि वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ३४ ॥ ए णि विधें ए आराधना, नावें करशे जेह ॥ समय सुंदर कहे पापथी, वली छूटशे तेह ॥ ते० ॥ ३५ ॥ राग वेराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आत्मशिक्षानावना ॥

॥ दोहा. ॥ श्रीजिनवरमुखवासिनी, जगमें ज्यो तिप्रकाश ॥ पदमासन परमेश्वरी, पूरे वंछित आश ॥ १ ॥ ब्रह्मसुता गुण आगली, कनक कमंमलु सा र ॥ वीणापुस्तकधारिणी, तुं त्रिजुवन जयकार ॥ २ ॥

भारने भवें में किया, नीभाड़ पचाव्या ॥ तेली भवें तिल पीलिया, पापें पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥ हाली भवें हल खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट ॥ सू़ड निदान घणां कियां, दीधा बलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने भवें रोपिया, नानाविध वृक्ष ॥ मूल पत्र फल फूलनां, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अधोवाईयाने भवें, भर्या अधिका भार ॥ पोठी पूठें कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ ठीपाने भवें ठेतरया, कीधां रंगण पास ॥ अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूझता, मार्यां माण सवृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्यां, खाधां मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलेच्यां ॥ आरंभ कीधा अतिघणा, पोतें पापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीया वली, धर में दव दीधा ॥ सम खाधा वीतरागना, कूडा कोसज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्लीभवें उंदर लीया, गिरोली हत्यारी ॥ मूढ गमार तणे भवें, में जू लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे भवें, एकेंद्रिय जीव ॥ ज्वारि चणा गहूं शेकिया, पाडंता रीव ॥ ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक ॥ रांधण इंधण अग्निनां, कीधां पाप उदेक ॥ ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पांच प्रमाद ॥ इष्टवियोग पाड्या कीया, रूदन विषवा

द ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत ल हीने नांग्यां ॥ मूल अने उत्तर तणां, मुफ दूषण ला ग्यां ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप वीछी सिंह चीवरा, शक रानें समली ॥ हिंसक जीव तणे नवें, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूवावडी दूषण घणां, वली गर्न गलाव्या ॥ जीवाणी ढोल्यां घणां, शील व्रत नंजाव्यां ॥ ते० ॥ ३० ॥ नव अनंत नमतां थकां, कीधा देह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, ति णशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ नव अनंत नमतां थकां, कीधा परिग्रह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३२ ॥ नव अनंत नमतां थकां, कीधा कुटुंबसंबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसि रुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इणि परे इह नव परनवें, कीधां पाप अखत्र ॥ त्रिविध त्रिविध करि वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ३४ ॥ ए णि विधें ए आराधना, नावें करशे जेह ॥ समय सुंदर कहे पापथी, वली छूटशे तेह ॥ ते० ॥३५॥ राग वेराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आत्मशिक्षानावना ॥

॥ दोहा ॥ श्रीजिनवरमुखवासिनी, जगमें ज्यो तिप्रकाश ॥ पदमासन परमेश्वरी, पूरे वछित आश ॥ १ ॥ ब्रह्मसुता गुण आगली, कनक कमंमलु सा र ॥ वीणापुस्तकधारिणी, तुं त्रिभुवन जयकार ॥ २ ॥

श्रीसरसति जिन पाय नमी, मन धरि हर्ष अपार ॥ आतम शिक्षा भावना, भणूं सुणो नर नार ॥ ३ ॥ रे जिव सुण तुं बापडा, हिये विमासी जोय ॥ आ प स्वारथी सहु मल्युं, ताहारुं नहि जग कोय ॥४॥ धर्म विना सुण जीवडा, तुं भम्यो भव अनंत ॥ मू ढ पणे भव तें किया, इम बोले भगवंत ॥ ५ ॥ लाख चोराशी योनिमां,फरी लियो अवतार ॥ एकेकी योनी वली, अनंत अनंती वार ॥६॥ चउद राज परमाणुआ, स्फ़ई अग्रभाय गम ॥ कर्मवशें जिव तुं भम्यो,मूरख चे तन ताम ॥७॥ निगोद सूक्ष्म बादरें, पुजल अनंत अ पार ॥ एतो काल तुं तिहां रह्यो, हवे कर हैये विचार ॥८॥ श्वास उश्वासा एकमां, मरण सतर अध कीध ॥ सूक्ष्म निगोदमांहे वली,ए जिन वचन प्रसीध ॥९॥ नर य विगलेंडी तिर्यगति, भव कीया बहु हेव ॥ भुवन पति व्यंतर जोतिषी, उर विमानिक देव ॥ १० ॥ इम भमतां भमतां लियो, मनुअ जनम अवतार ॥ मिथ्यात्वपणें भव निगम्या, काज न सीध लगार ॥ ॥ ११ ॥ जगमां जीव अछे बहु, एकशुं अनंतीवा र ॥ विविधप्रकार सगपण कियां, हैया साथ वि चार ॥ १२ ॥ तो कुण आपणुं पारकुं, कुण वेरी कुण मित्त ॥ राग द्वेष टाली करी, कर समता इक चित्त ॥ १३ ॥ पूर्व कोडिने आउखें, ग्यानी गुरुह अपार ॥ उत्पति कहि जिउं ताहरी, कहेतां नावे पार ॥ १४ ॥ पुत्र पिता पण अवतरे, पिता पुत्र पण

जोय ॥ माता सगपण नारि मली, नारी मा
ता होय ॥ १५ ॥ सूतो सुपन जंजालमां, पाम्यो
जाणे राज ॥ जब जाग्यो तब एकलो, राज न सीझे
काज ॥ १६ ॥ तिम ए कुटुंब सहू मल्युं, खोटी मा
या जाल ॥ आयू पहोंचे आपणे, खिण थाये वि
सराल ॥ १७ ॥ सोदो लेयण जण मिले, जिहां
जोडी सहि हाट ॥ आथ सारु विवसाय करी, फरि
चाल्या निजवाट ॥ १८ ॥ तिम नव नमतां सवि
मल्या, कुटुंब जोडि जो हाट ॥ पुण्य पाप विवसाय
करी, जो कतरियें घाट ॥ १९ ॥ इम कुटुंब मिल्युं
कारिमुं, माय अने वलि ताय ॥ बंधू नगिनी नार
जा, को केहनो न कहाय ॥ २० ॥ नव नव नाट
क तुं वली, नाच्यो करि बहु रूप ॥ नाटक एकत्रुं
नाचियो, जो छूटे नव कूप ॥ २१ ॥ उत्तम कुल
नर नव लही, पामि धर्म जिनराय ॥ प्रमाद मू
की कीजियें, खिण लाखीणो जाय ॥ २२ ॥ जिसुं
कीजे तिसुं पाइये, करे तैसा फल जोय ॥ सुख दुख
आप कमाइयें, दोप न दीजे कोय ॥ २३ ॥ दो
प दीजें निज कर्मने, जिण नवि कीधो धर्म ॥ धर्म
विना सुख नवि मले, ए जिन शासन मर्म ॥ २४ ॥
वावी कूरी कोदरी, तो क्युं लुणीयें शाल ॥ पुण्यवि
ना सवि जीवडा, आशा आल पंपाल ॥ २५ ॥
आय पहोती आतमा, कोइ नवि राखण हार ॥
इंद चंद जिनवर वली, गया सवी निरधार ॥ २६ ॥

मोहोढा मोढ न कीजियें, न किजें मोहोटी वात ॥
कोडी अनंत में-वेचियो, त्यारें किहां गइ जात ॥२७॥
आपसरूप विचार तुं, जो हुइ हियडे शान ॥ करणी
तेहवी कीजियें, जिम वाधे जग वान ॥ २८ ॥
वृद्धपण धर्म थाये नही, जोबन एलें जाय ॥ तरु
ण पणे धसमस करी, पछे फरी पछताय ॥ २९ ॥
जरा आवी जोवन गयुं, शिर पलिया ते केश ॥ ल
लुता तो छोडी नहीं, न कस्यो धर्म लवलेश ॥ ३० ॥
पचेंद्रिय जिहां परवडा, रोग जरा नावंत ॥ जो
वन चंचल आवे सदा, कर तुं धर्म महंत ॥ ३१ ॥
छते हाथ न वावस्यो, संबल न कियो साथ ॥ आय
गई मन चेतियो, पछें घसे निज हाथ ॥ ३२ ॥ ध
न जोवन नर रूपनो, गर्व करे ते गमार ॥ कृष्ण बल
नइ द्वारिका, जातां न लागी वार ॥ ३३ ॥ आठ
पहोर तुं धसमसी, धनार्थी देशांतर जाय ॥ सो धन
मेल्युं ताहरुं, उरज कोई खाय ॥ ३४ ॥ आंख त
णे फरुकडे, ऊथल पाथल थाय ॥ इस्युं जाणी
जिव बापडा, म करिश ममता माय ॥ ३५ ॥ मा
या सुख संसारमां, ते सुख सहिय असार ॥ धर्म प
सायें सुख मले, ते सुख नावे पार ॥ ३६ ॥ नय
न फरुके जिहां लगें, तिहां तहारुं सहु कोय ॥
नयन फरुकत जब रही, तब तहारुं नहि होय ॥
॥ ३७ ॥ पाप कियां जिव तें बहू, धर्म न कियो ल
गार ॥ नरग पड्यो यम कर चड्यो, तिहां करे

पोकार ॥ ३७ ॥ कोइ दिन राणो राजियो, कोइ दि
न नयो तुं देव ॥ कोइ दिन रांक तुं अवतस्यो, क
रतो उरज सेव ॥ ३९ ॥ कोइ दिन कोडी परिवस्यो, को
दिन नहि को पास ॥ को दिन घर घर एकलो, नमे
सही ज्युं दास ॥ ४० ॥ को दिन सुखासन पालखी,
जेवमची चकमोल ॥ रथपाला आगल चले, नित
नित करत कलोल ॥ ४१ ॥ को दिन कूर कपूर
तुं, नावत नही लगार ॥ को दिन रोटी कारणें, न
मतो घर घर वार ॥ ४२ ॥ हीर चीर अंग पहेरि
यां, चुआ चदन वहु लाय ॥ सो तन जतन करत
यौं, छिणमांही विघटाय ॥ ४३ ॥ सातम गोख तुं शो
भतो, कामिनि नोग विलास ॥ इक दिन उही आव
शे, रहेणोही वनवास ॥ ४४ ॥ रूपें देव कुमार स
म, देख मोहे नर नार ॥ सो नर खिण इकमां व
ली, वलि जलि होवे गर ॥ ४५ ॥ जे विन घडि
य न जायती,सो वरसां सो जाय ॥ ते वछन विसरी
गयो, उरहिंसुं चित लाय ॥ ४६ ॥ देखत सब जुग
जातुही, थिर न रही सवि कोय ॥ इस्युं जाणी नलुं
कीजियें, हियड विमासी जोय ॥ ४७ ॥ सुरपति स
वि सेवा करे, राय राणा नर नार ॥ आय पहोंते आ
तमा, जात न लागे वार ॥ ४८ ॥ देखत नर अंधा
हुआ, जे मोह विव्या वाल ॥ नण्या गण्या मूरख व
ली, नर नारी बाल गोपाल ॥ ४९ ॥ रात दिवस नि
ज नारिशुं, तुं रमतो मनरंग ॥ जे जोइयें ते पूरतो, ग

लट आणी अंग ॥ ५० ॥ सो रामा जीउं ताहरी, क्षणमांही विघटाय ॥ स्वारथ पहोंचत जव रह्यो, तव फरि वैरी थाय ॥ ५१ ॥ समुद्र द्वीप सायर स वे, पामे को नर पार ॥ नारी छिद्र चरित्रनो, को न वि पाम्यो पार ॥ ५२ ॥ ब्रह्मा नारायण ईश्वर, इंद्र चंद्र नर कोड ॥ ललना वचनें लालची, ते रह्या वे कर जोड ॥ ५३ ॥ नारी वदन सोहामणुं, पण वाघण अवतार ॥ जे नर एहने वश पड्या, तस लूंट्यां घर बार ॥ ५४ ॥ हसतमुखी दीसे भली, क रति कारमो नेह ॥ कनकलता बाहिर जिसी, अं तर पित्तल तेह ॥ ५५ ॥ पहेलि प्रीत करि रंगशुं, मी ठा बोली नार ॥ नरने दास करि आपणो, मूके टाकर मार ॥ ५६ ॥ नारी मदन तलावडी, बूड्यो सयल संसार ॥ काढणहारो को नही, बूडा बूंव न वार ॥ ५७ ॥ वीश वसाना जे नरा, कोइ नही त स वंक ॥ नारी संगति तेहने, निश्चें चढे कलं क ॥ ५८ ॥ मुंज ने चंमप्रद्योतना, दासीपति पा म्या नाम ॥ अनय कुमार बुधि आगलो, तेह ठग्यो अभिराम ॥ ५९ ॥ नारी नहि रे वापडा, पण ए विष नी वेल ॥ जो सुख वांछे मुक्तिनां, नारी संगति मेल ॥ ६० ॥ नारी जगमां ते भली, जिण जायो पु रुष रतन्न ॥ ते सतिने नित पाय नमुं, जगमां ते ध न धन्न ॥ ६१ ॥ तुं पर काम करी सदा, निज का ज न करिय लगार ॥ अक्षत्र नक्षत्र करिय तुं, किम

बूटिश नव पार ॥ ६२ ॥ पाप घडो पूरण नरी, तें लीउं शिर नार ॥ ते किम बूडिश जीवडा, न करी ध र्मै लगार ॥ ६३ ॥ इसुं जाणी कूड कपट, छज छि इ तुं छांम ॥ ते छांमीनें जीवडा, जिन धर्में चित मांम ॥ ६४ ॥ जिण वचने पर डुख हुए, जिण हो य प्राणी घात ॥ क्लेश पडे निज आतमा, तज उ त्तम ते वात ॥ ६५ ॥ जिम तिम पर सुख दीजियें, डुःख न दीजें कोय ॥ डुख देई डुख पामियें, सुख दे ई सुख होय ॥ ६६ ॥ पर तांत निंदा जे करे, कूडां देवे आल ॥ मर्म प्रकासे परतणा, तेथि नलो चं माल ॥ ६७ ॥ पटमासीनें पारणे, इक सिथ लहे आहार ॥ करतो निंदा नवि टले, तस डुर्गति अव तार ॥ ६८ ॥ छार उपर जिम लीपणुं, तिम क्रोधें तप कीध ॥ तस तप जप संजम मुधा, एके काज न सीध ॥ ६९ ॥ पूर्व कोडिने आउखे, पाली चारित्र सार ॥ सुकृत सुणो सवि तेहनुं, क्षणमां होवे छा र ॥ ७० ॥ पर अवगुण सरशव समो, अवगुण नि ज मेरु समान ॥ कां करे निंदा पारकी, मूरख आप ण शान ॥ ७१ ॥ पर अवगुण जिम देखियें, तिम परगुण तुं जोय ॥ परगुण लेतां जीवडा, अखय जरामर होय ॥ ७२ ॥ क्रोधी नर अठे सदा, कहियें जे उलटी रीश ॥ ते छोडी डुर आतमा, रहे जोय ण पणवीस ॥ ७३ ॥ गुण कीधा माने नही, अ वगुण मांमी मूल ॥ ते नर संगति छांमिये, पग पग

मां घासल ॥ ७४ ॥ निंदा करे जे आपणी, ते जीवो जगमांय ॥ मल मूत्र धोए परतणां, पडे अधोगति जाय ॥ ७५ ॥ जे मल मूत्र धोए सदा, गुणवतना निशदिस ॥ ते डुर्जन जीवो घणुं, जगमां कोडि वरीस ॥ ७६ ॥ सजन डुर्जन किम जाणियें, जब मुख बोले वाण ॥ सज्जन मुख अमृत लवे, डुर्जन विप नी खाण ॥ ७७ ॥ नरनव चिंतामणि लही, आले तुं मम हार ॥ धर्म करीनें जीवडा, सफल करो अव तार ॥ ७८ ॥ सकल सामग्री तें लही, जिण तरियें संसार ॥ प्रमाद वशे नव कां गमे, कर निज हिये विचार ॥ ७९ ॥ दीउं उपदेश लागे नही, जो नवि चिंते आप ॥ आप सरूप विचारतां, बूटीजें सवि पाप ॥ ८० ॥ जिण रस पाप कियां तुमें, तिण रस तुं कर धर्म ॥ अक्त्र नक्त्र, नव अनंतना, तूटीजें सवि कर्म ॥ ८१ ॥ जिम आउखा दिन गुणी, वरस मास घडि मान ॥ चेति सके तो चेतजे, जो होए हियडे ज्ञान ॥ ८२ ॥ धन कारण तुं फल फले, धर्म करि थाये सूर ॥ अनंत नवनां पाप सवि, क्षणमां जाये दूर ॥ ८३ ॥ जे रचना दिन ऊगती, ते रचना नहिं सांझ ॥ इस्युं जाणी रे जीवडा, चेतहि हियडा मांझ ॥ ८४ ॥ आशा अंबर जेवडी, मरवुं पगला हेठ ॥ धर्म विना जे दिन गया, तिण दिन कीधी वेठ ॥ ८५ ॥ रे जिव सुण तुं बापडा, म करिश, गर्व गमार ॥ मूल स्वरूप देखी करी,

निज जीवशुं तुं विचार ॥७६॥ कर्म को नवि छूटियें, इंद्र चंद्र नरदेव ॥ राय राणा मंमलिक वली, अवर नरज कुण हेव ॥ ७७ ॥ वरस दिवस घर घर नम्या, आदिनाथ नगवंत ॥ कर्म वशें डुख तिणें लह्यां, जे जगमां बलवंत ॥ ७७ ॥ पास जिणंद प्रतिमा र ह्रि, उपसर्ग कियो सुरिंद ॥ ते उपसर्गने टालियो, पद्मावति धरणिंद ॥ ७ए ॥ काने खीला घातिआ, च रणे रांधी खीर ॥ तेहुंने कर्मे नड्यो, चोविशमो श्री वीर ॥ ए० ॥ मल्ली माया तप करी, पाम्या स्त्री अवतार ॥ सुरपति कोडि सेवा करी, कर्मनो एह प्रकार ॥ ए१ ॥ पुरुषविषे चूडामणि, नरत नरेस र राय ॥ बाहुबलि हार मनावियो, आज लगें कहे वाय ॥ ए२ ॥ कीधां कर्म न छूटियें, जेहनो विषमो बंध ॥ ब्रह्मदत्त नर चक्कवई, सोल वरस लगें अंध ॥ ए३ ॥ आठमो सुनूम चक्कवी, ऋद्धि तणो नहिं पार ॥ कर्मवशें परिवारशुं, बूमा समुद्र मजा र ॥ ए४ ॥ पांच पांमव अतुली वली, तेह नम्या वनवास ॥ इस्या पुरुष जगमां वली, दिनपणे फस्या निराश ॥ ए५ ॥ राम लखमण जगमां वली, जेह शुं जपे सहु नाम ॥ ते वनवासमांहे रह्या, जे बहु गुणना धाम ॥ ए६ ॥ रावण विकट रामें ह ण्यो, कृष्णें हण्यो जरासंध ॥ जराकुमर हरिनें हण्यो, देखो कर्मनो बंध ॥ ए७ ॥ निज पुत्री तातें वरी, तस कूखें सुत हेव ॥ कर्मवशें जिव

शिवनयरी शिव पामिया, ए समता फल जोय ॥ १२२ ॥ चिलायति पुत्र नारि शिर, छेदीने कर लीध ॥ उपशम संवर विवेकथी, कृतकर्म दूरें कीध ॥ १२३ ॥ दिन प्रति सात हत्या करी, अर्जुनमा ली नाम ॥ परिसह देखि क्षमा धरी, पाम्या शिवपुर गाम ॥१२४॥ मुनिपति मुनि काउसग रहे, अगनी दाधी देह ॥ परिसह सहि पदवी वरी, अमर वधू धरि नेह ॥ १२५ ॥ वंश उपर नाटक करी, एला पुत्र कुमार ॥ जाति समरण ऊपनुं, ज्ञान अनंत अपार ॥ १२६ ॥ कर्म वशें आषाढमुनि, नरतनुं नाटक कीध ॥ अनित नावना नावतां, तिणें तिहां केवल लीध ॥ १२७ ॥ सुशिष्य पंथकजी मुनि, गुरु प्रमाद कियो दूर ॥ शत्रुंजय अणसण करी, ते वदूं गुण सूर ॥ १२८ ॥ चंडरौड गुरु खंधें करी, रजनी कियो विहार ॥ शिप पण केवल पामियो, तिम गुरु केवल धार ॥ १२९ ॥ पटमासीने पारणें, ढंढ ण नाम कुमार ॥ मोदक चूरत पामियो, केवल ज्ञा न उदार ॥ १३० ॥ पट खंम राज हेलां तजी, लीधो संजम नार ॥ पटदश रोग इहां सह्या, श्रीश्रीसनत कुमार ॥ १३१ ॥ कुर नखतां केवल लह्युं, कूरगड अणगार ॥ क्षमा खड्ग हाथे धरी, जे मुनिमां सिण गार ॥ १३२ ॥ पंखी प्राणज राखवा, करि खंमो खंम देह ॥ मेघरथ राय तणे नवें, प्रसन्न हुउ सुर तेह ॥ १३३ ॥ वंदी वीर गुमानशुं, दशार्णनद

नरसिंह ॥ सुरपति पाय लगाडियो, जग राखी जिण
लीह ॥ १३४ ॥ प्रसन्न चंद्र काउसग्गमां, कोपी युद्ध
करंत ॥ कोप शम्यो केवल लह्युं, मोहटो ए गुणवंत
॥ १३५ ॥ अइमंतो सुकुमाल मुनि, वखाण्यो वीर
जिणंद ॥ इरियावही पडिक्कमतां, केवल लह्यु आणंद
॥ १३६ ॥ विरजिनवचनें थिर रह्यो, श्रेणिक सुत मे
घ कुमार ॥ जातिसमरण पामियो, करि दो नयणां
सार ॥ १३७ ॥ हाट वेचाणी चंदना, सुनद्रा चढयुं
कलंक ॥ दमयंती नल विजोग लह्यो, एह कर्मनो
वंक ॥ १३८ ॥ कलावती कर छेदिया, द्रौपदी का
ढ्यां चीर ॥ अग्नि शितल सीता कस्यो, शील गुणें
थयुं नीर ॥ १३ए ॥ चंदना चरण मृगावती, खमा
वि निज अपराध ॥ केवल लहि गुरुणी दियो, दो
जीव टल्यो विपवाद ॥ १४० ॥ चंद कलंक सायर
कस्यो, खारो नीर किरतार ॥ नवसो नवाणुं नदी त
णो, देखो ए नरतार ॥ १४१ ॥ हरिचंदराय करम
वशें, शिर वह्युं कुंव घर नीर ॥ कर्म वशे नर सवि
नम्या, जे जग बावन वीर ॥ १४२ ॥ गउ ब्राह्मण
स्त्री बालका, दढप्रहारे हत्या कीध ॥ चार पोल का
उसग रही, षटमास केवल लीध ॥ १४३ ॥ मेरु
ढले ने ध्रुव चले, सायर लोपे लीह ॥ कीधां कर्म न
तूटियें, जो उगे पश्चिम दीह ॥ १४४ ॥ कीधां कर्म
तो तूटियें, जो कीजे जिनधर्म ॥ मन वच कायायें
करी, ए जिन शासन मर्म ॥ १४५ ॥ कर्म

म शिक्षा नामथी, सुर नर लागे पाय ॥ १६९ ॥
वीर शासन दीपावतो, आणंद विमल सुरिंद ॥
प्रमाद पंथ दूरे कस्यो, प्रणमुं तेह आणंद ॥ १७० ॥
तास शिष्य मुनिसर धणी, श्रीविजय दान सूरी
श ॥ प्रगट महिम तस जागतो, पाय नमे नर ईश ॥
॥ १७१ ॥ उपशम रसनो कूंपलो, तास पट्टधर ही
र ॥ सकल सूरि शिरोमणि, सायर जिम गंभीर
॥ १७२ ॥ हीरविजय गुरु हीरलो, प्रतिवोध्यो अ
कवर भूप ॥ राय राणा सेवा करे, जेहनुं अकल स
रूप ॥ १७३ ॥ म्लेछराय जिणे वश कस्यो, जग
वर्त्तावि अमार ॥ विमलाचल मुक्तो कियो, शासन
शोभाकार ॥ १७४ ॥ कुमारपाल प्रतिवोधियो,
श्रीश्रीहेम सुरिंद ॥ तिम अकवर गुरु हीरजी, मन
धरि अति आणंद ॥ १७५ ॥ ध्यानवशें निज पद
दियो,निज मन हर्ष अपार ॥ विजयसेनसुरि नाम
थी, नित होय जय जय कार ॥ १७६ ॥ कामकुं
भ चिंतामणि, कल्पतरू अवतार ॥ ते सविथी जेह
सिद्धिनी, अधिक ए भवि विचार ॥ १७७ ॥ वि
जयसेन गुरुराय वर, विजयदेव सूरिंद ॥ विजय
मान गुरु वदियें, जिम सूरज उर चंद ॥ १७८ ॥ त
पगछ वाचकमें वरू, विमल हर्ष शिरताज ॥
नामें नवनिधि संपजे, दरिसण सीझे काज ॥ १७९ ॥
आतमशिक्षा भावना, तास शिष्य मनरंग ॥ प्रेमवि
जय प्रेमें करी, कलट आणी अंग ॥ १८० ॥ श्रीरत्नह

षे विबुध मुऊ, बंधू तास पसाय ॥ तासु सानिध ग्रंथ में कह्यो, मन धरि हर्ष अपार ॥ १७१ ॥ मूढ मती ठे माहरी, कवि मत करजो हास ॥ कृपा करी मुऊ ऊपरें, शोधी करजो खास ॥ १७२ ॥ संवत शोल बाशठि ए, वैशाख पूनम जोय ॥ वार गुरु सहि दिन जाणो, एह संवत्सर होय ॥ १७३ ॥ नयर उज्जेणीमां वली, आतमशिक्षा नाम ॥ मन नाव धरिने तिहां करी, सीधां वंछित काम ॥ १७४ ॥ एक शत एंशी पांच ए, दोहा अति अभिराम ॥ जणे गुणे जे सांजले, तेह लहे शिवगाम ॥ १७५ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश सित्तेरी प्रारंभ ॥

॥ उतपति जो जो आपणी, मन मांहि विमास ॥ गरजावासें जीवडो, वसियो नव मास ॥ उतपति जो जो आपणी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नारी तणे नाजि तलें, जिन वचनें जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तामें नाडी ठे दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तलें योनि कहीयें, वर फूल समान ॥ आंब तणी मांजर जिस्यो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर स्त्रवे तिण गमथी, रुतुकाल सदैव ॥ रुधिर शुक्र जोगें करी, तिहां ऊपजे जीव ॥ उ० ॥ ४ ॥ जे अपावन पवनें करी, वासित डुरगंध ॥ तिणे थानक तुं उपनो, हवे हूउ मदंध ॥ उ० ॥ ५ ॥ नाली वांस तणी घणुं, जरियें रू घाल ॥ ताती लोह शीलाक ते, जाले तत काल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी यो

निमें, ठे नवलख जीव ॥ पुरुषप्रसंगें ते सहु, मरी जाय सदैव ॥ उ० ॥ ७ ॥ उपजे नर नारी मळे, पंचेंड्रिय जेह ॥ तेह तणी संख्या नहिं, तजो कारज एह ॥ उ० ॥ ७ ॥ नव लख जीव टके तिहां, उत्कृष्टी वार ॥ जीव जघन्यपणें टके, एक दो त्रण चार ॥ उ० ॥ ए ॥ जीव जघन्य तिहां रहे, मुहूरत परिमाण ॥ बार वरसनी स्थिति तिहां, उत्कृष्टी जाण ॥ उ० ॥ १० ॥ तिणे गर्न्नें कोइ जीवडो, इम कहे जगदीश ॥ फरी मरी आवे तो रहे, संवत्सर चोवीश ॥ उ० ॥ ११ ॥ महिला वरस पंचावनें, कहियें निर्वीज ॥ पंचोतेर वरस पछें, थाए पुरुष अवीज ॥ उ० ॥ १२ ॥ जिमणि कूखें नर वसे, तिम वामी नार ॥ वच्चें नपुंसक जाणियें, जिनवचनें विचार ॥ उ० ॥ १३ ॥ हवे सामान्य पणे इहां, आव्यो गर्न्नावास ॥ सात दिवस ऊपर रहे, नरगति नव मास ॥ उ० ॥ १४ ॥ आठ वरस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टो काल ॥ गर्न्नावासें नोगव्या, इम बहु जंजाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ कार्मणकायें करि लीयो, पहिलो ते आहार ॥ शुक्र अने शोणित तणो, नहि जूठ लगार ॥ उ० ॥ १६ ॥ पर्यापति पूरी नही, तिहां विसवा वीश ॥ तिणे आहारे तनु थयो, औदारिक अरु मीस ॥ उ० ॥ १७ ॥ पवन आवे . उदरथकी, उपजावे अंग ॥ [illegible] करे थिर तेहने, जल सुरस सुरंग ॥ उ० ॥

कठिनपणुं पृथिवी रचे, अवगाह आका
नूत शरीरनो, एम करे प्रकाश ॥ उ० ॥
बार मुहूर्त ऋतु पछें, विलसे नर नार ॥
। उत्पति तिहां, नही अवर प्रकार ॥
॥ उ० ॥ २० ॥ कलिल हुवे दिन सातमे, खरबुद
दिन सात ॥ खरबुदथी पेशी वधे, घन मांस कहा
त ॥ उ० ॥ २१ ॥ मांस तणी गोटी हुवे, अडताली
श टांक ॥ प्रथम मासें जिनवर कहे, मन म धरो शं
क ॥ उ० ॥ २२ ॥ रुधिर मांस बीजे हुवे, हवे त्रीजे
मास ॥ कर्मतणे योगें करी, माता मन आश ॥
॥ उ० ॥ २३ ॥ चोथे मासें मातना, परिणमे सहु
अंग ॥ हाथ अने पग पांचमे, तिम मस्तक संग ॥
॥ उ० ॥ २४ ॥ पित्त रुधिर छठे पडे, सातमे इम
संच ॥ नव धमणी नस सातशें, पेशी सय पंच ॥
॥ उ० ॥ २५ ॥ रोमराइ पण सातमे, साढी तिन
क्रोड ॥ उपजे कणा केटले, इम आगम जोड ॥
उ० ॥ २६ ॥ आठमे मासें नीपनुं, एम सकल
शरीर ॥ ऊंधे शिर वेदन सहे, ऊंपे जिन वीर ॥
॥ उ० ॥ २७ ॥ शोणित शुक्र संलेपमा, लघु ने व
डि नीत ॥ वात पित्त कफ गर्भमें, ए थाये इण रीत ॥
॥ उ० ॥ २८ ॥ मात तणी डूंटी लगे, बालकनुं
नाल ॥ रस आहार तणो तिहां, आवे ततकाल ॥
॥ उ० ॥ २९ ॥ जननी ले आहार ते, जाए नाडो
नाड ॥ रोम इंद्री नख चख वधे, तिम मज्जा

ड ॥ उ० ॥ ३० ॥ सविहूं अंगें उश्नसे, सर्वांग आ
हार ॥ कवल आहार करे नही, गर्भे इस्यो विचा
र ॥ उ० ॥ ३१ ॥ तें गर्भें किण जीवने, थाय ज्ञा
न विभंग ॥ अथवा अवधि कहीजियें, तिणे ज्ञान
प्रसंग ॥ उ० ॥ ३२ ॥ कटक करी वैक्रिय पणे, जू
ऊी नरकें जाय ॥ को जिनवचन सुणी करी, मरी
सुर पण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ उंधे मुखें गुफा हि
ये, सहेतो बहु पीड ॥ दृष्टि आगल बिहुं हाथशुं,
रहे मूठी भीड ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जला
दिकें, उपजे उंधान ॥ अथवा बिहूं नारी मल्यां,
कह्यो गर्भ विधान ॥ उ० ॥ ३५ ॥ कोई उत्तम चिंत
वे, देखी डुःख राश ॥ पुण्य करुं परो नीकली, नावुं
गर्भावास ॥ उ० ॥ ३६ ॥ वंत कोडी सूई अगमां,
कोइ चांपे समकाल ॥ तिणथी गर्भमां अवगुणी, स
हे वेदना बाल ॥ उ० ॥ ३७ ॥ माता भूखी भूखी
उं, सुखिणी सुख थाय ॥ माता सूते ते सुवे, परवश
दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गर्भथकी डुःख लखगु
णुं, जनमे जिण वार ॥ जनम थये डुःख विसखुं,
धग मोह विकार ॥ उ० ॥ ३९ ॥ उपज्यो अशुचि
पणे तिहां, मल मूत्र कलेश ॥ पिंम अशुचि करी पूरि
यो, नवि शुचि लव लेश ॥ उ० ॥ ४० ॥ तुरत रुद
न करतो थको, जनमे जिण वार ॥ माता पयोधर
मुख ठवे, पिये दूध तेवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दीसे दिन
-न दीपतो, करे रग अपार ॥ लाम कोम माता पिता,

पूरे सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ छिद्र बारह नारीने, नरनां नव जाण ॥ रात दिवस वहेतां रहे, चेतो चतुर सुजाण ॥ उ० ॥ ४३ ॥ सात धातु साते त्व चा, छे सातशें नाड ॥ नवशें नारां छे पिंममां, तिम त्रणशें हाम ॥ उ० ॥ ४४ ॥ संधि एकसो साव छे, सत्तोतेर सो मर्म ॥ तिन दोष पेशी पांचशे, ढांक्यां छे चर्म ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रुधिर शेर दश देहमें, पेसाव सरीष ॥ शेर पांच चरवी तिहां, दोय शेर पूरीष ॥ उ० ॥ ४६ ॥ पित्त टांक चोशठ छे, वीरज बत्री श ॥ टांक बत्रीश सलेषमा, जाणे जगदीश ॥ ॥ उ० ॥ ४७ ॥ इण परिमाणथकी जदा, उंछो अधिको थाय ॥ व्यापे रोग शरीरमें, नवि चले तव काय ॥ उ० ॥ ४८ ॥ पोष्यो पहिले दायके, इम वाध्यो अंग ॥ खान पान भूषण भलां, करे नव न व रग ॥ उ० ॥ ४९ ॥ हवे बीजे दशके भणे, विद्या विविध प्रकार ॥ त्रीजे दशके तेहने, जाग्यो काम विकार ॥ उ० ॥ ५० ॥ जिण थानक तुं उपन्यो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दशके धन त णा, करे कोडि उपाय ॥ उ० ॥ ५१ ॥ पहोतो दशके पांचमे, मनमां ससनेह ॥ बेटा बेटी ने पो तरा, परणावे तेह ॥ उ० ॥ ५२ ॥ छठे दशके प्राणियो, वली परवश थाय ॥ जरा आवी यौवन गयुं, तृष्णा तोय न जाय ॥ उ० ॥ ५३ ॥ आव्यो दशके सातमें, हवे प्राणी तेह ॥ बल भांग्युं बूढो थ

कुण कुण जीव नम्या नवमांहे, क्रोध तणे विरतंत
जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ सोमल ससरे शीश प्रजाल्युं,
बांधी माटीनी पाल जी ॥ गजसुकुमाल क्षमा मन ध
रतो, मुगति गयो तत काल जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ कुलवा
लुउं साधु कहातो,कीधो क्रोध अपार जी ॥ कोणिकनी
गणिका वश पडियो, रडवडियो संसार जी ॥ आ०
॥ ५ ॥ सोवनकार करी अति वेदन, वाधरशुं वींटियुं
शीश जी ॥ मेतारज कृषि मुग पोहोतो, उपशम ए
ह जगीश जी ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुरुड वुरुड वे
साधु कहाता, रह्या कुणाला खाल जी ॥ क्रोध करीते
कुगतें पहोता, जनम गमायो आल जी ॥ आ०
॥ ७ ॥ कर्म खपावी मुगतें पहोता, खंधक सूरिना
शिष्य जी ॥ पालक पापीयें घाणी पील्या, नाणी मन
मां रीश जी ॥ आ० ॥ ८ ॥ अच्चंकारी नारी अचुं
की, त्रोड्यो पीयुशुं नेह जी ॥ वव्बर कुल सह्यां
दुःख बहुलां, क्रोध तणां फल एह जी ॥ आ० ॥
॥ ए ॥ वाघणे सर्व शरीर वलूरयुं, ततक्षण छो
ड्यां प्राण जी ॥ साधु सुकोशल शिव सुख पाम्या, ए
ह क्षमा गुण जाण जी ॥ आ० ॥ १० ॥ ...
माल कहीजें विहुमें, निरति नही कहे देव जी
पि चंमाल कहीजे वडतो, टालो वेढनी टेव
॥ आ० ॥ ११ ॥ सातमी नरक गयो ते
काढी ब्राह्मण आंख जी ॥ क्रोध तणां
जाणी, राग द्वेष द्यो नाख जी ॥ आ०

धक ऋषिनी खाल उतारी, सह्यो परिसह जेण जी ॥ गरजावासना दुःखथी छूट्यो, सबल क्षमा गुण ते ण जी ॥ आ० ॥ १३ ॥ क्रोध करी खंधक आचारि ज, हुर्ड अग्निकुमार जी ॥ दंडक नृपनो देश प्रजा ल्यो, जमशे जवह मजार जी ॥ आ० ॥ १४ ॥ चंडरौ ड आचारिज चलतां, मस्तक दीध प्रहार जी ॥ क्ष मा करंतां केवल पाम्यो, नव दीक्षित अणगार जी ॥ आ० ॥ १५ ॥ पांच वार ऋषिनें संताप्यो, आ णी मनमां द्वेष जी ॥ पंच जव सीम दह्यो नंद नावि क, क्रोध तणां फल देख जी ॥ आ० ॥ १६ ॥ साग रचंदनुं शीस प्रजाली, निशि नजसेन नरिंद जी ॥ समता जाव धरी सुरलोकें, पहुतो परमानंद जी ॥ ॥ आ० ॥ १७ ॥ चंदना गुरुणीयें घणुं निभ्रंठी, धिग् धिग् तुज अवतार जी ॥ मृगावती केवलसिरि पामी, एह क्षमा अविकार जी ॥ आ० ॥१८॥ सांब प्रद्युम्न कुंअर संताप्यो, कृष्ण द्वैपायन साह जी ॥ क्रोध क री तपनुं फल हार्यो, कीधो द्वारिकादाह जी ॥ ॥ आ० ॥ १९ ॥ जरतने मारण मूठी उपाडी, बा हूबल बलवंत जी ॥ उपशम रस मनमांहे आणी, संजम ले मतिमंत जी ॥ आ० ॥ २० ॥ काउसग मां चडियो अतिक्रोधें, प्रश्नचंड ऋषिराय जी ॥ सा तमी नरक तणां दल मेल्यां,कडुआं तेण कषाय जी॥ ॥ आ० ॥ २१ ॥ आहारमांहे क्रोधें ऋषि थूंक्यो, आण्यो अमृत जाव जी ॥ कूरगडुये केवल पाम्युं,

क्षमातणो परन्नाव जी ॥ आ० ॥ २२ ॥ पार्श्वनाथने
उपसर्ग कीधा, कमठ न्नवांतर धीठ जी ॥ नरक तिर्य
च तणां डुःख लाधां, क्रोध तणां फल दीठ जी ॥आ०॥
॥ २३ ॥ क्षमावंत दमदंत मुनीश्वर, वनमां रह्यो का
उसग्ग जी ॥ कौरव कटक हण्यो इटालें, त्रोड्या क
र्मना वर्ग जी ॥ आ० ॥ २४ ॥ सज्यापालक कानें तरु
उं, नाम्यो क्रोध उदीर जी ॥ वेहु कानें खीला ठोका
णा, नवि तूटा महावीर जी ॥ आ० ॥ २५ ॥
चार हत्यानो कारक हुंतो, दढप्रहार अतिरेक जी ॥
क्षमा करीने मुक्तें पहोतो,उपसर्ग सह्या अनेक जी ॥
॥ आ० ॥ २६ ॥ पहुरमांहे उपजतो हाख्यो, क्रो
धें केवल नाण जी ॥ देखो श्रीदमसार मुनीसर, सू
त्र गुण्यो उहाण जी ॥ आ० ॥ २७ ॥ सिंह गुफावा
सी रुषि कीधो, थूलिन्नद्र ऊपर कोप जी ॥ वेश्या
वचन गयो नेपालें, कीधो संजम लोप जी ॥ आ०॥
॥ २८ ॥ चंद्रावतंसक काउसग रहियो, क्षमा तणो
न्नंमार जी ॥ दासी तेल नख्यो निशि दीवो, सुरपदवी
लहे सार जी ॥ आ० ॥ २९ ॥ इम अनेक तख्या त्रि
न्नुवनमें, क्षमागुणें नवि जीव जी ॥ क्रोध करी कुग
तें ते पहोता, पाडंता मुख रीव जी ॥ आ० ॥३०॥
विष हलाहल कहीये विरुउं, ते मारे एक वार जी ॥
पण कषाय अनंती वेला, आपे मरण अपार जी ॥
॥ आ० ॥ ३१ ॥ क्रोध करंतां तप जप कीधां, न पडे
कांई ठाम जी ॥ आप तपे परने संतापे, क्रोधशुं के

हो काम जी ॥ आ० ॥ ३२ ॥ क्षमा करंतां खरच न लागे, नांगे क्रोड कलेश जी ॥ अरिहंत देव आरा धक थाये, व्यापे सुजस प्रदेश जी ॥ आ० ॥ ३३ ॥ नगरमांहे नागोर नगीनो, जिहां जिनवर प्रासाद जी ॥ श्रावक लोक वसे अति सुखिया, धर्मतणे पर साद जी ॥ आ० ॥ ३४ ॥ क्षमा छत्रीशी खांतें की धी, आतम पर उपगार जी ॥ सांजलतां श्रावक पण समज्या, उपशम धस्यो अपार जी ॥ आ० ॥ ३५ ॥ जुगप्रधान जिणचंद सुरीसर, सकलचंद तसु शिष्य जी ॥ समयसुंदर तसु शिष्य जणे इम, चतुर्विध सं घ जगीश जी ॥ आ० ॥ ३६ ॥ इति क्षमाछत्रीशी ॥

॥ अथ वैकुंठपंथ लिख्यते ॥

॥ वैकुंठ पंथ वीहामणो, दोहिलो छे घाट ॥ आ पणनो तिहां कोइ नही, जे देखाडे वाट ॥ १ ॥ मार्ग वहे रे उतावलो, उमे जीएरी खेह ॥ को ऽ केहने पडखे नही, छांमी जाए सनेह ॥ मा० ॥ २ ॥ एक चाल्या बीजा चालशे, त्रीजा चालण हार ॥ रात दिवस वहे वाटडी, पडखे नही ल गार ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्राणीने परियाणुं आवियुं, न गणे वार कुवार ॥ जश जरणी योगिणी, जो होय सामो काल ॥ मा० ॥ ४ ॥ जम रूपें बिहामणो, वाटें दीये रे मार ॥ कृत कमाई पूछशे, जीवनो किर तार ॥ मा० ॥ ५ ॥ लोजें वाह्यो जीवडो, करतो व हु पाप ॥ अंतरजामी आगलें, केम करीश जवा

प ॥ मा० ॥ ६ ॥ जे विण घडी सरतो नही, जीव न प्राण आधार ॥ ते विण वरस वही गयां, शुद्ध नहि समाचार ॥ मा० ॥ ७ ॥ आव्यो तुं जीव एकिलो, जातां नहि कोइ साथ ॥ पुण्य विना तुं प्राणिया, घसतो जाइश हाथ ॥ मा० ॥ ८ ॥ मग कोरी मांहे पेशीयें, तोहि न मेले मोत ॥ चेतणहारा चेतजो, जाशे गोफण गोला सोत ॥ मा० ॥ ए ॥ छत्रपति नृप केइ गया, सिद्ध साधक लाख ॥ क्रोड गमे करण आवव्या, अमर कोइ जीव दाख ॥ मा० ॥ ॥ १० ॥ आपण देखतां जग गयो, आपणें पण जाणा ॥ ऋद्धि मेली रहेशे नही, मोहोटा राय ने राणा ॥ ॥ मा० ॥ ११ ॥ दाहाडे पहोते आपणे, सहु कोई जाशे ॥ धर्म विना तुमें प्राणिया, पडशो नरकावासें ॥ मा० ॥ १२ ॥ संबल होय तो खाइयें, नही तो मरीयें भूख ॥ आपणडो तिहां कोइ नही, जेहने कहियें दुःख ॥ मा० ॥ १३ ॥ आगल हाट न वाणीया, न करे कोई उधार ॥ गांठे होय तो खाइयें, नहि कोइ देअणहार ॥ मा० ॥ १४ ॥ निश्चल रहेवुं छे नही, म करो मोडा मोड ॥ परस्त्री प्रीत न मांमियें, ए तो महोटी खोड ॥ मा० ॥ १५ ॥ वस्तु पीयारी मत लीयो, म करो तांत पियारी ॥ धर्म विना जग जीवने, होशे अंतें खुआरी ॥ मा० ॥ १६ ॥ कूड कपट तुमें मत करो, जीव राखजो ठाम ॥ जीवदया प्रतिपालजो, जो होय वैकुंठ काम ॥ मा० ॥ १७ ॥

मोह्लोटां मंदिर मालीयां, घर पण घणेरी आथ ॥ हीरा माणक अति घणा, पण कांइ नावे साथ ॥ मा० ॥ ॥ १८ ॥ कोडी गमे कुकर्म कियां, केतां कहुं तुम आ गल ॥ लेखे किणि परें पोह्लोंचीयें, प्रजुजीशुं कागल ॥ ॥ मा० ॥ १९ ॥ आगल वैतरणी वहे, तिहां कोइ न तारे ॥ धर्मी तरी पार पामशे, पापी जाशे पायालें ॥ ॥ मा० ॥ २० ॥ दीठे मारग चालीयें, न जरियें कूडी साख ॥ काल काया पडि जायशे, मशाणें उमशे रा ख ॥ मा० ॥ २१ ॥ जतन करंतां जायशे, उमी जा शे सास ॥ माटी ते माटी थायशे, ऊपर ऊगशे घास ॥ ॥ मा० ॥ २२ ॥ माय बाप ए केह्नां, केह्नो परिवार ॥ पुत्र पौत्रादिक केह्नां, केह्नी घरनार ॥ मा० ॥ २३ ॥ कोइ म करशो गारवो, धन जोबन केरो ॥ अंतें ऊग ख्यो कोइ नही, आपणथी जलेरो ॥ मा० ॥ २४ ॥ मह्लारुं मह्लारुं करतो थको, पड्यो माया ने मोह ॥ लो चन बे मीचाणडां, तव घणी अनेराइ होय ॥ मा० ॥ ॥ २५ ॥ जे जिहां ते तिहां रह्युं, चाल्यो एकलो आ प ॥ साथें संग ते बे थयां, एक पुण्य नें पाप ॥ मा० ॥ ॥ २६ ॥ सुगुरु सुसाधु वंदियें, मंत्र मह्लोटो नवकार ॥ देव अरिहंतने पूजीयें, जेम तरीयें संसार ॥ मा० ॥ ॥ २७ ॥ शालिजइ सुख जोगव्यां, पात्र तणे अधि कार ॥ खीर खांम घृत वह्लोरावीयां, पोह्लोता मुक्ति मजा र ॥ मा० ॥ २८ ॥ तस घर घोडा हाथीया, राजा दी ए बहु मान ॥ दान दया करी दीजियें, जावें साधु

कार चित्त न आणीयें, केह्नें गाल न दीजें ॥ काम क्रोध लोज्ञ मारियें, तो अमर फल लीजें ॥ मा० ॥ ॥ ५३ ॥ करत कमाई जोडियें, केह्नें दोष न दीजें ॥ विषनां फल जो वावियें, तो अमृत फल किम लीजें ॥ ॥ मा० ॥ ५४ ॥ छति रुद्धें खरचे नह्ी, ते पण मूरख मह्ोटा ॥ गालो आव्यो जूलो जायशे, आगल पडशें खोटा ॥ मा० ॥ ५५ ॥ चोराशी लख जीवा जोनि मां, फिरिया वार अनंत ॥ मुनि जीम जणे अरिह्ंत जपो, जिम पामो जव अंत ॥ मा० ॥ ५६ ॥ संवत शोल नवाणुयें, बीज ने बुधवार ॥ आसोमासें गाश्यो, ढीकारी नगरी मऊार ॥ मा० ॥ ५७ ॥ जीम जणे सहु सांजलो, मत संचो दाम ॥ जिमणे ह्ाथे वावरो, तो सह्ि आवशे काम ॥ मा० ॥ ५८ ॥ जीम जणे सहु सांजलो, नवि कीजें पाप ॥ ठंगो अधिको जे में कह्यो, ते तमें करजो माफ ॥ मा० ॥ ५९ ॥

॥ अथ माह्ावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मुने ते दिननो विशवास ठे, प्रज्ञुजी तुमारो ॥ साह्ेबजी तुमारो ॥ मु० ॥ दास तुमारो वीनवे, प्रज्ञु पार उतारो ॥ मु० ॥ १ ॥ चोशठ इंद्रज था पिया, इंद्रासन आप्युं ॥ राज रुद्धि सुख संपदा, समकित लश् थाप्युं ॥ मु० ॥ २ ॥ जक्त जली परें उद्धस्यो, ते तो शेठ सुदर्शन ॥ शूलि जांजी साह्िबा, कीधुं सिंहासन ॥ मु० ॥ ३ ॥ चारित्रथी चूकी करी, गणिका घर वसिया ॥ आषाढ नंदिषेण उद्धस्या, तु

में भक्तिना रसिया ॥ मु० ॥ ४ ॥ बारे व्रतमां एको
नही, कांइ नियम न लीधुं ॥ श्रेणिक भक्ति जाणी
करी, तेहने निज पद दीधुं ॥ मु० ॥ ५ ॥ चंदनबा
ला बारणें, प्रभु चालीने आव्या ॥ बेडी भांजी नेउर
थयां, सोल शणगार पहेराव्या ॥ मु० ॥ ६ ॥ अ
ग्निज्वाला अंगें वसे, विषधर विकरालो ॥ चरणे म
स्यो चंमकोशीयो, उद्धस्यो नाग कालो ॥ मु० ॥ ७ ॥
भक्त भला बुरा उद्धस्या, तेतो शास्त्र वखाणे ॥ नाथ
निरंजन लहेरमां, रूपचंद रस माणे ॥ मु० ॥ ८ ॥

॥ अथ शंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ राग प्रभाती ॥ कडखो ॥ पास शंखेश्वरा सार कर
सेवका, देव कां एवडी वार लागे ॥ कोडि कर जो
डि दरबार आगें खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मागे ॥
पा० ॥ १ ॥ जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, एम
शुं आज जिनराज कंघे ॥ महोटा दानेश्वरी तेहनें
दाखियें, दान दिये जेह जग काल मूंघे ॥ पा० ॥२॥
भीड पडि जादवा जोर लागी जरा, तिणे समे त्रीक
में तुऊ संभाख्यो ॥ प्रगटि पातालथी पलकमां तें प्र
भु, भक्तजन तेहनो भय निवाख्यो ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रगट
था पासजी मेलि पडदो परो, मोड असुराणने आप
ठोडो ॥ मुऊ महीराण मंजूषमां पेसिने, खलकना
नाथजी ! बंध खोलो ॥ पा० ॥ ४ ॥ आदि अनादि
अरिहंत तुं एक छे, दीनदयाल छे कोण दूजो ? ॥

कार चित्त न आणीयें, केह्नें गाल न दीजें ॥ काम क्रोध लोज्ञ मारियें, तो अमर फल लीजें ॥ मा० ॥ ॥ ५३ ॥ करत कमाई जोडियें, केह्नें दोष न दीजें ॥ विषनां फल जो वावियें, तो अमृत फल किम लीजें ॥ ॥ मा० ॥ ५४ ॥ छति ऋद्धें खरचे नही, ते पण मूरख मह्लोटा ॥ गलो आव्यो जूलो जायशे, आगल पडशे खोटा ॥ मा० ॥ ५५ ॥ चोराशी लख जीवा जोनि मां, फिरिया वार अनंत ॥ मुनि जीम जणे अरिहंत जपो, जिम पामो जव अंत ॥ मा० ॥ ५६ ॥ संवत शोल नवाणुयें, बीज ने बुधवार ॥ आसोमासें गाश्यो, ढीकारी नगरी मजार ॥ मा० ॥ ५७ ॥ जीम जणे सहु सांजलो, मत संचो दाम ॥ जिमणे हाथे वावरो, तो सहि आवशे काम ॥ मा० ॥ ५८ ॥ जीम जणे सहु सांजलो, नवि कीजें पाप ॥ उंडो अधिको जे में कह्यो, ते तमें करजो माफ ॥ मा० ॥ ५९ ॥

॥ अथ माहावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मुने ते दिननो विशवास छे, प्रजुजी तुमारो ॥ साहेबजी तुमारो ॥ मु० ॥ दास तुमारो वीनवे, प्रजु पार उतारो ॥ मु० ॥ १ ॥ चोशठ इंड्ज था पिया, इंड्रासन आप्युं ॥ राज ऋद्धि सुख संपदा, स मकित लइ थाप्युं ॥ मु० ॥ २ ॥ जक्त जली परें उ धर्यो, तें तो शेठ सुदर्शन ॥ शूलि जांजी साहिबा, कीधुं सिंहासन ॥ मु० ॥ ३ ॥ चारित्रथी चूकी करी, गणिका घर वसिया ॥ आषाढ नंदिषेण उद्धर्या, तु

में नक्तिना रसिया ॥ मु० ॥ ४ ॥ बारे व्रतमां एको नही, कांइ नियम न लीधुं ॥ श्रेणिक नक्ति जाणी करी, तेहने निज पद दीधुं ॥ मु० ॥ ५ ॥ चंदनवा ला वारणें, प्रनु चालीने आव्या ॥ बेडी नांजी नेउर थयां, सोल शणगार पहेराव्या ॥ मु० ॥ ६ ॥ अ ग्निज्वाला अंगें वसे, विषधर विकरालो ॥ चरणे म स्यो चंमकोशीयो, उध्स्यो नाग कालो ॥ मु० ॥ ७ ॥ नक्त नला बुरा उध्स्या, तेतो शास्त्र वखाणे ॥ नाथ निरंजन लहेरमां, रूपचंद रस माणे ॥ मु० ॥ ८ ॥

॥ अथ शंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ राग प्रनाती ॥ कडखो ॥ पास शंखेश्वरा सार कर सेवका, देव कां एवडी वार लागे ॥ कोडि कर जो डि दरबार आगें खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मागे ॥ पा० ॥ १ ॥ जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज कंघे ॥ महोटा दानेश्वरी तेहने दाखियें, दान दिये जेह जग काल मूंघे ॥ पा० ॥२॥ नीड पडि जादवा जोर लागी जरा, तिणे समे त्रीक में तुऊ संनाख्यो ॥ प्रगटि पातालथी पलकमां तें प्र नु, नक्तजन तेहनो नय निवाख्यो ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रगट था पासजी मेलि पडदो परो, मोड असुराणने आप ठोडो ॥ मुऊ महीराण मंजूषमां पेसिने, खलकना नाथजी ! बंध खोलो ॥ पा० ॥ ४ ॥ आदि अनादि अरिहंत तुं एक ठे, दीनदयाल ठे कोण दूजो ?

उदयरतन कहे प्रगट प्रभुपासजी, पामी भयभंजनो एह पूजो ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीनेमनाथ स्तवनं ॥

॥ नेम मिले तो वातां कीजीयें,वो प्यारो नेम मिले तो वातां कीजीयें रे ॥ ए आंकणी ॥ में हुं प्यारी ने खिजम तगारी, प्रेमका प्याला पीजीयें रे ॥ वोप्या० ॥ में हुं केतकी तुम होजो भमरा, फरि फरि वासना लीजी यें रे ॥ वोप्या० ॥ १ ॥ में हुं धरणी तुम होजो मेहु ला, कबहीक मिलनां कीजीयें रे ॥ वोप्या० ॥ रा जुल नेम दोनुं सुगति सीधाये, रूपचंद पद दीजीयें रे ॥ वोप्या० ॥ २ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ निर्मल होइ भज ले प्रभु प्यारे, सब रे संसारसें है जिन न्यारे ॥ निर्मल० ॥ १ ॥ पार्श्वप्रभुजीको दर्शन कर ले, भवजल पार उतारण हारे ॥ निर्मल० ॥ २ ॥ जाके अविचल ज्योति विराजे, अकल अगोचर रूप उदारे ॥ निर्मल० ॥ ३ ॥ वाके गुनको पार न लहि यें, कहि न शके कोइ जग आधारे ॥ निर्मल० ॥ ४ ॥ वाके भजन सुख पावत प्राणी, शुद्ध क्षमा कल्याण उदारे ॥ निर्मल० ॥ ५ ॥ इति पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ अथ प्रभातीयुं ॥

॥ आतमतत्त्व विचारो रे जोगी, आतमतत्त्व विचा रो रे ॥ ए आंकणी ॥ थावर जंगम व्यापारज होवें, करुणा दृष्टि तिहां कारी रे ॥ वचन विशासको छत्र

न फरसे, सत्यसिंहासन धारी रे ॥ आतम० ॥ १ ॥ कोडी कनक रतन नहि लेवे, घर घर भिक्षा हारी रे ॥ कंदर्पदेवकुं जेर कीयो है, त्रिया जोग निवारी रे ॥ आत० ॥ २ ॥ स्नान मज्जन अरु परिग्रह त्यागी, वैरी मित्र न यारी रे ॥ परमहंसकी पदवी लीनी, जाउं जोगीपर वारी रे ॥ आतम० ॥ ३ ॥ महीमंडलमें विचरे जोगी, देहदिशा वीसारी रे ॥ रूपचंद चरणे शीस नामी, तेरी भक्ति न्यारी रे ॥ आ० ॥४॥

॥ अथ संप्रतिराजानुं स्तवन ॥ राग आशावरी ॥

॥ धन धन संप्रति साचो राजा, जेणे कीधां उत्तम काम रे ॥ सवा लाख प्रासाद करावी, कलियुग राख्युं नाम रे ॥ धन० ॥ १ ॥ वीर संवत्सर संवत बीजे, तेरोत्तरें रविवार रे ॥ माहाशुदि आठमी बिंब भरावी, सफल कियो अवतार रे ॥ धन० ॥ २ ॥ श्रीपद्मप्रभ मूरति थापी, सकल तीरथ शणगार रे ॥ कलियुग कल्पतरु ए प्रगट्यो, वंछित फल दातार रे ॥ धन० ॥ ॥ ३ ॥ उपासरा बे हजार कराव्या, दानशाला शय सात रे ॥ धर्म तणा आधार आरोपी, त्रिजग हुउं विख्यात रे ॥ धन० ॥ ४ ॥ सवा लाख प्रासाद कराव्या, छत्रीश सहस उद्धार रे ॥ सवा कोडी संख्यायें प्रतिमा, धातु पंचाणुं हजार रे॥ धन० ॥ ५ ॥ एक प्रासाद नवो नित नीपजे, तो मुखशुद्धीज होय रे ॥ एह अभिग्रह संप्रति कीधो, उत्तम करणी जोय रे ॥ ॥ धन० ॥ ६ ॥ आर्य सुहस्ति गुरु उपदेशे, श्रावकनो

आचार रे ॥ समकित मूल बार व्रत पाली, कीधो जग उपगार रे ॥ धन० ॥ ७ ॥ जिनशासन उद्योत करी नें, पाली त्रण खंम राज रे ॥ ए संसार असार जाणी नें, साध्यां आतम काज रे ॥ धन० ॥ ८ ॥ गंगाणी न यरीमां प्रगट्या, श्रीपद्मप्रज देव रे ॥ विबुध कानजी शिष्य कनकने, देहो तुम पयसेव रे ॥ धन० ॥ ए ॥

॥ पद ठुमरीमां गीत ॥

॥ सहसफणा रे मोरा साहेबा, तोरी सामरी सुरत पर वारी जाउं रे ॥ सह० ॥ तन मन लगन लगो इ क तोशुं, हांरे में तो देव अवर नही ध्याउं रे॥स०॥१॥ सफल आजकी घडी हे मेरी, हांरे में तो देखी दरश सुख पाउं रे ॥ सह० ॥ २ ॥ वदन कमल छबि देखत सुंद र, हांरे हुं तो रोम रोम उलसाउं रे ॥ सह० ॥ ३ ॥ तुम गुनको कछु पार न आवे, हांरे हुं तो उपमा कहा बताउं रे ॥ सह० ॥ ४ ॥ कीर्त्तिसागर कहे जव जव तोरी, हांरे में तो मोज महिर नित पाउं रे ॥स०॥५॥

॥ अथ पद राग षट ॥

॥ स्वारथकी सब हे रे सगाइ, कुण माता कुण बेनड जाइ ॥ स्वा० ॥ १ ॥ स्वारथ जोजन जुक्त सगा इ, स्वारथ विन कोइ पाणि न पाइ ॥ स्वा० ॥ २ ॥ स्वा रथ मा बाप शेठ वडाइ॥ स्वारथ विन नहु होत स हाइ ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ स्वारथ नारी दासी कहाइ; स्वा रथ विन लाठी ले धाइ ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ स्वारथ चेला गुरु गुरु जाई, स्वारथ विन नित होत लराइ ॥ स्वा०

॥ ४ ॥ समयसुंदर कहे सुणो रे लोकाइ, स्वारथ हे नलि परम सगाइ ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद राग पट ॥

॥ सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ, वेरन निद्रा कहांसें रे आइ ॥ सो० ॥ निद्रा कहे में तो वाली रे नोली, बडे बडे मुनिजनकूं नाखुं रे ढोली ॥ सो० ॥ १ ॥ निद्रा कहे में तो जमकी दासी, एक हाथे मूकी बीजे हाथें फांसी ॥ सो० ॥ २ ॥ समयसुंदर कहे सुनो नाइ व नीया, आप मूए सारी रुब गइ डुनीयां ॥ सो०॥३॥

॥ अथ पंचपरमेष्ठी आरति ॥

॥ इहविध मंगल आरति कीजें, पंच परमपद नजि सुख लीजें ॥ इह० ॥ पहेली आरति श्रीजिनरायजा, नविजन पार उतार जीहाजा ॥ इह० ॥ १ ॥ बीजी आरति सिद्धस्वरूपी, ध्याने उपजे परम रस कूपी ॥ इह० ॥ २ ॥ त्रीजी आरति सूरि मुणिंदा, जनम जनम डुःख दूर हरंदा ॥ इह० ॥ ३ ॥ चोथी आरति श्रीउवझाया, दरिसण देखत पाप नसाया ॥ इह० ॥ ४ ॥ पांचमि आरति साधु वताइ, मोह मान ममताकुं हटाइ ॥ इह० ॥ ५ ॥ बठी आरति हे सुखदाइ, कुमति विदारण शिव अधिकाइ ॥ इह० ॥ ६ ॥ सातमि आरति श्रीजिनवानी, ध्यान धरत मुगती सुखदानी ॥ इह० ॥ ७ ॥ इति आरति ॥

॥ अथ नेमजीना साते वार लिख्यते ॥

॥ सखि नमीये ते नेम जिनराज, गढ गिरनारे

रे ॥ राणी राजुल जूए वाट, साते वारें रे ॥ १ ॥ सखि आदित्यें अरिहंत,अम घर आवो रे ॥ म्हारा श्याम सलूणा नेम, दिलमां लावो रे ॥ २ ॥ सखि सोमें ते शुभ शणगार, सजियें अंगें रे ॥ मारा जगजीवन जिनराज, रमीयें रंगें रे ॥ ३ ॥ सखि मंगल शुभदिन आज, मंगल चारो रे ॥ म्हारो नवभव केरो नेह, स्वामी संभारो रे ॥ ४ ॥ सखि बुधें ते घरे आवो नाथ, बुद्धिना दरिया रे ॥ तमें एक सहस्र ने आठ, लखणें भरिया रे ॥ ५ ॥ सखि गुरु गिरुवा गुणवंत, शिवा देवीना रे ॥ तमें समुद्रविजय कुलचंद, नेम नगीना रे ॥ ६ ॥ सखि शुक्रें सहसावन्न, चालो सजनी रे ॥ म्हारे प्रगट थयो रे प्रभात, वीती रजनी रे ॥ ७ ॥ सखि शनियें ते संयम लीध, प्रीत वधारी रे ॥ वेहु पोहोतां मुक्ति मकार, नर ने नारी रे ॥ ८ ॥ कहे मूलचंद मन रंग, आशा फलशे रे ॥ जे उज्ज्वल पाले शील, भवोदधि तरशे रे ॥ ९ ॥ इतिसं० ॥

॥ अथ पखीखामणा प्रारंभ ॥

॥ अरिहंतजीने खमावीयें रे, जेहना गुण छे वार ॥ खमो भवि खामणां रे ॥ १ ॥ सिद्ध जीवने खमावीयें रे, गुण आठेएं मनोहार ॥ खमो भवि० ॥ २ ॥ आचारजने खमावीयें रे, जेहना गुण छत्रीश ॥ खमो भवि०॥३ ॥ उपाध्यायने खमावीयें रे, जेहना गुण पचवीश ॥ खमो भवि० ॥ ४ ॥ साधु सरवे खमावीयें रे, शोभे गुण सत्तावीश ॥ खमो भवि०॥ ५॥ आव

क श्राविकानें खमावीयें रे, जेह्ना गुण एकवीश ॥ खमो नवि० ॥ ६ ॥ आठम पाखी खमावीयें रे, चोमासुं त्रण वार ॥ खमो नवि० ॥ ७ ॥ संवत्सरी शुद्ध खमावीयें रे, खमावीयें वारं वार ॥ खमो नवि० ॥ ८ ॥ रूवडो संघ मनावीयें रे, मनावीयें वारं वार ॥ खमो नवि० ॥ ९ ॥ मुक्तिसागर सूरि खमावीयें रे, अचलगछ शणगार ॥ खमो नवि० ॥ १० ॥ चोमासी गुरुने खमावीयें रे, वांचे सूत्र सिद्धांत ॥ खमो नवि० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीजीवविचारनुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ ढाल ॥ श्रीसरसती जी, वरसति वचन विलास रे ॥ थुणशुं त्रिभुवन जी, तारण श्रीजिन पास रे ॥ सुणो समरथ जी, सुंदर श्रीजिन देव रे ॥ मुऊ देजो जी, भव भव तुम पयसेव रे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ तुऊ सेव पाखे सहिज भमियो, तुं निगमियो जिनवरू ॥ छक्कायमांहे जीव सहियो, छेदन भेदन आकरूं ॥ उत्कृष्ट आयु अवगाहना जे, ईणे जीवे जोगवी ॥ लाख चोराशी जीवा योनि, तेह पण इम भोगवी ॥ २ ॥ ढाल ॥ मणि स्फटिक जी, हिंगलो रयण प्रवाल रे ॥ पारो अबरख जी, गेरु खडी हरियाल रे ॥ उस सुरमो जी, माटी पाषाण सात धात रे ॥ लूणादिक जी, पृथिवी भेद बहु जात रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ अनेक भेद वलि पाणी भणीयें, कुप सरोवर धूअरू ॥ उसा हिम घणोदधि करा कहीये, समुद्र अनेक पाणी खरू ॥ अंगाल जाल मुम्मूर विजली, उलकापात

रें ॥ राणी राजुल जूए वाट, साते वारें रे ॥ १ ॥ स
खि आदित्यें अरिहंत,अम घर आवो रे ॥ मद्दारा श्या
म सलूणा नेम, दिलमां नावो रे ॥ २ ॥ सखि सो
में ते शुन्न शणगार, सजियें अंगें रे ॥ मारा जगजी
वन जिनराज, रमीयें रंगें रे ॥ ३ ॥ सखि मंगल
शुन्नदिन आज, मंगल चारो रे॥ मद्दारो नवन्नव केरो
नेह, स्वामी संन्नारो रे ॥ ४ ॥ सखि बुधें ते घरे आवो
नाथ, बुद्धिना दरिया रे॥ तमें एक सहस्र ने आठ, ल
खणें नरिया रे ॥ ५ ॥ सखि गुरु गिरुवा गुणवंत, शि
वा देवीना रे ॥ तमें समुद्रविजय कुलचंद, नेम न
गीना रे ॥ ६ ॥ सखि शुक्रें सहसावन्न, चालो सज
नी रे ॥ मद्दारे प्रगट थयो रे प्रन्नात, वीती रजनी
रे ॥ ७ ॥ सखि शनियें ते संयम लीध, प्रीत वधारी
रे ॥ वेहु पोहोतां मुक्ति मकार, नर ने नारी रे ॥ ८ ॥
कहे मूलचंद मन रंग, आशा फलशे रे ॥ जे उज्ज्व
ल पाले शील, नवोदधि तरशे रे ॥ ए ॥ इतिसं० ॥

॥ अथ परकीखामणा प्रारंन्न ॥

॥ अरिहंतजीने खमावीयें रे, जेहना गुण ठे वा
र ॥ खमो नवि खामणां रे ॥ १ ॥ सिद्ध जीवने खमावी
यें रे, गुण आठएं मनोहार ॥ खमो नवि० ॥ २ ॥
आचारजने खमावीयें रे, जेहना गुण छत्रीश ॥ ख
मो नवि०॥३ ॥ उपाध्यायने खमावीयें रे, जेहना गुण
पचवीश ॥ खमो नवि० ॥ ४ ॥ साधु सरवे खमावी
यें रे, शोन्ने गुण सत्तावीश ॥ खमो नवि०॥ ५॥ श्राव

क श्राविकानें खमावीयें रे, जेह्ना गुण एकवीश ॥ खमो नवि० ॥ ६ ॥ आतम पाखी खमावीयें रे, चोमासुं त्रण वार ॥ खमो नवि० ॥ ७ ॥ संवत्सरी शुद्ध खमावीयें रे, खमावीयें वारं वार ॥ खमो नवि० ॥ ८ ॥ रूवडो संघ मनावीयें रे, मनावीयें वारं वार ॥ खमो नवि० ॥ ए ॥ मुक्तिसागर सूरि खमावीयें रे, अचलगच्छ शणगार ॥ खमो नवि० ॥ १० ॥ चोमासी गुरुने खमावीयें रे, वांचे सूत्र सिद्धांत ॥ खमो नवि० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीजीवविचारनुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ ढाल ॥ श्रीसरसती जी, वरसति वचन विलास रे ॥ थुणशुं त्रिभुवन जी, तारण श्रीजिन पास रे ॥ सुणो समरथ जी, सुंदर श्रीजिन देव रे ॥ मुज देजो जी, भव भव तुम पयसेव रे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ तुज सेव पाखे सहिज भमियो, तुं निगमियो जिनवरू ॥ ठकायमांहे जीव सहियो, छेदन भेदन आकरूं ॥ उत्कृष्ट आयु अवगाहना जे, ईणे जीवें जोगवी ॥ लाख चोराशी जीवा योनि, तेह पण इम भोगवी ॥ २ ॥ ढाल ॥ मणि स्फटिक जी, हिंगलो रयण प्रवाल रे ॥ पारो अबरख जी, गेरु खडी हरियाल रे ॥ उस सुरमो जी, माटी पापाण सात धात रे ॥ लूणादिक जी, पृथिवी भेद बहु जात रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ अनेक भेद वलि पाणी भणीये, कुप सरोवर धूअरू ॥ उसा हिम घणोदधि करा कहीयें, समुद्र अनेक पाणी खरू ॥ अंगाल जाल मुम्मूर विजली, उलकापात

कणा ॥ सिद्धांतमांहे ले विशेषें, नेद अनेक अग्नि त
णा ॥ ४ ॥ ढाल ॥ एक वायरो जी, हलुउ हलुउ वा
य रे ॥ गुंजारव जी,करतो चिहुं दिशि धाय रे ॥ झाडे उ
त्कली जी,वली वंटोलीयो एक रे ॥ घनवातें जी,वायु
नेद अनेक रे ॥ ५ ॥त्रुटक ॥ इम दोय नेद वनस्प
ति केरा, साधारण प्रत्येक तरू ॥ कंद कोमल फल
अंकूरा, फूल सेवाल सेखरू ॥ अनेक नेद साधारण
सुणीयें, लक्षण तस शास्त्रें सही ॥ एहथी जे होय वि
परीत, तेह प्रत्येक वनस्पति कही ॥६॥ ढाल ॥ पृथिवी
पाणी जी,तेऊ वाउ काय रे ॥ वणसई पांचमी जी, था
वरकाय कहेवाय रे ॥ विकलेंडी जी, नारकी तिर्यंच
मानवी ॥ वली देवता जी, उठी त्रसकाय पालवी
॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ पहेली पृथिवीकाय आयु; वरस
सहस बावीश ए ॥ सात सहस अपकाय नणीयें, अ
ग्नि त्रण दिन दीस ए ॥ वरस सहस त्रण वायु सुणी
यें, वणसई दस सहस जाणीयें ॥ नारय देव विण
जघन्य आयु, अंतर मुहूर्त्त प्रमाणीयें ॥८॥ ढाल॥अंगु
लतणो जी,नाग असंख्यातमो नणुं॥ स्वानाविक जी,
जघन्य हुवे सहुनो तनु ॥ चार थावर जी,गुरु लघु स
म तनु जोय रे ॥ वनस्पति जी,सहस योजन जाजी
होय रे ॥ ए ॥ त्रुटक ॥ इम होय सम्मूर्छिम मनुष्य
साधारण, सूक्ष्म जेह निगोद ए ॥ तस आयु अंतर
मुहूर्त्त होवे,चौदराज अनेद ए ॥ पांच थावर कहियें
एक इंडी, शास्त्रें नेद तस ले घणा ॥ एम कहे कवि

यण सुणो नवियण, नाम मात्रज ए नण्यां ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ नव साढा सत्तर कह्या, श्वासोश्वास मका र ॥ एकेंडी नव नोगवी, वलतो विगल विचार ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ बे कर जोडी ताम रे, नश वीनवे ॥

॥ ए देशी ॥

॥ शंख ठीप कोमा सरमीयां रे, मेहर थापना सा र ॥ जलो पूरानें अलसीयां रे, ए बेइंडी विचारो रें ॥ धन जिनवयणडां, उतारे नव पारो रें, ते ज गमां वडा ॥ ए आंकणी ॥ १२ ॥ कान खजूरा माकडि जूआ रे, गद्दहीयां धीमेल ॥ कीडी गिंगोडा कातरा रे, गोकीड मकोडा चूडेल रें ॥ धन० ॥ १३ ॥ सावा जूवा धान कीडला रे, ईली अने इंडगोप ॥ उद्देही ने वली कुंथुआ रे, म करो तेंडीनो लोप रे ॥ धन० ॥ ॥ १४ ॥ वीठी कसारी खडमाकडी रे, नमरा नमरीने तीड ॥ माखी मसा मंसा पतगीया रे, टाली चौरिं डीनी पीड रे ॥ धन० ॥ १५ ॥ बेंडी वरसज बारनुं रे, हवे तेंडी प्रकाश ॥ दिवस उगणपच्चाशनो रे, चो रिडी पट् मास रे ॥ धन० ॥ १६ ॥ शंख प्रमुख जे बेइंडी रे, तस तनु जोयण बार ॥ कान खजूरा गाउ त्रणनो रे, नमर होये गाउ चार रे ॥ धन० ॥ १७ ॥ बेंडी तेंडी चौरिडी रे, ए विगलेंडी रे नाम ॥ कहे कवियण तुमें सांनलो रे, हवे पंचेंडी अनिराम रे ॥ ध० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥ नहि विवेक विकल पणे, नही तस तत्त्व वि चार ॥ नव नवांतरें नोगव्या, उपनो नरक [illegible] ॥ १९ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जंबूद्दिप मझार रे ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नप्रभा पहेली जेद रे, सागर एकनुं ॥ एक त्रीश हाथ ठ आंगुला ए ॥ शक्र प्रभा बीजी होय रे, त्रण सागर तिहां ॥ हाथ बाशठ बार आंगुला ए ॥२०॥ वालुप्रभा पुहवी त्रीजी रे, सात सागर आयु ॥ एकत्रीश धनुष एक हाथनुं ए ॥ पंकप्रभा चोथी नाम रे, दश सागर सही ॥ बाशठ साढा धनुष तनु ए ॥ २१ ॥ पंचमी धूमप्रभायें रे, सत्तर सागर सुणो ॥ धनुष सवासो जाणीयें ए ॥ तमप्रभा बही जाणो रे, बावीश सागर ॥ धनुष अढीशें नाणीयें ए ॥ २२ ॥ तम तमा सातमी नाम रे, तेत्रीश सागर ॥ धनुष पांचशें देह रचे ए ॥ पांच कोडी अडशठ लाख रे, सहस नवाणुं ए ॥ रोगें नारकी नित्य पचे ए ॥२३॥ परमाधामी पचावे रे, वली दश वेदना ॥ कीधां कर्म ते नोगवे ए ॥ राज राज प्रत्यें पोहवी रे, इम सात राजनी ॥ सातमी पृथिवी योगवी ए ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥ सात प्रकारें नारकी,बोल्यो तास विचार ॥ जलचर थलचर खेचरू, तिर्यंच त्रण्य प्रकार ॥ २५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ त्रिपदीनी देशी ॥

॥ उरपुरी भुजपुरी गर्भज थाय, गर्भ समूर्छिम मच्छ कहेवाय, वरस पूरव कोडी आय हो ॥ नविका ॥ वरस पूर्वकोडी आय ॥ २६ ॥ सहस योजन तस काया दीसे, भुजपुरिकोश पृथक्त वली कहीसे, जिन वचनें चित्त हीसे हो ॥ नवि० ॥ जि० ॥ २७ ॥

त्रेपन सहस सम्मूर्छिम व्याल, भुजपुरि सर्प सहस बायाल, योजन पृथक्त तनु भाल हो ॥ नवि० ॥ ॥ यो० ॥ २८ ॥ गर्भ तिर्यंच चतुष्पदनी जात, त्रण पल्योपम आयु विख्यात, काया ७ कोश सुणो भ्रात हो ॥ नवि० ॥ काया० ॥ २९ ॥ चतुष्पद संमूर्छिम कहियें जास, आयु सहस चोरासी वास ॥ कोश पृथक्त तनु तास हो ॥ नवि० ॥ कोश० ॥ ३० ॥ पंखी गर्भज आयुनो भाग, पल्योपम असंख्यातमो भाग, धनुष पृथक्त तनुलाग हो ॥ नवि० ॥ धनु० ॥ ॥ ३१ ॥ संमूर्छिम पंखी बहुंतेर सहस, ए पहेले आरे कहेश, चउपद विवरी लहेश हो ॥ नवि० ॥ च० ॥ ॥ ३२ ॥ जेणे आरे जे मानव आयु धार, तेह तणा भाग कीजें उदार, भाग चोथे अश्व सार हो ॥ नवि० ॥ भाग० ॥ ३३ ॥ अज आयु भाग आठमे वखाणुं, गाय भेंप ने उंट खरादिक जाणुं, पांचमे भाग प्रमाणुं हो ॥ नवि० ॥ पांच० ॥ ३४ ॥ श्वानादिक भाग दशमे कहीयें, हस्ति आयु मानव पर्दे लहीयें, जिन आणा शिर वहीयें हो ॥ नवि० ॥ जिन० ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥ पशुअपणे परवश पड्यो, पाम्यो दुःख अपार ॥ कर्म केतां तिहां निर्झरी, धरीयो मनुज अवतार ॥ ३६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ कपूर होवे अतिऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ चार कोडाकोडी सागरू रे, सुसम सुसमा नाम ॥ त्रण्य पल्योपम आयुखुं रे, त्रण गाउ अभिराम रे ॥

प्राणी मानव नव अवतार, नरीयें सुकृत नंमार रे ॥ प्राणी मान० ॥ ३७ ॥ ए आंकणी ॥ सागर कोडा कोडी त्रण्यनो रे, सुसम बीजो जेद ॥ दोय पल्योपम आउखुं रे, युगल गाउ दोय देह रे ॥ प्राणी मान० ॥ ३८ ॥ त्रीजो सुसम डुसमा रे, सागर कोडा कोडी दोय ॥ एक पल्योपम युगलनो रे, कोश काया एक होय रे ॥ प्राणी मान० ॥ ३९ ॥ पेहेले तुअर बीजे बोर समो रे, त्रीजे आमलधार ॥ अठम उठ एकांतरो रे, सुर तरु पूरे आहार रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४० ॥ डुसम सुसम कोडा कोडी नो रे, सहस बेंआलीश कण ॥ पूर्व कोडी वरस मा नथी रे, पांचशें धनुष प्रमाण रे ॥ प्राणी मान० ॥ ॥ ४१ ॥ वरस सहस एकवीशनो रे, डुसमा कलियुग नाथ ॥ एकशो वीश वर्ष आउखुं रे, मानव काया सात हाथ रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४२ ॥ उठो सह स एकवीशनो रे, डुसमाडुसम अपार ॥ वीश वरस दोय हाथना रे, मत्स्याहारी नरनार रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४३ ॥ ए ठ आरे अवसर्प्पिणी रे, उत्सर्प्पिणी वि परीत जाण ॥ कालचक्र ए दोय मली रे, बार आरे प्रमाण रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४४ ॥ पांच नरत पांच ऐरवतें रे. तिहां सदा सरिखो काल ॥ पांचविदेह परं परा रे, चोथो आरो सुविशाल रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥ दश दृष्टांतें दोहिलो, मानवनो अवता र ॥ गुनन्नावें सुकृत पणे, उपनो देव मझार ॥ ४६ ॥

॥ ढाल ६ठी ॥ नंदनकूं त्रिसला हुलरावे ॥ ए देशी ॥
॥ दश प्रकारें नवनपति कहीयें, व्यंतर आठ प्रकारो रे ॥ ज्योतिषी पांच प्रकारें सुणजो, दोय विमानिक सारो रे ॥ दश० ॥ ४७ ॥ असुर कुमार साधिक एक सागर, सात हाथ तस काय रे ॥ देशें ऊणा दोय पल्योपम, नव निकाय कहेवाय रे ॥ दश० ॥ ॥ ४८ ॥ लाख सहस वरस एक पल्योपम, चंद सूर्य विचार रे ॥ व्यंतर आयु एक पल्योपम, तनु सम असुर कुमार रे ॥ दश० ॥ ४९ ॥ नारकी नवन पति ने व्यतर,दश सहस वरस जघन्य रे ॥ ज्योतिषी पल्योपम अड नागें, पल्योपम विमान रे ॥ दश० ॥ ॥ ५० ॥ युग्म सौधर्मने ईशानेंद्र, इहांथी होय एक राजे रे ॥ सागर वे वीजे वे जाजा, सात हाथ विराजे रे ॥ दश० ॥ ५१ ॥ सनतकुमार जुगम माहेंद्रे, दोय राज हवे जाणो रे ॥ त्रीजे सात चोथे सात जाजा, ६ हाथ काया प्रमाणो रे ॥ दश० ॥ ॥ ५२ ॥ पांचमे ब्रह्म आयु दस सागर, लांतक ठ्ठे चौद रे ॥ पांच हाथ तस काया कहीयें, त्रण्य राज अनेद रे ॥ दश० ॥ ५३ ॥ शुक्र सातमे सत्तर सागर, वली सहसारे अढार रे ॥ चार हाथ तनु सुर देह सोहे, राज होवे तिहां चार रे ॥ दश० ॥ ५४ ॥ नवमे आनत उंगणीश सागर, प्राणत दशमे वीश रे ॥ एकादशमे आरण्य एकवीश, वारमे अच्युत वावीश रे ॥ दश० ॥ ५५ ॥ ए चारे त्रण ९

या, पांच राज्य इहां सोहे रे ॥ नव ग्रैवेयक एक उपर उपें, दीठे नवि मन मोहे रे ॥ दश० ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥ बार स्वर्ग सोहे सदा, तिहां राज्य नीति प्रधान ॥ भेद बीजो वैमाननो, नव ग्रैवेयक विधान॥५७॥

॥ ढाल सातमी ॥ माइ धन सुपन तुं, धन ॥
॥ जीवो तोरी आश ॥ ए देशी ॥

॥ सुदर्शन पहेले, सागर तिहां त्रेवीश ॥ सुप्रतिबंध चोवीश, मनोरमें पचवीश ॥ ५८ ॥ सर्वज्ञड़ें छवीश, सुविशालें सत्तावीश ॥ सुमनसें अठावीश, हवे त्रिक त्रीजे जगीश ॥ ५९ ॥ उगणत्रीश सोमनसें, प्रियंकर आठमे त्रीश ॥ आदित्यें एकत्रीश, दोय हाथ तनु दीश ॥ ६० ॥ ए नव ग्रैवेयकें, ठए राज प्रधान ॥ सातमें सिद्ध ठेहडे, हवे अनुत्तर विमान ॥ ॥ ६१ ॥ विजय विजयंतें, जयंत अपराजीत ॥ सरवारथ सिद्धें, नहीं तिहां राजनी नीत ॥६२॥ सागर आयु तेत्रीश, काया कर एक वारू ॥ एका अवतारी, सुख अनंत तस चारू ॥ ६३ ॥ तिहांथी बार योजन, सिद्ध शिला महंत ॥ जोजनने अंतें, सिद्ध हवा अनंत ॥ ६४ ॥ आयु अवगाहना, कहि सामान्य प्रकार ॥ जघन्य संक्षेपें, बोल्या तास विचार ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥ भवस्थिति इणि परें भोगवी, तुझविण त्रिभुवन देव ॥ कुण स्थानक काया स्थितें, रह्यो कहूं सुण देव ॥ ६६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नरतनृप नावशुं ए ॥ ए देशी ॥

॥ सात हेठल सात उपरें ए, चउद राजलोक ना व ॥ नविक जिन नावशुं ए ॥ पुरुषाकार लोक पूरीयो ए, षट पदारथ नाव ॥ नवि० ॥६७॥ नयर नवनपति देवता ए,अधो लोक निःशंक ॥ नवि० ॥ व्यंतरनर तिरि गिरिवरू ए, द्वीप समुद्र असंख्य ॥ नवि० ॥ ६८ ॥ अग्नि विकलेंडी ज्योतिषी ए, ए सवि तीठें लोक ॥ ॥ नवि० ॥ स्वर्ग ग्रैवेयक पांच अनुत्तरू ए, सर्वे सिद्ध ऊर्ध्वे लोक ॥ नवि० ॥ ६९ ॥ असंख्याती उत्सर्प्पिणी ए, सर्वे एकेंद्रिय स्थितिकाय ॥ नवि० ॥ काल अनंतो अनंतकायमां ए, उपजे ने वली जाय ॥ ॥ नवि० ॥ ७० ॥ विगल संख्या वरस सहस्सनी ए, नर तिरि नव सात आठ ॥ नवि० ॥ नारकी देव चवीय न उपजे ए, जघन्य आयु परिपाठ ॥ नवि० ॥ ॥७१॥ सात सात लाख चार थावरू ए, वनस्पति दश लाख ॥नवि० ॥ अनंतकाय चौद लाख सुणो ए, विगलेंडी दो दो लाख ॥ नवि० ॥ ७२ ॥ नारकी तिर्यंच देवता ए, चउद लाख होये तेह ॥ नवि० ॥ चउद लाख वली मानवी ए, संख्या जीवायोनि एह ॥ नवि० ॥ ॥ ७३ ॥ इंडी पांच त्रण बल कह्यां ए, श्वासोश्वास वली आय ॥ नवि० ॥ दश प्राण होयें सन्निया रे, नव असन्निया थाय ॥ नवि० ॥ ७४ ॥ ठ सात आठ विकलेंद्रिय तणा ए, एकेंडी प्राण चार ॥ नवि० ॥ नर तिरियंच त्रण वेद सुणो ए, देवता दोय वेद

नवि० ॥ ७५ ॥ थावर विकलेंद्री ने नारकी ए,एक न पुंसक वेद ॥ नवि० ॥ पद्मामणुं अधिक बादर अग्नी ए, वैमानिक भुवणेंद ॥नवि० ॥ ७६ ॥ निरय व्यंतर ज्योतिषी चउरिंद्रि ए, तिरियंच बितिइंद्रीक ॥ नवि० ॥ पृथिवी पाणी वायु वणसई ए, एक एक जीवथी अधिक ॥ नवि० ॥ ७७ ॥ चिहुं गति नमी नमी उपनो ए, संप्रति प्रभु पद लीध ॥ नवि० ॥ शास्त्रथकी जे विरुद्ध कह्युं ए, ते पंमित करजो शुद्ध ॥ नवि० ॥ ७८ ॥ हार हृदये रयणनो ए, धरजो चतुर सुजाण ॥नवि०॥ नणे गणे जे सांभले ए, तस घर कोडि कल्याण ॥न०॥७ए॥

॥ ढाल नवमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ चउदराजमांहे जीव केइ केइ भुग नम्यो, सूक्ष्म वली बादर अनंती वारू ॥ कर्मनी कोड नरी अकाम निर्जर करी, पामीयें पास त्रिभुवन्न तारू ॥ ८० ॥ नेट रे नेट प्रभु पास चिंतामणि, एहिज मुक्तिनो मार्ग साचो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने परिहरो, मोह मिथ्यामतें केम राचो ॥ नेट० ॥ ८१ ॥ नयर गुण दीव गुण वेलि वाधे सदा, पुष्करावर्त्त पास मेघ देवा ॥ श्रीसंघ मंमप तलें वेलि ते विस्तरे, ऊपजे आनंद सुकृत मेवा ॥ नेट० ॥ ८२ ॥ संवत ससी सायर चंद्रलोचन (१७१२) स्तव्यो, आशोशुदि दशमी रविवार राजे॥सूरि शिर ताज गुरु राज आणंदजी, तस पटें सूरि विजयराज गाजे ॥ ने० ॥ ८३ ॥ धन धन हर्ष गुरु विबुध चूडामणि, जास दीक्षित जगें कीर्त्ति सारी ॥

रत्नविजय बुध सत्यविजय तणो, वृद्धिविजय नणे आनंदकारी ॥ चेट० ॥ ७४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीजिनप्रतिमा उपर स्तवन ॥

॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ जेह्ने जिनवरनो नही जाप,तेह्नुं पासुं न मेले पाप ॥ जेह्ने जिनवरशुं नही रंग, तेह्नो कदी न कीजें संग ॥ १ ॥ जेह्ने नही वाह्ाला वीतराग, ते मुक्तिनो न लहे ताग ॥ जेह्ने नगवंतशुं नही नाव, तेह्नी कुण सांनलशे राव ॥ २ ॥ जेह्ने प्रतिमाशुं नही प्रेम, तेह्नुं मुखडुं जोइयें केम ॥ जेह्ने प्रतिमाशुं नही प्रीत, तेतो पामे नहिं समकित ॥ ३ ॥ जेह्ने प्रतिमाशुं ळे वेर, तेह्नी कहो शी थाशे पेर ॥ जेह्ने जिनप्रतिमा नहीं पूज्य, आगम बोले तेह अपूज्य ॥ ४ ॥ नाम थापना इव्य ने नाव, प्रजुने पूजो सही प्रस्ताव ॥ जे नर पूजे जिननां विंव, ते लहे अविचल पद अविलंब ॥ ५ ॥ पूजा ळे मुक्तिनो पंथ, नित नित नांखे इम नगवंत ॥४॥ सद्दि एक नर कविना निरधार, प्रतिमा ळे त्रिजुवनमां सार ॥ ६ ॥ सतर अडाणुं आषाढी वीज, उज्ज्वल कीधुं ळे बोध वीज ॥ इम कहे उदयरतन उवझाय, प्रेमें पूजो प्रजुना पाय ॥ ७ ॥ इति जिनप्रतिमा स्तवनं ॥

॥ अथ नवतत्त्वनुं स्तवन प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥ सरसतिनें प्रणमुं सदा, वरदाता नित्यमेव ॥ मुक मुख आवी तूं वसे, करुं निरंतर सेव ॥ १ ॥

नवि० ॥ ७५ ॥ थावर विकलेंडी ने नारकी ए,एक न पुंसक वेद ॥ नवि० ॥ पज्ञमणुं अधिक बादर अग्गी ए, वैमानिक नुवणेंद ॥नवि० ॥ ७६ ॥ निरय व्यंतर ज्योतिषी चउरिंडि ए, तिर्यंच त्रितिइंडीक ॥ नवि० ॥ पृथिवी पाणी वायु वणसई ए, एक एक जीवथी अधि क ॥ नवि० ॥ ७७ ॥ चिहुं गति नमी नमी उपनो ए, संप्रति प्रनु पद लीध ॥ नवि० ॥ शास्त्रथकी जे विरुद्ध कह्युं ए, ते पंमित करजो शुद्ध ॥ नवि० ॥ ७८ ॥ हार हृदये रयणनो ए, धरजो चतुर सुजाण ॥नवि०॥ नणे गणे जे सांनले ए, तस घर कोडि कल्याण ॥न०॥७ए॥

॥ ढाल नवमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ चउदराजमांहे जीव केइ केइ नुग नम्यो, सूक्ष्म वली बादर अनंती वारू ॥ कर्मनी कोड नरी अकाम नि र्जर करी, पामीयें पास त्रिनुवन्न तारू ॥ ८० ॥ नेट रे नेट प्रनु पास चिंतामणि, एहिज मुक्तिनो मार्ग सा चो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने परिहरो, मोह मिथ्यामतें केम राचो ॥ नेट० ॥ ८१ ॥ नयर गुण दीव गुण वेलि वाधे सदा, पुष्करावर्त्त पास मेघ देवा ॥ श्रीसं घ मंमप तलें वेलि ते विस्तरे, ऊपजे आनंद सुकृत मे वा ॥ नेट० ॥ ८२ ॥ संवत ससी सायर चंडलोचन (१७१२) स्तव्यो, आशोशुदि दशमी रविवार राजे॥सू रि शिर ताज गुरु राज आणंदजी, तस पटें सूरि वि जयराज गाजे ॥ ने० ॥ ८३ ॥ धन धन हर्ष गुरु विबुध चूडामणि, जास दीक्षित जगें कीर्त्ति सारी ॥

रत्नविजय बुध सत्यविजय तणो, वृद्धिविजय नणे आनंदकारी ॥ नेट० ॥ ७४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीजिनप्रतिमा उपर स्तवन ॥

॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ जेहने जिनवरनो नहीं जाप, तेहनुं पासुं न मेले पाप ॥ जेहने जिनवरशुं नही रंग, तेहनो कदी न कीजें संग ॥ १ ॥ जेहने नहीं वाहालां वीतराग, ते मुक्तिनो न लहे ताग ॥ जेहने नगवंतशुं नहीं नाव, तेहनी कुण सांनलशे राव ॥ २ ॥ जेहने प्रतिमाशुं नही प्रेम, तेहनुं मुखडुं जोइयें केम ॥ जेहने प्रतिमाशुं नही प्रीत, तेतो पामे नहिं समकित ॥ ३ ॥ जेहने प्रतिमाशुं ठे वेर, तेहनी कहो शी थाशे पेर ॥ जेहने जिनप्रतिमा नहीं पूज्य, आगम बोले तेह अपूज्य ॥ ४ ॥ नाम थापना इव्य ने नाव, प्रज्ञुने पूजो सही प्रस्ताव ॥ जे नर पूजे जिननां बिंब, ते लहे अविचल पद अविलंब ॥ ५ ॥ पूजा ठे मुक्तिनो पंथ, नित नित नांखे इम नगवंत ॥४॥ सहि एक नर कविना निरधार, प्रतिमा ठे त्रिजुवनमां सार ॥ ६ ॥ सतर अढाणुं आषाढी बीज, उज्ज्वल कीधुं ठे बोध बीज ॥ इम कहे उदयरतन उवज्ञाय, प्रेमें पूजो प्रज्ञुना पाय ॥ ७ ॥ इति जिनप्रतिमा स्तवनं ॥

॥ अथ नवतत्त्वनुं स्तवन प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥ सरसतिने प्रणमुं सदा, वरदाता नित्यमेव ॥ मुज मुख आवी तूं वसे, करुं निरंतर सेव ॥ १ ॥

आदीसर अरिहंत नमुं. जुगला धर्म निवार ॥ गुरु श्रुत देवी चंदलो, एहिज मुज आधार ॥ १ ॥ जास तणां पदयुग नमी, वर्णवुं तत्त्वविचार ॥ नवियण एक चित्तें करी, नाम कहुं हितकार ॥ २ ॥ जीव अजीव पुण्य पाप ने, संवर आश्रव जेद ॥ निर्जरा बंध ने मोक्ष जे, जिनजीयें जांख्या एह ॥ ४ ॥ एहना जेद ठे नव नवा, आगममां अनुरूप ॥ गुरुमुखथी ते सांजली, जांखुं एह स्वरूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ शोलमा श्रीजिनराज, उलंग ॥
॥ सुणो अम तणी ललना ॥ ए देशी ॥

॥ जीव तत्त्वना जेद ते, चउदें जाणीयें ॥ ल० ॥ चउद अजीवना जेद, ते मनमां आणीयें ॥ ल० ॥ जेद बहेंतालीश पुण्यना, जवियण चित्त धरो ॥ ल०॥ व्यासी जेद ते पापना, मनथी संवरो ॥ ल० ॥ १ ॥ आश्रवना बहेंतालीश, जेद ते जावियें ॥ल०॥ संवरना सत्तावन, चित्तमां लावीयें ॥ल०॥ बार जेदें ठे निर्जरा, कर्म ते निर्जरे ॥ल०॥ जेहथी प्राणी मोक्ष, रमणी सुखने वरे ॥ ल० ॥ २ ॥ बंध तत्त्वना चार, ते बंध ने तोडीयें ॥ ल० ॥ मोक्ष तत्त्वना नव, ते सुखथी जोडीयें ॥ ल० ॥ सर्व मली नव तत्त्वना, जेद ते जाणजो ॥ ल० ॥ बशे ने बहोतेर ते, मनमां आणजो ॥ ॥ ल० ॥ ३ ॥ तेमां अठ्यासी अरूपी, जेद ते सुखकरू ॥ ल०॥ एकशो अठ्यासी रूपी, कहे ते जिनवरू । ल० ॥ डुंगर गुरु ध्यानथी, सुखने अनुसरे ॥ ल०॥

विवेक कहे नविलोक, ते नव सायर तरे ॥ ते०॥ ४ ॥
॥ दोहा ॥ हवे प्रथम जीव तत्त्वना, नेद कहुं हितकार ॥ विवरीने ते वर्णवुं, एक एक सुखकार ॥ १ ॥
॥ ढाल बीजी ॥ नदी यमुनाके तीर, उमे ॥
॥ दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥
॥ एक नेदें कह्यो जीव, डुविध नेदें वली ॥ त्रण्य प्रकारें जाण, चउविह कहे केवली ॥ पंच षटविध जीव छे, छए नांखीया ॥ अरिहा जिनवर एह के, मुखथी दाखीया ॥ १ ॥ चेतना लक्षण जीव ते, एक अनेद छे ॥ त्रस अने बीजो स्थावर, इहां नवि खेद छे ॥ स्त्री पुरुष नपुंसक, वेद त्रण्ये सही ॥ देव गइ मनुष्य तिर्यंच, वली नारक कही ॥ २ ॥ पांच प्रकारें जीव, पंचेंडिय परखीयें ॥ छ प्रकारें जीव, छकायने निरखीयें ॥ इणेविध छ नेदें जीव, धारो तुमें एक मना ॥ हवे आगल दश प्राण, कहे त्रिभुवन जिना ॥ ३ ॥ पांच इंडी त्रण बल, श्वासोच्छ्वास आउखुं ॥ ए दश प्राणीने होय, विवरी कहुं पारिखुं ॥ एकेंडीने चार प्राण, बेंडीने छ कह्या ॥ तेंडी सात जाणो, चौरिंडीयें आठ लह्या ॥ ४ ॥ असन्नी पचेंडी ने नव, संज्ञी दश धारजो ॥ ए विना अवर न होय, संदेह मन वारजो ॥ हवे एकेंडिय सूक्ष्म, बादर दोय छे ॥ पंचेंडिय संज्ञी असंज्ञी, दोय नेद जोय छे ॥ ५ ॥ बेंडी तेंडी एक, चौरिंडी जाणजो ॥ ए साते नेद होय के, शुन्न मन आणजो ॥ पज्ज अपज्ज ए दोय, चउद नेद ॥

धारो चित्तमें जेह के, नवि जन एकमना ॥ ६ ॥ आ
हार शरीरने इंद्रिय, श्वास वचन सही ॥ मननी छठी
जाण, एकेंद्रिय चउ कही ॥ बि ति चौरिंद्रिय अस
न्नी, ने होये पंच ए ॥ षट् सन्नी ने जाणवी, विशेष
कहे संच ए ॥ ७ ॥

॥ दोहा॥ जीव तत्त्व पूरण थयुं, हवे अजीव वि
चार ॥ भिन्न भिन्न करीने कहुं, सांभलजो नर नार ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वीरजीने वचनें रे अमृत रस झरे रे ॥ ए देशी ॥

॥ धर्मास्तिकाय खंध देश प्रदेश छे रे, तेम अधर्मा
स्तिकाय ॥ एहना पण ए त्रण भेदज कह्या रे, एम
आकाशना त्रण थाय ॥ भवि तुमें जाणो रे अजीव त
त्त्वना रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ ए त्रणना मली नव भेद
सुंदरू रे, दशमो भेद छे काल ॥ खंध देश प्रदेश प्रमा
णुउ रे, अजीवना चौद कह्या सुविशाल ॥ भवि० ॥
॥ २ ॥ धर्मास्ति अधर्मास्ति पुग्गला रे, आकाश काल
सुविहाण ॥ ए पांचे अजीव ते जिन कह्या रे, कह्या
कह्या त्रिभुवन भाण ॥ भवि० ॥ ३ ॥ चलण स्वभाव
धर्मास्तिकायमां रे, अधर्मास्ति थिर ठाण ॥ अवकाश
आपे पुग्गल जीवने रे, हवे पुग्गलना चार विन्नाण ॥
भवि० ॥ ४ ॥ खंध देश प्रदेश प्रमाणुउ रे, पुग्गलना
ए चार भेव ॥ हवे आवलिका भेद तुमें लहो रे, अ
संख्य समय एक आवलि मेव ॥ भवि० ॥ ५॥ एक को
सडसठ लाख छे रे, उपर सीतोत्तर सहस्सज, जो

य ॥ वळी ने शोल आवलिका कही रे, एटली आवलि यें एक मुहूर्त्त होय ॥ नवि० ॥ ६ ॥ त्रीश मुहूर्त्तें दिवस रात्रि कही रे, पंदर अहोरात्रें एकज पक्ष ॥ बे पक्षें ए कमासज नावियें रे, बार मासें एक वर्षज दक्ष॥ नवि० ॥ ७ ॥ एहवे वरसें हवे पूर्व कहुं रे, सितेर लाख कोडी वरसज नाय ॥ छपन्न सहस्स कोडी वरस मान कहुं रे, पूर्व एटले वरसें थाय ॥ नवि० ॥८॥ असंख्यात पूरवें एक पल्य जाणीयें रे, दश कोडा कोडी पल्यें सागर एक ॥ सागर दश कोडाकोडी उत्सर्प्पिणी रे, अवसर्प्पिणी कोडाकोडी दश छेक ॥ नवि० ॥ ९ ॥ वीश कोडाकोडी सागरें काल चक्र छे रे, काल अनंतें पुजल परावर्त्त जाण ॥ रुंगर गुरुना पद शुन्न ध्यानथी रे, नित्य नित्य विवेक लहे कल्याण ॥ नवि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ पुण्य तत्त्व तणा कहुं, नेद बहेंतालीश जेह ॥ एकमना थइ सांनलो, आणी अधिको नेह ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेबजी श्रीविमलाचल ॥

॥ नेटीयें हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ बहेंतालीश नेद पुण्य तत्त्वना हो लाल, शाता वेदनी उंच गोत्र ॥ साहेबजी ॥ मनुष्यगति मनुष्यानुपूर्वी हो लाल, चार नेद ए युक्त ॥ सा० ॥ पुण्य तत्त्व हवे सांनलो हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साहेबजी सुरङग पंचेंडियपणुं हो लाल, पांच देह मनोहार ॥ सा० ॥ औदारिक वैक्रिय आहारकें हो लाल, अंगोपांगें युक्त धार ॥ सा० ॥ पु० ॥ ॰

॥ सा० ॥ प्रथम संघयण संस्थानशुं हो लाल, शुभ वरण शुभ गंध ॥ सा० ॥ शुभ रस शुभ स्पर्शने हो लाल, अगुरु लघु अदंभ ॥ सा० ॥ पु० ॥ ॥ ३ ॥ सा० ॥ पराघात श्वासोश्वासने हो लाल, लेवाने जेहनी सक्त ॥ सा० ॥ आताप भेद पच वीशमो हो लाल, उद्योत कर्मनी व्यक्त ॥ सा० ॥ ॥ पु० ॥ ४ ॥सा०॥ शुभखगई शुभगति करे हो लाल, निर्माण नाम अगर्व ॥ सा० ॥ त्रस दशको दश भेदनो हो लाल, आगलें कहे ते सर्व ॥ सा० ॥ ॥ पु० ॥ ५ ॥ सा० ॥ सुर नर तिरि आउखूं हो लाल, तीर्थंकर नाम कर्म ॥ सा० ॥ हवे त्रस दशको वर्णवुं हो लाल, जेहथी लहे शिव शर्म ॥ ॥ सा० ॥ पु० ॥ ६ ॥ सा० ॥ त्रस बायर पर्याप्ता हो लाल, प्रत्येक स्थिर शुभ नाम ॥ सा० ॥ सौभाग्य नामकर्मथी हो लाल, जीव लहे शुभ गाम ॥ ॥ सा० ॥ पु० ॥ ७ ॥ सा० ॥ सुस्वर आदय जस नामथी हो लाल, जीव लहे सुख नित्य ॥ सा० ॥ डूंगर गुरु पद सेवतां हो लाल, विवेक लहे जग जीत ॥ सा० ॥ पु० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥ पाप तत्त्वथी दुःख होये, पामे नरक दूवार ॥ ते माटे चेतन तुमें, मनथी एह निवार ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सुरति महीनानी देशी ॥

॥ आवरण पंचने तिम वली, अंतराय छे पंच ॥ पंच कहि दर्शन, चारे ते खल खंच ॥ नीच गोत्र

आशाता, तेम वली मिथ्यात्व ॥ थावर दशको आगल कहे, सांजलो एह विख्यात ॥ १ ॥ नरक त्रिक अने व ली, पणवीस कषाय ॥ तिरिय डुग मली कह्या, नेद बासठ ए थाय ॥ ईग बि ति चउ जाई, कुखगई उपघा त ॥ होये प्राणीने ते सही, नीच कर्मनी ख्यात ॥२॥ अशुन्न वरण अशुन्न रस, गंध अशुन्न तेम जाण ॥ फरस अशुन्न तेमज कह्यो, आगममां जिन नाण ॥ पढम संघयण विनाहीज, मूकी पढम संस्थान ॥ बहोंत्तेर नेद ए थया, जाणो एहनुं मान ॥ ३ ॥ थावर सुहुम अपऊ, साधारण अस्थिर ॥ अशुन्न डुन्नग डुःस्वर, अनादेय अपजश धीर ॥ आगममां पाप तत्वना, नेद ए व्यासी जाण ॥ मूंगर गुरुनो से वक, तेहने नित्य कल्याण ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ पाप तत्त्वने ए कह्युं, हवे आश्रवनुं ग म ॥ पाप आवे जे जीवने, आश्रव एहनुं नाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ढ्ठी ॥ देखी कामिनी दोय के, कामें व्यापीयो रे के ॥ कामें व्यापियो ॥ ए देशी ॥

॥ पांच इंडी कषाय चार के, अव्रत पण कह्या रे के ॥ अव्रत० ॥ त्रण योग त्रण नेद के, गुरु मु खथी लह्या रे के ॥ गुरु० ॥ हवे किरिया ते जोय के, पणवीश अनुक्रमे रे के ॥ पण० ॥ तजीयें जेहथी हो य के, पुण्य सुसंक्रमे रे के ॥ पुण्य० ॥ १ ॥ यिकी जाण के, बीजी अधिकरणकी रे के ॥ त्रीजी परद्वेपकी होय के, चोथी ' ता

॥ चो० ॥ प्राणातिपातनी पांचमी. बही आरंनकी रे के ॥बही०॥ परिग्रहकी कही सातमी,आठमी कायिकी रे के ॥ आ० ॥ २ ॥ मिथ्यादंसण अपच्चरकाणकी, नव दस एक कह्या रे के ॥ नव० ॥ दिछि पुछि पाडूचकी, त्रयोदश ए लही रे के ॥ त्रयो० ॥ सामंतोनपात निः शस्त्र, स्वहस्तकी शोलमी रे ॥ स्व० ॥ सत्तरमी आणव णी. विदारण अढारमी रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ अणानोग अ णवकंख के, वे मली वीश थइ रे के ॥ वे० ॥ अणउप योग समुदायकी, बावीश ए लइ रे के॥ बा० ॥ त्रेवी शमी ते रागकी, चोवीशमी द्वेषकी रे के ॥ चो० ॥ पण वीशमी ईर्यापथिकी, कही विशेषकी रे के ॥ कही० ॥ ॥ ४ ॥ नेद बेहेंतालीश आश्रव, तत्त्वना ए कह्या रे के ॥ तत्त्व० ॥ सम्यक्दृष्टि जीव के,मनथी सद्दह्या रे के॥ ॥ मन० ॥ रुंगर गुरु शुनध्यानथी, आश्रवने तजो रे के ॥ आश्रव० ॥ विवेक कहे नविलोक के, शिव र मणी नजो रे के ॥ शिव० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ प्राणी वाणी जिन तणी ॥ ए देशी ॥

॥ संवर तत्त्व ते सांनलो, संवरीयें आतमा नित्य रे ॥ अरिहा जिनवरें नांखियो, आगममांहे शुन्न री त रे ॥ आगममांहे शुनरीत सूचित, सुनित जगत गुरु नासियो सुख कंद रे ॥ सुख कंद अमंद आनं द ॥ जगत गुरु नासीयो सुख कंद रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति जे, परिसह बावीश व ...े रे ॥ दशविध मुनिवर धर्म जे,ते मुनिजन नित्य

तुमें धारो रे ॥ते मुनि० ॥सु० ॥ सु० ॥ ज०॥२॥ पांच स
मिति विवरी कहुं, ईर्या समिति प्रथम वखाण रे ॥
छकाय रक्षा जे करे, ईर्या कही तेह सुजाण रे ॥
॥ ईर्या० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥३॥ जाषा समिति बीजी
हवे, सहुने सुख उपजे सोय रे ॥ एषणा बहेंतालीश
दोष छे, मुनिने आहार एम होय रे ॥ मुनि० ॥ सु०
॥ सु० ॥ ज० ॥ ४ ॥ अदान निक्षेपणा, समिति ले मूके
योग रे ॥ पारिष्ठापनिका कही, मल मूत्र नाखे उप
योग रे ॥ मल० ॥सु० ॥ सु० ॥ज०॥ ५॥ त्रण गुप्ति हवे
चित्त धरो, मन वचन काया करे शुद्ध रे ॥ आठ प्रव
चन मात जे, मुनि धारे तेहिज बुद्ध रे ॥ मुनि० ॥
॥ सु० ॥सु०॥ ज० ॥६॥ क्षुधा पिपासा शीत जे, उष्ण
मंसा परिसह चेल रे ॥ रती स्त्रियादिक ते वली, चरि
या निसिहियादिक मेल रे ॥च० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज०
॥ ७ ॥ सवा आक्रोश वह जायणा, अलाज रोग त
ण फास रे ॥ मल सक्कार परिसह जे, पन्ना अन्नाण सं
मत्त रे ॥पन्ना०॥ सु० ॥ सु०॥ ज० ॥८॥ खंति मद्दव अ
ज्जव, मुत्ति तव संजम मेह रे ॥ सच्चं सोहं अकिंचण,
ब्रह्मचर्य ए दशविध जेह रे॥ ब्रह्म०॥ सु०॥ सु०॥ ज०॥
॥ ९ ॥ प्रथम अनित्यह जावना, अशरण संसार ए
कत्व रे ॥ अन्यत्त्व जावना पंचमी, अशुचि जावना त
त्त्व रे ॥ अशु०॥ सु०॥ सु०॥ ज०॥१०॥ आश्रव संवर
निर्जरा, लोक बोधि डुर्लज्ञ जाव रे ॥ धर्म ध्यान
वारनी, ए छे जवजल जंतु नाव रे ॥ ए छे० ॥

॥ सु० ॥ ज० ॥ ११ ॥ पांच भेद चारित्रना, सामायि
क छेदोपस्थान रे ॥ परिहार सूक्ष्म चारित्र जे, यथा
ख्यातथी मोक्ष निदान रे ॥ यथा०॥ सु०॥ सु०॥ ज०
॥ १२ ॥ यथाख्यात चरण जे आचरे, ते पामे मु
क्तिनुं ठाण रे ॥ मूंगर गुरुना ध्यानथी, विवेक लहे
बहु नाण रे ॥ विवे० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १३ ॥
॥ दोहा ॥ बार प्रकारें तप तपे, निर्जरा जेहनुं ना
म ॥ आत्म प्रदेशह तेथकी, कर्म पुज्ञल खिरे ठाम॥१॥
॥ ढाल आठमी ॥ हुं चारित्र गुत्तो समितिने
गुत्तो, विश्वनो तारूजी ॥ ए देशी ॥
॥ पहेलुं अनशन ते अन्न पाणी लेवे नही ॥ सोभा
गी ॥ वली ठठने अठम तप तेह जाणो सही ॥ सो०॥
पुरुषने बत्रीश कवल स्त्री अठावीश लहे ॥ सो०॥
नपुंसकने चोवीश कवल जिनवर कहे ॥ सो०॥ १॥
द्रव्य क्षेत्र कालने भाव अभिग्रह जे वरे ॥ सो०॥ जेम
चंदनबाला वीरनो अभिग्रह पूरण करे ॥ सो०॥ वृत्ती
संक्षेप पण तप ए त्रीजो कह्यो ॥ सो० ॥ खट रस
नो करे त्याग एह चोथो लह्यो ॥ सो०॥२॥ लोच क
रावे ने अलुवाणे पगे संचरे ॥ सो० ॥ इत्यादिक भली
भातशुं काय कष्ट तप आदरे ॥ सो० ॥ पांच इंद्रि
चार कषाय योगने शोधवा ॥ सो० ॥ स्त्रीयादिक सं
सर्ग ते सर्वथी रोधवा ॥ सो०॥३॥ षटविध बाह्य ए
तप तुमें जाणवो ॥ सो० ॥ गुरुमुखथी लही भाव
संदेह मन नाणवो ॥ सो० ॥ हवे षड्विध अभ्यंतर

नवि तुमें सांजलो ॥ सो० ॥ धरीयें चित्तमां ए मूकीने मन आमलो॥सो०॥४॥पोतानी कीधी वातने लोक ते नवि लहे ॥ सो० ॥ देहामांहे ते बहु कर्मने खेपवे ॥ ॥ सो० ॥ पाप लागां होय ते गुरु मुखथी आलवे ॥ ॥ सो०॥ इणिविध प्रायश्चित्त तपने जालवे ॥ सो०॥५ नाण दंसण चारित्रनो विनय घणो करे ॥ सो० ॥ अरिहंत सिद्ध चैत्य विनय मनमां धरे ॥ सो० ॥ वै यावच्च तप त्रीजो प्रश्न व्याकरणें कह्यो ॥ सो० ॥ चौदे नेदें वैयावच्च गुरु मुखथी लह्यो ॥ सो० ॥ ६ ॥ हवे चोथुं तप सद्याय ध्यानने मन खरे ॥ सो० ॥ सिद्धांत वांचे पूछे सिद्धांतने नित्य गणे ॥ सो० ॥ चिंतवे धर्मोपदेश दीये नवि चित्तने ॥ सो०॥ जेहथी पामे सद्याय तप वित्तने ॥ सो० ॥ ७ ॥ समता नावें मनने आणे ध्यानमें ॥ सो० ॥ निरामय निराकार अवस्था ज्ञानमें ॥ सो० ॥ शुक्ल ध्यानने ध्यावे रौ इने परिहरे ॥ सो० ॥ ए पांचमुं तप नवियण चित्तें धरें ॥ सो० ॥ ८ ॥ छठुं हवे काउसग्ग, तपने आ दरें ॥ सो० ॥ क्रोध अने मान माया, लोजने परिहरे ॥ सो०॥ ए अभ्यंतर षट नेद ने प्राणी मन धरो॥सो०॥ विवेक कहे नवियण, नवसायर तरो ॥ सो० ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥ बंध तत्त्व दूरें तजो,बंधन ते नित्यमेव ॥ गतिनां दुःख पामे घणां, कहे इम जिनवर देव ॥ १ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ कपूर होवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ बंध तत्त्व हवे सांजलो रे, नवियण तुमें उमे

द ॥ चार प्रकारें बंध छे रे, नापे जिन अवेद रे ॥ प्रा
णी सांजलो तेह सुजाण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
प्रकृतिबंध पहेलो कह्यो रे, सहावा कहेतां स्वनाव ॥
स्थिति ते कालने जाणजो रे, एहिज एहनो नाव
रे ॥ प्राणी० ॥ सां० ॥ २ ॥ अनुनागबंध ते शुं क
हियें रे, कटुक मिष्ट जेम रस ॥ प्रदेश बंध चोथो ह
वे रे, दल संचय जाणो तस रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥
॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी कर्मनुं रे, चक्कुबंधन जेह ॥ दर्श
न ते कहीयें बीजुं रे, पोलीया सरिखुं एह रे ॥
॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ४ ॥ वेदनी लित्त असि सारि
खुं रे, मोहनी मदिरा समान ॥ हड सरिखुं आयु
जाणीयें रे, चितारा सरिखुं नाम रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥
॥ ५ ॥ गोत्र ते कुंनार जेहवुं रे, नंमारी सम अंतरा
य ॥ आठ करम नाव जाणजो रे, जेहथी छुर्गति
जाय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ६ ॥ नाण दंसण वेयणी
अंतरायनुं रे, त्रीश कोडाकोडी मान ॥ मोहनी
सितेर कोडा कोडीनुं रे, सागर एह निदान रे ॥
॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ७ ॥ वीश कोडाकोडी नाम गोत्रनुं
रे, आयु अयर तेंत्रीश ॥ काल उत्कृष्ट पूरो थयो रे,
नाखे श्रीजगदीश रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ८ ॥ जघन्य
काल हवे कहुं रे, आठ कर्मनो जेह ॥ वेदनी कर्मनो
जाणीयें रे, वार मुहूर्त्त कह्यो एह रे ॥ प्रा० ॥
॥ सां० ॥ ए ॥ नामकर्म गोत्र कर्मनो रे, आठ मुहूर्त्त
होय ॥ पांच कर्मनो आगल कहे रे, जघन्य

काल स्थिति जोय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ १० ॥ ज्ञानावरणी कर्मनी रे, दर्शनावरणी अंतराय ॥ मोह नी आयु कर्मनी रे, अंतर मुहूर्त्त कहेवाय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ११ ॥ आठ कर्मथी अलगा रहो रे, जिम लहो सुख निरवाण ॥ डूंगर गुरुना पदथकी रे, वि वेकने कोडि कल्याण रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥ बंध तत्त्व पूरण थयुं, मोक्षतत्त्व सुवि चार ॥ तेमाटे नवियण तुमें, आराधो हितकार ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ नविका सिद्धचक्र पद वंदो ॥ ए देशी ॥

॥ छता पदनुं प्रथम प्ररूपण, द्रव्य प्रमाण ए बीजुं ॥ खेत्र प्रमाण ते त्रीजुं जाणो, फरसना द्वारें रीजो रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति पद आराधो ॥ आराधी शिव साधो रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ काल द्वार ते पांचमुं सुणीयें, अंतर छठुं धीर ॥ सातमुं नागने आठमुं नाव, अल्प द्वार कहे वीर रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ २ ॥ चारगतिमांहे मनु ष्य गतियें, मोक्ष होवे निरधार ॥ पांच इंद्रीमांहे पं चेंद्रीथी, शिवपद लहे सुखकार रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ३ ॥ पृथिवी आदि पांचे थावर, एहने मोक्ष न लहीयें ॥ त्रसकायथी मोक्षें जावे, एह आणा सद हीयें रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ४ ॥ नव्य अने अनव्य ए दोविध, नव्यने होय शिव ठाण ॥ सन्नी असन्नी बे पदमांहे, सन्नीयो लहे निर्वाण रे ॥ प्राणी० ॥ मुक्ति० ॥ ५ ॥ चारित्र पांच प्रकारें नांख्यां

जिन आगममांहि ॥ यथाख्यात चारित्रें ते मोक्ष, बीजे चरणें मोक्ष नांहि रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ६ ॥ पांच प्रकारें समकित जाणो, पंचांगीना जाण ॥ बीजे समकीतें नवि लहीयें, क्षायिके मोक्ष होय नाण रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ७ ॥ आहार ते नवमांहे न माडे, अणाहार दिये मोक्ष ॥ दर्शन चार कह्यां जिनराजें, केवल मोक्षने मांफे रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ८ ॥ मति अने श्रुत अवधि ज्ञानह, मनःपर्यव ते जोवे ॥ केवल ज्ञानथी केवल ज्योति, प्रथम द्वार एम होवे रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ए ॥ सिद्धना जीव द्रव्य अनंता, अनंता जीव सिद्धि पाम्या ॥ लोकने असंख्यातमे नागें, सिद्ध ते सवि दुःख वाम्यां रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ १० ॥ खेत्रथी फरसना अधिकी जाणो, एक आकाश प्रदेशें ॥ एक सिद्ध आश्रित आदि ठे, अनंतें अनादि रें ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ११ ॥ पडवाना अनावथी जाणो, अंतर सिद्धने नही ॥ सर्व जीवने अनंतमे नागें, सिद्ध रह्या शुचि सही रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १२ ॥ क्षायिक ने परिणामिक नावें, बे नावें होवे सिद्ध ॥ सर्व थकी थोडा नपुंसक, संख्यातगुणी स्त्री सिद्ध रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १३ ॥ तेहथी संख्याता पुरुषज जाणो, समयें नपुंसक दश ॥ स्त्री सीफे एक समयें वीश, पुरुष अष्टोत्तर ईश रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १४ ॥

बहुत्त्व ए नवमुं द्वार, कह्युं गुरुमुखथी में

आज ॥ मूंगर गुरु पद कमलनो सेवक, विवेकना सी धां काज रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ हवे पंदर नेद सिद्धना, वर्णवुं ते सुखकारी रे ॥ जिण सिद्ध ते अरिहंतजी, पुंमरिक अजिण व लिहारी रे ॥ वारी जाउं हुं सिद्धनी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विहरमान ते तीर्थे सिद्ध, अतीर्थे सिद्ध म रुदेवी माय रे ॥ गृहस्थावासें कूर्मापुत्र सिद्धा, अ न्यलिंगें वलकल शिवजाय रे ॥ वारी० ॥ २ ॥ स्व लिंगें साधु ते सिद्ध कह्या, स्त्रीलिंगें चंदन वाला रे ॥ पुरुषलिंगें गौतम जाणवा, नपुंसकलिंगें गांगे या रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ प्रत्येकबुध ते नमि थया, पो तानी मेलें स्वयंबुद्ध रे ॥ बुद्ध बोधित सिद्ध ते उपदे शें, नरतादिक बुद्धबोधि रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ एक जी व ते एक सिद्ध छे, घणा सिद्धें अनेक रे ॥ इम पंदर नेद सिद्धना, वरणव्या सुविवेक रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ जीवादिक नव तत्त्वने, प्राणी सद्दहे जे नावें रे ॥ ते नर समकित सुरतरु, पामीने शिव जावे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥ जीव संवर निर्ज्जरा मोक्ष, ए चारे होवे अ रूपी रे ॥ बंध आश्रव पुण्य पाप जे, एहने कहियें रूपी रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ मिश्र नावें अजीव छे, बंध आश्रव पुण्य पाप रे ॥ ए चारेने छांमवा, जेहथी ल हे प्राणी संताप रे ॥ वा० ॥ ८ ॥ जीव अजीव बे

जाणवा, संवर निर्जरा मोक्ष रे ॥ आदरवां ए त्रण तत्त्वने, प्राणी लहे शिव शर्म रे ॥ वा० ॥ ए ॥ काल अनंत गये जिन मार्गें, सिद्धनी पृछा उल्लासें रे ॥ गो लाने अनंतमें नागें, सिद्ध थया सुविलासें रे ॥ वा० ॥ १० ॥ ए नव तत्त्व तणा गुण गाया, दिन दिन चडत सवाया रे ॥ श्रीविजय डूंगर गुरु सुपसाया, विवेकें नित सुख पाया रे ॥ वा० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥ जगजंतु तारण दुःख निवारण, आ दि जिनवर में थुण्यो ॥ संवत अढार वहोतेरा वर्षें, न विक हित हेतें नण्यो ॥ दमण पूरव विजय दशमी, आश्विन मास सु पक्ष ए ॥ सुरगुरुवारें सुखवधा रे, कहे कवि जन दक्ष ए ॥ १ ॥ तपगछ राजे वड दीवाजे, श्रीविजय दया सुरीसरू ॥ तस चरण सेवी मुक्ति विजयें, नविक जन मन सुखकरू ॥ तस शि ष्य सुंदर गुणपुरंदर, पंमित डुंगर मुणिंद ए ॥ तस शिष्य सेवक नणे नावें, विवेक लहे आणंद ए ॥ २ ॥ ॥ इति नवतत्त्व स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री जिनदासजी कृत घन ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, उनसें उतरोगे नवपार ॥ होवे तेरी कायाको उधार, सफल कर ले अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम मनसें धरो नर नार, खा ए दुःखकी यह हे संसार ॥ करो प्रचु न्याल अबे जि नदास, रखो प्रचु मुऊ चरणोंके पास ॥ १ ॥

॥ सरक जा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गइ

लाली ॥ सोवत समताकी में टाली, आतमा तपमें नही घाली ॥ अनंत नव वीत गया खाली, वेदना निगोदकी झाली ॥ अमरपद जिनदास मागे, सदा पद प्रजुजीकुं लागे ॥ २ ॥

॥ सीस नित नमुं नाजिनंदन, चरण पर चढे केसर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक वंदन, कटत हे कमींका फंदन ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकुं सुख कंदन ॥ जिनंद गुण जिनदास गावे, सीस चरणोंसें नमावे ॥ ३ ॥

॥ बोलत हैया मेरा हस कर, चढावुं चंदन चूवा घस कर ॥ पेठा में धर्मोमें धस कर, पाप दल दूर गया खस कर ॥ चेतन हुवा खडा कम्मर कस कर, हगाया कर्मोंका लसकर ॥ श्रीजिनराज झिहाज खासा, शरण जिनदास लिया वासा ॥ ४ ॥

॥ समज मन मेरा मतवाला, तुजें नहिं कोइ हटकणवाला ॥ वस्या तेरे हईए कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकुं ताला ॥ फेरतो ममताकी माला, वालतो जगवंत पर जाला ॥ दयाकूं दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥

॥ किया में गणधर प्रेमपती, मुजे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्ग्रंथ मति, पूठ पर खडे जागता जती ॥ मुजे बलवंत जइ सोल सती, मिटी मेरी डुर्गतिकी सब गति ॥ एसा घन जिनदास गावे, अचल पद जक्तिसें पावे ॥ ६ ॥

॥ विकट घट डुर्गतिका न्हारी, नीर जिहां नरतिकु मति नारी ॥ वरछी उन नैनोंकी मारी, रुव्या केइ कामी संसारी ॥ इनोंकी हो रइ खूआरी, जित्या को इ सत्य धरमधारी ॥ प्रन्नु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आया ॥ ७ ॥

॥ चेत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हा सी ॥ कुमतिकी पडी गले फांसी, सुमतिसुं रखी हे उदासी ॥ कुमतिकी वसी सेज खासी, मान रह्यो मम ताकूं मासी ॥ हियो खोल अरिहंतकों परखो, करो जिनदास आप सरिखो ॥ ८ ॥

॥ अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी न ही मानी ॥ किया नही गुरु निर्ग्रंथ ग्यानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें उतर गया पानी, गति तेरी डुर्गतिकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास वाजे, सुधारोगे तुमही काजें ॥ ए ॥

॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रंथ ग्यानी, कानसें ल गी सुमति रानी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पानी, ग ति तेरी सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वा जे, सुधारोगे तुमही काजें ॥ १० ॥

॥ अथ पहेली जीवशीखामणनी लावणी ॥

॥ चल चेतन अब उठ कर अपनें, जिनमंदिर ज इयें ॥ किसीकी चूंफी नां कहीयें, किसीकी वूरी नां क हीयें ॥ चल० ॥ ए आंकणी ॥ चरण जिनवरजीका

नेव्या ॥ चर० ॥ नव नव संचित पाप करम सव, तन मनका मेव्या ॥ सुकृत कीजें, महाराज ॥ सुकृ० ॥ जिनवरका गुण नज लीजें, समकित अमृत रस पीजें, लाज्न जिन नक्तिको लहीयें रे ॥ लाज्न० ॥ चल० ॥ १ ॥ करो जी मत मुखसें वडाई ॥ करो० ॥ तज तामस तन मनकी सुमता, सें रेनां नाइ ॥ रीतसें वोलो, मेरी जान ॥ रीत० ॥ आतम समतामें तोलो, मत मरम पारका खोलो, मौन कर तन मनसें रहियें रे ॥ मौन० ॥ चल० ॥२ ॥ जोवन दिन चार तणो संगी रे ॥ जोवन० ॥ अंत समय चेतन उठ चाले, काया पडि नंगी ॥ प्रीत सव तूटी, मेरी जान प्रीत० ॥ आउखाकी खरची खूटी, चेतनसें काया रूठी, सुख डुःख आप किया सहियें रे ॥ सुख० ॥ चल० ॥ ३ ॥ जगतसें रहेनां उदासी रे ॥ जग० ॥ परख्या में जिनराज, हरो मेरी डुर्गतिकी फांसी ॥ तजो सव धंधा, मेरी जान ॥ तजो० ॥ जिनवर मुख पूनम चंदा, जिनदास तुमारा वंदा, मेरे एक जिन दर्शन चहियें रे ॥ मेरे० ॥ चल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ वीजी जीवशिखामणनी लावणी ॥

॥ तुम नजो जिनेसर देव, मुगति पद पाइ ॥मुग०॥ अव अचल अखंमित ज्योत, सदा सुखदाइ ॥ ए आंकणी ॥ में रुल्यो चोराशी मांहे, नूल्यो में नरम ॥ नूल्यो० ॥ महारे उदये अनंतां डुःख, वांध्यां जव करम ॥ में कदिएक हुउ रंक, फिर्यो तजी शरम

फिर्यो० ॥ अरु कदिएक राजा भयो, गरथकी गरम।
जब गरव आणकर बोल्यो, पारका मरम ॥ पार० ।
पण निर्मल जुगमें जैन; कीयो नही धरम ॥ अब
मनख जनममें चेत, घडी शुभ आइ ॥ घडी० ॥
अब० ॥१॥ में सुर नरका सुख वार, अनंती पाया ॥
अनं० ॥ म्हारे शिव समताका सुख, हाथ नही आ
या ॥ में कुगुरु ने कुदेव, भला कर ध्याया ॥ भला० ॥
में उलज्यो अनादि अग्यान, विषय भोग भाया ॥
में पड्यो लोभके फंद, जोडतो माया ॥ जोड० ॥ प
ण लग्यो अंत जब आय, कालने खाया ॥ अब प
रिहर सब परमाद, धर्म कर भाइ ॥ धर्म० ॥ अब०
॥ २ ॥ अब दुर्लभ अवसर लही, तुं सुकृत कर
रे ॥ तुं सुकृ० ॥ अब दान शियल तपभाव, हियामें
धर रे ॥ तुं कर्मकी माला काट, पाप परिहर रे ॥
पाप० ॥ अब वार वार कहुं तोहे, जगतसें तर रे ॥
तुं निर्मल नयणें देख, नरकसुं डर रे ॥ नर० ॥ तुं
शीख सुगुरुकी मान, अग्यानी नर रे ॥ अब पर त्री
या कर जान, बेन ने माइ ॥ बेन० ॥ अब० ॥ ३ ॥
अब जिनवर मुझ मन भायो, सदा गुण गाउं ॥
सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो, नरक नहिं जाउं ॥
अब भव भव मांही देव, जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में
मन वच काया करी, चरण चित लाउं ॥ ए दया ध
रम हितकार, सदा में चाउं ॥ सदा० ॥ ए चोराशी
के मांहे, फेर नहिं आवं ॥ युं अरज करे जिनदास,

कीरत ए गाइ ॥ कीरत० ॥ अब० ॥ ४ ॥ इति ॥
॥ त्रीजी जीवशिखामणनी लावणी ॥
॥ कब देखुं जिनवर देव, जगत गुरु ग्यानी ॥
जग० ॥ कोइ आप समो नही उर, जो अंतरध्यानी ॥
ए आंकणी ॥ अब विषम वन संसार, जगतमें नट
क्यो ॥ जग० ॥ मुझे अनमतने ले जाय, नरकमें प
टक्यो ॥ अब लहुं दरिसन जिनवरका, उ दिन कब
उगे ॥ उ० ॥ मुझ मनकी वंछित आस, अधिक सब
पूगे ॥ अब जिनदरिसन विन नयन, झरे मुझ पानी ॥
झरे० ॥ कोइ० ॥ १ ॥ थारे कुगुरुको उपदेश, हि
यामें छायो ॥ हिया० ॥ पण सरस नेद समकितको,
जीव नही पायो ॥ अब जैनधर्म निज माल, मूरख
मत खोवे ॥ मूरख० ॥ ए सुमति सुरगको पंथ, अ
मर गत होवे ॥ अब डुर्लन जिन नक्तिकी, लही नि
ज टानी ॥ लही० ॥ कोइ० ॥ २ ॥ अब सुर नर गा
वे गीत, अजब जड लागी ॥ अजब० ॥ जिहां ना
चत नृत्य अनेक, अलसकूं त्यागी ॥ अब मोहत म
न नरपतिका, गगनधुनि गरजे ॥ गग० ॥ ए जिनवर
महिमा अनंत, ध्यान दिल धरजे ॥ एसी अधिक ब
वी जिनजीकी, मेरे मन मानी ॥ मेरे० ॥ कोइ० ॥ ३ ॥
अब जिनचरणोसें रंग, अधिक दिल लागो ॥ अ० ॥
में पेख्यो जिन गुण अजब, सुरंगी वाघो ॥ आ सफ
ल घडी समकितकी, हाथ अब आइ ॥ हाथ० ॥ में
गगन गमनकी पांख, अमूलक पाइ ॥ अब बोलत

फिरयो० ॥ अरु कदिएक राजा जयो, गरथकी गरम ॥ जव गरव आएकर बोल्यो, पारका मरम ॥ पार० ॥ पण निर्मल जुगमें जैन, कीयो नही धरम ॥ अव मनख जनममें चेत, घडी शुन आइ ॥ घडी० ॥ अव० ॥१॥ में सुर नरका सुख वार, अनंती पाया ॥ अनं० ॥ महारे शिव समताका सूख, हाथ नही आया ॥ में कुगुरु ने कुदेव, जजा कर ध्याया ॥ जजा० ॥ में उलज्यो अनादि अग्यान, विषय जोग जाया ॥ में पड्यो लोजके फंद, जोडतो माया ॥ जोड० ॥ पण लग्यो अंत जब आय, कालने खाया ॥ अव परिहर सव परमाद, धर्म कर जाइ ॥ धर्म० ॥ अव० ॥ २ ॥ अब डुर्लज अवसर लही, तुं सुकृत कर रे ॥ तुं सुकृ० ॥ अव दान शियल तपजाव, हियामें धर रे ॥ तुं कर्मकी माला काट, पाप परिहर रे ॥ पाप० ॥ अव वार वार कहुं तोहे, जगतसें तर रे ॥ तुं निर्मल नयणें देख, नरकसुं मर रे ॥ नर० ॥ तुं शीख सुगुरुकी मान, अग्यानी नर रे ॥ अव पर त्रीया कर जान, बेन ने माइ ॥ बेन० ॥ अव० ॥ ३ ॥ अव जिनवर मुक मन जायो, सदा गुण गाउं ॥ सदा० ॥ अव इतनी किरपा करो, नरक नहिं जाउं ॥ अव जव जव मांही देव, जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी, चरण चित लाउं ॥ ए दया धरम हितकार, सदा में चाउं ॥ सदा० ॥ ए चोराशी के मांहे, फेर नहिं आउं ॥ युं अरज करे जिनदास,

कीरत ए गाइ ॥ कीरत० ॥ अब० ॥ ४ ॥ इति ॥
॥ त्रीजी जीवशिखामणनी लावणी ॥
॥ कब देखुं जिनवर देव, जगत गुरु ग्यानी ॥
जग० ॥ कोइ आप समो नही उर, जो अंतरध्यानी ॥
ए आंकणी ॥ अब विषम वन संसार, जगतमें नट
क्यो ॥ जग० ॥ मुझे अनमतने ले जाय, नरकमें प
टक्यो ॥ अब लहुं दरिसन जिनवरका, उ दिन कब
उगे ॥ उ० ॥ मुझ मनकी वंछित आस, अधिक सब
पूगे ॥ अब जिनदरिसन विन नयन, झरे मुझ पानी ॥
झरे० ॥ कोइ० ॥ १ ॥ थारे कुगुरुको उपदेश, हि
यामें लायो ॥ हिया० ॥ पण सरस नेद समकितको,
जीव नही पायो ॥ अब जैनधर्म निज माल, मूरख
मत खोवे ॥ मूरख० ॥ ए सुमति सुरगको पंथ, अ
मर गत होवे ॥ अब डुर्लन जिन नक्तिकी, लही नि
ज टानी ॥ लही० ॥ कोइ० ॥ २ ॥ अब सुर नर गा
वे गीत, अजब जड लागी ॥ अजब० ॥ जिहां ना
चत नृत्य अनेक, अलसकूं त्यागी ॥ अब मोहत म
न नरपतिका, गगनधुनि गरजे ॥ गग० ॥ ए जिनवर
महिमा अनंत, ध्यान दिल धरजे ॥ एसी अधिक ल
वी जिनजीकी, मेरे मन मानी ॥ मेरे० ॥ कोइ० ॥ ३ ॥
अब जिनचरणोसें रंग, अधिक दिल लागो ॥ अ० ॥
में पेहेख्यो जिन गुण अजब, सुरंगी वागो ॥ आ सफ
ल घडी समकितकी, हाथ अब आइ ॥ हाथ० ॥ में
गगन गमनकी पांख, अमूलक पाइ ॥ अब बोलत

जिनदास, सुनो जिनवानी ॥ सुनो० ॥ कोइ० ॥ ४ ॥

॥ चोथी जीव शिखामणनी लावणी ॥

॥ एक जिनवरका निज नाम, ह्रियामें लेनां ॥ ॥ ह्रिया० ॥ अब लगी लगन जिनवरसें, आप खुश रहेनां ॥ सदा खुश रहेनां ॥ ए आंकणी ॥ अब निरखुं जिन दीदार, दरस कब पाउं ॥ दर० ॥ जगमें जिन वर निज नाम, निरंजन ध्याउं ॥ अब रहे नयन लो लाय, ह्रियो नित्य फरके ॥ ह्रियो० ॥ मोहे जिनदर्शनकी आस, पाप सब सरके ॥ अब सुरपति निरखत रूप, नजर नर नेनां ॥ नजर० ॥ अब० ॥ १ ॥ अब मिट्यो भरण नव नवको, आस मुज पूरो ॥ आस० ॥ में जपुं जिणंदको नाम, मेलुं नही दूरो ॥ ए घनघाति घाले घेर, करम सब चूरो ॥ कर० ॥ में डुर्गति नमतां आयो, आप हजूरो ॥ अब शुन नजरां मुज निरख, मुगति पद देनां ॥ मुग० ॥ अब० ॥ २ ॥ अब हे हीराकी खान, ग्यान निज करणी ॥ ग्यान० ॥ ए मुगति पंथ दातार, सुमतिकी घरणी ॥ अब शुकल ध्यानकी पेडी, चढा नीसरणी ॥ चढा० ॥ एसा जगमें संत सुजान, मुगति पद वरणी ॥ अब आपो मया कर करकें, अमर सुख चेनां ॥ अमर० ॥ अब० ॥ ३ ॥ अब बेठ करुं में मोज, आनंदके घरमें ॥ आ० ॥ में परख्या श्रीजिनराज, जगत कुण नरमें ॥ में डुःख नोगता हे अनंत, करे कुण लेखो ॥ करे० ॥ में अरज करुं तन मनसें, नजर नर देखो ॥ अब बोलत

युं जिनदास, सरव रस वेनां ॥ सरव० ॥ अव० ॥ ४ ॥

✓॥ पांचमी जीव उपदेशनी लावणी ॥

॥ खवर नहीं आ जुगमें पलकी रे ॥ खवर० ॥ सुकृत करनां होय तो कर ले, कोन जाने कलकी ॥ ए आंकणी ॥ या दोस्ती हे जगवासकी, काया मंमल की ॥ काया०॥ सास उसास समर ले साहेब, आयु घटे पलकी ॥ खवर० ॥ १ ॥ तारा मंमल रवी चंद्र मा, सव हे चलनेकी ॥ सव० ॥ दिवस चारका च मत्कार ज्युं, वीजलिया जलकी ॥ खवर० ॥ २ ॥ कूड कपट कर माया जोडी, करि वातां छलकी ॥ करि० ॥ पापकी पोटली बांधी सिर पर, कैसे होय ह लकी ॥ खवर० ॥ ३ ॥ या जुग हे सुपनेकी माया, जैसी बुंदा जलकी ॥ जैसी० ॥ विणसंतां तो वार न लागे, डुनीयां जाये खलकी ॥ खवर० ॥ ४ ॥ मात तात सुत बंधव वाई, सव जुग मतलवकी ॥ सव० ॥ काया माया नार हवेली, ए तेरी कवकी ॥खवर०॥५॥ मन मावत तन चंचल हस्ती, मस्ती हे वलकी ॥ ॥ मस्ती० ॥ सतगुरु अंकुश धरो सीसपर, चल मारग सतकी ॥ खवर० ॥ ६ ॥ जव लग हंसा रहे देहमें, खुशियां मंगलकी ॥ खुशि० ॥ हंसा छोड चल्या जव देही, मटीयां जंगलकी ॥ खवर० ॥ ७ ॥ दया धरम साहेवको समरन, ए वातां सतकी ॥ ए वातां० ॥ राग द्वेष उपजे नही जिनकुं, विनति अखमलकी ॥ख०॥८

तेरी चरण सहेज पर पोढया, आनंद दिल आया ॥
॥ आनं० ॥ मेरी नगी चूख सब प्यास, सुधारस पाया॥
मेरे शिरपर तुम शिरदार, जिनेसर राया ॥ जिने० ॥
में चाहुं चरणकी सेव, सफल कर काया ॥ अब यो
दोलत दरसनकी, मेरे एहि माया ॥ मेरे० ॥ युं अर
ज करे जिनदास, अलप गुन गाया ॥ अब बुरा कु
गुरु उपदेश, धरो मत काना ॥ धरो० ॥ तुम० ॥ ४ ॥

॥ जीवोपदेश लावणी आठमी ॥

॥ सुगुरुकी शीख हिये धरनां रे ॥ सुगुरु० ॥ अ
मरापुरको पंथ सदा, श्रीजैनधर्म करनां ॥ सु० ॥ प
रम परमारथ तें टाल्यो रे ॥ पर० ॥ सार जगतमें
जैनधर्म, जुगतीसें नही पाल्यो ॥ प्रज्ञुको नाम नही
लीनो रे ॥ प्रज्ञु० ॥ महा हलाहल विषय विकट,
मिथ्यामतसें जीनो ॥ चेतन युं बहुविध छुख पावे
रे ॥ चेत० ॥ लपट्यो लालचमांहे पांच, इंडीके सुख
चावे ॥ जीव अब पाप परीहरनां रे ॥ जी० ॥ अमरा
पुर० ॥ १ ॥ दया चेतनकुं सुखकारी रे ॥ दया० ॥ श्री
जिनराज प्ररूपी जैसी, केसरकी क्यारी ॥ जगतमें तीर
थ हे चारी रे ॥ जग० ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका,
हूआं व्रतधारी ॥ इनूंकूं कहियें ब्रह्मचारी रे ॥ इनूं० ॥
समता संयम सार करीने, कर्म हण्यां जारी ॥ इनूंने
मेट्या जनम मरणां रे ॥ इनूं० ॥ अमरा० ॥ २ ॥ पं
चइंद्रियसें लपटायो रे ॥ पंच० ॥ छुख अनंतां सह्यां
...नां, प्राणी पछतायो ॥ बहु छुर्गतिमें नमि आ

यो रे ॥ बहु० ॥ शुभ मंत्र नवकार सार, डुर्लभ अव
में पायो ॥ मेरो मन जिनवरसुं भायो रे ॥ मेरो० ॥
कुगुरुको सब संग अशुभ, मिथ्या मत छटकायो ॥ ३
नविध भवजलसें तरनां रे ॥ इन० ॥ अ० ॥ ३ ॥ र
हो जिनवाणीमें राता रे ॥ रहो० ॥ अनंत सुखकी
खाण, सदा शिव मंगलकी दाता ॥ सदा जिनवर भ
क्ति करजो रे ॥ सदा० ॥ चित्त धारी हैयामें भवि तुम,
पाप परां हरजो ॥ अल्प जिनवरका गुण गाया रे ॥
अल्प०॥ कर जोडि जिनदास कहे, जिन भक्तिसें न्हाया
॥ सदा में चाहुं जिन चरनां रे ॥ सदा० ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ अथ चोवीश दंमकनुं स्तवन प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ वंदी जिन चोवीशने, तसु भाषित श्रुतभेद॥
दंमक पद कही तस थुणुं, अहो भवि सुणो उमेद ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ देशी भटीयाणीनी ॥

॥ साते नरकें एक, भवनपति दस दंमक हो ॥ पुढ
वी आदि पंच जाणीया, विकलेंडीना त्रण ॥ गर्भज
तिरियंचने नर हो, व्यंतर जोईस वेमाणीया ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ ताहारा मेहेला उपर मेह,
फरूखे वीजली ॥ हो लाल फ० ॥ ए देशी ॥

॥ जीव दंमाए ज्यांहि, दंमक नाम जेहनो ॥ हो लाल
॥ दंमक० ॥ संक्षेपें लवलेश, संग्रह करुं तेहनो ॥ हो
लाल ॥ संग्रह० ॥ नरकादिक चोवीश, दंमक पद जे
लहे ॥ हो लाल ॥ दंमक० ॥ दंमाये नही तेह, वाचक
उदय कहे ॥हो लाल ॥ वाच० ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ गौतम समुद्र कुमार रे ॥ ए देशी ॥

॥ शरीरने शरीरनुं मान रे,संघयण ने संज्ञा,संस्थान कषाय लेश्या वली ए ॥ इंद्रिय ने समुद्घात रे, दृष्टि नें दरिसन्न, ज्ञान अने योगावली ए ॥ १ ॥ उपयोग ने उपपात रे, चवन स्थिति पर्यापति, आहार ने संज्ञा त्रिक ए ॥ गति आगति वेद अल्प रे, द्वार चोवीश ए, दंमकप्रत्यें जणो जवि ए ॥ २ ॥

॥ द्वार पहेलुं ॥ढाल चोथी ॥सिद्धचक्र पद॥वंदो एदेशी॥

॥ गर्जज तिर्यंच वाउकाय ने, शरीर कह्यां ठे चार ॥ औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण, नर ने पांच निरधार रे, श्रोता द्वार एणी परें जाणो ॥ बीजा सर्वेने त्रण जाणो,आगम मनमां आणो रे ॥श्रोता०॥१॥

॥ द्वार बीजुं ॥ ढाल पांचमी ॥ सोरठी चालमां ॥वनस्पति विण थावर चार, तनु जघनोत्कृष्ट विचार ॥ अंगुलनो असंख्यातमो जाग, वदे मान एहवुं वीतराग ॥ ॥ १ ॥ बीजे पण दंमक वीशें, जघन्य एमज कह्यो जगदीशें ॥ उत्कृष्टुं कहुं हवे आगें, धनुष पांचशें नारकी जागें ॥ २ ॥ सुरने सात हाथ वखाणुं, जोयण सहस गर्जज तिरिय जाणुं ॥ वनस्पतिनें जाजेरूं, त्रण गाउ नर तेंद्रि जलेरूं ॥ ३ ॥ बेंद्री चौरिंद्रि बार एक, जोयण जाणो सुविवेक ॥ देह उंचपणे ए जणियो, वैक्रिय सूत्रें इम जुणियो ॥४॥ अंगुलनो असंख्यातमो जाग, प्रारंज समय लहो लाग ॥ सुर नरने धिक लाख, जोयण नवशें तिरिय सुजाख ॥ ५ ॥

मूलथी नारकीने बमणुं, अंतर मुहूर्त्त रहे एम पनणुं ॥ तिरि नरने मुहूर्त्त चार, देवने एक पक्ष उदार ॥ ६ ॥

॥द्वार त्रीजुं॥ ढाल छठी॥रह्यो रे आवास डुवार॥ए देशी॥

॥ वज्रऋषननाराच, ऋषननाराच रे, नाराच अर्द्धनाराच ठे रे ॥ किलिका ठेवहुं ए सूत्रें, जिनवर देवें रे, संघयण ठ नाख्यां अठे रे ॥ १ ॥ थावर नारकी देव, असंघयणा रे, ठेवघा विकलेंड्रिया रे ॥ मनुष्य अने तिर्यच, ठ संघयणा रे, समयविषे नि वेदीया रे ॥ २ ॥

॥ द्वार चोथुं ॥ ढाल सातमी ॥ वृषनानु नवनें गई दूती ॥ ए देशी ॥ चार दश संज्ञा हुए सहूनी, आहार नय मैथुन परिग्रहनी ॥ क्रोध मान माया लोन्न लोक, उंघ दशमी संज्ञा थोक ॥ १ ॥

॥ द्वार पांचमुं ॥ ढाल आठमी ॥ सेला मारूनी देशी ॥

॥ समचतुरस्र हो न्यग्रोध निसादिक, वामन कू ब्ज हो हुंमक ए ठ कह्यां ॥ सर्वे सुरने हो पहेलुं होय संस्थान, नर तिर्यचमां हो सघलां ए लह्यां ॥ १ ॥ विकलेंडीनें हो नरकमां हुंमक होय, नानाविध धजहो सूई बुब्बु वणसई ॥ वाउ तेउ हो अपचक्कें ए चार, पुढवी मसुर हो चंदाकारें कही ॥ २ ॥

॥ द्वार ठठुं ॥ ढाल नवमी ॥ सिरोईनो
सेलो हो के ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध मान माया हो के, वली लोन्न सूत्रे लह्या ॥ दंमक चोवीशें हो के, कषाय ए चार कह्या ॥ १ ॥

॥द्वार सातमुं॥ढाल दशमी॥देखीकामिनी दोय॥एदेशी॥

॥ कृष्ण नील कापोत तेजो, पद्म शुकल कही ॥ के तेजो०॥ ए छ लेश्या नर तिर्यंच, गर्भजमां लही ॥ के गर्भ० ॥१ ॥ नारक तेऊ वाउ, के विगल वेमाणी या ॥ के वि० ॥ त्रण त्रण लेश्यावंत, के नीच उच्च जाणीया ॥ के नीच० ॥ २ ॥ ज्योतिषी पांचे मांहे, तेजोलेश्या घणी ॥ के तेजो० ॥ बाकी चउद दंमकें चार, लेश्या सूत्रें नणी ॥ के लेश्या० ॥ ३ ॥

॥ द्वार आठमुं ॥ ढाल अगीयारमी ॥ विंमलीनी देशी ॥

॥ आठमुं ॥ इंडिया द्वार छे, सुगम तेहनो विचार हो ॥ नो नवि नावें लहो ॥ जेहने इंडिय होय जे ती, तेमजगणी लेजो तेती हो ॥ नो नवि० ॥ १ ॥

॥ द्वार नवमुं ॥ ढाल बारमी ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ वेदनाकषायने मरण, वैक्रिय तेजस वली ॥ आहारकने केवलीसात, ए लहो मननी रली ॥ १ ॥ संज्ञी नरने होय सात, तिरि सहु सुर पदें ॥ आहार कने केवल वर्जित, पांच आगम वदे ॥ २ ॥ नारक वाउमां पहेलां चार, बाकी सात दंमकें ॥ वेदनादि पहेलां त्रण होय, कह्यां श्रुतमां जिके ॥ ३ ॥

॥ द्वार दशमुं ॥ ढाल तेरमी ॥ प्रज्जु ताहारो प्रज्जु ताहारो महेर करी मुने जी ॥ ए देशी ॥

॥ विकलेंडी विकलेंडीमांहे दृष्टि बे वदी जी ॥ समकितने समकितने मिथ्या दृष्टि सोय हो ॥ पांच

थावर पांच थावर मिच्छदिट्ठि कह्या जी, बीजा सर्वे बीजा सर्वे त्रिदृष्टि होय हो ॥ विकलें० ॥ १ ॥

॥ द्वार अगीयारमुं ॥ ढाल चौदमी॥सुरती मह्रीनानी ॥

॥ पंच थावर त्रि तिइंडीने, अचक्षु दर्शन एक ॥ चक्षु अचक्षु चउरिंडीने, बे जाणो सुविवेक ॥ १ ॥ चक्षु अचक्षु अवधि, केवल दर्शन चार ॥ नरमां बीजे सर्व दंमकें, केवल विण त्रण धार ॥ २ ॥

॥ द्वार बारमुं ॥ ढाल पंदरमी ॥ कोइ सुध लावे दिनानाथनी ॥ ए देशी ॥

॥ त्रण त्रण सुर तिरि निरयमां, ज्ञान अने अ ज्ञान ॥ थावरमां अज्ञान बे, विकलें दो दो मान ॥१॥ अज्ञान ज्ञान त्यो उलखी, त्रण पंच प्रधान ॥ अनु क्रमें मनुजना कह्या, समजो सावधान ॥ अ० ॥ २ ॥

॥ द्वार तेरमुं॥ढाल शोलमी ॥शारद बुधदायी॥ए देशी ॥

॥ सत्य असत्य ने मिश्र, असत्य मृषा संयोग ॥ मन वचनने योगें, आठ थया ए योग ॥ वैक्रियने आहारक, औदारिक मिश्र सोय ॥ तैजस कार्मण साते, काय तणा योग होय ॥ नारक सुर सहुने, अ नुक्रमें योग इग्यार ॥ तेर तिर्यंचने जाणो, नरने पंदर निरधार ॥ विकलेंडीने चार वली, वायुकायने पंच ॥ त्रण थावरमां जोजो, सिद्धांतें ए संच ॥ १ ॥

॥ द्वार चौदमुं॥ ढाल सत्तरमी॥सोहमपतिजी॥ए देशी॥

॥ त्रण अज्ञानजी, ज्ञान पांचनी आवली ॥ चार दर्शनजी, उपयोग बार सहु मली ॥

॥द्वार सातमुं॥ढाल दशमी॥देखीकामिनी दोय॥एदेशी॥

॥ कृष्ण नील कापोत तेजो, पद्म शुकल कही ॥ के तेजो०॥ ए ब लेश्या नर तिर्यंच, गर्नजमां लही ॥ के गर्न० ॥१ ॥ नारक तेऊ वाउ, के विगल वेमाणी या ॥ के वि० ॥ त्रण त्रण लेश्यावंत, के नीच उच्च जाणीया ॥ के नीच० ॥ २ ॥ ज्योतिषी पांचे मांहे, तेजोलेश्या घणी ॥ के तेजो० ॥ बाकी चउद दंमकें चार, लेश्या सूत्रें नणी ॥ के लेश्या० ॥ ३ ॥

॥ द्वार आठमुं ॥ ढाल अगीयारमी ॥ विंमलीनी देशी ॥

॥ आठमुं ॥ इंड्रिया द्वार बे, सुगम तेहनो विचार हो ॥ नो नवि नावें लहो ॥ जेहने इंड्रिय होय जे ती, तेमजगणी लेजो तेती हो ॥ नो नवि० ॥ १ ॥

॥ द्वार नवमुं ॥ ढाल बारमी ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ वेदनाकषायने मरण, वैक्रिय तेजस वली ॥ आहारकनें केवलीसात, ए लहो मननी रली ॥ १ ॥ संज्ञी नरने होय सात, तिरि सहु सुर पदें ॥ आहार कने केवल वर्जित, पांच आगम वदे ॥ २ ॥ नारक वाउमां पहेलां चार, बाकी सात दंमकें ॥ वेदनादि पहेलां त्रण होय, कह्यां श्रुतमां जिके ॥ ३ ॥

॥ द्वार दशमुं ॥ ढाल तेरमी ॥ प्रज्जु ताहारो प्रज्जु ताहारो महेर करी मुने जी ॥ ए देशी ॥

॥ विकलेंड्री विकलेंड्रीमांहे दृष्टि बे वदी जी ॥ समकितने समकितने मिथ्या दृष्टि सोय हो ॥ पांच

थावर पांच थावर मिछदिठि कह्या जी, बीजा सर्वे बीजा सर्वे त्रिदृष्टि होय हो ॥ विकलें० ॥ १ ॥

॥ द्वार अगीयारमुं ॥ ढाल चौदमी॥सुरती महीनानी ॥

॥ पंच थावर वि तिइंडीने, अचकु दर्शन एक ॥ चकु अचकु चउरिंडीने, बे जाणो सुविवेक ॥ १ ॥ चकु अचकु अवधि, केवल दर्शन चार ॥ नरमां बीजे सर्वे दंमकें, केवल विण त्रण धार ॥ २ ॥

॥ द्वार बारमुं ॥ ढाल पंदरमी ॥ कोइ सुध लावे दिनानाथनी ॥ ए देशी ॥

॥ त्रण त्रण सुर तिरि निरयमां, ज्ञान अने अ ज्ञान ॥ थावरमां अज्ञान बे, विकलें दो दो मान ॥१॥ अज्ञान ज्ञान त्यो उलखी, त्रण पंच प्रधान ॥ अनु क्रमें मनुजना कह्या, समजो सावधान ॥ अ० ॥ २ ॥

॥ द्वार तेरमुं॥ढाल शोलमी ॥शारद बुधदायी॥ए देशी ॥

॥ सत्य असत्य ने मिश्र, असत्य मृषा संयोग ॥ मन वचनने योगें, आठ थया ए योग ॥ वैक्रियने आहारक, औदारिक मिश्र सोय ॥ तैजस कार्मण साते, काय तणा योग होय ॥ नारक सुर सहुने, अ नुक्रमें योग इग्यार ॥ तेर तिर्यचने जाणो, नरने पंदर निरधार ॥ विकलेंडीने चार वली, वायुकायने पंच ॥ त्रण थावरमां जोजो, सिद्धांतें ए संच ॥ १ ॥

॥ द्वार चौदमुं॥ ढाल सत्तरमी॥सोहमपतिजी॥ए देशी॥

॥ त्रण अज्ञानजी, ज्ञान पांचनी आवली ॥ चार दर्शनजी, उपयोग बार सहु मली ॥ मानवमांजी, बा

रे लह्यो मननी रली ॥ देव तिरियने जी, नव नार कने कह्या वली ॥ त्रुटलो ॥ वली पांच कह्या विकलेंडी मांहे, चउरिडीमां बो कह्या ॥ पांच थावरमां त्रण प्रकाश्यां, सूत्र मार्गे सदह्यां ॥ १ ॥

॥ द्वार पंदरमुं उपपातनुं ॥ तथा शोलमुं च्यवननुं ॥ ढाल अढारमी ॥ एक अनोपम शीखामण खरी ॥ ए देशी ॥

॥ गर्भज तिरिय, विगल सुर नारकी ॥ असंख्य संख्याता, ल्यो तमें पारखी ॥ नर संख्याता, असन्नी असंख्याता ॥ तेमज थावर, हवे वणसई ख्याता ॥ ढाल ॥ वनस्पतिमां विख्यात जाणो, अनंता उपजे चवे ॥ उपजे जेता चवे तेता, बीजो भेद नहीं भवे ॥ १ ॥

॥ द्वार सत्तरमुं ॥ ढाल उंगणीशमी॥ काठवानी॥देशी ॥

॥ पुढवी अपने वायु, वनस्पतिमांहे हो, उत्कृष्टुं आयु लह्यो ॥ वरस बावीशने सात, त्रण दश सहस हो, साचुं सद्दहो ॥ १ ॥ त्रण दिवस तेउकाय, नर तिरि केरुं हो, त्रण पल्य सारिखो ॥ सुर निरय सागर तेत्रीश, व्यंतर आयु हो, पल्य एक पारिखो ॥ २ ॥ साधिक पल्य चंद सूर, असुर निकायें हो, सागर जा जेरडूं ॥ पल्य दोयें देशूण, निश्चय जाणो हो, निकाय नव केरडूं ॥ ३ ॥ बे इंडियनु वरस बार, तेंडियनुं दिन हो उंगण पचाश छे ॥ चउरिडियनुं छ मास, अनुक्रमें आयु हो उत्कृष्ट एह छे ॥ ४ ॥ जघन्य आयु एक मुहूर्त्त, पुढवी आदें हो दंमक दशमां कह्यो ॥ सहस वरस प्रमाण, भवनपति नरकें हो, व्यंत

र गति लह्यो ॥ ५ ॥ एक पल्योपम मान, वैमानिक सुरनुं हो, ज्योतीषीनो जाणजो वली ॥ पल्योपमनो आठमो नाग, आगममांहे हो कहे एम केवली ॥६॥

॥ द्वार अढारमुं ॥ ढाल वीशमी ॥ वूठां दल वादल ॥ ए देशी ॥

॥ आहारने शरीर इंद्रिय हो, सासोसास भासा मण ॥ सुर नर तिरि निरयने हो, ए ब पर्याप्ति गण ॥ १ ॥ पांचे थावरमांहे हो, पर्याप्ति चारे कही ॥ वली पंच पर्याप्ति हो, विकलेंडीयमांहे लही ॥ २ ॥

॥ द्वार उंगणीशमुं ॥ ढाल एकवीशमी ॥ राम चंदके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ षट दिशिनो ले आहार, सघला जंतु सदाइ ॥ लोकने खूणे जीव, पंच चार त्रण दिशि तांइ ॥ १ ॥

॥ द्वार वीशमुं ॥ ढाल बावीशमी ॥ राम सीताने धीज करावे रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे संज्ञा त्रण कहेशे रे, दीर्घकालिकी पहेली दीसे ॥ हितोपदेशिकी बीजी रे, दृष्टिवादोपदेशिकी त्रीजी ॥ १ ॥ देवताना दंमक तेर रे, तिर्यंच नारक नहिं फेर ॥ संज्ञा ए पहेली दाखी रे, दीर्घकालिकी सूत्र बे साखी ॥२॥ विकलेंद्रियमां हितोपदेशा रे, संज्ञा रहित थावर अशेषा ॥ नरने पहेली बे भाखी रे, कोईकने त्रीजी ॥ ३ ॥

॥ द्वार एकवीशमुं तथा बावीशमुं॥ गति अगतिनुं॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ धण समरथ पीयु नानडो ॥ ए देशी ॥

॥ पर्याप्ता पंचेंद्रिय जेह, तिर्यंचने मानव मरी तेह ॥ चार निकायमांहे उपजे, सुरनी योनि जाणो ससनेह ॥ १ ॥ गति आगति लहो जीवनी, असंख्याता आउखावंत ॥ पंचेंद्रिय पर्याप्त, तिरियंचने नर ए बे तंत ॥ गति० ॥ २ ॥ तिम पर्याप्ता वली, नू जल ने जे तरु प्रत्येक ॥ अमर मरीने अवतरे, समजो ए पांच पदें सुविवेक ॥ गति० ॥ ३ ॥ संख्या आयु पर्याप्ता, गर्नज नरने तिर्यंच जेह ॥ साते नरकें उपजे, तिहांथी आवे नर तिरियमां तेह ॥ गति०॥४॥ नू जल वणसइ योनिमां, नारकीने वर्जी सर्व जीव ॥ आवी आवी उपजे, निज निज कर्म प्रमाणें सदीव ॥ गति० ॥ ५ ॥ पृथिव्यादिक दश दंमकें, नू जल वणसइना जीव जाय ॥ वली ते दश दंमक विना, तेउ वाउ पण नवि थाय ॥ गति० ॥ ६ ॥ तेऊ वाउ तिम वली, पृथिव्यादिक नव दंमकें जंति ॥ दश पदना विगलेंडियमांहे, विगलेंडी दश पद उपजंति ॥ गति०॥७॥ गर्नज तिरियंच उपजे, मरी चोवीशे दंमक मांय ॥ चोवीश पदना जीव ते, गर्नज मरी तिरियंच थाय ॥ गति० ॥ ८ ॥ चोवीश पदने शिव पदें, मानव मरी सघले जाय ॥ तेऊने वाऊ विना, बावीश पदना मानव थाय ॥ गति० ॥ ए ॥

॥ द्वार त्रेवीशमुं ॥ ढाल चोवीशमी ॥ थांपर वारी ॥
॥ म्हारा साहेबा ॥ ए देशी ॥
॥ गर्भज नर तिरि योनिमां, वेद त्रण्य वखाण्या ॥
स्त्री पुरुष वेद छे देवमां, नव नपुंसक जाण्या ॥ १ ॥
॥ द्वार चोवीशमुं अल्प बहुत्वनुं ॥ ढाल पच्चीशमी ॥
॥ शुं करीयें जो मूलज कूडुं ॥ ए देशी ॥
॥ सहु जीवथी थोडा संसारी, पर्याप्ता मानव निर्धारी ॥ बादर अग्नि वैमानिक देवा, भुवनपति व्यंतर नारक लेवा ॥ १ ॥ ज्योतिषी चौरिंडी पंचेंडी तिरिया, वेंडी तें न्ू जल वाउ कह्दीया ॥ चढते पदें एक एक थकां, असंख्य गुणा लहो अधिकां अधिकां ॥ २ ॥ सहुथी वधता वनस्पति जीव, अनंतगुणा जाणो सदीव ॥ जिनजीयें कह्या नाव में जोया, तुम खिज मत विना नव खोया ॥ ३ ॥
॥ ढाल छवीशमी ॥ सुण करुणानिधि हंसला॥ए देशी ॥
एणी परें चोवीश दंमकें,नवमांहे प्राणी नमियो रे ॥ अनंत चोवीशी वही गई, पण जिन मारग नवि गमियो रे ॥ १ ॥ धन धन दिन म्हारे आजुनो ॥ मुने त्रिजुवन नायक तूठो रे ॥ श्री जिनशासन पामीयो, आज मेह अमीरस वूठो रे ॥ धन० ॥ २ ॥ सत्तर एक्याशियें चैत्रमां, वारु वदि छठ मंगल वार रे ॥ वीतराग एम वीनव्या, सूरत पुर नगर मोझार रे ॥ धन० ॥ ३ ॥ श्रीवासुपूज्य पसाउले, हीररत्न सूरि सान्निध्यें रे ॥ वाचक उदय रतन वदे, ऋद्धि

वृद्धि वाधि सर्व सिद्धें रे ॥ धन० ॥ ४ ॥ राग धन्या श्री ॥ रुषन्न अजित संन्नव अन्निनंदन, सुमति पद्म सुपास जी ॥ चंदप्रन्न सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य विमल जिन खास जी ॥ अनंत धर्म शांति कुंथु अर, मह्नि मुनिसुव्रत नमी नेम जी ॥ पार्श्व वीर चोवीशे प्रणमुं, परम उदय लही प्रेम जी ॥ १ ॥

॥ इति चतुर्विंशति दंमक गर्न्नित श्रीचतुर्विंशति वीतराग स्तवन ॥ ढाल सत्यावीश ॥ गाथा चोशठ छे ॥

॥ अथ श्री आनंदघनकृत चोवीश जिनस्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम श्री रुषन्नजिनस्तवनं ॥

॥ राग मारू॥करम परीक्षाकरण कुमर चल्यो रे ॥ए देशी

॥ रुषन्न जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे,उर न चाहुं रे कंत ॥ रीज्यो साहेब संग न परिहरुं रे, नांगे सादि अनंत ॥ रुषन्न० ॥ १ ॥ प्रीति सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ रुषन्न० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ठ नक्षण करे रे, मलशुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहियें संन्नवे रे, मेलो गम न गय ॥ रुषन्न० ॥३॥ कोइ पति रंजन अति घणं तप करे रे पति रंजन

रे, पूज अखंमित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ ऋषभ० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री अजितजिन स्तवनं ॥

॥ राग आशावरी ॥ मारुं मन मोह्युं रे श्रीविम ॥

॥ लाचलें रे ॥ ए देशी ॥

॥ पंथडो निहालूं रे बीजा जिन तणो रे, अजित अजित गुण धाम ॥जे तें जीत्या रे तेणें हुं जीतियो रे, पुरुष किश्युं मुज नाम॥पंथ० ॥ १॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, नूलो सयल संसार ॥ जेणें नयणें करी मारग जोश्यें रे,नयण ते दिव्य विचार॥पंथ०॥२॥पुरुष परंपर अनुनव जोवतां रे, अंधो अंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे, जो आगमें करी रे, तो चरण धरण नहीं ठाय ॥ पंथ० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहोंचे कोय ॥ अनिमतें वस्तु वस्तुगतें कहे रे, ते विरला जग जोय ॥पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दिव्य नयणतणो रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगें रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार॥ ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लब्धि लही पंथ निहालशुं रे, ए आशा अविलंब ॥ ए जन जीवे रे जिनजी जाणजो रे, आनंदघन मति अंब ॥ पंथ० ॥६ ॥ इति ॥

॥ अथश्रीसंनवजिनस्तवन प्रारंन ॥

॥ राग रामग्री ॥ रातडी रमीने किहांथी ॥

॥ आविया रे ॥ ए देशी ॥

॥ संनवदेव ते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रनु ...

नेद ॥ सेवन कारण पहेली नूमिका, रे, अनय अद्वेष अखेद ॥ संनव० ॥ १ ॥ नय चंचलता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक नाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकीयें रे, दोष अबोध लखाव ॥ संनव० ॥ ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, नव परिणति परिपाक ॥ दोष टले वलि दृष्टि खुले नली रे, प्रापति प्रवचन वाक ॥ संनव० ॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातिक साधुशुं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ संनव० ॥ ४ ॥ कारण जोगें हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज साधीयें रे, ए निज मत उनमाद ॥ संनव० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदरे रें, सेवन अगम अनूप॥ देजो कदाचित् सेवक याचना रे, आनंदघन रस रूप ॥ संनव० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनिनंदन जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग धन्यश्री सिंधुउ ॥ आज निहेजो रे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

॥ अनिनंदन जिन दरिसण तरसीयें, दरिसण ऊर्लन

आगमवादें हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अभि० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आडा अति घणा, तुज दरिसण जगनाथ ॥ धीठाई करी मारग संचरूं, सगूं कोइ न साथ ॥ अभि० ॥ ४ ॥ दरिसण दरिसण रटतो जो फरूं, तो रण रोज समान ॥ जेहने पीपासा हो अमृत पाननी, किम भांजे विषपान ॥ अभि० ॥ ॥ ५ ॥ तरष न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरिसण काज ॥ दरिसण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी, आनंदघन महाराज ॥ अभि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथश्री सुमति जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपण, दरपण जिम अविकार ॥ सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणियें, परिसरपण सुविचार ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनुधर गत आतमा, बहिरातम धुरि भेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, परमातम अविछेद ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ २ ॥ आतम बुद्धें कायादिकें ग्रह्यो, बहिरातम अघरूप ॥ ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखी धर रह्यो, अंतर आतमरूप ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदें हो पूरण पावनो, वर्जित सकल उपाधि ॥ सुग्यानी ॥ अतींद्रिय गुण गण मणि आगरू, इम पर मातम साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ बहिरातम तजी अंतर - रूप थइ थिर भाव ॥ सु०

परमातमनुं हो आतम भाववूं, आतम अर्पण दाव ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आतम अर्पण वस्तु वि चारतां, भरम टले मति दोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे, आनंदघन रस पोष ॥ सु०॥ सु० ॥६॥

अथश्री पद्मप्रभ जिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग मारु ॥ तथा सिंधुउ ॥ चांदलीया संदेशो ॥ कहेजे मारा कंतने रे ॥ ए देशी ॥

॥ पद्मप्रभ जिन तुझ मुझ अंतरू रे, किम भाजे भगवंत ॥ कर्म विपाकें कारण जोइने रे, कोइ कहे मतिमंत ॥ पद्म० ॥ १ ॥ पयइ ठिइ अणुभाग प्रदे शथी रे, मूल उत्तर बहु भेद ॥ घाती अघाती हो बंधू दय उदीरणा रे, सत्ता कर्म विछेद ॥ पद्म० ॥ २ ॥ कनकोपलवत पयडि पुरुष तणी रे, जोडी अनादि स्वभाव ॥ अन्य संजोगी जिहां लगें आतमा रे, सं सारी कहेवाय ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ कारण जोगें हो बंधे बंधने रे, कारण मुगति मूकाय ॥ आश्रव संवर ना म अनुक्रमें रे, हेय उपादेय सुणाय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥ युंजन करणे हो अंतर तुझ पड्यो रे, गुण करणे क री भंग ॥ ग्रंथ उकतें करी पंमित जन कह्यो रे, अं तर भंग सुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥ तुझ मुझ अंतर अं तर भांजशे रे, वाजशे मंगल तूर ॥ जीव सरोवर अ बाधशे रे, आनंदघन रस पूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीसुपार्श्वजिनस्तवन प्रारंभः ॥
॥ राग सारंग ॥ तथा मल्हार ॥ ललनानी देशी ॥
॥ श्रीसुपासजिन वंदियें; सुख संपतिने हेतु ॥ललना॥
शांति सुधारस जलनिधि, भव सागरमांहे सेतु ॥ ल
लना ॥ श्रीसु० ॥ १ ॥ सात महा भय टालतो, स
प्तम जिनवर देव ॥ ललना ॥ सावधान मनसा क
री, धारो जिनपद सेव ॥ ललना ॥ श्रीसु०॥ २ ॥ शि
वशंकर जगदीश्वरू, चिदानंद भगवान ॥ ललना ॥
जिन अरिहा तीर्थंकरू, ज्योति सरूप असमान ॥
॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ३ ॥ अलख निरंजन वछलू,स
कल जंतु विशराम ॥ ल० ॥ अभयदान दाता सदा,
पूरण आतमराम ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥ वीतराग
मद कल्पना, रति अरति भय शोग ॥ ललना ॥ नि
द्रा तंद्रा डुरदशा, रहित अबाधित योग ॥ ललना ॥
श्री सु० ॥ ५ ॥ परम पुरुष परमातमा, परमेश्वर पर
धान ॥ ललना ॥ परम पदारथ परमेष्ठी, परमदेव
परमान ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ६ ॥ विधि विरंचि विश्वं
भरू, रुषीकेश जगनाथ ॥ ल० ॥ अघहर अघ मोच
न धणी,मुक्ति परमपद साथ ॥ ल० ॥ श्रीसु०॥७॥एम
अनेक अभिधा धरे,अनुभव गम्य विचार ॥ल० ॥ जेह
जाणे तेहने करे,आनंदघन अवतार ॥ल०॥श्री०॥८॥
॥ अथ श्रीचंद्रप्रभजिनस्तवनं लिख्यते ॥
॥ राग केदारो ॥ तथा गोडी ॥ कुमरी रोवे आक्रंद करे,
॥ मुने कोइ मुकावे ॥ ए देशी ॥

॥ देखण दें रे सखि मुने देखण दे, चंद्रप्रन्न मुख चंद ॥ सखि० ॥ उपशम रसनो कंद ॥ सखि० ॥ सेवे सुरनर इंद ॥ सखी० ॥ गत कलिमल डुख दंद ॥ सखी॥मु०॥ १ ॥ सुहम निगोदें न देखियो ॥ सखि० ॥ वादर अतिहि विशेष ॥ स० ॥ पुढवी आउ न लेखियो ॥ स० ॥ तेउ वाउ न लेश ॥ स० ॥ २ ॥ वनसपति अति घण दिहा ॥ स० ॥ दीठो नहीय दीदार ॥ स० ॥ वि ति चउरिंदी जल लिहा ॥ स० ॥ गति सन्नी पण धार ॥ स० ॥ ३ ॥ सुर तिरि निरय निवासमां ॥ स० ॥ मनुज अनारज साथ ॥ स० ॥ अपज्जता प्रतिन्नासमां ॥ स० ॥ चतुर न चढीयो हाथ ॥ स० ॥ ४ ॥ एम अनेक थल जाणियें ॥ स० ॥ दरिसण विणु जिन देव ॥ स० ॥ आगमथी मत जाणियें ॥ स० ॥ कीजें निर्मल सेव ॥ स० ॥ ५ ॥ निर्मल साधु नगति लही ॥ स० ॥ योग अवंचक होय ॥ स० ॥ किरिया अवंचक तिम सही ॥ स० ॥ फल अवंचक जोय ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रेरक अवसर जिनवरू ॥ स० ॥ मोहनीय क्षय जाय ॥ स० ॥ कामित पूरण सुरतरू ॥ स० ॥ आनंदघनप्रजु पाय॥स०॥७॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिनस्तवन प्रारंन्नः ॥

॥ राग केदारो ॥ एम धन्नो धणने परचावे ॥ ए देशी ॥

॥ सुविधि जिणेसर पाय नमिने, शुन्न करणी एम कीजें रे ॥ अति घणो उलट अंग धरीने, प्रह उठी पूजीजें रे ॥ सुवि० ॥ १ ॥ इव्य नाव शुचि नाव धरी

ने, हरखें देहरे जश्यें रे ॥ दह तिग पण अहिगम साचवतां, एकमना धुरि थश्यें रे ॥ सु० ॥ २ ॥ कुसुम अक्षत वर वास सुगंधो, धूप दीप मन साखी रे ॥ अंग पूजा पण नेद सुणी एम, गुरु मुख आगम नाखी रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ एहनुं फल दोय नेद सुणीजें, अनंतर ने परंपर रे ॥ आणा पालण चित्त प्रसन्नी, मुगति सुगति सुर मंदिर रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ फूल अक्षत वर धूप पईवो, गंध नैवेद्य फल जल नरी रे ॥ अंग अग्र पूजा मलि अडविध, नावें नविक शुनगति वरी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सत्तर नेद एकवीश प्रकारें, अठोत्तर सत नेदें रे ॥ नाव पूजा बहुविध निरधारी, दोहग डुर्गति ठेदे रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ तुरिय नेद पडिवत्ती पूजा, उपशम खीण सयोगी रे ॥ चउहा पुजा इम उत्तरज्झयणें, नाखी केवल नोगी रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ एम पूजा बहु नेद सुणीनें, सुखदायक शुन करणी रे ॥ नाविक जीव करशे ते लेहेशे, आनंदघन पद धरणी रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ मंगलिक माला गुणह विशाला ॥ ए देशी ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिनंगी, विविध नंगी मन मोहे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥ हानादानरहित परिणामी, उदासीनता वीक्षण रे ॥ शी० ॥ २ ॥

पर डुख बेदन इह्वा करुणा, तीक्ष्ण पर डुख रीझे रे ॥ उदासीनता उजय विलक्षण, एक गमें केम सीझे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अजय दान ते मलक्षय करुणा, तीक्ष्णता गुण जावें रे ॥ प्रेरण विणुं कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिजुवन प्रजुता, निर्ग्रंथता संयोगें रे ॥ योगी जोगी वक्ता मौनी, अनुपयोगि उपयोगें रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु जंग त्रिजंगी, चमतकार चित्त देती रे ॥ अचरिज कारी चित्र विचित्रा, आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसजिन स्तवन प्रारंजः ॥

॥ राग गोडी ॥ अहो मतवाले साजना ॥ ए देशी ॥

॥ श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी, आतमरामी नामी रे ॥ अध्यातम मत पूरण पामी, सहज मुगति गति गामी रे ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥ सयल संसारी इंडियरामी, मुनिगुण आतम रामी रे ॥ मुख्य पणे जे आतम रामी, ते केवल निःकामी रे ॥ श्रीश्रे० ॥ २ ॥ निज स्वरूप जे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहियें रे ॥ जे किरिया करि चउगति साधे, ते न आध्यातम कहियें रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ३ ॥ नाम अध्यातम ठवण अध्यातम, इव्य अध्यातम बंमो रे ॥ जाव अध्यातम निजगुण साधे, तो तेहशुं रढ मंमो रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ॥ ४ ॥ शब्द अध्यातम अरथ सुणीने, निर्विकल्प आदरजो रे ॥ शब्द अध्यातम जजना जाणी, हान

ग्रह्ण मति धरजो रे॥ श्रीश्रे० ॥ ५॥ अध्यातम जे वस्तु विचारी, बीजा जाण लबासी रे॥ वस्तुगतें जे वस्तु प्रकासे, आनंदघन मतवासी रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ६ ॥

॥ अथ वासुपूज्य जिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग गोडी तथा परजीयो ॥ तूंगियागिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

॥ वासुपूज्य जिन त्रिज्जुवन स्वामी, घननामी पर नामी रे ॥ निराकार साकार सचेतन, करम करम फल कामी रे ॥ वासु० ॥ १ ॥ निराकार अन्नेद संग्राहक, नेदग्राहक साकारो रे ॥ दर्शन ज्ञान डुन्नेद चेतना, वस्तु ग्रह्ण व्यापारो रे ॥ वासु० ॥ २ ॥ कर्त्ता परिणामी परिणामो, कर्म्म जे जीवें करियें रे ॥ एक अनेक रूप नय वादें, नियतें नर अनुसरियें रे॥वासु०॥ ॥ ३ ॥ डुख सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक आनंदो रे॥चेतनता परिणाम न चूके,चेतन कहे जिन चंदो रे॥वासु०॥४॥ परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान करम फल नावी रे ॥ ज्ञान करम फल चेतन कहियें, लेजो तेह मनावी रे ॥ वासु० ॥ ५ ॥ आतम ज्ञानी श्रमण कहावे, बीजा तो ड्व्यालिंगी रे ॥ वस्तुगतें जे वस्तु प्रकाशे, आनंदघनमति संगी रे ॥वा०॥६॥इति॥

॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवनं प्रारन्यते ॥

॥ राग मल्हार ॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ डुख दोह्ग दूरें टल्यां रे, सुख संपदशुं नेट ॥ धींग धणी माथे किया रे, कुण गंजे नर खेट ॥ विम

लजिन, दीठा लोयण आज ॥ मारा सीधां वंछित काज ॥ विमलजिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥ चरण कमल क मला वसे रे, निर्मल थिर पद देख ॥ समल अथिर पद परिहरी रे, पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दी०॥ ॥ २ ॥ मुझ मन तुझ पद पंकजें रे, लीनो गुण म करंद ॥ रंक गणे मंदिरधरा रे, इंद चंद नागिंद ॥ ॥ वि० ॥ दी० ॥ ३ ॥ साहिब समरथ तुं धणी रे. पाम्यो परम उदार ॥ मन विशरामी वालहो रे, आ तमचो आधार ॥ वि० ॥ दी० ॥ ४ ॥ दरिसण दी ठे जिन तणुं रे, संशय न रहे वेध ॥ दिनकर कर जर पसरंता रे, अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी०॥५॥ अमीय जरी मूरति रची रे, उपम न घटे कोय ॥ शांति सुधारस झीलती रे, निरखत तृप्ति न होय ॥ ॥ वि० ॥ दी० ॥ ६ ॥ एक अरज सेवक तणी रे, अवधारो जिनदेव ॥ कृपा करी मुझ दीजीयें रे, आ नंदघन पद सेव ॥ वि० ॥ दी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंत जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग रामग्री ॥ देशी कडखानी ॥

॥ धार तरवारनी सोहली दोहली, चउदमा जि नतणी चरण सेवा ॥ धार पर नाचतां देख वाजीग रा, सेवना धार पर रहे न देवा ॥ धा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एक कहे सेवियें विविध किरिया करी, फल अनेकांत लोचन न देखे ॥ फल अनेकांत किरि करी वापडा. रडवडे चार गतिमांहे लेखे ॥ धा० ॥

॥ २ ॥ गन्नना नेद बहु नयण नीहालतां, तत्त्वनी वात करतां न लाजे ॥ उदर नरणादि निज काज करतां थकां, मोह नडिया कलिकाल राजें ॥ धा० ॥ ॥ ३ ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार जूगे कह्यो, वचन सापेक्ष व्यवहार साचो ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल, सांनली आदरी कांइ राचो ॥ धा० ॥ ॥ ४ ॥ देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे, केम रहे शुद्ध श्रद्धान आणो ॥ शुद्ध श्रद्धान विणु सर्व किरिया करी, गर पर लीपणुं तेह जाणो ॥ धा० ॥ ॥ ५ ॥ पाप नही कोइ उत्सूत्र नापण जिस्युं, धर्म नही कोइ जग सूत्र सरिखो ॥ सूत्र अनुसार जे न विक किरिया करे, तेहनुं शुद्ध चारित्र परिखो ॥ ॥ धा० ॥ ६ ॥ एह उपदेशनो सार संक्षेपथी, जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे ॥ ते नरा दिव्य बहु काल सुख अनुनवी, नियत आनंद घन राज पावे ॥ धा० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीधर्मजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग गोडी सारंग ॥ रसीयानी देशी॥

॥ धर्मजिनेसर गाउं रंगशुं, नंग म पडशोहो प्रीत ॥ जिनेसर ॥ बीजो मनमंदिर आणुं नही, ए अम कुलवट रीत ॥ जिनेसर ॥ धर्म० ॥ १ ॥ धरम धरम करतो जग सहु फिरे, धरम न जाणे हो मर्म ॥ जि०॥ धरम जिनेसर चरण ग्रह्या पछी.कोइ न बांधे हो कर्म ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ २ ॥ प्रवचन अंजन जो सद्गुरु करे, देखे परम निधान ॥ जि० ॥ हृदय नयण नि

हाले जग धणी, महिमा मेरु समान ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ दोडत दोडत दोडत दोडीयो, जेती मननी रे दोड ॥ जि० ॥ प्रेम प्रतीत विचारो ढूकडी, गुरुगम लेजो रे जोड ॥ जि० ॥ ध० ॥ ४ ॥ एक पखी केम प्रीति वरे पडे, उनय मिल्या हुए संधि ॥ जि० ॥ हुं रागी हुं मोहें फंदियो, तुं नीरागी निरबंध ॥जि० ॥ ध० ॥ ५ ॥ परम निधान प्रगट मुख आगलें, जगत उलंघी हो जाय ॥ जि० ॥ ज्योति विना जुर्ड जगदीशनी, अंधो अंध पलाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ६ ॥ निर्मल गुण मणि रोहण नूधरा, मुनिजन मानस हंस ॥ जि० ॥ धन ते नगरी धन वेला घडी, माता पिता कुलवंश ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ मन मधुकर वर कर जोडी कहे, पदकज निकट निवास ॥ जि० ॥ घन नामी आनंदघन सांजलो, ए सेवक अरदास॥जि०॥धर्म०॥८

॥ अथ श्रीशांतिजिनस्तवन प्रारंनः ॥

॥ राग मल्हार ॥ चतुर चोमासुं पडिक्कमी ॥ ए देशी ॥

॥ शांति जिन एक मुफ वीनति, सुणो त्रिनुवन राय रे ॥ शांति सरूप किम जाणियें, कहो मन परखाय रे ॥ शांति० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ धन्य तुं आतमा जेहने, एहवो प्रश्न अवकाश रे ॥ धीरज मन धरी सांजलो, कहुं शांति प्रतिनास रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ नाव अविशुद्ध सुविशुद्ध जे, कह्या जिनवर देव रे ॥ ते तेम अवितथ सद्दहे, प्रथम ए शांति पद सेव रे ॥ शांति० ॥ ३ ॥ आगमधर गुरु समकित्ती,

किरिया संवर सार रे ॥ संप्रदायी अवंचक सदा, शु
चि अनुजवाधार रे ॥ शांति० ॥४ ॥ शुद्ध आलंबन आद
रे, तजी अवर जंजाल रे ॥ तामसी वृत्ति सवि परि
हरी, जजे सात्विकी शाल रे ॥ शांति० ॥ ५ ॥
फल विसंवाद जेह्मां नही, शब्द ते अर्थ संबंधि रे ॥
सकल नय वाद व्यापी रह्यो, ते शिव साधन संधि रे
॥ शांति० ॥ ६ ॥ विधि प्रतिषेध करि आतमा, प
दारथ अविरोध रे ॥ ग्रहण विधि महाजनें परिग्र
ह्यो, इस्यो आगमें बोध रे ॥ शांति० ॥ ७ ॥ दुष्ट ज
न संगति परिहरी, जजे सुगुरु संतान रे ॥ जोग सा
मर्थ्य चित्त जावजे, धरे मुगति निदान रे ॥ शांति० ॥
॥ ८ ॥ मान अपमान चित्त सम गणे, सम गणे क
नक पाखाण रे ॥ वंदक निंदक सम गणे, इस्यो हो
ये तुं जाण रे ॥शांति० ॥ ए ॥ सर्व जगजंतुने सम ग
णे, गणे तृण मणि जाव रे ॥ मुक्ति संसार बेहु स
म गणे, मुणे जवजल निधि नाव रे ॥ शांति० ॥
॥ १० ॥ आपणो आतमजाव जे, एक चेतनाधार
रे ॥ अवर सवि साथ संयोगथी, एह निज परिकर
सार रे ॥ शांति० ॥ ११ ॥ प्रजु मुखथी एम सांज
ली, कहे आतमराम रे ॥ ताहरे दरिसणें निस्तस्यो,
मुफ सीधां सवि काम रे ॥ शांति० ॥ १२ ॥ अहो
अहो हुं मुफने कहुं, नमो मुफ नमो मुफ रे ॥ अमित
फल दान दातारनी, जेहनो जेट थइ तुफ रे ॥ शां
ति० ॥ १३ ॥ शांति सरूप संक्षेपथी, कह्यो निज

पररूप रे ॥ आगममांहे विस्तर घणो, कह्यो शांति जिन नूप रे ॥ शांति० ॥ १४ ॥ शांति सरूप एम नावशें, धरी शुद्ध प्रणिधान रे ॥ आनंदघन पद पामशे, ते लेहेशे बहु मान रे ॥ शांति० ॥ १५ ॥

॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवन प्रारंनः ॥

॥ राग गुर्जरी ॥ अंबर देहो मुरारी, हमारो० ॥ ए देशी ॥

॥ कुंथुजिन मनडुं किमही न बाजे हो ॥ कुं० ॥ जिम जिम जतन करीने राखूं, तिम तिम अलगुं नाजें हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसति उजड, गयण पायालें जाय ॥ साप खायने मुखडुं थोथुं, एह उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ मुगति तणा अनिलाषी तपीया, ज्ञानने ध्यान अन्यासें ॥ वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते, नाखे अवले पासें हो ॥ कुं० ॥ ३ ॥ आगम आगमधरने हाथें, नावे किणविध आंकूं ॥ किहां कणे जो हव करी हटकूं, तो व्याल तणी परें वांकूं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं, शाहुकार पण नांही ॥ सर्व मांहे ने सहुथी अलगुं, ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे जे कहुं ते कान न धारे, आप मतें रहे कालो ॥ सुर नर पंमित जन समजावे, समजे न माहारोसालो हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाएयुं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ छे नर, एहने कोइ न जेले हो ॥ कुं० ॥ [illegible] ॥ [illegible] तेणें सघलुं साध्युं, एह वा[illegible] हे साध्युं

ते नवि मानुं, ए कहि वात छे महोटी हो ॥कुं०॥ ८॥ मनडुं डुराराध्य तें वश आणुं, ते आगमथी मति आ णुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरुं आणो, तो साचुं करी जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग परज ॥ रूपभनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

॥ धरम परम अरनाथनो, केम जाणुं भगवंत रे ॥ स्वपर समय समजावियें, महिमावत महंत रे ॥ ध० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शुद्धातम अनुभव सदा, स्वस मय एह विलास रे ॥ परवडी छांहडी जेह पडे, ते परसमय निवास रे ॥ ध० ॥ २ ॥ तारा नक्षत्र ग्रह चंदनी, ज्योति दिनेश मकार रे ॥ दर्शन ज्ञान चरण थकी, शकति निजातम धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भारी पीलो चीकणो, कनक अनेक तरंग रे ॥ पर्याय दृष्टि न दीजियें, एकज कनक अभंग रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ द रिसन ज्ञान चरणथकी, अलख सरूप अनेक रे ॥ निर्विकल्प रस पीजियें, शुद्ध निरंजन एक रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ परमारथ पंथ जे कहे, ते रंजे एक तंत रे ॥ व्यवहारें लख जे रहे, तेहना भेद अनंत रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ व्यवहारें लखे दोहिला, कांइ न आवे हाथ रे ॥ शुद्धनय थापना सेवतां, नवि रहे डुविधा साथ रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ एकपखी लखि प्रीतिनी, तुम साथें जगनाथ रे ॥ कृपा करीने राखजो, चरण तलें ग्रही हाथ रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ चक्री धरम तीरथ तणो,

तीरथ फल तत सार रे ॥ तीरथ सेवे ते लहे, आनंद घन निरधार रे ॥ध०॥ ए ॥ इति अरनाथस्तवनम् ॥

॥ अथ श्रीमल्लिजिन स्तवन प्रारंभः ॥ रागकाफी ॥

॥ सेवक किम अवगणियें हो, मल्लिजिन ॥ एह अब शोभा सारी ॥ अवर जेहने आदर अति दीये, तेहने मूल निवारी हो ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ ज्ञान स्वरूप अनादि तुमारुं, ते लीधुं तुमें ताणी ॥ जुर्ज अज्ञान दशा रीसावी, जातां काण न आणी हो ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ निद्रा सुपन जागर उजागरता, तुरिय अवस्था आवी ॥ निद्रा सुपन दशा रीसाणी, जाणी न नाथ मनावी हो ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ समकेत साथें सगाई कीधी, सपरिवारशुं गाढी ॥ मिथ्यामति अपराधण जाणी, घरथी बाहिर काढी हो ॥ मल्लि० ॥ ॥ ४ ॥ हास्य अरति रति शोक डुगंछा, भय पामर क रसाली ॥ नोकषाय श्रेणी गज [illegible] ं, श्वान तणी गति जाली हो ॥ मल्लि० ॥ [illegible] द्वेष अविरति

योगी ॥ नोगोपन्नोग दोय विघन निवारी, पूरण न्नोग सुन्नोगी हो ॥ मल्लि० ॥ ए ॥ ए अढार दूषण वर्जित तनु,मुनिजन वृंदें गाया ॥ अविरति रूपक दोषनिरूपण, निर्दूषण मन न्नाया हो ॥मल्लि०॥१०॥ इणविध परखी मन विशरामी,जिनवर गुण जे गावे॥ दीनबंधुनी म्हेर नजरथी, आनंदघन पद पावे हो ॥ म० ॥ ११॥

॥ अथ श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग काफी ॥ आघा आम पधारो पूज्य ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन राय, एक मुऊ विनति निसुणो ॥मु० ॥ आतम तत्त्व क्युं जाण्युं जगत गुरु, एह विचार मुऊ कहियो ॥ आतम तत्त्व जाण्या विण निरमल, चित्त समाधि नवि लहियो ॥ मुनि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ अबंध आतम तत माने, किरिया करतो दीसे ॥ क्रियातणुं फल कहो कुण न्नोगवे, इम पूछ्युं चित रीशें ॥ मुनि० ॥ २ ॥ जडचेतन ए आतम एकज, स्थावर जंगम सरिखो ॥ डुःख सुख संकर दूषण आवे, चित विचारी जो परिखो ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ एक कहे नित्यज आतम तत, आतम दरिसण लीनो ॥ कृत विनाश अकृतागम दूषण, नवि देखे मतिहीणो ॥ मु० ॥ ४ ॥ सौगत मतिरागी कहे वादी, क्षणिक ए आतम जाणो ॥ बंध मोख सुख डुःख न घटे, एह विचार मन आणो ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ नूत चतुष्क वर्जित आतम तत, सत्ता अलगी न घटे ॥ अंध शकट जो नजर न देखे,

तीरथ फल तत सार रे ॥ तीरथ सेवे ते लहे, आनंद घन निरधार रे ॥ध०॥ ए ॥ इति अरनाथस्तवनम् ॥

॥ अथ श्रीमल्लिजिन स्तवन प्रारंभः ॥ रागकाफी ॥

॥ सेवक किम अवगणियें हो, मल्लिजिन ॥ एह अब शोभा सारी ॥ अवर जेहने आदर अति दीये, तेहने मूल निवारी हो ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ ज्ञान स्वरूप अनादि तुमारुं, ते लीधुं तुमें ताणी ॥ जुर्ड अज्ञान दशा रीसावी, जातां काण न आणी हो ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ निद्रा सुपन जागर उजागरता, तुरिय अवस्था आवी ॥ निद्रा सुपन दशा रीसाणी, जाणी न नाथ मनावी हो ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ समकेत साथें सगाई कीधी, सपरिवारशुं गाढी ॥ मिथ्यामति अपराधण जाणी, घरथी बाहिर काढी हो ॥ मल्लि० ॥ ॥ ४ ॥ हास्य अरति रति शोक डुगंछा, भय पामरक रसाली ॥ नोकषाय श्रेणी गज चडतां, श्वान तणी गति जाली हो ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ राग द्वेष अविरतिनी परिणति, ए चरणमोहना योधा ॥ वीतराग परिणति परिणमतां, उठी नाग बोधा हो ॥ मल्लि० ॥६॥ वेदोदय कामा परिणामा, काम्य करम सहु त्यागी ॥ निःकामी करुणा रस सागर, अनंत चतुष्क पद पागी हो ॥ मल्ली० ॥ ७ ॥ दान विघन वारी सहु जनने, अभय दान पद दाता ॥ लाभ विघन जग विघन निवारक, परम लाभ रस माता हो ॥ मल्लि० ॥ ८ ॥ वीर्य विघन पंमित वीर्यें हणी, पूरण पदवी

योगी ॥ जोगोपजोग दोय विघन निवारी, पूरण जोग सुजोगी हो ॥ मल्लि० ॥ ए ॥ ए अढार दूषण वर्जित तनु,मुनिजन वृंदें गाया ॥ अविरति रूपक दोपनिरूपण, निर्दूषण मन जाया हो ॥मल्लि०॥१०॥ इणविध परखी मन विशरामी,जिनवर गुण जे गावे॥ दीनबंधुनी महेर नजरथी, आनंदघन पद पावे हो ॥ म० ॥ ११॥

॥ अथ श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग काफी ॥ आघा आम पधारो पूज्य ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन राय, एक मुज विनति निसुणो ॥मु० ॥ आतम तत्त्व क्युं जाण्युं जगत गुरु, एह विचार मुज कहियो ॥ आतम तत्त्व जाण्या विण निरमल, चित्त समाधि नवि लहियो ॥ मुनि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ अबंध आतम तत माने, किरिया करतो दीसे ॥ क्रियातणुं फल कहो कुण जोगवे, इम पूछ्युं चित्त रीसें ॥ मुनि० ॥ २ ॥ जडचेतन ए आतम एकज, स्थावर जंगम सरिखो ॥ डुःख सुख संकर दूषण आवे, चित्त विचारी जो परिखो ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ एक कहे नित्यज आतम तत, आतम दरिसण लीनो ॥ कृत विनाश अकृतागम दूषण, नवि देखे मतिहीणो ॥ मु० ॥ ४ ॥ सौगत मतिरागी कहे वादी, क्षणिक ए आतम जाणो ॥ बंध मोख सुख डुःख न घटे, एह विचार मन आणो ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ भूत चतुष्क वर्जित आतम तत, सत्ता अलगी न घटे ॥ अंध शकट जो नजर न देखे,

अंतरंग बहिरंगें रे ॥ अक्षरन्यास धरा आधारक, आ राधे धरी संगें रे ॥ पट० ॥ ५ ॥ जिनवरमां सघलां द रिसण छे, दर्शन जिनवर जजना रे ॥ सागरमां सघली तटिनी सही, तटिनीमां सागर जजना रे ॥ पट० ॥ ॥ ६ ॥ जिनस्वरूप थई जिन आराधे, ते सही जिन वर होवे रे ॥ नृंगी ईलिकाने चटकावे, ते नृंगी जग जोवे रे ॥ पट० ॥ ७ ॥ चूर्णी नाष्य सूत्र निर्युक्ति, वृत्ति परंपर अनुजव रे ॥ समय पुरुषनां अंग कह्यां ए, जे छेदे ते डुर्नव रे ॥ पट० ॥ ८ ॥ मुद्रा वीज धा रणा अक्षर, न्यास अरथ विनियोगें रे ॥ जे ध्यावे ते नवि वंचीजें, क्रिया अवंचक नोगे रे ॥ पट० ॥ ए ॥ श्रुत अनुसार विचारी बोलुं, सुगुरु तथा विधि न मिले रे ॥ किरिया करी नवि साधी शकीयें, ए विप वाद चित्त सघले रे ॥ पट० ॥ १० ॥ ते माटे उन्ना कर जोडी, जिनवर आगल कहीयें रे ॥ समय चरण सेवा शुद्ध देजो, जेम आनंदघन लहीयें रे॥प०॥११॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग मारूणी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ अष्ट नवंतर वालही रे, तुं मुफ आतमराम ॥ मनरा वाला ॥मुगति स्त्रीशुं आपणे रे, सगपण कोइ न काम ॥ म० ॥ १ ॥ घर आवो हो वालम घर आ वो, म्हारी आशाना विशराम ॥ म०॥ रथ फेरो हो साजन रथ फेरो, साजन म्हारा मनोरथ साथ ॥ ॥ म० ॥ २ ॥ नारी पखो श्यो नेहलो रे, साच कहे

जगनाथ ॥ म० ॥ ईश्वर अरधंगें धरी रे, तुं मुज ज
ले न हाथ ॥ म० ॥ ३ ॥ पशु जननी करुणा करी रे
आणी हृदय विचार ॥ म० ॥ माणसनी करुणा न
ही रे, ए कुण घर आचार ॥ म० ॥ ४ ॥ प्रेम क
पतरु छेदीयो रे, धरियो जोग धतूर ॥ म० ॥ चतुर
इरो कुण कहो रे, गुरु मिलियो जग सूर ॥ म० ॥
॥ ५ ॥ मारुं तो एमां क्युंही नही रे, आप विचा
राज ॥ म० ॥ राजसजामें बेसतां रे, किसडी बंधर
लाज ॥ म० ॥ ६ ॥ प्रेम करे जग जन सहु रे, नि
र्वाहे ते उर ॥ म० ॥ प्रीत करीने छोडी दे रे, तेहशु
न चाले जोर ॥ म० ॥ ७ ॥ जो मनमां एहवुं हतु
रे, निसपत करत न जाण ॥ म० ॥ नसपत कर
ने छांमतां रें, माणस हुवे नुकशान ॥ म० ॥ ८ ॥
देतां दान संवत्सरी रे, सहु लहे वंछित पोप ॥ म० ॥
सेवक वंछित नवि लहे रें, ते सेवकनो दोष ॥ म० ॥
॥ ए ॥ सखी कहे ए शामलो रे, हुं कहुं लक्षण सेत
॥ म० ॥ इण लक्षण साची सखी रे, आप विचार
हेत ॥ म० ॥ १० ॥ रागीशुं रागी सहु रे, वैरागी
श्यो राग ॥ म० ॥ राग विना किम दाखवो रे, मुगति
सुंदरी माग ॥ म० ॥ ११ ॥ एक गुह्य घटतूं नथी रे,
सघलोई जाणे लोक ॥ म० ॥ अनेकांतिक जोगवो
रे, ब्रह्मचारी गतरोग ॥ म० ॥ १२ ॥ जिण जो
णी तुमने जोउं रे, तिण जोणी जोवो राज ॥ म० ॥
वार मुजने जुउ रे, ॥ म० ॥

॥ १३ ॥ मोहदशा धरी जावना रे, चित्त लहे तत्त्व विचार ॥ म० ॥ वीतरागता आदरी रे, प्राणनाथ निरधार ॥ म० ॥ १४ ॥ सेवक पण ते आदरे रे, तो रहे सेवक माम ॥ म० ॥ आशयसाथें चालीयें रे, एहीज रूडुं काम ॥ म० ॥ १५ ॥ विविध योग धरी आदस्यो रे, नेम नाथ जरतार ॥ म० ॥ धारण पोषण तारणो रे, नव रस मुगता हार ॥ म० ॥ १६ ॥ कारणरूपी प्रजु जज्यो रे, गण्युं न काज अकाज ॥ ॥ म० ॥ कृपा करी मुफ दीजीयें रे, आनंदघन पद राज ॥ म० ॥ १७ ॥ इति द्वाविंशतिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ समकेतनुं स्तवन प्रारंज ॥

॥ समकित द्वार गंजारे पेसतां जी, पाप पमल गयां दूर रे ॥ माता मरु देवीनो लाडिलो जी, दीगं आनंद पूर रे ॥ सम० ॥ १ ॥ आयु वर्जित सात कर्मनी जी, सागर कोडा कोडी हीन रे ॥ स्थिति प्रथम करणें करी जी, वीर्य अपूर्व मोघर लीन रे ॥ सम० ॥ २ ॥ जुंगल जांगी आदि कपायनी जी, मिथ्या मोहनी सांकल साथ रे ॥ वार उघाड्यां स्वामी संवेगनां जी, दीठा श्री अनुजव जवियण नाथ रे ॥ सम० ॥ ३ ॥ तोरण बांध्यां जीवदया तणां जी, साथीयो पूस्यो श्रद्धा रूप रे ॥ धूप घटा प्रजु गुण अनुमोदना जी, दीप मंगल आठ अनूप रे ॥ सम० ॥ ४ ॥ संवर पाणीयें अंग पखालियां जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतमरुचि मृग मद महमहे जी, पंचा

चार कुसुम प्रधान रे ॥ सम० ॥ ५ ॥ भावें पूजो रे पावन आतमा जी, पूजो परमेसर परम पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजे जी, क्षमाविजय जिन आगम रीत रे ॥ सम० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वीरभगवाननुं स्तवन ॥

॥ श्रीसीधारथ नंदन देवा, प्रभु सेव करुं नित्य मेवा ॥ देजो मुझ भव भव सेवा ॥ जगत गुरु वीर परम उपगारी ॥ प्रभु करुणा निधि दातारी ॥ जगत० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ शोल पहोर प्रभु देशना वरसे, सांभली भवि हृदयमां धरशे ॥ तोरा चरण कमल नित्य फरसे ॥ ज० ॥ २ ॥ ब्राह्मण देवशर्मा जाणे, प्रतिवोधवा मोकलिया ते टाणे ॥ गौतम चाल्या गुण खाणे ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रतिवोधीने पाछा वलिया मारग मांहे श्रवणे सांभलिया ॥ प्रभु मोक्ष मारग संचरिया ॥ ज० ॥ ४ ॥ ते सांभली दिलमां वात, गौतमने थाये वज्रघात ॥ विवेकें गुण मणि ख्यात ॥ ॥ ज० ॥ ५ ॥ हवे केहने हुं कहीश वीर, गौतम चिंतवे साहस धीर ॥ कर्म शत्रुना त्रोड्या जंजीर ॥ ॥ जग० ॥ ६ ॥ काती कृष्ण हुआ निर्वाण, प्रभाते इंद्रभूति केवल नाण ॥ जयो जयो भणे गुण खाण ॥ ज० ॥ ७ ॥ अढार देशना राजा मलिया, भाव दीपक मोक्षमां भलिया ॥ द्रव्य दीपक गुणमणि भरिया ॥ ज० ॥ ८ ॥ प्रभु वरिया शिव लटकाली, धरयुं ध्यान पद्मासन वा[illegible] दीवाली

॥ ज० ॥ ए ॥ मुज मंदिर सुरतरु फलियो, परमातम गौतम मलियो, गई नावठ शुन्नदिन वलियो ॥ ज० ॥ ॥ १० ॥ संवत उगणीश पचलोतेरा वर्षे, दीवाली दिन मन हर्षे ॥ प्रज्ञु मोक्ष वख्या शुन्न दिवसें ॥ ज० ॥ ११ ॥

॥ अथ कलियुगनी स्वाध्याय ॥

॥ सरसती सामिनी पाय नमीने, उलट मनमांहे आयो ॥ तीरथ नहिं कोइ इण संसारे, तेणे ए कलियुग आयो ॥ देखो वे यारो कूडो कलियुग आयो ॥ ए आंकणी ॥ बावो कहे महारी नानडी बेटी, दिन दिन मूल्य सवायो ॥ वे यारो कूडो कलियुग आयो ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम चलायो ॥ बोल बंध नही मंत्रीने, गोचर खेत्र खेडायो ॥ वे यारो कू० ॥ २ ॥ गुरुने गाल दीये निज चेलो, वेद पुराण पढायो ॥ सासु चूलेने वहु खाटलडे, फूकें शरीर जलायो ॥ वे यारो कू० ॥ ३ ॥ एंशी वर्षनो डोसे होंशें, मूछें हाथ घलायो ॥ पंच तणी साखें परणीने, अवला अर्थ गमायो ॥ वे यारो कू० ॥ ४ ॥ जोगी जंगम ने संन्यासी, नांग नखे मदवायो ॥ चोर चाड परधनने खाये, साधुजन सीदायो ॥ वेयारो कू० ॥ ॥ ५ ॥ निर्धनने वहु बेटा बेटी, धनवत एक न पायो ॥ नीच तणे घर अति घणी लखमी, उत्तम जन सीदायो ॥ वे यारो कू० ॥ ६ ॥ न मले बाप संघाते बेटो, घणे रे मनोर्थे जायो ॥ हाथ उपाडे माय नें मारे, परणीशुं उमाह्यो ॥ वे यारो कू० ॥ ७ ॥ घर

डाने घहेलो कहे वेटो, आप तणो मद वाह्यो ॥ वहू सूती ने वर हिंमोले, सासरे सूवाने धरायो ॥ वे यारो कू० ॥ ७ ॥ हल खेडे वांजण गो जुत्ति, निर्दय नाक फडायो ॥ मा वापें वेटी वेचीने, वेटाने पर णायो ॥ वे यारो कू० ॥ ए ॥ राग तणे वश गुरुने गुरुणी, काम करे परायो ॥ कांगानी पेरें कलहो मां मी, कुलगुरु नाम धरायो ॥ वे यारो कू० ॥ १० ॥ बेयर वार वरसनीने वेटो, दीठो गोद खेलायो ॥ मा ग्या मेह न वरसे महीयल, लाजें धरव्यो सवायो ॥ वें यारो कू० ॥ ११ ॥ कूडा कलियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो ॥ पन्नणे प्रीतिविमल परमारथ, जिन वचनें सुख पायो ॥ वे यारो कू० ॥१२॥इति ॥

॥ अथ जंबूस्वामीनी सद्याय प्रारंनः ॥

॥ सरसति सामिणी वीनवुं, सद्गुरु लागुंजी पाय॥ गुण रे गाशुं जंबु स्वामीना, हरख धरी मन मांय ॥ ॥ १ ॥ धन धन धन जंबु स्वामीने ॥ए आंकणी ॥ चा रित्र ठे वत्स दोहिलुं, व्रतठे खांमानी धार॥पाये अणु आणेजी चालवुं, करवोजी उग्रविहार ॥ धन० ॥ २॥ मध्यान्ह पठी करवी गोचरी, दिनकर तपे रे निलाड ॥ वेलु कवल समा कोलिया, ते किम वाल्या रे जाय ॥ ॥ धन० ॥ ३ ॥ कोडी नवाणुं सोवन तणी, तमा रे ठे आठे जी नार ॥ संसार तणां सुख सुख्यां नही, नोगवो नोग रसाल ॥ धन० ॥ ४ ॥ रामें सीताने नोगडे, वहोत किया रें संग्राम ॥ ठती रे नारी

तुमें कांइ तजो, कांइ तजो धन ने धाम ॥ धन० ॥ ५ ॥ परणीने शुं जी परिहरो, हाथ मल्यानो संबंध ॥ प ठीने करशो स्वामी उंरतो, जिम कीधो मेघमुणिंद ॥ ॥ धन० ॥ ६ ॥ जंबू कहे रे नारी सुणो, अम मन संयम नाव ॥ साचो सनेह करी लेखवो, तो संयम ल्यो अम साथ ॥ ध० ॥ ७ ॥ तेणे समे प्रनवोजी आवियो, पांचशें चोर संघात ॥ तेने पण जंबुस्वामियें बूऊव्या, बुऊव्या माय ने बाप ॥ धन० ॥ ८ ॥ सा सु ससराने बूऊव्या, बुऊवी आठे नार॥पांचशें सत्तावी शशुं, लीधोजी संयम नार॥धन०॥ए॥सुधर्मास्वामी पा से आविया, विचरे ठे मनने उल्लास ॥ कर्मखपावी के वल पामीया,पोहोताजी मुक्ति मोऊार॥ ध० ॥ १ ॥

॥ अथ एकादशीनी सझाय प्रारंनः ॥

॥ आज महारे एकादशी रे, नणदल मौन करी मुख रहियें ॥ पूठयानो पडुत्तर पाठो, केहने कांइ न कहियें ॥ आ० ॥ १ ॥ माहारो नणदोइ तुऊने वाल्हो, मुऊने ताहारो वीरो ॥ धूआडाना बाचका नरतां, हाथ न आवे हीरो ॥ आज० ॥ २ ॥ घरनो धंधो घणो कर्यो पण, एक न आव्यो आडो ॥ परनव जातां पालव जाले, ते मुऊने देखाडो ॥ आ० ॥ ३ ॥ मागशिर शुदि अगीयारश महोटी, नेवुं जिनना निर खो ॥ दोढशो कल्याणिक महोटां, पोथी जोइने हरखो ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुव्रत शेठ थयो शुद्ध श्राव क, मौन धरी मुख रहीयो ॥ पावक पूर सघलो पर

जाव्यो, एहनो कांई न दहीयो ॥ आ० ॥ ५ ॥ आठ पहोर पोसा ते करियें, ध्यान प्रज्ञुनुं धरियें ॥ मन व च काया जो वश करियें, तो नव सायर तरियें ॥ आ० ॥ ६ ॥ ईर्या समिति नापा न बोले, आडुं अवलुं पेखे ॥ पडिकमणाशुं प्रेम न राखे, कहो के म लागे लेखे ॥ आ० ॥ ७ ॥ कर उपर तो माला फिरती, जीव फरे मनमांही ॥ चितडुं तो चिहुंदिशि मोले, इणे नजने सुख नांही ॥ आ० ॥ ८ ॥ पोप ध शालें नेगां थइने, चार कथा वली सांधे ॥ कांइक पाप मिटावण आवे, बारगणुं वलि बांधे ॥ आ० ॥ ए ॥ एक उठंती आलस मोडे, बीजी उंघे वेठी ॥ नदियोमांथी कांइक निसरती, जइ दरियामां पेठी ॥ आ० ॥ १० ॥ आई बाई नणंद नोजाई, न्हानी मोहोटी वहूने ॥ सासु ससरो मा ने मासी, शीखा मण ले सहुने ॥ आ० ॥ ११ ॥ उदय रतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी रहेशे ॥ पोसामांहे प्रेम धरी ने, अविचल लीला लेशे ॥ आ० ॥ १२ ॥

॥ अथ वैराग्यसज्झाय ॥ मनन्नमरानी देशीमां ॥

॥ उंचा मंदिर मालीयां, सोड्य वालीने सूतो ॥ काहाडो काहाडो एने सहु करे, जाणे जनम्योज नो तो ॥ १ ॥ एक रे दिवस एवो आवशे, मने सबलो जी साले ॥ मंत्री मल्या सर्वे कारिमा, तेनुं कांइन चाले ॥ एक रे दिवस० ॥ ए आंकणी ॥ साव सोनांनां रे सांक लां पहेरण नव नवा वाघा ॥ धोलं रे वस्त्र एना

कर्मनुं, तेतो शोधवा लागा ॥ एक रे० ॥ २ ॥ चरु कढाईया अति घणा, बीजानुं नही लेखुं ॥ खोखरी हांमी एना कर्मनी, तेतो आगल देखुं ॥ एक रे० ॥ ॥ ३ ॥ केनां छोरु ने केनां वाछरु, केनां माय ने वाप ॥ अंतकालें जावुं जीवने एकलुं, साथें पुण्यने पाप ॥ एकरे० ॥ ४ ॥ सगीरे नारी एनी कामिनी, उभी ट ग मग जूवे ॥ तेनुं पण कांइ चाले नही, वेठी धूसके रुवे ॥ एक रे०॥५॥ वाल्हां ते वाल्हां शुं करो,वाल्हां वो लावी वलशे ॥ वाल्हां ते वननां लाकडां,तेतो साथें जी वलशे ॥ एक रे० ॥ ६ ॥ नही तापी नही तुंबडी, नथी तरवानो आरो ॥ उदयरतन प्रज्जु इम जणे, म ने पार उतारो ॥ एक रे० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ अमल वर्जन स्वाध्याय ॥ कंत तमाकू परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिनवाणी मन धरी, सद्गुरु दीये उपदेश ॥ मेरे लाल ॥ बावीश अन्नक्षमांहे कह्युं, अमल अन क्ष विशेष ॥ मे० ॥ अमल म खाजो साजनां ॥ १॥ अमल विगोवे तन्न ॥ मे० ॥ उंघ बगासां घेरणी, आवे आखो दिन्न ॥ मे० ॥ अ० ॥ २ ॥ अमली अमलने सारिखो, आवे आनंद थाय ॥ मे० ॥ उतरतां आर ति घणी, धीरज जीव न धराय ॥ मे० ॥ अ० ॥ ॥३॥ आलस ने उजागरो, वेगो ढवकां खाय ॥ मे० ॥ अकल न कांइ उपजे, धर्म कथा न सुणाय ॥ मे० ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ काला अहिथी उपनुं, नामें जे

हिफीण ॥ मे० ॥ संग करे कोण एहनो, पंमित लो
क प्रवीण ॥ मे० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पहेलुं मुख कडवुं
हुए, वली घांटो घेराय ॥ मे० ॥ उदर व्यथा नि
त्य आफरो, इणथी अवगुण थाय ॥ मे० ॥ अ० ॥
॥ ६ ॥ नाक वंधायें वोलतां, आधुं वचन वोलाय
॥ मे० ॥ अमीय सुकाये जीन्नतुं, एहनी खाय वला
य ॥ मे० ॥ अ० ॥ ७ ॥ दाढीने मूछांदिशि, उगे
नही अंकूर ॥ मे० ॥ काया काली मश हुए, गाव
डी गाले नूर ॥ मे० ॥ अ० ॥ ८ ॥ पलक अवेरुं
जो लीए, तो आतम अकुलाय ॥ मे० ॥ नाक चूए
नयणां फरें, काम करी न शकाय ॥ मे० ॥ अ० ॥
॥ ए ॥ अधविच मारगमां पडे, जीवन मृत्यु समा
न ॥ मे० ॥ हाथ पगोनी नस गले, अमली आवी
शान ॥ मे० ॥ अ० ॥ १० ॥ आगराई आगे कह्यो,
मालवी मांहे चेल ॥ मे० ॥ आप इस्युं सखरुं नही,
मिशरीशुं मन मेल ॥मे०॥अ०॥ ११॥ नवटांक जे नर
जीरवें, तसु अहि विष न जणाय ॥ मे० ॥ अमल
घणुं खाधाथकी, कंदर्प वल मिट जाय ॥ मे०॥अ०॥
॥१२॥ अमलीने उन्हुं रुचे, टाढुं नावे दाय ॥मे० ॥
खोन्नी रोटी खांम घी,उपर दूध सुहाय ॥ मे० ॥अ०॥
॥ १३ ॥ कुलवंती जे कामिनी, जाणे जुगति सुजाण
॥मे०॥ वस्तु वेची क्लिण करी, अमलीने दीए आण
॥मे०॥अ०॥१४॥ प्रीतम आशा पूरती,न करे रीश ल
गार ॥मे०॥ कथन न लोपे कंतनुं,ते विरली संसार ॥मे०

॥अ०॥१५॥ डुर्नागणी नारी जिका, वोले कर्कश वाणी ॥ मे० ॥ रे रे अधम अफीणिया, आलसवत अजाण ॥ मे० ॥ अ० ॥ १६ ॥ परणी जाई पारकी, शुं कीधुं तें धीठ ॥ मे० ॥ पोतानुं पण पेट ए, निठुर नराय न नीठ ॥ मे० ॥ अ० ॥ १७ ॥ कान कोट नूपण सहु, वेची खाधुं तेह ॥ मे० ॥ निर्लज तुफ घरवासमां, कहे सुख पाम्युं जेह ॥ मे० ॥ अ० ॥ ॥ १८ ॥ अमल समो असुगो नहीं, मानो ए मुफ शीख ॥ मे०॥ वाले सुंदर देहडी, अंतें मगावे नीख ॥ ॥ मे० ॥ अ०॥ १९ ॥ दालिड्रीने दोहिलुं, सूर उग्यानुं शाल ॥ मे० ॥ श्रीमंतने पण नहीं नलुं, जोतां ए जंजाल ॥ मे० ॥ अ०॥ २० ॥ सासु वहु वढतां ठतां, रीशें अमल नखंत ॥ मे० ॥ वालक खाये अजाणतां, जो घर अमल हवंत ॥ मे० ॥ अ० ॥ २१ ॥ प्राणी वध जिणशुं हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ मे० ॥ कर्मादान दशमुं कह्यु, विप व्यापार पमूर ॥ मे० ॥ अ० ॥ ॥ २२ ॥ चतुर विचार ए चित्त धरी, कीजें अमल परिहार ॥ मे० ॥ खिमाविजय पंमित तणो, कहे माणिक मनोहार ॥ मे० ॥ अ०॥ २३ ॥ इति ॥

अथ

॥ श्रीजिनहर्षजीकृत पांचमा आरानी सद्याय ॥

॥ वीर कहे गौतम सुणो, पांचमा आराना नाव रे ॥ डुखीया प्राणी अति घणा, सांनल गौतम स नाव रे ॥ वीर० ॥ १ ॥ सहेर होशे रे गामडां, गाम

होशे समशान रे ॥ विण गोवाळें रे धण चरे, ज्ञानी नहिनिरवाण रे ॥वीर०॥ २ ॥ मुज केडे कूमति घणा, होशे ते निरधार रे ॥ जिनमतिनी रुची नवी गमे, थापशे निजमति सार रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ कुमति जाजा कदाग्रही, थापशे आपणा बोल रे ॥ शास्त्र मारग सवि मूकशे, करशे जिन मत मोल रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ पाखंमी घणा जागशे, नांगशे धरमना पंथ रे ॥ आगम मत मरडी करी, करशे नवा वली ग्रंथ रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ चारणीनी परें चालशे, धर्म न जाणे लेश रे ॥ आगम शाखाने टालशे, पालशे निज उपदेश रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ चोर चरड बहु लागशे, बोली न पाले बोल रे ॥ साधुजन सीदायशे, डर्जन बहुला मोल रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ राजा प्रजाने पीडशे, हिंमशे निरधन लोक रे ॥ माग्या न वरसशे मेहुला, मिथ्या होशे बहु थोक रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ संवंत उगणीश चौदोत्तरे, होशे कलंकी राय रे ॥ मात ब्राह्मणी जाणीयें,बाप चंमाल कहेवाय रे ॥वीर०॥ए॥ ब्यासी वरपनुं आउखुं, पाम्लीपुरमां होशे रे ॥ तसु सुत दत्त नामें नलो, श्रावककुल शुन पोपे रे ॥ ॥ वीर० ॥ १० ॥ कोतुकी दाम चलावशे, चर्म तणा ते जोय रे ॥ चोथ लेशे निक्षा तणी, महा अकरा कर होय रे ॥ वीर० ॥ ११ ॥ इंद्र अवधियें जोयतां, देखशे एह स्वरूप रे ॥ द्विज रूपें आवी करी, हणशे कलंकी नृप रे ॥ वीर०॥१२॥

इंड सुर लोकें जाय रे ॥ दत्त धरम पाले सदा, नेटशे शेत्रुंज गिरिराय रे ॥ वीर० ॥ ॥ १३ ॥ पृथ्वी जिन मंमित करी, पामशे सुख अपार रे ॥ देंव लोकें सुख नोगवे, नामें जयजयकार रे ॥ वीर० ॥ १४ ॥ पांच मा आराने ठेडले, चतुर्विध श्रीसंघ होशे रे ॥ ठहो आ रो वेसतां, जिनधर्म पहिलो जाशे रे ॥ वीर० ॥१५॥ वीजे अग्नि जागशे, त्रीजे राय न कोय रे ॥ चोथे प्रहरे लोपना, ठहे आरे ते होय रे ॥ वीर० ॥१६॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ ठहे आरे मानवी, बिलवासी सवि होय ॥ वीश वरसनुं आनखुं, पटवर्षे गर्नज होय ॥ ॥ १७ ॥ सहस चोराशी वर्षपणे, नोगवशे नवि कर्म ॥ तीर्थंकर होशे नलो, श्रेणिक जीव सुधर्म ॥ ॥ १८ ॥ तसु गणधर अति सुंदरु, कुमारपाल नूपा ल ॥ आगम वाणी जोइने, रचीयां रयण रसाल ॥ ॥ १ए ॥ पांचम आराना नाव ए, आगमें नाख्या वीर ॥ ग्रंथ वोल विचार कह्या, सांनलजो नवि धीर ॥ २० ॥ नणतां समकित संपजे, सुणतां मं गल माल ॥ जिनहर्षे कही जोड ए, नाख्यां वयण रसाल ॥ २१ ॥ इति पांचमा आरानी सवाय ॥

॥ अथ मरुदेवाजीनी सवाय ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ तुऊ साथे नही वोलुं रे रुखनजी. तें मुऊने वीसारी जी ॥ अनंत ज्ञाननी तुं रुद्धि पाम्यो. तो जननी न संनारी जी ॥ तु० ॥ १ ॥ मुऊने मोह ह तो तुऊ उपर, रुपन्न रुपन्न करी जपती जी ॥ अन्न

उदक मुझने नवि रुचतुं,तुझ मुख जोवाने तृपती जी ॥ तु० ॥ २ ॥ तुं वेगो शिर छत्र धरावे, सेवें सुर नर नारी जी ॥ तो जननीने केम संजारे, जाणी जाणी प्रीति तहारी जी ॥ तु० ॥ ३ ॥ तुं कहेनो ने हुं वली कहेनी, नथी इहां कोइ कहेनुं जी ॥ ममता मोह धरे जे मनमां, मूर्ख पणुं सहि तेहनुं जी ॥ तु० ॥ ४ ॥ अनित जावनायें चढया मरु देव्या, वेगां गयवर खंधो जी ॥ अंतगड केवली थइ गया मुक्तें, रुषजने मन आणंदो जी ॥ तु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीखामणनी सघाय ॥

॥ श्रीगुरु चरण पसाउले, कहिशुं शीखामण सार॥ मन समजावो रे आपणुं, जिम पामो जव पार ॥१॥ कहे जाइ रूडुं तें शुं कखुं,आतमने हितकार॥ इह जव परजव सुख घणां, लहियें जय जय कार ॥ कहे०॥२॥ लाख चोराशी योनि तुं जमि, पाम्यो नर अवतार॥ देव गुरु धर्म न उलख्या, न जप्यो मन नवकार ॥ कहे० ॥ ३ ॥ नव मसवाडा उदर धस्यो, पाली पोढो रे कीध॥ माय ताय सेवा कीधी नहीं, न्यायें मन नवि दीध ॥ कहे० ॥ ४ ॥ चाडी कीधी रे चोतरें, दंजाव्यां जलां लोक ॥ साधु सहुने संतापिया, आल चढाव्यां तें फोक ॥ कहे० ॥ ५ ॥ लोजें लाग्यो रे प्राणीयो, न गणे रात ने दीस ॥ हाहो करतां रे एकलो, जई हाथ घशीश ॥ कहे० ॥ ६ ॥ कपट छल जेद ते कस्यां, जांख्या परना रे मर्म ॥ साते व्यसनने सेवियां, नवि

कीधो जिनधर्म ॥ कहे० ॥ ७ ॥ क्षमा न कीधी तें खांतशुं, दया न कीधी रेख ॥ परवेदन तें जाणी नहीं, तो शुं लीधो तें नेख ॥ कहे० ॥ ७ ॥ संध्यारंग सम आउखुं, जल पंपोटो रे जेम ॥ मान अणी उपर बिंडुउं, अथिर संसार छे एम ॥ कहे० ॥ ए ॥ अनंतअनंतकाय वावस्यां, पीधां अणगल नीर ॥ रात्रि नोजन तें कस्यां, कम पामीश नवतीर ॥ कहे० ॥ १० ॥ दान शीयल तप नावना, धर्मना चार प्रकार ॥ ते तें नावें न आदस्या, रजलीश अनंतो संसार ॥ कहे० ॥ ११ ॥ पांचे इंडी रे पापिणी, डुर्गति घाले छे जेह ॥ तेतो मेली रे मोकली, किम पामिश शिव गेह ॥ कहे० ॥ १२ ॥ क्रोधें वींट्यो रे प्राणीयो, मान न मूके रे केड ॥ माया सापणीने संग्रही, लोनने लीधो तें तेड ॥ कहे० ॥ १३ ॥ पररमणी रस मोहियो, परनिंदानो रे ढाल ॥ परडव्य तें नवि परिहस्युं, परने दीधी रे गाल ॥ कहे० ॥ १४ ॥ धर्मनी वेला तुं आलसु, पाप वेला उजमाल ॥ संच्युं धन कोइ खायशे, जिम मध माखी मधुआल ॥ कहे० ॥ १५ ॥ मेली मेली मूकी गया, जे उपार्जी रे आय ॥ संचय कीजें रे पुण्यनो, जे आवे तुऊ साथ ॥ कहे० ॥ १६ ॥ शुद्ध देव गुरु उलखी, कीजें समकित शुद्ध ॥ मिथ्या मति दूरे करी, राखी निरमल बुद्ध ॥ पाठांतरें ॥ गुरु शिखामण ए सही, ए जाणो हित बुद्धि ॥ कहे० ॥ १७ ॥ गोडीदास संघवी तिणे, आदरें कीध सद्याय ॥ शांति

विजय उवद्यायनो,रूपविजय गुण गाय ॥ क० ॥१८॥

॥ अथ नेमिनाथजिन स्तवनं ॥

॥ सुनो मेरे नेमजी प्यारे, ड्गनसें मत रहो न्यारे ॥ सुनो० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पचरंगी पाग सिर सोहीयें, गले फूल माल मन मोहियें ॥ सुनो० ॥ २ ॥ दया करी दरिसन मुझ दीजें, मया करी अपनो कर लीजें ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ जिनदास वंदा हे तेरा, लगा जिनराजसें नेडा ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन ॥

॥ लाल तेरे नैनोकी गत न्यारी, एतो उपशम रसकी क्यारी ॥ लाल तेरे० ॥ए आंकणी ॥ काम क्रोधादि दोष रहितसें, नयन भये अविकारी ॥ निड्रा सुपन दिशा नही यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल० ॥१॥ और नैनुंमें काम क्रोध है, बहोत भरी हे खुमारी॥परधनादि हरनकी इछा,एही है हुशियारी ॥लाल० ॥२॥एता लक्षण हे नैनुंमें, क्युं पामे भव पारी॥और विचार करो दिल अपने,ए तो है करमुसें भारी ॥लाल० ॥३॥धर्मबिना कोइ सरणां नही है, ऐसो निश्चय दिल धारी ॥ विनय कहे प्रभु भक्ति कर ले, एहि हे तारणहारी ॥ लाल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन पूजानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ गोकुल मथुरां रे वाहला ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिशला नंदन रे देहें, रचीयें पूजा अधिक सनेहें ॥ नवनव भातें रे करीयें, जिम भव सायर हे

लें तरीयें ॥ चेतन प्यारा रे म्हारा, जिन पूजा करि लहो न्नवपारा ॥ चेतन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नमण करीयें रे मन रंगें, चर्चो केशर प्रज्ञु नव अंगें ॥ फूलनी फुटरी रे माला, कंठ ठवो पंच रंग रसाला ॥ चेतन० ॥२॥ धूप दीप रे मनोहार,अक्षत नैवेद्य फल सुरसाल॥श्रीजिनवरजी जग शरणगार, गावो गीत ज्ञान मनोहार ॥ चेतन० ॥३॥ दरिसण चरणने रे नाण, तप ए चउहा पूजा जाण ॥ आराधक तेहने रे कहीयें, पूजा द्वादश न्नेदें लहीयें ॥ चेतन० ॥४॥ पादोपगमन पद धारी, वरिया जिन उत्तम शिवनारी॥तस पद पद्मने रे वंदो,रूपविजय पद लही आनंदो ॥चे०॥५॥

॥ अथ नेमराजुल स्तवनं ॥

॥ मत जाउ रे पिया तुमें पाहाडमां ॥ पाहाडमां पाहाडमां पाहाडमां ॥ मत०॥ तुम तो कहो हम नारी त्यागी, किम जाउ गिरनारिमां ॥ म० ॥ १ ॥ ठकाय के रक्षक हो तुम, तो केम जाउ जाडिमां ॥ म० ॥ २ ॥ कठिन गिरिवरकी वांकी टूंको, वसवु जह कजाडिमां ॥ म० ॥ ३ ॥ राजिमतीकी वीनति मानो, रहेवुं संघनी हारमां ॥ म० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, नेम मग्न न्नयो संजम न्नारमां ॥म०॥५॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥ राग काफी ॥

॥ म्हारा सामलीयानी वात रें, हुं केहने पूठुं ॥ म्हारा० ॥ जेने पूठुं ते दूर बतावे, पिया विन रह्यो न जाय रे ॥ हुं०॥ म्हा० ॥१ ॥ तोरण आए चले रथ

फेरी, पद्मुअन सुणी पोकार रे॥ ढुं० ॥ मद्दा० ॥ आंव
मोस्या केसुडां फूल्यां, आयो मास वसंत रे ॥ ढुं० ॥
मद्दा०॥२॥ दाडुर मोर वपैया रे बोले, कोयल शब्द
सुणावे रे ॥ ढुं० ॥ मद्दा० ॥ ऋरमर ऋरमर मेहुला रे
बरसे, बुंद पडे रंग रोल रे ॥ ढुं० ॥मद्दा० ॥३ ॥ लख्यो
संदेशो पिया मिलवेको, कोइ वटाव न जाय रे ॥ ढुं० ॥
मद्दा० ॥ ऋद्धि कुशल बुध शिष्य इम जंपे, वालम
ध्यान धराय रे ॥ ढुं० ॥ मद्दा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नीडनंजन जिन स्तवनं ॥

॥ जिनराज जोवानी तक जाय ठे रे, खरां दुःख
डां खोवानी तक जाय ठे रे ॥ हलुकर्मि होवानी त
क जाय ठे रे, नगवंत नज्यानी तक जाय ठे रे ॥ व
हु लोन्नें ते लान्न लूंटाय ठे रे ॥ जिन० ॥ १ ॥ डुनि
या रंग दोरंगी दीसे, पलक पलक पलटाय ठे रे ॥
॥ जि० ॥ खोटे नरोंसे खोटी थावुं, गांठनो ग्रंथ लुं
टाय ठे रे ॥ जि० ॥ २ ॥ सज्जन सगां सहु स्वार
थ सूधी, गरजें घहेलां थाय ठे रे ॥ जिन० ॥ पुण्य
विना एक परन्नव जातां, संसारी सीदाय ठे रे ॥
॥ जि० ॥ ३ ॥ रामा रामा धन धन करतो, धव
धव जिहां तिहां धाय ठे रे ॥ जि० ॥ कनक अने
बीजी कामिनी लुब्धा, केई प्राणी कूटाय ठे रे ॥जि०॥
॥ ४ ॥ पंच विषयना प्रवाहमांहे, तृष्णा पूरें तणा
य ठे रे॥ जि० ॥ नाव सरिखा नायने मूकी, पापने

वसतां, परमाधामी पासें जाय बे रे ॥ जि० ॥ जिन मारग विण जमनो जोरो, कह्योने केणें जीताय बे रे ॥ ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीसद्‌गुरुने उपदेशें, सधो जवेरी जणाय बे रे ॥ जि० ॥ पाखंमसांहे पड्या जे प्राणी, काचमलामां कहेवाय बे रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ नीडनं जन प्रनु पास जिनेसर, पूजतां पाप पलाय बे रे ॥ ॥ जि० ॥ उदयरत्ननो अंतरजामी, बूडतां वांहे साहे बे रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ त्रेशठ शिलाका पुरुषनुं प्रनातीयुं ॥

॥ चोपाईनी देशीमां ॥

॥ प्रह समे प्रणमुं सरसति माय, वली सद्‌गुरुने लागुं पाय ॥ त्रेशठ शिलाकानां कहुं नाम, नाम जपंतां सिके काम ॥ १ ॥ प्रथम चोवीश तीर्थंकर जाण, तेह तणे हुं करीश प्रणाम ॥ रुपन्न अजित ने संनव स्वाम, चोथा अनिनंदन अनिराम ॥ २ ॥ सुमति पदमप्रन पूरे आस, सुपार्श्व चंद्रप्रन द्ये सुख वास ॥ सुविधि शितलने श्रेयांस नाथ, ए बे साचा शिवपुर साथ ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जिन विमल अनंत, धर्म शांति कुंथु अरिहंत ॥ अर मल्लि मुनि सुव्रत स्वाम, एहथी लहियें मुक्ति सुठाम ॥ ४ ॥ नमी नाथ नेमीसर देव, जस सुर नर नित सारे सेव ॥ पार्श्वनाथ महावीर प्रसिद्ध, तूठा आपे अविचल रिद्ध ॥ ५ ॥ हवे नाम चक्रवर्त्ती तणां, बार चक्री जे शास्त्रे नण्या ॥ पहेलो चक्री नरत नरेश, सुखें सा

ध्या जिणें पट खंम देश ॥ ६ ॥ बीजो सगर नामें भूपाल, त्रीजो मघव राय सुविशाल ॥ चोथो कहीयें सनतकुमार, देव पदवी पाम्या छे सार ॥ ७ ॥ शांति कुंथु अर त्रणे राय, तीर्थंकर पण पद कहेवाय ॥ सुभूम आठमो चक्री थयो, अति लोभें करी नरकें गयो ॥ ८ ॥ महापद्म राय बुद्धि निधान, हरिषेण दशमो राजान ॥ अग्यारमो जय नाम नरेश, बारमो ब्रह्मदत्त चक्रेश ॥ ९ ॥ ए बारे चक्रीसर कह्या, सूत्र सिद्धांतथकी में लह्या ॥ हवे वासुदेव कहुं नवनाम, त्रण खंम जेणें जीत्या गाम ॥ १० ॥ वीर जीव प्रथम त्रिपृष्ठ, बीजो नृप जाणो द्विपृष्ठ ॥ स्वयंभू पुरुषोत्तम महाराय, पुरुषसिंह पुरुष पुंमरिक राय ॥ ११ ॥ दत्त नारायण कृष्ण नरेश, ए नव हवे बलदेव विशेष ॥ अचल विजय भद्र सुप्रभ भूप, सुदर्शन आनंद नंदन रूप ॥ १२ ॥ पद्म राम ए नव बलदेव, प्रतिशत्रु नव प्रतिवासुदेव ॥ अश्वग्रीव तारक राजेंद्र, मेरक मधु निशुंभ बलेंद्र ॥ १३ ॥ प्रल्हाद ने रावण जरासंध, जीत्यां चक्र बलें तस संध ॥ त्रेशठ संख्या पदवी कही, माता एकशठ ग्रंथें लही ॥ १४ ॥ पिता बावनने शाठ शरीर, उगणशाठ जीव महावीर ॥ पंच वरण तीर्थंकर जाण, चक्री सोवन वान वखाण ॥ १५ ॥ वासुदेव नव शामल वान, उज्ज्वल तनु बलदेव प्रधान ॥ तीर्थंकर मुक्ति वस्या, आठ चक्री साथें संचस्या ॥ १६ ॥ बल

देव आठ वली तेनी साथ, शिवपद लीधुं हाथो हा थ ॥ मघवा सनतकुमार सुर लोक, त्रीजे सुख विल से गतशोक ॥ १७ ॥ नवमो बलदेव ब्रह्म निवास, वासुदेव सहु अधोगति वास ॥ अष्टमो बारमो चक्री साथ, प्रतिवासुदेव समा नरनाथ ॥ १७ ॥ सुरवर सुख शाता जोगवी, नारकी डुःख व्यथा अनुनवी ॥ अनुक्रमें कर्म सैन्य जय करी, नर वर चतुरंगी सुख वरी ॥ १ए ॥ सद्गुरु जोगें क्षायिक नाव, दर्शन ज्ञान नवोदधि नाव ॥ आरोही शिव मंदिर वसे, अ नंत चतुष्टय तव उह्लसे ॥ २० ॥ लेशे अक्षय पद नि र्वाण, सिद्ध सवे मुज द्यो कल्याण ॥ उत्तम नाम जपो नर नार, स्वरूपचंद लहे जय जयकार ॥ २१ ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवन ॥ निंदडीनी देशी ॥

॥ उलंग अजित जिणंदनी, नवि कीधी हो जेणें एक वार के ॥ दश उपनय करी दोहिलो, पाम्यो पण हो एलें अवतार के ॥ उलंग० ॥ १ ॥ असासय सासय इस्यो, कोइ कुमति हो देखाडे संद के ॥ पुत्र पिता गुरु शिष्यनो, केम तेहने हो घटशे संबंध के ॥ उलंग० ॥ २ ॥ अक्षरथी जेम ज्ञाननो, गुण प्रगटे हो टले सयल विरुद्ध के ॥ तिम वाहाला जिनजी तणा, दरिसणथी हो होय दंसण शुद्ध के ॥ उलंग० ॥ ३ ॥ परम साधन जिन सेवना, कोइ तेहमां हो कहे हिंसा दोष के ॥ गमन अशन गुरु वंदना, जल क्रमणादि हो किम क्रियापोष के ॥ उलंग० ॥ ४ ॥

म ॥ तेहनी कूखें अवतस्या, अजित जिनेसर स्वाम ॥ २ ॥ साडा रे चारशें धनुषनी, कंचन वर्णी काय ॥ बहोंतेर लाख पूर्व आउखं, श्रीजिनवरनी आय ॥ ३ ॥ पुण्यसंयोगें हुं पामियो, तमने श्रीजिनराज ॥ पाप गयां सर्वे माहरां, फलिया मनोरथ आज ॥ ४ ॥ दीन दयाल दया करी, देजो अविचल राज॥ नितलान कहे प्रनु माहरां, सारजो वंछित काज ॥५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ संदेशो जइ लावे वागड देशनो रे ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ साहेबा श्री संखेसर पासजी, प्रनुजी नवोदधि तरण जहाज ॥ संदेशो सुणजो वामानंदजी ॥ साहिबा धारक तारक विरूदनो, प्रनुजी अहो अहो गरीब निवाज ॥ संदेशो० ॥१॥ साहिबा अतीत चोवीशीमा वर्तता,प्रनुजी दामोदर नगवंत ॥सं०॥ साहिबा तेसजी जीव गणधर तेणें,प्रनुजी बिंब नराव्यो गुणवत॥सं०॥ ॥२॥ साहिबा ध्यान धर्यु जब आपनुं, प्रनुजी श्रीशंखेश्वर राय ॥ सं० ॥ साहिबा प्रगट थया पातालथी, प्रनुजी विघ्न हर्यां सहु जाय ॥ सं० ॥ ३ ॥ साहिबा जनम मरण नय सवि हरो,प्रनुजी तो ए उपद्रव कुण मात्र ॥ सं० ॥ साहिबा इंद चंद नागेंदथी, प्रनुजी रूप अनंतगणुं गात्र ॥ सं० ॥४॥ साहिबा प्रातिहार्य सवि सुंदरू, प्रनुजी शोनित गुण गण वृंद ॥ सं० ॥ साहेबा सुरपति नरपति मुनिवरा, प्रनुजी सेवित पद ...िंद ॥ सं० ॥ ५ ॥ साहिबा अहोनिशि पदकज से

वना, प्रभुजी चाहुं हुं दरिस देदार ॥ सं० ॥ साहेबा दीपविजय कहे दीजियें,प्रभुजी तुम दरिसन सुखकार ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथनी स्वाध्याय ॥

॥ साते वारनी देशीमां ॥

॥ तोरण आवी कंत, पाछावलिया रे ॥ मुज फर के दाहिण अंग, तेणें अटकलिया रे॥ १ ॥ कुण जो शीयें जोया जोष, चुगल कुण मलिया रे ॥ कुण अव गुण दीठ आज, जिणथी टलिया रे ॥ २ ॥जाउं जा उं रे सहियरो दूर, शाने छेडो रे ॥ पातलीयो श्यामल वान,वालिम तेडो रे ॥ ३ ॥ यादव कुल तिलक समा न,एम न कीजें रे ॥ एक हांसुं ने वीजी हाण,केम खमी जें रे ॥४॥ इहां वाये जाजो समीर,वीज झबूकेरे ॥वापै यो पीउ पोकारे, हैयडुं चमके रे ॥ ५ ॥ झर पावें दाडर सोर,नदीयो माती रे॥घन गर्जारवने जोर,फाटे छाती रे॥६॥हरितांशुक पहेर्यां भूमि,नवरस रंगें रे॥वा वलीया नवरस हार,प्रीतम संगे रे॥७॥में पूरण कीधां पाप, तापें दाधी रे ॥ पडे आंसुधार विपादें, वेलडी वाधी रे ॥ ८ ॥ मुने चडावी मेरु शीग, पाडी हेठी रे ॥ केम सहेवाये महाराज, विरह अंगीठी रे ॥९॥ मुने परणी प्राण आधार, संयम लेजो रे ॥ हुं पतिव्र ता हु स्वामी, साथे वहेजो रे ॥ १० ॥ इम आठे भ वनी प्रीत, पिउडा वलशे रे ॥ मुज मनना मनोरथ नाथ, पूरण फलशे रे ॥ ११ ॥ हवे चार महाव्रत सा

र, चुंदडी दीधी रे ॥ रंगीली राजुलनारें, प्रेमें लीधी रे ॥ १२ ॥ मैत्र्यादिक नावना चार, चोरी बांधी रे॥ देइ ध्यानानल सलगाय, कर्म उपाधि रे ॥ १३ ॥ थ यो रत्नत्रयी कंसार, एकी नावें रे ॥ आरोगे नर ने नार, शुद्ध स्वनावें रे ॥ १४ ॥ तजी चंचलता त्रिक योग, दंपती मलियां रे॥श्री खिमाविजय जिन नेम, अनुनव कलिया रे ॥ १५ ॥

॥ अथ केशरीयाजीनुं स्तवन ॥

॥ प्रनुनी मूरति मोहन वेलडी, जी तुमारी मूरति मोहन वेलडी ॥ चालो सखी धुलेवे रे जइयें, प्रनुनी सामरी सूरत छे सेलडी ॥ जी तु० ॥ १ ॥ केशर चंदन नखां रे कचोलां, प्रनुजीनी पूजा करुं सहु पहेलडी ॥ जी तु०॥२॥ जाई जुई वर ममरोजी मरुवो, प्रनुजीने पूजी चडाउं चंवेलडी॥जीतु०॥३॥सुर नर मुनिवर जोइ ने मोह्या, कांइ रूपचंदास गुण वेलडी ॥ जी तु० ॥४॥

॥ अथ उपदेश विषे सद्याय ॥ देशी फतमलनी ॥

॥ पडजो कुमतिगढना कांगरा, मरजो राउ मोह राव ॥ वालो म्हारो निज घरे नावीयो, एणे परघरे कीधां प्रयाण ॥ वा० ॥ एम कहे सुमति सुजाण ॥ वा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दांत पाडूं रे दूती तणा, पाडोसणनां रे लउं प्राण ॥ जेणें म्हारो जीवन नोलव्यो, लइ नाख्यो नरकनी खाण ॥ वा० ॥ २ ॥ मायायें मद पाइने, एतो वाल्यो पोताने वास ॥ माहारोने वालो टालीने, एणें मुजने कीधी निराश ॥

॥ वा० ॥ ३ ॥ गुणवंतना गुण गोपवी, गुण हीणा शुं मांभी गोठ ॥ आप स्वरूप न उलखे, एतो पाप नी चलवे पोठ ॥ वा० ॥ ४ ॥ अबुझ साथें धरे आसकी, एतो पूजे न पूज्यना पाय ॥ परम महोदय पामशे, ज्यारे आवशे आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ श्रीदादा पास पसाउलें, में तो कुमतिनो पाड्यो कोट ॥ घर आव्यो निज घरधणी, में तो चुकवी शोकनी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥ वाचक उदयरतन वदे, जे पूजशे प्रभुना पाय ॥ ते परमपदें पद धारशे, वली संपत्ति लहेशे सवाय ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्मजिन स्तवनं ॥

॥ केशर वरणो हो काढ कसुंबो माहारा लाल॥ए देशी ॥

॥ धर्मजिणंदा हो, में तुज वंदा ॥ माहारा लाल ॥ तुज गुण वृंदा हो,गावे इंदा ॥ मा० ॥ शिवतरु कंदा हो, तुं कुलचंदा ॥ मा० ॥ तेज दिणंदा हो, अति आनंदा ॥ मा० ॥ १ ॥ मोहन गारी हो, मूरति तारी ॥ मा० ॥ प्राण पियारी हो, जाउं बलिहारी ॥मा० ॥ व्यो शिवनारी हो, रंग करारी ॥ मा० ॥ ते जग तारी हो, बे मुझ वारी ॥ मा० ॥ २ ॥ दिल अटकाणो हो, दास कहाणो ॥ मा० ॥ तुं जग राणो हो, सुजश गवाणो ॥ मा० ॥ करुणा आणो हो, सेवा जाणो ॥ मा० ॥ हवे न ताणो हो, मलियो टाणो ॥ मा० ॥ ॥ ३ ॥ नेह नवेली हो, सुमति सहेली ॥ मा० ॥ रंगें खेली हो, थई मुझ वेली ॥ मा० ॥ माया वेल

हो, मूल उखेली ॥ मा० ॥ कुमति अकेली हो, दूरें मेली ॥ मा० ॥ ४ ॥ तुं जिनराया हो, सुजस सवा या ॥ मा०॥ दिलमें आया हो, पाप गमाया ॥ मा०॥ वंछित पाया हो, विमल पसाया ॥ मा० ॥ गुण मन नाया हो, रामें गाया ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मल्लिजिन स्तवन ॥ होरी खेलेंगे ॥ ए देशी ॥

॥ मन मोहन मल्ली नाथको, जस बोलेंगे ॥ शिव रमणीको रंग, घुंघट पट खोलेंगे ॥ मोह्यो मन घन मोर ज्युं ॥ जस० ॥ अब और न चाहुं संग ॥ घुं० ॥ ॥ १ ॥ चिंतामणिकूं पाइकें ॥ ज० ॥ कुण राचे काचे काच ॥ घुं० ॥ को चाहे खर केलिकूं ॥ ज० ॥ तजी सुर कुमरीको नाच ॥ घुं० ॥ २ ॥ बाउलकूं सेवे नहीं ॥ ज० ॥ तजी मधुकर मालती फूल ॥ घुं० ॥ कोमल शय्या छोर कें ॥ ज० ॥ कुण वैठे धरिके शूल ॥ घुं० ॥ ३ ॥ प्रभुकी मूरति मेरे मन वसी ॥ ज० ॥ सो तो विसराइ विसरै न ॥घुं० ॥ दरसन प्रभु मुख देखकें ॥ ज० ॥ हम पावन कीने नैन ॥ घुं० ॥४॥ जनम कृतारथमें कस्यो ॥ ज० ॥ जब पायो ऐसो ईश ॥ घुं० ॥ विमल विजय उवझायको ॥ ज० ॥ एम राम कहे शुभ शीश ॥ घुं० ॥ ५ ॥

॥ अथ नेमिजिन स्तवनं ॥ राग जंगलो ॥

॥ संयम लेउंगी साथ, पिया में तो संयम लेउंगी ॥ माय बाप मेरे काम न आवे, जूठो ए संसार ॥ पि या० ॥ १ ॥ तोरणसें रथ फेर चलायो, सुण पशु

ञन पोकार ॥ पि० ॥ २ ॥ सहसावन जई संयम लीनो, नेम चढे गिरनार ॥ पी० ॥ ३ ॥ मोतन लाल कहे अपने प्रीमसें, उतारो नव पार ॥ पी० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीदेवचंद्रजी कृत चोवीशी प्रारंनः ॥ तत्र प्रथम श्रीरुपनजिन स्तवनं ॥ निंद्रडी वेरण हुई रही ए देशी ॥

॥ रुषन जिणंदशुं प्रीतडी, किम कीजें हो कहो चतुर विचार ॥ प्रनुजी जइ अलगा वस्या, तिहां किणे नवि हो कोइ वचन उच्चार ॥ १ ॥ रु० ॥ कागल पण पोहोंचे नहि, नवि पोहोंचे हो तिहां को परधान ॥ जे पोहोंचे ते तुम समो, नवि नांखे हो कोइनुं व्यवधान ॥ २ ॥ रु० ॥ प्रीत करे ते रागीया, जिनवरजी हो तुमें तो वीतराग ॥ प्रीतडी जेह अरागीथी, नेलववी हो लोकोत्तर माग ॥ ३ ॥ रु० ॥ प्रीति अनादिनी विप नरी, ते रीतें हो करवा मुऊ नाव ॥ करवी निर्विप प्रीतडी, किण नांते हो कहो बनें बनाव ॥ ४ ॥ रु० ॥ प्रीति अनंती परथकी, जे तोडे हो ते जोडे एह ॥ परम पुरुपथी रागता, एकत्वता हो दाखी गुण गेह ॥ ५ ॥ रु० ॥ प्रनुजीने अवलंबतां, निज प्रनुता हो प्रगटे गुण राश ॥ देवचंद्रनी सेवना, आपे मुऊ हो अविचल सुखवास ॥ ६ ॥ रु० ॥

॥ अथ श्रीअजितजिन स्तवनं ॥

॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुऊ अनंत अपार ॥ ते सांनलतां ऊपनी रे, रुचि तेणें पार उतार ॥ [illegible]

अजित जिन तारजो रे, तारजो दीनदयाल ॥ अ
जि० ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनो रे, सा
मग्री संयोग ॥ मलतां कारज नीपजे रे, कर्त्ता तणे
प्रयोग ॥२॥ अ०॥ कार्यसिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कार
ण संयोग ॥ निज पद कारक प्रज्ञु मिल्या रे, होय
निमित्तह नोग ॥ ३ ॥ अ०॥ अजकुल गत केसरी लहे
रें, निज पद सिंघ निहाल ॥ तिम प्रज्ञु नक्तें नवि
लहे रे, आतम शक्ति संनाल ॥ ४ ॥ अ० ॥ कारण
पद कर्त्ता पणे रे, करी आरोप अनेद ॥ निजपद अ
रथी प्रज्ञुथकी रे, करे अनेक उमेद ॥ ५ ॥ अ० ॥
एहवा परमातम प्रज्ञु रे, परमानंद स्वरूप ॥ स्यादवा
दसत्ता रसी रे, अमल अखंम अनूप ॥ ६ ॥ अ० ॥
आरोपित सुख नम टल्यो रे, नास्यो अव्यावाध ॥
समखुं अनिलाखीपणुं रे, कर्त्ता साधन साध्य ॥
॥ ७ ॥ अ० ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक नो
क्ता नाव ॥ कारणता कारज दिशा रे, सकल ग्रह्युं नि
ज नाव ॥८ ॥ अ०॥ श्रद्धा नासन रमणता रे, दाना
दिक परिणाम ॥ सकल थया सत्ता रसी रे, जिनवर
दरिसण पाम ॥ ए ॥ अ० ॥ तिणे नियामक माह
णो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद सुख सागरु रे,
नाव धरम दातार ॥ १० ॥ अ० ॥ इति ॥
॥ अथ श्रीसंनवजिन स्तवनं ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी॥
॥ श्रीसंनवजिन राजजी रे,ताहरुं अकल स्वरूप॥
जिनवर पूजो ॥ स्वपर प्रकाशक दिनमणि रे, समता

रसनो नूप ॥ जि० ॥ १ ॥ पूजो पूजो रे नविक जिन पूजो, प्रनु पूज्या परमानंद ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥ अविसंवाद निमित्त बो रे, जगत जंतु सुखकाज ॥ जि० हेतु सत्य बहुमानथी रे, जिन सेव्यां शिवराज ॥ ॥ जि० ॥ २ ॥ उपादान आतम सही रे, पुष्टालंबन देव ॥ जि० ॥ उपादान कारण पणे रे, प्रगट करे प्रनु सेव ॥ जि० ॥ ३ ॥ कारजगुण कारण पणे रे, कारण कारज अनूप ॥ जि०॥ सकल सिद्धता ताहरी रे, माहारे साधन रूप ॥ जि० ॥ ४ ॥ एक वार प्रनु वंदना रे, आगमरीतें थाय ॥ जि० ॥ कारण सत्यें कार्यनी रे, सिद्धि प्रतीति कराय ॥जि० ॥ ५ ॥ प्रनुपणे प्रनु उंलखी रे, अमल विमल गुण गेह ॥ ॥ जि० ॥ साध्यदृष्टि साधकपणे रे, वंदे धन नर तेह ॥ जि० ॥ ६ ॥ जन्म कृतारथ तेहनो रे, दिवस सफल पण तास ॥ जि० ॥ जगतशरण जिन चरणने रे, वंदे धरिय उल्लास ॥ जि० ॥ ७ ॥ निज सत्ता निज नावथी रे, गुण अनंतनुं गण ॥ जि० ॥ देवचंद्र जिन राजजी रे, शुद्धसिद्धसुख खाण ॥ जि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअनिनंदन जिनस्तवनं ॥

॥ ब्रह्मचरिज पद पूजीयें ॥ ए देशी ॥

॥ क्युं जाणुं क्युं बनी आवशे, अनिनंदन रस रीत हो मित्त ॥ पुजल अनुनव त्यागथी, करवी जसु परतीत हो मित्त ॥ क्युं० ॥ १ ॥ परमातम परमेश्वरू, वस्तुगते ते अलिप्त हो मित्त ॥ द्रव्यें द्रव्य मिले

नहीं,नावें तें अन्य अभ्यास हो मित्त ॥ क्युं० ॥ २॥ शुद्ध स्वरूप सनातनो, निर्मल जे निःसंग हो मित्त ॥ आतम विभूति परिणम्यो, न कर ते परसंग हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ३ ॥ पण जाणुं आगम बलें, मलवो तुम प्रभु साथ हो मित्त ॥ प्रभु तो स्वसंपत्तिमयी, शुद्ध स्व रूपनो नाथ हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ४ ॥ पर परिणामि कता अछे, जे तुझ पुजल जोग हो मित्त ॥ जड चल जगनी एठनो, न घटे तुझने नोग हो मित्त ॥ क्युं०॥५॥ शुद्ध निमित्त प्रभु ग्रहो, करी अशुद्ध पर हेय हो मित्त ॥ अत्मालंबी गुण लही, सहु साधकनो ध्येय हो मित्त ॥ क्युं०॥ ६ ॥ जिम जिनवर आलंबनें, वधे सधे एक तान हो मित्त ॥ तिम तिम आत्मालंबनी,ग्रहे स्व रूप निदान हो मित्त ॥ क्युं०॥ ७ ॥ स्व स्वरूप एकत्वता, साधे पूर्णानंद हो मित्त ॥ रमे नोगवे आतमा,रत्नत्रयी गुणवृंद हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ८ ॥ अनिनंदन अवलंबने, परमानंद विलास हो मित्त ॥ देवचंद प्रभु सेवना, करि अनुनव अभ्यास हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमतिजिनस्तवनं ॥ कडखानी देशी ॥

॥ अहो सिरी सुमतिजिन शुद्धता ताहरी, स्वगुण पर्याय परिणाम रामी ॥ नित्यता एकता अस्तिता इतरयुत, नोग्यनोगीथको प्रभु अकामी ॥ १ ॥ अ०॥ उपजे व्यय लहे तहवि तेहवो रहे, गुण प्रमुख बहुलता तहवि पिंमी ॥ आत्मनावें रहे अपरता वि ग्रहे, लोक प्रदेश मित पण अखंमी ॥ २ ॥

॥ अ० ॥ कार्य कारण पणे परिणमे तहवि ध्रुव, कार्य भेदें करे पण अभेदी ॥ कर्तृता परिणमे नव्यता नवि रमे, सकल वेत्ता थको पण अवेदी ॥ ३ ॥ अ० ॥ शुद्धता बुद्धता देव परमात्मता, सहज निज भाव भोगी अयोगी ॥ स्वपर उपयोगि तादात्म्य सत्तारसी, शक्ति प्रयुंजतो न प्रयोगी ॥ ४ ॥ अ० ॥ वस्तु निज परिणते सर्व परिणामकी, एटले कोइ प्रभुता न पामे ॥ करे जाणे रमे अनुभवे ते प्रभु, तत्त्व स्वामित्व शुचि तत्त्व धामे ॥ ५ ॥ अ० ॥ जीव नवि पुग्गली नैव पुग्गल कदा,पुग्गलाधार नही तास रंगी॥ पर तणो ईश नहीं अपर ऐश्वर्यता, वस्तुधर्में कदा न परसंगी ॥ ६ ॥ अ० ॥ संग्रहे नही आपे नही पर भणी, नवि करे आदरे न पर राखे ॥ शुद्धस्याद्वाद निज भाव भोगी जिके, तेह परभावने केम चाखे ॥ ७ ॥ अ० ॥ ताहरी शुद्धता भास आश्चर्यथी, उपजे रुचि तेणे तत्त्व ईहे ॥ तत्त्वरंगी थयो दोषथी उभग्यो, दोष त्यागे टले तत्त्व लीहे ॥ ८ ॥ अ० ॥ शुद्ध मार्गें वध्यो साध्य साधन सध्यो, स्वामी प्रतिछंदे सत्ता आराधे ॥ आत्म निष्पत्ति तिम साधना नवि टके, वस्तु उत्सर्ग आतमसमाधें ॥ ए ॥ अ० ॥ माहरी शुद्ध सत्तातणी पूर्णता, तेहनो हेतु प्रभु तुंहि साचो ॥ देवचंद्रें स्तव्यो मुनिगणें अनुभव्यो, तत्त्व भक्तें भविक सकल राचो ॥ १० ॥ अ०॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपद्मप्रभजिन स्तवन ॥

॥ हुं तुज आगल शी कहुं केशरीया लाल ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीपद्मप्रभ जिन गुणनिधि रे लाल, जग तारक जग दीस रे ॥ वाल्हेसर ॥ जिन उपगारथकी लहे रे लाल, भविजन सिद्धि जगीस रे ॥ वा० ॥ १ ॥ तुझ दरिसण मुझ वालहुं रे लाल, दरिसण शुद्ध पवित्त रे ॥ वा० ॥ दर्शन शब्द नयें करे रे लाल, संग्रह एवं भूत रे ॥ वा० ॥ २ ॥तु० ॥ बीजें वृक्ष अनंतता रे लाल, पसरे भू जल योग रे ॥ वा० ॥ तिम मुझ आतम संपदा रे लाल, प्रगटे प्रभु संयोग रे ॥ वा० ॥ ॥ ३ ॥ तु० ॥ जगत जंतु कारज रुची रे लाल, साधे उदयें भाण रे॥वा०॥ चिदानंद सुविलासता रे लाल, वाधे जिनवर झाण रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ तु० ॥ लब्धि सिद्धि मंत्राक्षरें रे लाल, उपजे साधक संग रे ॥ वा०॥ सहज अध्यातम तत्त्वता रे लाल, प्रगटे तत्त्वी रंग रे ॥ वा०॥ ५ ॥ तु०॥ लोह धातु कंचन हुवे रे लाल, पारस फरसन पामि रे ॥ वा० ॥ प्रगटे अध्यातम दिशा रे लाल, व्यक्त गुणी गुण ग्राम रे ॥ वा० ॥६॥ ॥ तु० ॥ आत्मसिद्धि कारज भणी रे लाल, सहज निर्यामक हेतु रे ॥ वा० ॥ नामादिक जिनराजनां रे लाल, भवसागरमांहे सेतु रे ॥ वा० ॥७॥ तु० ॥ थंभन इंद्रिय योगनो रे लाल, रक्त वरण गुण राय रे ॥ वा० ॥ देवचंद्र वृंदें स्तव्यो रे लाल, आप अवर्ण अकाय रे ॥ वा० ॥ ८ ॥ तु० ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तम श्रीसुपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ हो सुंदर तप सरिखो, जग को नहीं ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसुपास आनंदमें,गुण अनंतनो कंद हो ॥ जिनजी ॥ ज्ञानानंदें पूरणो, पवित्र चारित्रानंद हो ॥ ॥ जि० ॥ १ ॥ श्री० ॥ संरक्षण विण नाथ ठो, इव्य विना धनवंत हो ॥ जि० ॥ करता पद किरिया विना, संत अजेय अनंत हो ॥ जि० ॥ २ ॥ श्री० ॥ अगम अगोचर अमर तुं, अन्वय ऋद्धि समूह हो ॥ जि० ॥ वर्ण गंध रस फरस विणु, निज नोक्ता गुण व्यूह हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ अक्षय दान अचिंतना, लान अयत्नें नोग हो ॥ जि० ॥ वीर्य शक्ति अप्रयासता, शुद्ध स्वगुण उपनोग हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ श्री० ॥ एकांतिक आत्यंतिको, सहज अकृत स्वाधीन हो ॥ ॥ जि० ॥ निरुपचरित निर्द्वंद्व सुख, अन्य अहेतुक पीन हो ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ एक प्रदेशें ताहरे, अव्याबाध समाय हो ॥ जि० ॥ तसु पर्याय अविनागता, सर्वाकाश न माय हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्री०॥ एम अनंत गुणनो धणी, गुण गुणनो आनंद हो ॥ ॥ जि० ॥ नोग रमण आस्वाद युत, प्रज्ञु तुं परमानंद हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ अव्याबाध रुचि थई, साधे अव्याबाध हो ॥ जि० ॥ देवचंद्र पद ते लहे, परमानंद समाध हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इति ॥

हो लाल ॥ स्व० ॥ तत्त्व रमण शुचि ध्यान, जणी जे आदरे हो लाल ॥ न० ॥ ते समतारस धाम, स्वामी मुझ वरे हो लाल ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ प्रभु छो त्रिभुवन नाथ, दास हुं तादृशो हो लाल ॥ दा० ॥ करुणानिधि अनिलाख, अछे मुझ ए खरो हो लाल ॥ अ० ॥ आतम वस्तु स्वभाव, सदा मुझ सांभरो हो लाल ॥स०॥ भासन वासन एह, चरणध्यानें धरो हो लाल ॥ च० ॥ ५ ॥ प्रभु मुझने योग, प्रभु प्रभुता लखे हो लाल ॥ प्र० ॥ द्रव्य तणे साधर्म्य, स्वसंपति उलखे हो लाल ॥ स्व० ॥ उलखतां बहुमान, सहित रुचि पण वधे हो लाल ॥ स० ॥ रुचि अनुयायी वीर्य, चरण धारा सधे हो लाल ॥ च०॥ ६ ॥ क्षायोपशमिक गुण सर्व, थया तुझ गुण रसी हो लाल ॥ थ०॥ सत्ता साधन शक्ति, व्यक्तता उल्लसी हो लाल ॥ व्य० ॥ हवे संपूरण सिद्ध, तणी शी वार छे हो लाल ॥ त०॥ देवचंद्र जिनराज, जगत आधार छे हो लाल ॥ जग० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ दशम श्रीशीतलजिनस्तवनं ॥

॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ शीतलजिनपति प्रभुता प्रभुनी, मुझथी कहिय न जाय जी ॥ अनंतता निर्मलता पूरणता, ज्ञान विना न जणाय जी ॥ १ ॥ शी० ॥ चरम जलधि जल मिणे अंजली, गति जीपे अति वाय जी ॥ सर्व आकाश उलंघे चरणें, पण प्रभुता न गणाय जी ॥ ॥ २ ॥ शी० ॥ सर्व द्रव्य प्रदेश अनंता, तेहथी गु

ण पर्याय जी ॥ तास वर्गथी अनंत गुणुं प्रजु,केवल ज्ञान कहाय जी ॥ ३ ॥ शी० ॥ केवल दर्शन एम अनंतो,ग्रहे सामान्य स्वनाव जी ॥ स्वपर अनंतथी चरण अनंतो, स्वरमण संवर नाव जी ॥ ४ ॥ शी०॥ द्रव्यक्षेत्र ने काल नाव गुण,राजनीति ए चार जी॥ त्रास विना जड चेतन प्रजुनी,कोइ न लोपे कार जी ॥ ५ ॥ शी० ॥ शुद्धाशय थिर प्रजु उपयोगें, जे समरे तुऊ नाम जी ॥ अव्याबाध अनंतो पामे, परम अमृत सुख धाम जी ॥ ६ ॥ शी० ॥ आणा ईश्वरता निर्नयता,निर्वांछकता रूप जी ॥ नाव स्वाधीन ते अव्यय रीतें,इम अनंत गुण नूप जी ॥ ७ ॥ शी० ॥ अव्याबाध सुख निर्मल तेतो, करण ज्ञानें न जणाय जी ॥ तेहज एहनो जाणग नोक्ता, जे तुम सम गुण राय जी ॥ ८ ॥ शी० ॥ एम अनंत दानादिक निजगुण, वचनातीत पंडूर जी ॥ वासन नासन नावें दुर्लन, प्रापती तो अति दूर जी ॥ ए ॥ शी०॥ सकल प्रत्यक्ष पणे त्रिजुवन गुरु, जाणुं तुऊ गुण ग्राम जी ॥ बीजुं कांइ न मागुं स्वामि,एहिज छे मुऊ काम जी॥ १०॥शी० एम अनंत प्रजुता सर्दहतां,अर्चे जे प्रजु रूप जी॥देवचंद्र पजुता ते पामे,परमानंद स्वरूप जी॥ ११॥शी०॥

॥ अथ एकादश श्रीश्रेयांसजिनस्तवनं ॥

॥ प्राणी वाणी जिनतणी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीश्रेयांस प्रजु तणो, अति अद्भुत सहजानंद रे ॥ गुण एकविध त्रिक परणम्यो, एम गुण अनंत

नो वृंद रे ॥ १ ॥ मुनिचंद जिणंद अमंद दिणंद परें, नित्य दीपतो सुख कंद रे ॥ ए आंकणी ॥ निज ज्ञानें करी ज्ञेयनो, ज्ञायक ज्ञाता पद ईश रे ॥ देखे निज दर्शन करी, निज दृश्य सामान्य जगीश रे ॥ ॥ २ ॥ मु० ॥ निज रम्यें रमण करो, प्रभु चारित्रें रमता राम रे ॥ भोग अनंतने भोगवो, भोगें तेणें भोक्ता स्वाम रे ॥ ३ ॥ मु० ॥ देय दान नित दीजते, अति दाता प्रभु स्वयमेव रे ॥ पात्र तुम्हें निज शक्तिना, ग्राहक व्यापकमय देव रे ॥ ४ ॥ मु० ॥ परिणामिक कारज तणो, करता गुण करणे नाथ रे ॥ अक्रिय अक्षय स्थितिमयी, निकलंक अनंती आथ रे ॥ ॥ ५ ॥ मु० ॥ परिणामिक सत्ता तणो, आविर्भाव विलास निवास रे ॥ सहज अकृत्रिम अपराश्रयी, निर्विकल्प ने निःप्रयास रे ॥६॥मु० ॥ प्रभु प्रभुता संभारतां, गातां करतां गुणग्राम रे ॥ सेवक साधनता वरे, निज संवर परिणति पाम रे ॥७॥मु०॥ प्रगट तत्त्वता ध्यावतां, निज तत्त्वनो ध्याता थाय रे ॥ तत्त्वरमण एकाग्रता, पूरण तत्त्वें एह समाय रे ॥ ८ ॥ मु० ॥ प्रभु दीठे मुक्त सांभरे, परमातम पूर्णानंद रे ॥ देवचंद्र जिन राजना, नित्य वंदो पय अरविंद रे ॥९॥मु०॥

॥ अथ द्वादश श्रीवासुपूज्यजिनस्तवनं ॥

॥ पंथीडो निहाळुं रे बीजा जिनतणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ पूजना तो कीजें रे बारमा जिन तणी रे, जसु प्रगट्यो पूज्य स्वभाव ॥ परकृत पूजा रे जे इछे नहीं

रे, साधक कारज दाव ॥ १ ॥ पू० ॥ द्व्यथी पूजा रे कारण नावनुं रे, नाव प्रशस्त ने शुद्ध ॥ परम इ ष्ट वल्लन त्रिनुवन धणी रे, वासुपूज्य स्वयंबुद्ध ॥ २ ॥ पू० ॥ अतिशय महिमा रे अति उपगारता रे, निर्मल प्रनु गुण राग ॥ सुरमणि सुरघट सुरतरु तुं ब्रते रे, जिन रागी महानाग ॥ ३ ॥ पू० ॥ दर्शन ज्ञानादिक गुण आत्मना रे, प्रनु प्रनुता लय लीन ॥ शुद्ध स्वरूपी रूपें तन्मयी रे, तसु आस्वादन पीन ॥ ॥ ४ ॥ पू० ॥ शुद्ध तत्त्व रस रंगी चेतना रे, पामे आत्म स्वनाव ॥ आत्मालंबी निज गुण साधतो रे, प्रगटें पूज्य स्वनाव ॥ ५ ॥ पू० ॥ आप अकर्त्ता सेवाथी हुवे रे, सेवक पूरण सिद्धि ॥ निज धन न दीये पण आश्रित लहे रे, अक्ष्य अक्षर क्रुद्धि ॥ ६ ॥ पू० ॥ जिनवर पूजा रे ते निज पूजना रे, प्रगटे अन्वय शक्ति ॥ परमानंद विलासी अनुनवे रे, देवचंद्र पद व्यक्ति ॥ ७ ॥ पू० ॥ इति ॥

॥ अथ त्रयोदशश्री विमलजिनस्तवनं ॥

॥ दास अरदास शी परें करे जी ॥ ए देशी ॥

॥ विमलजिन विमलता ताहरी जी, अवर बीजे न कहाय ॥ लघुं नदी जिम तिम लंघीयें जी, स्वयंनूरमण न तराय ॥ १ ॥ वि० ॥ सयल पुढवी गिरि जल तरुजी, कोइ तोले एक हाथ ॥ तेह पण तुज गुण गण नणी जी, नांखवा नही समरथ ॥ २ ॥ वि० सर्व पुजल नन धर्मना जी, तेम अधर्म प्रदेश ॥

तास गुण धर्म पज्जव सहु जी, तुज गुण एक तणो लेश ॥ ३ ॥ वि० ॥ एम निज जाव अनंतनी जी, अस्तिता केटली थाय ॥ नास्तिता स्वपर पद अस्तिता जी, तुज समकाल समाय ॥ ४ ॥ वि० ॥ ताहरा शुद्ध स्वजावने जी, आदरे धरी बहु मान ॥ तेहने तेहीज नीपजे जी, ए कोइ अद्भुत तान ॥ ५ ॥ वि० ॥ तुम्ह प्रजु तुम्ह तारक विजुजी, तुम समो अवर न कोय ॥ तुम दरिसणथकी हूं तर्यो जी, शुद्ध आलंबन होय ॥ ६ ॥ वि० ॥ प्रजुतणी विमलता उलखी जी, जे करे थिर मन सेव ॥ देवचंद्र पद ते लहे जी, विमल आनंद स्वयमेव ॥७॥ वि० ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दश श्रीअनंतजिन स्तवनं ॥

॥ दीठी हो प्रजु दीठी जगगुरु तुज ॥ ए देशी ॥

॥ मूरति हो प्रजु मूरति अनंत जिणंद, ताहरी हो प्रजु ताहरी मुज नयणे वसी जी ॥ समता हो प्रजु समता रसनो कंद, सहेजें हो प्रजु सहेजें अनुजव रस लसी जी ॥ १ ॥ जवदव हो प्रजु जवदव तापित जीव, तेहने हो प्रजु तेहने अमृतघनसमी जी ॥ मिथ्याविप हो प्रजु मिथ्याविपनी खीव, हरवा हो प्रजु हरवा जांगुलि मन रमी जी ॥२॥ जाव हो प्रजु जाव चिंतामणि एह, आतम हो प्रजु आतम संपति आपवा जी ॥ एहिज हो प्रजु एहिज शिवसुखगेह, तत्त्व हो प्रजु तत्वालंबन थापवा जी ॥ ३ ॥ जाये हो प्रजु आश्रव चाल, दीठे हो प्रजु दीठे संवरता वधे

जी ॥ रत्न हो प्रभु रत्नत्रयी गुणमाल, अध्यातम हो प्रभु अध्यातम साधन सधे जी ॥ ४ ॥ मीठी हो प्रभु मीठी सूरत तुझ, दीठी हो प्रभु दीठी रुचि बहु मानथी जी ॥ तुझ गुण हो प्रभु तुझ गुण नासन शुक, सेवे हो प्रभु सेवे तसु नव नय नथी जी ॥ ५ ॥ नामें हो प्रभु नामें अद्भुत रंग, ठवणा हो प्रभु ठवणा दीठे उल्लसें जी ॥ गुण आस्वाद हो प्रभु गुण आस्वाद अनंग, तन्मय हो प्रभु तन्मयतायें जे धसे जी ॥ ६ ॥ गुणअनंत हो प्रभु गुणअनंतनो वृंद, नाथ हो प्रभु नाथ अनंतने आदरे जी ॥ देवचंद हो प्रभु देवचंद्रने आनंद, परम हो प्रभु परम महोदय ते वरे जी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचदश श्रीधर्मजिनस्तवनं ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म जगनाथनो धर्म शुचि गाइयें, आपणो आतमा तेहवो नावियें ॥ जाति जसु एकता तेह पलटे नहिं, शुद्ध गुण पजवा वस्तु सत्तामयी ॥ १ ॥ नित्य निरवयव वलि एक अक्रिय पणे, सर्व गत तेह सामान्य नावें नणे ॥ तेहथी इतर सावयव विशेषता, व्यक्तिनेदें पडे जेहनी नेदता ॥ २ ॥ एकता पिंमने नित्य अविनाशता, अस्ति निज ऋद्धिथी कार्य गत नेदता ॥ नाव श्रुत गम्य अनिलाप्य अनतता, नव्य पर्यायनी जे परावर्त्तता ॥ ३ ॥ क्षेत्र गुण नाव अविनाग अनेकता, नाश उत्पाद अनित्य पर नास्तिता ॥ क्षेत्र व्याप्यत्व अनेद अव्यक्तता,

ते रूपथी नियत अन्नव्यता ॥ ४ ॥ धर्म प्राग्नावता सकल गुण शुद्धता, नोग्यता कर्तृता रमण परिणा मता ॥ शुद्ध स्वप्रदेशता तत्त्व चैतन्यता, व्याप्य व्या पक तथा ग्राह्य ग्राहक गता ॥ ५ ॥ संग परिहारथी स्वामी निज पद लह्युं, शुद्ध आत्मिक आनंद पद संग्रह्युं ॥ जहवि परन्नावथी हुं नवोदधि वस्यो, परत णो संग संसारतायें ग्रस्यो ॥ ६ ॥ तहवि सत्ता गुणें जीव ए निर्मलो, अन्य संश्लेप जिम फिटक नवि शामलो ॥ जे परोपाधिथी दुष्ट परिणति ग्रही, नाव ता दात्म्यमां माहरुं ते नहीं ॥ ७ ॥ तिणे परमात्म प्रभु नक्ति रंगी थई, शुद्ध कारणरसें तत्त्व परिणति मयी॥ आत्मग्राहक थये तजे पर ग्रहणता, तत्त्व नोगी थये टले परन्नोग्यता ॥ ८ ॥ शुद्ध निःप्रयास निजन्नाव नोगी यदा, आत्मक्षेत्रे नही अन्य रक्षण तदा ॥ एक असहाय निस्संग निर्द्वंद्वता,शक्ति उत्सर्गनी होय सहु व्यक्तता॥ए॥तेणे मुफ आतमा तुफथकी नीपजे, मा हरी संपदा सकल मुफ संपजे॥ तिणे मन मंदिरें धर्म प्रभु ध्याइयें,परम देवचंद्र निज सिद्धि सुख पाईयें॥१०॥

॥ अथ षोडश श्रीशांतिजिन स्तवनं ॥

माला किहांछे रे ॥ एदेशी ॥

॥ जगत दिवाकर जगत कृपानिधि, वाल्हा मारा समवसरणमां बेठा रे ॥ चउमुख चउविह धर्म प्रकासे, ते में नयणें दीठा रे ॥ १ ॥ नविक जन हरखो रे, नि ...ी शांतिजिणंद ॥ न० ॥ उपशमरसनो कंद, नहिं

इण सरिखो रे ॥ ए आंकणी ॥ प्रातिहारज अतिश य शोना ॥ वा० ॥ ते तो कहिय न जावे रे ॥ घूक बालकथी रवि करनरनुं, वर्णन केणि परें थावे रे ॥ ॥ २ ॥ न० ॥ वाणी गुण पांत्रीश अनोपम ॥वा०॥ अविसंवाद सरूपें रे ॥ नव डुख वारण शिव सुख कारण, सूधो धर्म प्ररूपे रे ॥ ३ ॥ न० ॥ दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशि मुख ॥ वा० ॥ ठवणाजिन उपगारी रे ॥ तसु आलंबन लहिय अनेकें, तिहां थया समकितधारी रे ॥ ४ ॥ न० ॥ खट नय कारय रूपें ठवणा ॥ वा० ॥ सग नय कारण ठाणी रे ॥ निमित्त समान थापना जिन जी, ए आगमनी वाणी रे ॥ ५ ॥ ॥ न० ॥ साधक तीन निक्षेपा मुख्य ॥ वा० ॥ जे विणु नाव न लहीयें रे ॥ उपगारी डुग नाष्यें नांख्या, नाव वंदकनो ग्रहीयें रे ॥ ६ ॥ न० ॥ ठवणा समवसरणें जिनसेंती ॥ वा० ॥ जो अनेदता वाधी रे ॥ ए आतमना स्वस्वनाव गुण, व्यक्त योग्यता साधी रे ॥ ७ ॥ न० ॥ नलुं थयुं में प्रनु गुण गाया ॥ वा० ॥ रसनानुं फल लीधो रे ॥ देवचंद कहे माहरा मननो सकल मनोरथ सीधो रे ॥ ८ ॥ न० ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तदश श्रीकुंथुजिनस्तवनं ॥ चरम जिनेसरू ॥ ए देशी ॥

॥ समवसरण वेसी करी रे, बारह परखद मांहि ॥ वस्तु स्वरूप प्रकाशता रे, करुणाकर जग नाहो रे ॥ १ ॥ कुंथुजिनेसरू ॥ निर्मल तुफ मुख वाणी रे, जे ---

एं सुणे॥तेद्दिज गुणमणि खाणी रे॥कुं०॥ए आंकणी॥ गुण पर्याय अनंतता रे, वली स्वन्नाव अगाह ॥ नय गम नंग निक्षेपना रे, हेयादेय प्रवाहो रे ॥ २ ॥कुं० ॥ कुंथुनाथ प्रन्नु देशना रे, साधन साधक सिद्धि ॥ गौण मुख्यता वचनमां रे, ज्ञान ते सकल समृद्धि रे॥ ३॥ ॥ कुं० ॥ वस्तु अनंत स्वन्नाव ठे रे, अनंत कथक त सुं नाम ॥ ग्राहक अवसर बोधथी रे, कहेवे अर्पित कामो रे ॥ ४ ॥ कुं० ॥ शेष अनर्पित धर्म्मने रे, सापे क्ष श्रद्धाबोध ॥ उन्नय रहित नासन हुवे रे, प्रगटे के वल बोधो रे ॥ ५ ॥ कुं०॥ ठति परणति गुण वर्त्तना रे, नासन नोग आनंद ॥ समकालें प्रन्नु ताहरे रे, र म्य रमण गुण वृंदो रे ॥ ६ ॥ कुं० ॥ निजन्नावें शी अस्तिता रे, परनास्तित्व स्वन्नाव ॥ अस्तिपणे ते नास्तिता रे, शीय ते उन्नय स्वन्नावो रे ॥ ७ ॥ कुं० ॥ अस्ति स्वन्नाव जे आपणो रे, रुचि वैराग्यसमेत ॥ प्रन्नु सन्मुख वंदन करी रे, मागिश आतमहेतो रे ॥ ८ ॥ कुं० ॥ अस्ति स्वन्नाव रुचि थई रे, ध्यातो अस्ति स्वन्नाव ॥ देवचंद्र पद ते लहे रे, परमानंद ज मावो रे ॥ ए ॥ कुं० ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टादश श्रीअरजिनस्तवनं ॥ राम चंद्रके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमो श्री अरनाथ, शिवपुर साथ खरो री ॥ त्रिन्नुवन जन आधार, नव निस्तार करो री ॥१॥ क कारण योग, कारज सिद्धि लहे री ॥ कारण चार

अनूप, कार्यार्थि तेह ग्रहे री ॥२॥ जे कारण ते कार्य, थाए पूर्ण पदें री ॥ उपादान ते हेतु, माटी घट ते वदे री ॥ ३ ॥ उपादानथी जिन्न, जे विणु कार्य न थाये ॥ न हुवे कारज रूप,कर्त्ताने व्यवसाये ॥ ४ ॥ कारण तेह निमित्त, चक्रादिक घट जावें ॥ कार्य तथा समवाय, कारण नियत ने दावे ॥ ५ ॥ वस्तु अजेद स्वरूप, कार्यपणुं न ग्रहे री ॥ ते असाधारण हेतु, कुंजें स्थास लहे री ॥ ६ ॥ जेहनो नवि व्यापार, जिन्न नियत बहुजावी ॥ जूमि काल आकाश, घट कारण सद्जावी ॥ ७ ॥ एह अपेक्षा हेतु, आगममांहि कह्यो री ॥ कारण पद उतपन्न, कार्य थये न लह्यो री ॥८॥ कर्त्ता आतम द्रव्य,कारज सिद्धि पणो री ॥ निज सत्तागत धर्म, ते उपादान गणो री ॥ ए॥ योग समाधि विधान, असाधारण तेह वदे री ॥ विधि आचरणा जक्ति, जिणे निज कार्य सधे री ॥ १० ॥ नरगति पढम संघयण, तेह अपेक्षा जाणो ॥ निमित्ताश्रित उपादान, तेहने लेखे आणो ॥११॥ निमित्त हेतु जिनराज,समता अमृत खाणी ॥ प्रजु अवलंबन सिद्धि,नियमा एह वखाणी ॥१२॥ पुष्ट हेतु अरनाथ, तेहने गुणथी हलियें ॥ रीऊ जक्ति बहुमान,जोग ध्यानथी मलियें ॥ १३ ॥ मोहोटाने उत्संग, बेठाने शी चिंता ॥ तिम प्रजु चरण पसाय, सेवक थया निचिंता ॥ १४ ॥ अर प्रजु प्रजुता रंग,अंतर शक्ति विकासी ॥ देवचंद्रने आनंद, अक्षय जोग विलासी ॥ १५ ॥

॥ उ० ॥ अतिशय अतिशय कारण कारक करणता रे, निमित्त अने उपादान ॥ संप्रदान संप्रदान कारण पद नवनथी रे, कारण व्यय अपादान ॥ ७ ॥ ॥ उ० ॥ नवन नवन व्यय विणु कारज नवि हुवे रे, जिम दृषदें न घटत्व ॥ शुद्धाधार शुद्धाधार स्वगुणनुं इव्य ठे रे, सत्ताधार सुतत्त्व ॥ ८ ॥ उ० ॥ आतम आतम कर्त्ता कारज सिद्धता रे, तसु साधन जिनराज ॥ प्रनु दीठे प्रनु दीठे कारज रुचि उपजे रे, प्रगटे आत्म समाज ॥ ए ॥ उ० ॥ वंदन वंदन सेवन नमन वलि पूजना रे, समरण स्तवन वली ध्यान ॥ देवचंद देवचंद कीजें जिनराजनी रे, प्रगटे पूर्ण निधान ॥ १० ॥ उ० ॥ इति ॥

॥ अथ एकविंश श्रीनमिजिन स्तवनं ॥ पीठोलारी पाल, उन्ना दोय राजवी रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीनमिजिनवर सेव, घनाघन ऊनम्यो रे ॥घ०॥ दीठां मिथ्यारोर, नविक चित्तथी गम्यो रे ॥ न० ॥ शुचि आचरणा रीति ते, अन्न वधे वडां रे ॥ ते० ॥ आतम परिणति शुद्ध,ते वीज ऊबूकडा रे ॥ ते वी० ॥ १ वाजे वाय सुवाय, ते पावन नावना रे ॥ ते० ॥ इंद्र धनुष त्रिक योग, ते नक्ति इक मना रे ॥ ते० ॥ निर्मल प्रनु स्तव घोष, ध्वनि घनगर्जना रे ॥ ध्व० ॥ तृष्णा ग्रीषम काल, तापनी तर्जना रे ॥ ता० ॥ २ ॥ शुन्न लेश्यानी आलि, ते बगपंकति वनी रे ॥ ते० ॥ श्रेणी सरोवर हंस, वसे शुचि गुण मुनी रे ॥ व० ॥

चउगति मारग बंध, नविक जन घर रह्या रे ॥ न० ॥ चेतन समता संग, रंगमें उमह्या रे ॥ रं० ॥ ३ ॥ सम्यक् दृष्टि मोर, तिहां हरखे घणुं रे ॥ ति० ॥ देखी अद्भुत रूप, परम जिनवर तणुं रे ॥ प० ॥ प्रजुगुण नो उपदेश, ते जलधारा वही रे ॥ ते० ॥ धरम रुचि चित्त नूमि, मांहि निश्चल रही रे ॥ मां० ॥ ४ ॥ चातक श्रमण समूह, करे तव पारणो रे ॥ क० ॥ अनुनव रस आस्वाद, सकल दुःख वारणो रे ॥ स० ॥ अशुनाचार निवारण, तृण अंकूरता रे ॥ तृ० ॥ विरतितणा परिणाम, ते बीजनी पूरता रे ॥ ते० ॥ ५ ॥ पंच महाव्रत धान्य, तणां कर्षण वध्यां रे ॥ त० ॥ साध्य नाव निज थापी, साधनताएं सध्या रे ॥ क्षायिक दरिसण ग्यान, चरण गुण उपना रे ॥ च० ॥ आदिक बहुगुण सस्य, आतम घर नीपना रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ प्रजुदरिसण महामेह, तणे परवेशमें रे ॥ त० ॥ परमानंद सुनिक्ष, थया मुऊ देशमें रे ॥ थ० ॥ देवचंद्र जिनचंद्र, तणो अनुनव करो रे ॥ त० ॥ सादि अनंतो काल, आतम सुख अनुसरो रे॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वाविंशश्रीनेमनाथजिन स्तवनं ॥

॥ पद्मप्रनजिन जइ अलगा वस्या ॥ ए देशी ॥

॥ नेमजिणेसर निज कारज कर्युं, छांम्यो सर्व विनावो जी ॥ आतमशक्ति सकल प्रगटी करी, आस्वाद्यो निजनावो जी ॥ १ ॥ ने० ॥ राजुल नारी रे सारी मति धरी, अवलंब्या अरिहंतो जी ॥ उत्त

॥ उ० ॥ अतिशय अतिशय कारण कारक करणता रे, निमित्त अने उपादान ॥ संप्रदान संप्रदान कारण पद नवनथी रे, कारण व्यय अपादान ॥ ७ ॥
॥ उ० ॥ नवन नवन व्यय विणु कारज नवि हुवे रे, जिम हषदें न घटत्व ॥ शुद्धाधार शुद्धाधार स्वगुणनुं द्रव्य छे रे, सत्ताधार सुतत्त्व ॥ ८ ॥ उ० ॥ आतम आतम कर्त्ता कारज सिद्धता रे, तसु साधन जिनराज ॥ प्रनु दीठे प्रनु दीठे कारज रुचि उपजे रे, प्रगटे आत्म समाज ॥ ए ॥ उ० ॥ वंदन वंदन सेवन नमन वलि पूजना रे, समरण स्तवन वली ध्यान ॥ देवचंद्र देवचंद्र कीजें जिनराजनी रे, प्रगटे पूर्ण निधान ॥ १० ॥ उ० ॥ इति ॥

॥ अथ एकविंश श्रीनमिजिन स्तवनं ॥ पीठोलारी पाल, उन्ना दोय राजवी रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीनमिजिनवर सेव, घनाघन ऊनम्यो रे ॥घ०॥ दीठां मिथ्यारोर, नविक चित्तथी गम्यो रे ॥ न० ॥ शुचि आचरणा रीति ते, अन्न वधे वडां रे ॥ ते० ॥ आतम परिणति शुद्ध, ते वीज ऊबूकडा रे ॥ ते वी०॥ १
वाजे वाय सुवाय, ते पावन नावना रे ॥ ते० ॥ इंद्र धनुप त्रिक योग, ते नक्ति इक मना रे ॥ ते० ॥ निर्मल प्रनु स्तव घोप, ध्वनि घनगर्जना रे ॥ ध्व० ॥ तृष्णा ग्रीपम काल, तापनी तर्जना रे ॥ ता० ॥ २ ॥
शुन्न लेश्यानी आलि, ते वगपंकति वनी रे ॥ ते० ॥ श्रेणी सरोवर हंस, वसे शुचि गुण मुनी रे ॥ व० ॥

चउगति मारग बंध, नविक जन घर रह्या रे ॥ न०॥ चेतन समता संग, रंगमें उमह्या रे ॥ रं० ॥ ३ ॥ सम्यक् दृष्टि मोर, तिहां हरखे घणुं रे ॥ ति० ॥ देखी अद्भुत रूप, परम जिनवर तणुं रे ॥ प० ॥ प्रनुगुण नो उपदेश, ते जलधारा वही रे ॥ ते० ॥ धरम रुचि चित्त नूमि, मांहि निश्चल रही रे ॥ मां० ॥ ४ ॥ चातक श्रमण समूह, करे तव पारणो रे ॥ क० ॥ अनुनव रस आस्वाद, सकल दुःख वारणो रे ॥ स० ॥ अशुनाचार निवारण, तृण अंकूरता रे ॥ तृ०॥ विरतितणा परिणाम, ते बीजनी पूरता रे ॥ ते० ॥ ५ ॥ पंच महाव्रत धान्य, तणां कर्षण वध्यां रे ॥ त० ॥ साध्य नाव निज थापी, साधनताएं सध्या रे ॥ क्षायिक दरिसण ग्यान, चरण गुण उपना रे ॥ च० ॥ आदिक बहुगुण सस्य, आतम घर नीपना रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ प्रनुदरिसण महामेह, तणे परवेशमें रे ॥ त० ॥ परमानंद सुनिक्ष, थया मुऊ देशमें रे ॥ थ० ॥ देवचंद्र जिनचंद्र, तणो अनुनव करो रे ॥ त० ॥ सादि अनंतो काल, आतम सुख अनुसरो रे॥ आ० ॥७॥

॥ अथ द्वाविंशश्रीनेमनाथजिन स्तवनं ॥

॥ पद्मप्रनजिन जइ अलगा वस्या ॥ ए देशी ॥

॥ नेमजिणेसर निज कारज कर्युं, ठांमयो सर्व विनावो जी ॥ आतमशक्ति सकल प्रगटी करी, आस्वाद्यो निजनावो जी ॥ १ ॥ ने० ॥ राजुल नारी रे सारी मति धरी, अवलंब्या अरिहंतो जी ॥ उत्त

म संगें रे उत्तमता वधे, सधे आनंद अनंतो जी ॥ २ ॥ ने० ॥ धर्म अधर्म आकाश अचेतना, ते विजाती अग्राह्यो जी ॥ पुज्जल ग्रहवे रे कर्मकलंकता, वाधे वाधक बाह्यो जी ॥३॥ ने०॥ रागी संगें रे रागदशा वधे, थाये तिणे संसारो जी ॥ नीरागीथी रे रागनुं जोडवुं, लहीयें जवनो पारो जी ॥ ४ ॥ ने० ॥ अप्रशस्तता रे टालि प्रशस्तता, करतां आश्रव नासे जी ॥ संवर वाधे रे साधे निर्जरा, आतमजाव प्रकासे जी ॥ ५ ॥ ने० ॥ नेमि प्रजु ध्यानें रे एकत्वता, निज तत्त्वें एकतानो जी ॥ शुक्लध्यानें रे साधि सुसिद्धता, लहियें मुक्ति निदानो जी ॥ ६ ॥ ने० ॥ अगम अरूपी रे अलख अगोचरू, परमातम परमीशो जी ॥ देवचंद्र जिनवरनी सेवना, करतां वाधे जगीशो जी॥ ७

॥अथ त्रयोविंश श्रीपार्श्वजिन स्तवनं॥कडखानी देशी॥

॥ सहज गुण आगरो, स्वामी सुख सागरो, ज्ञान वैरागरें प्रजु सवायो ॥ शुद्धता एकता, तीक्ष्णता जावथी, मोह रिपु जीति जय पडह वायो ॥ १ ॥ ॥ स० ॥ वस्तु निज जाव, अविजास निकलंकता, परिणति वृत्तिता करि अजेदें ॥ जावतादात्म्यता, शक्ति उल्लासथी, संतति योगने तुं उछेदें ॥ २ ॥ स० ॥ दोष गुण वस्तुनी, लखिय यथार्थता, लहि उदासीनता अपर जावें ॥ ध्वंसितज्जन्यता, जाव कर्त्तापणुं, परम प्रजु तूं रम्यो निज स्वजावें ॥ ३ ॥ स० ॥ शुज अशुज जाव, अविजास तहकीकता, शुज अशुज

नाव तिहां प्रनु न कीधो ॥ शुद्ध परिणामता, वीर्य कर्त्ता थई, परम अक्रीयता अमृत पीधो ॥ ४ ॥ स०॥ शुद्धता प्रनु तणी, आत्मनावें रमे, परम परमात्मता तास थाये ॥ मिश्र नावें अछे, त्रिगुणनी निन्नता, त्रि गुण एकत्व तुफ चरण आये ॥ ५ ॥ स० ॥ उपशम रस नरी, सर्व जन संकरी, मूर्त्ति जिनराजनी आज नेटी ॥ कारणें कार्य नि,ष्पत्ति श्रद्धान छे, तिणे नव च्रमणनी नीड मेटी ॥ ६ ॥ स० ॥ नयर खंनायतें, पार्श्वप्रनु दर्शनें, विकसते हर्ष उत्साह वाध्यो ॥ हेतु एकत्वता रमण परिणामथी, सिद्धि साधकपणो आ ज साध्यो ॥ ७ ॥ स० ॥ आज कृत पुण्य, धन दीह माहारो थयो, आज नर जनम में सफल नाव्यो ॥ देवचंद्र स्वामि त्रेवीशमो वंदीयो, नक्ति नर चित्त तुफ गुण रमाव्यो ॥ ८ ॥ स० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनं ॥ कडखानी देशी ॥

॥ तार हो तार प्रनु, मुफ सेवक नणी, जगतमां एटलुं सुजश लीजें ॥ दास अवगुण नर्यो, जाणी पोता तणो,दयानिधि दीन पर दया कीजें ॥ १ ॥ ता०॥ राग द्वेषे नर्यो, मोह वैरी नड्यो, लोकनी रीतिमां घणुये रातो ॥ क्रोधवश धमधम्यो, शुद्ध गुण नवि र म्यो, नम्यो नवमांहि हुं विषय मातो ॥ २ ॥ ता०॥ आदरयुं आचरण, लोक उपचारथी, शास्त्र अन्यास पण कांई कीधो ॥ शुद्ध श्रद्धान वलि, आत्म अवलंब विनु, तेहवो कार्य तिणे को न सीधो ॥ ३ ॥ ता० ॥

स्वामि दरिसण समो, निमित लही निर्मलो,जो उपा दान ए शुचि न थाशे ॥ दोष को वस्तुनो, अहवा उ द्यम तणो, स्वामी सेवा सही निकट लाशे ॥ ४ ॥ ॥ ता० ॥ स्वामि गुण उंलखी, स्वामिने जे नजे,दरि सण शुद्धता तेह पामे ॥ ज्ञान चारित्र तप, वीर्य उ ह्लासथी, कर्म झीपी वसे मुक्तिधामें ॥५॥ ता० ॥ जग त वत्सल, महावीर जिनवर सुणी,चित्त प्रजु चरणने शरण वास्यो ॥ तारजो बापजी, बिरुद निज राखवा, दासनी सेवना रखे जोशो ॥ ६ ॥ ता० ॥ वीनति मानजो, शक्ति ए आपजो, नाव स्याद्वादता शुद्ध ना से ॥ साधि साधक दशा, सिद्धता अनुनवी, देवचंद्र विमल प्रनुता प्रकासे ॥ ७ ॥ ता० ॥ इति ॥

॥कलश॥चोवीसे जिनगुण गाइयें, ध्याइयें तत्त्वस रूपो जी ॥ परमानंद पद पाइयें, अक्षय ग्यान अनूपो जी ॥ १ ॥ चो० ॥ चवदहसें बावन नला, गणधर गु ण नंमारो जी ॥ समतामयि साहु साहुणी, सावय सावई सारो जी ॥ २ ॥ चो० ॥ वर्द्धमान जिनवर तणो, शासन अति सुखकारो जी ॥ चउविह संघ वि राजतां, दूसम काल आधारो जी ॥ ३ ॥ चो० ॥ जि न सेवनथी ज्ञानता, लहे हिताहित बोधो जी ॥ अ हित त्याग हित आदरे, संयम तपनी शोधो जी ॥ ॥ ४ ॥ चो० ॥ अनिनव कर्म अग्रहणता, जीर्ण क र्म अनावो जी ॥ निःकर्मीने अबाधता,अवेदन अना [illegible]वो जी ॥ ५ ॥ चो० ॥ नावरोगना विगमथी,

अचल अक्षय निराबाधो जी ॥ पूर्णानंद दशा लही, विलसे सिद्ध समाधो जी ॥ ६ ॥ चो० ॥ श्री जिनचं द्रनी सेवना, प्रगटे पुण्यप्रधानो जी ॥ सुमति सागर अति उल्लसे, साधुरंग प्रभुध्यानो जी ॥ ७ ॥ चो० ॥ सुविहित गछ खरतरवरू, राजसागर उवझायो जी ॥ ज्ञानधर्म पाठक तणो, शिष्य सुजस सुखदायो जी ॥ ७ ॥ चो० ॥ दीपचंद पाठक तणो, शिष्य स्तवे जि नराजो जी ॥ देवचंद पद सेवतां, पूर्णानंद समा जो जी ॥ ए ॥ चो० ॥ इति देवचंद्रजी कृत चतुर्विंश तिजिन स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ खंधकमुनिराजनुं चोढालियुं ॥

॥ ढाल पहेली ॥ नमूं वीर शासन धणी जी, गण धर गोयम स्वाम ॥ कथाअनुसारें गायशुं जी, खंधकना गुणग्राम ॥ १ ॥ क्षमावंत जोय जगवंतनो जीज्ञान ॥ ॥ ए आंकणी ॥ अति क्षमा अधिकी करी जी, संजम धारी जी जान॥शिवमारगने कारणें जी, रहेता धरमने ध्यान ॥ २ ॥ क्ष० ॥ त्वचा उतारी देहनी जी, रहेता समताजी जाव ॥ जिनधर्म कीधो दीपतो जी, महोटा ए मुनिराव ॥३॥ क्ष०॥ सावथि नगरी शोजती जी, कनक केतु तिहां जूप ॥ राणी मलयासुंदरी जी, खंधक कु मर अनूप ॥ ४ ॥ क्ष० ॥ सघला अंगें सुंदरु जी, इंडी नही एक हीण ॥ प्रथम वयें चढती कला जी, चतुर कला प्रवीण ॥ ५ ॥ क्ष० ॥ विजयसेन गुरु आवी या जी, साधु तणे परिवार ॥ ज्ञानगुणें कर आगला

जी, तपसी मारग सार ॥ ६ ॥ कृ० ॥ नर नारि वहु तिहां मिली जी,साधू वांदण कोड ॥ केइ पाला केइ पालख्यां जी, वंदे होडाहोड ॥७॥ कृ० ॥ खंधक कुमर पण आवीयो जी,वेगे परखदा मांय ॥ मुनिवर दीधी देशना जी,सघलाने चितलाय॥८॥कृ०॥आगारनेअण गारना जी, धर्म तणा दोय नेद ॥ समकित सहित व्रत आदरो जी, राखो मुगति उमेद ॥ ए ॥ कृ० ॥ मान्न अणी जलविंदुवो जी,पाकूं पीपल पान ॥ अथिर तन धन ए आउखुं जी,तजो कपट ने मान ॥१०॥ कृ०॥ विहडे सुतने बांधवो जी,विहडे सज्जन पर्म ॥ कुटुंव पण विहडे सहु जी,नवि विहडे जिनधर्म ॥ ११ ॥ ॥कृ०॥ आव्यो ने जीव एकिलो जी, वली एकिलो जी जाय॥बांध्यां कर्म जीवें जिस्यां जी,तिस्यां उदय हुवे आय ॥ १२ ॥ कृ० ॥ पुण्यजोगें नरनव लह्यो जी, सदगुरुनो संयोग ॥ हवे टालो राखो मती जी,तजो जहेर जिम नोग ॥ १३ ॥ कृ० ॥ चारु गति संसारना जी,लग रहि खांचाजी ताण॥चल वस्तु सघली कही जी, निश्चल ने निरवाण ॥ १४ ॥ कृ० ॥ उंग सुखने कारणें जी,शुं द्यो कंमी रांग ॥ नवनव मांहे काढिया जी,नहुवे वाला सांग ॥१५॥ कृ० ॥ अथिर ए सुख संसारनां जी, कांई अलुफो जाल॥ वचन सुणी सदगुरु तणां जी, चेतो सुरत संनाल॥१६॥ कृ० ॥ पंचमाहाव्रत आदरो जी, श्रावकनां व्रत बार ॥ कष्ट प ड्या गाढा रहो जी, जिम पामो नव पार ॥ १७ ॥

कृ० ॥ धन धान्य घर हाटडी जी, ममता म करोजी कोय ॥ काचा सुखने कारणेजी, हार्यो जनम म खोय ॥ १७ ॥ कृ० ॥ सगपण सहु संसारनां जी, थया अनंतीजी वार ॥ मिल मिलने विछडी गयां जी, करमज लागां लार ॥ १९ ॥ कृ० ॥ सगपण सहु संसारनां जी, स्वारथना छेजी एह ॥ जो स्वारथ पूगे नही जी, तटके तोडे नेह ॥ २० ॥ कृ० ॥ नरक निगोदमें डुःख सह्यां जी, छेदन नेदन ऽनेक ॥ तो प ण धीठा जीवने जी, सुरत नही छे रेक ॥ २१ ॥ ॥ कृ० ॥ ठगवाजी मांमी घणी जी, चाडी चुगली जी खाय ॥ करम उदय आयां थकां जी, पडे गलामां आय ॥ २२ ॥ कृ० ॥ इस्या डुखें मरपे नही जी, चेतो तुमें नव्य जीव ॥ ज्ञानादिक आराधीने जी,तुमें द्यो मुगतनी नीव ॥२३॥ कृ० ॥ दिलमां दया विचा रीने जी,छांमोजी खांचा ताण ॥ आज्ञा सहित किरिया करो जी, ए जीवित परमाण ॥२४॥ कृ० ॥ मुगति तो निश्चें मिले जी,कदा उरे रहे जाय ॥ देवलोक वासो वसें जी, सुख घणां तिण ठाय ॥ २५ ॥ कृ० ॥ वाणी सुणि साधु तणी जी, कुमर जोड्या वेहु हाथ ॥ वचन तुमारां सर्दह्यां जी, नली करी कृपा नाथ ॥ २६ ॥ ॥ कृ० ॥ मातपिताने पूछीने जी, लेशुं संजम नार ॥ वलता मुनिवर इम कहे जी, म करो ढील लगार ॥ ॥ २७ ॥ कृ० ॥ घरे आवी कहे मातने जी,द्यो अनु मति आदेश ॥ संजम लेई हूं सुखी जी, काटूं करम

कलेश ॥ २८ ॥ कु० ॥वचन सुण्यां सुतनां इस्यां जी, धरणि ढली छेजी माय ॥सावधान हुइने करयुं जी,इसी म काढो वात ॥ कुमरजी, संजम विषम अपार॥२९॥ संजम छे वह्न दोहिलो जी, जिसी खांमानीजी धार॥ पाय उवराणें चालवुं जी,लेवो शुद्ध आहार ॥ ३० ॥ ॥ कु० ॥ सं० ॥ सुवचन कुवचन लोकनां जी,सहणा पडशेजी मार ॥ राजकुमर सुकुमाल छो जी, एह न करणी सार ॥ ३१ ॥ कु० ॥ सं० ॥ साधपणुं दोहिलुं कह्युं जी, तिणमें फेर न कोय ॥ कायरने छे दोहिलुं जी, शूराने नहि होय ॥ ३२ ॥कु० ॥ सं० ॥ उत्तर पडुत्तर बहु हुवा जी, बाप बेटानेजी माय ॥ सूत्रमांहे विस्तार छेजी, देजो चतुर लगाय ॥ ३३ ॥ ॥ कु० ॥सं०॥ चितशुं दीधी आगना जी, करी महोटे मंमाण ॥ शिबिकामां बेसाडीने जी, सोंप्यो साधुने आण ॥ ३४ ॥कु० ॥ इष्ट त्यंत वालो हुतो जी,स्वामी म्हारे ए पुत्र ॥ डरियो जामण मरणथी जी, सोंप्यो तुम कर सुत ॥ ३५ ॥ कु० ॥ सिंहपणे व्रत आद रोजी,पालजो सिंहनी जेम ॥ घणुं पराक्रम फोरजोजी, मात पिता कहे एम ॥ ३६ ॥ कु० ॥ इम शीखामण देइ करी जी, आया जिण दिशि जाय ॥ खंधकने लले लावशूं जी, दीक्षा दिनी मुनिराय ॥ ३७ ॥ कु० ॥ आगन्या मागी साधु तणी जी, सूत्र अरथ लिया धा र ॥ जिनकलपी पणुं आदर्युं जी, एकलमल अण ॥२ ।३८॥कु०॥मिलि शिरदार रायने कह्युं जी, ए नान

डियोजी वाल ॥ सिंहादिकना नय तणा जी,करवावो रखवाल ॥ ३ए ॥कु० ॥ पांचशें जोधा बोलावीने जी, दीया कुमरनेजी लार॥ ते साधुने खबर नहि जी,साथें वहे शिरदार ॥ ४० ॥ कु० ॥ सावथि नगरीशुं चालियो जी, कुंती नगरीजी जाय ॥ नगरी बहिनोई तणी जी, शंक न आणी कांय ॥४१॥ कु०॥दूहा ॥ पांचेशें तिण अवसरें, खावा पीवा काज ॥ वलो वली च लता रह्या, एकल रह्या मुनिराय ॥१॥ हवे किम करे गोचरी, उपसर्ग व्यापे केम ॥ एकमना थइ सांजलो, मुनी करे वे जेम ॥ २ ॥ ॥ ढाल बीजी ॥ तिण अवसर मुनिराय, कुंति नगरीमांहे,सूकोमल साधु॥ वि हरण विरियां पांगुखा ए॥१॥ वाजे लूवर जाल, दाफे पग सुकमाल ॥ सु० ॥ दो पहेराने तावडे ए ॥ २ ॥ निरमोही निरमाय, इरजा जोवंता जाय ॥ सु० ॥ गज तणी परें गोचरी ए॥ ३ ॥ सुसत उतावला नांहि, धीरज धरे मनमांहि ॥ सु० ॥ गयवरनी परे मलप ता ए ॥ ४ ॥ राय राणी तिण वार,रमतां पासा सा र ॥ सु० ॥ महेल तले मुनि आविया ए ॥ ५ ॥ प ज्यो हे राणीनी दिठ, खंधक महेलनी हेठ ॥ सु० ॥ एतो हुवे माहरो बंधुवो ए ॥ ६ ॥ चिंता आवी पि हीर, नयणें छूटुं नीर ॥ सु० ॥ विरह व्यापी चिंता थई ए ॥ ७ ॥ राजा साह्मो जोय, राणी इम किम रोय ॥ सु० ॥ सुखमांहे डुख किम हुवां ए ॥ ८ ॥ साधुने जावतो देख, राजाने जाग्यो द्वेष ॥ सु० ॥

ए ए करम एणे कियां ए ॥ ए ॥ राणी हूत्ती सुख मांय, रोवांडी इण आय ॥ सु० ॥ तो ए खवर साधु तणी ए ॥ १० ॥ राय विचारी गेर, जाग्यो पूरव वैर ॥ ॥ सु० ॥ पाठल नव काचर तणो ए ॥ ११ ॥ मातुं विचारी राय, मसाण नूमि ले जाय ॥ सु० ॥ त्वचा उतारो एहनी ए ॥ १२ ॥ राजा नफर बोलाय, वेगा जावो धाय ॥ सु० ॥ इण साधुने पकडी लीयो ए ॥ ॥ १३ ॥ मत करजो कांइ कांण, ले जायजो सम साण ॥ सु० ॥ सघली खाल उतारजो ए ॥ १४ ॥ नफर सुणी इम वाण, करी लीधी परमाण ॥ सु० ॥ अजाण चक रा जायने ए ॥ १५ ॥ पकड्या मु निना हाथ, मसाण नूमि ले साथ ॥ सु० ॥ खाल उतारवा देहनी ए ॥ १६ ॥ माहरो नही छे दोष,मुनि म करो कोइ रोप ॥ सु० ॥ मरप्या क्पन्न समोकरे ए ॥ १७ ॥ मसाण नूमिका मांय, काया दीधी वो सिराय ॥ सु०॥ चारू आहार त्यागी दीया ए ॥१८॥ करडो आवी बन्यो काम, न कह्युं आपणुं नाम ॥ सु० ॥ सगपण को दाख्युं नहि ए ॥ १९ ॥ रा ख्यो समता नाव, संजम उपर चाव ॥ सु० ॥ मने करीने मोल्या नही ए ॥२०॥ तीखा पाछणानी धार, मसतक उपर प्रहार ॥ सु० ॥ खाल उतारी देहनी ए ॥ २१ ॥ पगां सूधी खाल, रहिता संजममां नाल ॥ सु० ॥ नाके सल घाल्यो नही ए ॥ २२ ॥ रह्या ते रूडे ध्यान, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ सु० ॥ क

रम खपावी मुगतें गया ए ॥ २३ ॥ केवल महिमा होय,धन धन करे सहु कोय ॥सु०॥ जिनमारगकियो दीपतो ए ॥ २४ ॥

॥ दुहा ॥ कुंती नगरीनी मध्ये, हुवोज हाहाकार ॥ देखो राय मरावीयो, विना गुने अणगार ॥ १ ॥ लोक हुवा सहु आगला, जोर न चाले कोय ॥ मुनिने मोक्ष सिधावणो, पण वैर न छोडे कोय॥ २ ॥ किम बूझे पांचशें सुजट,वलि राणी ने राय ॥ वैर खबर किण विध पडे, ते सुणजो चित्त लाय ॥ ३ ॥

॥ढाल त्रीजी॥धरम हिये धरो॥ए देशी॥हजी साधु आयो नहीरे, जोवे पांचशें वाट ॥ जलामण दीनी रायजी रे. क्षण क्षण करे उच्चाटो रे ॥ धन्य महोटा मुनी ॥ नित्य कीजें गुण ग्रामो रे॥ ध० ॥ सीझे सघलां कामो रे ॥ १ ॥ ध० ॥ नगर गली फरी जोयता रे, किहांइ न दीठो रे साथ ॥ सुण्यो साधु मारयो गयो रे, तव परमारथ लाधो रे ॥ २ ॥ ध० ॥ राजा पूछे कुण तुमें रे, तव वलता कहे जोध ॥ कनककेतुना रजपूत छां रे,तुमें करी वात अयुक्तो रे॥३॥ध०॥खंधक कुमर दीक्षा लेइ रे, अमें रखवालाजी लार॥सो मुनिवर तें मारीयो रे, न सरी गरज लगार रे ॥ ४ ॥ ध० ॥ वचन सुणी जोधा तणां रे,राय हुवो दिलगीर ॥ हाहा पाप जामां कीयां रे, मारयो राणीनो वीर रे ॥ ५ ॥ ॥ ध० ॥ राणी वात सुणी तिसें रे, लागो मरम प्रहार ॥ मूरछागत धरणी ढली रे,तूटी आंसूडानी धार

॥ किवारें हुं, वाह्य तथा अभ्यंतर परिग्रह
माहापापनुं मूल डुर्गतिने वधारनारो, काम, क्रोध
मान, माया, लोज, विषय अने कषायनो स्वामी
माहाडुःखनुं कारण, मद्दा अनर्थकारी, डुर्गतिनी
ला, माठी लेश्यानो परिणामी, अज्ञान, मोह, मत्स
र, राग अने द्वेषनुं मूल, दशविध यति धर्म रूप कल
वृक्षनो दावानल, ज्ञान, क्रिया, क्षमा, दया, सत्य
संतोष तथा बोधबीज रूप समकेतनो नाश करनार
संयम अने ब्रह्मचर्यनो घात करनारो, कुमति तथ
कुबुद्धिरूप डुःखदारिद्रनो देवा वालो, सुमति अ
सुबुद्धिरूप सुखसौनाग्यनो नाश करनारो, तप सं
म रूप धनने लूंटनारो, लोज क्लेश रूप समुद्रनो
धारनारो, जन्म जरा अने मरणनो देवावालो, क
टनो नंमार, मिथ्यात्व दर्शन रूप शल्यनो नरेलो, मो
क्षमार्गनो विघ्नकारी, कडवा कर्म विपाकनो देवाव
लो, अनंत संसारनो वधारनारो, मद्दा पापी, पांच
इंद्रियना विषयरूप वैरीनी पुष्टिनो करनारो, मोहो
टी चिंता शोक ने खेदनो करनार, संसार
रूप अगाध व कपट अने क्ले

श्रवनो आगार; अनंत दारुण दुःख अने जयनो देवा वालो, महोटा सावद्य व्यापार कुवाणिज्य कुकर्मादा ननो करावनारो, अध्रुव, अनित्य, अशाश्वतो, असा र, अत्राण, अशरण, एवो जे आरंभ अने परिग्रह तेने हुं केवारें ढांमीश! जे दिवसें ढांमिश, ते दिवस महारो धन्य छे! ॥ ए प्रथम मनोरथ ॥

२ केवारें हुं मुंम थइने दश प्रकारें यतिधर्म धारी, नववाडें विशुद्ध ब्रह्मचारी, सर्व सावद्य परिहारी, अ णगारना सत्तावीश गुणधारी, पांच समिति त्रण गु प्तियें विशुद्धविहारी, मोहोटा अभिग्रहनो धारी, बे हेंतालीश दोप रहित विशुद्ध आहारी, सत्तर भेदें संय म धारी, बार भेदें तपस्याकारी, अंत आहारी, प्रांत आहारी, अरस आहारी, विरस आहारी, लुरक आ हारी, तुच्छ आहारी, अंतजीवी, प्रांतजीवी, अरसजी वी, विरसजीवी, लुरकजीवी, तुच्छजीवी, सर्व रस त्या गी, छकायनो दयाल, निर्लोभी, निःस्वादी, पंखी तु ल्य. वायरानी परें अप्रतिबंध विहारी, वीतरागनी आ ज्ञासहित, एहवा गुणोनो धारक जे अणगार ते हुं केवारें थईश! जे दिवस हुं पूर्वोक्त गुणवान् थाइश ते दिवस धन्य छे ॥ ए बीजो मनोरथ ॥

३ केवारे हुं सर्व पापस्थानक आलोई, निःशल्य थइ, सर्व जीवराशी खमावीने, सर्व व्रत संभारीने, अ ढार पापस्थानकथी त्रिविधें त्रिविधें वोसरीने, चारे आहार पच्चरकीने, शरीरने, छेहेले श्वासोच्छ्वासें वोस

रावीने, त्रण आराधना आराधतो थको, चार मंग लिक रूप चार शरण मुखें उच्चरतो थको, सर्व संसा रने पूंठ देतो थको, एक अरिहंत, बीजा सिद्ध, त्री जा साधु, अने चोथो केवलि प्ररूपितधर्म, तेने ध्याव तो थको, शरीरनी ममता रहित थयो थको, पादोप गमन संथारा सहित, पांच अतिचार टालतो थको, मरणने अणवांछतो थको, एहवुं पंमित मरण अंत काले मुझने कराविश ॥ ए त्रीजो मनोरथ ॥ ३ ॥

ए त्रण मनोरथने श्रावक, मन,वचन अने कायायें करी शुद्धपणे ध्यावतो थको सर्व कर्म निर्झरीने संसा रनो अंत करे, मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्यें पामे ॥

॥ अथ वसंत धमाल वगेरे होरीमां गावानां पद प्रारंज ॥ तत्र प्रथम वसंत ॥

॥ ए ऋतु रूडी रूडी माहारा वाला, रूडो मास वसंत ॥ रूडो समकित केसू फूल्यो, गुंजत मधुकर संत माहारा वाला ॥ ए० ॥ १ ॥ संवेग रंग परवाव ज वाजे, डुविध दया कर नाल ॥ उपशम नर पिच कारी मारी, नवनिरवेध गुलाल माहारा वाला ॥ ॥ ए०॥ २ ॥ आस्तिक आप सुवागमें वेठे, खेलत खे ल रसाल ॥ ज्ञान उद्योत प्रज्ञु फगुआ मांगत, दीजें शांति कृपाल माहारा वाला ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

क ॥ पूर्णानंद सुखद पिउ संगें, सब सखीअन मि लाई हो ॥ खेल० ॥ निज गुन बागमें सहज वसंतें, मौज मचा मन जाई हो ॥ खेल० ॥ १ ॥ ध्यान स माधि जवनमें बेठे, रस जरी खेले गोसांई हो ॥ खे०॥ प्रजु आणा शिर छत्र विराजे, विहुं नय चमर ढला ई हो ॥ खे० ॥ २ ॥ आगम वचन संगीते बहुगम, वाजित्र विविध वजाई हो ॥ खे० ॥ शांति सुधारस प्याले पीवत, आनंद लील जमाई हो ॥ खे० ॥ ३ ॥ या विध पीउ प्यारी मिलि खेलत, सब सुख संपत्ति पाई ॥ खे० ॥ जानुचंद प्रजु पास पसायें, शिव सुख हर्षे वधाई हो ॥ खे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ राग धमाल ॥

॥ होरी खेलावत कानईयां, नेमीसर संगें ले ज ईआं ॥ ए आंकणी ॥ रेवत गिरि पर एकठा मिले सब, सहस बत्रीश अंतेउरीआं ॥ होरी० ॥ १ ॥ कोई संग पिचकारी लीए कोई, अबिर गुलालसें झोरी जरईआं ॥ हो० ॥ २ ॥ नेमकुमर खेले उत होरी, विवाह मनावत गोपी मिलईआं ॥ हो० ॥ ३ ॥ मौन रह्या प्रजु बात विचारी, परणो देवर नारी जलईआं ॥ ॥ हो० ॥ ४ ॥ तोरण आवी पशुआं छुडावत, राजुल नारी विचार करईआं ॥ हो० ॥ ५ ॥ मुक्ति धूतारी शोक्य हमारी, इनसें क्युं मेरो चित्त जलइआं ॥ ॥ हो० ॥ ६ ॥ सहसावन जई संयम लीनो, शुकल ध्यानसें केवल पईआं ॥ हो० ॥ ७ ॥ नेम राजुल

दोए मुक्ति सिधाए, रूप कहे हम लेत वलईश्रां ॥
॥ हो० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ राग वसंत ॥

॥नहींरे नाहार नवरंग वनायो, अपने नेमजीको घर रे ॥ १ ॥ हांरे नहीं रे नाहार० ॥ ए टेक ॥ आंबो मोर्यो केसू फूल्यां, फूल्युं सघलुं वन्न रे ॥ हां० ॥ ॥ २ ॥ उपशम रसको रंग नयो हे, अविर अरगजा धर रे ॥ हां० ॥ ३ ॥ पंच समिति खेले सब सहीयो, शील सदाकों धर रे ॥ हां० ॥ ४ ॥ रास मच्यो हे शुजमति सखीको, कुमति सखीकों मर रे ॥ हां० ॥ ॥ ५॥ फगुआ दो नर फोली अविचल, माहानंदको घर रे ॥ हां० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ राग धमाल ॥

॥ वामा नंदन अंतर जामी, जीवन प्राण आधार ललना ॥ दरिसण देखी ताहारुंहो, सफल कर्यो अवतार ॥ मन मोहन गोडी पासजी हो, अने हो मेरे ललना, तुम समो नहि कोई देव ॥ मन० ॥ ॥ १ ॥ तुम साथें मुज प्रेम वन्यो हे, न गमे बीजानो संग ललना ॥ तुम पसायें पामीयें हो, अति घणो उत्सव रंग ॥ म० ॥ २ ॥ अमने मोटी होंश मुक्तिनी, ते आपो मुज स्वामि ललना ॥ तुं प्रजु सुरतरु सारिखो हो, पूरण वंछित काम ॥ म० ॥ ३ ॥ महेर घणी प्रजु राखीयें हो, हुं कहुं वारो वार ललना ॥ नेह कीधो तु खरो हो, नवि जाऊं बीजे दरवार ॥ म० ॥

॥ ४ ॥ जिहां तिहां संग न कीजियें हो, रहीयें सदेजा नंद ललना ॥ नित्यलाभ कहे प्रभु सेवियें हो, लीजियें शिवसुख कंद ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ धमाल ॥

॥ नयरी वणारसी जाणीयें हो, अश्वसेन कुल चं द ललना ॥ वामानंदन वंदीयें हो, पासजी सुरतरु कं द ॥ परमेश्वर नित्य गुण गाइयें हो, अहो मेरे ललना गावत शिवसुख पाइयें हो ॥ १ ॥ ए टेक ॥ फणि धर लंछन नव कर जिनजी, सबल घनाघन सार ललना ॥ संयम लेई शत तीनशुं हो, सवि कहे तुं धन्य धन्य ॥ पर० ॥ २ ॥ वरस शत एक आउखुं हो, सीधा समेत गिरीश ललना ॥ शोल सहस मुनी तुम तणा हो ॥ समणी सहस अडत्रीश ॥ पर० ॥ ॥ ३ ॥ धरणीधर पदमावती हो, प्रभु शासन रख वाल ललना ॥ रोग सोग संकट टले हो, नाम ज पतो जयमाल ॥ पर० ॥ ४ ॥ पास आश पूरो अब मेरी, अरज एक अवधार ललना ॥ श्रीनयविजय वि बुध पसायथी हो, जस कहे भवजल तार ॥ पर० ॥ ५ ॥

॥ राग वसंत ॥

॥ श्रीचिंतामणि पास प्रभु तारा, मंदिर वरसे रंग रे ॥ ए टेक ॥ ग्यान गुलाल अबिर उडावत, समता नीर सुचंग रे ॥ श्रीचिं० ॥ मंदिर० ॥ १ ॥ अनुभव लहेर फूली फूलवाडी, फबकती नव नव रंग रे ॥ ॥ श्री० ॥ २ ॥ [illegible] अंग अनोपम, [illegible]

ध्यानसें चंग रे ॥ श्री०॥ अमरचंद चिंतामणि चित्तध र, लागो अविहड रंग रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ काफी होरी ॥

॥ ऐसें होरी तो होय रही चंपा नगरीमें, फागुनके दिन आए ॥ ऐसें० ॥ ए टेक ॥ वासपूज्यजीके नव ल मंदिरमें, होई रही हो सुखदाई ॥ ऐसें० ॥ १ ॥ केसर घोली भरी रे कचोली, प्रभु पूजो भले भावें ॥ ऐसें० ॥ २ ॥ अनुपम प्रेम पिचरको अदभुत, भा वना अबीर सुवासे ॥ ऐसें० ॥ ३ ॥ परमानंद पर म सुख दायक, कीरति जग कहाय ॥ ऐसें० ॥ ४ ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ आदिजिनेसर प्रभुजी, साहिब तेरी रे, जाउं में बलिहारी ॥ आ०॥ ॥ ए टेक ॥ नाभिके नंदन पाप निकंदन, तीन भवन हितकारी रे॥जाउं में बलिहारी१ सिद्धगिरि सोहन जिन मन मोहन, पेखत मूरति प्या री रे ॥ जा० ॥ २ ॥ पूर्व नवाणुं वार प्रभुजी, रह्या रायण निरधारी रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जात्रा नवाणुं कीनी युक्तें, दुर्गति दूर निवारी रे ॥ जा०॥४॥ अढार अठावन चैत्री पूनम, जात्रा नवाणुं जुहारी रे ॥ जा०॥ ॥५॥ सुरत संघ सदा सुखदाता, कहत कल्याण जय कारी रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ नेमि निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो॥ने मि० ॥ सहसावनकी कुंज गलनमें, पंचमहाव्रत

नो रे ॥ वनमें० ॥ १ ॥ उपशम अबिर गुलाल उ डावत, खेलत नेम नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ २ ॥ रेव त गिरि पर इकठा मिले सब, सहस बत्रीशे लीनो रे ॥ वनमें० ॥ ३ ॥ आत्मग्यानकी जरी पिचकारी, प्रज्ञु लहे ज्ञान नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ ४ ॥ रूप चंदए प्रज्ञु गुण गावत, नेम राजुल शिव लीनो रे ॥ ॥ वनमें० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ धमाल ॥

॥ सोरीपुर नगर सोहामणुं हो,समुड विजयराजें ड ॥ शिवादेवी राणी तेहनो हो, अंगज नेम जिणंद, वृंदावन फाग सोहामणो हो ॥ अहो मेरे ललना, गावत नेम जिणंद ॥ वृं० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ समुड विजयको जातलो हो, श्रीवसुदेवकुमार ॥ जास सो हाग गुणें करी हो, मान तजें हरि हार ॥ वृं० ॥ २ ॥ बहुतेर सहस त्रिया रस रसधर, मधुकर सुख मकरंद ॥ अंगज सकज अछे तस दोउ, गुण जया राम गोविंद ॥ वृं० ॥ ३ ॥ सोल सहस गोपी मनमोहन, मनोहर रूप मोरार ॥ मेघश्याम मुरली लेनीके, वाजत वेणुविशाल ॥ वृं० ॥ ४ ॥ चंग मृदंग उपंग वजावत, गावत हे ब्रजनार ॥ नेम कुमर हल धर गिरिधरमिल, करत हे केलि अपार ॥ वृं० ॥ ५ ॥ टोलें मिली मिली तान मचावत, जीलत सुरन्नी लाल ॥ मारत केसर कमल पिचकारी, रग नर नार ॥ वृं० ॥ ६ ॥ अजव लाल तन वेप

ध्यानसें चंग रे ॥ श्री०॥ अमरचंद चिंतामणि चित्तध
र, लागो अविहड रंग रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ काफी होरी ॥

॥ ऐसें होरी तो होय रही चंपा नगरीमें, फागुनके
दिन आए ॥ ऐसें० ॥ ए टेक ॥ वासपूज्यजीके नव
ल मंदिरमें, होई रही हो सुखदाई ॥ ऐसें० ॥ १ ॥
केसर घोली जरी रे कचोली, प्रभु पूजो जले जावें ॥
ऐसें० ॥ २ ॥ अनुपम प्रेम पिचरको अदभुत, भा
वना अबीर सुवासे ॥ ऐसें० ॥ ३ ॥ परमानंद पर
म सुख दायक, कीरति जग कहाय ॥ ऐसें० ॥ ४ ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ आदिजिनेसर प्रभुजी, साहिब तेरी रे, जाउं
में वलिहारी ॥ आ०॥ ॥ ए टेक ॥ नाभिके नंदन पाप
निकंदन,तीन भवन हितकारी रे॥जाउं में वलिहारी१
सिद्धगिरि सोहन जिन मन मोहन,पेखत मूरति प्या
री रे ॥ जा० ॥ २ ॥ पूर्व नवाणुं वार प्रभुजी, रह्या
रायण निरधारी रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जात्रा नवाणुं
कीनी युक्ते, दुर्गति दूर निवारी रे ॥ जा०॥४॥ अढार
अठावन चैत्री पूनम, जात्रा नवाणुं जुहारी रे ॥ जा०॥
॥५॥ सुरत संघ सदा सुखदाता, कहत कल्याण जय
कारी रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ नेमि निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥
ने० ॥ सहसावनकी कुंज गलनमें, पंचमहाव्रत ली

नो रे ॥ वनमें० ॥ १ ॥ उपशम अबिर गुलाल उ डावत, खेलत नेम नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ २ ॥ रेव त गिरि पर इकग मिले सव, सहस बत्रीशे लीनो रे ॥ वनमें० ॥ ३ ॥ आत्मग्यानकी नरी पिचकारी, प्रनु लहे ज्ञान नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ ४ ॥ रूप चंदए प्रनु गुण गावत, नेम राजुल शिव लीनो रे ॥ ॥ वनमें० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ धमाल ॥

॥ सोरीपुर नगर सोहामणुं हो,समुड् विजयराजें ड् ॥ शिवादेवी राणी तेहनो हो, अंगज नेम जिणंद, वृंदावन फाग सोहामणो हो ॥ अहो मेरे ललना, गावत नेम जिणंद ॥ वृं० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ समुड् विजयको न्रातलो हो, श्रीवसुदेवकुमार ॥ जास सो हाग गुणें करी हो, मान तजें हरि हार ॥ वृं० ॥ २ ॥ वहुतेर सहस त्रिया रस रसधर, मधुकर सुख मकरंद ॥ अंगज सकज अठे तस दोउ, गुण नखा राम गोविंद ॥ वृं० ॥ ३ ॥ सोल सहस गोपी मनमोहन, मनोहर रूप मोरार ॥ मेघश्याम मुरली लैनीके, वाजत वेणुविशाल ॥ वृं० ॥ ४ ॥ चंग मृदंग उपंग बजावत, गावत हे व्रजनार ॥ नेम कुमर हल धर गिरिधरमिल, करत हे केलि अपार ॥ वृं० ॥ ५ ॥ टोलें मिली मिली तान मचावत, जीलत लाल ॥ मारत केसर कमल पिचकारी, रंग नर नार ॥ वृं० ॥ ६ ॥ अजब लाल तनु वे

ध्यानसें चंग रे ॥ श्री०॥ अमरचंद चिंतामणि चित्तध
र, लागो अविहड रंग रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ काफी होरी ॥

॥ ऐसें होरी तो होय रही चंपा नगरीमें, फागुनके
दिन आए ॥ ऐसें० ॥ ए टेक ॥ वासपूज्यजीके नव
ल मंदिरमें, होई रही हो सुखदाई ॥ ऐसें० ॥ १ ॥
केसर घोली भरी रे कचोली, प्रभु पूजो भले भावें ॥
ऐसें० ॥ २ ॥ अनुपम प्रेम पिचरको अदभुत, भा
वना अबीर सुवासे ॥ ऐसें० ॥ ३ ॥ परमानंद पर
म सुख दायक, कीरति जग कहाय ॥ ऐसें० ॥ ४ ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ आदिजिनेसर प्रभुजी, साहिब तेरी रे, जाउं
में बलिहारी ॥ आ०॥ ॥ ए टेक ॥ नाभिके नंदन पाप
निकंदन,तीन भवन हितकारी रे॥जाउं में बलिहारी१
सिद्धगिरि सोहन जिन मन मोहन,पेखत मूरति प्या
री रे ॥ जा० ॥ २ ॥ पूर्व नवाणुं वार प्रभुजी, रह्या
रायण निरधारी रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जात्रा नवाणुं
कीनी युक्तें, डुर्गति दूर निवारी रे ॥ जा०॥४॥ अढार
अठावन चैत्री पूनम, जात्रा नवाणुं जुहारी रे ॥ जा०॥
॥५॥ सुरत संघ सदा सुखदाता, कहत कल्याण जय
कारी रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ नेमि निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥
॥ सहसावनकी कुंज गलनमें, पंचमहाव्रत ली-

नो रे ॥ वनमें० ॥ १ ॥ उपशम अबिर गुलाल उडावत, खेलत नेम नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ २ ॥ रेवत गिरि पर इकठा मिले सब, सहस बत्रीशे लीनो रे ॥ वनमें० ॥ ३ ॥ आतमग्यानकी जरी पिचकारी, प्रभु लहे ज्ञान नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ ४ ॥ रूपचंदए प्रभु गुण गावत, नेम राजुल शिव लीनो रे ॥ ॥ वनमें० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ धमाल ॥

॥ सोरीपुर नगर सोहामणुं हो,समुद्र विजयराजेंद्र ॥ शिवादेवी राणी तेहनो हो, अंगज नेम जिणंद, वृंदावन फाग सोहामणो हो ॥ अहो मेरे ललना, गावत नेम जिणंद ॥ वृं० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ समुद्र विजयको भ्रातलो हो, श्रीवसुदेवकुमार ॥ जास सोहाग गुणें करी हो, मान तजे हरि हार ॥ वृं० ॥ २ ॥ बहुतेर सहस त्रिया रस रसधर, मधुकर सुख मकरंद ॥ अंगज सकज अछे तस दोउ, गुण जख्या राम गोविंद ॥ वृं० ॥ ३ ॥ सोल सहस गोपी मनमोहन, मनोहर रूप मोरार ॥ मेघश्याम मुरली लेनीके, वाजत वेणुविशाल ॥ वृं० ॥ ४ ॥ चंग मृदंग उपंग बजावत, गावत हे व्रजनार ॥ नेम कुमर हलधर गिरिधरमिल, करत हे केलि अपार ॥ वृं० ॥ ५ ॥ टोले मिली मिली तान मचावत, खेलत सुरभी गुलाल ॥ भारत केसर कमल पिचकारी, रंग करत हे नर नार ॥ वृं० ॥ ६ ॥ अजब लाल [illegible]

नयन लाल मुख लाल ॥ पंच पीतांबर उढत नीके. जादव ठेल ठोगाल ॥ वृं० ॥७॥ अंबअंब कोकिलरव आलापित, गावत गीत रसाल ॥ चढी कदंब श्रीकृष्ण वजावे, मधु बसंतकी ढाल ॥ वृं० ॥ ८ ॥ नटिका नंदी करुणानिधि, हरिकुल पंकज जाण ॥ करत केलि श्रीनेम मुरारी, रवि शशि उपमा आण ॥ ॥ वृं० ॥ ए ॥ यादव कुमर जले एकेकथे, गुणवंत अरु रूपवंत ॥ नेमीसर सरिखो नहीं कोई, त्रिभुवनके बलवंत ॥ वृं० ॥ १० ॥ वृंदावनमें एणिपरें खेलत, सब यादवके वृंद ॥ नेमीसर जिनचंद पसायें, प्रत्यक्ष परमानंद ॥ वृं० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ जाग जाग जीव तुं, जठ थयो प्रजात रे ॥ प्रजु जीको नाम जज, पावे ज्युं शिव सात रे ॥जा०॥१॥ पूरव दिशि उदित सूर, धरि प्रवाल रंग गात रे ॥ विबुधवृंद पढत पाठ, नाठ गई ठे रात रे ॥ जा० ॥ २ ॥ मोह गहेली नींद ठांमी,दूर करि मिथ्यात रे ॥ सुगुरु वचन बोध करि, धर्मशुं धरि धात रे ॥जा०॥३॥दान शील तपो जाव, जावनशुं बहु जांत रे॥ चार मंगल चार बुद्धि,होत नामथी विख्यात रे॥जा०॥४॥पंच पद को ध्यान करी,शुणियल गुण गात रे॥आपहीमें दोष देखि,ठाल पराइ तांत रे॥जा०॥५॥चरण करण विवेक शुद्ध,मनेडुं करि थिर शांत रे॥ कहत मुनि मलूक चंद, त सदा सुख शात रे॥जा०॥६॥इति आत्मशीक्षापद॥

॥ अथ पुंमगिरि स्तवन प्रारंजः ॥

॥ वीरजी आयारे विमलाचलके मेदान, सुरपति जाया रे, समवसरण मंमाण ॥ ए आंकणी वे ॥ देशना देवे वीरजी स्वाम, शत्रुंजय महिमा वरणवे ताम ॥ जाखे आव जपर सो नाम, तेहमां जांख्युं रे, पुंमरगिरि अनिधान ॥ सोहम इंदो रे, तव पूछे बहु मान ॥ किम थयुं स्वामी रे, जांखो तास निदान ॥ वीर० ॥ १ ॥ प्रजुजी जाखे सांजल इंद, प्रथम जे हुआ रुपज जिणंद ॥ तेहना पुत्र ते जरत नरिंद, जरतना हुआ रे रुपजसेन पुंमरिक ॥ रुपजजी पासें रे, देशना सुणी ते जत्तंग ॥ दीक्षा लीधी रे,त्रिपदी ज्ञान अधिक ॥ वीर०॥ ॥ २ ॥ गणधर पदवी पाम्या जाम, द्वादश अंगी गुंथी अनिराम ॥ विचस्या महियलमां गुण धाम, अनुक्रमें आव्या रे श्रीसिद्धाचल सार ॥ मुनिवर कोडि रे, पांच तणे परिवार ॥ अनशन कीधुं रे,निज आतमने उपगार ॥ वीर०॥ ३ ॥ तेणे ए प्रगट पुंमरगिरि नाम, सांजल सोहम देवलोक स्वाम ॥ एहनो महिमा अतिहि उद्दाम, इणेदिन कीजे रे, तप जप पूजा ने दान ॥ व्रत वली पोसो रे, जेह करे निदान ॥ फल तस पामे रे, पंच कोडी गुण मान ॥ वीर० ॥ ४ ॥ चैत्री पूनम दिवसें जेह, पाम्या केवल ज्ञान अछेह ॥ शिव सुख वरिया अमल अदेह ॥ पूर्णानंदी रे, अगुरु लघु अवगाह ॥ अज अविनाशी रे, निजगुण जोगी अवाह ॥ निज गुण करता रे,पर पुजल नही चाह ॥

॥वीर०॥५॥ नक्तें नव्य जीव जे होय, पंच नवें मु क्ति लहे सोय ॥ एहमां बाधक ब्रे नहीं कोय, व्यव हार केरी रे, मध्यम फलनी ए वात ॥ उत्कृष्टे योगें रे, अंतरमुहूर्त्त विख्यात ॥शिव सुख साधे रे,आतमने अ वदात ॥ वीर० ॥ ६ ॥ चेत्री पूनम महिमा देख, पू जा पंच प्रकार विशेष ॥ तेहमां ऊणिम नहीं कांइ रे ख, इणी परें नांखे रे,जिनवर उत्तम वाण ॥ सांनली बूझ्या रे, केइक नविक सुजाण ॥ इणि परें गाया रे, पद्मविजय सुप्रमाण ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रस्ताविक दोहा कवित्त सवैया वगेरे प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥ सत्य म ब्रेडीश चतुर नर, लछी चिह्नु गणि होय ॥ सुख ऊःख रेखा कर्मकी, मेट न शके कोय ॥१॥ हिंसा ऊखनी वेलडी,हिंसा ऊखनी खाण ॥ जीव अनंत नरकें गया,हिंसा तणे प्रमाण ॥ २ ॥ दया ते सुखनी वेलडी, दया ते सुखनी खाण ॥ जीव अनं त स्वर्गे गया, दया तणे परिमाण ॥ ३ ॥ जीव मा रंतां नरक ब्रे,राखंतां ब्रे सग्ग ॥ ए बेहू ब्रे वाटडी, जि ण नावे तिण लग्ग ॥ ४ ॥ विण कपास कपडुं नहीं, दया विना नहि धर्म्म ॥ पाप नहीं हिंसा विना,बूझो एहज मर्म्म ॥ ५ ॥ धन वंब्रे एक अधम नर, उत्तम वंब्रे मान ॥ ते थानक सहु ब्रंमीयें, जिहां लहियें अप मान ॥ ६ ॥ वार बुलावण बेसणुं, वीडी बेकर जो ड ॥ जिणघर पांच वच्चा नहि, ते घर दूरे ब्रोड ॥७॥

ब्रप्पय ॥ हरखे किश्युं गमार, देखि धन संपत ना

री ॥ प्रौढ पुत्र परिवार, लोकमांहे अधिकारी ॥ यौव न रूप अनूप, गर्व मनमांहे नमावे ॥ करतो मोडा मोड, जगत तृण सरिखो न्यावे ॥ अखियां मूढ देखे नही, आज काल मरवुं अछे ॥ जिनहर्ष समज रे प्राणीया, नहितर दुःख पामीश पछें ॥ १ ॥ लंक सरीखी पुरी,विकट गढ जास दुरंगम ॥ पाखली खाई समुद्र, जां पहुंचे नही विहंगम ॥ विद्याधर बलवंत, खंम त्रण केरो स्वामी ॥ सेव करे जसु देव, नवग्रह पाये नामी ॥ दशकंध वीश भुजा लहे,पार पाखें सेना बहु ॥ जिनहर्ष राम रावण हण्यो, दिन पलटयो पलटया सहु ॥ २ ॥ सवैयो ॥ रूप घटयो रस रंग घटयो, नघटयो मन पाप विकारनथैं, तेज घटयो तरुणाप घटयो न घटयो, चित्त कामविलासनथैं ॥ सार घटयो अब सीर घटयो, न घटयो चित्त लोभ रसायनथैं, नइसेन कहे जुग जात घटयो, न घटयो कोउ क्रोध कपायनथैं ॥ १ ॥

॥कवित्त॥पहेलुं सुखजे दीलें नरा,बीजुं सुख जे घर दीकरा ॥ त्रीजुं सुख जे कुण विण वरा,चोथुं सुख जे पोतें घरा ॥ पांचमुं सुख जे भक्ति नारि,छठुं सुख जे प्रतिष्टा वार॥ सातमुं सुख जे आंगण जुत्त, पुण्यें लहीये ए घरसुत्त ॥ १ ॥ पहेलुं सुख जे न जईयें गाम, बीजुं सुख जे वसीयें ठाम॥ त्रीजुं सुख जे माने नृप, चोथुं सुख जे रूप सरुप ॥ पांचमुं सुख जे इछायें रमें, छठुं सुख जे वेलो जमे ॥ कवि कहे स

सुख गमे, सकल लोक घर आवी नमे ॥ २ ॥ पहेलुं दुःख पडोशी चाड, बीजुं दुःख घर उग्युं जाड ॥ त्रीजुं दुःख नित सहीयें मार, चोथुं दुःख जे नजरें आहार ॥ पांचमुं दुःख पाला चालवुं, बहुं दुःख नित नित मागवुं ॥ कवि कहे मांचे माकड बहु, ए साते दुःख सुणजो सहु ॥ ३ ॥ पहेलुं दुःख जे परनी आश, बीजुं दुःख जे ठंगो वास ॥ त्रीजुं दुःख जे बहु रुण चडे, चोथुं दुःख परने वश पडे ॥ पांचमुं दुःख जे न टले रोग, वांछ्यो न मले जेहने जोग ॥ कवि जन कहे नित्य खारूं नीर, ए साते दुःख सहे शरीर ॥ ४ ॥

॥ गुणविन निसी कवाण, ज्ञान बिन ब्रह्म योगीसर ॥ पति विण जुवती नेह, दीप विन अनुपममंदिर ॥ लूण विना रसवती, पत्र विन जिस्यां तरुवर ॥ वदन नेत्र विहूण, नीर विण सार सरोवर ॥ विद्या चतुराई विन, चंद विना रजनी जिसी ॥ विनयमेर गणि इम कहे, तिम दान विना लछी किसी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥ ते अजाण्यां माणसां, रूपें जे राचंत ॥ दीप ज्योति पतंग जिम, पंख सहित दाजंत ॥ १ ॥ नर जो कडवां तुंवडा, गुणे करीने मीठ ॥ ते माणस केम वीसरे, जेह तणा गुण दीठ ॥ २ ॥ राति गमाई सोवते, दिवस गमाया खाय ॥ हीरा जैसा मनुष्य जन्म, कवडी बदलें जाय ॥ ३ ॥ पठन शुनख कवि चातुरी, ए तीनो वातां सहेल ॥ काम दहन मन वस करन, गगन चढन मुसकेल ॥ ४ ॥ प्रीत भली पंखेरु

आ, उडी जेह मिलंत ॥ माणस परवश बापडां, दूर रह्यां झूरंत ॥ ५ ॥ संपति सहु वेंचे मली, विपत्ति न वेंचे कोय ॥ संगत उनकी कीजीयें,जांग्या जेरु होय ॥ ६ ॥ सर सूके सूके कमल, पंखी दह दिसी जंत ॥ आपणा सोही आपणा, पर आपणा न हुंत ॥ ७ ॥ सज्जन एसा कीजियें, जैसा ज्वारिकाखेत ॥ थडे कटे टोचे लणे, तो धरा न मेले हेत ॥ ८ ॥ सज्जन एसा कीजीयें, जामें लखन बत्तीस ॥ जीड पडे नाजे नही, सूंपे अपनो सीस ॥ ए ॥ सो सज्जन लख मित्र कर, ताली मित्र अनेक ॥ सुख दुःख जासुं कीजियें, सो लाखूंमें एक ॥ १० ॥ सज्जन ऐसा कीजीयें, जैसी निशि उर चंद ॥ चंद विना निशि आंधली, निशि विनु चंदा अंध ॥ ११ ॥ केविध चतुरकूं धन दीयो, के चतुराई लइ छीन ॥ एक चतुर और निर्धना, दोनुं दुःख क्या कीन ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्महित स्वाध्याय ॥ वालम ॥
॥ वेहेलारे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ माहारुं माहारुं म कर जीव तुं,जगमां नही ताहरुं कोय रे ॥ आप सवारथें सहु मल्या, हृदय विचारीने जोय रे ॥ माहरुं० ॥ १ ॥ दिन दिन आयु घटे ताहरुं, जिम जल अंजलि होय रे ॥ धर्म वेला नावे ढूकडो, कवण गति ताहारी होय रे ॥ महारुं०॥ ॥ २ ॥ रमणीशुं रंगें राचे रमे. कांई लीये बावल बाथ रे ॥ तन धन यौवन थिर नही, परभव नावे

तुझ साथ रे ॥ माहरुं० ॥ ३ ॥ एक घेर धवल मंगल हुवे, एक घेर रोवे बहु नार रे ॥ एक रामा रमे कंतशुं, एक छोडे सकल शणगार रे ॥ माहरुं० ॥ ४ ॥ एक घर सहु मली बेसतां, नित नित करता विलास रे ॥ ते रे साजनीयो उठी गयो, थिर न रह्यो एक वास रे ॥ माहरुं० ॥ ५ ॥ एहवुं स्वरूप संसारनुं, चेत चेत जीव गमार रे ॥ दश दृष्टांतें रे दोहिलो, पामवो मणुअ अवतार रे ॥ माहरुं० ॥ ६ ॥ हर्षविजय कहे एहवुं, जे भजे जिनपद रंग रे ॥ ते नर नारी वेगें वरे,मुक्ति वधू केरो संग रे॥मा०॥७॥इति॥

॥ अथ नेमजीना बार मास प्रारंभः ॥

॥ स्नेही वीरजी जयकारी रे ॥ ए देशी ॥

॥ चैत्र मासें ते चतुरा चिंते रे, नेम जई वस्या एकांत रे, मननी किम भांगे भ्रांत ॥ दयालु नेमजी दिल वसीयो रे, एतो शिवरमणीनो रसीयो ॥ दया०॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वैशाखें वनिता विलखे रे, दुःख देखीने मनडुं कलखे रे, पीयु मलवाने तनडुं तलखे ॥ दयालु० ॥ २ ॥ जेठें योवनें युवती लाजे रे, तडका झुकना वाजे रे ॥ विरही दील भींतर दाजे ॥ दयालु० ॥ ३ ॥ अबला एकली आषाढें रे, वेलडी वलगी छे वाडें रे ॥ कखा पंखीयें माला जाडे ॥ दयालु० ॥ ४ ॥ श्रावण सुंदर स[illegible] ी रे, वरसे झरमर झरमर झड लागी रे ॥ [illegible]

१९ रागी ॥ दयालु० ॥ ५ ॥

मासें रे, पीयुने मलवानी आशें रे ॥ दिन रेन गमे वीशवासें ॥ दयालु० ॥ ६ ॥ आशोयें तो अवनी उपे रे, तरुणीनी शोभा लोपे रे ॥ राणी राजुल रतीय न कोपे ॥ दयालु० ॥ ७ ॥ कहे कार्त्तिक कामिनी काती रे, पीयु विरहें दाधी ताती रे ॥ दीसे गुंजा तणी पेरें राती ॥ दयालु० ॥ ८ ॥ मागशिरें माननी मदमाती रे, कोकिल सम कंठे गाती रे ॥ दीपे कनकलता तनु भाती ॥ दयालु० ॥ ए ॥ पोपें प्रेम सवायो कीजें रे, अबलानो अंत न लीजें रे ॥ उपशम रस अमृत पीजें ॥ दयालु० ॥ १० ॥ माहा महिने मनोहर नारी रे, उग्रसेन धूआ कनी सारी रे॥ वालम तमें जूउ विचारी ॥ दयालु० ॥ ११ ॥ फालगुणें केशुवन फलीयां रे, नेमजी-राजुलने-मलीया रे ॥ भव भवनां पातक टलीयां ॥ दयालु० ॥ १२ ॥ बार मास भली परे गाया रे,आज अधिकानंदमें पाया रे ॥ राज रतन रसुल पुर गाया ॥ दयालु०॥ १३॥ इति ॥

॥ अथ नेमजीना साते वार ॥ देशी उपरनी ॥

॥ रविवारे ते हो रढीयाला रे, आदित्यनी आकरी झाला रे ॥ एम राजिमती कहे बाला ॥ प्रभुजी मानियें अरदास रे, विसारी न मूको निराश ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सोम शोल कलायें ठे पूरो रे, शशी [illegible] अधूरो रे, ॥ ते माटे चिंता चूरो ॥ [illegible] भोम [illegible] भाग्य निधान रे, जेणें [illegible] रे [illegible] नेमजी भगवान ॥

तुझ साथ रे ॥ माहरुं० ॥ ३ ॥ एक घेर धवल मंगल हुवे, एक घेर रोवे बहु नार रे ॥ एक रामा रमे कं तशुं, एक छोडे सकल शणगार रे ॥ माहरुं० ॥ ४ ॥ एक घर सहु मली वेसतां, नित नित करता वि लास रे ॥ ते रे साजनीयो उठी गयो, थिर न रह्यो एक वास रे ॥ माहरुं० ॥ ५ ॥ एहवुं स्वरूप संसारनुं, चेत चेत जीव गमार रे ॥ दश दृष्टांतें रे दोहिलो, पामवो मणुअ अवतार रे ॥ माहरुं० ॥ ६ ॥ हर्षवि जय कहे एहवुं, जे भजे जिनपद रंग रे ॥ ते नर नारी वेगें वरे,मुक्ति वधू केरो संग रे॥मा०॥७॥इति॥

॥ अथ नेमजीना बार मास प्रारंभः ॥

॥ स्नेही वीरजी जयकारी रे ॥ ए देशी ॥

॥ चैत्र मासें ते चतुरा चिंते रे, नेम जई वस्या एकांत रे, मननी किम भांगे भ्रांत ॥ दयालु नेमजी दिल वसीयो रे, एतो शिवरमणीनो रसीयो ॥ दया०॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वैशाखें वनिता विलखे रे, डुःख देखीने मनडुं कलखे रे, पीयु मलवाने तनडुं तलखे ॥ दयालु० ॥ २ ॥ जेठें योवनें युवती लाजे रे, तडका लुकना वाजे रे ॥ विरही दील भींतर दा जे ॥ दयालु० ॥ ३ ॥ अवला एकेली आषाढें रे, वेलडी वलगी छे वाडें रे ॥ कया पंखीयें माला जा डें ॥ दयालु० ॥ ४ ॥ श्रावण सुंदर सोभागी रे, व रसे झरमर झरमर झड लागी रे ॥ पिक मोर मधुर स्वर रागी ॥ दयालु० ॥ ५ ॥ भली भामिनी भाद्रव

मासें रे, पीयुने मलवानी आशें रे ॥ दिन रेन गमे वीशवासें ॥ दयालु० ॥ ६ ॥ आशोयें तो अवनी उपे रे, तरुणीनी शोभा लोपे रे ॥ राणी राजुल रतीय न कोपे ॥ दयालु० ॥ ७ ॥ कहे कार्त्तिक कामिनी काती रे, पीयु विरहें दाधी गाती रे ॥ दीसे गुंजा तणी पेरें राती ॥ दयालु० ॥ ८ ॥ मागशिरें माननी मदमाती रे, कोकिल सम कंठें गाती रे ॥ दीपे कनकलता तनु जाती ॥ दयालु० ॥ ए ॥ पोषे प्रेम सवायो कीजें रे, अबलानो अंत न लीजें रे ॥ उपशम रस अमृत पीजें ॥ दयालु० ॥ १० ॥ माहा महिने मनोहर नारी रे, उग्रसेन धूआ भली सारी रे॥ वालम तमें जूउ विचारी ॥ दयालु० ॥ ११ ॥ फालगुणें केशुवन फलीयां रे, नेमजी राजुलने मलीया रे ॥ भव भवनां पातक टलीयां ॥ दयालु० ॥ १२ ॥ बार मास भली परें गाया रे, आज अधिकानंदमें पाया रे॥ राज रतन रसुल पुर गाया ॥ दयालु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजीना साते वार ॥ देशी उपरनी ॥

॥ रविवारे ते हो रढीयाला रे, आदित्यनी आकरी जाला रे ॥ एम राजिमती कहे वाला ॥ प्रभुजी मानियें अरदास रे, विसारी न मूको निराश ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सोम शोल कलायें छे पूरो रे, शशी चद नही अधूरो रे, ॥ ते माटे चिंता चूरो ॥ ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ भोम मंगल भाग्य निधान रे, जेणें दूर कर्युं अभिमान रे ॥ नमीयें नेमजी भगवान ॥

॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ बुधें प्रभुबोध वधार्यो रे, जेणें संसा रनो भय वार्यो रे, भव्य जीवने पार उतार्यो ॥ ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ गुरुथी बृहस्पति हार्यो रे, जेणे मोह मत्सर मद मार्यो रे ॥ जीवने जम भयथी उगार्यो ॥ ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ भृगु शुक्रथकी भय भागा रे, जिम नाहर आगें छागा रे ॥ निज थानक जोवा लागा ॥ ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ शनिश्चर चीड कहीजें रे, स्थिरथानक वास लहीजें रे ॥ प्रभु गुण अवगुण परखीजें ॥ ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ सात वार ए राजुल राणी रे, कहे राजरतन एम वाणी रे ॥ प्रभु गुण गाये सुखिया प्राणी ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ राजुलनी पंदर तिथि प्रारंभः ॥देशी उपरनी॥

॥ पडवे पियु प्रीतज पालो रे, प्रेमदाशुं अबोला टालो रे ॥ नेह करीने नजरें भालो ॥ मनोहर मलवुं सुधारस तोलें रे, राणी राजुल एणि पेरें बोले ॥मनो हर० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बीजें बीजो नेह न कीजें रे, छोगाला छेह न दीजें रे ॥ खोटी [illegible] अंत न

म आठे प्रवचन माता रे ॥ ए तो साचो करम विधा
ता ॥ मनो० ॥ ६ ॥ गयो शोक सातम तिथि सारी
रे, नेम निरंजन ब्रह्मचारी रे ॥ तेना नामनी जाउं
बलिहारी ॥ मनो० ॥ ७ ॥ आवी आठम आनंद का
री रे, हुंतो आठ जवांतर नारी रे ॥ वालम मत मू
को विसारी ॥ मनो० ॥ ८ ॥ नवमें नवमो जव सा
रो रे, नेम राजुलनो आधारो रे ॥ नेह निर्वही पार
उतारो ॥ मनो० ॥ ए ॥ दशमे प्रजुदया धरीजें रे,
अबलानी आशीष लीजें रे ॥ ते माटे दरिसन दीजें
॥ मनो० ॥ १० ॥ अगीयारशें एकली नारी रे, पी
यु मेली तमो निरधारी रे ॥ प्रीतम तमें पर उपका
री ॥ मनो० ॥ ११ ॥ बारसना बोल संजारो रे, आ
डो आव्यो वरसालो रे ॥ मोहन किम जरीयें उचा
लो ॥ मनो० ॥ १२ ॥ तेरशें तोरणथी फरिया रे,
गिरनार जणी संचरीया रे ॥ नेम राजिमती नहीं
वरीया ॥ मनो० ॥ १३ ॥ चौदशथी चिंता जांगी रे,
सुत समुद्रविजय लय लागी रे ॥ प्रजु थई बेठा नी
रागी ॥ मनो० ॥ १४ ॥ पूनमें तो परम पद धारी
रे, थया जनम मरण जय वारी रे ॥ प्रजुयें राजुलने
तारी ॥ मनो० ॥ १५ ॥ पन्नर तिथि पूरी गाई रे,
कहे राजरतन सुखदाई रे ॥ तेज खेटक पुरमां स
वाई ॥ मनो० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अथश्री शत्रुंजयनी गरबी ॥ जे कोई अंबिकाजी ॥
॥ मातने आराधशे रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ जे कोई सिद्धगिरिराजने आराधशे रे लोल, तेनी संपदा मनोरथ वाधशे रे लोल ॥ गिरिराज छे नवो दधि तारणो रे लोल, माहा पीव छे सर्व दुःख वार णो रे लोल ॥ १ ॥ पुंडर गिरि छे मनोरथ पूरणो रे लोल, सिद्धक्षेत्र छे नवोदधि चूरणो रे लोल ॥ एनां एकवीश नाम छे सोहामणां रे लोल, हुंतो वंदना क रीने लहुं नामणा रे लोल ॥ २ ॥ एना साधनथी तप जप आकरे रे लोल, मुनि सिद्धा छे कांकरे कांकरे रे लोल ॥ मुनिराजजी अनंत मुगतें गया रे लोल, सिद्ध राज थइ अविनाशी थया रे लोल ॥ ३ ॥ तेहनां नाम कहुंने विनंति करुं रे लोल, एना नामथी पाप सरवे हरुं रे लोल ॥ पांच पांडव ने नारद मुनिवरा रे लोल, सीलंग सूरि सुदर्शन मुनि तथा रे लोल ॥ ४ ॥ द्रविड वारीखेण देवकीना नंदजी रे लोल, महीपालजीने मही पति चंदजी रे लोल ॥ थावच्चा कुमरने मुनि विद्याधरा रे लोल, सिद्धि सांबने प्रद्युम्नजी जिहां वर्या रे लोल ॥ ॥ ५ ॥ (वली जालि मयाली उवालीने रे लोल) ध्या न धरियां छे चित्त एक आसनें रे लोल, जोगी तथा छे चंद्रप्रभ शासनें रे लोल ॥ भरत रामचंद्रजी ने नं दिखेणजी रे लोल, सिद्ध सीलायें चढ्या छे क्षपकश्रेणि जी रे लोल ॥६॥ नमि विनमी ने मुनि शुकराजजी रे लोल, ज्ञातासूत्रमां सार्यां छे सर्वे काजजी रे लोल ॥ केतां नाम कहुं ते मुनिराजनां रे लोल, जीभ एकनें अनंत नाम साजना रे लोल ॥७॥ एवा अनंत अनंत

मुनिजी तस्या रे लोल, तेतो दर्शन ज्ञानथकी नस्या रे लोल ॥ नमोबुणुं ते सात पदमें मल्या रे लोल, तेतो चार अनंत सुखमां नल्या रे लोल ॥ ८ ॥ जई व सीया छे सिद्ध शिला उपरी रे लोल, तेनी सादि अनंत स्थिति छे खरी रे लोल ॥ हुंतो जाणुं बुं गणधर वाणी यें रे लोल, सहु सिद्धगिरि महातम जाणीयें रे लोल ॥ ए ॥ वार पूरव नवाणुं आदिनाथजी रे लोल, समो सस्या छे पुंमरिक साथजी रे लोल ॥ गिरि फरस्यो त्रेवी श जिनराजजी रे लोल, अनशन कीधां अनंत मुनिरा जजी रे लोल ॥ १० ॥ सेवो सेवो ए गिरि सुख कंदने रे लोल, सेवो सेवो मरुदेवी नंदनें रे लोल ॥ वंदो वदो इक्ष्वाकु कुल सूरने रे लोल, पूजो पूजो श्रीरूषन हजूरने रे लोल ॥ ११ ॥ (नानी राजाना कुलमांहि दिनकरू रे लोल) रूषन नाथजीनो वश छे गुणाकरु रे लोल, आदिनाथजीना पाटवी प्रनाकरू रे लोल ॥ जेहना आठ पाट आरीसा नुवनमां रे लोल, पाम्या केवल ग्यान शुन्न ध्यानमां रे लोल ॥ १२ ॥ जेहना पाटवी असंख्य मुगतें गया रे लोल, तेतो सिद्ध मं मिकामां सरवे कह्या रे लोल ॥ नरत रायथी उद्धार शोल छे सहु रे लोल, विच अंतरें उद्धार थया छे वहु रें लोल ॥ १३ ॥ जे कोई गिरराज दरिसन नाविया रे लोल, इहां संघवी असंख्य संघ लाविया रे लोल ॥ माता चक्केसरीजी सुखदायिनी रे लोल, नुजा आठने गरुड सिंह वाहिनी रे लोल ॥ १४ ॥ विक्रमराजथी

॥ जे कोई सिद्धगिरिराजने आराधशे रे लोल, तेनी संपदा मनोरथ वाधशे रे लोल ॥ गिरिराज छे नवो दधि तारणो रे लोल, माहा पीठ छे सर्व दुःख वार णो रे लोल ॥ १ ॥ पुंडर गिरि छे मनोरथ पूरणो रे लोल, सिद्धक्षेत्र छे नवोदधि चूरणो रे लोल ॥ एनां एकवीश नाम छे सोहामणां रे लोल, हुंतो वंदना क रीने लहुं नामणा रे लोल ॥ २ ॥ एना साधनथी तप जप आकरे रे लोल, मुनि सिद्धा छे कांकरे कांकरे रे लोल ॥ मुनिराजजी अनंत मुगतें गया रे लोल, सिद्ध राज थइ अविनाशी थया रे लोल ॥ ३ ॥ तेहनां नाम कहुंने विनंति करुं रे लोल, एना नामथी पाप सरवे हरुं रे लोल ॥ पांच पांडव ने नारद मुनिवरा रे लोल, सीलंग सूरि सुदर्शन मुनि तथा रे लोल ॥ ४ ॥ द्रविड वारीखेण देवकीना नंदजीरे लोल, महीपालजीने मही पति चंदजी रे लोल ॥ थावञ्चा कुमरने मुनि विद्याधरा रे लोल, सिद्धि सांवने प्रद्युम्नजी जिहां वर्या रे लोल ॥ ॥ ५ ॥ (वली जालि मयाली उवालीने रे लोल) ध्या न धरियां छे चित एक आसनें रे लोल, जोगी तथा छे चंद्रप्रज शासनें रे लोल ॥ जरत रामचंद्रजी ने नं दिखेणजी रे लोल,सिद्ध सीलापें चढ्या छे क्षपकश्रेणि जी रे लोल ॥६॥ नमि विनमी ने मुनि शुकराजजी रे लोल, ज्ञातासूत्रमां साख्यां छे सर्व काजजी रे लोल ॥ केतां नाम कहुं ते मुनिराजनां रे लोल, जीन एकनें अनंत नाम साजना रे लोल ॥७॥ एवा अनंत अनंत

मुनिजी तख्या रे लोल, तेतो दर्शन ज्ञानथकी नख्या रे लोल ॥ नमोत्थुणं ते सात पदमें मख्या रे लोल, तेतो चार अनंत सुखमां नख्या रे लोल ॥ ७ ॥ जई व सीया छे सिद्ध शिला उपरी रे लोल, तेनी सादि अनंत स्थिति छे खरी रे लोल ॥ हुंतो जाणुं छुं गणधर वाणी यें रे लोल, सहु सिद्धगिरि महातम जाणीयें रे लोल ॥ ए ॥ वार पूरव नवाणुं आदिनाथजी रें लोल, समो सख्या छे पुंमरिक साथजी रे लोल ॥ गिरि फरस्यो त्रेवी श जिनराजजी रे लोल, अनशन कीधां अनंत मुनिरा जजी रे लोल ॥ १० ॥ सेवो सेवो ए गिरि सुख कंदने रे लोल, सेवो सेवो मरुदेवी नंदनें रे लोल ॥ वदो वंदो इक्ष्वाकु कुल सूरने रे लोल, पूजो पूजो श्रीरुषन्न हजूरने रे लोल ॥ ११ ॥ (नाजी राजाना कुलमांहि दिनकरू रे लोल) रुषन्न नाथजीनो वंश छे गुणाकरु रे लोल, आदिनाथजीना पाटवी प्रजाकरू रे लोल ॥ जेह्ना आठ पाट आरीसा जुवनमां रे लोल, पाम्या केवल ग्यान शुन्न ध्यानमां रे लोल ॥ १२ ॥ जेह्ना पाटवी असंख्य मुगतें गया रे लोल, तेतो सिद्ध मं मिकामां सरवे कह्या रे लोल ॥ नरत रायथी उद्धार शोल छे सहु रे लोल, विच अंतरे उद्धार थया छे वहु रें लोल ॥ १३ ॥ जे कोई गिरराज दरिसन नाविया रे लोल, इहां संघवी असंख्य संघ लाविया रे लोल ॥ माता चक्केसरीजी सुखदायिनी रे लोल, जुजा आठने गरुड सिंह वाहिनी रे लोल ॥ १४ ॥ विक्रमराजथी

अढारशें सत्योत्तरें रे लोल,मार्गशिर मास ने त्रयोदशि वासरें रे लोल॥गरवी गाइ छे कवि दीपराजजीरे लोल, जे सांभळे तेह्नां सरशे काजजी रे लोल ॥ १ ५॥ इति॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकरनुं स्तवनं ॥

॥ रिसह जिणेसर प्रणमी पाय, बीजा अजित जिणेसर राय ॥ संभव स्वामी सुख भंमार, अभि नंदन नामें जयकार ॥ १ ॥ सुमति पद्म प्रजु देव सुपास, चंद्रप्रभ जिन पूरे आस ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिणंद, वासुपूज्य दीठे आणंद ॥ २ ॥ विमल अनंत धरम जगदीश, शांति कुंथु अर नामुं शीश ॥ मल्लिनाथ मुनि सुव्रत देव, नमि नेमीसर सारे सेव ॥ ३ ॥ पास वीर नित प्रणमे जेह, ऋद्धि सिद्धि नर पामे तेह ॥ चोवीशे गुण तणा निवास, भाव मुनि कहे पूरो आश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवन ॥ धोलनी देशी ॥

॥ शांति जिनेसर साहेब वंदो, अनुभव रसनो कंदो रे ॥ मुखने मटके लोचन लटके, मोह्या सुर नर वृंदो रे ॥ शांति० ॥ १ ॥ आंबे मंजरी कोयल टहुके, मेघ घटा जेम मोरो रे ॥ तेम जिनवरने देखी हरखुं, वली जिम चंद चकोरो रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ जिन प्रतिमा श्रीजिनवर भांखी, सूत्र घणां छे साखी रे ॥ सुर नर मुनिवर वदन पूजा, करतां शिव अभि लाखी रे ॥शांति०॥ ३ ॥ रायप्पसेणी प्रतिमा पूजी, समकेत धारी रे ॥ जीवाभिगमें प्रतिमा

पूजी, विजयदेव अधिकारी रे ॥शांति०॥४॥ जिनवर विंव विना नवि वंडुं, आणंदजी एम वोलें रे ॥ सातमे अंगें समकित मूलें, अवर नहि तस तोलें रे ॥ ॥ शांति० ॥ ५ ॥ ज्ञातासूत्रें डौपदी पूजा, करती शिवसुख मागे रे ॥ राय सिद्धारथ प्रतिमा पूजी, कल्पसूत्रमांहे रागे रे ॥ शांति०॥ ६ ॥ विद्याचारण मुनिवर वंदी, प्रतिमा पांचमे अंगें रे ॥ जंघाचारण मुनिवर वंदी,जिन पडिमा मन रंगें रे ॥ शांति०॥ ७ ॥ आर्य सुहस्ती सूरि उपदेशें, चावो संप्रतिराय रे ॥ सवा कोडी जिनविंव नराव्यां, धन धन एहनी माय रे ॥ शांति० ॥ ७ ॥ मोकली प्रतिमा अनय कुमारें, देखी आर्डकुमार रे ॥ जातिस्मरणें समकित पामी, वरियो शिववधु सार रे ॥ शांति०॥ए॥ इत्यादिक वहु पाठ कह्या ढे, सूत्रमांहे सुखकारी रे ॥ सूत्रतणो एक वरण उठापे, ते कह्यो वहुल संसारी रे ॥ शांति० ॥ १० ॥ तेमाटे जिन आणा धारी, कुमति कदाग्रह निवारी रे ॥ नक्ति तणां फल उत्तराध्ययनें, वोध वीज सुखकारी रे ॥ शांति० ॥ ११ ॥ एक नवे दोय पदवी पाम्या, शोलमा श्रीजिनराय रे ॥ मुऊ मन मंदिरिये पधारावो, धवल मंगल गवराय रे ॥ ॥ शांति० ॥ १२ ॥ जिन उत्तमपद रूप अनुपम, कीर्त्ति कमलानी शाला रे ॥ जिनविजय कहे प्रनुजीनी नक्ति, करतां मंगल माला रे ॥ शांति० ॥१३॥ इति ॥

॥ अथ नेम जिन स्तवनं ॥ राग कल्याण ॥

॥ घरें आवो तो पूछुं एक वातडली रे ॥ घरे० ॥ ताहारेनें माहारे साहेबा प्रीत घणेरी, पडिय पटोले भातडली रे ॥घरे०॥१॥ तोरणथी रथ फेर चलायो, जाणी तुमारी जातडली रे ॥घरे०॥२॥ महेर करीने माहारे मंदिर पधारो, रहोने आजुनी रातडली रे ॥घरे०॥३॥ नेम राजुल दोये सरग सीधाए, मुक्तें गया भली भातडली रे ॥घरे०॥४॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन,तुमशुं बांधी मारी प्रीतडली रे॥घरे०॥५॥इति॥

॥ अथ नेमजिन स्तवनं ॥

॥ तोरण आवी रथ पाछो केम फेरो रे ॥ वा०॥ संयम ल्यो तो साथें अमने तेडो ॥ मारा वा०॥ उभां उभां अरज करे सहु लोक रे ॥वा०॥ बोल कोल किम करीनें थाशे फोक ॥ मारा० ॥ १ ॥ नेमजी तमें तो लीलाना छो साथी रे ॥ वा० ॥ कीडीना रोक्या केम रहेशो हाथी ॥ मारा० ॥ नेमजी तमें तो धरी रह्या एक ध्यान रे ॥ वा०॥ आवडलुंते किहांथी आव्युं ध्यान ॥ माहा०॥ २ ॥ नोधारां ते केने उर्थे रेहेशुं रे ॥ वा० ॥ हियडलानां दुःखडां केने केहेशुं ॥ मारा०॥ उदयर तनना रसिया वालम नेम रे ॥ वा०॥ राजिमतीना सीधा वंछित प्रेम ॥ माहारा वा० ॥ ३ ॥

॥ प्रस्ताविक दुहो ॥

॥ सवे न सब गुग सरस हे, ज्यां लग न परत काम ॥ हेम हुताशन परखियो,पीतल निकसत श्याम॥१

॥ अथ कर्मनी मूलोत्तर प्रकृतिनां नाम ॥

॥ तेमां प्रथम आठ मूलप्रकृतिनां नाम ॥

१ ज्ञानावरणीय कर्म.	५ आयुःकर्म.
२ दर्शनावरणीय कर्म.	६ नाम कर्म.
३ वेदनीय कर्म.	७ गोत्र कर्म.
४ मोहनीय कर्म.	८ अंतराय कर्म.

॥ पहेला ज्ञानावरणीयकर्मनी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ मतिज्ञानावरणीय.	४ मनःपर्यवज्ञानावरणीय.
२ श्रुतज्ञानावरणीय.	५ केवलज्ञानावरणीय.
३ अवधिज्ञानावरणीय.	

॥ बीजा दर्शनावरणीयकर्मनी उत्तर प्रकृति नव ॥

१ चक्षुदर्शनावरणीय.	६ निद्रा निद्रा.
२ अचक्षुदर्शनावरणीय.	७ प्रचला.
३ अवधिदर्शनावरणीय.	८ प्रचला प्रचला.
४ केवलदर्शनावरणीय.	९ थीणद्धी.
५ निद्रा.	

॥ त्रीजा वेदनीय कर्मनी उत्तर प्रकृति बे ॥

१ शातावेदनीय.	२ अशातावेदनीय.

॥ चोथा मोहनीयकर्मनी उत्तर प्रकृति अठावीश ॥

१ सम्यक्त्वमोहनीय.
२ मिश्रमोहनीय.
३ मिथ्यात्वमोहनीय.
४ अनंतानुबंधी क्रोध.
५ अप्रत्याख्यानी क्रोध.
६ प्रत्याख्यानी क्रोध.
७ संज्वलन क्रोध.
८ अनंतानुबंधीमान.
९ अप्रत्याख्यानीमान.
१० प्रत्याख्यानी मान.
११ संज्वलन मान.
१२ अनंतानुबंधी माया.
१३ अप्रत्याख्यानी माया
१४ प्रत्याख्यानी माया.
१५ संज्वलन माया.
१६ अनंतानुबंधीलोभ.
१७ अप्रत्याख्यानी लोभ.
१८ प्रत्याख्यानी लोभ.
१९ संज्वलन लोभ.
२० हास्य नोकषाय.
२१ रति नोकषाय.
२२ अरति नोकषाय.
२३ शोक नोकषाय.
२४ भय नोकषाय.
२५ जुगुप्सा नोकषाय.
२६ पुरुषवेद नोकषाय.
२७ स्त्रीवेद नोकषाय.
२८ नपुंसकवेद नोकषाय.

॥ पांचमा आयुः कर्मनी उत्तर प्रकृति चार ॥

१ देवायु.
१ मनुष्यायु.
३ तिर्यगायु.
४ नरकायु.

॥ छठा नामकर्मनी उत्तर प्रकृति ॥ १०३ ॥

१ नरकगति नामकर्म.
२ तिर्यग्गति नामकर्म.
३ मनुष्यगति नामकर्म.
४ देवगति नामकर्म.
५ एकेंद्रिय जातिनाम.
६ बेंद्रिय जातिनाम.

७ तेंड्रिय जातिनाम.
८ चतुरिंड्रियजातिनाम.
९ पंचेंड्रिय जातिनाम.
१० औदारिकशरीरनाम.
११ वैक्रिय शरीरनाम.
१२ आहारकशरीरनाम.
१३ तैजस शरीरनाम.
१४ कार्मण शरीरनाम.
१५ औदारिक अंगोपांग.
१६ वैक्रिय अंगोपांग.
१७ आहारक अंगोपांग.
१८ औदारिक औदारिक वंधन.
१९ औदारिकतैजसवंधन.
२० औदारिककार्मणवंधन
२१ औदारिकतैजसकार्मण वंधन.
२२ वैक्रियवैक्रियवंधन.
२३ वैक्रियतैजसवंधन.
२४ वैक्रियकार्मणवंधन.
२५ वैक्रिय तैजसकार्मण वंधन.
२६ आहारक आहारक वंधन.
२७ आहारक तैजसवंधन.
२८ आहारककार्मणवंधन
२९ आहारक तैजस कार्मण वंधन.
३० तैजस तैजस वंधन.
३१ तैजस कार्मण वंधन.
३२ कार्मणकार्मणवंधन.
३३ औदारिक संघातन.
३४ वैक्रिय संघातन.
३५ आहारक संघातन.
३६ तैजस संघातन.
३७ कार्मण संघातन.
३८ वज्रऋषभ नाराचसंघयण.
३९ ऋषभ नाराचसंघयण.
४० नाराच संघयण.
४१ अर्द्धनाराचसंघयण.
४२ कीलिका संघयण.
४३ छेवठ्ठुं संघयण.
४४ समचतुरस्रसंस्थान.
४५ न्यग्रोध संस्थान.
४६ सादि संस्थान.
४७ वामन संस्थान.
४८ कुब्ज संस्थान.

४९ हुंम संस्थान.
५० कृष्णवर्ण नाम.
५१ नीलवर्ण नाम.
५२ लोहितवर्ण नाम.
५३ हारिद्रवर्ण नाम.
५४ श्वेतवर्ण नामकर्म.
५५ सुरभिगंध.
५६ दुरभिगंध.
५७ तिक्तरस नामकर्म.
५८ कटुकरस नामकर्म.
५९ कषायरस नामकर्म.
६० आम्लरस नामकर्म.
६१ मधुररस नामकर्म.
६२ कर्कशस्पर्श नामकर्म.
६३ मृदुस्पर्श नामकर्म.
६४ गुरुस्पर्श नामकर्म.

७३ देवानुपूर्वी.
७४ शुभविहायोगति.
७५ अशुभविहायोगति.
७६ पराघात नामकर्म.
७७ उच्छ्वास नामकर्म.
७८ आतप नामकर्म.
७९ उद्योत नामकर्म.
८० अगुरुलघु नामकर्म.
८१ तीर्थंकर नामकर्म.
८२ निर्माण नामकर्म.
८३ उपघात नामकर्म.
८४ त्रस नामकर्म.
८५ बादर नामकर्म.
८६ पर्याप्त नामकर्म.
८७ प्रत्येक नामकर्म.
[illegible] स्थिर [illegible]र्म.

ए७ साधारण नामकर्म.	१०१ डुःस्वर नामकर्म.
ए८ अस्थिर नामकर्म.	१०२ अनादेय नामकर्म.
एए अशुन्न नामकर्म.	१०३ अयशोऽकीर्त्ति नामकर्म.
१०० डुर्न्नाग्य नामकर्म.	

॥ सातमा गोत्रकर्मनी उत्तर प्रकृति बे ॥

१ उच्चैर्गोत्र.	२ नीचैर्गोत्र.

॥ आठमा अंतराय कर्मनी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ दानांतराय.	४ उपन्नोगांतराय.
२ लान्नांतराय.	५ वीर्यांतराय.
३ न्नोगांतराय.	

एवं आठ कर्मनी एकशो अठावन उत्तर प्रकृति जाणवी.

॥ अथ नव तत्त्वनां नाम ॥

१ जीवतत्त्व-	४ पापतत्त्व-	७ निर्झरातत्त्व.
२ अजीवतत्त्व-	५ आश्रयतत्त्व	८ बंधतत्त्व.
३ पुण्यतत्त्व-	६ संवरतत्त्व-	ए मोक्षतत्त्व.

॥ हवे ए नव तत्त्वमांहेला प्रत्येकें एकेका तत्त्व ना जुदा जुदा न्नेदोनी संख्या विवरीने लखीयें बैयें. तिहां प्रथम जीव तत्त्वना चौद न्नेद छे, ते लखीयें बैयें.

१ सूक्ष्म एकेंड्रिय पर्याप्ता.
२ बादर एकेंड्रिय पर्याप्ता.
३ संज्ञी पंचेंड्रिय पर्याप्ता.

४ असंज्ञी पंचेंड्रिय पर्याप्ताः
५ वेंड्रिय पर्याप्ताः
६ तेंड्रिय पर्याप्ताः
७ चउरिंड्रिय पर्याप्ताः

ए सात नेद पर्याप्ताना तेनी सार्थे एज सात नेद अपर्याप्ताना नेलीयें, तेवारें सर्व मली जीवतत्त्वना चउद नेद थाय, ते अरूपी जाणवा.

॥ बीजा अजीव तत्त्वना चौद नेद कहे ठे ॥

१ धर्मास्तिकायस्कंध.	८ आकाशास्तिकायदेश.
२ धर्मास्तिकायदेश.	ए आकाशास्तिकायप्रदेश.
३ धर्मास्तिकायप्रदेश.	१० कालवर्त्तनालक्षण.
४ अधर्मास्तिकायस्कंध.	११ पुजलास्तिकायस्कंध.
५ अधर्मास्तिकायदेश.	१२ पुजलास्तिकायदेश.
६ अधर्मास्तिकायप्रदेश.	१३ पुजलास्तिकायप्रदेश.
७ आकाशास्तिकायस्कंध.	१४ पुजलास्तिकायपरमाणु

एमां धर्मास्तिकायादिकना दश नेद अरूपी अने पुजलास्तिकायना चार नेद रूपी जाणवा.

॥ त्रीजा पुण्यतत्त्वना बेहेंतालीश नेद कहे ठे ॥

१ शातावेदनीय.	५ देवगति.
२ उच्चैर्गोत्र.	६ देवानुपूर्वी.
३ मनुष्यगति.	७ पंचेंड्रियजातिनामकर्म
४ मनुष्यानुपूर्वी.	८ औदारिकशरीरनामकर्म

ए वैक्रिय शरीरनामकर्म
१० आहारक शरीरनाम.
११ तैजसशरीरनामकर्म.
१२कार्मणशरीरनामकर्म.
१३ औदारिक अंगोपांग.
१४ वैक्रियअंगोपांगनाम
१५ आहारक अंगोपांग.
१६ वज्रऋषभनाराच संघयण.
१७ समचतुरस्रसंस्थान.
१८ शुभवर्ण.
१ए शुभगंध.
२० शुभरस.
२१ शुभस्पर्श.
२२ अगुरु लघुनामकर्म.
२३ पराघात नामकर्म.
२४श्वासोश्वासनामक०
२५ आतप नामकर्म.
२६ उद्योत नामकर्म.
२७ शुभ विहायोगति नामकर्म.
२८ निर्माण नामकर्म.
२ए त्रस नामकर्म.
३० बादर नामकर्म.
३१ पर्याप्ति नामकर्म.
३२ प्रत्येक नामकर्म.
३३ स्थिर नामकर्म.
३४ शुभ नामकर्म.
३५ सौभाग्य नामकर्म.
३६ सुस्वर नामकर्म.
३७ आदेय नामकर्म.
३८ यशःकीर्त्ति नामकर्म.
३ए देवायु.
४० मनुष्यायु.
४१ तिर्यंचायु.
४२ तीर्थंकर नामकर्म.

ए बेंतालीश भेद रूपी जाणवा.

॥ चोथा पाप तत्वना व्याशी भेद कहे छे ॥

१ मतिज्ञानावरणीय.
२ श्रुतज्ञानावरणीय.
३ अवधिज्ञानावरणीय.
४मन.पर्यवज्ञानावरणीय
५ केवलज्ञानावरणीय.
६ दानांतराय.

७ लाभांतराय.
८ भोगांतराय.
९ उपभोगांतराय.
१० वीर्यांतराय.
११ चक्षुदर्शनावरणीय.
१२ अचक्षुदर्शनावरणीय
१३ अवधिदर्शनावरणीय
१४ केवलदर्शनावरणीय.
१५ निद्रा.
१६ निद्रानिद्रा.
१७ प्रचला.
१८ प्रचलाप्रचला.
१९ थीणद्धी.
२० नीचैर्गोत्र
२१ आशाता वेदनीय.
२२ मिथ्यात्वमोहनीय.
२३ स्थावरनामकर्म.
२४ सूक्ष्मनामकर्म.
२५ अपर्याप्तनामकर्म.
२६ साधारणनामकर्म.
२७ अस्थिरनामकर्म.
२८ अशुभनामकर्म.
२९ दुर्भाग्यनामकर्म.
३० दुःस्वरनामकर्म.
३१ अनादेयनामकर्म.
३२ अयशनामकर्म.
३३ नरकगति.
३४ नरकायु.
३५ नरकानुपूर्वी.
३६ अनंतानुबंधी क्रोध.
३७ अनंतानुबंधी मान.
३८ अनंतानुबंधी माया.
३९ अनंतानुबंधी लोभ.
४० अप्रत्याख्यानी क्रोध.
४१ अप्रत्याख्यानी मान.
४२ अप्रत्याख्यानीमाया.
४३ अप्रत्याख्यानी लोभ.
४४ प्रत्याख्यानी क्रोध.
४५ प्रत्याख्यानी मान.
४६ प्रत्याख्यानी माया.
४७ प्रत्याख्यानी लोभ.
४८ संज्वलन क्रोध.
४९ संज्वलन मान.
५० संज्वलन माया.
५१ संज्वलन लोभ.
५२ हास्यनो कषाय.
५३ रतिनो कषाय.
५४ अरतिनो कषाय.

५५ शोकनो कषाय.
५६ जयनो कषाय.
५७ डुगंबानो कषाय.
५८ पुरुषवेदनो कषाय.
५९ स्त्रीवेदनो कषाय.
६० नपुंसकवेदनो कषाय
६१ तिर्यंचगति.
६२ तिर्यंचानुपूर्वी.
६३ एकेंड्रियजाति.
६४ बेंड्रियजाति.
६५ तेंड्रियजाति.
६६ चतुरिंड्रियजाति.
६७ अशुजविहायोगति.
६८ उपघात नामकर्म.
६९ अप्रशस्त वर्ण.
७० अप्रशस्त गंध.
७१ अप्रशस्त रस.
७२ अप्रशस्त स्पर्श.
७३ रुषजनाराचसंघयण
७४ नाराचसंघयण.
७५ अर्द्धनाराच संघयण.
७६ कीलिकासंघयण.
७७ छेवढुं संघयण
७८ न्यग्रोधपरिमंमलसं०
७९ सादिसंस्थान.
८० वामनसंस्थान.
८१ कुब्जसंस्थान.
८२ हुंमकसंस्थान.

ए व्याशी जेद रूपी जाणवा.

॥ पांचमा आश्रव तत्वना बेंहेंतालीश जेद कहे छे ॥

१ स्पर्शनेंड्रिय.
२ रसनेंड्रिय.
३ घ्राणेंड्रिय.
४ चक्षुरिंड्रिय.
५ श्रोत्रेंड्रिय.
६ क्रोध कषाय.
७ मान कषाय.
८ माया कषाय.
९ लोज कषाय.
१० प्राणातिपात अव्रत.
११ मृषावाद अव्रत.
१२ अदत्तादान अव्रत.
१३ मैथुन अव्रत.
१४ परिग्रह अव्रत.

१५ अशुभमनोयोग.
१६ अशुभवचनयोग.
१७ अशुभकाययोग.
१८ कायिकी क्रिया.
१९ अधिकरणकी क्रिया.
२० प्रद्वेषिकी क्रिया.
२१ पारितापनकी क्रिया.
२२ प्राणातिपातकीक्रिया
२३ आरंभकी क्रिया.
२४ पारिग्रहिकी क्रिया.
२५ मायाप्रत्ययिकीक्रिया
२६ मिथ्यात्वदर्शनप्रत्ययिकी क्रिया.
२७अप्रत्याख्यानकीक्रिया
२८ दृष्टिकी क्रिया.
२९ पृष्टिकी क्रिया.
३० पाडुच्चकी क्रिया.
३१ सामंतोपनिपातिकी.
३२ नैशस्त्रिकी क्रिया.
३३ स्वहस्तकी क्रिया.
३४ आज्ञापनिकी क्रिया.
३५ विदारणिकी क्रिया.
३६ अनाभोगिकी क्रिया.
३७ अनवकांक्षप्रत्ययिकी क्रिया.
३८ प्रयोगिकी क्रिया.
३९ समुदायिकी क्रिया.
४० प्रेमकी क्रिया.
४१ द्वेषिकी क्रिया.
४२ ईर्यापथिकी क्रिया.

ए बेहेंतालीश भेदरूपी जाणवा.

॥ छहा संवरतत्त्वना सत्तावन भेद कहे छे ॥

१ ईर्यासमिति.
२ भाषासमिति.
३ एषणासमिति.
४ आदान भंडमतनिक्षेपणासमिति.
५ उच्चारपासवणखेलसिंघाणजलपारिष्ठापनिकासमिति.
६ मनोगुप्ति.
७ वचनगुप्ति.

८ कायगुप्ति.
९ क्षुधापरिसह.
१० पिपासापरिसह.
११ शीतपरिसह.
१२ उष्णपरिसह.
१३ दंशमशकपरिसह.
१४ अचेलक परिसह.
१५ अरतिपरिसह.
१६ स्त्रीपरिसह.
१७ चर्यापरिसह.
१८ नैषेधिकीपरिसह.
१९ शय्यापरिसह.
२० आक्रोशपरिसह.
२१ वधपरिसह.
२२ याचनापरिसह.
२३ अलाभपरिसह.
२४ रोगपरिसह.
२५ तृणफरसपरिसह.
२६ मलपरिसह.
२७ सत्कारपरिसह.
२८ प्रज्ञापरिसह.
२९ अज्ञानपरिसह.
३० सम्यक्त्वपरिसह.
३१ क्षमाधर्म.
३२ मार्दवधर्म.
३३ आर्यवधर्म.
३४ मुक्तिधर्म.
३५ तपोधर्म.
३६ संयमधर्म.
३७ सत्यधर्म.
३८ शौचधर्म.
३९ अकिंचनधर्म.
४० ब्रह्मचर्यधर्म.
४१ अनित्यभावना.
४२ अशरणभावना.
४३ संसारभावना.
४४ एकत्वभावना.
४५ अन्यत्वभावना.
४६ अशुचिभावना.
४७ आश्रवभावना.
४८ संवरभावना.
४९ निर्जराभावना.
५० लोकस्वरूपभावना.
५१ बोधिदुर्लभभावना.
५२ धर्मभावना.
५३ सामायिक चारित्र.
५४ छेदोपस्थापनीय चारित्र.

५५ परिहारविशुद्धिचारित्र.	५७ यथाख्यातचारित्र.
५६ सूक्ष्मसंपरायचारित्र.	

ए सत्तावन्न नेद अरूपी जाणवा.

॥ सातमा निर्ज्जरा तत्त्वना बार नेद कहे छे ॥

तेमां प्रथम छ प्रकारें वाह्य तप कहे छे.	छ प्रकारें अभ्यंतर तप कहे छे.
१ अनशन तप.	७ प्रायश्चित्त तप.
२ ऊणोदरी तप.	८ विनय तप.
३ व्रतिसंक्षेप तप.	ए वैयावच्च तप.
४ रसत्याग तप.	१० सज्जाय तप.
५ कायक्लेश तप.	११ ध्यान तप.
६ संलीनता तप.	१२ उपसर्ग तप.

ए बार नेद अरूपी जाणवा.

॥ आठमा बंधतत्त्वना चार नेद कहे छे ॥

१ प्रकृतिबंध.	३ अनुनागबंध.
२ स्थितिबंध.	४ प्रदेशबंध.

ए चार नेद अरूपी जाणवा.

॥ नवमा मोक्षतत्त्वना नव नेद कहे छे ॥

१ छतापदनीप्ररूपणा नुं द्वार.	३ क्षेत्रद्वार.
२ द्रव्यप्रमाणद्वार.	४ स्पर्शनाद्वार.
	५ कालद्वार.

६ अंतरद्वार.	८ क्षायिकादिकनावद्वार.
७ नागद्वार.	ए अल्पबहुत्वद्वार.

ए नव नेद अरूपी जाणवा.

अथ चार गतिमां रहेला समस्त संसारी जीव, चोवीश दंमकोने विषे परिभ्रमण करे छे, ते दंमकनां नाम कहे छे. तिहां प्रथम सात नारकीनो एक दंमक छे, ते साते नारकीनां नाम तथा गोत्र, नीचें प्रमाणें छे

नाम.	गोत्र.
१ घमा	रत्नप्रना.
२ वंसा.	शर्करप्रना.
३ सेला.	वालुकप्रना.
४ अंजणा.	पंकप्रना.
५ रिष्ठा	धूमप्रना.
६ मघा.	तमप्रना.
७ माघवती.	तमतमप्रना

हवे दश नवनपतिना दश दंमक तेनां नाम कहे छे.

१ असुरकुमार निकायनो दंमक.
२ नागकुमार निकायनो दंमक.
३ सुवर्णकुमार निकायनो दंमक
४ विद्युत्कुमार निकायनो दंमक.
५ अग्निकुमार निकायनो दंमक.
६ द्वीपकुमार निकायनो दंमक.
७ उदधिकुमार निकायनो दंमक.
८ दिशिकुमार निकायनो दंमक.
ए वायुकुमार निकायनो दंमक
१० स्तनितकुमार निकायनो दंमक.

बारमो पृथिवी कायनो दंमक, तेना मूलनाम ७ छे, ते कहे छे.

१ सुना. २ सुधा. ३ वालुया.
४ मणशिल. ५ शर्करा. ६ खरपुढवी.

॥ हवे ए पृथिवी कायना नेद कहे छे ॥

१ स्फाटिकरत्न. २ मणिरत्न. ३ रत्ननी सर्वजाति.
४ परवालां.— ५ हिंगलो.— ६ हरताल.
७ मणशिल.— ८ पारो.— ए सोनुं.
१० रूपुं.— ११ त्रांबुं.— १२ लोढुं.
१३ जसत.— १४ सीसुं.— १५ कथिर.
१६ खडीमाटी. १७ हरमजीवानी. १८ अरणेटोपाषाण.
१ए पलेवोपाषाण. २० अवरख. २१ तूरीमाटीनीजाति.
२२ खारीमाटीनीजाति. २३ माटीनीसर्वजाति.
२४ पाषाणनी सर्वजाति. २५ सुरमानी जाति.
२६ अंजननी जाति. २७ लूणनी जाति.

इत्यादि पृथिवी कायना अनेक नेद जाणवा.

तेरमो अप्कायनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ जमीननुं पाणी.
२ आकाशनुं पाणी अने नदीसमुद्र कूपादिकनुं जल.
३ गारनुं पाणी.
४ हिमनुं पाणी.
५ रोयेडानुं पाणी.
६ लीलीवनस्पतिनुं पा०
७ मांकनुं पाणी.
८ घनोदधि ते पृथ्वीनो आधारनूत थीणाघृतसमानजलपिंम.

चौदमोतेउकायनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ अंगारानो अग्नि.	४ उल्कापातनो अग्नि.
२ ज्वालानो अग्नि.	५ कणियानो अग्नि.
३ न्रासडनो अग्नि.	६ विजलीनो अग्नि.

पन्नरमो वाउकायनो दंमक छे. तेना नेद कहे छे.

१ उद्न्रामकवायु.	५ मुखशुद्धवायु.
२ मंदवायु.	६ गुंजवायु.
३ उत्कलिकवायु	७ घनवात.
४ मंमलिकवायु	८ तनवात.

शोलमो वनस्पतिकायनो दंमक छे तेनी मूलजाति बे छे, तिहां जे एकशरीरमां अनंता जीव होय ते साधारण वनस्पति. अने जे एक शरीरमां एक जीव होय, ते प्रत्येक वनस्पति कहेवाय, तेना नेद कहे छे.

१ गुछा, २ वृक्ष, ३ गुल्म, ४ लता, ५ वल्ली, ६ तृण, ७ जलरुह, ८ औषधि, ए कुहन, १० पर्वग, ११ हरि, इत्यादिक एना अनेक नेद छे.

सत्तरमो बेंडियनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ शंख.	२ कोमा.	३ गंमोला.
४ जलु	५ अलसीया.	६ लारीया.
७ मेहरी	८ कमिया.	ए पाणीना पूरा

अढारमो तेंडियनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ कानखजुरा.	२ मांकड.	३ जू.
४ कीडियो.	५ उदेही.	६ मक्कोडा.

७ ईल. ८ घीमेल. ए सावा.
१० गोकीडा. ११ गद्दहीया. १२ विष्टाना कीडा.
१३ गोवरना कीडा. १४ धनेरियां. १५ कुंथुआ.
१६ गोपालिक. १७ इंद्रगोप.
उगणीशमो चौरिंद्रियनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.
१ वींछी. ४ भमरी. ७ डांस. १० कंसारी.
२ ढंकण. ५ टीड. ८ मत्सर. ११ खडमांकडी.
३ भमरा. ६ माखी. ए पतंगीया.
वीशमो तिर्यंचपंचेंद्रियनो दंडक छे. तेना त्रणभेद कहेछे.
१ जलचर. २ स्थलचर. ३ खेचर. ४ उरःपरिसर्प.
५ भुजपुरिसर्प, ए बे स्थलचर मांहेला छे.
एकवीशमो मनुष्यनो दंडक छे. तेना भेद कहे छे.
भरतादिक पंदर कर्मभूमि क्षेत्रनां मनुष्य.
देवकुरादिक त्रीश अकर्मभूमि क्षेत्रनां मनुष्य.
छप्पन्न अंतर द्वीपनां मनुष्य.
ए सर्व मली एकशोने एक भेदो थया.
बावीशमो वाणव्यंतर देवोनो दंडक छे. ते बे प्रकारें छे.
एक व्यंतरनी निकाय, तेना आठ भेद कहे छे.
१ पिशाच. २ यक्ष [illegible]

त्रेवीशमो ज्योतिषी देवोनो दंमक पांच प्रकारें छे.

१ चंड्. २ सूर्य. ३ ग्रह. ४ नक्षत्र. ५ तारा.

चोवीशमो वैमानिक देवोनो दंमक तेना मूल बे नेद छे.

एक कल्प एटले आचारवाला देवो ते बार देव लोकना नेदें करी बार प्रकारें छे. तेना नाम कहे छे.

१ सौधर्म देवलोक । ७ महाशुक्र देवलोक.
२ ईशान देवलोक. । ८ सहस्रार देवलोक.
३ सनत्कुमार देवलोक. । ९ आनत देवलोक.
४ माहेंड् देवलोक. । १० प्राणत देवलोक.
५ ब्रह्म देवलोक. । ११ आरण देवलोक.
६ लांतक देवलोक. । १२ अच्युत देवलोक.

बीजा कल्पातीत एटले जेने विषे स्वामी सेवक संबंध नथी, एवा देवो तेना मूल बे प्रकार छे. एक नवग्रैवेयक वासी, बीजा पांच अनुत्तर विमान वासी तेमां प्रथम नवग्रैवेयकनां नाम कहे छे.

१ सुदर्शन. ४ सर्वतोनड् ७ सौमनस्य.
२ सुप्रतिबद्ध ५ सुविशाल ८ प्रीतिकर.
३ मनोरम ६ सुमनस ९ आदित्य.

हवे पांच अनुत्तर विमाननां नाम कहे छे.

१ विजय ३ जयंत ५ सर्वार्थसिद्धि.
२ विजयंत ४ अपराजित

ए रीतें ए चोवीश दंमकनां नेद सहित नाम कह्यां.

हवे प्रत्येक दंमकें चोवीश द्वार कहेवाय, तेनां नाम.

पहेलुं शरीर द्वार पांच प्रकारें छे.

१ औदारिकशरीर, ३ आहारकशरीर, ५ कार्मेणशरीर.
२ वेक्रिय शरीर, ४ तैजस शरीर,

बीजुं अवगाहना द्वार. ते प्रत्येक दंमकें जघन्य तथा उत्कृष्ट एवा बे भेदें शरीरनुं प्रमाण कहेवुं.

त्रीजुं संघयण द्वार ढ प्रकारें छे.

१ वज्रऋषभनाराच संघयण. ४ अर्द्धनाराचसंघ०
२ ऋषभनाराचसंघयण. ५ कीलिका संघयण.
३ नाराच संघयण. ६ छेवटुं संघयण.

हवे ए संघयणवाला जीवो ऊर्ध्वगति गमन करे, तो कया संघयणवाला क्यां सुधी जाय? ते कहे छे.

१ वज्र ऋषभ नाराच संघयणवाला, मोक्षपर्यंत जाय.
२ ऋषभनाराचसंघयणवाला, बारमादेवलोकपर्यंतजाय
३ नाराच संघयणवाला, दशमादेवलोक पर्यंत जाय.
४ अर्द्धनाराचसंघयणवाला, आठमादेवलोकपर्यंतजाय
५ कीलिका संघयणवाला, छठा देवलोकपर्यंत जाय.
६ छेवठा संघयणवाला, चोथा देवलोक पर्यंत जाय.

हवे अधोगति गमन करे, तो कया संघयणवाला जीव क्यां सुधी जाय? ते कहे छे.

१ वज्र ऋषभ नाराच संघयणवाला सातमी नरक पृथिवी पर्यंत जाय.

२ रुषभनाराच संघयणवाला, छठी नरक पृथिवी पर्यंत जाय;
३ नाराचसंघयणवाला, पांचमीनरकपृथिवीपर्यंतजाय
४ अर्द्धनाराचसंघयणवाला,चोथीनरकपृथिवीपर्यंत०
५ कीलिकासंघयणवाला,त्रीजीनरकपृथिवीपर्यंतजाय.
६ छेवठा संघयणवाला, बीजीनरकपृथिवीपर्यंत जाय.

चोथुं संज्ञा द्वार, दश प्रकारे छे. तेनां नाम कहे छे.

१ आहारसंज्ञा. ५ क्रोधसंज्ञा. ८ लोभ संज्ञा.
२ भयसंज्ञा. ६ मानसंज्ञा. ९ लोकसंज्ञा.
३ मैथुनसंज्ञा. ७ मायासंज्ञा. १० उघसंज्ञा.
४ परिग्रहसंज्ञा. तथा नीचें लखेली छ संज्ञा साथें मेलवतां शोलप्रकार पण थाय छे.

१ सुख सज्ञा. २ दुःख संज्ञा. ३ मोहसंज्ञा.
४ दुगंछा संज्ञा ५ शोक संज्ञा. ६ धर्म संज्ञा.

पांचमुं संस्थान द्वार, छ प्रकारें छे, तेनां नाम कहे छे.

१ समचतुरस्र संस्थान. ४ कुब्ज संस्थान.
२ निग्गोहपरिमंडल संस्थान. ५ वामन संस्थान.
३ सादि संस्थान. ६ हुंडक संस्थान.

अही पांच इंद्रियोनां संस्थान कहे छे.

१ स्पर्शेंद्रियनुं नाना प्रकारनु संस्थान होय छे.
२ रसेंद्रियनुं खुरपा सरखुं संस्थान होय छे.
३ घ्राण इंद्रियनुं तिलना फूल सरखुं संस्थान होय छे.

४ चक्षुरिंद्रियनुंमसूरनीदालसरखुं अर्द्धचंद्राकारें सं०
५ श्रोत्रेंद्रियनुं कल्पवृक्षना फूल सरखुं संस्थान छे.

छठुं कषाय द्वार. चार प्रकारें छे. तेनां नाम कहे छे.

१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ,

सातमुं लेश्या द्वार छ प्रकारें छे.

१ कृष्णलेश्या. ३ कापोतलेश्या. ५ पद्मलेश्या.
२ नीललेश्या. ४ तेजोलेश्या. ६ शुक्ललेश्या.

आठमुं इंद्रिय द्वार पांच प्रकारें छे.

१ स्पर्शनेंद्रिय. २ रसेंद्रिय. ३ घ्राणेंद्रिय.
४ चक्षुरिंद्रिय. ५ श्रोत्रेंद्रिय.

नवमुं समुद्घात द्वार सात प्रकारें छे.

१ वेदनासमुद्घात, ४ वैक्रियसमुद्घात, ७ केवलसमु०
२ कषाय समुद्घात, ५ तेजस समुद्घात.
३ मरण समुद्घात. ६ आहारक समुद्घात.

दशमुं दृष्टिद्वार त्रण प्रकारें छे.

१ सम्यक्दृष्टि, २ मिथ्यादृष्टि, ३ मिश्रदृष्टि,

अगीयारमुं दर्शन द्वार चार प्रकारें छे.

१ चक्षुर्दर्शन. २ अचक्षुर्दर्शन.
३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

बारमुंज्ञानतथातेरमुंअज्ञान द्वार मली आठ प्रकारें छे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान.
४ मनःपर्यवज्ञान. ५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान.
७ श्रुतअज्ञान. ८ विभंगज्ञान.

रीतें पांच ज्ञान ने त्रण अज्ञाननुं द्वार कह्युं.

तेरमुं योग द्वार पंदर प्रकारें छे.

१ सत्यमनोयोग.	ए औदारिक काययोग.
२ असत्यमनोयोग.	१० औदारिकमिश्रकाययोग
३ सत्यमृपामनोयोग.	११ वैक्रियकाययोग.
४ असत्यामृपामनोयोग.	१२ वैक्रियमिश्रकाययोग.
५ सत्यवचनयोग.	१३ आहारककाययोग.
६ असत्यवचनयोग.	१४ आहारकमिश्रकाय०
७ सत्यमृपावचनयोग.	१५ कार्मणकाययोग.
७ असत्यामृपावचनयोग.	

चौदमुं उपयोग द्वार बार प्रकारें छे.

१ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मन.पर्यवज्ञान, ५ केवलज्ञान, ६ मतिअज्ञान, ७ श्रुतज्ञान. ७ विभंगज्ञान. ए चक्षुर्दर्शन. १० अचक्षुर्दर्शन. ११ अवधिदर्शन. १२ केवलदर्शन.

पन्नरमुं उपपात द्वार ते प्रत्येक दंमकने विपे एक समयमां केटला जीव आवी उपजे, तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

शोलमुं च्यवनद्वार, ते प्रत्येक दंमकने विपे एक समयमां केटला जीव चवे, तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

सत्तरमुं आयुष्य द्वार ते चारगति आश्री चार प्रकारें छे. तेमां कया कया दंमकें केटलुं केटलुं आयु छे? तेनुं प्रमाण कहेवानुं द्वार.

२१ तुच्छ फल ते कुअली वस्तु अति काचांफल मह्डां जांबू प्रमुख.

२२ चलित रस थयेली वस्तु ते सडेलुं अन्नादिक जाणवुं.

अथ आयुर्भाव लिख्यते;

जीवजाती.	आयुवर्ष—	सर्प्पायु.	१००-१२०
हस्तिआयु.	१२०	कीडीआयु.	१
मनुष्यायु.	१२०	उंदरआयु.	२-२०
अश्वआयु.	३२-४८	ससलाआयु.	१०-१४
व्याघ्रआयु.	६४	देवीआयु.	५०
कागआयु.	१००	सूवरआयु.	५०
गर्द्दभायु.	६४	वागोलआयु.	५०
ढालीआयु.	१६	बपैयाआयु.	३०
श्वानआयु.	१२	सिंहआयु.	१०००
शियालआयु.	२४	माछलाआयु.	१०००
हरणआयु.	[illegible]	[illegible]ु.	२५
हंसआयु.	[illegible]	[illegible]	२५
मांजार[illegible]	[illegible]	[illegible]	२५
सूडा[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६
गेंडा[illegible]	[illegible]	[illegible]	३
सारस[illegible]	[illegible]	[illegible]	३
क्रौंच[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
व[illegible]	[illegible]	[illegible]	६

अथश्रीजिनभुवनने विषे चोराशी आशातना न करवी, तेनां नाम लखीयें छेयें.

१ वडखो न नाखवो.	२२आंखनोमेलननाखवो
२ हिंचोलादि क्रीडान०	२३ नखनोमेलननाखवो.
३ कलहप्रमुखन करवो.	२४गंमस्थलनो मेल न०
४ धनुष्कलादि न करवी.	२५नाकनोमेलननाखवो.
५ पाणीना कोगला न०	२६माथानोमेलननाखवो
६ तांबूलादिक न खावां.	२७काननोमेलननाखवो.
७ तांबूल थुंकवां नही.	२८ शरीरनी चामडीनो मेल न नाखवो.
८ मुखथीगालो न देवी.	२९ मित्रसार्थेमसलतन०
९ मूत्रविष्टा न नाखवी.	३०विवादार्थेएकगानथवुं.
१० शरीर न धोवुं.	३१ नामुं न लखवुं.
११ वाल न उतरावबा.	३२कोइचीज वेचवी नही.
१२ नख न उतरावबा.	३३ थापण न मूकवी.
१३ रुधिर न नाखवुं.	३४माठेआसने न बेसवुं.
१४ सुखडी न खावी.	३५ छाणां थापवां नही.
१५ चामडी न नाखवी.	३६ कपडांसूकववांनही.
१६ पित्त वमन न करवुं.	३७ धान्य सूकववां नही.
१७ वमन न करवुं.	३८ पापड सूकववा नही.
१८ दांत नाखवा अथवा समारवा नही.	३९ वडीयो करवी नही
१९ विश्रामण न करवो.	४०राजभयादिकेंरूपवुंन०
२० गाय प्रमुख न बांधवी.	४१ रुदन करवुं नही.
२१ दांतनोमेलननाखवो	४२ विकथा करवी नही.

४३ शस्त्र घडवां नही.
४४ तिर्यंच बांधवा नही.
४५ तापणी करवी नही.
४६ अन्नादिक रांधवुं नही.
४७ नाणुं परखवुं नही.
४८ निसिहीभांगवी नही.
४ए छत्र धरवुं नही.
५० खासडां मूकवां नही
५१ शस्त्र मूकवां नही.
५२ चामर धरावबुं नही.
५३ मन एकाग्र करवुं.
५४ तेलादिकनचोपडवां.
५५ सचित्तभोग त्यजवो.
५६ अयोग्यअचेतत्यजवो
५७ जिनपीठेंहाथजोडवा
५८एकसाडीउत्तरासणक.
५ए मुकुटधारण न करवो.
६० पाघडीनो अविवेक.
६१ तोरादिक न घालवा.
६२ होड न करवी.
६३ गेमीदडे रमवुं नही.
६४जुहारसलामनकरवी.
६५ भांम चेष्टा नकरवी.
६६तुंकार रेकार नकहेवो
६७ धरणे बेसवुं नही.
६८ युद्ध करवुं नही.
६एचोटलादिसमारवान०
७० पलोठीयें बेसवुं नही
७१ चांखडीपेहेरवी नही
७२ लांबे पगे बेसवुंनही
७३पुडपुडीवगाडवी नही
७४ कादव न करवो.
७५अंगनी रज उमावीन.
७६ मैथुन सेवबुं नही.
७७ जुगटुं रमवुं नही.
७८ भोजन करवुं नही.
७ए मल्लयुद्ध करवुंनही.
८० वैद्यकर्म करवुं नही.
८१ व्यापार करवो नही.
८२ शय्यापाथरवीनही.
८३ आहार राखवो नही
८४ स्नान करवुं नही.

ए चोराशी आशातना ते जिनपूजादिक कार्यविना शरीर शुश्रूपादिकने अर्थे करे तो आशातना जाणवी.

माटे तेनो त्याग करी आज्ञारुचि थइ आशातना रहित थका जिनमंदिरने विषे प्रवर्त्तवुं.

सात नयनां नाम.

१ नैगम नय. २ संग्रह नय. ३ व्यवहार नय.
४ रुजुसूत्र नय. ५ शब्द नय. ६ समभिरूढनय.
७ एवंभूत नय.

चार निक्षेपनां नाम.

१ नाम निक्षेप. ३ द्रव्य निक्षेप.
२ स्थापना निक्षेप. ४ भाव निक्षेप.

चार कारणनां नाम.

१ उपादान कारण. ३ असाधारण कारण.
२ निमित्त कारण. ४ अपेक्षा कारण.

आठ मदनां नाम.

१ जातिमद. २ कुलमद. ३ बलमद.
४ रूपमद. ५ श्रुतमद. ६ तपोमद.
७ लाभमद. ८ ऐश्वर्यमद.

अष्ट मांगलिकनां नाम.

१ आरीसो. २ भद्रासन. ३ वर्द्धमान.
४ श्रीवत्स. ५ मत्स्ययुग्म. ६ प्रधानकुंभ
७ साथीउं. ८ नंदावर्त्त.

श्रावकनां बारव्रतनां नाम.

१ स्थूलप्राणातिपातवि० ३ स्थूलअदत्तादानवि०
२ स्थूलमृषावादविरमण ४ मैथुन विरमण

५ परिग्रह परिमाण व्रत.	६ दिक् परिमाण व्रत.
७ भोगोपभोगपरिमाण.	८ अनर्थदंडविरमणव्रत
९ सामायिक व्रत.	१० देशावगाशिकव्रत.
११ पौषधोपवास व्रत.	१२ अतिथिसंविभागव्रत.

चौद गुणठाणानां नाम.

१ मिथ्यात्व गुणठाणुं.	८ निवृत्तिबादर गुणठाणु
२ सास्वादन गुणठाणुं	९ अनिवृत्तिबादर गुण०
३ मिश्र गुणठाणुं.	१० सूक्ष्मसंपराय गुणठाणु.
४ अविरतिसम्यग्दृष्टि	११ उपशांतमोह गुणठाणु
५ देशविरति गुणठाणुं	१२ क्षीणमोह गुणठाणु.
६ प्रमत्त गुणठाणुं.	१३ सयोगीकेवली गुणठाणु
७ अप्रमत्त गुणठाणुं.	१४ अयोगीकेवली गुणठाणु

समूर्छिम मनुष्यने उपजवाना चौद स्थानक.

१ वडिनीतिमांहे.	८ रक्तमांहे.
२ लघुनीतिमांहे.	९ शुक्रपुद्गलमांहे.
३ श्लेष्ममांहे.	१० साडेसुवा वीर्यमांहे.
४ नासिकानामलमांहे.	११ मृतकलेवर मांहे.
५ वमनमांहे.	१२ स्त्रीपुरुषनेसंयोगें.
६ पत्तमांहे.	१३ नगरनाखालमांहे.
७ पिरूमांहे.	१४ सर्वअशुचिस्थानमांहे.

साधुना सत्तावीस गुणनां नाम.

५ प्रणातिपात विरमणादिक पांच महाव्रत.
६ रात्रिभोजनविरमण व्रत.

१२ छकायना जीवोनी रक्षा करे, ते छ गुण.
१७ पांच इंड्रियोनो निग्रह करे, ते पांच गुण.
१८ लोजनो जय.
१९ क्षमा राखे.
२० जाव विशुद्धि एटले चित्तनिर्मलता.
२१ पडिलेहण प्रमार्जन करवाथी विशुद्धि थाय.
२२ संयमयोगयुक्तता.
२५ अकुशल मन वचन अने कायानुं रुंधवुं, ए त्रण.
२६ शीतादिक वेदनानुं सहन करवुं.
२७ मरणांत उपसर्ग सहन करवा.

त्रीश अकर्मजूमि क्षेत्रनां नाम.

५ हेमवंत क्षेत्र.	५ हरिवर्ष क्षेत्र.	५ देवकुरु क्षेत्र.
५ उत्तरकुरु क्षेत्र.	५ रम्यक क्षेत्र.	५ऐरण्यवतक्षेत्र.

पंदर कर्मजूमि क्षेत्रनां नाम.

५ जरतक्षेत्र. ५ ऐरवतक्षेत्र. ५ महाविदेहक्षेत्र.

सिद्धना एकत्रीशगुणनां नाम.

५ पांच संस्थान रहित.	३ त्रण वेद रहित.
५ पांच वर्ण रहित.	१ शरीर रहित.
२ बे गंध रहित.	१ संग रहित.
५ पांच रस रहित.	१ जन्म रहित.
८ आठ फरस रहित.	

प्रकारांतरें वली सिद्धना एकत्रीश गुण कहे छे.

५ पांच प्रकारनां ज्ञानावरणीय कर्मथी रहित.

९ नव प्रकारनां दर्शनावरणीय कर्मथी रहित.
२ बे प्रकारना वेदनीय कर्मथी रहित.
२ बे प्रकारना मोहनीय कर्मथी रहित.
४ चार प्रकारना आयु कर्मथी रहित.
२ बे प्रकारना नाम कर्मथी रहित.
२ बे प्रकारना गोत्र कर्मथी रहित.
५ पांच प्रकारना अंतराय कर्मथी रहित.

सात नयनां नाम.

१ हस्तिनो नय. २ सिंहनो नय.
३ सर्पनो नय. ४ अग्निनो नय.
५ समुद्रादि जलनो नय. ६ राजानो नय.
७ चोरनो नय.

संसारी जीवने सात महोटां सुख कह्यां छे, तेनां नाम

१ रोगरहित शरीर होय.
२ कोइनो देणदार न होय.
३ यात्रादिकविनाआजीविकार्थेपरदेश न जाय.
४ घरमां स्त्री सुपात्र होय.
५ पुत्रपौत्रादिकनुं सुख होय.
६ सगा कुटुंबादिक चारे पक्षेकरी सहित होय.
७ पंच महाजनमां प्रतिष्ठावान् होय.

छ दर्शननां नाम.

१ जैनदर्शन. २ मीमांसकदर्शन. ३ बौद्धदर्शन.
४ नैयायिकदर्शन. ५ वैशेषिकदर्शन. ६सांख्यदर्शन

सात नयनां नाम.

१ इहलोक नय. २ परलोक नय. ३ आदान नय.
४ अकस्मात् नय. ५ वेदना नय. ६ मरण नय.
७ अपजश अपकीर्त्तिनो नय.

६ नाषानां नाम.

१ संस्कृत २ प्राकृत. ३ शौरसेनी.
४ मागधी. ५ पैशाचिकी. ६ अपभ्रंशी.

चक्रवर्त्तिनाचौदरत्नमां सात एकेंड्रियरत्न छे,तेनां नाम.

१ चक्र रत्न. २ छत्र रत्न. ३ चर्म्म रत्न. ४ दंम रत्न
५ असि रत्न. ६ मणि रत्न. ७ कांगणी रत्न.

सात पंचेंड्रिय रत्ननां नाम.

१ सेनापति रत्न. २ गाथापति रत्न. ३ सूत्रधार रत्न.
४ पुरोहित रत्न. ५ स्त्री रत्न. ६ अश्व रत्न.
७ गज रत्न.

॥ हवे जीवना प्रकार कहे छे ॥

१ चेतना लक्षणें करी सर्व जीव एक प्रकारें छे; केम के, कीडी कुंजर सर्वमां चैतन्य सरखुं छे, माटे.

हवे सर्वजीवना बे बे प्रकार कहे छे.

१ सिद्धना जीव.	१ सकषायीजीव ते संसारी
२ संसारीजीव.	२ अकषायीजीवसिद्धना.
१ इंड्रियसहित ते संसारी.	१ सयोगीजीव ते संसारी
२ इंड्रियरहित ते सिद्धना.	२ अयोगीतेसिद्धनाजीव

१ सशरीरीजीवसंसारी.
२ अशरीरी जीवसिद्धना.
१ सवेदीजीवसंसारी.
२ अवेदीतेसिद्धना जीव.

१ आहारीजीव ते संसारी
२ अणाहारीजीव सिद्धना
१ भासगाजीव.
२ अभासगाजीव.

हवे संसारी जीवना बे बे प्रकार अनेक रीतें कहे छे.

१ त्रस बेंद्रियादिकजीव.
२ स्थावर एकेंद्रिय जीव.
१ सूक्ष्मजीव.
२ बादरजीव.
१ पर्याप्ताजीव.
२ अपर्याप्ताजीव.
१ भवसिद्धियाजीव.
२ अभवसिद्धिया जीव.
१ जेस्वयोग्यपर्याप्ति नहीज लीयेतेलब्धिअपर्याप्ताजीव.

२ जेणे स्वयोग्यपर्याप्तिहजी लीधी नथी पण लेशे, ते करण अपर्याप्ता जीव.
१ जेणे स्वयोग्यपर्याप्ति सर्व लीधी नथी पण लेशे ते लब्धिपर्याप्ता जीव.
२ जे स्वयोग्य पर्याप्ति, पूर्ण पाम्यो ते करण पर्याप्ता जीव.

हवे संसारी जीवना त्रण त्रण प्रकार कहे छे.

१ पुरुषवेदी. २ स्त्रीवेदी. ३ नपुंसकवेदी.
१ मन योगी. २ वचन योगी. ३ काययोगी.
१ संयति. २ असंयति. ३ संयतासंयति
१ सम्यग्दृष्टि. २ मिथ्यादृष्टि. ३ मिश्रदृष्टि.
१ ऋजुजड. २ ऋजुप्राज्ञ. ३ वक्रजड.
भव्यजीव. २ अभव्यजीव. ३ जातिभव्यजीव.

सर्वे जीवना त्रण प्रकार.

नवसिद्धिया. २ अन्नवसिद्धिया. ३ नोन्नव सि
द्धिया अने नो अन्नव सिद्धिया ते सिद्धना जीव.
पर्याप्ता. २ अपर्याप्ता. ३ नोपर्याप्ता,
ो अपर्याप्ता ते सिद्धना जीव.
सूक्ष्मजीव. २ बादरजीव. ३ नोसूक्ष्म नो
बादर ते सिद्धना जीव.

॥ गतिआश्री सर्वे जीव चार प्रकारें ठे ॥

१ देवगति, २ मनुष्यगति, ३ तिर्यंचगति, ४ नरकगति.

॥ इंद्रिय आश्री सर्वे जीव पांच प्रकारें ठे ॥

१ एकेंद्रय २ बेंद्रिय, ३ तेंद्रिय ४ चौरिंद्रिय ५पंचेंद्रिय.

॥ कायआश्री सर्वे जीव ठ प्रकारें ठे ॥

१ पृथिवीकाय. २ अप्काय. ३ तेउकाय.
४ वाउकाय. ५ वनस्पतिकाय. ६ त्रसकाय.

॥ हवे पूर्वोक्तथावर जीवना पांच प्रकार कहे ठे ॥

१ पृथिवी. २ अप ३ तेउ, ४ वाउ, ५ वनस्पति,

॥ त्रस जीव चार प्रकारना ठे ॥

१ बेंद्रिय. २ तेंद्रिय. ३ चौरिंद्रिय. ४ पचेंद्रिय.

तिहां बेंद्रिय तेंद्रिय अने चौरिंद्रियना नेदो संक्षे
पथी आगल दंमकना बोलोमां लखाइ गया ठे, तथा
पंचेंद्रिय जीव नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अने देवता
मली चार प्रकारना ठे, तेना नेद पण संक्षेपें आगल
दंमकना बोलोमां लखाइ गया ठे. अहीयां तेनुं देह
मान तथा आयु कहे ठे. तेमां प्रथम चार प्रका

रना देवोनुं उत्कृष्ट देहमान तथा आयु कहे छे ॥

प्रथम दश नवनपतिनी निकायमां पहेली असुरकुमार निकायना दक्षण श्रेणि तथा उत्तरश्रेणिना मली वे इंद्रो छे, तेमां उत्तरश्रेणिनो अधिपति वलींद्र छे, तेनुं आयु एकसागरोपम जाजेरुं छे, अने दक्षण श्रेणिनो अधिपति चमरेंद्र छे,तेनुं आयु एक सागरोपम छे, बाकी नवनिकायना उत्तर श्रेणिना इंद्रोनुं आयु वे पल्योपम कांइक उछेरुं जाणवुं, अने दक्षण श्रेणिना नवनिकायना इंद्रोनुं आयु दोढ पल्योपम जाणवुं. तथा ए सर्व दशेनिकायना देवोनुं देहमान सात हाथ प्रमाण जाणवुं. रत्नप्रन्ना पृथिवीनो पिंम (१८००००) योजन जाडो छे, तेमांथी हजार योजन नीचें अने हजार योजन उपर मूकी बाकीना (१७८०००) योजनमां ए दश निकायना देवो छे.

बीजा व्यंतर निकायना देवो वे प्रकारना छे, ए सर्व देवोनुं देहमान सात हाथनुं छे, तथा जघन्यायु दश हजार वर्षनुं अने उत्कृष्टायु एक पल्योपमनुं छे, ए रत्नप्रन्नापृथिवीना उपरला हजार योजनमांथी शो योजन नीचे तथा शो योजन उपर मूकी बाकीना आठशो योजनमां व्यंतरदेवो वसे छे. तथा उपरना मूकेला शो योजनमांथी वली दश योजन नीचे तथा दश योजन उपर मूकीयें, तेवारे बाकीना एंशी योजनमां वाणव्यंतर देवो वसे छे.

त्रीजी ज्योतिषी देवताउनी निकाय पांच प्रकारें छे.

ते संनूतल पृथिवीथकी उपर ७ए० योजनथी मां
मीने नवसो योजन पर्यंतना एकशो ने दश योजनमां
एमनां विमान ठे, ते सर्वनुं देहमान सात हाथ प्रमा
ण ठे. अने उत्कृष्टायु नीचें प्रमाणे ठे.

१ चंद्मानुं एक पल्योपम उपर एक लाख वर्षायु ठे.
२ सूर्यनुं एक पल्योपम उपर एक हजार वर्षायु ठे.
३ ग्रहमंगलादिकनुं एक पल्योपमायु ठे.
४ अश्विन्यादिक नक्त्रनो अर्ध पल्योपमायु ठे.
५ तारानुं एक पल्योपमनो चोथो नाग आयु ठे.

चोथी वैमानिक देवोनी निकाय बे प्रकारे ठे तेमां प्रथम
कल्पवाला देवोनुं उत्कृष्ट देह मान अने आयु कहे ठे.

देवलोकनां नाम	देहमान	आयु.
१ सौधर्म.	सात हाथ.	बे सागरोपम.
२ ईशान.	सात हाथ.	बे सागरोपमजाजेरा.
३ सनत्कुमार.	ठ हाथ.	सात सागरोपम.
४ माहेंद्र	ठ हाथ.	सात सागरोपम जाजेरा
५ ब्रह्म	पांच हाथ.	दश सागरोपम.
६ लांतक.	पांच हाथ.	चौद सागरोपम.
७ शुक्र.	चार हाथ.	सत्तर सागरोपम.
८ सहस्रार	चार हाथ.	अढार सागरोपम.
ए आणत.	त्रण हाथ.	उगणीशसागरोपम.
१० प्राणत.	त्रण हाथ.	वीश सागरोपम.
११ आरण.	त्रणहाथ.	एकवीशसागरोपम.
१२ अच्युत.	त्रणहाथ.	बावीशसागरोपम.

हवे बारमा देवलोक सुधी चोशठ इंद्रो छे, ते आवी रीतें
२० दशभुवनपतिनी दश निकाय मांहेली एकेकी
निकायने विषे दक्षिण तथा उत्तर श्रेणिनो प्रत्ये
के एकेक इंद्र गणता वीश इंद्रो भुवनपतिना छे.
३२ व्यतर तथा वाणव्यंतरनी शोल निकाय मांहेली
एकेकी निकायने विपे दक्षिण तथा उत्तर श्रेणिनो
प्रत्येकें एकेक इंद्र गणतां बत्रीश इंद्रव्यतर देवोना छे.
२ पांच ज्योतषीना चंद्र अने सूर्य ए बे इंद्र छे.
१० बार देवलोकमध्ये आठमा देवलोक सुधी तो
एकेका देवलोकनो एकेक इंद्र छे, तेवार पछी न
वमा तथा दशमा मलीने बे देवलोकनो एकज इंद्र
अने अगीआरमा तथा बारमा मली बे देवलोकनो
एकज इंद्र छे. ए रीतें दश इंद्र वैमानिक देवोना छे.
ए सर्व मली चोशठ इंद्र थया.

हवे उपर ग्रैवेयक तथा अनुत्तरविमानने विषे स्वामी
सेवकपणुं नथी,तेथी तिहां इंद्र पण नथी,ए कल्पातीत
देवो छे. ग्रैवेयकना देवोनुं देहमान तथा आयु कहे छे.
पहेला कोठामां ग्रैवेयकनुं नाम बीजा कोठामां जे
अंक मांड्यो छे, तेटला सागरोपमनुं आयु जाणवुं;
अने शरीर तो सर्व ग्रैवेयकें बे हाथ प्रमाण जाणी लेवुं.

प्रथम त्रिक.		बीजुं त्रिक.		त्रीजुं त्रिक.	
सुदर्शन.	२३	सर्वतोभद्र.	२६	सोमनस्य.	२९
सुप्रतिबद्ध.	२४	विशाल.	२७	प्रीतिकर.	३०
[illegible] .	२५	सुमनस.	२८	आदित्य.	३१

हवे पांचे अनुत्तर विमानें एक हाथनुं शरीर तथा जघन्य एकत्रीश अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनुं आयु चार विमानोने विषे जाणवुं, अने पांचमा सर्वार्थ सिद्धिने विषे जघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु.

हवे तिर्यंचना उत्कृष्ट देहमान तथा आयु कहे छे.

जीवजाति.	देहमान	आयु.
पृथिवीकाय	अंगुलनो असंख्यभाग	२२००० वर्ष.
अप्कायप्राणी	अंगुलनो असंख्यभाग	७००० वर्ष.
अग्निकाय	अंगुलअसंख्यभाग	त्रण दिवसनुं आयु.
वायुकाय	अंगुलअसंख्यभाग	३००० वर्षायु.
साधारणवनस्पति	अगुलासंख्यभाग	अंतरमुहूर्त्त.
प्रत्येकवनस्पति	हजारयोजनजाजेरां	१०००० वर्ष.
बेंद्रियजीव.	बार योजन.	बार वर्ष.
तेंद्रियजीव.	त्रण गाउ.	४९ दिवस.
चौरिंद्रिय जीव.	चारगाउ.	छ महिना.
संमूर्छिममत्स्यादि.	हजार योजन.	क्रोड पूर्व.
सं०चतुष्पदादि.	बेथी नव गाउ	८४०००) वर्ष.
सं०खेचरनुं	बेथी नवधनुष.	७२०००) वर्ष.
सं०उरःपरिसर्प्प.	बेथी नवयोजन.	५३०००) वर्ष.
सं०भुजपरिसर्प्प.	बेथी नवधनुष.	४२०००) वर्ष.
गर्भजमत्स्यादिक.	हजार योजन.	क्रोड पूर्व
गर्भजथलचर.	छ गाउ.	त्रण पल्योपम.
गर्भजखेचरपंखी.	बेथीनवधनुष	पल्योपमासंख्य०
गर्भजउर परिसर्प्प.	हजारयोजन	क्रोडपूर्व.

साथे तेनी हकीगतनुं पण एक पुस्तक छाप्युं छे,तेमां स विस्तर अधिकार छे, तेथी अहीयां स्वल्प वात लखी छे.

वली आ जंबुद्वीपनां दक्षण बाजुना हिमवंत प र्वत अने उत्तर तरफना शिखरी पर्वत, ए बे पर्वतनी हाथीना दांतना जेवी चार चार दाढाउ लवण समु द्रमां गई छे, ते एकेकी दाढ उपर सात सात अंतर द्वीप छे, तेवारें बेहु पर्वतनी आठ दाढाउ उपर छपन्न अंतरद्वीप छे, तेमां पण पूर्वोक्त असि मसि अने कृषि ए त्रण प्रकारना उद्यम रहित युगलिक मनुष्यो वसे छे, ए रीतें सर्व मली (१०१) प्रकारना मनुष्यो छे.

हवे बीजा सिद्धना जीव पंदर नेदे छे, तेनां नाम.

१ जिनसिद्ध ते ऋषनादि तीर्थंकर पोतें जाणवा.
२ अजिनसिद्ध ते पुंमरीकादि गणधर जाणवा.
३ तीर्थसिद्ध ते प्रसन्नचंद्रादिक तथा गणधरादि.
४ अतीर्थसिद्ध ते मरुदेव्यादिक जाणवा.
५ ग्रहस्थलिंगसिद्ध ते नरत चक्रवर्त्यादि.
६ अन्यलिंगसिद्ध ते तापसादिवेशें वल्कलचीरी.
७ स्वलिंगसिद्ध ते साधुवेशें जंबुस्वामी प्रमुख.
८ स्त्रीलिंगसिद्ध ते स्त्रीलिंगें राजिमत्यादि.
एपुरुषलिंगसिद्ध ते गुणाढ्यराजादिक.
१० नपुंसकलिंगसिद्ध ते कृत्रिमनपुंसक गांगेयादिक.
११ प्रत्येकबुद्धसिद्ध ते करकंडुराजाआदिक जाणवा.
१२ स्वयंबुद्धसिद्ध ते कपिलादिक.

१३ बोधबोधित सिद्ध ते पंदरसें त्रण तापसादिक
१४ एकसिद्ध ते गजसुकुमालादिक.
१५ अनेक सिद्ध ते भरतपुत्रादिक घणा सिद्ध.

॥ अथ काल प्रमाण ॥

१ प्रथम अति सूक्ष्मकालने एक समय कहियें.
२ तेवा असंख्याता समयें एक आवलिका थाय.
३ तेवी (१६७७७२१६)आवलियें एक मुहूर्त्त थाय.
४ त्रीश मूहूर्त्ते दिवस एटले एक अहोरात्र थाय
५ पंदर अहोरात्रें एक पखवाडयुं थाय.
६ बे पखवाडीयें एक महिनो थाय.
७ बार महीने एक वर्ष थाय
८तेवा (७०५६००००००००००)वर्षे एक पूर्व थाय.

९ तेवा असंख्याता पूर्वे एक पल्योपम थाय,ते आ वीरीतें चार गाउ ऊंचो अनें चार गाउ पोहलो वाट लाकारे त्रण योजन जाजेरी परिधिवालो एक पल्य कल्पवो, तेंमां उत्तर कुरु खेत्रसंबंधी युगलियाना रोम एवा सुक्ष्म छे के ते ४०९६ रोम एकठां करीयें,तेवारें कर्मभूमि मनुष्यनो एक वाल थाय. एवा ते युगलीयाना सूक्ष्म रोम छे, ते रोम लंबाइयें एक तसुनो लइने तेना सात वखत आठ आठ कटका करीये, तेवारें (२०९७१५२) कटका थाय, तेवा कटके करी पूर्वोक्त पालो भरीने पछी ते एकेक कटको शो शो वर्षने अंतरे काढतां जे वारें ते पल्य खाली थाय, तेवारें संख्याता

वर्ष थाय, तेने बादर पल्योपम कहीयें, अने ते पूर्वोक्त एकेका रोम खंमना असंख्याता खंम करीने तेवा खं मे, ते पूर्वोक्त कूप एवी रीतें गांसीने जरवो, के तेना उ परथी चक्रवर्त्तिनी सेना चाली जाय, तोपण ते दवा य नहीं, पढी ते एकेको सूक्ष्म खंम शो शो वर्षे का हाढतां असंख्याता पूर्व व्यतिक्रमे ढते ते पल्य खा ली थाय, तेवारें एक पल्योपम थायछे.

१० दश कोडाकोडी पल्योपमें एक सागरोपम थाय.

११ दशकोडाकोडी सागरोपमें एक अवसर्प्पिणीथाय.

१२ दशकोडाकोडी सागरोपमें एक उत्सर्प्पिणी थाय.

१३ उत्सर्प्पिणीअवसर्प्पिणी मली एक कालचक्र थाय.

१४ अनंता कालचक्रें एक पुजलपरावर्त्त थाय.
एवा अनंता पुजलपरावर्त्त, संसारमां परिभ्रमण करता जीवें व्यतिक्रम्या.

श्रावकने नित्यप्रत्यें चौद नियम धारवा, तेनां नाम.

१ सचेत परिमाण.	८ वाहन परिमाण.
२ इव्य परिमाण.	ए शय्या परिमाण.
३ विगय परिमाण.	१० विलेपन परिमाण.
४ उपानह् परिमाण.	११ ब्रह्मचर्य परिमाण.
५ तंबोल परिमाण.	१२ दिशि परिमाण.
६ वस्त्र परिमाण.	१३ स्नान परिमाण.
७ पुष्पजोग परिमाण	१४ जातपाणीनुंपरिमाण.

दश पच्चरकाणनां नाम तथा ते पच्चरकाण करवाथी केटलुं नरकायु त्रूटे, ते कहे छे.

पच्चरकाणनां नाम.	नरकायु त्रूटवानी संख्या.
१ नवकारसीथी.	एकशो वर्षे नरकायु त्रूटे.
२ पोरिसीथी.	एकहजार वर्षे नरकायु त्रूटे.
३ साढ्ढपोरिसीथी.	दशहजार वर्षेनरकायु त्रूटे.
४ पुरिमढ्ढथी.	एकलाख वर्षे नरकायु त्रूटे.
५ एकाशनथी.	दशलाख वर्षे नरकायु त्रूटे.
६ नीवीथी.	एकक्रोड वर्षे नरकायु त्रूटे.
७ एकलगणाथी.	दशक्रोड वर्षे नरकायु त्रूटे.
८ एकलदांतिथी.	शो क्रोड वर्षे नरकायु त्रूटे.
९ आयंबिलथी.	हजार क्रोड वर्षे नरकायु त्रूटे.
१० उपवासथी.	दशसहस्रक्रोडवर्षे नरकायु त्रूटे.

अथ समवसरण मध्येनी बार परिषदानां नाम.

३ एक गणधरनी, बीजी विमानवासी देवांगनानी, त्रीजी साध्वीनी. ए त्रण परिषदा अग्निकूणें बेसे.

३ एक ज्योतिषीनी देवीनी, बीजी व्यंतरनी देवीनी, त्रीजी भुवनपतिनी देवीनी. ए त्रण पर्षदा नैर्ऋ०

३ एक ज्योतिषी देवोनी, बीजी व्यंतर देवोनी, त्रीजी भुवनपति देवोनी. ए त्रण पर्षदा वायव्य कूणे बेसे.

३ एक वैमानिक देवतानी, बीजी मनुष्यनी त्रीजी मनुष्यनी स्त्रीउनी. ए त्रण परखदा ईशान कूणे बेसे.

वर्ष थाय, तेने बादर पल्योपम कहीयें, अने ते पूर्वोक्त एकेका रोम खंमना असंख्याता खंम करीने तेवा खं में, ते पूर्वोक्त कूप एवी रीतें गांसीने नरवो, के तेना उ परथी चक्रवर्त्तिनी सेना चाली जाय, तोपण ते दबा य नहीं, पढी ते एकेको सूक्ष्म खंम शो शो वर्षे का हाढतां असंख्याता पूर्व व्यतिक्रमे ढते ते पल्य खा ली थाय, तेवारें एक पल्योपम थायढे.

१० दश कोडाकोडी पल्योपमें एक सागरोपम थाय.
११ दशकोडाकोडी सागरोपमें एक अवसर्प्पिणीथाय.
१२ दशकोडाकोडी सागरोपमें एक उत्सर्प्पिणी थाय.
१३ उत्सर्प्पिणीअवसर्प्पिणी मली एक कालचक्र थाय.
१४ अनंता कालचक्रें एक पुजलपरावर्त्त थाय.
एवा अनंता पुजलपरावर्त्त, संसारमां परिभ्रमण करता जीवें व्यतिक्रम्या.

श्रावकने नित्यप्रत्यें चौद नियम धारवा, तेनां नाम.

१ सचेत परिमाण.
२ इव्य परिमाण.
३ विगय परिमाण.
४ उपानह् परिमाण.
५ तंबोल परिमाण.
६ वस्त्र परिमाण.
७ पुष्पनोग परिमाण.
८ वाहन परिमाण.
९ शय्या परिमाण.
१० विलेपन परिमाण.
११ ब्रह्मचर्य परिमाण.
१२ दिशि परिमाण.
१३ स्नान परिमाण.
१४ नातपाणीनुं परिमाण.

दश पच्चरकाणनां नाम तथा ते पच्चरकाण करवाथी केटलुं नरकायु त्रूटे, ते कहे ले.

पच्चरकाणनां नाम.	नरकायु त्रूटवानी संख्या.
१ नवकारसीथी.	एकशो वर्ष नरकायु त्रूटे.
२ पोरिसीथी.	एकहजार वर्ष नरकायु त्रूटे.
३ साढ्ढपोरिसीथी.	दशहजार वर्षनरकायु त्रूटे.
४ पुरिमड्ढथी.	एकलाख वर्ष नरकायु त्रूटे.
५ एकाशनथी.	दशलाख वर्ष नरकायु त्रूटे.
६ नीवीथी.	एकक्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.
७ एकलगणाथी	दशक्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.
८ एकलदांतिथी.	शो क्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.
ए आयंबिलथी.	हजार क्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.
१० उपवासथी.	दशसहस्रक्रोडवर्ष नरकायु त्रूटे.

अथ समवसरण मध्येनी बार परिषदानां नाम.

३ एक गणधरनी, बीजी विमानवासी देवांगनानी, त्रीजी साध्वीनी. ए त्रण परिषदा अग्निकूणें बेसे.

३ एक ज्योतिषीनी देवीनी, बीजी व्यंतरनी देवीनी, त्रीजी त्रुवनपतिनी देवीनी. ए त्रण पर्षदा नैर्ऋ०

३ एक ज्योतिषी देवोनी, बीजी व्यंतर देवोनी, त्रीजी त्रुवनपति देवोनी. ए त्रण पर्षदा वायव्य कूणे बेसें.

३ एक वैमानिक देवतानी, बीजी मनुष्यनी त्रीजी मनुष्यनी स्त्रीउनी. ए त्रण परखदा ईशान कूणे बेसे.

स्वाध्यायनां पांच प्रकार कहे छे.

१ जे गुरुसमीपें शिष्यें वांचवुं ते वांचना.
२ जे गुरुजावें सूत्रना विचार पूछियें ते पृछना.
३ जणेला सूत्रनुं गुणवुं, ते परियट्टणा.
४जे हृदयमांहे सूत्रना विचार चिंतववा,ते अनुप्रेक्षा.
५ जे परने धर्मकथा संजलावीयें ते धर्मकथा.

पांच प्रकारना देव कह्या छे, तेनां नाम.

१ पंचेंड्रिय, तिर्यंच अथवा मनुष्य जेणें देवायु बांध्युं होय, ते देवतापणें उपजशे, तेने ड्रव्यदेव कहीयें.
२ जे चक्रवर्त्ती होय तेने नरदेव कहीयें.
३ श्री अणगार साधुने धर्मदेव कहीयें.
४ श्री अरिहंत देवने देवाधिदेव कहीयें.
५ जुवनपत्यादिक चार निकायना देव ते जावदेव.

ए पूर्वोक्त पांच प्रकारना देवोनुं आयुष्य लखे छे.

१ ड्रव्यदेवनुंजघन्यअंतरमुहूर्त्त उत्कृष्टत्रणपल्योपम.
२ नरदेवनुंजघन्यसातसेंवर्ष उत्कृष्टचोरासीलाखपूर्व.
३धर्मदेवनुंजघन्यअंतरमुहूर्त्त उत्कृष्टदेशेऊणीपूर्वकोडी.
४ देवाधिदेवनुंजघन्यबहोत्तेरवर्ष उत्कृष्टचोराशीलाख०
५ जावदेवनुं जघन्य दश हजार वर्ष, उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम.

त्रण प्रकारें जीवनुं अल्पायु थाय, ते कहे छे.

१ जीवहिंसा करतो थको. २ जूठुं बोलतो थको.

पांच प्रमादनां नाम.

१ मद्यपान, २ विषय, ३ कषाय, ४ निद्रा, ५ विकथा.

पांच आश्रवनां नाम.

१ मिथ्यात्व, २ अविरति, ३ प्रमाद, ४ कषाय, ५ योग.

पांच संवरनां नाम.

१ सम्यक्त्वसंवर. २ विरतिसंवर. ३ अप्रमत्तसंवर. ४ अकषायसंवर. ५ अयोगसंवर.

पांच अन्निगमनां नाम.

१ सचित्त द्रव्य जे शरीरन्नोगसंबंधि होय ते ठांमे.
२ अचित्त मुद्रादिक ठांमे. ३ मन एकत्र स्थानकें राखे.
४ एक साडिउं उत्तरासंग करे.
५ जिन दीठे मस्तकें करपांजली करे.

पांच राजचिन्ह जिनप्रासादें जतां मूकियें तेनां नाम.

१ खड्ग, २ छत्र, ३ वाणही, ४ मुकुट, ५ चामर.

पांच स्थानकथी जीव नीकले छे ते कहे छे.

१ पग थकी नीकले, ते जीव नरक गतियें जाय.
२ जंघा थकी निकले, ते जीव तिर्यंच गतियें जाय.
३ पेट थकी निकले, ते जीव मनुष्य थाय
४ मस्तक थकी निकले, ते जीव देवता थाय.
५ सर्व अंग थकी निकले, ते जीव मोक्षें जाय.

पांच स्थानकें जीव डुर्लन्न बोधि पणुं करे, तेनां नाम.

१ श्रीअरिहंतनो अवर्णवाद बोलतो थको.
२ श्रीअरिहंतन्नाषित धर्मनो अवर्णवाद बोलतो थको.

३ आचार्यादिकनो अवर्णवाद बोलतो थको.
४ चतुर्विध श्रीसंघनो अवर्णवाद बोलतो थको.
५ जे तप अने ब्रह्मचर्य पालीने देव थया छे, ते देवोनो अवर्णवाद बोलतो थको.

एज श्रीअरिहंतादिक पांचनी स्तवना करतो थको जीव सुलभबोधीपणुं पण उपार्जन करे.

त्रण मुद्रानां नाम.

१ योगमुद्रा. २ जिनमुद्रा. ३ मुक्ताशुक्तिमुद्रा.

संसारी जीवनो आहार त्रण प्रकारें छे.

१ उजाहार. २ लोमाहार. ३ प्रक्षेपाहार.

संसारी जीवनी योनिना त्रण प्रकार.

१ सचित्तयोनि. २ अचित्तयोनि. ३ मिश्रयोनि.

॥ अथ साडा पच्चीश आर्यदेशनां नाम ॥

देशनाम.	मुख्यनगर.	ग्रामनी संख्या.
१ मगधदेश.	राजगृहनगर.	६६०००००
२ अंगदेश.	चंपानगरी.	५०००००
३ वंगदेश.	[illegible]	५००००
४ कलिंगदेश.	[illegible]	१०००००

१० जंगलदेश.	अहिछत्रानगरी.	१४५०००
११ सौराष्ट्रदेश.	द्वारावतीनगरी.	६८०५०००
१२ विदेहदेश.	मिथिलानगरी.	८०००
१३ वत्यदेश.	कोसंबीनगरी.	२८०००
१४ शांमिल्यदेश.	नंदीपुरनगर.	१००००
१५ मलयदेश.	नद्दिलपुरनगर.	७०००००
१६ मत्स्यदेश.	वैराटनगरी.	८००००
१७ वरुणदेश.	अबापुरी.	२४०००
१८ दशार्णदेश.	मृत्तिकावतीनगरी.	१८९२०००
१९ चेदिदेश.	शुक्तिकावतीनगरी.	६८००
२० सिंधुसौवीरदेश.	वीतनयपत्तननगर.	६८५००
२१ शूरसेनदेश.	मथुरानगरी.	६८०००
२२ भंगदेश.	पावापुरीनगरी.	३६०००
२३ मासदेश.	पुरिवट्टानगरी.	१४२५
२४ कुणालदेश.	सावत्त्रीनगरी.	६३०५३
२५ लाटदेश.	कोटीवर्षनगर.	२१०३०००

२५॥केकइदेश. श्वेतांबिकानगरी. ए देशनो अर्द्धआर्य छे

ए साडापच्चीश आर्यदेश ते आ नरत क्षेत्रना द क्षिणार्द्ध नागना मध्य खंमने विषे जाणवा, एमां ती र्थंकरादिक त्रेशठ उत्तम पुरुषोनुं उपजवुं थाय छे, ते मज शक अने यवनादिक ३१९७४॥ अनार्य देश छे, तेमां वध्रा अनार्य लोको वसे छे.

दश दृष्टांतें मनुष्य जन्म पामवो ॾुर्लन्न ने,तेनां नाम.

१ न्नोजननो दृष्टांत.
२ पासानो दृष्टांत.
३ धान्यनो दृष्टांत.
४ जुवटानो दृष्टांत.
५ रत्ननो दृष्टांत.
६ स्वप्ननो दृष्टांत.
७ राधावेधनो दृष्टांत.
८ ड्रहसेवालनो दृष्टांत.
९ धोंसरानो दृष्टांत.
१० परमाणुनो दृष्टांत.

आ नीचे लखेला बार वानां पामवां ॾुर्लन्न.

१ मनुष्यन्नव. २ आर्यक्षेत्र. ३ मातापितानोपक्षशुद्ध.
४ मार्गानुसारी. ५ रूपवंतपणुं. ६ नीरोग्गता.
७ पूर्णआयु. ८ न्नलीबुद्धि. ९ धर्म सांन्नलवो.
१० धर्मनी रुचि. ११ सद्दहणा. १२धर्मनेविषे उद्यम.

अथ त्रूटक शीखामण.

१ अकार्यनेविषे आलसु थवुं.
२ प्राणवधनेविषे सदैव पांगला थवुं.
३ पारकी तांतनेविषे बहेरा थवुं.
४ परस्त्री निरीक्षणनेविषे जातिअंध थवुं.
५ कीर्त्ति, कुल, सुपुत्र, कला, मित्र, गुण अने सुशील, ए सात वानां वधारवाथी धर्मवृद्धि थाय.
६ माननो त्याग, गुरुन्नक्ति, सुशीलता, दयाधर्म, सत्य, विनय अने तप ए सात वानां न मूकवां.
७ खल माणसनी संगति, कुस्त्री, सात व्यसन, कुमार्गें धनागम, असमाधि, राग द्वेष अने कषाय, ए सात वानां त्यागवां.

८ उपकार, गुरुवचन,सुजनता, नली विद्या, नियम; वीतराग अने नवकार,ए सात वानां हृदयें धरवां.

ए व्यसनासक्त, सर्प, मूर्ख, युवती, जल, अग्नि, अने पूर्वविरुद्ध, ए सातनो विश्वास न करवो.

१० विनय, जिनन्नक्ति, सुपात्रदान, सुसंयमनेविषे राग, माह्यपण, निःस्पृहता अने परोपकारपणुं, ए सात गुण महोटा जाणवा.

आ दुखमा काल पांचमो आरो प्रवर्त्तते थके त्रीश बोल प्रगट थशे, तेनां नाम कहे छे.

१ नगर ते गाम सरिखा थाशे.

२ गाम ते समशान सरखां थाशे.

३ राजा ते यमदंम सरखा थाशे.

४ कुटुंबी पुरुष दास सरखा थाशे.

५ प्रधान मंत्री लांचग्राही थाशे.

६ सुखी जन निर्लज्ज थाशे.

७ केटलीएक कुलवती स्त्रीयोने पण वेश्यानां आचरण प्रिय थशे.

८ पुत्र स्वछंदाचारी थशे.

ए शिष्य ते गुरुने प्रत्यनीक थशे.

१० दुर्जन पुरुष सुखी अने रुद्धि सन्मान पामशे.

११ सज्जन जन ते दुःखीया अल्पऋद्धिवाला अने अल्प मान महत्त्व पामवाना धणी थशे.

१२ देश ते परचक्र ममर दुर्भिक्षाक्रांत थशे.

पृथ्वी दुष्टसत्त्वाकुल थशे.
ब्राह्मण अस्वाध्यायी तथा अर्थलुब्ध थशे.
श्रमण महात्मा गुरुकुलवासत्यागी थशे.
६ यति मंदधर्मी तथा कषायकलुषितचित्तवाला०
७ समकेतदृष्टी देव, मनुष्य अल्पबली थशे.
८ मिथ्यादृष्टी देव ने मनुष्य घणा बलवंत थशे.
९ मनुष्यने देवदर्शन नही थशे.
१० विद्या, मंत्र तथा औषध्यादिकना प्रभाव अल्प०
११ गोरस, कपूर, शर्करादिद्रव्य वर्णादिहीन थशे.
१२ बल, धन, आयुष्य, घणा हीन थशे.
१३ मासकल्पयोग्य क्षेत्र कोइ रहशे नही.
१४ अगीआर प्रतिमा रूप श्रावकधर्मनो विछेद थशे.
१५ आचार्य, शिष्य प्रत्यें सम्यक् श्रुत जणावशे नही.
१६ शिष्य पण कलहना, ... भ्रमरना करनार,
... मंदबुद्धि ... थशे.

अथ पच्चीश राज घरनां नाम,

१ प्रासाद,
२ विहार,
३ हर्म्य,
४ हस्तिशाला,
५ अश्वशाला,
६ नांमागार,
७ कोष्ठागार,
८ नूमिगृह,
९ धर्मशाला,
१० दानशाला,
११ सनाशाला,
१२ आयुधशाला,
१३ स्नानगृह,
१४ अलंकारसना,
१५ नायकगृह.
१६ शत्रुकार,
१७ पानीयशाला,
१८ आश्रमक्रीडागृह,
१९ महानसनोजनशाला
२० शांतिगृह,
२१ उटज अपवरकचंद्र०
२२ सूतिकागृह,
२३ गोशाला,
२४ पाकपूटिगतिकावपनी शल्यशाला,
२५ गंजापकणघोपनिष द्यामलच्छुचिस्थानम्.

अथ सात राज्यस्थानकनां नाम.

१ कुमार, २ आमात्य, ३ महांत,
४ मंत्रीक, ५ बुद्धिपुरुष. ६ धर्म्माधिकारस्थानसाक्षीदक्षपुरुष. ७ अवसरज्ञसेवक.

अथ सप्तांग राज्यनां सात अंग.

हाथी, घोडा, रथ, पायक, नंमार, कोठार, गढ.

अथ बारप्रकारनां वाजित्रनां नाम.

ढक्का, डक्का, ममरु, काहली, नेरि, नाण, ढोल, शंख, करड, पोमय, मादल, कंसाल,

अथ छत्रीश राजकुलनां नाम.

१ सूर्यवंश.
२ सोमवंश.
३ यादववंश.
४ कंदबवंश.
५ परमारवंश.
६ इक्ष्वाकुवंश.
७ चहुआण.
८ चौलुक्य.
९ मौरिकवंश.
१० शोलारवंश.
११ सैंधववंश.
१२ छिंदकवंश.
१३ चापोत्कटवंश.
१४ प्रतिहारवंश
१५ लुडकवंश.
१६ राष्ट्रकूट.
१७ करटकवंश.
१८ करटपालवंश.
१९ विदकवंश.
२० गुहिलवंश.
२१ गुहिलपुत्तवंश.
२२ पौतिक.
२३ मकुआणवंश.
२४ धान्यपालकवंश.
२५ राजपालकवंश.
२६ अनंगलवंश.
२७ निकुंनवंश.
२८ दहिकरवंश.
२९ केलातुर
३० हूणवंश.
३१ हरिवंश.
३२ ढोढारवंश.
३३ शकवंश.
३४ चंदेलवंश.
३५ शोलंकीवंश.
३६ मारववंश.

अथ छत्रीश विनोदनां नाम.

१ दर्शनविनोद.
२ श्रवणविनोद.
३ गीतविनोद.
४ नृत्यविनोद.
५ लिखितविनोद.
६ वक्तृत्वविनोद.

७ शास्त्रविनोद.
८ शस्त्रविनोद.
९ करविनोद.
१० बुद्धिविनोद.
११ विद्याविनोद.
१२ गणितविनोद.
१३ तुरंगमविनोद.
१४ गजविनोद.
१५ रथविनोद.
१६ पक्षिविनोद,
१७ आखेटकविनोद.
१८ जलविनोद.
१९ यंत्रविनोद.
२० मंत्रविनोद.
२१ महोत्सवविनोद.
२२ फलविनोद.
२३ पुष्पविनोद.
२४ चित्रविनोद.
२५ पतितविनोद.
२६ यात्राविनोद.
२७ कलत्रविनोद.
२८ कथाविनोद.
२९ युद्धविनोद.
४० कलाविनोद.
३१ समस्याविनोद.
३२ विज्ञानविनोद.
३३ वार्त्ताविनोद.
३४ क्रीडाविनोद.
३५ तत्त्वविनोद.
३६ कवित्वविनोद.

॥ अथ चोराशी गछनां नाम ॥

१ दो वंदनिक गछ.
२ धर्मघोषा गछ.
३ संडेरा गछ.
४ किन्नरसा गछ.
५ नागोरी तपा गछ
६ मलधारा गछ.
७ खडतपा गछ.
८ चित्रावाल गछ.
९ उंसवाल गछथी तपागछ थयो.
१० नाणावाल गछ.
११ पल्लिवाड गछ.
१२ आगमिया गछ.
१३ वोकडीया गछ.

४ श्रीवीर निर्वाण पछी २२० वर्षें अश्वमित्र नामा निन्हव समुछेदवादि थयो. जेणे सर्व पदार्थ उ पन्या पछी तेमनो उछेद थाय छे,एवी प्ररूपणा करी सद्दहणा राखी, ते चोथो निन्हव जाणवो.

५ वीर निर्वाणथी २२८ वर्षें एक समयें जीव बे किरिया वेदे,एवी सद्दहणानो करनार एवो दो कि यावादी गंगसूरि नामे पांचमो निन्हव थयो.

६ वीर निरवाणथी ५४४ वर्षें जीवराशि, अजीव राशि अने नोजीव राशि एवा त्रण राशि मतनो स्थापक छठो निन्हव थयो.

७ श्रीवीर निर्वाणथी ५८४ वर्षें अबद्ध स्पष्ट कर्मवा दी सातमो निन्हव थयो, एटले कर्म जे छे ते आ त्माना प्रदेश सार्थे (अबद्ध के०) मल्या नथी, परंतु सर्पकंचुकीनी पेरें फरसमात्र छे, एवी प्ररूपणानो करनार हतो. ए सर्वेनी कथा ग्रंथांतरथी जाणवी.

हवे अयोध्यानगरीनुं प्रमाण लखियें छैयें.

उत्सेधांगुल थकी प्रमाणांगुल अढीगणुं महोटुं थाय छे, ते प्रमाणें बार योजन लांबी अने नव योज न पहोली एवी नगरीना पांचशे पांचशे धनुष्यना च उखूणा चोशाला १८४३२०) थाय तेवा एक चउ शाला मांहे पांचशे धनुष्यना देहधारी मनुष्य दश जण सूइ रहे तो १८४३२०० मनुष्य समाइ शके, एवी रीतें गणतां चक्रवर्तीनी सैन्यादिक परिवारनी गणनानो समावेश थइ शकतो नथी.

माटे उत्सेधांगुल थकी प्रमाणांगुल एक हजार गुणुं महोटुं छे, तेनी साथें बार योजन लांबी अने नव योजन पहोली नगरीनो हिसाब गणीयें, तो उत्सेधांगुले पांच पांचशे धनुष्यना चोखूणा चोशाला २७६४८००००००) एटले सत्तावीश अब्ज चोशठ क्रोडने एंशी लाख खांडुवा थाय. एवुं नगर होय तो चक्रवर्तिनी सेन्या आदिक बीजी पण सर्व ऋद्धिनो समावेश थइ शके. एवी रीतें अयोध्या नगरीनुं मान श्रीतीर्थंकरने वचने श्रीअनुयोगद्वार तथा जंबुद्वीपपन्न त्ति ए सूत्र साथें मलतुं आवे छे.

तथा वली कोइ एक एम कहे छे के, उत्सेधांगुल थकी प्रमाणांगुल बशे पचाश गणुं महोटुं छे, तेमना मतें अयोध्या नगरीना चउखूणा चोशाला गणीयें तो पण १७२८०००००० एक अब्ज बहोंतेर क्रोड ने एंशी लाख खंडुवा थाय. ए मानें गणता पण ठीक मलतुं नथी. कारण के,चक्रवर्त्तिना छन्नुं क्रोड तो एक ला पायकज होय. छे ते एकेका पायकनो परिवार स्त्री,पुत्रादिक गणीयें तो घणा जनोनो समूह थाय. ते सर्वने बेसवा उठवाने तथा सूवाने क्रीडा करवाने बाहेर भूमिकायें जवाने तेटली जगा पूरी पडे नही, माटे जाणीये छैयें. जे एक प्रमाणांगुलना योजने एक हजार उत्सेधांगुल थाय छे, अने एक प्रमाणांगुलना योजने एक हजार उत्सेधांगुलना योजन थाय छे. ए प्रमाणें सूत्रोक्त वात खोटी थइ शके नही. उत्सेधांगुल

थकी श्रीवीरजगवाननी अंगुली बमणी मह्होटी जाण
वी, अने श्रीवीरजगवाननी अंगुलीथी श्रीऋषजदे
जगवाननी अंगुली बशे गुणी मह्होटी जाणवी, अ
श्रीऋषजनी अंगुलथी प्रमाणांगुलीअढी गुणी मह्होट
जाणवी.

हवे एके प्रमाणांगुले एक सहस उत्सेधांगुल थाय
तिहां श्रीऋषजदेवनुं शरीर श्रीऋषजदेवनी आंगुल
थी एकशोने वीश अंगुलनी उंचपणे छे, अने ते
उत्सेधांगुलीयें गणतां पांचशे धनुष्यनी उंचाइ श्रीऋ
षजदेवना शरीरनी थाय, जे कारणे श्रीऋषजदेवन
एक आंगुलीयें चारशें उत्सेधांगुल थाय, अने चारशे
उत्सेधांगुलीयें चार धनुष्यने शोल आंगुल थाय, तेने
एकशो वीश गुणा करीयें तेवारें पांचशे धनुष्य
पूरण थाय, तथा श्रीवर्धमान स्वामीनुं शरीर श्रीवर्द्ध
मानने हाथे साडा त्रण हाथ उंचपणे छे,तें एके हाथ
उत्सेधांगुलनी गणतीना बे हाथ थाय, तेवारें श्रीम
हावीरनुं शरीर सात हाथ उच्चपणे जाणवुं. इति.

॥ अथ अयोध्यावर्णन ॥

विनीता नगरी नव बारही देवतायें नीपजावी. ते
सर्व देवना योजन जाणवा, अने तेनो कोट बारशें
धनुष्य उंचो तथा आठशें योजन धरती मांहे छे, त
था गढ प्रकार एकशो धनुष्यना जाणवा, कोशीशा
पांचशें धनुष्यना जाणवा. तथा ४०० पोल जाणवी.
हजारने आठशें बारी, पांच योजन, तावडी

बहोंतेर लाख कोग, चोराणुं लाख विजेहरा, बारशें धनुष्य ऊंची खाइ, गढमांहे ईशानकूणे नाजीराजा नो समचउरस्त्र सुवर्णमय सातजूमिउं आवास कस्यो, पूर्वदिशें वर्त्ताकारि सुवर्णमय, सर्वजद्र मंदिर एवे नामें सातजूमिउं आवास ते जरतेश्वरने अर्थे आवास कस्यो, तथा अग्निखूणे बाहुबलनो आवास जाणवो, बीजा अठाणुं जाइना अठाणुं आवास कस्या, तेनी वच्च मां एकवीश जूमिमय त्रैलोक्यसुंदर नामें आवास श्रीआदीश्वर जगवाननो कस्यो तेमां एक हजारने आठ महोटा गोंख जाणवा. तेनी शंखावर्त्त पोल करी तथा राणी सुमंगला अने सुनंदा जेटलो राजवर्ग तेटलो मां हे लो गढ रच्यो. उत्तरादिशियें वणिकनो वास कस्यो, दक्षिणदिशें क्षत्रीयोनो वास कस्यो, पश्चिमदिशें कारीगर लोकोनो वास कस्यो, कारू, नारूग सर्व मध्यम तलहट्टीयें वास्या, दक्षिणपोलें अयोध्या पूर्वली विनीतायी वसाव्यो. ए विनीता अने अयोध्या बेहुने आठ पहोरमांहे विश्वकर्मायें नीपजाव्या.

नगरीनी चारे दिशायें चार वन कस्यां. तेमां पूर्वदिशें सिद्धवन, दक्षिणदिशें श्रीवासवन, पश्चिमदिशें पुष्पाकर वन अने उत्तरदिशें नंदनवन जाणवुं. नगरीना वनमांहे चारेदिशें चार पर्वत रच्या. तिहां पूर्वदिशायें अष्टापद पर्वत, दक्षिणदिशें महाशैल पर्वत, पश्चिमदिशें पोडेढो पर्वत अने उत्तरदिशें उदयाचल पर्वत रच्यो, तथा जरतनी बहेन ब्राह्मीने शास्त्रना

नंमार सोंप्या, अने बाहुबलिनी बहेन सुंदरीने नव निधि सोंप्या, तथा चोराशी विज्ञान अने बहोंतेर कला इत्यादिक सोंप्या इत्यादि अधिकार घणो छे ते शास्त्रांतरथी जाणवो.

अथ श्रीसिद्धनगवानना चार निक्षेपा.

१ नामसिद्ध ते नमो सिद्धाणं.

२ थापनासिद्ध ते सिद्धायतन सिद्धनुं घर.

३ द्रव्यसिद्ध ते जे केवलि थशे ते जीव.

४नावसिद्ध ते जे कर्म खपावी मोक्ष पहोता ते जाणवा

अथ श्रीअरिहंत नगवंतना चार निक्षेपा.

१ नाम अरिहंत ते रुषनदेवथी श्रीमहावीर पर्यंत चोवीश तीर्थंकरनां नाम जाणवां.

२ थापना अरिहंत ते काष्ठ, पित्तल, पाषाण, सुवर्ण, रूप्य, रत्न,लेपादिकनी श्रीतीर्थंकर प्रतिमा जाणवी.

३ द्रव्य अरिहंत बे नेदें छे.१ नगवान् मोक्ष पहोता पछी जे तेमनुं शरीर रह्युं ते जाणंग द्रव्य शरीर कहीयें.

४ जे तीर्थंकर थवानो ते शरीर ते नविय द्रव्य शरीर कहीयें.

त्रण सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमे नागेंअधिक.
४ तेजोलेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट बे सागरोपम पल्योपमने असंख्यातमे नागें अधिक
५ पद्मलेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट दश सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमे नागें अधिक.
६ शुक्कलेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट तेत्रीशसागरोपम अंतरमुहूर्त्त अधिक.

त्रण जणना करेला उपकार वालीने उंशीगण न थइ शकीयें, तेनां नाम कहे ठे.

८ एक तो पोताना माता पिता होय तेमने प्रनातें उठीने सहस्र पाकादिक उत्तम प्रकारना तेलें करी मर्दन करीयें, सुगंधित इव्यें करी उवटणुं करीयें, सुगंधी पाणी, उन्हुं पाणी तथा टाढुं पाणी एवा त्रण प्रकारना पाणीयें करी न्हवरावीयें, पठी वस्त्रानरणादिकें करी विनूषा करीयें, मन गमतां मधुरां नोजन करावीयें, जावज्जीव पर्यंत आपणी पीठ उपर खांधे चडावी फरावीयें तेमनी आज्ञामां खरा अंतःकरण पूर्वक चालीयें, अने बीजा पण जे जे सेवा करवाना उत्तम उपाय ठे ते सर्व उपायें करी नाव नक्ति सहित सेवा चाकरी करीयें, तो पण तेमनां उंशीगण थइ शकीयें नही; परतु जो पोताना माता पिताने केवलिप्रणीत धर्म बूझवीने धर्म पमाडी धर्मने विषे स्थापीयें, तो उंशीगण थइयें.

नंमार सोंप्या, अने बाहुबलिनी बहेन सुंदरीने नव निधि सोंप्या, तथा चोराशी विज्ञान अने बहोंतेर कला इत्यादिक सोंप्या इत्यादि अधिकार घणो छे ते शास्त्रांतरथी जाणवो.

अथ श्रीसिद्धनगवानना चार निक्षेपा.

१ नामसिद्ध ते नमो सिद्धाणं.

२ थापनासिद्ध ते सिद्धायतन सिद्धनुं घर.

३ इव्यसिद्ध ते जे केवलि थशे ते जीव.

४नावसिद्ध ते जे कर्म खपावी मोक्ष पहोता ते जाणवा

अथ श्रीअरिहंत नगवंतना चार निक्षेपा.

१ नाम अरिहंत ते रुषनदेवथी श्रीमहावीर पर्यंत चोवीश तीर्थंकरनां नाम जाणवां.

२ थापना अरिहंत ते काष्ठ, पित्तल, पाषाण, सुवर्ण, रूप्य, रत्न,लेपादिकनी श्रीतीर्थंकर प्रतिमा जाणवी.

३ इव्य अरिहंत बे नेदें छे.१ नगवान् मोक्ष पहोता पछी जे तेमनुं शरीर रह्युं ते जाणंग इव्य शरीर कहीयें.

४ जे तीर्थंकर थवानो छे तेनुं शरीर ते नविय इव्य शरीर कहीयें.

॥ छ लेश्यानी कालस्थिति प्रारंनः ॥

१ कृष्णलेश्या काल जघन्य अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्टा तेत्रीश सागरोपम अंतर्मुहूर्त्तं अधिक जाणवी.

२ नीललेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टा दश सागरोपम पल्योपमा संखेय नाग अधिक.

कापोत लेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त उत्कृष्ट

त्रण सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमे नागेंअधिक.

४ तेजोलेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट बे सागरोपम पल्योपमने असंख्यातमे नागें अधिक

५ पद्मलेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट दश सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमे नागें अधिक.

६ शुक्ललेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट तेत्रीशसागरोपम अंतरमुहूर्त्तें अधिक.

त्रण जणना करेला उपकार वालीने उंशीगण न थइ शकीयें, तेनां नाम कहे ग़े.

७ एक तो पोताना माता पिता होय तेमने प्रनातें उठीने सहस्र पाकादिक उत्तम प्रकारना तेलें करी मर्दन करीयें, सुगंधित इव्यें करी उवटणुं करीयें, सुगंधी पाणी, उन्हुं पाणी तथा टाढुं पाणी एवा त्रण प्रकारना पाणीयें करी न्हवरावीयें, पछी वस्त्रानरणादिकें करी विनूषा करीयें, मन गमतां मधुरां नोजन करावीयें, जावज्जीव पर्यंत आपणी पीठ उपर खांधे चडावी फरावीयें तेमनी आज्ञामां खरा अंतःकरण पूर्वक चालीयें, अने बीजा पण जे जे सेवा करवाना उत्तम उपाय ग़े ते सर्व उपायें करी नाव नक्ति सहित सेवा चाकरी करीयें, तो पण तेमनां उंशीगण थइ शकीयें नही; परंतु जो पोताना माता पिताने केवलिप्रणीत धर्म बूझवीने धर्म पमाडी धर्मने विषे स्थापीयें, तो उंशीगण थइयें.

९ कोइ एक महर्द्धिक पुरुष होय ते कोइ दारिद्री पुरुषनी उपर उपकार बुद्धि आणीने तेने महोटो महर्द्धिक करे, पछी कालांतरें कदापि अशुभ कर्मना योगें ते उपकारनो करनार पुरुष दरिद्री अवस्थाने पामे,तेवारें तेणें जेना उपर प्रथम उपकार करी महर्द्धिक कीधो छे,ते पुरुष पोताना स्वामीने दरिद्र आव्युं जाणी जो पोतानी समस्त लक्ष्मीसर्वांग सहित आपी दीये तो पण तेनो उसीगण न थाय, परंतु केवलिप्रणीत धर्म पमाडे तो उसीगण थाय.

१० कोइक पुरुष साधु चारित्रीयादिकनी पासेंथी कोइ भलुं धर्ममय सुवचन सांभली ते मनमांहे धरी शुभध्यानमां रह्यो थको काल करी देवता पणे उपजे; पछी ते देवता पोताना धर्माचार्य प्रत्यें दुकालमांहे पड्यो जाणी तिहांथी अपहरी सुकाल मांहे लावी मूके अथवा कांतार अटवी मांहे पड्यो जाणीने वस्तिने स्थानकें आणी मूके, अथवा रोग आतंक पीडायें पराभव्यो जाणीने रोग आतंकरहित निराबाध पणें करे, तो पण ते देवता पोताना धर्माचार्यनो उसीगण न थाय; परंतु कदापि ते धर्माचार्य अशुभ कर्मना योगें केवलिप्रणीत धर्म थकी भ्रष्ट थाय, तेवारें तेने केवलिप्रणीत धर्म बूजवे,धर्ममां थापे, तो उसीगण थाय.

॥ अंगस्फुरण विचार. सद्याय ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥ श्रीश्रीहर्ष प्रभु गुरु वंदि, जो

डी करीश हुं चोपाइ छंदि ॥ नर नारीनां अंग उपंग,
फुरके तास फलाफल चंग ॥ १ ॥ माथे फुरके पुह
वीराज, पामी अविचल सारे काज ॥ ज्ञालें फुरके
साजन वृद्धि, दिन दिन थाये ऋद्धि समृद्धि ॥ २ ॥
पांपण फुरके सुख संपजे, थानक वेग थाये वि
जे ॥ नाक आंख विच फरके जेह, प्रियसंगम हो
ये अविहड नेह ॥ ३ ॥ वेहू आंख्यो फुरके जाम,
मित्र मले अणचिंत्यो ताम ॥ नयण विचार कहुं हवे
जूउं, वेदागमनो लेई इहो ॥ ४ ॥ जमणी आंख्यो
ऊपर फुरे, तो जस लाजने सुख अनुसरे ॥ हाण अ
ने क्षय नय नीचले, फुरके व्रत आंखे मह्यीयले
॥ ५ ॥ सुख जोग संगम माबियें, नीचली फुरके फ
ल जावीयें ॥ उपरलीयें क्षय दुःख थाय, इणि परें
नयण कह्यां विगताय ॥ ६ ॥ नाक तणी मांफी जब
फुरे, आतम संतोषी सुख करे ॥ टीगसी फुरके जब
नासिका, दीये नव जसनी तवि आलिका ॥ ७ ॥ ल
मणा फुरके लखमी लाठ, पामे दूध दही घी गाश ॥
कान फुरके तो सुवचन सुणे, रूडी वात दिशो दिश सु
णे ॥ ८ ॥ गाल फुरके तो सयला जोग, अथवा जोजन
सासुर जोग ॥ होठ फुरके जब ऊपरे, तब अचिंत
कलियल नर करे ॥ ९ ॥ मुख मिष्टान्न फुरके लहे,
स्त्रीसंगम थिर गह गहे ॥ जोग लहीजें हिडकी
फुरी, होठे फुरके बोली खरी ॥ १० ॥ गलूं फुरके जब
नर नार, वस्त्राजरण लहे तेणि वार ॥ गावड फुरे

य मरणरो, दाखवीयो फल शास्त्रें खरो ॥ ११ ॥
जह फुरके हुवे तेहवे, लाभ जोग जसु फुरके खवे ॥
ख फुरके होवे धन हाण,वात कही छे एहवी पुरा
॥ १२ ॥ पसवाडा फुरके जिन जिसे, वल्लभ वात
णावे तिसे ॥ पूंठ फुरके तो वयरी मरे, काज सवी
र वेगां सरे ॥ १३ ॥ बांह फुरके प्रिय जो मले, कुं
णी फुरके जयपद मले ॥ कर फुरके टाले आपदा,
रके हथेली दीये संपदा ॥ १४ ॥ पोहोचे फुरके
वतारे मित्त, अथवा किपि वधारे प्रीत ॥ आंगुली
ा पण तेह विचार, नख फुरके वयरी जयकार
। १५ ॥ हीये फुरके लाभ प्रमाण, थण फुरकें वि
ोष तसु जाण ॥ पेट फुरके वाधे तसु नंभार, ना
भि फुरके पाय विहार ॥ १६ ॥ आसन फुरके स्त्री
संतान, एहवुं सुणीयें लौकिक ज्ञान ॥ ढीचण फुरके
हरख निधान, अथवा पदवी लहे परधान ॥ १७ ॥
गुह्य फुरकतां रमणीरंग, पामे निश्चें उत्तम संग ॥ कटि
यें फुरकें पहेरे वस्त्र, साथल फुरके वंधन शस्त्र ॥१८॥
गूम्हे फुरके वाहण चडे, जंघा फुरके पंथे खडे ॥ गी
रीयें फुरके संपदा वधे, अथवा केइ अचिंतित सधे ॥
॥ १९ ॥ पग उपर फुरके धन होय, पग तलीये सवि
शेषो जोय ॥ पग आंगुलीयें जिसें फुर फुरे, तव अ
नीष्ट घर आवी नरे ॥ २० ॥ पुरुष अंगुल लीजें
जिमणो, वाम आंगुल फल नारी तणो ॥ तुरत
फल आपे सुनगने, मध्यम फल आपे वीहिवने

॥ २१ ॥ दिवस तणुं फल बोल्युं क्रमें, वली विपरीत कह्यु निशि समे ॥ ब्रह्मचारी ने बाल कुमार, राजा प्रमुख फलापति सार ॥ २२ ॥ संवत नंद नवण र स चंद, दसराद दिन महिमाणंद ॥ कही वात तन फ़रकन तणी, आगम वाणी जिसि गुरु नणी ॥२३॥

॥ इति अंग फुरकन विचार सधाय समाप्त ॥

छींक विचार स्वाध्याय प्रारंभः ॥ देशी चोपाइनी ॥

॥छींक शुकननो कहुं विचार, सुगुरु समीप सुण्यो में सार॥ आगलमां जो छींकज होय,अशुभ तणी जाणे जे कोय ॥ १ ॥ पहेला शुकन हुआं शुभ घणां, छीक हुआं निःफल तेह तणां ॥छींकज हूआ पछी जे जाय, शुकन हुआं ते करो प्रमाण॥ २ ॥ फावी छींक होय अर्द्धफल कहे, जमणी छींक बुरी सहु कहे ॥ पूठे छींक सुखदायक सही, घणी छीक ते निःफल क ही ॥ ३ ॥ हांसे नय उपाधियें करी, हठ घणो मन मांहे धरी ॥ एह छीक ते निःफल जाण, कुतर छींक तो निःस्वर आण ॥ ४ ॥ मंजार छींक ते मरणज करे, स्त्री छींक कष्टकारी सरे ॥ वस्तु वेचतां छीकज होय, आण्युं क्रियाणुं मोघुं होय ॥ ५ ॥ वस्तु लेतां छींकज होय, बमणो लाभ सघलानो जोय ॥ गइ वस्तु जो जोवा जाय, छींक होय तो लाभ न थाय ॥ ६ ॥ नवां वस्त्र वली पहेरतां, छींक होये आगल अण छतां ॥ भोजन होम पूजानुं काम, मंगलिक जे धर्म सुगम ॥ ७ ॥ काम एटला कीधानी अंत, वली

क्रिया करावे खंत ॥ रति स्नान करीने रहे, छींक होय तो पुत्रज लहे ॥ ८ ॥ ऋतुवतीने दीधे दान, पछी होवे पुत्र निदान ॥ वैरी जीती जाग्नुं जोय, छींके वैरी सबलो होय ॥९॥ रोगीकाज वैद्य तेडवा, जातां छींके जो नवनवा ॥ ते रोगीने मृत्यु जाणीयें, काम विना वैद्यें नाणीयें ॥ १० ॥ वैद्य रोगीने घरें आव तां; छीक होय ओषध आपतां ॥ रोगी तणो रोग ते समे, आहार ले ते जमवुं गमे ॥ ११ ॥ व्यापारें लीधे व्यापार, छींक होय तो वृद्धि अपार॥लेखुं शुद्ध दीधुं रायने, छींके फोक थाये तेहने ॥ १२ ॥ पाणी पीतां अथ प्रीसंवाद, छींक दृष्टि दोष अनिवाद ॥ नवे घरें वसवा आवीयें,छींक होये तो उचालीयें ॥१० व्याजें द्रव्य केहने आपतां, वली पृथिवीमां धन दाटतां ॥ कर्षण जोवा जातां वली, वृष्टि होय पुहवी मन रुली ॥ १४ ॥ छींक शुकन नर जाणे जेह, पग पग संपद पामे तेह ॥ छींक विचार जाणे जो कोइ, ऋद्धि वृद्धि कल्याणक होइ॥१५॥ इति छींक विचार ॥

दिशापरत्वें छींकना फल जोवानो यंत्र.

ईशानें	पूर्वदिशें	आग्निखुणें
१ हर्ष.	५ लाभ.	९ लाभ.
२ नाश.	६ धन[illegible]	० मित्रदर्शन.
३ मित्रलाभ	७ मि[illegible]	१[illegible]
४ अग्नि[illegible]		

उत्तर		दक्षिण
१ शत्रुजय.	आठदिशा उने वि	५ लाभ.
२ रिपुसंगम.	पे प्रहर प्रहरनी	६ मृत्युजय.
३ लाभ.	ठिकोनुं शुना शुभ	७ नाश
४ भोजन.	फल.	८ कलि.
वायव्य	**पश्चिम**	**नैरुत**
१ स्त्रीलाभ.	५ दूरगमन.	९ लाभ.
२ लाभ.	६ हर्ष.	१० मित्रदर्शन.
३ मित्रलाभ.	७ कलह.	११ शुभवार्त्ता.
४ दूरगमन.	८ चोरभय.	१२ लाभ.

अथ चक्रवर्त्तीनी रुद्धि समृद्धिनुं प्रमाण.

१ भरतक्षेत्रना ६ खंड.२ नव निधान.३ चौद रत्न
४ शोल हजार यक्ष इत्यपरे पच्चीश हजार.
५ बत्रीश हजार मुकुटबद्ध राजा.
६ चोशठ हजार अंतेउरी राजकन्या परणेली.
७ एकेक अंतेउर साथें बेबे वारांगना तेवारें १२८००० वारांगना होय सर्वमली १९२०००
८ चोराशी लाख हाथी.
९ चोराशी लाख घोडा सामान्य उत्तम भागें.
१० अढार कोडी महोटा अश्व.
११ चोराशी लाख रथ.
१२ छन्नुक्रोड पायक.
१३ बत्रीश हजार बत्रीश बद्धक नाटक.

६१ नवाणुंक्रोड मसूरिया.
६२ नवाणुंक्रोड पश्यायत.
६३ नवाणुंक्रोड पटलतारक.
६४ नवाणुंक्रोड पंम्हव.
६५ नवाणुंक्रोड मीगबोला.
६६ एकक्रोड एंसीहजार रासभ.
६७ बारलाख नेजा.
६८ त्रण क्रोड पायक विनोदी.
६९ बार क्रोड सुखासन.
७० सात क्रोड तंबोली.
७१ पच्चाश क्रोड पखालीया पाणीनापोटीया.
तथा प्रतिहार इत्याद्यनेक ऋद्धि चक्रवर्त्तिनी जाणवी.

अथ पल्लीपतनफलं लिख्यते.

तत्रप्रथमावयवपतनफलम्.

अवयवना०	फलानि.	अवयवना०	फलानि.
मस्तके	राज्यलाभ ऐ०	हृदये	धनहानि सु०
ललाटे	ऐश्वर्यवृद्धि.	उदरे	पुत्रलाभ.
नेत्रे २	जय उपजे.	नाभौ	सुखवृद्धि.
कर्णे २	अलंकार मिले.	पृष्ठे	महालाभ.
नासिका.२	सौभाग्य.	पसवाडे २	जयउपजावे.
मुखे	मिष्टान्नभोजन.	कटौ	वस्त्रलाभ.
कंठे	प्रियसमागम.	गुह्ये	मित्रसमागम.
स्कंधे २	जय पामे.	जांघउपर	द्रव्यनाश.
	धनलाभ.	साथलउ०	वाहन पामे.

करे १ द्रव्यव्यय. गोठणउपरद्रव्यनोसंचय.
स्तने १ सौनाग्य पामे. पगउपर च्रमण करावे.

अथ तिथिफलम्.

तिथिनाम.	फलम्	तिथिनाम.	फलम्
पडवो०	रोग करे.	नवम०	नयकष्ट०
बीज०	शुन्न करे.	दशम०	कष्ट०
त्रीज०	लान्न करे.	अग्यारस०	पुत्रलान्न करे.
चोथ०	रोग करे.	बारस०	धनलान्न थाय.
पांचम०	धनप्राप्ति.	तेरस०	हानि थाय.
ठठ०	कष्ट उपजे.	चौदश०	धनहानि थाय.
सातम०	द्रव्य मले.	पूनम०	बंधुनाश करे.
आठम०	कष्ट करे.	अमावस०	धननाश करे.

अथ वार फलम्

रविवार०	कष्ट करे.	गुरुवार०	जय पामे.
सोमवार०	शुन्न करे.	शुक्रवार०	धन पामे.
मंगलवार	कष्ट करे.	शनिवार०	नय उपजे.
बुधवार०	शुन्न करे.		

अथ नक्षत्रफलम्.

नक्षत्र नाम.	फलम्	नक्षत्र नाम.	फलम्
अश्विनी०	रोगनाश करे.	स्वाती०	पुत्रप्राप्ति थाय.
न्नरणी०	रागादिक थाय	विशाखा०	धनहानिथाय.
कृत्तिका०	धननाश.	अनुराधा०	धनपुत्रादि पामे
रोहिणी०	सत्कार पामे.	ज्येष्ठा०	कष्ट पामे.
मृगशिर०	सुख पामे.०	मूल०	संतान सुखपा

आर्द्रा.	रोग,कलहकरे	पूर्वाषाढा०	सौनाग्यप्राप्ति
पुनर्वसु.	धन पामे.	उत्तराषाढा	ग्रामांतरथीलान्न
पुष्य.	पुत्रसुख पामे.	अन्निजित्.	सुख करे.
अश्लेषा.	कुंमीवात सां०	श्रवण०	हर्ष उपजावे.
मघा.	कल्याणथाय०	धनिष्ठा०	नय उपजावे.
पूर्वा.	कार्यसिद्धि.	शततारका	चोरन्नय.
उत्तरा.	प्रियसमागम.	पूर्वान्नाद्र०	सुखलान्न.
हस्त.	मित्रसमागम.	उत्तरान्ना०	धन पामे.
चित्रा.	रोग उपजे.	रेवती०	रोगनाश थाय.

उपर कह्याप्रमाणें गिरलोइ अंगउपर पडे तो त रत स्नान करवुं. तथा तिल अने अडदनुं दक्षिणास हित दान आपवुं. तेथी अनिष्ट मटे.इतिपल्लिपतन॥

अथ अढार वर्णनां नाम.

१ कंदोइ. २ पटेल. ३ कुंन्नार. ४ सोनार.
५ माली. ६ तबोली. ७ गंधर्व. ८ वैद्य.
९ सतुआरा. १० नारू. ११ घांची. १२ मोची.
१३ गांडा. १४ ठीपा. १५ रंगारा. १६ ग्वाल.
१७ दरजी. १८ कैवर्त्तक निल्ल.

अथ वणिक्जातिनांनाम. प्रथम सामान्यथी गा थायें करी कहीने तथा प्रकारांतरें कवित कहीने प ढी विशेषथी सर्व मली १८९ जातिनां नाम लख्यां छे.

श्रीमाले उवएस नाम नगरे पल्लीपुरे मेडते, वग्घेरे तहडी रुआण नगरे खंडोमके पुष्करे ॥ राज

झिजके स्थिता दशमिता सार्द्धद्वयः पंक्तयः ॥ १ ॥ एवं बार एक पांति ॥ कवित्त ॥ श्रीश्रीमालिउंसवाल, प्रगट पोरवाल जणीजें ॥ गुर्जर नागर मोढसो,रठीया हुंवड सुणीजें ॥ जालोहरा जगजला, वली वायडा वखाणुं ॥ झीसावाल दीपि अधिक,ताहिं उपम आणुं ॥ झिंकुज लाड तिहां दीपता,दान सदा दूती दीयें, सारिज बार नातिसर,कवित्त एम कविजन कहे ॥१ ॥

वणीकनी १०८ जातिनां नाम.

१ श्रीश्रीमालि.	१६ बंबेरवाल.	३१ चित्रावाल.
२ श्रीमालि.	१७ गुणदवाल.	३२ कपोल.
३ उंसवाल.	१८ इलरवाल.	३३ हुंवड.
४ पोरवाड.	१९ ढीलीवाल.	३४ मोढ.
५ गुर्जरपोर०	२० ढोडवाल	३५ झीकु.
६ जांगडा पो०	२१ मेडतवाल.	३६ वायडा.
७ सोरठीयापो.	२२ नोरणवाल.	३७ कंथार.
८ गुर्जर.	२३ नराणावाल.	३८ आंविला.
९ पल्लिवाड.	२४ जाइलवाल.	३९ करिहा.
१० देवणवाल.	२५ महेशरवाल.	४० दसोरा.
११ अगरवाल.	२६ टिंटोडवाल	४१ इंदोरा.
१२ धीरवाल	२७ पुष्करवाल.	४२ नरसिंघोरा.
१३ मंमकवाल.	२८ सिंसवाल.	४३ हरसोरा.
१४ वग्घेरवाल.	२९ खंरुलवाल.	४४ सिंदूरा
१५ जसवाल.	३० झीसावाल.	४५ [illegible]

४६ जीराउला.
४७ वडोघा.
४८ उजेण्या.
४९ बोड.
५० केसूरा.
५१ पइगाणा.
५२ गराज.
५३ उंसाउला.
५४ लाड.
५५ पंचोरा.
५६ लंबेचा.
५७ माघरा.
५८ गंगराडा.
५९ मेम.
६० खोहर.
६१ त्रिहारा.
६२ सिहारा.
६३ चंदेल.
६४ निलोधा.
६५ नागर.

६७ कुंकुम्या.
६८ रोड.
६९ पूरवीया.
७० गोलाराडा.
७१ शंख.
७२ सोणिया.
७३ चित्रोडा.
७४ ननेरा.
७५ नागदहा.
७६ वीजापुरा.
७७ मालोधा.
७८ कानडा.
७९ कनोज्या.
८० लखणावत्या
८१ पदमावत्या.
८२ जोजाढुल्या.
८३ श्रीखंभा.
८४ अष्टवर्गी.
८५ [illegible].
८[illegible].

८८ धूल्याकंथारा.
८९ मरहठा.
९० श्रीगौड.
९१ वघणोरा.
९२ अनोला.
९३ माहुरा.
९४ नीमा.
९५ वराड.
९६ जंव.
९७ धाकड.
९८ नमीयाडा.
९९ नटेउरा.
१०० खटवड.
१०१ जहन्न.
१०२ चउसखा.
१०३ डुसखा.
१०४ आगसखा.
१०५ खडाइता.
१०६ लिंगाइता.
[illegible]

॥ अथ सूतक विचार प्रारंभः ॥

॥ प्रथम कोइने घरे जन्म थाय ते विषे ॥

१ पुत्रजन्मे दिन दशनुं सूतक तथा पुत्रीजन्मे दिन अगीयार अने रात्रें जन्मे तो दिन बारनुं सूतक.

२ बार दिवस घरना माणस देव पूजा करे नही.

३ न्यारा जमता होय, ते बीजाना घरना पाणीथी जिन पूजा करे अने सूवावड करनारी तथा करावनारीने तो नवकार गणवो पण सूजे नही.

४ तथा प्रसववाली स्त्री, मास एक सुधि जिनप्रतिमाना दर्शन करे नही. तथा दिन (४०) सुधि जिन प्रतिमानी पूजा न करे, अने साधुने पण वोहोरावे नही, एम विचारसारप्रकरण मध्यें कह्युं छे.

५ घरना गोत्रीने दिन पांचनुं सूतक जाणवुं.

६ व्यवहार भाष्यनी मलयगिरिकृत टीका मध्यें जन्मनुं सूतक दिन दशनुं कह्युं छे.

७ गाय, घोडी, उंटणी, भेंस, घरमां प्रसवे, तो दिन बेनुं सूतक अने वनमां प्रसवे,तो दिन एकनुं सूतक.

८ भेंष प्रसवे, तो दिन पंदर पछी तेनुं दूध कल्पे.

९ गाय प्रसवे, तो दिन दश पछी तेनुं दूध कल्पे.

१० बाली बकरी प्रसवे तो,दिन आठ पछी तेनुं दूध कल्पे.

११ उंटणी प्रसवे, तो दिन दश पछी तेनुं दूध कल्पे.

१२ दास दासी के जेनो आपणेज आश्रयें जन्म थाय, अने आपणीज नजर आगल रह्यां होय, तो तेनुं चोवीश पहोर सुधी सूतक जाणवुं.

॥ ऋतुवंती स्त्री संबंधि सूतक निर्णय ॥

१ दिन त्रण सुधी नांमादिकने छुवे नही. दिन चार लगें पडिक्कमणादिक करे नही पण तपस्या करे, ते लेखे लागे. दिन पांच पछी जिनपूजा करें.रोगादिक कारणें त्रण दिवस वीत्या पछी पण.जो रुधिर दीठामां आवे,तो तेनो दोष नथी. विवेकें करी पवित्र थई जिन प्रतिमादिक जिनदर्शन अग्रपूजादिक करे,तथा साधुने पडिलाभे,पण जिनप्रतिमानी अंग पूजा न करे. एम चर्चरीग्रंथमां कह्युं छे.

॥ मृत्यु संबंधी सूतकनो विचार ॥

१ घरनुं कोइ मरण पामेलुं होय तो सूतक दिन बारनुं. तेने घरे साधु आहार लिये नही,तेना घरना अग्नि तथा जलथी जिन पूजा थाय नही,एम निशीथ चूर्णीमां कह्युं छे. निशीथ सूत्रना शोलमा उद्देशामां जन्म तथा मरणनुं घर डुर्गंछनिक कह्युं छे.

२ मृत्युवाला पासें सुए तो दिन त्रण पूजा न करे.

३ कांधिया, देवदर्शन पडिक्कमणादिक त्रण दिन न करे. परंतु जो नवकारनुं ध्यान मनमां करे,तो तेनो कांइ पण बाध नथी.

४ मृतने अडक्या न होय तो स्नान कीधें शुद्ध थाय.

५ अन्य पुरुष जो मृतने अडक्या होय तो ते शोल पहोर पर्यंत पडिक्कमणादि न करे.

६ जेने घरे जन्म तथा मरणनुं सूतक थाय, तेनें घरे जमनारा दिन बार सुधी जिनपूजा करे नही.

७ वेषना पालटनारा आठ पोहोर सूतक पाले.

८ जन्मे ते दिवसें मृत्यु थाय अथवा देशांतरें मरण पामे अथवा जति मरे तो दिन एकनुं सूतक.

९ आठ वर्षथी नानुं बालक मरण पामे, तो दिन आठनुं सूतक, विचारसार प्रकरणमां कह्युं छे.

१० गाय प्रमुखनुं मृत्यु थाय तो कलेवर घरथी बाहेर लइ गया पछी दिन एक लगें सूतक अने अन्य तिर्यंचनुं कलेवर पड्युं होय, तेने तो घरथी बाहेर लइ जाय, तिहां सुधी सूतक, पछी नहीं.

११ दास दासी जे आपणी निश्रायें घरमां रह्यां होय तेनुं मृत्यु थाय, तो त्रण दिवस सूतक लागे.

१२ जेटला महिनानो गर्भ पडे, तेटला दिवस सूतक.

१३ परदेश गयेलानुं मरण थयुं सांभले तो एक तथा बे दिवसनुं सूतक लागे, एम कल्पभाष्यमां कह्युं छे.

१ गोमूत्रमां चोवीश पहोर पछी, भेंषना मूत्रमां शोल पहोर पछी, गाभर, गधेडी तथा घोडीना मूत्रमां आठ पहोर पछी अने नर नारीना मूत्रमां चार पहोर पछी संमूर्छिम जीव उपजे छे.

॥ अथ पीस्तालीश आगमनां नाम तथा तेनी मूल श्लोक संख्या अने ते प्रत्येकनी उपर जुदा जुदा आचार्योनी करेली वृहद्वृत्तियो तथा लघुवृत्तियो, चूर्णियो, निर्युक्तियो तथा भाष्यो वगेरेना श्लोकोनी संख्यानुं प्रमाण ए सर्व नीचें लखीयें छैयें.

॥ ऋतुवंती स्त्री संबंधि सूतक निर्णय ॥

१ दिन त्रण सुधी नांमादिकने जुवे नही. दिन चार लगें पडिक्कमणादिक करे नही पण तपस्या करे, ते लेखे लागे. दिन पांच पछी जिनपूजा करे.रोगादिक कारणें त्रण दिवस वीत्या पछी पण जो रुधिर दीगमां आवे,तो तेनो दोप नथी. विवेकें करी पवित्र थई जिन प्रतिमादिक जिनदर्शन अग्रपूजादिक करे,तथा साधुने पडिलाभे,पण जिनप्रतिमानी अंग पूजा न करे. एम चर्चरीग्रंथमां कह्युं छे.

॥ मृत्यु संबंधी सूतकनो विचार ॥

१ घरनुं कोइ मरण पामेलुं होय तो सूतक दिन बारनुं. तेने घरे साधु आहार लिये नही,तेना घरना अग्नि तथा जलथी जिन पूजा थाय नही,एम निशीथ चूर्णीमां कह्युं छे. निशीथ सूत्रना शोलमा उद्देशामां जन्म तथा मरणनुं घर डुर्गछनिक कह्युं छे.

२ मृत्युवाला पासें सुए तो दिन त्रण पूजा न करे.

३ कांधिया, देवदर्शन पडिक्कमणादिक त्रण दिन न करे. परंतु जो नवकारनुं ध्यान मनमां करे,तो तेनो कांइ पण बाध नथी.

४ मृतनें अडक्या न होय तो स्नान कीधें शुद्ध थाय.

५ अन्य पुरुप जो मृतनें अडक्या होय तो ते शोल पहोर पर्यंत पडिक्कमणादि न करे.

६ जेने घरे जन्म तथा मरणनुं सूतक थाय, तेनें घरे जमनारा दिन बार सुधी जिनपूजा करे नही.

७ वेषना पालटनारा आठ पोहोर सूतक पाले.
८ जन्मे ते दिवसें मृत्यु थाय अथवा देशांतरें मरण पामे अथवा जति मरे तो दिन एकनुं सूतक.
९ आठ वर्षथी नानुं बालक मरण पामे, तो दिन आठनुं सूतक, विचारसार प्रकरणमां कह्युं छे.
१० गाय प्रमुखनुं मृत्यु थाय तो कलेवर घरथी बाहेर लहि गया पछी दिन एक लगें सूतक अने अन्य तिर्यंचनुं कलेवर पडयुं होय, तेने तो घरथी बाहेर लइ जाय, तिहां सुधी सूतक, पछी नहीं.
११ दास दासी जे आपणी निश्रायें घरमां रह्यां होय तेनुं मृत्यु थाय, तो त्रण दिवस सूतक लागे.
१२ जेटला महिनानो गर्भ पडे, तेटला दिवस सूतक.
१३ परदेश गयेलानुं मरण थयुं सांभले तो एक तथा बे दिवसनुं सूतक लागे, एम कल्पभाष्यमां कह्युं छे.
१ गोमूत्रमां चोवीश पहोर पछी, भेंषना मूत्रमां शोल पहोर पछी, गाम्हर, गधेडी तथा घोडीना मूत्रमां आठ पहोर पछी अने नर नारीना मूत्रमां चार पहोर पछी संमूर्छिम जीव उपजे छे.

॥ अथ पीस्तालीश आगमनां नाम तथा तेनी मूल श्लोक संख्या अने ते प्रत्येकनी उपर जुदा जुदा आचार्योनी करेली बृहद्वृत्तियो तथा लघुवृत्तियो, चूर्णियो. निर्युक्तियो तथा भाष्यो वगेरेना श्लोकोनी संख्यानुं प्रमाण ए सर्व नीचें लखीयें छैयें.

प्रथम श्रीसुधर्मा स्वामिनां करेलां अगीआर अंग नां नाम लखीयें ठेयें.

१ श्रीआचारांग सूत्र अध्ययन २५, मूल श्लोक २५००, शीलंगाचार्य कृत टीका १२०००, चूर्णि ८३००,तथा श्रीनद्रबाहुस्वामी कृत निर्युक्ति नी गाथा३६८, श्लोक ४५०, नाष्य तथा लघुवृत्ति नथी. सरवाले श्लोक २३२५० ठे.

२ श्रीसूयगडांग सूत्र अध्ययन २३, पारवंमत निर्दलन रूप. मूल श्लोक २१००, शीलंगाचार्य कृत टीका १२८५०तथा चूर्णी १०००० श्लोक ठे, अने श्रीनद्रबाहु स्वामिकृत निर्युक्तिनी गाथा २०८, श्लोक २५० ठे, नाष्य नथी, सरवाले श्लोक २५२०० तथा १५८३ नी शालमां आधुनिक श्रीहेमविमलसूरियें ७००० श्लोकने आशरे दीपिका करेली ठे. पण ते जूनी टीपोमां पूर्वाचार्योंनी गणतीमां नथी.

३ श्रीठाणांग सूत्र.एनां दश अध्ययन ठे.एना मूल श्लोक ३७७० ठे,तेनी टीका संवत् ११२० मां श्रीअनयदेवसूरिकृत १५२५० श्लोकनी ठे.सरवाले १७०२० श्लोक ठे.

४ श्रीसमवायांग सूत्र. एना मूल श्लोक १६६७ ठे, तेनी टीका श्रीअनयदेवसूरिकृत ३७७६ श्लोकनी ठे. एनी चूर्णि पूर्वाचार्य कृत ४०० श्लोक ठे. सरवाले ५८४३ नी संख्या थई.

५ श्रीविवाह्पन्नत्ति नगवतिसूत्र शतक ४१ ठे, ए मां छत्रीश सहस्र प्रश्न गौतमना ठे. मूल श्लोक १५७५२, टीका संवत् ११२८ मां श्रीअनयदेवसूरिनी करेली डोणाचार्यें शोधेली १८६१६ श्लोकनी ठे. एनी चूर्णि ४००० श्लोक पूर्वाचार्य कृत ठे. सरवाले ३८३६८ नी संख्या. तथा एनी लघुवृत्ति संवत् १५६८ ना वर्षमां दानशेखर उपाध्यायनी करेली १२००० श्लोक संख्या ठे.

६ श्रीज्ञाताधर्म कथांग सूत्र अध्ययन १९, कथा उंगणीश सांप्रत देखाय ठे. प्रथम साडी त्रण कोटि कथाउं प्रसिद्ध ठे,एनी श्लोक संख्या ५५००, तेनी टीका श्रीअनयदेवसूरि कृत४२५२श्लोकठे.

७ श्रीउपासक दशांग सूत्र दश अध्ययन.मूल श्लोक ८१२ एनी टीका श्रीअनयदेवसूरि कृत ९०० श्लोक ठे, सरवाले १७१२.

८ अंतगड दशांग सूत्र ९०अध्ययन ठे. मूल श्लोक ९००, तथा श्रीअनयदेवसूरिकृत टीका ३०० श्लोक ठे. सर्वसंख्या १२००

९ अणुत्तरोववाई सूत्र तेत्रीश अध्ययन मूल,श्लोक. २९२. तथा श्रीअनयदेवसूरिकृत टीका १००, श्लोक ठे, सर्वसंख्या ३९२.

१० श्रीप्रश्नव्याकरण सूत्र दशअध्ययन रूप, मूल श्लोक१२५०,श्रीअनयदेवसूरिकृत टीका४६०० सर्व संख्या ५८५०.

११ श्रीविपाकसूत्र. वीश अध्ययन छे. मूल श्लोक १२१६,श्रीअजयदेवसूरि कृत टीका ए०० श्लोक छे. सर्वसंख्या २११६.

सर्व मली अगीआर अंगनी मूल संख्या ३५६५ए तथा टीका ७३५४४ अने चूर्णि २२७०० तथा निर्युक्ति ७०० मली १३२६०३. तथा सूयगडांगनी दीपिकानी संख्या जुदी छे.एमां आचारांग तथा सूयगडांगनी टीका श्रीशीलंगार्य कृत छे. बाकी नव अंगनी टीका अजयदेवसूरिकृत छे,माटे श्री अजयदेवसूरि, नवांगीवृत्तिकारने नामें उलखाय छे.

हवे बार उपांगनी संख्या लखे छे.

१ श्रीउववाइ उपांग आचारांग प्रतिबद्ध.एनी मूल संख्या १२०० तथा श्रीअजयदेवसूरि कृत टीका संख्या ३१२५ सर्व संख्या ४३२५.

२ श्रीरायप्पसेणी उपांग सूयगडांग प्रतिबद्ध, एनी मूल संख्या २०७८ तथा श्री मलयगिरि कृत टीका ३७००,सर्व संख्या ५७७८.

३ श्रीजीवाभिगम उपांग ठाणंग प्रतिबद्ध,एनी मूल संख्या ४७०० तथा श्री मलयगिरिकृत टीका १४००० तथा लघुवृत्ति ११०० तथाचूर्णी श्लोक १५०० छे. सर्व संख्या २१३००.

४ श्रीपन्नवणा उपांग, श्रीश्यामाचार्यकृत समवायांग प्रतिबद्ध,एनी मूल संख्या ७७८७ तथा श्रीमलयगिरि महाराजनी करेली टीका१६०००

तथा हरिनद्रसूरि कृत लघुवृत्ति२७२० श्लोक छे, सर्व संख्या२७५१५.

५ श्रीजंबूद्वीप पन्नत्ति उपांग जगवति प्रतिबद्ध एनी मूल संख्या४१४६ मलयगिरिकृत टीका१२००० तथा चूर्णी १०६० छे. सर्व संख्या १७००६.

६ चंद्रपन्नत्तिसूत्रज्ञाताप्रतिबद्धमूल संख्या २२०० तथा मलयगिरिकृत टीका ए४११ तथा लघु वृत्ति १००० श्लोक छे. ए सर्व संख्या १२६११.

७ सूरपन्नत्ति उपांग पूर्वोक्त चंद्रपन्नत्ति तथा ए वेहु मली ज्ञाता प्रतिबद्ध छे एनी मूल संख्या २२०० तथा श्रीमलयगिरि कृत टीका ए००० अने चूर्णी १००० सर्व संख्या १२२००.

१२ निरयावलिका सूत्र अथवा नामांतरे एक कप्पि या अध्ययन १०, वीजुं कप्पवमिसिया अध्यय न १२, त्रीजुं पुप्फिया अध्ययन १०, चोथुं पुप्फ चूलिया अध्ययन १०, अने पांचमुं वन्हिदिसा ए पांच उपांगनुं नाम निरयावलिका कहेवाय छे. ए कप्पिया 'प्रमुख पांच उपांगनी अध्ययन संख्या ५२ छे, ते अनुक्रमें सातमा उपासक दशां गादिक पांच अंग प्रतिबद्ध छे. ए पांचेनी मली श्लो कसंख्या ११०ए छे ए पांचेनी वृत्ति ७०० श्लोक प्रमाण श्रीचंद्रसूरि कृत छे. सर्व संख्या १७०ए एम बार उपांगनी सर्व मली मूल संख्या २५४२०, तथा टीकानी संख्या ६७ए३६ अने लघुं

संख्या ६८२८ तथा चूर्णीनी संख्या ३३६०, ए कंदर सरवाले संख्या १०३५४४.

हवे दश पयन्नानां नाम कहे छे.

१ चउसरणपइन्नो गाथा. ६३
२ आउरपच्चख्काण पइन्नो गाथा. ८४
३ भत्तपइन्नो गाथा. १७२
४ संथारग पइन्नो गाथा. १२२
५ तंडुलवेयाली पइन्नो गाथा. ४००
६ चंदाविज्झग पइन्नो गाथा. ३१०
७ देविंदथ्थउ पइन्नो गाथा. २००
८ गणिविद्या पइन्नो गाथा. १००
ए महापच्चख्काण पइन्नो गाथा. १३४
१० मरणसमाधि पइन्नो गाथा. ७२०

ए दश पइन्नानी गाथा संख्या २३०५ थइ. प्रत्येकनां अध्ययन दश दश छे. ए दश पइन्ना पीस्तालीश आगमनी गणतिमां छे. उपरांत केटलीक लखेली प्रतोमां महापच्चख्काणने स्थानकें वीरस्तव पइन्नो गाथा ४३ नो लखेलो छे. हवे उपर कहेला दशथी उपरांत पइन्ना पण हालमां छे, तेनुं इहां प्रयोजन नथी, तथापि वांचनारने वाकेब थवा माटे नाम लखुं छुं.

१ वीरस्तव पइन्नो गाथा ४३
२ ऋषिभाषितसूत्र ७५०
३ सिद्धिप्राभृतसूत्र ५०टीका छे.

५ दीवसागरपन्नत्ति संग्रहणी संख्या २५०, एनी टीका २५०० छे.

६ अंगविद्यापइन्नो संख्या ८८००एकटीपमांलख्युंछे.

७ ज्योतिषकरंडक पइन्नो संख्या ५००, एनी टीका श्रीमलयगिरि महाराजनी करेली ५००० संख्या नी छे. तेमज गछाचार प्रकरण प्रमुख पण छे. अंग चूलिकानी वृत्ति ८०० श्लोक छे, परंतु ए चूलिका सूत्रमां छे किंवा बीजा कोइमां छे, ते मज उपर लखेला ऋषिभाषित सूत्र तथा सिद्धि प्राभृत सूत्र अने दीवसागर पन्नत्ति ए पण जे सूत्रोना अंगमां होय तेमां गणवां.

हवे ठ छेद ग्रंथनां नाम कहे छे.

१ श्रीनिशीथछेद सूत्र, अध्ययन २०, मूल जुनी टीपमां ८१५ श्लोक छे. एनुं लघुभाष्य७४०० श्लोक छे, तथा चूर्णी २८००० श्लोक छे. महोटुं भाष्य १२००० श्लोक छे. ते टीकाने नामें पण कहेवाय छे. सर्व संख्या ४८२१५ छे.

२ महा निशीथछेद सूत्र, अध्ययन १३,मूल ४५०० श्लोक छे, तथा मतांतरे एनी त्रण वांचना छे, एक लघुवाचना ४२००, बीजी मध्य वा चना ४५००, अने वृद्धवाचना ११८०० छे.

३ बृहत्कल्पछेदसूत्र. अध्ययन २४, एनी जुनी टी पमां संख्या ४७३ नी छे. एनी वृत्ति संवत् १३३२ ना वर्षमां वृद्धशालीय श्रीक्षेमकीर्त्तिसूरि

कृत ४२००० संख्यानी छे. तथा एनुं भाष्य जुनी टीपमां श्लोक १२००० संख्यानुं छे. तथा लघुभाष्य ८००० श्लोकनुं छे, अने एनी चूर्णि १४३२५ श्लोकनी छे. सर्व संख्या ७६७९८थइ.

३ व्यवहार दशाकल्पछेदसूत्र. एनां दश अध्ययन छे. एनी मूल संख्या जुनी टीपमां ६०० नी छे. एनी टीका श्रीमलयगिरि सूरिकृत श्लोक ३३६२५ नी छे. तथा चूर्णि १०३६१ श्लोकनी छे. एनुं भाष्य जुनी टीपमां६०००श्लोकनुं लख्युं छे. सरवाळे संख्या ५०५८६ थइ.

४ पंचकल्पछेद सूत्र. शोल अध्ययन छे. एनी मूल संख्या ११३३ नी छे. एनी चूर्णी २१३० श्लोकनी छे. बीजी टीकामां एनी संख्या ३३०० नी पण लखी छे. तथा एनुं भाष्य ३१२५ श्लोकनुं छे. सर्व संख्या ६३८८ तथा एमां गाथासंग्रह. २०० छे.

५ दशाश्रुतस्कंधछेद सूत्र. जेनुं आठमुं अध्ययन कल्पसूत्र छे. तेनी मूल संख्या १८३५ छे, तथा चूर्णी २२४५ श्लोकनी छे, अने निर्युक्ति संख्या १६८ श्लोक छे. सर्व संख्या ४२४८ थइ.

६ जितकल्पछेदसूत्र. एनी मूल संख्या १०८ छे, एनी टीका १२००० श्लोक छे. तथा सेनकृत चूर्णि १००० श्लोक छे, अने भाष्य. ३१२४ श्लोक छे. सर्व संख्या १६२३२ श्लोक छे तथा

एनी चूर्णिनुं व्याख्यान ११२० छे. तथा एनी लघुवृत्ति श्रीसाधुरत्नकृत श्लोक ५७०० छे. तथा तिलकाचार्य कृत वृत्ति १५०० श्लोक छे.
६ साधुजित कल्प विस्तारें ३७५ श्लोक छे. एनी श्रीधर्मघोषसूरि कृत वृत्ति २६५० श्लोक छे.
तथा दशाश्रुतस्कंधनुं आठमुं अध्ययन कल्पसूत्र १२१६ श्लोक प्रमाण श्रीभद्रबाहुस्वामिकृत छे. तेनी पृथ्वीचंद्रसूरि कृत टिप्पणी ६७० श्लोक छे, अने निर्युक्तिनी १६८ गाथा भद्रबाहुस्वामिकृत छे. तथा एनी चूर्णि अने टीकाउ पण घणी छे. परंतु ते घणुं करी विक्रम संवत् १२०० ना पछीनी छे माटे टीपमां लखी नथी.

हवे चार मूल सूत्रनां नाम लखियें छैयें.

१ आवश्यक सूत्र. मूल १२५ गाथा छे. एनी टीका श्रीहरिभद्रसूरि कृत २२००० श्लोक छे. तथा एनी निर्युक्ति श्रीभद्रबाहुस्वामिकृत ३१०० श्लोक छे. तथा चूर्णि १८००० श्लोक छे. तथा वीजी आवश्यकवृत्ति (चतुर्विंशति स्तव) २२००० छे. तथा एनी लघुवृत्ति तिलकाचार्य कृत १२३२१ श्लोक छे, अने अंचलगच्छाचार्यकृत दीपिका १२००० श्लोक छे. तथा एनुं भाष्य ४००० श्लोक छे.तथा आवश्यक टीप्पणिका मलधारी श्रीहेमचंद्रसूरि कृत श्लोक ४६०० एकठा करतां

सरवाले श्लोक संख्या ए८१४६ थाय छे. तथा निर्युक्तिनी टीका २२५००, हरिभद्रसूरिकृत छे.

१ विशेषावश्यकसूत्र. ए आवश्यक मूल सूत्रनुं विशेष परिकर रूप छे. मूल ग्रंथ. ५००० श्लोक श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमण कृत छे, एनी लघुवृत्ति. १४०००, श्लोकनी ग्रंथना अंतमां कोटाचार्य कृत लखी छे, अने टीपमां द्रोणाचार्यनुं नाम छे. तथा एनी वृद्दवृत्ति १८००० श्लोक प्रमाण मल्लधारी श्रीहेमचंद्रसूरि कृत छे. तेनी टीका तर्कानुविद्या जैनस्थापनाचार्य कृत छे.

१ पाखी सूत्र मूल ३६० संख्या छे,एनी टीका संवत् ११८० मांश्रीयशोदेव सूरियें करेली तेनी श्लोक संख्या २७०० छे,तथा चूर्णि ४०० श्लोक छे.

१ यतिप्रतिक्रमण सूत्र वृत्ति श्लोक संख्या६००छे.

२ दशवैकालिक सूत्र. श्रीसिद्यंभवसूरिकृत मूल श्लोकनी ७०० संख्या छे. एनी वृत्ति तिलकाचार्य कृत ७००० श्लोक प्रमाण छे. तथा वीजी वृत्ति श्रीहरिभद्रसूरि कृत ६८१० श्लोक छे. तथा श्रीमलयगिरि महाराज कृत वृत्ति. ७७०० श्लोक छे. तथा चूर्णि ७५०० श्लोक छे. लघुवृत्ति ३७०० श्लोक छे, तथा निर्युक्तिनी गाथा ४५० छे. तेमज आधुनिक श्रीसोमसुंदर सूरिकृत लघु टीका ४२००, तथा श्रीसमयसुंदर उपाध्याय कृत लघुटीका २६०० छे.

२ श्रीपिंमनिर्युक्तिसूत्र श्रीनद्रबाहुस्वामिकृत एनी मूल संख्या ७०० नी छे. एनी टीका श्रीमलय गिरिकृत ७००० श्लोक छे. प्रत्यंतरें ६६०० नी छे. तथा संवत् ११६० मां श्रीवीरगणि कृत टीका ७५०० श्लोकनी छे,तथा मल्हासूरिकृत लघु वृत्ति ४००० श्लोकनी छे. सर्व संख्या १ए२००

३ उंघनिर्युक्ति श्रीनद्रबाहुस्वामिकृत मूल गाथा ११७० श्लोक १४५० छे. टीका डोणाचार्यकृत ७००० श्लोकनी छे. एनुं नाष्य ३००० श्लोक छे, तथा चूर्णि ४०००श्लोक छे. सरवाले संख्या १७४५०

४ श्रीउत्तराध्ययन सूत्र. एना बत्रीश अध्ययन वैराग्यमय छे, एनी मूल संख्या २००० छे, तथा बृहद्वृत्ति वादिवेताल श्रीशांतिसूरिकृत १७००० छे. प्रत्यंतरें १७६४५ पण छे, तथा लघुवृत्ति संवत् ११२ए मां श्रीनेमिचंद्रसूरिकृत १३६०० श्लोकनी छे. एनी निर्युक्ति श्रीनद्रबाहु स्वामिकृत गाथा६०७ श्लोक७०० छे तथा एनी चूर्णि ६०००श्लोकनी छे.सरवाले संख्या ४०३०० छे.

हवे बे चूलिका सूत्रनां नाम कहे छे.

५ नंदीसूत्र श्री देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण मूलश्लोक ७००छे, एनी वृत्ति ७७३५ श्लोक प्रमाण श्रीमलयगिरिकृत छे, एनी चूर्णि संवत् ७३३ मां करेली २००० श्लोकनी छे एनी लघुटीका श्रीहरि

न्द्रसूरिकृत श्लोक २३१२ छे, सरवाले संख्या १२७४७ छे. तथा एनी टिप्पणी श्रीचंद्रसूरिकृत ३००० श्लोकनी छे.

६ श्री अनुयोगद्वार सूत्र.गाथा१६०० श्लोक १८०० छे तथा मलधारी श्रीहेमचंद्रसूरिकृत वृत्ति संख्या ६००० छे, तथा श्रीजिनदास महत्तरकृत चूर्णि ३००० श्लोकनी छे,तथा श्रीहरिभद्रसूरिकृत लघुवृत्ति संख्या ३५०० छे. सर्व संख्या १४३०० ॥ ए प्रमाणें अगीयार अंग, बार उपांग, दशपयन्ना, छ छेदसूत्र, चार मूलसूत्र अने बे चूलिकासूत्र, मली पीस्तालीशनी संख्या हाल गणतीमां छे. तेनी मूल श्लोक संख्या ८०३४० तथा मुख्य महोटी एकेक टीकाउनी सरवाले संख्या ३३४३४० छे, अने लघु टीकाउनी संख्या ४७२६१ छे, तेमज चूर्णीनी संख्या ए५१ए६ तथा निर्युक्ति ५११८ अने भाष्य ५८६४ए छे. ए सर्व एकवा करीयें तेवारें सर्व संख्या ६२०ए०४ थाय. तेनी साथें श्रीमहानिशीथ सूत्रनी लघुवाचना ४२००,मध्यवांचना४५००,अनेवृद्धवाचना११८०० ए त्रण वांचनाना श्लोक भेलीयें तो ६४१४०४ थाय. ए मतांतर जाणवुं. आ कहेली संख्या मात्र पूर्वाचार्येयें प्रमाण कीधेलीज समजवी. तेथी विशेषावश्यकनी लघु टीका १४००० छे. ते एमां आवी नथी, तेमज आवश्यकनी टिप्पणी ४००० श्लोक छे, ते आमां गणी नथी, अने वली घणा सिद्धांतोनी

बीजी नवी टीकाउ तो अनेक हे, परंतु ते आधुनिक छ, माटे पूर्वाचार्योंयें ते प्रमाण करेली समजवी नही. आमां मात्र पुरातन टीकाउज प्रमाण करेली हे. ते मज एने लगता कल्पसूत्रादिकनी संख्या पण एमां गणी नथी, माटे तेनी संख्या सर्व जूदी जाणवी.

आमां आवश्यक, आचारांग, सूयगडांग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन तथा कल्पसूत्र, ए हनी निर्युक्ति श्रीजद्रबाहुस्वामिकृत हे.

तथा निशीथजाष्य, बृहत्कल्पनुं लघुजाष्य तथा बृहद्जाष्य, व्यवहारजाष्य, जितकल्पजाष्य, पंचकल्पजाष्य अने उघनिर्युक्ति जाष्य, ए सात जाष्य पूर्वाचार्यकृत हे.

तथा आचारांग, सूयगडांग, जगवती, जंबुद्वीपपन्नत्ति, आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, पाखीसूत्र, अनुयोगद्वार, नंदी, निशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कंध, पंचकल्प, जितकल्प, ए शोलनी चूर्णि पूर्वाचार्यकृत हे.

अने टीकाउमां ब सूत्रनी टीका श्रीहरिजद्रसूरिकृत हे, नव अंग तथा उववाइ उपांगनी टीका श्री अजयदेव सूरिकृत हे, आचारांग अने सूयगडांग ए बे अंगनी टीका शीलंगाचार्य कृत हे, पांचनी टीका मलयगिरिजीमहाराजकृत हे, तथा बीजी टीकाउ पृथक् पृथक् आचार्यकृत हे. सरवालानी संख्यामां सर्व सूत्रनी पहेली महोटी, वृत्ति तथा लघुवृत्ति जे पूर्वाचार्यकृत हे, तेज लीधेली हे. बीजी लीधी नथी.

संक्षेपथी आगमसंख्या बालजीवने समज माटे छे.

अथ नारकीनी वेदनानुं स्वरूप कहे छे.

॥ तिहां पहेली रत्नप्रभा, बीजी शर्करप्रभा, त्रीजी वालुकाप्रभा, चोथी पंकप्रभा, पांचमी धूमप्रभा, छ ठी तमःप्रभा. सातमी तमस्तमःप्रभा, एम सात प्र कारनी भूमियो नारकी जीवोने रहेवा माटे छे. एने विषे जिहां सुधी ते नारकी जीवो जीवे, तिहां सुधी सदा सर्वदा निरंतर पणे अत्यंत दुःख वेदे छे, परंतु आंख वींचीने उघाडीयें तेटली वार पण वेदना भो गव्या विना रहेता नथी. कारण के, तिहां एकांत दुः खज बांध्युं छे, ते वेदे छे. बीजो उद्यम कांइ नथी.

हवे ते नारकियोने एक क्षेत्रवे[illegible] ीजी अन्यो ऽन्यवेदना, त्रीजी परमाधामिक[illegible] एम त्रण

मिने विषे नरकावासामां जाजा शीतल डे अने उष्ण थोडा डे; तथा बही अने सातमी ए वेहुनी एकांत शीतल जूमिकाउ डे. अने तेमां रहेला नारकीयो उष्णयोनिया होय डे. परंतु एक एक जूमिनी नीची नीची जूमियोमां अनुक्रमें तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतम वेदनाउ डे, तेनुं स्वरूप कहे डे.

ग्रीष्मऋतुने अंतें मध्यान्हसमयें सूर्य प्राप्त थये उते अने आकाश मेघ रहित उते अत्यंत उष्ट पित्त प्रकोपें करी व्याकुल अने उत्ररहित चारे दिशियें प्र दीप्त थयेली जे अग्निज्वाला तेणेंकरी व्याप्त एवा कोइ पुरुषने जेवी वेदना थाय, तेथी अनंतगुणी उष्णवेद ना नरकावासाने विषे रहेला नारकीजीवोने जाणवी.

शीतयोनिया नारकीने उष्णवेदनारूप नरकावा साथी लइने खेरना अंगारामां नाखीने कोइ धमे,तेवारें तो ते नारकी चंदन जेवी शीतलता पामी अत्यंत सुखी थया उता ते अग्निमां निड्रा पामे. वली पोष तथा माघ महिनामां रात्रिने समयें शीतल वायु वाय, तेणें करी जेम हृदयादि कंपे, तथा हिमाचलमां वस्त्ररहि त चेरा थकां उपरथी हिम पडतां जेवी शीतवेदना होय,तेथी अनंतगुणी शीतवेदना नरकावासामां होय. ते शीतवेदनायुक्त नरकवासामांथी ते नारकीने वा हेर काहाडी पूर्वोक्त हिमाचलादिक शीतल स्थलें जो स्थापन करीयें तो ते नारकी निरुपम सुखीया थया उता निड्राने पामे.

हवे ते नारकीना दुःखदायी पुद्गलना परिणामो दश प्रकारें छे, ते कहे छे. प्रथम जे जे आहारादिक नानाप्रकारना पुद्गलनुं जे बंधन ते प्रदीप्त थयेला अग्नि करतां पण अत्यंत दारुण होय. बीजी ते नारकीनी गति पण उंट सरखी होय, ते गतिनुं दुःख तपावेला लोहसरखी भूमिपर चलाव्याथी पण अत्यंत वधारे थाय. त्रीजुं हुंडकसंस्थान ते पांख छेदन थयेला पक्षी समान दुःखदायी थाय. जेने जोवाथकी जोनारने अत्यंत उद्वेग उत्पन्न थाय छे, चोथा भिंतप्रमुखना पुद्गल जे अडीने शरीरें लागे, ते शस्त्र अने खड्गधारा सरीखा लागे. पांचमो ते नरकावासानो वर्ण सर्वत्र अंधकारमय अने विष्टा, मूत्र, श्लेष्म, मल, लोही, वसा, परु, अने मेदथी भर्यो एवो तेना तलीयानो भाग छे, तथा स्मशाननी पठें ठेकाणें ठेकाणें मांस, केश, हाड, नख, दांत, चर्म, पड्यां छे, एवो वर्ण छे, छठो जेमां कुतरां, शीयाल, सर्प, मार्जार, नोलीया प्रमुखनां मृत कलेवर पड्यां होय, तेना गंध करतां पण अत्यंतघणो पुद्गलनो दुर्गंध होय. सातमो नारकीना पुद्गलनो रस, ते कडवी तुंबडी करतां पण अत्यंत कडवो होय. आठमो नारकीना पुद्गलनो स्पर्श ते विछीना कांटा सरखो अने कौंचना रोम करतां पण अत्यंत भुंडो जाणवो. नवमो अगुरुलघु परिणाम पण अत्यंत दुःखना आवासरूप जाणवो. दशमो अत्यंत विलाप आक्रंद दुःखकारी शब्दना पुद्गल

होय. एम दश प्रकारें नारकीना पुद्गलपरिणाम होय
हवे नारकीयोने दशप्रकारनी वेदना होय, ते क
छे. तेमां शीतवेदना अने उष्णवेदना, ए बे पू
कही ते जाणवी. वली त्रीजी वेदना ते अढीद्वीपन
अन्न तथा घृत जो आपीयें, तो पण नारकीने भूख
मटे नहिं; अने चोथी वेदना ते समस्त समुद्र अने
दीनां पाणी पाइयें, तो पण तृषा मटे नहिं, तथा त
लवुं होठ सूकातां रहे नहिं. पांचमी वेदना ते छरी
करवत, तेणें करी खणतां पण जेनी खरज मटे नहि
छठी वेदना जे निरंतर परवश रहे. सातमी वेदना जे
अहियां रहेनारा पुरुषो करतां अनंतो ज्वर सदा होय
आठमी वेदना ते शरीर तापमय होय, दाघज्वरमय
होय. नवमी वेदना ते अनंतो भय होय. दशमी वेदन
ते शोक, अत्रत्य मनुष्य करतां अनंतगुणो होय, अने
विभंगज्ञान पण सर्वत्र दुःखदायी होय; अने परम
धामी लोक पण भालां तलवार, तीर, प्रमुख हथीय
र देखाडीने महादुःख देनारा त्यां होय छे. तेणे
करीने अत्यंत दुःखी होय; अने निरतर शोक करता
रहे. एम नारकीने दश प्रकारनी क्षेत्रवेदना कही.
हवे नारकीमां अन्योऽन्यकृत वेदना कहे छे. नार
कीना बे भेद छे. एक मिथ्यादृष्टि अने बीजा सम्य
गृदृष्टि छे, ते जेम भिल्ल तथा वणझारा प्रमुखनो
कुतरो बीजा कुतराउने देखी क्रोधांध थयो थको
लडवा आवे, तेउ परस्पर दांत तथा नखें करी युद्ध

हवे ते नारकीना दुःखदायी पुद्गलना परिणामो दश प्रकारें छे, ते कहे छे. प्रथम जे जे आहारादिक नानाप्रकारना पुद्गलनुं जे बंधन ते प्रदीप्त थयेला अग्नि करतां पण अत्यंत दारुण होय. बीजी ते नारकीनी गति पण उंट सरखी होय, ते गतिनुं दुःख तपावेला लोहसरखी भूमिपर चलाव्याथी पण अत्यंत वधारे थाय. त्रीजुं हुंमकसंस्थान ते पांख छेदन थयेला पक्षी समान दुःखदायी थाय. जेने जोवाथकी जोनारने अत्यंत उद्वेग उत्पन्न थाय छे, चोथा भिंतप्रमुखना पुद्गल जे उडीने शरीरें लागे, ते शस्त्र अने खड्गधारा सरीखा लागे. पांचमो ते नरकावासानो वर्ण सर्वत्र अंधकार मय अने विष्ठा, मूत्र, श्लेष्म, मल, लोही, वसा, परु, अने मेदथी भर्यो एवो तेना तलीयानो भाग छे, तथा स्मशाननी परें ठेकाणें ठेकाणें मांस, केश, हाड, नख, दांत, चर्म, पड्यां छे, एवो वर्ण छे, छठो जेमां कुतरां, शीयाल, सर्प, माजार, नोलीया प्रमुखनां मृत कलेवर पड्यां होय, तेना गंध करतां पण अत्यंतघणो पुद्गलनो दुर्गंध होय. सातमो नारकीना पुद्गलनो रस, ते कडवी तुंबडी करतां पण अत्यंत कडवो होय. आठमो नारकीना पुद्गलनो स्पर्श ते विछीना कांटा सरखो अने क्रौंचना रोम करतां पण अत्यंत भुंडो जाणवो. नवमो अगुरुलघु परिणाम ते पण अत्यंत दुःखना आवासरूप जाणवो. दशमो अत्यंत विलाप, आक्रंद दुःखकारी शब्दना पुद्गल

होय. एम दश प्रकारें नारकीना पुद्गलपरिणाम होय.

हवे नारकीयोने दशप्रकारनी वेदना होय, ते कहे छे. तेमां शीतवेदना अने उष्णवेदना, ए बे पूर्वे कही ते जाणवी. वली त्रीजी वेदना ते अढीद्वीपनां अन्न तथा घृत जो आपीयें, तो पण नारकीने भूख मटे नहिं; अने चोथी वेदना ते समस्त समुद्र अने नदीनां पाणी पाइयें, तो पण तृषा मटे नहिं, तथा तालवुं होठ सूकातां रहे नहिं. पांचमी वेदना ते छरी, करवत, तेणें करी खणतां पण जेनी खरज मटे नहिं. छठी वेदना जे निरंतर परवश रहे. सातमी वेदना जे अहियां रहेनारा पुरुषो करतां अनंतो ज्वर सदा होय, आठमी वेदना ते शरीर तापमय होय, दाघज्वरमय होय. नवमी वेदना ते अनंतो भय होय. दशमी वेदना ते शोक, अत्रत्य मनुष्य करतां अनंतगुणो होय, अने विभंगज्ञान पण सर्वत्र दुःखदायी होय; अने परमाधामी लोक पण भालां तलवार, तीर, प्रमुख हथीयार देखाडीने महादुःख देनारा त्यां होय छे. तेणें करीनें अत्यंत दुःखी होय, अने निरतर शोक करता रहे. एम नारकीने दश प्रकारनी क्षेत्रवेदना कही.

हवे नारकीमां अन्योऽन्यकृत वेदना कहे छे. नारकीना बे भेद छे. एक मिथ्यादृष्टि अने बीजा सम्यग्दृष्टि छे, ते जेम भिन्न तथा वणजारा प्रमुखनो कुतरो बीजा कुतराउने देखी क्रोधांध थयो थको लडवा आवे, तेउ परस्पर-दांत तथा नखें करी युद्ध

हवे ते नारकीना दुःखदायी पुद्गलना परिणामो दश प्रकारें छे, ते कहे छे. प्रथम जे जे आहारादिक नानाप्रकारना पुद्गलनुं जे बंधन ते प्रदीप्त थयेला अग्नि करतां पण अत्यंत दारुण होय. बीजी ते नारकीनी गति पण ऊंट सरखी होय, ते गतिनुं दुःख तपावेला लोहसरखी भूमिपर चलाव्याथी पण अत्यंत वधारे था य. त्रीजुं हुंमकसंस्थान ते पांख छेदन थयेला पक्षी स मान दुःखदायी थाय. जेने जोवाथकी जोनारने अत्यं त उद्वेग उत्पन्न थाय छे, चोथा भिंतप्रमुखना पुद्गल जे उडीने शरीरें लागे, ते शस्त्र अने खड्गधारा सरीखा लागे. पांचमो ते नरकावासानो वर्ण सर्वत्र अंधकार मय अने विष्ठा, मूत्र, श्लेष्म, मल, लोही, वसा, परु, अने मेदथी भर्यो एवो तेना तलीयानो भाग छे, तथा स्मशाननी परें ठेकाणें ठेकाणें मांस, केश, हाड, नख, दांत, चर्म, पड्यां छे, एवो वर्ण छे, छठो जेमां कुतरां, शीयाल, सर्प, मार्जार, नोलीया प्रमु खनां मृत कलेवर पडयां होय, तेना गंध करतां पण अत्यंतघणो पुद्गलनो दुर्गंध होय. सातमो नारकीना पुद्गलनो रस, ते कडवी तुंबडी करतां पण अत्यंत कडवो होय. आठमो नारकीना पुद्गलनो स्पर्श ते विछीना कांटा सरखो अने क्रौंचना रोम करतां पण अत्यंत भुंडो जाणवो. नवमो अगुरुलघु परिणाम ते पण अत्यंत दुःखना आवासरूप जाणवो. दश मो अत्यंत विलाप, आक्रंद दुःखकारी शब्दना पुद्गल

होय. एम दश प्रकारें नारकीना पुजलपरिणाम होय.

हवे नारकीयोने दशप्रकारनी वेदना होय, ते कहे ले. तेमां शीतवेदना अने उष्णवेदना, ए बे पूर्वें कही ते जाणवी. वली त्रीजी वेदना ते अढीद्वीपनां अन्न तथा घृत जो आपीयें, तो पण नारकीने नूख मटे नहिं, अने चोथी वेदना ते समस्त समुद्र अने नदीनां पाणी पाइयें, तो पण तृषा मटे नहिं, तथा तालवुं होठ सूकातां रहे नहिं. पांचमी वेदना ते बरी, करवत्त, तेणें करी खणतां पण जेनी खरज मटे नहिं. छठी वेदना जे निरंतर परवश रहे. सातमी वेदना जे अहियां रहेनारा पुरुषो करतां अनंतो ज्वर सदा होय, आठमी वेदना ते शरीर तापमय होय, दाघज्वरमय होय. नवमी वेदना ते अनंतो नय होय. दशमी वेदना ते शोक, अत्रत्य मनुष्य करतां अनंतगुणो होय, अने विनंगज्ञान पण सर्वत्र डुःखदायी होय; अने परमाधामी लोक पण नालां तलवार, तीर, प्रमुख हथीयार देखाडीने महाडुःख देनारा त्यां होय ले. तेणें करीनें अत्यंत डुःखी होय; अने निरंतर शोक करता रहे. एम नारकीने दश प्रकारनी क्षेत्रवेदना कही.

हवे नारकीमां अन्योऽन्यकृत वेदना कहे ले. नारकीना बे नेद ले. एक मिथ्यादृष्टि अने बीजा सम्यग्दृष्टि ले, ते जेम निल्ल तथा वणजारा प्रमुखनो कुतरो बीजा कुतराउने देखी क्रोधांध थयो थको लडवा आवे, तेउ परस्पर-दांत तथा नखें करी युद्ध

करे. तेम जे मिथ्यात्वी नारकी होय; ते पण विभंग ज्ञानें करी बीजा नारकीने दूरथकी आवतो देखी क्रोधें करी अत्यंत रौद्र एवुं नवुं वैक्रिय रूप करे, अने पोतपोताना नरकावासमां पृथ्वीना स्वभावोत्पन्न हथीयार अथवा नवां विकूर्व्यां एवां त्रिशूल अने भालां प्रमुख अथवा हाथ, पग, दांत, अने नखें करी मांहो मांहे प्रहार करे. ते प्रहारें पीडा पामेला एवा तेउ लोहीना कादवमां आलोटता आक्रंद करे, अने जे सम्यग्दृष्टि नारकी होय, ते पोताना पूर्वभवकृत पापने स्मरण करी बीजाथकी उत्पन्न थयेलुं एवुं डुःख सम्यक्प्रकारें सहन करे. परंतु बीजाने पीडा उपजावे नहिं. ए रीतें नारकीने अन्योऽन्य वेदना कही.

हवे नारकीयोने परमाधामी देवताकृतवेदना कहे छे. नरकावासनी पहेली भित्तिने विषे निःकूट आला छे,ते आला नारकीने उपजवानी योनि जाणवी. तिहां नारकी उपना पछी अंतरमुहूर्त्त आलो न्हानो अने शरीर महोटुं तेथी तेमां समाय नही. तेवारें नीचें पडे. जेवो ते नीचें पडे के तुरत तेने पड्यो जाणीने परमाधामी त्यां आवे, ते आवीने पूर्वकृत पापक अनुसारे कर्मोपचारीने डुःख आपे. ते मद्यपान करनारने तपावेलो तरुउ पी . जे परस्त्रीसंगी होय, तेने लीनुं आलिंगन करावे; कूट

वेंसाडे. लोढाना घणा प्रकारना घात करे. वांसला यें करी छेदे, क्षतउपर क्षार मूके. उष्ण तेलमांहे तले; कुंत, नालामां शरीरने प्रोवे, तथा अग्निनी न ठिमांहें शेके, घाणीमांहे पीले, करवतें करी छेदी नाखे; काक, घुअड, कुतरा अने सिंह प्रमुखें विकू र्वीने कदर्थना करावे, वैतरणी नदीमांहे ते नारकीने झबोले, असिपत्र वनमांहे प्रवेश करावे, तप्तवेलुमां हे दोडावे. एवी विविध प्रकारनी वेदना उत्पन्न करी नारकीने दुःख आपे. पछी वज्रमय चंचूयेंकरी ते नारकीने पक्षीयो तोडे, तथा कांही धरतीयें पड्या रहेला नागने वाघ चूंटे, खाय एवा ते परमाधामी अधम, महा पापिष्ठ, क्रूरकर्मा के जेमने पंचाग्नि प्र मुख कष्ट क्रिया करवा थकी उपनुं एवुं जे क्रूर सुख छे. एवा असुर परमाधामी ते कदर्थ्यमान एवा नार कीने मांहोमांहे पाडा, कूकडा अने मेंढानी पेरें जू झता देखी युद्ध प्रेक्षक मनुष्यनी पेरें ते परमाधामी हर्ष पामे, अट्टहास्य करे, चेलोत्क्षेप करे, पटह व गाडे, दादरी वजावे, जेम अहियानां लोको नाटक देखी खुशी थाय, तेवा परमाधामी त्रणे जातनी कद र्थना नारकीने देखी खुशी थाय. घणुं शुं कहियें! परंतु नारकीयोने दुःख देवामां तथा दुःखी देखीने खुशी थवामां परमाधामीयोने जेवी प्रीति होय छे, तेवी प्रीति अत्यंतरस्य वस्तुने जोइने पण होय नही

हवे पूर्वोक्त क्षेत्रवेदना, अन्योन्यवेदना, तथा

करे. तेम जे मिथ्यात्वी नारकी होय, ते पण विभंग ज्ञानें करी बीजा नारकीने दूरथकी आवतो देखी क्रोधें करी अत्यंत रौद्र एवुं नवुं वैक्रिय रूप करे, अने पोतपोताना नरकावासमां पृथ्वीना स्वजावोत्पन्न हथीयार अथवा नवां विकूर्व्यां एवां त्रिशूल अने जालां प्रमुख अथवा हाथ, पग, दांत, अने नखें करी मांहो मांहे प्रहार करे. ते प्रहारें पीडा पामेला एवा तेउ लोहीना कादवमां आलोटता आक्रंद करे, अने जे सम्यग्दृष्टि नारकी होय, ते पोताना पूर्वजवकृत पापने स्मरण करी बीजाथकी उत्पन्न थयेलुं एवुं दुःख सम्यक्प्रकारें सहन करे. परंतु बीजाने पीडा उपजावे नहिं. ए रीतें नारकीने अन्योऽन्य वेदना कही.

हवे नारकीयोने परमाधामी देवताकृतवेदना कहे छे. नरकावासनी पहेली जित्तिने विषे निःकूट आला छे,ते आला नारकीने उपजवानी योनि जाणवी. तिहां नारकी उपना पछी अंतरमुहूर्त्ते आलो न्हानो अने शरीर महोटुं तेथी तेमां समाय नही. तेवारें नीचें पडे. जेवो ते नीचें पडे के तुरत तेने पड्यो जाणीने परमाधामी त्यां आवे, ते आवीने पूर्वकृत पापकर्मने अनुसारें कर्मोपचारीने दुःख आपे. ते कहे छे.

मद्यपान करनारने तपावेलो तरुउ पीवरावे. अने जे परस्त्रीसंगी होय, तेने अग्निमय लोहनी पूतलीनुं आलिंगन करावे; कूट शिमलाना वृक्ष उपर

धूमप्रज्ञायें धूम घणो छे, माटे तेनुं गोत्र धूमप्रज्ञा छे. वही तम-प्रज्ञायें अंधकार घणो छे तेथी तेनुं गोत्र तम-प्रज्ञा पडयुं छे. सातमी तमस्तमःप्रज्ञायें अंधकारनुं बहुलपणुं छे, माटे तेनुं गोत्र तमस्तमः प्रज्ञा छे.ए साते नरकभूमिनां गुणनिष्पन्न गोत्र कह्यां.

॥ अथ पुरुषना शोल शणगार ॥

॥ क्षौरं मज्जनवस्त्रभालतिलकं, गात्रे सुगंधार्चनं, कर्णे कुंमलमुद्रिके च मुकुटं, पादौ च पादूयुतौ ॥ हस्ते खड्गपटांबराणि छुरिका विद्याविनीतं मुखं, तांबूलं शुचि शीलकं च गुणिनां शृंगारकाः षोडश ॥

॥ अथ स्त्रीना शोल शणगार ॥

॥ आदौ मज्जनचारुचीरतिलकं नेत्रांजनं कुंमले, नासामौक्तिकपुष्पहारभरणं ऊंकारकौ नूपुरौ ॥ अंगे चंदनलेपकं कुचमणिक्षुद्रावली घंटिका, तांबूलं करकंकणं चतुरता शृंगारकाः षोडश ॥१॥ इति॥

॥ सवैयो ॥ योगी सिद्ध कलंदर तापस, होत दिगंबर मार कसोटी ॥ पीर मुरिद्द मुसाफर मीरा, सेख वसे वनमांहि लंगोटी ॥ जे जपियां जप जाप जपे हैं, जांहिंकी कीरति देश महोटी ॥ सेवक हे स्वामि दास निरंजन, रोटि विना सब वात हे खोटी ॥ १ ॥

योगि धरे योग ध्यान, पंमीत पढे पुराण, ज्ञानी कहियानपें, उदास भेख लीया हे ॥ केते शाह पात शाह, केते शाहजादे केते, वासुदेव चक्री पुनि करण दा

धिकारें ग्रही, लब्धि नाम पण तेणें सही ॥ योग तणां फल एम अनेक, योगीश्वर जाणे सुविवेक ॥ए॥ योगवंत बहु लब्धिमहंत,श्रीगौतमगणधर जलसंत ॥ प्रह ऊठी तस ध्यावो रंग,जिम लहो लीलालच्छीसंग १०॥

॥ जुंवटुं नही रमवा आश्रयी उपदेश स्वाध्याय ॥

सुगुण सनेहा सांभल शीखडी, जाण विचारी जोय रे रसिया ॥ चतुर विचक्षण धर्म कला तणी, रामत रमीयो सोय रे रसीया ॥ १ ॥ मत कोइ रमजो रे साजन जूवटे, रमतां लागे रे पाप रे रसीया ॥ धर्म करमनां हो कारज वीसरे,खीजे माय ने बाप रे रसीया ॥म०॥॥२॥व्यसनी रात दिवस रामत रमे,नवि लीये प्रभुनुं नाम रे रसीया ॥ उघ वगाइ ने निद्रा नवि करे, घरना विणसे हो काम रे रसीया ॥ म० ॥ ३ ॥ व्यसन विगूतो नलराय कुवेरशुं, रमतापासा सार रें रसीया॥धण कण कंचण राज गमावीयुं, होडे हारी नार रे रसीया ॥ म० ॥ ४ ॥ पांमवे कौरवशुं क्रीडा करी, जूवटे मीठी हार रे रसीया ॥म०॥ ५ ॥ वनवासें रह्या वात अछे घणी,केहेतां न लाभे पार रे रसीया ॥ रंग रंगीला हो पासा सोगठां, सरस बनावे दाव रे रसीया ॥ छयल छबीला खेले खांतशुं, होश धरी मन मांय रे रसीया ॥ म० ॥ ६ ॥ झटकें पटकें कीडी ., धाये एहनी घात रे रसीया॥ मुख थकी मार ६ वली उच्चरे, निगमे पुण्यनी वात रे रसीया ॥ म० ॥ ७ ॥ जूठुं बोले हो रामत रमताछं, कपटी

मेले हो तान रे रसीया ॥ चोरी शीखे निज पर घर तणी, पर रमणीनुं हो ध्यान रे रसीया ॥ म० ॥ ८ ॥ पासे रमतां हो वली मानवी, होवे जूआरी हो तेह रे रसीया ॥ सात व्यसन मांहे ए मुख्य छे, धन्य जे वरजे रे तेहरे रसीया ॥ म० ॥ ए ॥ रमतां कलेश करी उठे सही, राजा मागे दंम रे रसीया ॥ आरंभ लागे हो वायुकायना, पापें भराये पिंम रे रसीया ॥ म० ॥ १० ॥ रामत मत मांमो घर आपणे, वदीयें न कोइशुं होड रे रसीया॥भजन करो तमे श्रीभगवंतनो,आणंद कहे करजोड रे रसीया ॥ म० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितजिनस्तवनं ॥ सुरती महीनानी देशी ॥

॥ सरसति सामणी विनवुं,मागुं अविरलवाण ॥ बीजा जिनवर गायशुं, हरख घणो मन आण ॥ १ ॥ कोशल देश सोहामणो, नयरी अयोध्या रे गाम ॥ राज करे तिहां राजवी, जितशत्रु एनुं नाम ॥ २ ॥ विजया रे राणी तेहनी, शीलवती अभिराम ॥ तेहनी कूखें अवतस्या, अजित जिनेसर स्वाम ॥ ३ ॥ साडा रे चारशें धनुष्यनी, कंचन वरणी काय ॥ वहोंतेर लाख पूरव कही,श्रीजिनवरनी आय ॥४॥ गज लंछन सोहामणुं, सेवे छे नित पाय ॥ सुर नर मली सेवा करे, आनंद अंग न माय ॥ ५ ॥ पुण्यसंयोगें हुं पामियो, तुमने श्रीजिनराज ॥ पाप गयां सवे माहरां, फलिया मनोरथ आज ॥ ६ ॥ दीन दयाल

दया करी, दीजें अविचल राज ॥ नित्य लाभ कहे प्र
नु माहरां, सारजो वंछित काज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ रहनेमीनी सिद्याय प्रारंज ॥

॥ निंदा म करशो कोइनी पारकी रे ॥ एं देशी ॥
॥ संजम लइ ध्यानें रह्या रे, ताणे रहनेमी गढ गिर
नार रे ॥ चीर नीचोवतां महासती रे, देखी व्याकु
ल थया मुनिराय रे ॥ १ ॥ रे रे रहनेमीने राजुल बू
झवे रे ॥ अहो रे उत्तम अणगारने रे, चारित्रें लागे
अतिचार रे ॥ रे रे० ॥ ए आंकणी ॥ हुं रे नारी
नेमजी तणी रे, ताणे तुमें ढो देवर मुनिराज रे ॥ एरें
वात जुगती नही रे, ताणे एवुं केम कीजें अकाज
रे ॥ रे रे० ॥ २ ॥ एम सुणी रहनेमी बोलिया रे,
ताणे तुं नारी हुं नरतार रे ॥ राज करीयें जुनागढ
तणुं रे, ताणे सुख विलसो सहि सार रे ॥रे रे०॥३॥
हां हां रे ए शुं मूरख बोलीया रे,ताणे जादव कुल ला
गे लाज रे ॥ तुं रे बंधव हुं बुं बेनडी रे,ताणे जुगमां हां
सी थाय रे ॥ रे रे० ॥ ४ ॥ नारीनो संग नवि कीजि
यें रे, ताणे नारी ढे मोहनो पास रे ॥ नारीथकी डु
र्गति लहे रे, ताणे नीच पामो नरकावास रे ॥रे रे०॥
॥ ५ ॥ रत्न चिंतामणि पामीने रे, ताणे कंकर ग्रहें
कोण हाथ रे ॥ गज ढोडी खर नवि चडे रे, ताणे पय
मूकीने पिये कुण ढाढ रे ॥ रें रे० ॥ ६ ॥ विपयमां
म राचो मुनिवरु रे, ताणे विष सम विषय विकार
रे ॥ विष खावाथी मरीयें एकदा रे, ताणे विषय

अनंती वार रे ॥ रे रे० ॥ ७ ॥ अतिचारें आलोव तां रे, ताणे मनथकी मुनिराज रे ॥ निरतिचार पणे करी रे, मुनि ध्यान चड्या सजी साज रे ॥ ॥ रे रे० ॥ ८ ॥ रहनेमी हृदय विचारीने रे, में तो कीधो महा अपराध रे ॥ ए नारी बंधव तणी रे, ताणे धिक धिक ए हुं तो साध रे ॥ रे रे० ॥ ए ॥ एही वखत खमावतां रे, ताणे राजीमतीने तेणि वार रे ॥ नरकें पडतो मुफने राखीयो रे, तुं तो सर्व सतीमां शिरदार रे ॥ रे रे० ॥ १० ॥ इति ॥ (आमां छेल्ली गां थामां कर्त्तानुं नाम नथी तेथी अधूरी जणाय छे.)

॥ सज्जन विषे दोहा ॥

॥ सज्जन हीरासें अधिक, मूल न जाको होत ॥ कहूं परायो होत नहीं, दुःखमें होत उद्योत. ॥१॥ सज्जनशुं अंतर नहीं, राखे कोई सुजान ॥ सज्जनसें सुख होत है, यह निश्चे मन मान ॥२॥ सज्जन जगमें बहु नहिं, विरलो कहूं दिखात ॥ तिहि पिछान कीजें सुखद, जातें सब दुःख जात ॥३॥ सज्जन पर उपकार करि, लेत न कछु इह दाम ॥ देत सदा जो चाहियें, समयशुं आवत काम ॥४॥ सज्जन सम जगमें नहीं, अवर सु कोइ पुमान ॥ आप बहुत दुःख देखिकें, देत और सुख जान ॥५॥ सज्जन स्वभाव देखि के, आपहु ता सम होउ ॥ सज्जनता सबतें अधिक, या सम और न कोउ ॥६॥ सज्जन नाम धरायकें, भटकत जगमें और ॥ पै लछन गुन देखि के, संग कीजियें गौर ॥७॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकर, बार चक्रवर्त्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव अने नव बलभद्र पद्म, ए त्रेशठ शिलाका पुरुष मांहेला जे चक्रवर्त्ती अथवा वासुदेवादिक जे तीर्थंकरना वारामां थया, अथवा जे तीर्थंकरने आंतरें थया, तेमनां नाम तथा शरीरनी ऊंचाइनुं मान तथा तेना आयुष्यना प्रमाणनो यंत्र जूदा जूदा कोठा सहित भव्य जनोने नामस्मरण राखवा माटे नीचें दाखल कर्यो छे.

	जिन २४	चक्री १२	केशव ९	प्रतिवासु०	तनुमान.	आयुमान.	बलदेव. ९
१	ऋषभ १	भरत १	०	०	धनु० ५००	पूर्वलक्ष ८४	०
२	अजित २	सगर २	०	०	ध० ४५०	पूर्वलक्ष ७२	०
३	संभव ३	०	०	०	ध० ४००	पूर्वलक्ष ६०	०
४	अभिनं० ४	०	०	०	ध० ३५०	पूर्वलक्ष ५०	०
५	सुमति ५	०	०	०	ध० ३००	पूर्वलक्ष ४०	०
६	पद्मप्रभ ६	०	०	०	ध० २५०	पूर्वलक्ष ३०	०
७	सुपार्श्व ७	०	०	०	ध० २००	पूर्वलक्ष २०	०

	जिन	चक्री १२	केशव ९	प्रतिवसु०	तनुमान.	आयुमान	वलदेव.
८	चंद्रप्रभ ८	०	०	०	ध० १५०	पूर्वलक्ष १०	०
९	सुविधि ९	०	०	०	ध० १००	पूर्वलक्ष २	०
१०	शीतल १०	०	०	०	ध० ९०	पूर्वलक्ष १	०
११	श्रेयांस ११	०	त्रिपृष्ठ १	अश्वग्रीव १	ध० ८०	वर्षलक्ष ८४	अचल ८५
१२	वासुपूज्य	०,	द्विपृष्ठ २	तारक २	ध० ७०	वर्षलक्ष ७२	विजय ७३
१३	विमल १३	०	स्वयंभु ३	मेरक ३	ध० ६०	वर्षलक्ष ६०	सुभद्र ६५
१४	अनंत १४	०	पुरुषोत्तम ४	मधु. ४	ध० ५०	वर्षलक्ष ३०	सुप्रभ ५५
१५	धर्म १५	०	पुरुषसिंह ५	निशुंभ ५	ध० ४५	वर्षलक्ष १०	सुदर्शन १७
१६	०	मघवा ३	०	०	ध० ४२॥	वर्षलक्ष ५	०
१७	०	सनत०	०	०	ध० ४१॥	वर्षलक्ष ३	०
१८	शांति १६	शांति० ५	०	०	ध० ४०	वर्षलक्ष १	०
१९	कुंथु १७	कुंथु० ६	०	०	ध० ३५	वर्षस० ९५	०
२०	अर १८	अर० ७	०	०	ध० ३०	वर्षस० ८४	०

	जिन	चक्री १२	केशव ९	प्रतिवसु०	तनुमान.		आयु मान		बलदेव.	
२१	०	०	पुरुषपुंड०	वलेंद्. ६	ध०	२९	वर्षस०	६५	आनंद	८१
२२	०	सुभूम ८	०	०	ध०	२८	वर्षस०	६०	०	
२३	०	०	दत्त ७	प्रल्हाद. ७	ध०	२६	वर्षस०	५६	नंदन	६५
२४	मल्लिजि १९	०	०	०	ध०	२५	वर्षस०	५५	०	
२५	मुनिसुव्रत.	महापद्म	०	०	ध०	२०	वर्षस०	३०	०	
२६	०	०	लखमण ८	रावण. ८	ध०	१६	वर्षस०	१२	पद्म	१५
२७	नमि २१	हरिषेण	०	०	ध०	१५	वर्षस०	१०	०	
२८	०	जय ११	०	०	ध०	१२	वर्षस०	३	०	
२९	नेमनाथ २२	०	कृष्ण ९	जरासंध.	ध०	१०	वर्षस०	१	राम	१२
३०	०	ब्रह्मदत्त	०	०	ध०	७	वर्षस०	७००	०	
३१	पार्श्व २३	०	०	०	हाथ	९	वर्ष	१००	०	
३२	महावीर	०	०	०	हाथ	७	वर्ष	७२	०	

॥ अथ श्रीआयंबिल तपनी उलिनो विधि ॥

॥ ए तप प्रथम आशोशुदि सातमना दिवसथी मांमीने आशोशुदि पूर्णिमा पर्यंत नव दिवस सुधी, तेमज चैत्रशुदि सातमथी मांमी पूर्णिमा पर्यंतना नव दिवस लगें नव नव आयंबिल करवां, एवी रीतें साडा चार वर्ष पर्यंतमां एक्याशी आयंबिल करे थके ए तप पूर्ण थाय ढे. हवे आयंबिल करवाना नव दिवस पर्यंत ब्रह्मचर्य पालवुं. प्रतिदिन सांऊ, सवार मली बे वार पडिक्कमणां करवां, तथा एकेका दिवसें अनुक्रमें एकेका पदनी क्रिया करवी, तिहां जे पदना जेटला गुण होय, ते पदना तेटला साथीया काढवा, अने तेटलाज ते पदना ॐ ह्रीं पद सहित खमासमण देवां, तथा तेटलाज लोगस्सनो काउस्सग्ग पण करवो, अने एकेक पदनां नामनी वीश वीश नोकरवाली गणवी, तथा ते ते पदना गुणनी स्तुति नावना पूर्वक नाववी जोइयें, माटे ते नव पदनां नाम तथा गुण अने गणणुं गणवानी संख्या, लखीयें ढैयें.

नव पदनां नाम.	गुणनी संख्या.	गणणुं गणवुं.
ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं.	१२	१२००
ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं.	८	८००
ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं.	३६	३६००
ॐ ह्रीं नमो उवद्यायाणं.	२५	२५००
ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं.	२७	२७००
ॐ ह्रीं नमो नाणस्स.	५१	५००

	जिन	चक्री १२	केशव ९	प्रतिवसु०	तनुमान.		आयु मान		वलदेव.	
२१	०	०	पुरुषपुंडरीक०	वलेंद्र. ६	ध०	२९	वर्षस०	६५	आनंद	८१
२२	०	सुभूम ८	०	०	ध०	२८	वर्षस०	६०	०	
२३	०	०	दत्त ७	प्रल्हाद. ७	ध०	२६	वर्षस०	५६	नंदन	६५
२४	मल्लिजि १९	०	०	०	ध०	२५	वर्षस०	५५	०	
२५	मुनिसुव्रत.	महापद्म	०	०	ध०	२०	वर्षस०	३०	०	
२६	०	०	लखमण ८	रावण. ८	ध०	१६	वर्षस०	१२	पद्म	१५
२७	नमि २१	हरिषेण	०	०	ध०	१५	वर्षस०	१०	०	
२८	०	जय ११	०	०	ध०	१२	वर्षस०	३	०	
२९	नेमनाथ २	०	कृष्ण ९	जरासंध.	ध०	१०	वर्षस०	१	राम	१२
३०	०	ब्रह्मदत्त	०	०	ध०	७	वर्षस०	७००	०	
३१	पार्श्व २३	०	०	०	हाथ	९	वर्ष	१००	०	
३२	महावीर	०	०	०	हाथ	७	वर्ष	७२	०	

॥ अथ श्रीआयंबिल तपनी उलिनो विधि ॥

॥ ए तप प्रथम आशोशुदि सातमना दिवसथी मां मीने आशोशुदि पूर्णिमा पर्यंत नव दिवस सुधी, तेम ज चैत्रशुदि सातमथी मांमी पूर्णिमा पर्यंतना नव दिवस लगें नव नव आयंबिल करवां, एवी रीतें साडा चार वर्ष पर्यंतमां एक्याशी आयंबिल करे थके ए तप पूर्ण थाय ने. हवे आयंबिल करवाना नव दिवस पर्यंत ब्रह्मचर्य पालवुं. प्रतिदिन सांफ, सवार मली बे वार पडिक्कमणां करवां, तथा एकेका दिवसें अनुक्रमें एकेका पदनी क्रिया करवी, तिहां जे पदना जेटला गुण होय, ते पदना तेटला साथीया काढवा, अने तेटलाज ते पदना ॐ ह्रीं पद सहित खमासमण देवां, तथा तेटलाज लोगस्सनो काउस्सग्ग पण करवो, अने एकेक पदनां नामनी वीश वीश नोकरवाली गणवी. तथा ते ते पदना गुणनी स्तुति जावना पूर्वक जाववी जोश्यें, माटे ते नव पदनां नाम तथा गुण अने गणणुं गणवानी संख्या, लखीयें बैयें.

नव पदनां नाम.	गुणनी संख्या.	गणणुं गणवुं.
ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं.	१२	१२००
ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं.	८	८००
ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं.	३६	३६००
ॐ ह्रीं नमो उवज्ञायाणं.	२५	२५००
ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं.	२७	२७००
ॐ ह्रीं नमो नाणस्स.	५१	५००

ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स.	६७	१०००
ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स.	१७	५००
ॐ ह्रीं नमो तवस्स.	१२	२००

॥ हवे नव पदनां खमासमण देवानो पाठ कहे छे ॥

१ इच्छामि खमासमणो वंदीउं जावणिज्जाए निसी हिआए मच्छएण वंदामि ॥ ॐ ह्रीं नमो अरिहं ताणं,ए प्रथम पदें श्रीअरिहंतजी बार गुणें शोभित मध्यभागें विराजमान, उज्ज्वल वर्ण सहित एवा श्रीअरिहंत भगवंतने महारी त्रिकाल वंदना होजो

२ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, ए बीजे पदें श्रीसिद्धपरमात्मा आठ गुणें शोभित, पूर्वदिशें बि राजमान, रक्तवर्ण सहित, एवा श्रीसिद्ध भगवंत ने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

३ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ए त्रीजे प दें श्रीआचार्यजी छत्रीश गुणें शोभित, दक्षिणदिशें विराजमान, पीतवर्ण सहित, एवा श्रीआचार्य भ गवानने महारी त्रिकालवंदना होजो.

४ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो उवझायाणं ए चोथे प दें श्री उपाध्यायजी पच्चीश गुणें शोभित, पश्चिम दिशें विराजमान, नीलवर्ण सहित एवा श्री उपा ध्यायजीने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

५ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ए पां चमे पदें श्रीसाधुजी सत्तावीश गुणें शोभित, उत्त

रदिशें विराजमान, कृष्ण वर्ण सहित. एवा सर्व साधुने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

६ इछामि० ॥ ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स ए छठे पदें श्री म्यक्ज्ञान एकावन नेदें शोनित, अग्निखूणे विराजमान, श्वेत वर्ण सहित, एवा श्री ज्ञान पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

७ इछामि० ॥ ॐ ह्रीँ नमो दंसणस्स, ए सातमे पदें श्रीसम्यक् दर्शन सडशठ बोलें शोनित, नैरुतखूणे विराजमान, श्वेतवर्णसहित, एवा श्री दर्शन पदने महारी त्रिकाल वदना होजो.

८ इछामि० ॐ ह्रीँ नमो चारित्तस्स, ए आठमे पदें श्रीचारित्र सत्तर नेदें, शोनित, वायव्यखूणे विराजमान, श्वेतवर्णसहित एवा श्री चारित्र पदने महारी त्रिफाल वंदना होजो.

ए इछामि० ॥ ॐ ह्रीँ नमो तवस्स, ए नवमे पदें श्रीतप बारनेदें शोनित, ईशानखूणे विराजमान, श्वेत वर्ण सहित, एवा श्रीतपपदने महारी त्रिकाल वंदना होजो. ए रीतें नव दिवस पर्यंत विधि करवो, ते अहीआं संक्षेपें कह्यो. विस्तारें गुर्वादि कथी जाणवो ॥ इति उलिनो संक्षेपविधि समाप्त ॥

हवे विशेषथी नवपद उलि करण आयंबिल तपनो विधि कहे छे. आश्विन तथा चैत्र शुक्ल सप्तमीथी मांमीने पूर्णिमा पर्यंत नव दिवस लगण तप करे. ...

प्रथम तो नूमि शुद्ध करिने मांमणादिकथी चित्रित करे, पछी बाजोठ उपर श्रीसिद्धचक्रजीनी स्थापना करे, तिहां प्रनातसमयें रात्रि पडिक्कमणुं करी वस्त्र पडिलेही सिद्धचक्रजीनी स्थापना पासें आवी पांच शक्रस्तवें देव वांदे, पछी नव देरासरें अथवा नव प्रतिमाजी आगळ नव चैत्यवंदन करे,वासक्षेप पूजा करे, केसरचंदनथी पूजा करे, पछी मध्यान्ह समयें पांच शक्रस्तवें देव वांदे, पछी गुरुनी पासें आवी अब्भुठ्ठिउं मि खमावीने आयंबिलनुं पच्चरकाण करे, तिहां प्रथम दिवसें अरिहंत पदनो वर्ण सपेत छे,माटे आयंबिलमां चोखा अने गरम पाणी ए बे द्रव्य लेवुं, एम पच्चरकीने श्रीअरिहंत पदना बार गुणो छे. ते मांहेला प्रत्येक गुणने चिंतवतो थको एकेक गुणें इच्छामि खमासमणो वंदिउं० इत्यादि कहेतो बार गुणना बार नमस्कार करे, ते आ प्रमाणेंः-

१ श्रीअशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः
२ सुरपुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥
३ दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥
४ चामरयुगलप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०॥
५ स्वर्णसिंहासनप्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
६ नामंमलप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥
७ दुंडुन्जिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥
८ छत्रत्रयप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥
९ ज्ञानातिशयप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः

१० पूजातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
११ वचनातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥

इतिं द्वादश अरिहंतगुणाः ॥ नमस्कार ॥ ए बार गुणोने नमस्कार करीने अन्नछ उससिएणं कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करे,पछी एकलोगस्स प्रगट कहे, पछी स्वस्थानकें जइ चैत्यवंदन करी पच्चरकाण पारीने आयंबिल करे, पहेलुं जेवारें पाणी पिये,तेवारें चैत्यव दन करीने पीये, पछी फरी चैत्यवदन करीने तिविहा र पच्चरकाण करे, अने णमो अरिहंताणं ए पदनुं गु णणुं १००० गुणे. तथा नवपद महात्म्य आश्रयी श्रीश्रीपालराजाजीनुं चरित्र सांभले, अने जेवारें तें संपूर्ण एक प्रहर दिवस रहे, तेवारें त्रीजी वखत पांच शक्रस्तवें देव वांदे, पछी सामायिक लइने दिवस छते पडिक्कमणुं करे, आरतिने समयें धूप दीप कुसुम पूजा करे, अथवा प्रथमथीज आरति अने पूजा प्रमुख करीनें पछी पडिक्कमणुं करे,तेवार पछी सूवानी वखतें वली इरियावहि पडिक्कमी चैत्यवंदन करी राइ संथारानी गाथाउ गुणीने सूवे, अने जिहां सुधी निद्रा न आवे तिहां सुधी नवपदना गुण स्मरण करे॥इति॥

अथ द्वितीय दिवस विधि प्रारंभः ॥

॥ पहेला दिवसमां कहेली रीति प्रमाणें बीजा दिव सें पण प्रभातनी सर्व करणी करीने, श्रीसिद्धपदनो

लाल वर्ण छे,माटे गहुंनी रोटलीनुं आयंबिल करे,अने "ॐ ह्रीं" णमो सिद्धाणं ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणे, तथा श्रीसिद्धपदना आठ गुण छे. तेने चिंतवतो आठ नमस्कार करे, ते आ प्रमाणेंः-

१ श्रीअनंतज्ञानसंयुताय श्री सिद्धाय नमः॥
२ श्रीअनंतदर्शनसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
३ श्रीअव्याबाधगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
४ श्रीअनंतसम्यक्त्वचारित्रगुणसंयुतायश्रीसि० नमः॥
५ श्रीअक्षयस्थितिगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
६ श्रीअरूपिनिरंजनगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः॥
७ श्रीअगुरुलघुगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
८ श्रीअनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥

इति सिद्धस्याष्टौ गुणाः ॥ ए आठ नमस्कार करी, अन्नछवससिएणंनो पाठ कही आठ लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कही पारीने पछी प्रथम दिवसना विधिमां कह्या मुजबनी करणी सर्व अनुक्रमथी करे ॥ इतिद्वितीय दिवसविधिः ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि प्रारंभः ॥

॥ पूर्वोक्त विधि पूर्वक प्रभातनुं कर्त्तव्य करी श्रीआचार्यपद पीले वर्णे छे, माटे चणानी दालनुं आयंबिल करे. " ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं " ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणे, अने आचार्य पदना छत्रीश गुण याद करीने छत्रीश नमस्कार करे, ते आ प्रमाणें.

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः॥
३ युगप्रधानागमसंयुताय श्रीआचार्याय नमः॥
४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
५ गांभीर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
६ धैर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः॥
७ उपदेशगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः॥
१० शीलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
११ अविग्रहगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१२ अविकथकगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः॥
१३ अचपलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नम. ॥
१४ प्रशांतवदनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१५ क्षमागुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः॥
१६ ऋजुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
मृदुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः॥
द्वादशविधतपोगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः
२० सप्तदशविधसंयमगुणसंयुताय श्रीआचार्याय०
२१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२२ शौचगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः॥
२३ अकिंचनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः॥
२४ ब्रह्मचर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

२५ अनित्यभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
२६ अशरणभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
२७ संसारस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय०
२८ एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय०
२९ अन्यत्वभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
३० अशुचिभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
३१ आश्रवभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
३२ संवरभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
३३ निर्जराभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
३४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
३५ बोधिदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः

इति षट्त्रिंशदाचार्यगुणाः॥ए छत्रीश नमस्कार करी अन्नच उससिएणंनो पाठ कही छत्रीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कही पारीने वीजी पण पूर्वोक्त करणी सर्व अनुक्रमथी करे ॥ इति॥

॥ अथ चतुर्थदिवसविधिप्रारंभः ॥

॥ इहां पण प्रभात संबंधि कर्तव्य करी "ॐ ह्रीं णमो उवझायाणं" ए पदनुं वे हजार गुणणुं गुणे. श्रीउपाध्यायजीनो हरितवर्ण छे माटे हरितवर्णे मगनी दाल प्रमुखनुं आयंबिल करे, अने उपाध्यायजीना पच्चीश गुण याद करीने पच्चीश नमस्कार करे, ते लखीयें छैयें.

१आचारांगसूत्रपठनगुणयुक्तायश्रीउपाध्यायायनमः
२ सूयगडांगसूत्रपठनगुण० ३ठाणांगसूत्रपठनगु०
४ समवायांगसूत्रपठन० ५ नगवतीसूत्रपठनगुण०
६ ज्ञातासूत्रपठनगुण० ७ उपासकदशासूत्रपठन०
८ अंतगडदशासूत्रपठन० ९ अणुत्तरोववाइसूत्रप०
१० प्रश्नव्याकरणसूत्रप० ११ विपाकसूत्रपठनगुण०
१२ उत्पादपूर्वपठनगुण० १३ अग्रायणीपूर्वप०
१४ वीर्यप्रवादपूर्वप० १५ अस्तिप्रवादपूर्वप०
१६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठ० १७ सत्यप्रवादपूर्वप०
१८ आत्मप्रवादपूर्वप० १९ कर्मप्रवादपूर्वप०
२० प्रत्याख्यानप्रवादपू० २१ विद्याप्रवादपूर्वप०
२२ अविंध्यप्रवादपूर्व० २३ प्राणायामप्रवादपूर्व०
२४ क्रियाविशालपूर्वप० २५ लोकविंडुसारपूर्व०

इति पंचविंशति उपाध्याय गुणाः ॥ एम पच्चीश नमस्कार करी उन्ना थइ अन्नहउससिएणंनो पाठ कही पच्चीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कही पारीने पूर्वोक्त करणी अनुक्रमथी करे ॥इति॥

॥ अथ पंचमदिवसविधि प्रारंनः ॥

॥ पूर्वली रीतें प्रनातविधि करी "ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं" ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे. साधुपद काले वर्णे छे, माटे अडदनुं आयंबिल करे, अने सर्व साधुपदना सत्तावीश गुण चिंतवतो सत्तावीश नमस्कार करे, ते आ प्रमाणेः—

१ प्राणातिपातविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ मृषावादविरमणव्रत० ३ अदत्तादानविरमणव्र०
४ मैथुनविरमणव्रत० ५ परिग्रहविरमणव्रत०
६ रात्रिभोजनविरमणव्रत० ७ पृथ्वीकायरक्षकाय०
८ अप्पकायरक्षकाय० ९ तेउकायरक्षकाय०
१० वाउकायरक्षकाय० ११ वनस्पतिकायरक्षकाय०
१२ त्रसकायरक्षकाय० १३ एकेंद्रियजीव रक्षकाय०
१४ बेंद्रियजीवरक्षकाय० १५ त्रेंद्रियजीवरक्षकाय०
१६ चौरिंद्रियजीवरक्षकाय० १७ पंचिंद्रियजीवरक्ष०
१८ लोभनिग्रहकायश्रीसा० १९ क्षमागुणयुक्तायश्री०
२० शुभभावनाभावकाय० २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्ध
२२ संयमयोग्ययुक्ताय० २३ मनोगुप्तियुक्ताय०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय० २५ कायगुप्तियुक्ताय श्रीसा०
२६ शीतादि द्वाविंशति परिसह सहन तत्परायश्री०
२७ मरणांतउपसर्ग सहन तत्परायश्रीसाधवे नमः
॥ इति सप्तविंशति साधु गुणाः॥ए रीतें सत्तावीश नमस्कार करी उनो थइ अन्नत्थउससिएणंनो पाठ कही सत्तावीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कही पारे. पछी पूर्वोक्त करणी क्रमथी करे. ए पांच परमेष्ठीना सर्वे मली एकशो अठावीश गुण थाय माटे नोकारवालीना पण १०८ मणीया होय छे॥

॥ अथ षष्ठदिवसविधिप्रारंभः ॥

॥ पूर्वली रीतें प्रभातसंबंधि विधि करीने "ॐ ह्रीं

णमो दंसणस्स " ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे, तथा दर्शनपद सपेत वर्णे ठे,माटे तांदूलनुं आयंबिल करे, अने सम्यक्त्वना सडशठ गुण चिंतवतो सडशठ नमस्कार करे ते कहे ठे.

१ परमार्थ संस्तवरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
२ परमार्थज्ञानसेवनरूप श्रीस०
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप श्रीस०
४ कुदर्शन वर्जनरूप श्रीस० ५ शुश्रूषारूप श्रीस०
६ धर्मरागरूपश्रीस० ७ वैयावृत्त्यरूपश्रीस०
८ अर्हद्विनयरूप स० ए लिङ्गविनयरूप स०
१० चैत्यविनय रूप स० ११ श्रुतविनय रूप स०
१२ धर्मविनय रूप स० १३ साधुवर्ग विनय रूप०
१४ आचार्यविनयरूप० १५ उपाध्यायविनयरूप स०
१६ प्रवचनविनयरूपस० १७ दर्शनविनय रूपस०
१८ संसारे श्री जिनसार मिति चिंतनरूप स०
१ए संसारे श्रीजिनमति सारमितिचिंतन०
२० संसारे जिन मतिस्थित साध्वादिसार मितिचिंत०
२१ शंकादूषणरहिताय० २२ कांक्षादूषणरहिताय०
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्दर्शनायनमः ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषणरहितायसद्दर्शनायनम. ॥
२५ तत्परिचय दूषण रहितायसद्दर्शनायनमः ॥
२६ प्रवचनप्रनावकरूपस० २७ धर्मकथाप्रनावकरू०
२८ वादिप्रनावकरूपस० २ए नैमित्तिकप्रनावकरूप०

३० तपस्वि प्रनावक रूप स०
३१ प्रज्ञप्त्यादि विद्यान्वृत प्रनावक रूप स०
३२ चूर्णांजनादि सिद्ध प्रनावक रूप स०
३३ कविप्रनावक रूप सद्दर्शनायनमः ॥
३४ जिनशासने कौशल्यनूषण रूप स०
३५ प्रनावनान्नूषण रूप०
३६ तीर्थसेवा नूषण रूप०
३७ स्थैर्यनूषण रूप स०
३८ जिनशासने नक्ति नूषण रूप स०
३९ उपशम गुणरूप स०
४० संवेग गुणरूप स० ४१ निर्वेद गुणरूप स०
४२ अनुकंपा गुणरूप० ४३ आस्तिक्य गुण रूप०
४४ परतीर्थिकादि वंदन वर्ज्जनरूप स०
४५ परतीर्थिकादि नमस्कार वर्ज्जनरूप स०
४६ परतीर्थिकादि आलाप वर्ज्जनरूप सद्दर्शनाय०
४७ परतीर्थिकादि संलाप वर्ज्जनरूप स०
४८ परतीर्थिकादि अशनादि दानवर्ज्जनरूप स०
४९ परतीर्थिकादि गंध पुष्पादि प्रेपण वर्ज्जन रू०
५० राजान्नियोगाकार युक्त स०
५१ गणान्नियोगाकार युक्त स०
५२ बलान्नियोगाकारयुक्त० ५३सुरान्नियोगाकारयुक्त०
५४ कांतारवृत्त्याकारयुक्त० ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त०
५६ सम्यक्त्वचारित्रं धर्मस्य मूलमितिचिंतनरूप० ॥
५७ चारित्रं धर्मपुरस्य द्वारमिति चिंतनरूपस०

५८ चारित्रं धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन रूप०
५९ चारित्रं धर्मस्याधार इति चिंतन रूपस०
६० चारित्रं धर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप०
६१ चारित्रं धर्मस्य निधिसन्निभमिति चिंतनश्रीस०
६२ अस्ति जीव इतिश्रद्धानस्थानयुक्ताय श्रीस०
६३ सच जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थानयुक्तायस०
६४सच जीवः कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयुक्ताय
६५ स च जीव' कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्था०
६६ जीवस्यातिनिर्वाणमितिश्रद्धानस्थानयुक्तायस०
६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धानस्थानयुक्तायस०

इति सप्तषष्टिर्दर्शनस्य गुणाः ॥ ए रीतें सडशठ नम स्कार करी जनो थइ अन्नब उससिएणंनो पाठ कही सडशठ लोगस्स अथवा शक्तिने अनावें सात लोगस्स नो काउस्सग्ग करी एकलोगस्स प्रगट कही पारीने पछी पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति षष्ठदिवस विधिः ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि प्रारंभः ॥

॥ प्रनात संबंधि विधि करी "ॐह्रीं णमो नाणस्स" ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे,ज्ञानपद उज्ज्वल वर्णेछे. माटे तदूभनुं आयंबिल करे, पछी ज्ञानपदना एका वन नेदचितवतो नमस्कार करे, ते लखीयें छैयें.

१ स्पर्शनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥

४ श्रोत्रेंद्रियव्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
५ स्पर्शनेंद्रियअर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
६ रसनेंद्रिय अर्थावग्रह मतिज्ञानायनमः ॥
७ घ्राणेंद्रिय अर्थावग्रह मतिज्ञानायनमः ॥
८ चक्षुरिंद्रिय अर्थावग्रह मतिज्ञानायथमः ॥
९ श्रोत्रेंद्रिय अर्थावग्रह मतिज्ञानायनमः ॥
१० मनोरथावग्रहमति० ११ स्पर्शनेंद्रियईहामति०
१२ रसनेंद्रिय ईहामति० १३ घ्राणेंद्रियईहामति०
१४ चक्षुरिंद्रिय ईहा मति० १५ श्रोत्रेंद्रियईहामति०
१६ मनोरिंद्रियईहामति० १७स्पर्शनेंद्रियअपायम०
१८ रसनेंद्रियअपायमति० १९ घ्राणेंद्रियअपायम०
२० चक्षुरिंद्रियअपायमति० २१ श्रोत्रेंद्रियअपायम०
२२ मनोरिंद्रियअपायमति० २३स्पर्शनेंद्रियधारणा०
२४ रसनेंद्रियधारणाम० २५ घ्राणेंद्रियधारणाम०
२६ चक्षुरिंद्रियधारणाम० २७ श्रोत्रेंद्रियधारणा म०
२८ मनोधारणामति० २९ अक्षरश्रुतज्ञानायनमः
३० अनक्षरश्रुतज्ञाना० ३१ संज्ञिश्रुतज्ञानायनम०
३२ असंज्ञिश्रुतज्ञा० ३३ अम्यक् श्रुतज्ञाय०
३४ मिथ्याश्रुतज्ञानायन० ३५ सादिश्रुतज्ञानायन०
३६ अनादि श्रुतज्ञाना० ३७ सपर्यवसितश्रुतज्ञा०
३८ अपर्यवसित श्रुतज्ञा० ३९ गमिक श्रुतज्ञाना०
४० अगमिक श्रुतज्ञा० ४१ अंगप्रविष्ट श्रुतज्ञा०
४ ... ४ ...

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ४७प्रतिपाति अवधिज्ञा०
४७ अप्रतिपाति अव० ४ए रुजुमति मनःपर्यव ज्ञा०
५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
५१ लोकालोकप्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥
॥ इति एकपंचाशत् ज्ञानभेदाः ॥ ए रीतें एकावन न मस्कार करी ऊना थइ अन्नत्थ उससिएणंनो पाठ कही एकावन लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लो गस्स कही पारीने पढी सर्व पूर्वोक्त करणी करे. इति ॥

॥ अथ अष्टमदिवसविधिप्रारंभः ॥

॥ प्रथम प्रभात संबंधि विधि करीने "ॐह्रीं णमो चारित्तस्स" ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे, अने चारित्र पद उज्ज्वलवर्णं ठे, माटे तडलनुं आयंबिल करे, तथा सित्तेर भेदना सित्तेर नमस्कार करे, ते कहे ठे.

१ प्राणातिपात विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
२ मृषावादविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
३ अदत्तादानविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
४ मैथुनविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
५ परिग्रहविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
६ क्षमाधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
७ आर्यवधर्मरूपचारि० ७ मृडुताधर्मरूपचारि०
ए मुक्तिधर्मरूपचारि० १० तपोधर्मरूपचारि०
११ संयमधर्मरूपचारि० १२ सत्यधर्मरूपचारि०
१३ शौचधर्मरूपचारि० १४ अकिंचनधर्मरूपचारि

१५ वंनधर्मरूपचारि० १६ पृथ्वीरक्षासंयमचारि०
१७ उदगरक्षासंयमचारि० १८ तेउरक्षासंयमचारि०
१९ वाउरक्षासंयमचारि० २० वनस्पतिरक्षासं०चा०
२१ बेंद्रियरक्षासं०चारि० २२ तेंद्रियरक्षासं०चा०
२३ चौरिंद्रियरक्षा सं०चा० २४ पंचेंद्रियरक्षा सं०
२५ अजीवरक्षासं०चा० २६ प्रेक्षासंयमचारित्रा०
२७ उपेक्षासंयमचारित्रायनमः ॥
२८ अतिरक्तवस्त्रनक्तादिपरठणत्यागरूपसंयमचा०
२९ प्रमार्जनरूप सं०चा० ३० मनःसंयम चारि०
३१ वचनसंयम चारि० ३२ कायसंयम चारि०
३३ आचार्यवैयावृत्यरूप संयमचारित्रायनमः ॥
३४ उपाध्यायवैयावृत्यरूपसंयमचारित्रायनमः ॥
३५ तपस्विवैयावृत्यरूपसंयमचारित्रायनमः ॥
३६ लघुशिष्यादि वैया० ३७ गिलाणसाधुवैया०
३८ साधुवैयावृत्यरूप० ३९ श्रमणोपासकवैया०
४० श्रीसंघवैयावृत्यरूप० ४१ कुलवैयावृत्यरूप०
४२ गणवैयावृत्यरूप चारित्रायनमः ॥
४३ पशुपंमगादिरहितवसतिवसान ब्रह्मगुप्तिचारि०
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जन ब्रह्मगुप्तिचारित्राय०
४५ स्त्रीआसन वर्जनब्रह्मगुप्ति चारित्राय नमः ॥
४६ स्त्री अंगोपांगनिरीक्षण वर्जन ब्रह्मगुप्त चारि०
४७ कुमयंतरसहित स्त्री हाव नाव श्रवण वर्जनब्र०
४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जन ब्रह्मगुप्तिचारित्रा०
४९ अतिसरसआहारवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः॥

५० अतिआहारकरणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः॥
५१ अंगविभूषावर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥
५२ अणसणतपोरूपचा० ५३ ऊणोदरीतपोरूपचा०
५४ वित्तिसंखेवतपोरू० ५५ रसत्यागतपोरूप०
५६ कायकिलेसतपोरूप० ५७ संलेपणातपो रू०
५८ प्रायश्चित्ततपोरूप० ५ए विनयतपोरूपचा०
६० वेयावच्चतपोरूपचा० ६१ सज्झायतपोरूपचा०
६२ ध्यानतपोरूप चा० ६३ उपसर्गतपोरूप चा०
६४ अनंतज्ञानसंयुक्तचा० ६५अनंतदर्शनसंयुक्तचा०
६६ अनंतचारित्रसंयुक्तचारित्राय नमः ॥
६७ क्रोधनिग्रहकरणचा० ६८ माननिग्रहकरणचा०
६ए मायानिग्रहकरणचा० ७० लोभनिग्रहकरणचा०

॥ इति सप्ततिश्चारित्रभेदाः ॥ ए रीतें सित्तेर नमः॥ स्कार करे;पठी उभो थइ अन्नत्थउससिएणंनो पाठ कही सित्तेर लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही, पारीने पूर्वोक्त करणी सर्व करे॥इत्यष्टम दिवस विधि॰ ॥

॥ अथ नवमदिवसविधिप्रारंभः ॥

॥ प्रथमप्रभात संबंधि विधि करी रह्या पठी "ॐ ह्रीँ णमो तवस्स" ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे,तथा तपपदनो उज्ज्वल वर्ण ठे, माटे तंडुलनुं आयंबिल करे, अने तपना पच्चास भेदना नमस्कार करे, ते लखे ठे.

१ यावत्कथकतपसे नमः २ इत्वरतपोभेदतपसे नम॰
३ बाह्यऊणोदरितपोभेदतपसे नमः ॥

४ अभ्यंतर ऊणोदरि तपोभेद तपसे नमः ॥
५ द्रव्यतपो वृत्तिसंक्षेप तपोभेद तपसे नमः ॥
६ क्षेत्रतपोवृत्तिसंक्षेप तपोभेद तपसे नमः ॥
७ कालतपोवृत्तिसंक्षेप तपोभेद तपसे नमः ॥
८ भावतपोवृत्तिसंक्षेप तपोभेद तपसे नमः ॥
९ कायक्लेश तपोभेद तपसे नमः ॥
१० रसत्याग तपोभेद तपसे नमः ॥
११ इंद्रियकषाययोग विषयकसंलीनता तपसे नमः ॥
१२स्त्रीपशुपंढकादिवार्जितस्थानअवस्थित संलीनता०
१३ आलोयण प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥
१४ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥
१५ मिश्रप्रायश्चित्ततपसेन० १६ विवेक प्रायश्चित्ततप०
१७ उपसर्गप्रायश्चित्ततप० १८ तपःप्रायश्चित्ततप०
१९ भेदप्रायश्चित्त तप० २० मूलप्रायश्चित्ततप०
२१अनवस्थितप्रायश्चित्ततप० २२ पारचियप्रायश्चित्त०
२३ ज्ञानविनयरूप तप० २४ दर्शनविनय रूप तप०
२५ चारित्रविनयरूप० २६गुर्वादिकमनोविनयरूपत०
२७ वचनविनयरूपतपसे० २८ कायविनयरूपतपसे०
२९ उपचारकविनयरूपत० ३० आचार्यवेयावच्चत०
३१ उपाध्यायवेयावच्च त० ३२ साधुवेयावच्च त०
३३ तपस्विवेयावच्चत० ३४ लघुशिष्यादिवेयावच्चत०
३५ गिलाणसाधुवेया० ३६ श्रमणोपासकवेया०
३७ संघवेयावच्च त० [illegible] त०
[illegible]९ गणवेयावच्च त [illegible] से नमः ॥

४१ पृच्छनातपसे नमः ४२ परावर्त्तनातपसे नमः ॥
४३ अनुप्रेक्षातपसे नमः ४४ धर्मकथातपसे नमः
४५ आर्त्तध्याननिवृत्त त० ४६ रौद्रध्याननिवृत्त त०
४७ धर्मध्यानचिंतन त० ४८ शुक्ल ध्यान चिंतन त०
४९ बाह्य उपसर्ग त० ५० अभ्यंतर उपसर्ग त०

॥ इति पंचाशत् तपोभेदाः ॥

॥ ए रीतें पच्चास नमस्कार करे, पढी अन्नो थइने अन्नञ्च उससिएणंनो पाठ कही पच्चास लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कही पढी प्रथम दिवसमां लख्या मुजब सर्व विधि अनुक्रमें करे. ए विधि लखवामां पृष्ठ ६४८ मध्ये प्रथम दिवसें श्रीअरिहंत पदमां नवमो नमस्कार करतां ज्ञानातिशय संयुताय जोइयें तेने ठेकाणे नूलथी ज्ञानातिशयप्रतिहार्यसंयुताय एम ढपाइ गयेलुं ढे. तथा गुणणुं बे हजारने स्थानकें १००० ढपाई गयुं ढे, ते सुधारी वांचवुं ॥

॥ हवे ए नवपदनुं तप ग्रहण करवा माटे गुरु पासें केवी रीतें जवुं, तेनो विधि कहे ढे.

॥ प्रथम शुन्न दिवस शुन्न घडी शुन्न मूहूर्त्त जोइने सुंदर वस्त्र आनूषण पहेरी ललाटें तिलक करी मान्न अने सरशव मस्तकें धारण करी हाथमां मौलि बांधी अक्षत, सोपारी, श्रीफलादिक अने यथाशक्ति रोकड नाणुं लेइ नवकार गुणतो थको श्रीगुरुनी पासें जइ द्वादशावर्त्त वंदन करी ज्ञान पूजा करे, पढी ५८

मोदवंत थइ गुरुना मुखथकी उली तप ग्रहण करे. ए तपस्याग्रहणवखतपोशालें गुरुपासेंजवानोविधिकह्यो.

॥ अथ श्रीवीशस्थानक तपनो विधि सामान्यथी लखीयें बैयें ॥

॥तिहां प्रथम वैशाख,आषाढ,मार्गशीर्ष अने फागुण ए चार महिना मांहेला कोइ पण महिनामां शुन्न निर्दोष मुहूर्त्त जोइ शुन्न दिवसें नंदीस्थापनापूर्वक सुविहित गुरुनी समीपें वीशस्थानक तप विधिपूर्वक उच्चरे.

एनी एक उली बे महीने अथवा ब महिने पूर्ण करे, कदाचित् ब महीनामां पूर्ण करी न शके तो ते उली गणतीमां न गणाय,फरीथी नवी करवी पडे.

हवे एक उली करतां एना वीश पद बे, माटे कोइक तो वीश दिवसमां वीश पद प्रत्येक दिवसें जूदां जूदां गणे, अने कोइक तो वीशे दिवस सुधी एकज पद गणे, अने वली बीजा वीश दिवसमां बीजुं पद गणे, एवी रीतें वीश पदनी वीश उली करे.

तेमां पद आराधनना दिवसें जो प्रबल शक्तिमान् होय तो अठम तप करीने आराधे, एवी वीश अठमें एक उली पूर्ण करे, तेनी चारशो अठमें वीशे उली पूर्ण थाय. एवी रीतें उत्कृष्टतप आराधे.

तेथी हीनशक्तिवालो होय तो ठठ ठठ तप करी आराधे, वली तेथी हीनशक्तिमान् होय तो चउ उपवासेंकरी आराधे. तेथी हीनशक्तिमंत

होय तो तिविहार उपवासें करी आराधे, तेथी हीन शक्तिवालो होय तो आंबिले करी आराधे, तेथी हीनशक्तिवालो होय तो नीवीयें करी आराधे, तेथी हीनशक्तिवंत एकासणें करी आराधे.

तिहां शक्तिमान् प्राणी सर्व पदाराधनने दिवसें अहोरात्र एटले आठ पहोर पोसह करे, तेथी हीन शक्तिवालो दिवसनो चार पहोरनो पोसह करे. एवी रीतें वीशे पद पोसहथी आराधे,अने जो सर्व पदोने आराधवाना दिवसें पोसह करवानी शक्ति न होय तो पण एक आचार्य पदें, बीजा उपाध्याय पदें, त्रीजा थिविर पदें, चोथा साधु पदें, पांचमा चारित्र पदें छठा गौतम पदें, अने सातमा तीर्थपदें. ए सात थानकें तो पोतें पोतानी हीनता नावतो पोसह करीनेज आराधे, ते पण शक्ति न होय तो ते दिवसें देशावकाशिक करे, सावद्य व्यापारनो त्याग करे, ते पण न थइ शके तो यथाशक्ति तप करी आराधे.

तथा मृतक जातकना सूतकमां जे उपवासादिक तप करे ते गणतीमां गणे नही; अने स्त्री पण ऋतुसमयें तप करे ते गणतीमां गणे नही तथा तपस्याने दिवसें जो पोसहसहित करे, तो वहुज श्रेयस्कर जाणवुं. तेम न बनी शके तो उनयटंक पडिक्कमणा करे.

त्रणे टंक देववंदन करे, एक पदना वे हजार प करे, ब्रह्मचर्य पाले, नूमिशयन करे, त

वसें अत्यंत सावद्य आरंभ न करे, असत्य न बोले, आखो दिवस तपपदनुं गुणकीर्त्तन करतो रहे.

तथा तपना दिवसें पोसह करे, तो पारणाना दिवसें श्रीजिनभक्ति करीने पारणुं करे, अने जो तपना दिवसें पोसह न करे तो ते दिवसें श्रीजिनभक्ति करे, करावे भावना भावे तथा तपना दिवसें जे पदनुं आराधन करतो होय ते पदना जेटला गुणभेद होय ते संख्याप्रमाणें काउस्सग्ग करे, अने तावन्मात्र तद्गुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदना करे ते पदनो महिमा गुण याद करीने उदात्त स्वरें स्तवना करे, हर्षित थको रहे. एवा प्रकारना विधिथी वीशे उली करवी, तथा वीशे उलीमां एकेका पदना उत्सव. महोत्सव,प्रभावना, उजमणां वगेरे श्रीजिनशासननी उन्नतिना हेतुयें करवां जोइयें, पण जो पदें पदें उजमणादि करवानी शक्ति न होय; तो एक उली तो विशेष उत्सव उजमणादिक सहित अवश्य करवी जोइयें. ए सामान्यथी विधि कह्यो.

हवे इहां स्थानक पद आराधक सज्जनोने जाणवाने अर्थें प्रथम श्रीअरिहंत पद आद्यमां छे, माटे तेने आराधवानो विशेष विधि लखी देखाडियें छैयें.

जे दिवसें श्रीवीशस्थानक तप सामान्य प्रकारें उच्चरे, ते दिवसेंज प्रथम श्रीअरिहंत पद विधिपूर्वक उच्चरे, माटे ते दिवसें श्र [illegible] ना [illegible] भक्ति करे.

इहां प्रथम पदें " [illegible] " ए पदनी

वीश नोकरवाली गुणी बे हजार गुणणुं गुणवुं, अने पूर्वोक्त विधि सर्व करवो, तथा श्रीअरिहंतना बार गुण छे ते एकेका गुणने याद करी ते ते गुणना नामोच्चारपूर्वक खमासमणा देइ बार नमस्कार करवा, ते आवी रीतेः—

१ श्रीअशोकवृक्ष प्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते०

२ जानुदघ्नपंचवर्ण पुष्पप्रकरप्रातिहार्यशोभिताय०

३ अतिमधुरद्व्यमाधुर्यतोपि मधुरतमदिव्यध्वनिप्रा०

४ हेमरत्नदंमस्थितजडितअत्युज्ज्वलचामरयुगल वीजितव्यजनक्रिया युक्तसत्प्रातिहार्यशोभिताय०

५ सुवर्णरत्नजडित सदासद्दचारिसिंहासनसत्प्राति०

६ तरुणतरणितेजसोऽप्यतिभास्वरतरतेजोयुक्तभामंमलसत्प्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः ॥

७ दुंदुभिप्रनृत्यनेकआकाशस्थितवादितवाजित्रवादनरूपसत्प्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः ॥

८ मुक्ताजालकुंबनकयुक्तछत्रत्रयसत्प्रातिहार्यशो०

९ स्वपरापायनिवारकातिशयधराय श्रीमदर्हते नमः

१० पचत्रिंशद्गुणयुक्तायसुरासुरदेवेंद्रनरेंद्राणां पूजातिशयधराय श्रीमदर्हते नमः ॥

११ सर्वभाषानुगामिसकलसंशयोच्छेदकवचनातिशयधराय श्रीमदर्हते नमः ॥

१२ लोकालोकप्रकाशकेवलज्ञानरूपज्ञानातिशयैश्वर्यधराय श्रीमदर्हते नमः ॥

एवी रीतें बार खमासमण देइने वांदे. पछी अरिहंतनी स्तवना करे, ते कहे छे.

जय, श्रीअरिहंत, अरुहंत, अर्हंत, देवाधिदेव, परमेश्वर, परमकरुणानिधान, महागोप, महामाहण, महानिर्यामिक, महासत्ववाह, जगद्वैद्य, जिनेश्वर, तीर्थंकर, विश्वंभर, विश्वपति, विश्वोत्तम, त्रिकालवित्, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, देवाधिदेव, पुरुषोत्तम, वीतराग, जगन्नाथ, जगद्बंधु, जगत्तारण, बुद्ध, भगवंत, विश्वानंदी, सहजानंदी, शुद्धचेतनाधर्ममय, व्यक्तस्वभावमय, धर्मरत्नरत्नाकर, धर्मदेशक, भावधर्मदातार, परमात्मा, परमदर्शी परमगुरु, परमोपकारी, परमसंसारतारक, अशरणशरण तरणतारण, भवभयहरण. इत्यादि श्रीअरिहंतनां सहस्र नाम छे, तेनो पाठ करे.

एम अगणितगुणगणालंकृत एवा श्रीमदर्हंतजीने प्रतिक्षणें महारी वंदना हो; त्राण शरण गति मति स्थिति सर्व श्रीअरिहंतजी छे. एहज श्रद्धा महारी सफल हो, एवी रीतिथी स्तवना करे.

तथा तेज दिवसें बार गुण छे माटे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, रात्रि दिवस व्यवहारें ए श्रीअरिहंतनो श्वेतवर्ण ध्यावे, अरिहंतना गुण कीर्तनमां रहे, पारणाने दिवसें बहुद्रव्य निष्पन्न यथाशक्ति अष्टप्रकारी, सत्तरप्रकारी, एकवीशप्रकारी, अष्टोत्तरी प्र

पूजा भक्तिपूर्वक करे, नवा मुकुटकुंमलादि चढावे, रत्नतिलक चढावे, अंगलूहणां, चंद्रुआ

चढावे, समवसरण रचना करे, त्रिगडा उपर प्रभु
जीने विराजमान करे, मंत्रपवित्र धान्यें करी प्राकार
समवसरण रचना करे, इंद्रध्वजा चढावे, रूप्यमय
अक्षतमय अष्टमांगलिक चढावे, शुभवर्ण शुभगंधवालां
पुष्पादिक चढावे, द्रव्यजंमारामां मूके, केवलज्ञाननो
उत्सव करे, विविध प्रकारनां पक्कान्न ढोवे, जिनबिंब
जरावे, चैत्य करावे, एवा विधियें करी छ मासपर्यं
त श्रीअरिहंत पदने आराधे. इति प्रथम पदाराधना॥

ए प्रथम पदनो विधि कह्यो. एवीज रीतें विधि
प्रपाग्रंथ उपरथी अत्यंत विस्तारपूर्वक चौदमा पद सु
धीनो विधि तो पूर्वें कोइ महापुरुषनो रचेलो ग्रंथ मह्या
री पासें छे, तेमां लखेलो छे; अने पाछला छ पदनो विधि
कोइ गीतार्थना सहायथी लखी तैयार करत, पण
तेटलो विधि आमां दाखल करवाथी आ पुस्तकना
सुमारे १२५ पृष्ठ जराइ जात; तेथी ग्रंथ घणो म
होटो थइ जाय, तेमज एटला विधि पूर्वक तपश्चर्या
करनार श्रावक जाइउंनी संख्या पण स्वल्प छे, माटे
थोडानेज खपमां आवे, एवा हेतुथी ते विधि आ
पुस्तकना पाछल छापवामां आवनारा बीजा अथ
वा त्रीजा जागमां दाखल करवानो विचार राखी
ने हालमां वीशे पदनो संक्षेपविधि नीचें दाखल करे
लो छे विस्तार विधिना इछक जव्यजीवोएं पद पद
नो विधि गुरुमुखथी धारीने तप आराधन करवुं.

एवी रीतें बार खमासमण देइने वांदे. पछी अरि हंतनी स्तवना करे, ते कहे छे.

जय, श्रीअरिहंत, अरुहंत, अर्हंत, देवाधिदेव, परमेश्वर, परमकरुणानिधान, महागोप, महामाहण, महानिर्यामक, महासत्थवाह, जगद्वंद्य, जिनेश्वर, तीर्थंकर, विश्वंभर, विश्वपति, विश्वोत्तम, त्रिकालवित्, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, देवाधिदेव, पुरुषोत्तम, वीतराग, जगन्नाथ, जगद्बंधु, जगत्तारण, बुद्ध, भगवंत, विश्वानंदी, सहजानंदी, शुद्धचेतनाधर्ममय, व्यक्तस्वभावमय, धर्मरत्नरत्नाकर, धर्मदेशक, भावधर्मदातार, परमात्मा, परमदर्शी परमगुरु, परमोपकारी, परमसंसारतारक, अशरणशरण तरणतारण, भवभयहरण. इत्यादि श्रीअरिहंतनां सहस्र नाम छे, तेनो पाठ करे.

एम अगणितगुणगणालंकृत एवा श्रीमदर्हंत जीने प्रतिक्षणें महारी वंदना हो; त्राण शरण गति मति स्थिति सर्व श्रीअरिहंतजी छे. एहज श्रद्धा महारी सफल हो, एवी रीतिथी स्तवना करे.

तथा तेज दिवसें बार गुण छे माटे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, रात्रि दिवस व्यवहारें ए श्रीअरिहंतनो श्वेतवर्ण ध्यावे, अरिहंतना गुण कीर्तनमां रहे, पारणाने दिवसें बहुद्रव्य निष्पन्न यथाशक्ति अष्टप्रकारी, सत्तरप्रकारी, एकवीशप्रकारी, अष्टोत्तरी प्र पूजा भक्तिपूर्वक करे, नवा मुकुटकुंडलादि । चढावे, रत्नतिलक चढावे, अंगलूहणां, चंद्रुआ

चढावे, समवसरण रचना करे, त्रिगडा उपर प्रजु जीने बिराजमान करे, मंत्रपवित्र धान्यें करी प्राकार समवसरण रचना करे, इंद्रध्वजा चढावे, रूप्यमय अक्षतमय अष्टमांगलिक चढावे, शुजवर्ण शुजगंधवालां पुष्पादिक चढावे, इव्यजंमारामां मूके, केवलज्ञाननो उत्सव करे, विविध प्रकारनां पक्वान्न ढोवे, जिनबिंब नरावे, चैत्य करावे, एवा विधियें करी ठ मासपर्यंत श्रीअरिहंत पदने आराधे. इति प्रथम पदाराधना॥

ए प्रथम पदनो विधि कह्यो. एवीज रीतें विधि प्रपाग्रंथ उपरथी अत्यंत विस्तारपूर्वक चौदमा पद सुधीनो विधि तो पूर्वे कोइ महापुरुषनो रचेलो ग्रंथ मह्यारी पासें ठे, तेमां लखेलो ठे, अने पाठला ठ पदनो विधि कोइ गीतार्थना सहायथी लखी तैयार करत, पण तेटलो विधि आमां दाखल करवाथी आ पुस्तकना सुमारे १२५ पृष्ठ नराइ जात; तेथी ग्रंथ घणो महोटो थइ जाय; तेमज एटला विधि पूर्वक तपश्चर्या करनार श्रावक नाइननी संख्या पण स्वल्प ठे, माटें थोडानेज खपमां आवे; एवा हेतुथी ते विधि आ पुस्तकना पाठल ठापवामां आवनारा बीजा अथवा त्रीजा नागमां दाखल करवानो विचार राखीने हालमां वीशे पदनो संक्षेपविधि नीचें दाखल करेलो ठे विस्तार विधिना इज्ञक नव्यजीवोएं पद पदनो विधि गुरुमुखथी धारीने तप आराधन करवुं

तिथि संविजाग करवो; तथा एमना सत्तावीश गुण छे,माटे सत्तावीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करीयें.

८ 'णमो नाणस्स' ए पदनुं वे हजार गुणणुं गुणवुं, ज्ञान जणवुं जणाववुं, ज्ञाननी जक्ति विशेष करवी, वखाण सांजलवां, पागादिक आगलनां पदोनुं आराधन करती वखतें लइ राखेलां होय ते तिहां न देवाणां होय तो आ पद आराधननी वखतें आपी देवां. ज्ञाननो विजाग कहाडवो, तथा ज्ञानना मत्यादिक पांच जेद छे, माटे पांच लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

ए 'णमो दंसणस्स' ए पदनुं वे हजार गुणणुं गुणवुं, शंकादि दूषण टाली शुद्धमनें शुद्ध समकित पालवुं, आरंज वर्ज्जवो, कायायें करीने सचित्त वस्तु आजडवी नही, अन्य तीर्थीना देव, गुरु अने धर्मना सन्मान सत्कार पूजा अनुमोदना करवानो त्याग करवो, यथाशक्ति मोदक देवा; तथा ए पदना सडशठ जेद छे, माटे सडशठ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

१० 'णमो विणय संपन्नाणं' ए पदनुं वे हजार गुणणुं गुणवुं, आचार्य. उपाध्याय, साधु, तपस्वी,गिलाण प्रमुख वडेरानो अन्युछानादिकें विनय करवो, काउस्सग्ग दश लोगस्सनो करवो.

११ 'णमो चारित्तस्स' ए पदनुं वे हजार गुणणुं गुणवुं, उजयकाल पडिक्कमणुं करवुं, वारंवार

सामायक विशेष पञ्चक्खाण करवुं, चारित्रनां उप करण जे उंघो, मुहपत्ति,दशी, पडघा प्रमुख ते यथाशक्तियें आपवां,काउस्सग्ग ठ लोगस्सनो करवो.

१२ 'णमो बंभवयधारिणं, ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणीयें तथा नववाड विशुद्ध त्रिकरण शुद्धें करी ब्रह्मचर्य पालियें, सूधुं शील पालीयें, स्त्री साहामुं दृष्टें पण जोवुं नही, विकथा निद्रा टालवी, ब्रह्मव्रत धारकने जमाडवा, तथा यथाशक्तियें वस्त्रादिकनी पहेरामणी करवी, काउस्सग्ग नव लोग्गस्सनो करवो.

१३ 'णमो किरियाणं' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं, अहोरात्र खरो पोसह पालवो, निद्रा विकथा न करवी, पारणे गुरुने किरियाणुं देवुं, काउस्सग्ग पच्चीश लोगस्सनो करवो.

१४ 'णमो तवस्सीणं' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं, विशेष तप करवुं, पारणें सचित्त वस्तु टालवी, तपस्वीनी भक्ति वीसामणा करवी; काउस्सग्ग बार लोगस्सनो करवो.

१५ 'णमो गोयमस्स' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं, सात क्षेत्रें यथाशक्तियें द्रव्य खरचवुं, गुरुने पडगो वोहोरावषो, श्रीगौतमस्वामीनी पूजा वासक्षेपथी करवी, प्रथम पारणे पडगो पूजीने खीर खांडनुं भोजन करवुं, यथाशक्तियें साहामिवात्सल,संघपूजा करवी,तथा अठावीश लब्धिने,

तिथि संविभाग करवो; तथा एमना सत्तावीश गुण छे, माटे सत्तावीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करीयें.

८ 'णमो नाणस्स' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, ज्ञान भणवुं भणाववुं, ज्ञाननी भक्ति विशेष करवी, वखाण सांभळवां, पाठादिक आगळनां पदोनुं आराधन करती वखतें लइ राखेलां होय ते तिहां न देवाणां होय तो आ पद आराधननी वखतें आपी देवां. ज्ञाननो विभाग कहाडवो, तथा ज्ञानना मत्यादिक पांच भेद छे, माटे पांच लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

९ 'णमो दंसणस्स' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, शंकादि दूषण टाळी शुद्धमनें शुद्ध सकित पाळवुं, आरंभ वर्जवो, कायायें करीने चित्त वस्तु आभडवी नही, अन्य तीर्थीना देव गुरु अने धर्मना सन्मान सत्कार पूजा अनुमोदना करवानो त्याग करवो, यथाशक्ति मोदक देवा, तथा ए पदना सडशठ भेद छे, माटे सडशठ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

१० 'णमो विणय संपन्नाणं' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, आचार्य. उपाध्याय, साधु, तपस्वी, गिलाण प्रमुख वडेरानो अभ्युत्थानादिकें विनय करवो, काउस्सग्ग दश लोगस्सनो करवो.

११ 'णमो चारित्तस्स' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, उभयकाळ पडिक्कमणुं करवुं, वारंवार

करवुं, चारित्रनां उप
दशी, पडघा प्रमुख ते य
,काउस्सग्ग ब लोगस्सनो करवो.
, ए पदनुं गुणणुं बे हजा
तथा नववाड विशुद्ध त्रिकरण शुद्धे
ब्रह्मचर्य पालियें, सूधुं शील पालीयें, स्त्री
सुं दृष्टे पण जोवुं नही, विकथा निद्रा टा
, ब्रह्मव्रत धारकने जमाडवा, तथा यथाश
वस्त्रादिकनी पहेरामणी करवी, काउस्सग्ग
व लोगस्सनो करवो.

णमो किरियाणं ' ए पदनुं गुणणुं बे हजार
गुणवुं, अहोरात्र खरो पोसह पालवो, निद्रा
विकथा न करवी, पारणे गुरुने किरियाणुं देवुं,
काउस्सग्ग पच्चीश लोगस्सनो करवो.

' णमो तवस्सीणं ' ए पदनुं गुणणुं बे हजार
वुं, विशेष तप करवुं. पारणें सचित्त वस्तु
वी, तपस्वीनी नक्ति वीसामणा करवी; का
स्सग्ग बार लोगस्सनो करवो.

मो गोयमस्स ' ए पदनुं गुणणुं बे हजार
वुं, सात क्षेत्रें यथाशक्तियें द्रव्य खरचवुं, गु
डगो वोहोरावचो, श्रीगौतमस्वामीनी पूजा
पथी करवी, प्रथम पारणे पडगो पूजीने
ामनुं नोजन करवुं, यथाशक्तियें साहामि
न,संघपूजा करवी,तथा अठावीश लब्धिवे,

सामायक विशेषादिक देवां, काउस्सग्गें दश जो
करण जे उंघो, ; अने सूत्रना पीस्तालीश नेद आ
थाशक्तियें आनीश लोगस्सनो काउस्सग्ग जो थई
१२ ' एमो वंजत्कृष्ट नांगे ते पण करवो.
र गुणी तिन्नस्स ' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुण
करी श्रीजिनशासननी प्रनावना करवी, सिद्धांत
सादव्याख्यानावसरें प्रनावना करवी, दिवसनो
लसंहृ करवो, पुंमरीकगिरिकादिक पांच तीर्थे
तिटे पांच लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.
नरीतें जो गुरुनो योग होय तो तेमना मुखथी
१३ एण लइने विस्तार सहित वीश स्थानक पदनुं
आराधन विधि पूर्वक करे, अने जो गुरुनो योग न
तो महोटा विवेक सहित आ प्रमाणोंनी
चनाने अनुसारें विधि जोइने करे, वीश स्थान
स्तवन नणे अथवा सांनले, वीश स्थानकनी
गुण वीश वीश बधी जातिनां ज्ञानना उपकर
टालना उपकरणो करावे, जे देवद्रव्य
उत्तपदखाते खरचे, अने ज्ञानद्रव्य होय ते
१५ ' एां लगावे, तथा
गुणतीर्थोनी यात्रा यथाशक्ति करे,
रुने प पूर्ण थाय पछी ...
वासक्षेप करे,
खीर खरु नावथी
वात्सकरे, ते श्रीजिननामकर्म

करी त्रीजे जवें अनंत सुख जिहां ने एहवुं मोक्षरूप स्थानक पामे ॥ इति वीशस्थानक तप विधिः समाप्तः ॥

अथ जव्यजीवोने आदरवा योग्य बीजा पण केटलाएक तपना प्रकार लखीयें बैयें.

॥ जे अशुजकर्मोने तपावे, तेने तप कहियें. ते तप अनेक प्रकारें बे, तेमांथी केटलाएक प्रकार इहां लखीयें बैयें. सर्व तपमां मूल इंडियजयनामा तप ले. कारण के, श्रीवीतरागनो धर्म पण एवेज नामें ले, यद्यपि श्रीजिनशासनने विषे जे जे प्रकारनां तप ले, ते ते सर्व इंडियना जयनां करनारांज ले, तथापि पूर्वाचार्यें सर्व तपमां प्रथम इंडियजय एवे नामें तप कह्युं ले, माटे तेनुं स्वरूप आदिमां लखीयें बैयें.

१ इंडियजयतपः— ए लोकप्रसिद्ध ले. एमां पहेले दिवसें पुरिमट्ट, बीजे दिवसें एकासणुं, त्रीजे दिवसें नीवी, चोथे दिवसें आयंबिल, अने पांचमे दिवसें उपवास, ए पांच दिवसें एक इंडियना जयने माटें एक उली थाय. एवीज रीतें पांचे इंडियनुं दमन करवा माटे पांच उली करवाथी ए तप पच्चीश दिवसें पूर्ण थाय ले. उजमणे पच्चीश लाडु पुस्तक आगल मूकीयें, यथाशक्तियें पुस्तकने पहेरामणी करीयें.

ए रीतें इंडियजय कस्या उपरांत मनादिक त्रण योगना व्यापारनी शुद्धि एटले निरवद्य पणुं करवुं जोइयें, माटे बीजुं योगशुद्धिनामा तप कहे ले.

२ योगशुद्धि तपः—पहेले दिवसें नीवी,बीजे दिवसें आयंबिल अने त्रीजे दिवसें उपवास,एवी त्रण ओली जा गठ करियें,तेवारें नव दिवसें तप पूर्ण थाय, उजमणें देवपूजा तथा पुस्तकपूजा करवी.अष्टमांगलिक करवां.

हवे योगशुद्धि थयेथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी प्राप्ति थाय, तो भली जाणवी, माटे ज्ञानादिक त्रणनुं तप कहे छे तेमां ज्ञान मुख्य छे माटे ते प्रथम कहियें छे.

३ ज्ञान तपः— अठम तप करवुं,अने शक्ति न होय तो एकांतरे त्रण उपवासनी ओली एक करवी. उज मणें सिद्धांतपुस्तकनी पूजा करवी, पुस्तकने वीट णा प्रमुखनी पहेरामणी करवी. ज्ञानवत पुरुषनी वस्त्र पात्र अन्नपानादिकें भक्ति करवी सूत्र सिद्धांत प्रकरण लखाववाने माटे द्रव्य खरचवुं.

४ दर्शन तपः— अठम तप करवुं, शक्तिने अभावें एकांतरे त्रण उपवासनी एक ओली करवी, उजमणे भगवंतनी पूजा करवी. दर्शन प्रभावक संमत्यादि क महान् ग्रंथोनी पूजा करवी

५ चारित्र तपः— अठम तप करवुं, शक्तिने अभा वें एकांतरे त्रण उपवासनी एक ओली करवी, उजमणें गुरुनी नवांगें पूजा करवी, चारित्रीयानी भक्ति करवी.

हवे ज्ञानादिक त्रणनो धणी क्रोधादिक चार कषायनो जय करे, तो भलुं, माटे कषायजयनामा तप करे, ते कहे छे.

६ कषायजय तपः— प्रथम दिवसें एकासणुं, बीजे दिवसें नीवी, त्रीजे दिवसें आयंबिल अने चोथे दिवसें उपवास, एवी एक उलीयें एक कषायनो जय करतां चार उलियें चतुःकषायजयनामा तप शोल दिवसें पूर्ण थाय. उजमणे देवनी आगल शोल लाडु मूकवा.

हवे ज्ञानादिक त्रणनो धणी चार कषायनो जय करीने पछी विविध प्रकारनां तप करे, ते मांहेलुं प्रथम कर्मसूदननामा तप कहे छे.

७ अष्टकर्मसूदन तपः— पहेले दिवसें उपवास, बीजे दिवसें एकासणुं, त्रीजे दिवसें एकल सीथुं, चोथे दिवसें एकलठाणुं, पांचमे दिवसें एकलदत्ति, छठे दिवसें नीवी, सातमे दिवसें आयंबिल, आठमे दिवसें आठ कवल, एवी आठ कर्मने सूडवाने आठ उली करीयें तेवारें चोशठ दिवसें ए तप पूर्ण थाय. एना उजमणामां रूपानुं वृक्ष तथा सोनानो कूहाडो देवनी आगल कर्मरूप तरुवर छेदवाने अर्थें ढोइयें, पुस्तकपूजा करियें, यतिने दान आपियें.

८ लघुसिंहनिःक्रीडिततपः— जेम सिंह चाल्यो जतो होय ते वली कांइक दूर जइने फरी पाछो आगला प्रदेश तरफ महोढुं करीने जूए छे,तेनी परें इहां पण जे तप प्रथम कर्युं होय, तेनुं पारणुं करीने वली पण फरी आगला तपनुं आसेवन करे, माटे एने ·क्रीडित तप कहियें. अने एनी आगलें जे महा डित तप कहेशे तेनी अपेक्षायें ए न्हानुं छे,

माटे ए लघुसिंहनिःक्रीडित कहियें, ते आ प्रमाणेः– प्रथम एक उपवास करी पारणुं करे, वली बे उपवास करी पारणुं करे, एम सर्वत्र उपवासें आगल पारणुं समजी लेवुं. पछी एक उपवास, त्रण, बे, चार, त्रण, पांच, चार, छ, पांच, सात, छ, आठ, सात, नव, आठ, नव, सात, आठ, छ, सात, पांच, छ, चार, पांच, त्रण, चार, बे, त्रण, एक, बे, एक, एवी रीतें उपवासो करवाथी एकशो ने चोपन दिवस उपवासना थाय, अने तेत्रीश पारणाना दिवसो थाय. जुमले दिन १८७ ना छ महीना अने सात दिवसें एक परिपाटीयें एक श्रेणी थाय. एवी चार श्रेणी करीयें तेवारे बे वर्षने अठावीश दिवसें ए तप पूर्ण थाय छे. तिहां पारणाने दिवसें पहेली श्रेणियें विगयसहित सर्वकामगुणित रसोपेत जमे, बीजी श्रेणियें नीवी जमे, त्रीजी श्रेणियें जे चीज खातां थकां हस्त पात्र प्रमुखनें लेप लागे नही, एवी अलेपकारी चीज वाल चणाकादिक जमे, अने चोथी श्रेणिना पारणाने दिवसें आयंबिल करे. इति लघुसिंह० ॥

ए महासिंहनिःक्रीडिततप कहे छेः–एमां पण पूर्वोक्त लघुसिंहनिःक्रीडित तपनी पेरें एक, बे, एक, त्रण, बे, चार, त्रण, पांच, चार, छ, पांच, सात, छ, आठ, सात, नव, आठ, दश, नव, अगीआर, दश, बार, अगीआर, तेर, बार, चौद, तेर, पन्नर, चौद, शोल, पन्नर अने शोल उपवास. एनेज वली पाछा विपरीत

त्रण उपवास करवा. एवों करी काह्लिकानी नीचें दाडिम पुष्प उत्पन्न थाय छे. त्यार पछी एक उपवास करीयें. पछी वे, त्रण, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, अगीयार, बार, तेर, चौद, पन्नर अने शोल, एवी रीतें एकथी मांडीने चडते चडते शोल पर्यंत उपवास करवा थकी दाडिमना पुष्पनी नीचें एक सेरिका थाय छे. त्यार पछी चोत्रीश अठ्ठम एटले चोत्रीश वखत त्रण त्रण उपवास करवा थकी नीचेनुं एक पदक उत्पन्न थाय छे. तेवार पछी वली शोल उपवास, पन्नर, चौद, तेर, बार, अगीआर, दश, नव, आठ, सात, छ, पांच, चार, त्रण, वे अने एक पर्यंत उपवास करवाथकी बीजी वाजुनी सेर थाय छे, तेवार पछी वली आठ अठ्ठम करवाथकी बीजा दाडमनां पुष्प उत्पन्न थाय छे, पछी वली त्रण उपवास, वे उपबास अने एक उपवास करवाथकी बीजी काह्लिका उत्पन्न थाय छे. एवा आनूपणाकार थये छते प रिपूर्ण रत्नावलीतप सिद्ध थाय छे. ए तपने विषे सर्व मली काह्लिकाना तपना दिवस वार, तथा वे वाजुना दाडिमना पुष्प संवंधि तपना दिवस अडतालीश, त[illegible] संवंधि त

थाय. एवी चार परिपाटीयें ए तप पूर्ण थाय. तेवारें पांच वर्ष,नव मास अने अढार दिवसनी संख्या थाय ठे. उजमणे रत्नमय हार आपवो ॥ इति ॥

११ कनकावलि तप कहे ठेः— ए पण सुवर्णमय मणिउथी उत्पन्न थयेलुं नूषण होय तेने कनकावली कहीयें. एनी थापना पण रत्नावलिना तपनी पेठेंज करवी; परंतु एटलुं विशेष जे मात्र दाडिमना पुष्प अने पदकने विषे जे त्रण त्रण उपवासनी स्थापना करी ठे, ते स्थानकें आमां वे वे उपवासनी स्थापना करवी,एनी पण चार परिपाटी करतां पांच वर्ष वे मास ने अगावीश दिवस उपर थतां ए तप पूर्ण थाय उजमणे सुवर्णमय हार अने सुवर्ण अक्षर मय पुस्तक करवां. इहां प्रथम लघुसिंहनिःक्रीडित तथा महासिंहनिःक्रीडित नामा जे तप कह्युं, तेमां जे प्रमाणें पारणानो विधि कह्यो, तेहज विधि ए मुक्तावलि तथा रत्नावलि अने कनका वलि ए त्रणे तपने विषे जाणवो. ए पांचे तपनो पारणासंबंधि विधि सरखो जाणवो.

१२ हवे नद्रप्रतिमा संबंधि तप कहे ठेः—प्रथम एक उपवास पठी वे, त्रण, चार अने पांच, एम पन्नर उपवासें एक लता थाय. हवे बीजी उलीमां त्रण, चार, पांच, एक, वे, एव पन्नर उपवास थाय. तथा त्रीजी उलीमां पांच, एक, वे, त्रण, चार एम पन्नर उपवास थाय, तथा चोथी लतामां वे, त्रण चार, पांच अने एक एवं पन्नर उपवास थाय.

त्रण उपवास करवा. एणें करी काह्लिकानी नीचें दाडिम पुष्प उत्पन्न थाय छे. त्यार पछी एक उपवास करीयें. पछी बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, अगीयार, बार, तेर, चौद, पन्नर अने शोल, एवी रीतें एकथी मांमीने चडते चडते शोल पर्यंत उपवास करवा थकी दाडिमना पुष्पनी नीचें एक सेरिका थाय छे. त्यार पछी चोत्रीश अठ्ठम एटले चोत्रीश वखत त्रण त्रण उपवास करवा थकी नीचेनुं एक पदक उत्पन्न थाय छे. तेवार पछी वली शोल उपवास, पन्नर, चौद, तेर, बार,

थाय. एवी चार परिपाटीयें ए तप पूर्ण थाय. तेवारें पांच वर्ष,नव मास अने अढार दिवसनी संख्या थाय छे. उजमणे रत्नमय हार आपवो ॥ इति ॥

११ कनकावलि तप कहे छेः– ए पण सुवर्णमय मणिर्उथी उत्पन्न थयेलुं नूषण होय तेने कनकावली कहीयें. एनी थापना पण रत्नावलिना तपनी पेठेंज करवी; परंतु एटलुं विशेष जे मात्र दाडिमना पुष्प अने पदकने विषे जे त्रण त्रण उपवासनी स्थापना करी छे, ते स्थानकें आमां बे बे उपवासनी स्थापना करवी,एनी पण चार परिपाटी करतां पांच वर्ष बे मास ने अठावीश दिवस उपर थतां ए तप पूर्ण थाय उजमणे सुवर्णमय हार अने सुवर्ण अक्षर मय पुस्तक करवां. इहां प्रथम लघुसिंहनिःक्रीडित तथा महासिंहनिःक्रीडित नामा जे तप कह्युं, तेमां जे प्रमाणें पारणानो विधि कह्यो, तेहज विधि ए मुक्तावलि तथा रत्नावलि अने कनका वलि ए त्रणे तपने विषे जाणवो. ए पांचे तपनो पारणासंबंधि विधि सरखो जाणवो.

१२ हवे नद्रप्रतिमा संबंधि तप कहे छेः–प्रथम एक उपवास पछी बे, त्रण, चार अने पांच, एम पन्नर उपवासें एक लता थाय. हवे बीजी उलीमां त्रण, चार, पांच, एक, बे, एव पन्नर उपवास थाय. तथा त्रीजी उलीमां पांच, एक, बे, त्रण, चार एम पन्नर उपवास थाय, तथा चोथी लतामां बे, त्रण चार, पांच अने एक एवं पन्नर उपवास थाय.

ज पांचमी ढलीमां चार, पांच, एक, वे अने त्रण, एवं पन्नर उपवास थाय. सरवाले पांच ढलीना पंचो तेर उपवास अने एकेकी लतायें पांच पांच पारणां थाय, तेथी पच्चीश पारणां थाय. मली एकशो दिव सें नद्रप्रतिमातप पूर्ण थाय.

१४ महानद्रप्रतिमा तप कहे छेः—एक, वे, त्रण, चार, पांच, ठ अने सात, ए २७ दिवसें प्रथम ढली थइ. पछी चार, पांच, ठ, सात, एक, वे अने त्रण ए २७ दिवसें बीजी ढली थाय; पछी सात, एक, वे, त्रण, चार, पांच अने ठ, ए त्रीजी ढली. पछी त्रण, चार, पांच, ठ, सात, एक अने वे ए चोथी ढली थइ. पछी ठ, सात, एक, वे, त्रण, चार अने पांच ए पांचमी ढली. ते पछी वे, त्रण, चार, पांच, ठ, सात अने एक, ए ठ्ठी ढली. ते पछी पांच, ठ, सा त, एक, वे, त्रण, अने चार ए सातमी ढली थइ. ए सात ढली तपनी करीयें, तेवारें एकेक ढलीमां अठावीश अठावीश उपवास अने सात सात पार णांना दिवसो गणतां सर्व १९६ उपवास तथा ४९ पारणांना मली २४५ दिवसें तप पूर्ण थाय.

१५ हवे नद्रोत्तरप्रतिमा तप कहे छेः—तिहां पांच, ठ, सात, आठ, अने नव, ए पांत्रीश उपवासें प्रथ म ढली जाणवी. तथा सात, आठ, नव, पांच अ ने ठ, एटला उपवासें बीजी ढली जाणवी. तथा न व, पांच, ठ, सात अने आठ, एटला उपवासें त्रीजी

ढली जाणवी. तथा ब सात, आठ, नव अने पांच, ए चोथी ढली जाणवी. तथा आठ, नव, पांच, ब अने सात, ए पांचमी ढली जाणवी. एम एकेक ढलीयें पांत्रीश उपवास अने पांच पांच पारणां थाय. तेवारें १७५ उपवास थाय. पच्चीश दिवस पारणांना मली बसो दिवसें ए तप पूर्ण थाय बे ॥ इति ॥

१६ सर्वतोनद्र प्रतिमानुं तप कहे बेः—एने विषे पांच, ब, सात, आठ, नव, दश अने अगीयार, ए बपन्न उपवासें प्रथम पंक्ति जाणवी. तथा आठ, नव, दश, अगीआर, पांच, ब अने सात, ए बीजी पंक्ति जाणवी; तथा अगीआर, पांच, ब, सात, आठ, न व अने दश, ए त्रीजी पंक्ति जाणवी तथा सात, आठ, नव, दश, अगीआर, पांच, अने ब, ए चोथी पंक्ति जाणवी; तथा दश, अगीआर, पांच, ब, सात, आठ अने नव, ए पांचमी पंक्ति जाणवी; तथा ब, सात, आठ, नव, दश, अगीआर अने पांच, ए बठी पंक्ति जाणवी. तथा नव, दश, अगीयार, पांच, ब, सात अने आठ ए सातमी पंक्ति जाणवी. एमां ए केक पंक्तियें बपन्न बपन्न उपवास अने सात सात पारणां करतां सात ढलीमां ३९२ उपवास तथा ४९ पारणांना दिवस मली ४४१ दिवसें तप पूर्ण थाय. ए नद्रादिक तपने विषे जे पारणां करवां, ते पूर्वोक्त पांचे तपनी पेरें प्रत्येकें जाणवां. अने धपणुं पण प्रत्येकें जाणवु.

१७ हवे सर्वसंपत्तिसुख नामा तप कहे छेः— जेना आसेववा थकी सर्व कोइ वस्तुनी संपत्ति थाय, समस्त प्रकारनां सुख संपत्तिनी प्राप्ति थाय, माटे एने सर्व संपत्ति सुख एवे नामें तप कहियें. ए तपनो शुक्लपक्ष अथवा कृष्णपक्षना पडवाना दिवसथी आरंभ करीयें, तिहां पडवाने दिवसें एक उपवास करीयें, वली बीजा पक्षना बीजना दिवसथी बे उपवास करियें, वली त्रीजा पक्षना त्रीजना दिवसथी त्रण उपवास करवा. एम ज्यांसुधी छेहेला पूर्णिमाना अथवा अमावास्याना दिवसथी जेवारें पन्नर उपवास करियें, तेवारें सर्व मली एकशोने वीश उपवासें ए तप पूर्ण थाय. एमां जे तिथी भूले ते तिथीने विषे फरीथी उपवास करवो. उजमणें १ २ ० लाडू मंदिरें चढावे; स्नात्रमहोत्सव करे.

१८ रोहिणी नामें तप कहे छेः— सत्तावीश नक्षत्र छे, तेमां प्रथम अश्विनी नक्षत्रथी रोहिणी नामा नक्षत्र ते चोथुं छे, ए रोहिणी नक्षत्र जे दिवसें आवे, ते दिवसें रोहिणी नामक देवता विशेषना आराधवाने अर्थें सात वर्ष अने सात महिना सुधी श्रीवासुपूज्य स्वामीनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा पूजा पूर्वक जे जे दिवसें रोहिणी नक्षत्र आवे, ते ते दिवसें उपवास करीने ए तप करीयें. ए तप अक्षय तृतीयानेदिवसें रोहिणी नक्षत्र आवे,ते दिवसथी कराय छे. उजमणे अशोकवृक्षयुक्त श्रीवासुपूज्यस्वामिनी प्रतिमा करावीप्रतिष्ठा करी देवगृहे स्थापवी.एकशोनेएक मोदकढोकवा.

१ए मौनएकादशी नामा तप कहे छेः– अगीआ
शुक्ल एकादशी सुधी निरंतर एक उपवासें करी श्रु
देवतानी पूजा पूर्वक मौनपणुं धारण करी श्रुतदेवी
आराधवाने अर्थें ए तप करीयें, उजमणें रूपाना
ांट अगीयार तथा जातिजातिनां फल ढोइयें.

२० सर्वांगसुंदर नामा तप कहे छेः– जेनुं आरा
ान करवाथी समस्त अंगने विषे प्रधान सुंदर पणुं
होय तेने सर्वांगसुंदर तप कहियें. एने विषे चांदरडा
क्तने विषे श्रीवीतरागनी पूजापूर्वक आठ उपवास
एकांतरें आयंबिल सहित करीयें, अने क्षमा, मार्दव,
आर्जवादिक नियमोनो पण परिचय करीयें. उजम
णे चतुर्विध श्रीसंघ, देव, अने ज्ञाननी जक्ति करवी.

२१ निरुजशिख नामा तप कहे छेः– निरुज एट
ले नीरोगपणुं तेज जेना फलनी विवक्षायें शिखा ए
टले चोटलीनी पेरें छे, अर्थात् जेनाथी निरोगीपणानी
प्राप्ति थाय तेने निरुजशिख नामा तप कहीयें.एने विषे
अंधारा पखवाडीयामां एकांतरें आठ आयंबिल अने उ
पवास आठ करीयें,शोलदिवसें तप पूरुं थाय, अने गि
लाननुं वेयावच्च करवानो अभिग्रह करीयें.

२२ परमजूषण तप कहे छेः– जेना करवा थकी
चक्रवर्त्ती आदिक महा पुरुषोने पहेरवा योग्य एवा
उत्कृष्ट हार, कुंमल, केयूरादिक आजरण पामी
यें, तेने परमजूषण तप कहीयें. एनेविषे निरंतर ब
त्रीश आयंबिल करीयें, जो निरंतर न थइ शके, तो ए

वसें चौद कवल, त्रीजना तेर, एम एकेकनी हानि करतां अमावास्यायें एक कवलनो आहार थाय. फरी अजवालिये पखवाडिये पडवाना दिवसें एक केवल, बीजना बे केवल, त्रीजे त्रण कवल, एम दिवसें दिवसें एकेका कवलनी वृद्धि करतां पूर्णिमायें पन्नर कवलनो आहार थाय. एम एक मासें वज्रमध्य प्रतिमा तप पूर्ण थाय. उजमणे रूपानो चंद्रमा अने सोनानुं वज्र आपवुं. कवलनी संख्या प्रमाणें मोदक आपवा. देवपूजा, पुस्तकपूजा अने श्रीसंघनुं वात्सल्य वेहु तपमध्यें यथाशक्तियें करवुं.

२१ आयंबिल वर्द्धमान नामा तप कहे छेः–प्रथम एक आंबिल करी बीजे दिवसें पारणे उपवास करे, पछी बे आंबिल उपर एक उपवास पछी त्रण आंबिल उपर एक उपवास, पछी चार आंबिल उपर एक उपवास,एम वधतां वधतां छेल्ला एक शो आयंबिल करीने तेने पारणे एक उपवास करे. तेवारें सर्व मली एक शो उपवास थाय... पांच हजार ने प

करवुं, एम बीजा मासें बे बे उपवासनी उपर पारणुं करवुं, त्रीजा मासें त्रण त्रण उपवासनी उपर पारणुं करवुं, चोथा मासें चार चार उपवासनी उपर पारणुं करवुं; तेवारें आखा चोथा महीनामां चोवीश दिवस उपवासना थाय, अने छ दिवस पारणांना थाय. एम मासें मासें एकेका चढता उपवासें पारणुं करतां या वत् शोल महीना सुधी ए तप करीयें, तेवारें पन्नर, वीश, चोवीश, चोवीश, पच्चीश, चोवीश, एकवीश, चोवीश, सत्तावीश, त्रीश, तेत्रीश, चोवीश, छवीश, अ ठावीश, त्रीश, बत्रीश, ए अनुक्रमें शोल महीनाने विषे ४०७ तपना दिवसो थाय छे. हवे पारणाना दिवसो प्रत्येक महीना महीनाना कहे छे. पन्नर, दश, आठ, छ, पांच, चार, त्रण, त्रण, त्रण, त्रण, त्रण, बे, बे, बे, बे, बे, सरवाळे ७३ पारणां शोल मही नामां थाय. जे महीनामां अष्टमादिक तपना दिवस पूराय नही, तेवारें आगला महीनाना दिवसो लेवा. सरवाळे ४८० दिवसना शोल महीना थाय निर्जरादि जे गुण तद्रूप जे रत्न ते एने विषे रह्या छे, माटे एने गुणरत्नसंवत्सर तप कहीयें ॥ इति ॥

२४ श्रीचोवीश तीर्थंकरना च्यवन, जन्म, दीक्षा, ज्ञान अने निर्वाण, ए पांच कल्याणिकना एकशो ने वीश दिवसोने विषे उपवासादि तप यथा शक्तियें क रवुं ए तप पूर्ण थयाथी उजमणे कनकसिंहराजानी परें चोवीशे जिनोनी प्रतिमाउ कराववी, तिलक चे

वीश कराववां, पक्कान्न चोवीश, गाजी, कूंपी, कचो
ली प्रमुख पूजानां उपकरण ढोकवां. च्यवन कल्या
णकें परमेष्ठिने नमः ए जाप १००० करवो. जन्में अ
र्हते नमः एनो जाप १००० करवो, दीक्षायें नाथाय
नमः एनो जाप १००० करवो, ज्ञानें सर्वज्ञाय नमः
एनो जाप १००० करवो. अने निर्वाणने दिवसें पारंग
ताय नमः ए जाप १००० करवो. तथा च्यवने साधर्मि
कनी वात्सल्यता. जन्में गोल घृत आपीयें. दीक्षायें
टोपरा गोल वेचीयें. ज्ञानें संघपूजा. अने निर्वाणने
दिवसें महोटी पूजा रचावीयें ॥

३५ लघु पंचमी तपः—पोष अने चैत्रमास वर्जीने
अन्य महीनाउ मांहेला गमे ते महीनामां साधु, सा
ध्वी, श्रावक तथा श्राविकायें लघु पंचमी तप ग्रह
ण करी शुक्ल तथा कृष्ण पंचमीना दिवसें उपवास
करतां एक वर्षमां पच्चीश पंचमीयो करवी. उजमणुं
ज्ञानपंचमीना तप प्रमाणें करवुं.

३६ ज्ञान पंचमी तपः—ए तप पांच वर्ष अने
पांच मास पर्यंत प्रत्येक महिनानी शुक्ल पंचमीयें उ
पवास करवो.तेवारें पांशठ उपवासें ए तप पूर्ण थाय.
ए तप मागशिर, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ अने

लनां वतरणां, कमरजोला, लेखण,कातरणी, पाली, कांबी, चंडुआ,चित्रित पाटांनां जोडां,सोनेरी बिंब, पा नां, सूर्यकांत, ठवणी, नेहरणी, ए सर्व पच्चीश पच्चीश तथा नाणामां सोनइया, रूपइया, वध्ध फदियां, ठक्कड, डुगां,सर्वे पांच पांच करतां पच्चीश नाणां,पुस्तक आगल ढोकवां. तथा पट्टसूत्रना दोरा पच्चीश.इत्यादिक ज्ञानोप करण ढोकवां. तथा पक्वान्न, नीलां सूकां जाति जाति नां फल, नालियेर, कदली, दाडिम, द्राक्षा, साकर, खांम, अंगलूहणां, धूपधाणां, छत्र, चामर, कलश, आरतिमंगल, जालर, घंटा, पडह, भेरी, मृदंग, दांमियादिक, तथा शिलामय, पित्तलमय, रत्नमय, सुवर्णमय, मुक्तामय, विद्रुममय, इत्यादिक धातुना न विन बिंब भरावंवां. ए सर्व वस्तु पांच पांच एकठी करीयें. ए देव आश्रयी कह्यु हवे पोषधशालाउ करा ववी,तथा पांच दीक्षा महोत्सव करावंवा, पांच ध्वजा रोपण, पांच कनककलश, पांच प्रतिष्ठा, पांच यात्रा, पांच वार संघपति पद्द, आचार्यपद, सिंहासन, त्रांबा कूंमी, त्रांबाना हांमा, धोतीजोडा पच्चीश, तथा कचो ली, आरीसा, उरशीया, दीवा, थाल, कंसाल, ति लक, कुंमल, मुकुट, चक्कु, वहेरखा, कचोलां. बीजपू र, तडल. पूगीफल, चरवला, मुहपत्ती, ए सर्व पच्चीश पच्चीश ढोकवां. संघपूजा, साधर्मिकवात्सल्य, रात्रिजा गरण, संघने वस्त्रदान, पहेरामणी, धवलगीत गान, श्राविकाउने साडीनी पहेरामणी,शृंगारदान इत्यादिक

ज्ञानोपभोग्य तथा देवोपभोग्य अने संघोपभोग्यने माटे सर्वसार सार वस्तु लेवी. तथा सर्व प्रकारनां धान्य अने सुवर्ण, रूप्य, मणि, आदिक द्रव्य, ढोकवां. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान. मनःपर्यव ज्ञान आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नछ०॥ कही पच्चीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

२७ श्रीमहावीर तपः—बहोंतेर अर्द्धमासी, नव चउमासी, एक छ मासी, बे त्रिमासी, बे अढिमासी, छ बे मासी, बे दोढ मासी, बार एकमासी, भद्र प्रतिमा दिन बे, महाभद्रप्रतिमा दिन चार, सर्वभद्रप्रतिमा दिन दश, एम भद्रादि प्रतिमाना उपवास शोल तथा अभिग्रह सहित पांच दिवसें ऊणी छमासी एक, व ळीने उगणत्रीश छठ, बार अठम, ए रीतें श्रीमहावी रस्वामीयें छद्मस्थावस्थामां बार वर्ष ने साडा छमास तप कर्युं, तेमां पारणां ३४९ कर्यां, ते रीतें तप करी ने पछी उजमणें अष्टप्रकारी पूजा, गोधूम मण एक, घृत मण अडधो, तथा यथाशक्तें श्रीसंघनुं वात्सल्य करवुं.

२८ गौतम पडघो तपः—पन्नर पूर्णिमा पर्यंत ए काशनादि तप यथाशक्तियें करवां. गौतम स्वामीने दू धपाकनुं नैवेद्य धरवुं. अष्टप्रकारी पूजा करवी. श्री गौतमजीनी प्रतिमाने अभावें श्रीमहावीर प्रतिमानी पूजा करवी. उद्यापनें रूपानो पडघो खीरें भरीने श्री गौतम अथवा वीरनी प्रतिमा आगल ढोकवो. श्रीगु रुजीने अने पात्रां आपवां.

३९ श्रीतीर्थंकर च्यवन जन्म कल्याणक तपः—ए केक तीर्थंकरना च्यवन दिवसें एकेको उपवास करी यें. तेमज जन्म आश्रयी पण पृथक् पृथक् उपवास करतां चोवीश ३ अडतालीश उपवास थाय.

४० श्रीतीर्थंकर दीक्षा तपः—वीश तीर्थंकरें छठ तप कर्यां, माटे तेमनी दीक्षाने दिवसें छठ छठ तप करवां. उपवास चालीश थाय, अने श्रीवासुपूज्य आश्री उपवास एक तथा श्रीमल्लिनाथ अने पार्श्व नाथ आश्री उपवास त्रण त्रण करवा. एवं ४७ उप वास तथा श्रीसुमतिनाथ आश्री एकासणुं करवुं. उजमणे एकासणा पूर्वक मोदक ४८ तथा फल ४८ ढोकवां, अने अष्टप्रकारी पूजा करवी

४१ श्रीतीर्थंकर केवलज्ञान तपः—श्रीआदिनाथ, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, ए चार तीर्थंकर आश्री उपवास, त्रण त्रण करवा. अने श्रीवासुपूज्य आश्री एक उपवास तथा शेष उगणीश तीर्थंकर आश्री वे वे उपवास करवा. सरवाले ५१ उपवास करवा. उजमणे मोदक बावन तथा नैवेद्य, वलि, फलादि, पट्विकृति ढोकवां. अष्टप्रकारी पूजा करवी.

४२ तीर्थंकर निर्वाणतपः—श्रीआदिनाथ निर्वा णने दिवसें उपवास ७ करवा श्रीवीरप्रभु निर्वाणें उपवास वे, अने शेष तीर्थंकरने निर्वाणें एकांतरे उपवास त्रीश त्रीश करवा. उजमणे तिलक चोवीश, पक्वान्न चोवी[illegible] फल चोवीश, श्रीजिन अ

ढोकवां, तथा यथाशक्तियें श्रीसंघनी पूजा करवी.

४३ मोक्ष दंमकतपः—गुरुना हाथमां दांमो हो य छे, तेने मुष्टियें करी नरीयें, जेटली मुष्टि थाय, तेटला एकांतरें उपवास करवा. अथवा बीजो विधि कहे छेः—एकासण बार, नीवी नव, आयंबिल पांच, उपवास एक, एवं सत्तावीश दिवस तप करवुं. छेहडे उपवासने दिवसें परिधायनिका चोखानो था ल तथा नालिकेरादिक फलथी,दांमानी पूजा करवी. उजमणे गुरुने वस्त्रदान आपवुं.

४४ दमयंती तपः—ए तप नलराजानी स्त्रीयें आ गल्या वीरमतीने नवें आदर्युं हतुं, ते आवी रीतें केः— एकेक जिन आश्री वीश आयंबिलनी एकेक उली करीयें. तेवी चोवीश उली थाय अने ए महोटुं तप छे ते नणी एनी सार्थे एक उली शासन देवतानी मली पच्चीश उलीनां पांचशें आयंबिल थाय, पार णाना दिन चोवीश थाय. उजमणे चोवीश जिन पूजा पूर्वक चोवीश तिलक तथा स्नात्रादि पूजा विशेष कर वी. श्रीजिन आगल पांचशें ने चार मोदक ढोकवा, अथवा चोवीश जिन प्रत्यें एकेक मोदक ढोकवो.

४५ ऊणोदरी तपः—इहां पुरुषने बत्रीश कवलनो आहार, अने स्त्रीने अठावीश कवल आहार कह्यो छे, तेमांथी न्यून करीने आहार लीये, ते लोक प्रवा हें ऊणोदरी तप जाणवुं. तिहां पुरुषें प्रथम दिवसें आठ बीजे दिवसें बार कवल, त्रीजे दिवसें शोल,

चोथे दिवसें चोवीश अने पांचमे दिवसें एकत्रीश कवलनो आहार करवो. एम एकाणुं कवल पुरुषने तथा स्त्रीने ८७ कवल लेवा. उजमणे जिनपूजा पूर्वक कवल संख्या प्रमाणें मोदक ढोकवा.

४६ मौन एकादशी तपः—मार्गशिर शुदि ११ ने दिवसें एक उपवास करीयें, एवा अगीयार वर्ष पर्यंत अगीआर उपवास करीने उजमणे अगीयार अगीयार वस्तु अने फलादिक पण तेटलांज ढोईयें ॥

४७ अगीआर अंग तपः—अगीयार शुक्ल पक्षनी अगीयारशें एकेक उपवास अगीयार महिना पर्यंत श्रुतदेवता आराधवाने अर्थें करीयें. उजमणे रूपाना घंट अगीयार तथा अगीयार अगीयार फल. ज्ञानपंचमीना तपमां जे लख्यां छे ते सर्व ढोकवां.

४८ द्वादशांगी तपः— द्वादशांगी तप पण तेमज शुक्ल पक्षनी बार बारश पर्यंत बार महीना करवुं, उजमणे बार बार वस्तु ढोकवी

४९ चौद पूर्व तपः—चौद शुक्ल चतुर्दशी पर्यंत एकेक उपवास निरंतर करीयें, महीने महीने ज्ञान अने ज्ञानवतनी पूजा करीयें, एम चौद मास तप कर्या पछी उजमणे पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, वीटांगणां प्रमुख ज्ञानोपगरण सर्व चौद चौद आपीयें ॥

५० धर्मचक्रवाल तपः—चोवीश आयंबिल निरंतर करीये, उजमणे रौप्यमय चक्र आपीयें.

५१ अष्टापद तपः—आशोवदि अमावास्यायें

कांतरें आठ उपवास करीयें, पारणे एकासणुं करीयें, एम आठ वर्ष तप करीयें. उजमणे अष्टापदनी पूजा तथा घृत मय गिरिनी रचना. सुवर्णमय निसरणी आठ पावडीनी आठ, तथा पक्वान्न चोवीश तथा फलादि सर्व जातिनां चोवीश चोवीश ढोकवां. बीजी सर्व वस्तु संख्यायें आठ आठ ढोकवी ॥

५१ वडुं समोसरण तपः—प्रथम उपवास चार करी पारणे एकासणुं अथवा बेआसणुं करवुं. एवा चार वखत चार चार उपवास करीयें, पंजोसणने दिवसें ए तप पूर्ण करीयें. एम चार वर्ष सीम करतां चोशठ उपवासें ए तप पूर्ण थाय.

५२ पंच मेरु तपः—एमां एकेका मेरु आश्री पांच पांच उपवास एकांतरे निरंतर करतां पच्चीश उपवास अने पच्चीश पारणां मली पच्चास दिवसें ए तप पूर्ण थाय. उजमणे सोनानो मेरु करीयें, अने पांच पांच वार श चेदें पक्वान्न ढोइयें.

५४ अडुःख डुःखित तपः—प्रथम शुक्लपक्षना पडवाने दिवसें एक उपवास करवो, वली बीजा शुक्लपक्षनी बीजने दिवसें एक उपवास करवो, वली त्रीजा शुक्लपक्षनी त्रीजने दिवसें एक उपवास करवो. एम पांच वखत आराधन करवाथी पन्नर उपवास थाय. तपने दिवसें श्रीऋषभजिनने अखंड माला चडाववी. नविन नविन नैवेद्य ढोकवुं. अने जो ए पन्नर दिवसना उपवासमांथी कोइ पण उपवास चूकीयें, तो ते

सर्व तप व्यर्थ थाय. फरीथी करवुं पडे. उजमणामां रूपानुं वृक्ष करावबुं, तेनी शाखामां सोनानुं पालणुं करावीने मूकवुं. तेने रेशमनी पाटीथी भरी उपर रेशमी वस्त्रनी तलाइ नाखीने तेमां सुवर्णमय पूतली करीने सुवारवी. श्रीऋषभदेवनी पूजा करवी.

५५ सत्तरीसयजिन तपः—एकेका जिन आश्रयी एकेका उपवास एकाशनादिक तप एकांतरें करतां १७० एकाशनादिक करवां, उद्यापने जिनपूजा पूर्वक १७० श्राविकाने भोजनादि आपवुं, तथा लाडु १७० ढोकवा. शक्तिने अभावें एकांतरें उपवास अथवा एकाशनादिक न थइ शके तो बूटक करवा

५६ अमृताष्टमी तपः—शुक्लपक्षनी आठ अष्टमीने दिवसें आयंबिल करवां. देवपूजा करवी, उजमणे घें भरेला घृतनो कलश एक, कापडुं एक, एक मण मोदक, जल गाडुं एक, ढोकवां

५७ अखंड दशमी तपः—दश शुक्लपक्षनी दश दशमीने दिवसें एकाशनादिक तप करवुं. अखंड अन्ननुं भोजन करवुं. उजमणे धान्य दश जातिनां तथा फलादि अखंड देवगृहे ढोकवां. कोरुं वस्त्र, संघपूजा तथा यथाशक्ति साधुने दान वगेरे आपवां

॥ हवे भिक्षा नियम तप चार प्रकारें कहे छे ॥

५८ सप्त सप्तमिका तपः—एमां सात दिवसनी एक ओली एवी सात ओली करवाथी ४९ दिवसें पूर्ण थाय. दात्ति १९६ ए बे प्रकारें छे तेमां पहेला

कमां प्रतिदिन एक भिक्षा लेवी. बीजा सप्तकमां प्र तिदिन बे भिक्षा लेवी. एम प्रत्येक सप्तकें एकेक भि क्षा वधारतां सातमा सप्तकें प्रतिदिन सात सात भि क्षा लेवी, तेवारें सरवाले १९६ दाति थाय.

५९ अष्टाष्टमिका तपः—एमां पण पूर्वोक्त रीतें प्र त्येक अष्टकें एकेक भिक्षा वधारतां तप दिन ६४ अ ने दाति २८८ थाय. ए बे प्रकार जाणवा.

६० नवम नवमिका तपः—एमां पण उक्त रीतें तप दिन ८१ अने दाति ४०५ थाय. ए बे प्रकार॥

६१ दशम दशमिका तपः—ए पण उक्त प्रकारें तप दिन १०० अने दात्ती ५५० ए चारे तपमां कह्या प्रमाणें भिक्षा लेवी. नही कां तपनो भंग थाय.

६२ कर्म चतुर्थ तपः—प्रथम एक अठम करी पछी एकांतरें साठ उपवास करीने वली छेह्लुं एक अठ म एटले त्रण उपवास करी पारणुं करीयें, तेवारें छासठ उपवास अने बासठ पारणां मली चार मास ने आठ दिवसें तप पूर्ण थाय छे, उजमणे आठ शा खा सहित रूपानुं वृक्ष तथा सोनानो कूहाडो मूकवो अने श्रीसंघनुं वात्सल्य करवुं.

६३ शिवकुमार वेला तपः—एमां बार वेलां लागट अथवा छूटक करीयें. पारणें आयंबिल करीयें.

६४ कर्मचक्र तपः—प्रथम एक अठम करी पछी एकशठ उपवास एकांतरें करवा. अने अंतें एक अठम

करीयें, तेवारें ६७ उपवास अने ६३ पारणें मली चार मास ने दश दिवसें ए तप पूर्ण थाय ॥

६५ बत्रीश कल्याणक तपः—प्रथम एक अठम करीने पंछी एकांतरें बत्रीश उपवास करवा. वली अंतमां एक अठम करीयें, तेवारें आडत्रीश उपवास अने चोत्रीश पारणां मली बे महीनाने बार दिवसें ए तप पूर्ण थाय, उजमणे जिनगृह मध्यें बत्रीश बत्रीश वस्तु ढोकवी. ए तप वसुदेवहिंमिमां कह्युं छे.

६६ लघुधर्मचक्रवाल तपः— एमां प्रथम एक अठम करी पछी साडत्रीश एकांतरें उपवास करवा. अने छेहडे पण एक अठम करवुं. एम त्रेंताली उपवास अने ३९ पारणां मली ८२ दिवसें ए तप पूर्ण थाय, उजमणे जिनपूजा पूर्वक रौप्य सुवर्णमय धर्मचक्र ढोकवुं, संघभक्ति, साधुदान, ज्ञानपूजा करवी.

६७ एकावलि तपः—दिन ३३४ पारणां ८८. ए तप रत्नावली तपना यंत्रनी पेठे करवुं, पण एटलुं विशेष जे आठ आठ छठने स्थानकें चोथ करवी. तथा पदकनी चोत्रीश छठने स्थानकें एकेक उपवास करवो, ए तप शुक्लपक्षथी प्रारंभ कराय छे.

६८ नवकार पदाक्षर मान तपः—प्रथम पदें सात अक्षरना सात उपवास, बीजे पदें पांच, त्रीजे सात, चोथे सात, पांचमे नव, छठे आठ, सातमे आठ, आठमे आठ, अने नवमे आठ. एवं सर्व मली अडशठ उपवास, एकांतरे करवा. उजमणे रुपानां पत्रां नाम

सुवर्ण अक्षरें पंचपरमेष्टि लिखित, प्रणव नमः पूर्वक ढोकवुं, तेमज लाडु ६७ तथा शासन अधिष्ठायिकने मोदक एक, एवं ६८ मोदक ढोकवा ॥

६९ दश प्रकारें यतिधर्म तपः—शुक्लपक्षें एकांतरें दश उपवास करवा. देवपूजा करवी. साधुने ठ विगय.

७० पंच परमेष्टि तपः—प्रथम दिवसें उपवास, वीजे दिवसें एकलगणुं, त्रीजे दिवसें आयंविल, चोथे दिवसें एकासणुं, पांचमे दिवसें नीवी, ठठे दिवसें पुरिमट्ठ, सातमे दिवसें बियासणुं, ए सात दिवसें एक उली थाय. एवी पांच उली करवाथी पांत्रीश दिवसें तप पूर्ण थाय. उजमणे पंचतीर्थी विंब नरावबुं. अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय अने साधुनी नक्ति करवी. मोदक पांत्रीश तथा बीजी वस्तु पांच पांच ढोकवी.

७१ चतुर्विध श्रीसंघतपः—प्रथम वे उपवास करीने पछी एकांतरें शाठ उपवास करवा, उजमणे चतुर्विध श्रीसंघनी पूजा करवी.

७२ निर्वाण दीपक तपः—ए तप त्रण वर्ष पर्यंत प्रत्येक दीवालीयें चौदश तथा अमावास्यायें मली वे वे उपवास करवा, एवं ठ उपवास थाय. अहोरात्र श्रीवीर आगल घृतनो दीपक सूर्यास्तथी उदय अने उदयथी अस्त पर्यंत करवो. रात्रि जागरण करवो, उजमणे साधर्मिकनुं वात्सल्य करवुं. साधुने दान आपवुं, ए तप करनार जन्मांतरें पण अंध थाय नही

७३ घन तपः—तिहां द्वि पर्यंत घन तपमां प्रथम

एक उपवास, पछी वे उपवास, वली एक, पछी वे, वली वे, पछी एक, वली एक, पछी वे, एम वार उप वास अने आठ पारणां मली वीश दिवसें ए तप पूर्ण थाय, जिनपूजा पूर्वक तप करवुं. मोदक वीश ढोक वा. एवी रीतें त्रिपर्यंतादिक अनेक प्रकारें घन तप करवुं. ते सर्वेयंत्रोनी स्थापनाउ जोइने करवां.

७४ श्रेणि तपः–एक उपवास करीने पारणुं कर वुं. पछी वे उपवास करीने पारणुं करवुं. तेवारें त्रण उपवास अने वे पारणां प्रथम श्रेणियें थाय. वीजी श्रेणियें एक,वे,त्रण, त्रीजी श्रेणियें एक,वे, त्रण,चार, चोथी श्रेणियें एक,वे,त्रण, चार,पांच, पांचमी श्रेणियें एक, वे, त्रण, चार, पांच, छ. छठी श्रेणियें एक, वे, त्रण, चार, पांच, छ, सात. एव छ श्रेणीना उपवास ८२ अने पारणां २७ मली ११० दिवसें तप पूर्ण थया पछी उजमणे रूपानुं सात खूणुं धवलगृह करवुं अनें सुवर्णमय निसरणी करवी.

७५ वर्ग तपः– एक, वे, वे, एक, वे, एक, एक, वे. ए वार उपवासें प्रथम उली जाणवी पछी
२,१,१,२,१,२,२,१, ए वीजी पंक्ति जाणवी. पछी
२,१,१,२,१,२,२,१,ए त्रीजी पंक्ति जाणवी. पछी
१,२,२,१,२,१,१,२, ए चोथी पंक्ति जाणवी पछी
२,१,१,२,१,२,२,१, ए पांचमी पंक्ति जाणवी. पछी
१,२,२,१,२,१,१,२, ए छठी पंक्ति जाणवी पछी
१,२,२,१,२,१,१,२, ए सातमी पंक्ति जाणवी.

२,१,१,२,१,२,२,१, ए आठमी पंक्ति जाणवी. ए द्विप यैत वर्ग तपोदिन ७६ अने पारणां चोशठ, सर्व मळी मा स पांच ने दिन दश थाय. उजमणे जिनपूजा, करवं मोदक १६० ढोकवा. साधु अने संघनुं वात्सल्य करवुं

७६ परतपालि तपः—पंच वर्ष यावत् श्रीवीरकल्य णिकथी आरंभी उपवास त्रण करवा. पछी बत्रीश नं वी करवी. छेह्ले उपवास त्रण करवा. वर्ष वर्ष प्रत्ये एक सइनी लापसी स्थाळें पोळि करीने तेमां विवि ध सुरभि घृत शेर एक प्रक्षेपीने ढोकवुं.

७७ त्रिपर्यंत घन तपः—१,२,३. ए प्रथम पंक्ति २,१,३.ए बीजी पंक्ति,३,२,१. ए त्रीजी पंक्ति १,३,२ ए चोथी पंक्ति, २,३,१. ए पांचमी पंक्ति, ३,१,२ ए छठी पंक्ति, १,२,३. ए सातमी पंक्ति, ३,२,१. ए आठमी पंक्ति, २,३,१.ए नवमी पंक्ति. सरवाळे तप दिन ५४ पारणां २७ सर्व दिन ८१ उजमणे साधु नी भक्ति तथा श्रीसंघनी भक्ति करवी.

७८ लाखी पडवे तपः—श्रीवर्द्धमानना शिष्य गौत मनुं उपवासादिकें करी आराधन करवुं. कार्त्तिकशुदि एकमने दिवसें ए तप करवुं. ते प्रत्येक प्रतिपदायें एकवर्ष पर्यंत करवुं. उजमणामां चोखा माणां पांच अने पाली बे, तथा मग सेई एक अने पाली बे, मठ सेइ एक उपर पाली बे, अडद माणां पांच, जवार माणां ८ ने पाली बे, गोधूम सेइ बे, चोळा सेइ त्रण, चणा सेइ पांच, तिल पाली सात, जव सेई सात,

वाल सेर आठ, कांग माणां त्रण, कोद्रवा माणां त्रण ढोकवां यथाशक्ति दान पूजा वगेरे करवां.

७ए लघु संसार तारण तपः—प्रथम त्रण आयंबिल करी चोथा दिवसें उपवास करवो, एवी रीतें निरंतर त्रण वार करतां, बार दिवसें तप पूर्ण थाय.

ए० वृद्ध संसार तारण तपः—उपवास त्रण करीने पारणें आयंबिल करीयें, एम निरंतर त्रण वार करीयें, तेवारें नव उपवास अने त्रण पारणां थाय, सर्व मलिने बार दिवसें तप पूर्ण थाय. उजमणे रूपामय वहाण क्षीर समुद्रमां तरतुं मूकवाने बदले दूधमां तरतुं मूकवुं मांहे मोती विद्रुम भरवां.

ए१ अहवदशमि तपः—प्रत्येकवर्षनी भादरवा शुदि दशमीना दिवसें यथाशक्तियें उपवासादिक करीने अंबिका देवी पासें संगीतादिकथी रात्रिजागरण करवुं. नालियेर, केरी, मोदकादिक अंबाजी पासें ढोकवां, बीजे दिवसें साधर्मिकने जमाडी साधुने दान आपी पारणुं करे. अंबा देवीने कंकुनी पील करवी, अंजन करवु. तेम पोतानेपण अंजन करवुं. अनें रेशमी चरणीयो, कांचली, चंद्रुउ तथा चक्षु देवीने चडावीयें, दीपक करवा. तप करवुं, ते दिवसें ब्रह्मचर्य पालवुं. एम दश वर्ष पर्यंत करवुं. तेमां एटले [illegible] जे फलादिक पहेला वर्षे च७।८ [illegible] णां, त्रीजे वर्षे त्रिगुणा एम [illegible] ढोकवां.

२,१,१,२,१,२,२,१, ए आठमी पंक्ति जाणवी. ए द्विपर्यंत वर्ग तपोदिन ९६ अने पारणां चोशठ, सर्वे मली मास पांच ने दिन दश थाय. उजमणे जिनपूजा, करवी मोदक १६० ढोकवा. साधु अने संघनुं वात्सल्य करवुं.

७६ परतपालि तपः—पंच वर्ष यावत् श्रीवीरकल्याणिकथी आरंभी उपवास त्रण करवा. पछी बत्रीश नीवी करवी. छेल्ले उपवास त्रण करवा. वर्षे वर्षे प्रत्येंक सइनी लापसी स्थालें पोलि करीने तेमां विविध सुरभि घृत शेर एक प्रक्षेपीने ढोकवुं.

७७ त्रिपर्यंत घन तपः—१,२,३. ए प्रथम पंक्ति २,१,३. ए बीजी पंक्ति, ३,२,१. ए त्रीजी पंक्ति १,३,२. ए चोथी पंक्ति, २,३,१. ए पांचमी पंक्ति, ३,१,२. ए छठी पंक्ति, १,२,३. ए सातमी पंक्ति, ३,२,१. ए आठमी पंक्ति, २,३,१. ए नवमी पंक्ति. सरवाले तप दिन ५४ पारणां २७ सर्व दिन ८१ उजमणे साधुनी भक्ति तथा श्रीसंघनी भक्ति करवी.

७८ लाखी पडवे तपः—श्रीवर्द्धमानना शिष्य गौतमनुं उपवासादिकें करी आराधन करवुं. कार्त्तिकशुदि एकमनें दिवसें ए तप करवुं. ते प्रत्येक प्रतिपदायें एकवर्ष पर्यंत करवुं. उजमणामां चोखा माणां पांच अने पाली बे, तथा मग सेई एक अने पाली बे, मठ सेइ एक उपर पाली बे, अडद माणां पांच, जवार माणां छ ने पाली बे, गोधूम सेइ बे, चोला सेइ त्रण, सेइ पांच, तिल पाली सात, जव सेई सात,

वाल सेर आठ, कांग माणां त्रण, कोद्रवा माणां त्रण ढोकवां. यथाशक्ति दान पूजा वगेरे करवां.

७ए लघु संसार तारण तपः—प्रथम त्रण आयंबिल करी चोथा दिवसें उपवास करवो, एवी रीतें निरतर त्रण वार करतां, बार दिवसें तप पूर्ण थाय.

ए० वृद्ध संसार तारण तपः—उपवास त्रण करीने पारणें आयंबिल करीयें, एम निरंतर त्रण वार करीयें, तेवारें नव उपवास अने त्रण पारणां थाय,सर्व मलिने बार दिवसें तप पूर्ण थाय. उजमणे रूपामय वहाण क्षीर समुद्रमां तरतुं मूकवाने बदले दूधमां तरतुं मूकवुं. मांहे मोती विद्रुम भरवां.

ए१ अह्वदशमि तपः—प्रत्येकवर्षनी भादरवा शुदि दशमीना दिवसें यथाशक्तियें उपवासादिक करीने अंबिका देवी पासें संगीतादिकथी रात्रिजागरण करवुं. नालियेर, केरी, मोदकादिक अंबाजी पासें ढोकवां, बीजे दिवसें साधर्मिकने जमाडी साधुने दान आपी पारणुं करे अंबा देवीने कंकुनी पील करवी, अंजन करवुं. तेम पोतानेपण अजन करवु. अनें रेशमी चरणीयो, कांचली, चंडुउ तथा चक्कु देवीने चडावीयें, दीपक करवा. तप करवुं, ते दिवसें ब्रह्मचर्य पालवुं. एम दश वर्ष पर्यंत करवुं. तेमां एटलुं विशेष जे फलादिक पहेला वर्षे चडावीयें, ते करतां बीजे वर्षे बमणां,त्रीजे वर्षे त्रिगुणा एम यावत् दशमे वर्षे दश गुणां ढोक

ए२ हारतप—प्रथम बे उपवास

२,१,१,२,१,२,२,१, ए आठमी पंक्ति जाणवी. ए द्विप र्यंत वर्ग तपोदिन ए६ अने पारणां चोशठ, सर्व मली मा स पांच ने दिन दश थाय. उजमणे जिनपूजा, करवी मोदक १६० ढोकवा. साधु अने संघनुं वात्सल्य करवुं.

७६ परतपालि तपः—पंच वर्ष यावत् श्रीवीरकल्या णिकथी आरंभी उपवास त्रण करवा. पछी बत्रीश नी वी करवी. छेहले उपवास त्रण करवा. वर्ष वर्ष प्रत्यें एक सरुनी लापसी स्थालें पोलि करीने तेमां विवि ध सुरभि घृत शेर एक प्रक्षेपीने ढोकवुं.

७७ त्रिपर्यंत घन तपः—१,२,३. ए प्रथम पंक्ति २,१,३.ए बीजी पंक्ति,३,२,१. ए त्रीजी पंक्ति १,३,२. ए चोथी पंक्ति, २,३,१. ए पांचमी पंक्ति, ३,१,२. ए छठी पंक्ति, १,२,३. ए सातमी पंक्ति, ३,२,१. ए आठमी पंक्ति, २,३,१.ए नवमी पंक्ति. सरवाले तप दिन ५४ पारणां २७ सर्व दिन ८१ उजमणे साधु नी भक्ति तथा श्रीसंघनी भक्ति करवी.

७८ लाखी पडवे तपः—श्रीवर्द्धमानना शिष्य गौत मनुं उपवासादिकें करी आराधन करवुं. कार्त्तिकशुदि एकमने दिवसें ए तप करवुं. ते प्रत्येक प्रतिपदायें एकवर्ष पर्यंत करवुं. उजमणामां चोखा माणां पांच अने पाली बे, तथा मग सेई एक अने पाली बे, मठ सेइ एक उपर पाली बे, अडद माणां पांच, जवार माणां छ ने पाली बे, गोधूम सेइ बे, चोला सेइ त्रण, चणा सेइ पांच, तिल पाली सात, जव सेई सात,

वाल सेर आठ, कांग माणां त्रण, कोद्रवा माणां त्रण ढोकवां. यथाशक्ति दान पूजा वगेरे करवां.

७ए लघु संसार तारण तपः—प्रथम त्रण आयंबिल करी चोथा दिवसें उपवास करवो, एवी रीतें निरंतर त्रण वार करतां, बार दिवसें तप पूर्ण थाय.

ए० वृद्ध संसार तारण तपः—उपवास त्रण करी ने पारणें आयंबिल करीयें, एम निरंतर त्रण वार करीयें, तेवारें नव उपवास अने त्रण पारणां थाय,सर्व मलिने बार दिवसें तप पूर्ण थाय. उजमणे रूपामय वहाण क्षीर समुद्रमां तरतुं मूकवाने बदले दूधमां त रतुं मूकवुं. मांहे मोती विद्रुम भरवां.

ए१ अहवदशमि तपः—प्रत्येकवर्षेनी भादरवा शुदि दशमीना दिवसें यथाशक्तियें उपवासादिक करीने अं बिका देवी पासें संगीतादिकथी रात्रिजागरण करवुं. नालियेर, केरी, मोदकादिक अंबाजी पासें ढोकवां, बी जे दिवसें साधर्मिकने जमाडी साधुने दान आपी पार णुं करे अंबा देवीने कँकुनी पील करवी, अंजन करवु तेम पोतानेपण अंजन करवुं अने रेशमी चरणीयो, कांचली, चंद्रुउ तथा चक्षु देवीने चडावीयें, दीपक करवा तप करवुं, ते दिवसें ब्रह्मचर्य पालवुं. एम दश वर्ष पर्यंत करवुं. तेमां एटलुं विशेष जे फलादिक पहेला वर्षे चडावीयें, ते करतां बीजे वर्षे बमणां,त्रीजे वर्षे त्रिगुणा एम यावत् दशमे वर्षे दश गुणां ७।

ए२ द॰ प्रथम बे उपवास करीने

एकासणांतरित उपवास सात करवा, वली उपवास त्रण करीने फरी एकासणांतरित उपवास सात करवा. प्रांते उपवास बे करवा. एवं तपोदिन एकवीश अने पारणां सत्तर थाय. उजमणे सुवर्ण, माणिक, मुक्ता फल, विद्रुम, रजत, चोखला, पदक काहलिका संयुत हार श्रीवर्द्धमानजिन आगल ढोकवो. अथवा टंका वली आभूषण श्री माहावीरने कंठें धरवुं.

७३ अष्टकर्मोत्तर प्रकृति तपः—आठ कर्ममां ज्ञाना वरणीयनी उत्तर प्रकृति पांच, दर्शनावरणीयनी नव, वेदनीयनी बे, मोहनीयनी अठावीश, आयुःकर्मनी चार, नामकर्मनी एकशो ने त्रण, गोत्रकर्मनी बे, अंतरा यकर्मनी पांच, सर्व मली १५८ प्रकृतिना १५८ उपवास एकाशनांतरें करवा. एटले एक उपवास पछी एक एकासणुं एम १५८ उपवासें एक ओली थाय. तेवी आठ ओली करवी. उजमणे एक शो अठावन्न अठावन्न वस्तु तथा १५८ मोदक ढोकवा ज्ञाननी पूजा करवी, साधुने दान आपवुं.

७४ रूपक संवत्सरी तपः—एकाशनांतरित ३६० उपवास करवा, उजमणे रूपानो घट शेलडीना रसथी भरीने देव आगल ढोकवो. अने मध्यना बावीश तीर्थ कर आश्रयी २४० उपवास एकाशनांतरित करवा.

७५ अष्टमासिक तपः—एमां एकाशनांतरित २४० उपवास करवा, उजमणे २४० मोदक ढोकवा.

७६ षट्मासी तपः—एकाशनांतरित यथाशक्ति १८०

उपवास जेवी रीतें निर्वाह थाय, तेवी रीतें करवा, उद्या पनने विषे १८० मोदक ढोकवा.

८७ क्षीरसमुद्रतपः—ए तप पर्युषण पहेलां आ दरीयें एकासणां आठ, उपर एक उपवास करवो. उज मणे खीर खांम अने घृतें भरेलो थाल ढोकवो, सा धर्मिकनुं वात्सल्य, साधुने दान तथा ज्ञानपूजा करवी.

८८ सात सौख्य, आठ मोख तपः—एकासणां सात करी उपर एक उपवास करीयें, उजमणे आठ मोदक अर्पण करवा. तेमां आठमो मोदक चतुर्गुणो करवो. शोल खाद्य ढोकवां, ज्ञानपूजा करवी.

८९ शत्रुंजय मोदक तपः—पुरीमड्ढ, एकासणुं, नीवी, आयंबिल, उपवास, ए पांच वानां पांच दिवसें करी तप पूर्ण करीयें, उजमणे पांच मांणाना मोदक पांच सुशसहित देव आगल ढोकवा, ज्ञानपूजा करवी.

९० मतांतरें दश पच्चरकाणतपः—एक उपवास, एकासणुं, एकलशीथुं, नीवी, एक कवल, एकलठाणुं, एक दत्ति, आयंबिल, 'एक घरुं, एक अलेवाडो नीवी, एम दश दिवस पर्यंत तप करवो उजमणे मोदक दश लाववा, अष्ट प्रकारी पूजा करवी, ज्ञानपूज करवी.

९१ स्वर्ग स्वस्तिक तपः—एमां चार एकासणां करी उपर एक उपवास करीयें उजमणे पांच धान्यनो स्वस्तिक पूरवो, पांच धान्य मण मण लेवां ज्ञान पूजा करी.

९२ मतांतरें घनतप'—द्विपर्यंत दिन बार, पारणां आठ सर्व दिन वीश त्रिपर्यंत दिन चोपन, पारणां ~

त्तावीश, सर्वदिन एकाशी. चतुःपर्यंत दिन १६०. पारणां ६४. सर्वदिन २२४. पंचपर्यंत घनतप दिन ३७५. पारणां १२५. सर्व दिन ५००. षट्पर्यंत दिन ७५६ ने पारणां २१६. सर्व दिन ए७२. पारणां नीविथी करवां.

ए३ मुकुटसप्तमी तपः—आषाढ वदि सातमने दिवसें प्रथम उपवास करी श्रीविमलनाथनी पूजा करवी. बीजो कार्त्तिक वदि सातमे उपवास करी श्री आदिनाथनी पूजा करवी. मागशिर वदि सातमे उपवास करी श्रीमहावीरनी पूजा करवी. पोष वदि सातमें उपवास करी श्रीपार्श्वनाथनी स्नात्रपूर्वक पूजा करवी. उजमणे लोकनालिनी पूजा करी उपर मुकुटस्थानें रहेला शिवक्षेत्रनी जिनावलीने सुवर्ण रत्नघडित मुकुट धराववो. जिनजिनप्रत्यें सात सात फोफल, तथा सात सात लाडु ढोकवा. गुरुनी पूजा करवी, तथा ज्ञानपूजा करवी.

ए४ अंबिका तपः—पांच कृष्ण पंचमीयें श्रीनेमीश्वर पूजा पूर्वक अंबिकानी पूजा करी यथाशक्तियें एकाशनादिक तप करवुं. नैवेद्य तथा फल ढोकवां. उजमणे साधुने नवां वस्त्र, अन्न, पान, आपी प्रतिलाजवा. अंबानी मूर्त्ति बे पुत्र सहित तथा आम्रवृक्ष सहित कराववी पछी तेनुं पूजन करवुं.

ए५ श्रुतदेवता तपः—शुक्लपक्षनी एकादशीने दिवसें उपवास करवो. एवी अगीयार एकादशी पर्यंत करवो. जे दिवसें तप करवुं, ते दिवसें मौन रहेवुं.

श्रुतदेवतानी पूजा करवी. उजमणे पूजा परिधापनि का करवी. पोताने घेर श्रुतदेवतानी मूर्त्ति प्रतिष्ठित करीने पूजवी, छ विगय ढोकवां.

९६ माणिक प्रस्तारिका तपः—आशोशुदि अगीयारशें उपवास, बारशें एकासणुं, तेरशें नीवी, चौदशें आयंबिल, पूनमें उपवास करवो. ए प्रथमरीति कही. हवे बीजी रीति कहे छे. आशोशुदि बारशें आयंबिल, तेरशने दिवसें नीवी, चौदशें एकासणुं अने पूर्णिमायें पण एकासणुं करवुं ते पूनमने दिवसें प्रभातें सूर्योदय थया पहेलां प्रातःकालमां स्नान करीने पोताना हाथना खोबामां चूपण, एक नालियेर, अक्षत लइने महोत्सव पूर्वक जिनप्रासादने विषे प्रथम प्रदक्षिणा करीने जिनवरपासें खोबामां रहेली सर्ववस्तु ढोकवी बीजी प्रदक्षिणामां बीजोरुं ढोकवुं, त्रीजी प्रदक्षिणामां सपत्र पूगीफल ढोकवुं. चोथी प्रदक्षिणामां छकमो ढोकवो. सात धान्य ढोकवां तथा लवण, कापड, कुसुंभ, कपास,सुंहाली १०८, वेहेडुं एक, एकशो शोल दीवा करवा. जमणे रूपानुं कोडियुं अने सोनानी वाट करावबी.

९७ गणधर तपः—श्रीवर्द्धमान जिनना गौतम प्रमुख अगीयार गणधरने अगीयार उपवास अथवा अगीयार आयंबिलें करी आराधवा. उजमणे गुरुने अगीयार वेश आपवा. संघपूजा करवी

९८ पद्मोत्तरतपः—नव कमल एटले पद्म छे.

केक पद्में आठ आठ उपवास करवा. उजमणे आठ दलनुं सुवर्ण कमल करी तेनी उपरें गौतमस्वामी आ लेखीने देव आगल मूकवा, ज्ञानपूजा करवी.

एए अंगविशोधित तपः—आयंबिल त्रण, नीवी त्रण, एकासणां त्रण अने उपवास एक करवो उ जमणे तेर मोदक पुस्तक आगल ढोकवा.

१०० आगमोक्त केवलि तपः—आयंबिल दश अ ने उपवास एक करवो. उजमणे मोदक अगीयार, नालीयेर अगीयार, तथा कापडुं एक, ए सर्व पुस्तक आगल ढोकवां. श्रीजिननी अष्टप्रकारी पूजा करवी.

१०१ रत्नरोहण तपः—एकाशन एक, नीवी एक. आयंबिल एक, उपवास एक, ए प्रथम उली, पछी नीवी, आयंबिल, उपवास अने एकाशन. ए बीजी उली. पछी आयंबिल, उपवास, एकासन, नीवी, ए त्रीजी उली. पछी उपवास, एकासण, नीवी, आयं बिल, ए चोथी उली थइ. अने प्रांतें छेहली एक उ पवास, एक विकृति एकासन, एक नीवीता रहित नीवी, एक आयंबिल, ए पांचमी उलीयें तप पूर्ण थ या पछी उजमणे रत्नमय नोकरवाली [illegible] रत्नमय स्थापनाचार्य पांच. रत्नमय बिंब प[illegible] [illegible]

तप करवाथी संतानप्राप्ति, निर्मलनेत्र अने तप कर नारनी स्त्रीने गर्नस्राव थाय नहिं ए तप त्रण वर्ष प र्यंत करवुं. एनो आरंन आशो शुदि पंचमीथी करवो.

१७२ सिद्धिवधूकंगानरण तपः—प्रथम वे उपवा स, पठी एक, त्रण, एक, वे, एम नव उपवास करी उजमणे नव मुक्ताफल ढोकवां. ज्ञाननक्ति करवी.

१०३ पढकडी तपः—प्रथम एक उपवास, पठी वे उपवास, पठी एक उपवास. एव चार उपवास करी उजमणे मोती अने परवालां ढोकवां.

१०४ ठठ तपः—ठठ २२ए करवां तेवारे ४५० उ पवास थाय उजमणे ४५० मोदक ढोकवा

१०५ कल्याणिक तपः—जिन जन्मकल्याणकथी आरंनीने एकांतरादि उपवास तेम दीक्षादिकल्याणकें पण करीयें. जेम ठेल्लो उपवास कल्याणक तिथियें आवे. तेम करीयें. उजमणे थाल चोवीश, पहेरामणी चोवीश, नडुण चोवीश, तिलक चोवीश ढोकवां.

१०६ मेरु कल्याणक तप—श्रीआदीश्वरनुं. एमां ठ उपवास एवी रीतें करीयें, के जे वर्षे मेरुकल्याणक करीयें, ते वर्षे प्रथम तो लागट त्रण तेलां करीयें, अ ने पारणे पारणे बियासणुं करीयें. पठी वली लागट एकांतरे उपवास ठ करीये. जो त्रण तेलां पहेलां करी शके नही, तो पहेलां वे तेलां करीने पठी मेरु कल्या णक महाशुदि मध्यें त्रीजुं तेलुं तेहीज वर्षे करे.

१०७ कमलनी उली तपः—एकांतरे आठ ~

सनी एक उली एवी नव उलि एकज वर्षमां करवी. उ जमणे रूपानां तथा सोनानां नव नव कमल ढोइयें.

१०८ अशोकवृक्ष तपः—आशो मासें उपवास पन्नर एकासणां पन्नर करीयें. उजमणे अशोकवृक्ष करावीयें.

१०९ चांड्रायण तपः—शुक्ल पडवाथी आरंभीने दिन पन्नर सीम एकेक उपवास अने एकेक आयंबिल करीयें. उजमणे लाडु पन्नर तथा रूपानो चंड आपीयें.

११० सूरायण तपः—कृष्ण पडवाथी आरंभीने दिन पन्नर लगें एकेक उपवास अने एकेक आयंबिल करीयें. उजमणे लाडु पन्नर तथा रूपानो सूर्य आपीयें.

१११ तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान तपः—पहेला तीर्थंकरनुं आयंबिल अथवा नीवी एक करवी. एम बीजा तीर्थंकरनी बे करवी. एम अनुक्रमें वधारतां चोवीश मांनी चोवीश नीवी करवी. फरी पाछा वलतां चोवीश मानी एक करवी, तो पार्श्वनाथनी बे करवी. एम उत्क्रष्ट में वधारतां वधारतां यावत् प्रथम तीर्थंकरनी चोवीश करवी. अने ते ते दिवसोमां ते ते तीर्थंकरोनी विशेष पूजा करीयें, एम बसो नीवी अथवा आयंबिल थाय.

११२ लक्ष नमस्कार जाप विधि कहियें छैयें. पूर्वे अष्टप्रकारी पूजा करीने देव वांदिने जिननी पासें पंच परमेष्ठिनां गुणणां गुणवानो प्रारंभ करवो, प्रथमपद जप पूर्ण थाय, त्यारें चंदननुं तिलक भगवानने करवुं, [illegible] पदने विषे पुष्पमाला, तृतीयपदने विषे कपूरनी पूजा करवी. चतुर्थ पदने विषे अक्षत ढोकवा

पंचमपदने विषें धूप धाणुं करवुं. नमस्कार पूरा थाय त्यारें नगवानने तिलक करवुं. एम ज्यारें हजार जप संपूर्ण थाय, त्यारें शक्रस्तव पूर्वक अक्षत नैवेद्यादिक दान करवुं. एम पच्चीश सहस्र पूर्ण थये छते साधु संविन्नाग अने साधर्मिक नक्ति करवी. एम नूमिशयन एकाशन पच्चरकाण त्रिविधाहार, ब्रह्मचर्य पालन पूर्वक लक्ष जप करवो, अने ज्यारें सहस्र जप थाय, त्यारें नालियेर नगवान पासें ढोकवुं. अक्षत दान वगेरे करवुं, साहामिवाच्छल्य तथा जागरण करवुं.

११३ अष्टापद पाहुडी तपः—आशोशुदि आठमथी पूर्णिमा पर्यंत ते आठ दिवससुधी एकाशनादिक तप करवुं. उजमणे पूजा करवी. नैवेद्य ढोकवां.

११४ जैनजनक तपः—निरंतर आयंबिल बत्रीश करवां, उजमणे जिनपूजा करवी

११५ निगोदरस तपः—प्रथम एक उपवासने एकासणुं, पछी बे उपवासने एकासणुं, पछी त्रण उपवासने एकासणुं, फरी बे उपवास ने एकासणुं, वली एक उपवास ने एकासणुं.उजमणे चौद मोदक आपवा. एथी निगोदायु क्षय थाय ॥

११६ अष्टमी तप—आठम आठमने दिवसें उपवास अथवा आयंबिल करी आराधीयें, उजमणे दूधें नरेला कलशनी उपर धोळुं वस्त्र ढांकी ते उपर साकरना महोटा [illegible] आठ तेने ज्ञानोपकरण सहित कर्मक्षय नि[illegible] । पुस्तक आगल [illegible]

सनी एक ओली एवी नव ओलि एकज वर्षमां करवी. उ जमणे रूपानां तथा सोनानां नव नव कमल ढोइयें.

१०८ अशोकवृक्ष तपः—आशो मासें उपवास पन्नर एकासणां पन्नर करीयें.उजमणे अशोकवृक्ष करावीयें.

१०९ चांड्रायण तपः—शुक्ल पडवाथी आरंभीने दिन पन्नर सीम एकेक उपवास अने एकेक आयंबिल करीयें. उजमणे लाडु पन्नर तथा रूपानो चंद्र आपीयें.

११० सूरायण तपः—कृष्ण पडवाथी आरंभीने दिन पन्नर लगें एकेक उपवास अने एकेक आयंबिल करीयें. उजमणे लाडु पन्नर तथा रूपानो सूर्य आपीयें.

१११ तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान तपः—पहेला तीर्थंकरनुं आयंबिल अथवा नीवी एक करवी. एम बीजा तीर्थंकरनी बे करवी. एम अनुक्रमें वधारतां चोवीश मांनी चोवीश नीवी करवी. फरी पाछा वलतां चोवीश मानी एक करवी,तो पार्श्वनाथनी बे करवी.एम उत्कृष्ट में वधारतां वधारतां यावत् प्रथम तीर्थंकरनी चोवीश करवी. अने ते ते दिवसोमां ते ते तीर्थंकरोनी विशेष पूजा करीयें, एम छसो नीवी अथवा आयंबिल थाय.

११२ लक्ष नमस्कार जाप विधि कह्रियें छैयें. पूर्वे अष्टप्रकारी पूजा करीने देव वांदिने जिननी पासें पंच परमेष्ठिनां गुणणां गुणवानो प्रारंभ करवो, प्रथमपद जप पूर्ण थाय, त्यारें चंदननुं तिलक भगवानने करवुं, द्वितीय पदने विषे पुष्पमाला, तृतीयपदने विषे कपूरनी पूजा करवी. चतुर्थ पदने विषे अक्षत ढोकवा.

पंचमपदने विषें धूप धाणुं करवुं. नमस्कार पूरा थाय त्यारें भगवानने तिलक करवुं. एम ज्यारें हजार जप संपूर्ण थाय,त्यारें शक्रस्तव पूर्वक अक्षत नैवेद्यादिक दान करवुं. एम पच्चीश सहस्र पूर्ण थये छते साधु संविभाग अने साधर्मिक भक्ति करवी. एम भूमिशयन एकाशन पच्चरकाण त्रिविधाहार, ब्रह्मचर्य पालन पूर्वक लक्ष जप करवो, अने ज्यारें सहस्र जप थाय, त्यारें नालियेर भगवान पासें ढोकवुं. अक्षत दान वगेरे करवुं, साहामिवाछल्य तथा जागरण करवुं.

११३ अष्टापद पाडुडी तपः—आशोशुदि आठमथी पूर्णिमा पर्यंत ते आठ दिवससुधी एकाशनादिक तप करवु. उजमणे पूजा करवी. नैवेद्य ढोकवां.

११४ जैनजनक तपः—निरंतर आयंबिल बत्रीश करवां, उजमणे जिनपूजा करवी.

११५ निगोदरस तपः—प्रथम एक उपवासने एकासणुं, पछी बे उपवासने एकासणुं, पछी त्रण उपवासने एकासणुं, फरी बे उपवास ने एकासणुं, वली एक उपवास ने एकासणुं.उजमणे चौद मोदक आपवा एथी निगोदायु क्षय थाय ॥

११६ अष्टमी तप.—आठम आठमने दिवसें उपवास अथवा आयंबिल करी आराधीयें, उजमणे दूधें भरेला कलशनी उपर धोळुं वस्त्र ढांकी ते उपर साकरना महोटा मोदक आठ तेने ज्ञानोपकरण ११ कर्मक्षय निमित्त प्रतिमा वा पुस्तक आगल ...

११७ मोक्ष करंम तपः—उपवास, आयंबिल, नीवी, एकासणुं, पुरिमट्ठ,ए एक ठली थइ. एवी पांच ठली करतां पच्चीश दिवसें ए तप पूर्ण थाय.

११८ स्वर्ग करंम तपः—एकासणां बार,नीवीं नव, आयंबिल पांच,उपवास एक एवं २७ दिवसें पूर्ण थाय.

११ए सौन्नाग्य सुंदर तपः—एक उपवास अने एक आयंबिल एम बत्रीश दिवस करवाथी तप पूर्ण थाय.

१२० चतुःषष्टि तपः—एक एकासण, एक आयंबिल, एम बत्रीश दिवस करवां,एकासणें फासु पाणी त्रिविहार पच्चरकाण करवुं ॥

१२१ नद्रादि प्रतिमा तपः—नद्र प्रतिमा तपमां बे उपवास करीयें, अने महानद्र प्रतिमामां चार उपवास करीयें, सर्वतोनद्र प्रतिमामां ५ [illegible] करीयें.

अथाभव्यकुलकं प्रारभ्यते

जे अभव्य जीव होय, ते नीचें लखेलां स्थानक क्यारें पण फरसे नही तेनां नाम कहे छे.

४ इंद्रपणुं तथा पांच अनुत्तर विमाननुं देवपणुं. त्रेशठ शिलाका पुरुषनी पदवी तथा नव नारद पणुं

६ केवली भगवान् तथा गणधरजीने हाथे दीक्षा.

७ श्रीतीर्थंकरजी वरसी दान आपे ते दान न पामे.

१३ श्रीजिनशासनना अथवा प्रवचनना अधिष्ठायिक जे देव देवीयो छे,तेनी पदवी तथा नव लोकांतिक देवपणुं अने देवनुं स्वामीपणुं तथा तेंत्रीश गुरु स्थानकीयानुं देवपणुं वली पन्नर जातिना परमाधामि पणुं,अने युगलिक मनुष्यपणुं ए सर्व न पामे.

२१ संभिन्नश्रोत्रलब्धि तथा पूर्वधरनी लब्धि तथा आहारकलब्धि तथा पुलाक लब्धि. तथा मति ज्ञान, श्रुतज्ञानादिकनी लब्धि न पामे

२ए भावसहित सुपात्रने दान आपवा पणुं तथा समाधिपणे मरण अने विद्याचारण तथा जंघाचारणनी लब्धि, मधुरासव, खीरासव लब्धि,तथा अक्षीणमहाणसी गौतमजी जेवी लब्धि न पामे.

३१ श्रीतीर्थंकर तथा तीर्थंकरनी प्रतिमा संबंधि शरीरना भोगादिकना कारणमां पण नावे जो पृथ्वी कायादिकपणाना भाव पामे तोपण तीर्थंकरना शरीरादिपणु न पामे अथवा भोगमां नावे.

३२ [illegible] पणुं न पामे.

३३ विमाननुं स्वामिपणुं न पामे.

३६ समकित,सम्यक्ज्ञान तथा सम्यक् चारित्रपणुं.

३८ तपादिक गुणना बाह्याभ्यंतर भाव तेने न पामे

३९ अनुभवसहित गुणगुणीनी भावसहित भक्ति.

४१ श्रीजिनाज्ञा पूर्वक समान धर्मीनी तथा श्री संघनी वात्सल्य सेवा भक्ति सहाय साधी शके नही.

४३ संसार दुःखनी खाण छे, एवो संविज्ञ पणानो भाव नही थाय. तथा शुक्लपक्षीयो न थाय.

४९ श्रीतीर्थंकरना पितापणे, मातापणे, स्त्रीपणे, यक्ष यक्षणी पणे न थाय, तथा युग प्रधान न थाय.

५१ आचार्य, उपाध्याय, साधु, चतुर्विध श्रीसंघ, थविर, कुल,गण,ए दशनो विनय न करे, तथा ए दशनुं परमार्थे उत्कृष्ट गुणें अधिक पणुं न पामे.

५३ अनुबंधहिंसा, हेतुहिंसा अने स्वरूपहिंसा एज त्रण प्रकारें वली अहिंसा श्रीतीर्थंकरें कही छे, ते त्रणे प्रकारनी अहिंसाने द्रव्यथी तथा भावथी एवा बे प्रकारें अभव्य जीव न पामे. 'ए सर्वे वात अभव्य कुलक उपरथी लखी छे ॥ इति अभव्य कुलकं समाप्तम्॥

॥ इति श्री जैनप्रबोध पुस्तकस्य
प्रथमभागः समाप्तः ॥

गुणरत्नसंवत्सरे तपोदिन ४०७ पारणा ७३

तपोदिन		पारणा
तपोदिन ३२	१६ १६	पारणा २ एवं ३४
तपोदिन ३०	१५ १५	पारणा २ एवं ३२
तपोदिन २८	१४ १४	पारणा २ एवं ३०
तपोदिन २६	१३ १३	पारणा २ एवं २८
तपोदिन २४	१२ १२	पारणा २ एवं २६
तपोदिन ३३	११ ११ ११	पारणा ३ एवं ३६
तपोदिन ३०	१० १० १०	पारणा ३ एवं ३३
तपोदिन २७	९ ९ ९	पारणा ३ एवं ३०
तपोदिन २४	८ ८ ८	पारणा ३ एवं २७
तपोदिन २१	७ ७ ७	पारणा ३ एवं २४
तपोदिन २४	६ ६ ६ ६	पारणा ४ एवं २८
तपोदिन २५	५ ५ ५ ५ ५	पारणा ५ एवं ३०
तपोदिन २४	४ ४ ४ ४ ४ ४	पारणा ६ एवं ३०
तपोदिन २४	३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३	पारणा ८ एवं ३२
तपोदि २०	२ २ २ २ २ २ २ २ २ २	पा ११ ३०
त १५	१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	पा १५

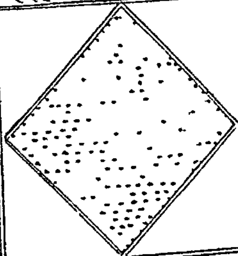
एवंदिनतो ४८० मासतो १६ अस्तुतरिमिक्ररेस्तगत्नृणे॥

कनकावलीतपो दिन ४३४ पारणां ८८ एवं मास १७ दिन १२ इति गडदत्रायां कालदेवकृतं॥

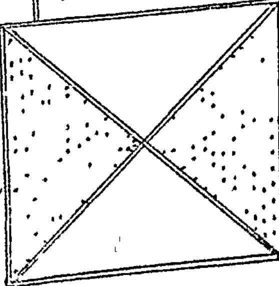
रत्नावलीतपो दिन ३८४ पारणां ८८ एवं मास १४ दिन २२

एकावलीतपो दिन ३३४ पारणां ८८ एवं मास १४ दिन २ नाम मात्रे गुण अपपातिके॥

यवमध्य चंद्रायण शुक्लप्रतिप
दारंभे एककवलादिरीत्याय तत
एकोत्तरया वृद्ध्या तावद्यावत्पूर्णिमा
यां कवल १५ ततः कृष्णप्रतिपदि क
वल १४ एवमेकैकहान्या तावद्या
वत्कृष्णचतुर्दश्यां कवल १ ततो
[illegible] ॥१०॥



वज्रमध्यचंद्रप्रतिमा कृष्णप्रतिपदि
आरंभे कवल १५ ततः एकैकहान्या
अमावास्यां कवल १ ततः शुक्ल



लघुसिंहनिःक्रीडिते तपोदिन १५४ पारणं ३३

वृद्धसिंहनिःक्रीडिते तपोदिन ४९७ पारणा ६१ उभयं मास १८ दिन १८

प्रतिपदि २ ... चतुर्दश्यां कवल ... पूर्णिमायामुपवासः ... ॥ २० ॥

सत्तसत्तमीयातपोसितपोदिन १९६ पारणां ४९ एवं सर्वदिन संख्याः।।२४५।।

१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७

।।अट्ठअट्ठमीयातपसितपोदिन २८८ पारणा ६४ एवं सर्व संख्या।।३५२।।

१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८

महाभद्रतपःयंत्रस्थापना।।।

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

२	१	१	१	१	१	२	१

द्वारतपोदिन२१ पारणा१७

२	१	१	१	१	१	१	१

[illegible]

भद्रतपोदिन७५ पा२५

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

नवनवमीयातप पा०४८दि।।

१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९

तपोदिन४०५ पारणा८१ सर्वे४८६

दशादशमीयातपोदिन५५०पा०१००
सर्वदिन६५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

॥सर्वतोभद्रतपोदिन
३९२पारणा४९स०४४१

५	६	७	८	९	१०	११
८	९	१०	११	५	६	७
११	५	६	७	८	९	१०
७	८	९	१०	११	५	६
१०	११	५	६	७	८	९
६	७	८	९	१०	११	५
९	१०	११	५	६	७	८

अल्पाहारेकोटीसहिततप ॥१॥

कवल१ एका १ कवल१
कवल२ एका १ कवल२
कवल३ एका १ कवल३
कवल४ एका १ कवल४
कवल५ एका १ कवल५
कवल६ एका १ कवल६
कवल७ एका १ कवल७
कवल८ एका १ कवल८

उणोदरकोटीसहिततपः॥२॥

कवल९ नीवी१ कवल९
कवल१० नीवी१ कवल१०
कवल११ नीवी१ कवल११
कवल१२ नीवी१ कवल१२
कवल१३ नीवी१ कवल१३
कवल१४ नीवी१ कवल१४
कवल१५ नीवी१ कवल१५
कवल१६ नीवी१ कवल१६

पापकोटीसहिततपः॥३॥

कवल१७ आंबिल१ कवल१७
कवल१८ आंबिल१ कवल१८
कवल१९ आंबिल१ कवल१९
कवल२० आंबिल१ कवल२०
कवल२१ आंबिल१ कवल२१
कवल२२ आंबिल१ कवल२२
कवल२३ आंबिल१ कवल२३
कवल२४ आंबिल१ कवल२४

किंचूनोनकोटीसहिततप॥४॥

कवल२५ उपवास१ कवल२५
कवल२६ उपवास१ कवल२६
कवल२७ उपवास१ कवल२७
कवल२८ उपवास१ कवल२८
कवल२९ उपवास१ कवल२९
कवल३० उपवास१ कवल३०
कवल३१ उपवास१ कवल३१
कवल३२ उपवास१ कवल३२

॥षट्पर्यंततपादि यंत्र स्थापना॥ तपोदिन७५६ पारणा२१६ उभयवर्ष२ मास८ दिन१२॥ सर्वदि९७२

१	२	३	४	५	६
२	३	४	५	६	१
३	४	५	६	१	२
४	५	६	१	२	३
५	६	१	२	३	४
६	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	१
३	४	५	६	१	२
४	५	६	१	२	३
५	६	१	२	३	४
६	१	२	३	४	५
१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	१	२
४	५	६	१	२	३
५	६	१	२	३	४
६	१	२	३	४	५
१	२	३	४	५	६
२	३	४	५	६	

४	५	६	१	२	३
५	६	१	२	३	४
६	१	२	३	४	५
१	२	३	४	५	६
२	३	४	५	६	१
३	४	५	६	१	२
५	६	१	२	३	४
६	१	२	३	४	५
१	२	३	४	५	६
२	३	४	५	६	१
३	४	५	६	१	२
४	५	६	१	२	३
६	१	२	३	४	५
१	२	३	४	५	६
२	३	४	५	६	१
३	४	५	६	१	२
४	५	६	१	२	३
५	६	१	२	२	४

॥श्रीविजेवर्द्धमानतपः [illegible] रत्नपद्म

धर्मचक्रवालतपो दिन

कर्मचतुर्थतपो दिन ८८ पारणां ८ एवं मास ३ दिन ८ ॥								
३	२	२	१	१	२	२	२	२
२	१	१	२	२	१	२	२	२
२	२	२	२	२	२	२	२	२
१	२	२	२	श्री	१	२	१	२
१	२	२	१	२	२	२	१	२
२	२	२	२	२	२	२	२	१
२	१	१	२	१	२	२	१	३

बत्तीसकल्याणकेतपो दिन ३८ पारणां ३४ एवं दिन सर्व ७२ ॥						
३	१	१	१	१	२	२
२	२	२	२	२	२	२
२	२	२	श्री।	२	२	२
२	२	२	२	२	२	२
२	२	२	२	२	२	३

त्रिपर्यंतघनत मोदिन५४पार ण१८दिन

१	२	३
२	३	१
३	१	२
२	३	१
३	१	२
१	२	३
३	१	२
१	२	३
२	३	१

त्रिपर्यंतिव्रत र तप दिन१८ पारणा९ एवं दिन२७॥

१	२	३
२	३	१
३	२	१

पंचपर्यंतव्रतत पोदिन७५पारणा२५एवंमा३दिन१०

१	२	३	४	५
२	३	४	५	१
३	४	५	१	२
४	५	१	२	३
५	१	२	३	४

चउपर्यंतिघनतपो दिन१६०पारणा६४एवं मा ७ दिन२४

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३
१	२	३	४
३	४	१	२
४	१	२	२
१	२	३	४
२	३	४	१
४	१	२	३
१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
०	०	०	०

चउःपर्यंततपोदि नव्रत२४०पारणां१६ एवंमास१दिन२६

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

पंचपर्यंतघनतपोदिन॥ ३७५पारणा१२५एवंमा स१६ दिन२०॥

१	२	३	४	५
२	३	४	५	१
३	४	५	१	२
४	५	१	२	३
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
३	४	५	१	२
४	५	१	२	३
५	१	२	३	४
१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
४	५	१	२	३
५	१	२	३	४
१	२	३	४	५
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३
५	१	२	३	४
१	२	३	४	५
२	३	४	५	१
३	४	५	१	३
५	१	२	३	४
१	२	३	४	५
२	३	४	५	१
३	४	५	१	२
४	५	१	२	३